भाग करेरी ती सथना वद यपाप्रकी धुनै वि पत्ति करें अणगे हो ती। एवं जा बता सनी व दयनिराधकरेदाजी लासभदयण्यानैनिकलकरै कषायपदिसंतीएएको निर्मे स्थादिन माने या बीयो नागप्रतिमंतीनोजी तीनप्रकारेतेक छुं मनवत्रकायमुबीनोजी व स्थादिव म् ते आरबीया ने मननी गमापारी नी तेव नुंधति प्रंलीनता उन्नरदेन मनारोक्षी 🖙 अक्र शल मन्त्रण उ यो करियेतासनिरोक्षेत्री सावसमनवत्रिवदी स्वतास् दिल्योक्सेत्रीय तथा भगलनम्भवतद्मी। करे क ही रणा आपाती। तथा मन निविध्य एणे करी। करिबंद का यसाव श्रुषापाती । स्थवा सामसहितएक ता निरालंब त्वणुं नेदोती ते रूप राज्येते देशे करिश्वेदस्य धणरीती अधिकस्ति आसीयाव्यक्ती गनी बास्त जी प्रतिसंतीनता प्यरही वसरहेत गता म ती। यक्त रालवचनती गरंधवी नवदेशाव सवाली जी तथा करालवचन बीकदीरणा विश्व बोलेश नाण जी र तथाविशिष्टएका यूपेणें करी एकता रूप जे सावाजी करिने जेव बजेग में एवं कप विसंली ए साबी जी २० हिंचे का यप दिसंली एया किसी तनुप दिसंली एका ते शेजी पो मियमाधिनती परे बास वितिक रिजेदोजी ए विलिखेतर वितिकरी जिकी। प्रशांत वितस्वाके विणविकित्रकर्यगनासाजीय अप्तइंडियका बबानीय वे किमा स्वस्ता मेहिपसे तो जी पूर्वको दोसी ली न साली नते प्रवेशित ली नप्णें रहे ते जी ा कही एमस्यतिमं लीमता तोगतणीवलिएरोजा सार्वायतिमंतीनताएतीन् नेटकरेरोजी व स्था हरो जानतणा अण्यामरे जनस्यामते इतंकरे वित्रमं स्थानवित्रय सानवित्रय क विवास तिमा विविक्त सयना मना जी एउ यति दक्त रीये हिवे मान ल जी धर मना जीवा असम पवरप्रमानने प्रमानले बन जाणी जी ते हुआ रामक ही जीये जे हुविषेपहि जाणी जी व्यास राम प्रमान ने म ल तला महा ह क्ष मुदायोजी तेर ३ द्वानक रीजीये जेरविषे मृतिरायोजी विससी मल्ड रियाक अतक यहारमामकोजी दशम अदेशक ने विधे खारेंगोतिमक दिवायोजी ः जानसे मा मंधारा पता चंगी कारकराविचरंतीजी जावदाहमें पाइजे जाएं वंकित बुद्धि वंतीजी असी जाव गर्भे ताएरे देवक लदे हराविधे मलाविधे पहिनाएरे देविजनमा बेहना ः स्वीर अम्माके मी कर्मी अंगलीते अवलावे कर्मा क्रिके के कि

विकलगणारीयानें क्यांने साजाय गामानरे मं चारी वसीविता संगीकारक रिनेदरे विसरे प्र मनावया जा वराष्ट्रभे जेदरेपा इकसारे जाणवा । ताल वर्षे विविक्त स्थना स्नेप्रवाण व नेदए यारेंगाजी। मेरंपिडिसेली एता कि दिस्तिए सामाजी है। स्वत्याची समेर समानमा सारमान हमीरालेजी। निकु नारीमालक्षिरायधी क्यानग्रमं गलामी अ ५ व स्थानं वितरत्व। नितरतपष्टनेदाक्रायकितम्हेक्री। क्रहकाराध्नवेदं विनयेवेयावसंप्रतिताण सकार फ्रन्थान्।विउस्योवकोत्वे। दिवत्रवेतदिवानः दिवतदस्यायश्चितायायश्चित्रदस्य वश्रालीयणनीम्बोद्रत्यादिकसंवेद। मानवारंतिक नीम्बोतक सो वायवितर्व विविधितय सारने।तामप्रमावदेश ताल्यहर्पमी नम्यनंतच्य वीमी स्विदिन्यिक स्त्रेत्र विनयम विधवास्य अरज्ञानविनयकानो दशीलविनय उदाहे विश्वापितविनयके प्रवितर्यं पीव वस्कार्यदिनयक्तनिवस्ताक्षत्रपद्मारः मुख्यतेकशीयाणानविनवपुराक्षर वक्षान न यना राष्प्रापेन्य कारः धुरसाति वनी धिका सानविश्व प्रणायि आवके वस सामन वस विवयक खेबीर अ सोरहा करांच सिरेमादिर ज्ञानविशय में खर्च ने ज्ञान प्रसाविक ता किरे क्रपणे प्रदेत प्रभाग ताल कि काम निर्देश के बाद का विश्व प्रकार मानवे काम वा सत्र्पने प्विष्मतज्ञानीने दरेशसम्हिष्मावस्त्री करिष्ठविनयनते वस्त्र सम्बद्धान तिका - टालन्स अध्यातेक सीये/दर्शणविनयक श्रावीव वर्णाविनयन माना काय प २ ८ मुम्राजिभेवा यार्यारेश्वरतेय वक्तेसामातन क्रितीयवेदसंवेद अवस्थतकश्च ण विनय उदार। मुश्रुषाविनयना कसा सने कष्ठकार । प्रस्तार विवेश विकास प्रसान ( चबद् मरात के। इतिया व देशे जा बर्ग जाबबर म के बर्ग के बाब करें जो करें हो जाव गर राष्प्रतिकदिनायः सार्घा कितीकर्मकदिनायरे करवीवद्यकार्यना वनुस्तानजन प्यपंत्रगर्धीतरेण्डतीवसीनेविषेकासुतिहासंगीतरे एएणीकपीहादिक प्रीहानाजवटनान जासननेतिसामवी ए तरुकाने सामनी समस्या

## भगवती-जोड्

खण्ड-६)

नग्वतीतीलाड एतला त्या वार्य कत NAMED IN SECT KRH

त्रमञ्जूषनायवा मुनिरव्याजेस्नानरे करेतासपर्यपासना जावश्रक्षेतानरे करीयेबालन स्प्रेतिवनय ज्ञानातिकामातन जामातन न्तर करीयेतेर्युजन आमातनकरे तसंघेताली मयकार यश्चितताणीन सामातनपरिवार - स्रिवेशपक्षणा अर्मताणीमुबिबार सामातनरा वि विनयस्य मुयद्यायरे स्यक्तयकरण अपयोगा सामातनपरिवार न गवर्णवादनिवार विनयांकार्यनी यात्रात्तनं करेद मनवज्ञतकायकरि प्रतिकलपण् तंतरे इम्बणभायनी स्विव्तली पिणजेरे अलेमलने स्थनी आ जातन न करेर कलगणमध्यांमादिर अर्थाइयानसीवृत्तिमें अष्टमजतवृत्तिमादिरे अष्टमुद्रशेखर्यद्रम कलंडक गणपति गीसरे विणकलमें इक गणक वे भूनिमधुन यमगीसरे संघक हीने लियनसेकादिक कालक तेन रवीत तेने दव उथे निक्य केसंबंगत 🖟 प्राणितियाना दिव प्रताक माना है विवस्त्रामिक यापेर कही ये तम्कियां तम् आगातन तदन नमुंधर्ममराष्ट्रा बाय श्रीयनकादि तस्त्रीणक मा वर्जे आशातनवादें विलयत 2646 जाननी जावनकेयम्बान तेर्मीनरीकरवी ऋसाग्तनजाम विल्पनरेनी तक्रिय दिनवक्तमान सक्त बाबस्योती वक्तमान अनुर्योति नाने विल्वयनर्ने वनायणवर्ण नक्षित्रह जनानुहीणविने नेदर्पतानीमहर एम्लामानानन विनयप्रविभाग्यात एद र्जाणविनयन बाक्नेची नगनाय कार्याचित्रमहितयकानरे विनय सुयुषातेहनी दर्भणविन्य मुनानर तेदतणी निन्जागमा अग्रासनाविणविधरे ज्ञानदर्शण करिन्ततणी अध्यक्ष तेष्रक्षित्र रक्ष मन्द्र सक्ते विषे न्य न्य ज्ञाननी ती यरे विल अस्पर जी लता या गधना तसुरो वर अप्रज्ञ ए उत्साधना व क्यो तिहा वृत्रिकाररे चारित करिए महित्व चावित्रवित्र महत्ये देशविर्तिममहि तस्त्रवपनरविचारर एवफलचारित्रत्यो । तमहदायणकाररे दर्जाण विनयसंनावी ना नव अवारावन सहरे एदवं आरमा दिनिम य बवित्रमिद्रतम्बिचाररे करतीमुख्यातम् अध्यम्बेत करीय चारित्रविन्यम यातिनयासामादिर तिणमुंचारित्रमदितः

वेग व्यंच प्रकार साम्यास घर सुंग मामा विक नावत यथा स्वात सुविवार तसुंगूल

वर्णवीय एकारिनविनयत्रवार व्यायस्त्रमनविनयत्र ते सनविनयद्विविधयस्त्र इ तरेल्बारको विनयमुभुणसार तेजासम्माणनी करिवोधर स्रितिणार स्थ विनयन स्थापनसम्बद्धिम । व विभागनसम्बद्धिम स्थापनसम्बद्धिम स्थापन यकर्मक्रयताहिर ताम उपायकदी जी ये अपम्बमनक दिवायरे ते दिज निर्व ने नह क्तमन तेस्प्रयुकारे सांनलजो युणीजन । सामानकरीने पापप्रदितमननाम एकः पापक एध्रने दिवसार भाव विविद्योधक विक की सारि अवध्य रहीत हे कसी च साव है कि तीय मंगीताः विलिकार्यादिक ने कियारदितमनतादि एक्तियकेद्रकान स्किरियकदिवाय व्यवकरणर्हीत एवए का प्रवक रिषंचमने देवनीत ्वितप्रते सेहने करण्या लावका द्वेमननेदन् अवनेक रकदिनायाः जिल्लानावनं मंकानयनने जन्म एदन्मनिद्वे ज् निसंकन । इतलेए मार्या प्रशास्त्रमनिवये युक्तमन्वनि प्रशासमनक्याते द धर्मते अपमञ्च मनविनय अधिकार अपमञ्चमनविनयो। वास्मा मनविनय आगामा नं पापकारिक नेमन तेनामपापको एथरनेटक यने । विवास यक्षीने को स्टिककरिस्सी वर्षमननेवर्षे मावस्यामसंगीती वित्वादयादिका विदियामदितमवनादि एटतियने फ्रन मकिरियेक दिवाये वित्रमनमाकादिक खालक ले बामहीत त्रे बेदच बेटी सम्पत्ने मंगातं पाणातिपातादिक आण्यवकरणमदीतते आण्यवकृति पंचमनदक्षणीते वि रमेल्वन करणनी लवनाम् एदव्यमननेदत् कल्वविकर्णम ुनेद्यकी जीवने स स्य वप्रतेत एवज्रेमन ने दर्व स्तातिसंक नसते 💎 इतिए आस्यो अप्रिमन विस्य द प्रत्य इनिवार तरविनयग्रनगर . अध्यस्तेकहिय बचविनयम्बिकार बचविनयम्बद्धते का यहस्त्रतातिताकिर मुभूषाकरबारणी वायपकारः प्रास्तावचनके वचविनयधुरनेद अपस्चयचविनयी द्वितीयनेदस्य अध्येतेष्कासन वचनविनयकदिवायतेष्ठप्रकारे मानल्लीवितस्याय । भूर

यपापक जावमातमा तम अस्तातिमेकन एविनयपुरास्त्ववन व्यामेते व्याम

जैन आगमों के मुख्य दो विभाग हैं- अंग और अंग बाह्य। अंग बारह थे। आज केवल ग्यारह अंग ही उपलब्ध होते हैं। उनमें पांचवां अंग है- भगवती। इसका दुसरा नाम व्याख्या-प्रज्ञप्ति है। इसमें अनेक प्रश्नों के व्याकरण हैं। जीव-विज्ञान. परमाणु-विज्ञान, सृष्टि-विधान, रहस्यवाद, अध्यात्म - विद्या, वनस्पति- विज्ञान आदि विद्याओं का यह आकर-ग्रन्थ है। उपलब्ध आगमों में यह सबसे बडा है। इसका ग्रन्थमान १६००० अनुष्ट्प श्लोक प्रमाण माना जाता है। नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरी ने इस पर टीका लिखी। उसका ग्रन्थमान अठारह हजार श्लोक प्रमाण है।

भगवती सूत्र की सबसे बड़ी व्याख्या है– यह 'भगवती जोड़'। इस की भाषा है राजस्थानी। यह पद्यात्मक व्याख्या है, इसलिए इसे 'जोड़' की संज्ञा दी गई है।

इस ग्रन्थ में सर्व प्रथम जयाचार्य द्वारा प्रस्तुत जोड़ के पद्य और ठीक उनके सामने उन पद्यों के आधार-स्थल दिये गये हैं। जयाचार्य ने मूल के अनुवाद के साथ-साथ अपनी ओर से स्वतंत्र समीक्षा भी की है।

\*

आवरण पृष्ठ पर मुद्रित हस्त-लिखित पत्र ग्रन्थ की ऐतिहासिक पाण्डुलिपि के नमूने हैं। इनकी लेखिका हैं— तेरापंथ धर्मसंध की विदुषी साध्वी गुलाब, जो आशु- लेखन की कला में सिद्धहस्त थीं। जयाचार्य भगवती-जोड़ की रचना करते हुए पद्यों का सुजन कर बोलते जाते और महासती गुलाब अविकल रूप से उन्हें कलम की नोक से कागज पर उतारती जातीं। उस प्रथम ऐतिहासिक प्रति के ये पत्र प्रजा, कला और ग्रहण-शीलता की समन्विति के जीवन्त साक्ष्य हैं। मुद्रण का आधार यही प्रति है।

## भगवती जोड़

#### श्रीमज्जयाचार्य

### भगवती-जोड़

खण्ड ६ (शतक २४)

<sub>प्रवाचक</sub> गणाधिपति तुलसी प्रधान सम्पादक आचार्य महाप्रज्ञ

सम्पादन साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

प्रकाशक जैन विश्व भारती लाडनूं (राजस्थान)

प्रकाशक:
मंत्री
जैन विश्व भारती
लाडनूं-३४१३०६ (राज.)

ISB No. 81-7195-043-4

@ जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : १६६६

मूल्य: ४०० रुपये

मुद्रक:

मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

#### प्रकाशकीय

तेरापंथ आचार्यों के सम्यक् निर्देशन में जैन आगमों के सुव्यवस्थित वृहत् शोध कार्यों का सम्पादन जैन साहित्य के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।

साहित्य की बहुविध दिशाओं में आगम-ग्रन्थों पर श्रीमज्जयाचार्य ने जो कार्य किया है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्राकृत आगमों को राजस्थानी जनता के लिए सुबोध करने की दृष्टि से उन्होंने उनका राजस्थानी पद्यानुवाद किया जो सुमधुर रागनियों में गुम्फित है।

प्रथम आचारांग की जोड़, ज्ञाता की जोड़, उत्तराध्ययन की जोड़, अनुयोगद्वार की जोड़, पन्नवणा की जोड़, संजया, नियंठा की ढालें—ये क्रुतियां उक्त दिशा में जयाचार्य के विस्तृत कार्य की परिचायक हैं।

'भगवई' आगम साहित्य में सबसे विशाल ग्रन्थ है। विषयों की दृष्टि से यह एक महान उदिध है। जयाचार्य ने इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आगम-ग्रन्थ का भी राजस्थानी भाषा में गीतिकाबद्ध पद्यानुवाद किया। यह राजस्थानी भाषा का सबसे बड़ा ग्रंथ माना गया है। इसमें मूल के साथ टीका ग्रंथों का भी अनुवाद है और वार्तिक के रूप में अपने मंतव्यों को बड़ी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

भगवती जोड़ का प्रथम खण्ड जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर ''जैन वाङ्मय'' के चतुर्देश ग्रंथ के रूप में सन् १९८१ में प्रकाशित हुआ था। इसका दूसरा खण्ड सन् १९८६ में, तीसरा खण्ड सन् १९९० में, चौथा खण्ड सन् १९९४ में तथा पांचवां खण्ड सन् १९९५ में प्रकाशित हुआ। अब उसी ग्रन्थ का यह छठा खण्ड पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अति हर्ष का अनुभव हो रहा है।

प्रथम खण्ड में उक्त ग्रंथ के चार शतक, द्वितीय खण्ड में पांचवें से आठवें शतक तक, तृतीय खण्ड में नौवें से ग्यारहवें शतक तक, चतुर्थ खण्ड में बारहवें से पन्द्रहवें शतक तक, पांचवें खण्ड में सोलहवें से तेइसवें शतक तक संग्रहीत हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में मात्र एक चौबीसवां शतक है एवं परिशिष्ट में उसी शतक को यंत्रों के रूप में प्रस्तुति दी गयी है। प्रस्तुत खण्ड में मूल राजस्थानी कृति के साथ संबंधित आगम पाठ और टीका गाथाओं के सामने दी गयी है। इससे पाठकों को समक्षने की सुविधा के साथ-साथ मूल कृति के विशेष मंतव्य की जानकारी भी हो सकेगी।

इस ग्रन्थ का कार्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के तत्वावधान में हुआ है और इससे जुड़ा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का अथक श्रम ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ पर स्पष्ट अनुभूत होता है।

जैन विश्व भारती, लाडनूं २७ फरवरी, १९**९**६ ताराचन्द रामपुरिया मंत्री

#### सम्पादकीय

तेरापन्थ की आचार्य परम्परा में एक नाम है—श्रीमज्जयाचार्य। उनका जीवन अनेक दृष्टियों से विलक्षण था। उनकी विलक्षणता के कुछ बिन्दु हैं आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सृजनशीलता, गंभीर अध्यवसायशीलता, प्रयोगधर्मिता, प्रशासन कौशल, व्यवस्था कौशल, स्वाध्याय प्रियता, दूरदिशिता, प्रमोद भावना आदि। उनकी सृजनशीलता कई क्षेत्रों में उजागर हुई। उनमें एक व्यापक क्षेत्र है साहित्य का। उन्होंने साहित्य की स्रोतस्विनी अनेक धाराओं में प्रवाहित की। उन धाराओं में एक विशिष्ट धारा है आगम साहित्य का राजस्थानी भाषा में पद्यमय भाष्य। राजस्थानी भाषा में इस धारा के लिए जोड़ शब्द का प्रयोग होता है। जोड़ साहित्य में सर्विधिक विशाल और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है 'भगवती की जोड़'। पांच वर्ष की छोटी सी अविधि में भगवती जैसे आकर ग्रन्थ का किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करना भी बहुत श्रमसाध्य और निष्ठासाध्य कार्य है। जयाचार्य ने केवल भाषानुवाद ही नहीं किया, स्थान-स्थान पर समीक्षात्मक टिप्पणियां की हैं। उनकी शोधपूर्ण रचनाशैली की समीक्षा एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का विषय है।

जयनिर्वाण शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर भगवती-जोड़ का प्रकाशन शुरु हुआ। अब तक उसके पांच खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ इस श्रृंखला की छठी कड़ी है। इसमें केवल एक चौबीसवां शतक है। प्रथम और द्वितीय खण्ड में चार-चार शतकों की जोड़ आई है। तीसरे खण्ड में तीन शतक हैं। चौथे खण्ड में चार शतकों की जोड़ है और पांचवें खण्ड में आठ शतकों की।

प्रस्तुत खण्ड की जोड़ बहुत विस्तृत नहीं है। पर इसकी रचनाशैली और विषयवस्तु अन्य शतकों से भिन्न है। जैन सिद्धान्तों के आधार पर बनाए गए थोकड़ों में एक है 'गमां रो थोकड़ों'। गमक शब्द का अपभ्रंश या राजस्थानी रूप है गमा। इसके अनेक अर्थ हैं। सूत्रपाठ के सदृश आलापक को गमा कहा जाता है। प्रकार अर्थ में भी यह शब्द प्रयुक्त होता है। प्रस्तुत सन्दर्भ में स्थिति की अपेक्षा नौ प्रकार से बीस द्वारों की व्याख्या की गई है। यही है 'गमां रो थोकड़ो'।

पुराने साधु-साध्वयों और श्रावक-श्राविकाओं में इस थोकड़े को कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति थी। मैंने भी कई बार यह नाम सुना, किन्तु इसके बारे में कोई अवधारणा स्पष्ट नहीं हुई। प्रस्तुत खण्ड का काम प्रारंभ करते समय पहले पन्ने में ही अवरोध उपस्थित हो गया। इसका कारण था गमकों के बारे में जानकारी का अभाव। पूरी भगवती की जोड़ में किसी भी शतक के प्रारंभ में जोड़ से पहले कोई पृष्ठभूमि नहीं है। प्रस्तुत शतक में वर्ण्य विषय का पूरा सार-संक्षेप एक वार्तिक में दिया गया है। गमकों के सम्बन्ध में थोड़ी भी जानकारी न हो तो पूरे शतक की जोड़ पढ़े बिना केवल वार्तिक के आधार पर कुछ भी पल्ले नहीं पड़ सकता। हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ।

हमने बार-बार वार्तिक को पढ़ा, किन्तु हमारी समस्या हल नहीं हुई। हमने एक बार वार्तिक को छोड़ जोड़ का काम प्रारम्भ कर दिया। यह काम गुरुदेव के सान्निध्य में बैठकर किया था। इसलिए इसमें कोई अवरोध नहीं आया। जोड़ का काम पूरा हो गया। उसके बाद हमने पुन: वार्तिक को देखा। हमारी समभ की खिड़कियां खुल गई। उसका प्रतिपाद्य स्पष्ट हो गया।

भगवती जोड़ के सम्पादन में प्रारंभ से ही मेरे साथ संलग्न साध्वी जिनप्रभाजी ने कहा — 'जयाचार्य के लिए यह वार्तिक बहुत सरल रहा होगा, पर आज के पाठक इसे समभते में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसको आधुनिक दृष्टि से सम्पादित करना आवश्यक लगता है।' यह बात मुभे भी ठीक लगी। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया। आपकी स्वीकृति मिल गई। वार्तिक को सम्पादित करने का काम मैंने साध्वी जिनप्रभाजी को सौंप दिया। उन्होंने अपना दिमाग लगाया। वार्तिक को दो-तीन प्रकार से बदलकर देखा। आखिर उन्होंने उसको तीन यन्त्रों में रूपायित कर प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति के बाद उसे समभाना सुगम प्रतीत हुआ। इस दृष्टि से हमने जोड़ से पहले वार्तिक के स्थान पर उन यन्त्रों को रखा है।

भगवती-जोड़ के पांच खण्डों का काम हमने दो-दो आवृत्तियों में किया था। प्रथम आवृत्ति में गणाधिपति परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के साम्निध्य में गृहस्थों द्वारा लिखित प्रति का मुनि कुन्दनमलजी द्वारा लिखित 'भगवती-जोड़' की प्रति से मिलान किया जाता। दूसरी आवृत्ति में भगवती-जोड़ के आधारभूत-स्थलों — भगवती सूत्र, भगवती वृत्ति आदि का जोड़ के साथ सम्यक् समायोजन किया जाता। इस कम से ग्रन्थ के सम्पादन में दुगुना समय लगता। चौबीसर्वे शतक में सम्पादन की पद्धति बदल दी। इसमें पाठ का मिलान तथा पाठ एवं वृत्ति के समायोजन का काम साथ-साथ किया। इसका पूरा काम गुरुदेव की सिन्निधि में हुआ। इसिलए अज्ञात विषयवस्तु वाली सामग्री को सम्पादित करने में भी सुविधा हो गई। अन्यथा एक-एक प्रसंग की सम्पन्नता पर दिए गए यन्त्रों को समफने में बहुत कठिनाई रहती।

चौबीसर्वे शतक की जोड़ से पहले दिए गए प्रथम यन्त्र में २४ दण्डकों के ४४ घर बताए गए हैं। उन ४४ घरों में ३२१ स्थानों के जीव उत्पन्न होते हैं। प्रत्येक स्थान के नौ-नौ गमक होते हैं, जैसे—

- १. औघिक-औघिक
- २. औघिक-जघन्य
- ३. औधिक-उत्कृष्ट
- ४. जघन्य-औघिक
- ५. जघन्य-जघन्य
- ६. जघन्य-उत्कृष्ट
- ७. उत्कृष्ट-औघिक
- ८. उत्कृष्ट-ज**घ**न्य
- **९.** उत्कृष्ट-उत्कृष्ट

औषिक का अर्थ है—समुच्चय। जीव की उत्पत्ति के ४४ घरों में आने वाले जीव की जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकार की स्थिति का आकलन करने वाला गमक औषिक गमक है। प्रथम गमक में जीव जहां से आया है और जहां उत्पन्न होता है—इन दोनों स्थानों की औषिक स्थिति ली गई है।

औधिक-जघन्य—इस द्वितीय गमक में जीव जहां से आता है, उसकी औधिक और जहां उत्पन्न होता है, उसकी जघन्य स्थिति का ग्रहण होता है।

औषिक-उत्कृष्ट इस तृतीय गमक में जीव जहां से आता है उसकी औषिक और जहां उत्पन्न होता है, उसकी उत्कृष्ट स्थिति का ग्रहण होता है। इस कम से ही आगे के छहों गमक ज्ञातव्य हैं।

४४ घरों में ३२१ स्थानों के जीव उत्पन्न होते हैं। प्रत्येक स्थान के नौ-नौ गमक होने से ३२१×९=२८८९ गमक हो जाते हैं। सब जीवों की सब स्थानों में जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकार की स्थिति हो तो गमकों का उपर्युक्त आंकड़ा बनता है। किन्तु कुछ जीवों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति एक ही होती है। वहां नौ गमक नहीं बनते। जहां पूरे गमक नहीं बन पाते, उन्हें शून्य गमक या गमकों का टूटना माना गया है। इस पूरे प्रकरण में ८४ गमक शून्य हैं। इस लिए गमकों की संख्या २८०४ होती है।

२८०५ गमकों का २० द्वारों के माध्यम से वर्णन किया गया है। इस समग्र वर्णन को एक शब्द में समेटकर ऋदि कहा गया है। बीस द्वारों के नाम —

उपपात, परिमाण, संहनन, अवगाहना, संस्थान, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, उपयोग, संज्ञा, कषाय, इन्द्रिय, समुद्घात, वेदना, वेद, आयू, अध्यवसाय, अनुबन्ध और कायसंवेध ।

बीस द्वारों में संहनन, संस्थान, संज्ञा, कषाय, इन्द्रिय, वेदना, वेद और उपयोग इन आठ द्वारों का वर्णन एक समान है। शेष बारह द्वारों में कहीं-कहीं भिन्नता रहती है। इस भिन्नता को 'नाणत्ता' के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

जयाचार्य ने जोड़ की रचना के साथ-साथ एक-एक प्रकरण के अलग-अलग यन्त्र बना दिए। यन्त्रों की संख्या १६० हैं। इनके द्वारा विणत विषय पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है। भगवती-जोड़ की हस्तिलिखित प्रित में प्रत्येक प्रकरण के बाद उससे सम्बन्धित यन्त्र दिया गया है। यन्त्र की रचना कलात्मक तरीके से की गई है। जोड़ का सम्पादन करते समय प्रश्न सामने आया कि मुद्रण के समय यन्त्रों को कैसे रखा जाए ? इस प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में चिन्तन उभरा कि प्रत्येक प्रकरण के बाद सम्बन्धित यन्त्र रखने से मुद्रण में एकरूवता का अभाव रहेगा। बीच बीच में पृष्ठ खाली रहेंगे और अब्यवस्था होगी। इस चिन्तन के आधार पर गुरुदेव का निर्देश मिला कि सारे यन्त्रों को एक साथ परिशिष्ट में दे दिया जाए और जोड़ में उनका संकेत रहे ताकि पाठक को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

गुरुदेव के निर्देशानुसार काम शुरू किया। उसमें भी कठिनाई का अनुभव हुआ। मूल प्रति में सब यन्त्रों के उपपात द्वार अक्षरों में लिले हुए हैं और शेष १८ द्वार यन्त्र के कोष्ठकों में है। उन्नीस द्वारों के बाद 'नाणत्ता' का कोष्ठक है और बीसवां द्वार कायसंवेध स्वतन्त्र यन्त्र के रूप में दिया गया है इस द्विरूपता को दूर करने के लिए हमने उपपात द्वार और कायसंवेध (भवादेश और कालादेश) को भी मूल यन्त्र के साथ जोड़ दिया । इस प्रकार यन्त्रों के विन्यास में थोड़ा सा परिवर्तन हो गया ।

यन्त्र बहुत सुन्दर और व्यवस्थित थे। फिर भी प्रतिलिपि करने वालों ने अक्षर-विन्यास करते समय कहीं संक्षिप्त और कहीं पूर्ण रूप कर दिया। इससे यन्त्र रचना में एकरूपता नहीं हो पाई। सम्पादनकाल में एकरूपता के लिए प्रयत्न किया गया। यह काम कितना व्यवस्थित हो पाया है, इसकी समीक्षा पाठक करेंगे। इस काम में साध्वी जिनप्रभाजी ने जिस मनोयोग से समय और श्रम लगाया है, उसका उल्लेख कर मैं उनकी ध्येयनिष्ठा को कम नहीं करूंगी।

भगवती-जोड़ के इस छठे खण्ड में २४ उद्देशक हैं। एक-एक उद्देशक में एक-एक दण्डक में जीवों की आगित के आधार-गमकों का निरूपण है। एक उद्देशक को सही रूप में समफ्तने के बाद शेष उद्देशकों का बोध सरल हो जाता है। पर इसमें एक किठनाई और उपस्थित हो गई। आगे के अनेक स्थलों का संक्षिप्त वर्णन करके उनकी समग्र जानकारी के लिए पीछे के स्थलों का संकेत कर दिया गया। सूत्रकार ने यह प्रयोग ग्रन्थ-विस्तार के भय से किया होगा पर एक स्थल के अवबोध हेतु एक के बाद एक इस प्रकार अनेक संकेत स्थलों को देखने में पाठक उलफ जाता है। जयाचार्य ने जोड़ की रचना में भी इस संकेत प्रक्रिया का प्रयोग किया है। विस्तृत वर्णन जानने कं लिए पाठक को पूरी एक।ग्रता का अभ्यास करना होगा।

भगवती-जोड़ के अन्य खण्डों की तरह प्रस्तुत खण्ड के सम्पादन में भी गणाधिपित गुरुदेव श्री तुलसी का अनुग्रह भरा सान्निध्य बरावर उपलब्ध हुआ। यत्र तत्र आचार्यश्री महाप्रज्ञ के मार्गदर्शन से भी कार्य सुगम होता रहा। साध्वी जिनप्रभाजी ने इस खण्ड के सम्पादन में अतिरिक्त निष्ठा से काम किया। परिशिष्ट के यन्त्रों में पूरा श्रम उन्हीं का लगा है। जोड़ की पाण्डुलिपि के समानान्तर मूलपाठ और वृत्ति की पाण्डुलिपि साध्वी स्वणंरेखाजी ने तैयार की। हमारे सामने मूलपाठ को लेकर कोई भी कठिनाई आई, मुनि हीरालालजी का सहयोग सहज भाव से उपलब्ध होता रहा। प्रूफ निरीक्षण में साध्वी विभाश्रीजी और स्वस्तिकाश्रीजी का भी श्रम लगा। गुरुजनों की कृपा और साध्वयों के सहयोग से भगवती-जोड़ जैसे विशाल ग्रन्थ का सम्पादन हो रहा है, इसकी मुक्षे प्रसन्तता है।

११ जनवरी १९९६ लाडनूं, ऋषभद्वार —साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

## विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठ <u>ः</u>	पृथ्वीकाय में असन्ती मनुष्य की आगति	0 - 11
प्रथम नरक में असन्ती तिर्यंच पंचेंद्रिय की आगति	ر و	पृथ्वीकाय में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	१०५ १०५
प्रथम नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच	,	पृथ्वीकाय में असुरकुमार की आगति	१०२ १०७
पंचेंद्रिय की आगति	१८	पृथ्वीकाय में नवनिकाय की आगति	<b>१</b> ११
दूसरी नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच		पृथ्वीकाय में व्यंतर की आगति	<b>१</b> १३
पंचेंद्रिय की आगति	२७	पृथ्वीकाय में ज्योतिषी की आगति	११४
तीसरी से छट्टी नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी तियँच पंचेंद्रिय की आगति	<b>5</b>	पृथ्वीकाय में सौधर्म देव की आगति	, , , <sub>-</sub>
सातवीं नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच	२८	पृथ्वीकाय में ईशान देव की आगति	११७
पंचेंद्रिय की आगति	२९	अपकाय में पृथ्वीकाय आदि की आगति	१२०
प्रथम नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	₹ <i>७</i>	तेजकाय में पृथ्वीकाय आदि की आगति	<b>१२१</b>
दूसरी नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	४४	वायुकाय में पृथ्वीकाय आदि की आगति	<b>१</b> २३
तीसरी से छट्टी नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य		वनस्पति में पृथ्वीकाय आदि की आगति	<b>१</b> २३
की आगति	४७	बेइन्द्रिय में पृथ्वीकाय आदि की आगति	१२५
सातवीं नरक में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	४७	तेइन्द्रिय में पृथ्वीकाय आदि की आगति	१२७
असुरकुमार में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय की आगति	५२	चउरिन्द्रिय में पृथ्वीकाय आदि की आगति	१२९
असुरकुमार में तिर्यंच यौगलिक की आगति	५३	तियँच पंचेंद्रिय में प्रथम नरक की आगति	१३०
असुरकुमार में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय		तिर्यंच पंचेंद्रिय में दूसरी से छट्टी नरक की आगति	१३४
की आगति	५९	तियँच पंचेंद्रिय में सातवीं नरक की आगति	१३४
असुरकुमार में मनुष्य यौगलिक की आगति	६२	तियँच पंचेंद्रिय में पृथ्वीकाय की आगति	१३७
असुरकुमार में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	Ę <b>ų</b>	तियँच पंचेंद्रिय में अपकाय से चर्डारेद्रिय की आगति	१३९
नागकुमार में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय की आगति	६७	तियाँच पंचेंद्रिय में असन्नी तियाँच पंचेंद्रिय की आगति	१४०
नागकुमार में तिर्यंच यौगलिक की आगति	६८	तियँच पंचेंद्रिय में असन्नी मनुष्य की आगति	१४८
नागकुमार में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच		तियाँच पंचेंद्रिय में सन्ती मनुष्य की आगति	१४८
पंचेंद्रिय की आगति	७१	तिर्यंच पंचेंद्रिय में असुरकुमार की आगति	-
नागकुमार में मनुष्य यौगलिक की आगति	७४	तिर्यंच पंचेंद्रिय में नवनिकाय की आगति	<b>१</b> ५३
नागकुमार में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	७६	तिर्यंच पंचेंद्रिय में व्यंतर की आगति	१५५
सुपर्णकुमार से स्तनितकुमार में नागकुमार की तरह	ওട	तियँच पंचेंद्रिय में ज्योतिषी की आगति	१५६ १५७
पृथ्वीकाय में पृथ्वीकाय की आगति	७९	तिर्यंच पंचेंद्रिय में सौधर्म देव की आगति	१४९
पृथ्वीकाय में अपकाय की आगति	<b>দ ই</b>	तिर्यंच पंचेंद्रिय में ईशान देव से सहस्रार देव तक	141
पृथ्वीकाय में तेउकाय की आगति	द ६	की आगति	१६१
पृथ्वीकाय में वायुकाय की आगति	<b>५</b> ७	मनुष्य में प्रथम नरक की आगति	
पृथ्वीकाय में वनस्पतिकाय की आगति	<b>५९</b>	मनुष्य में दूसरी से छट्टी नरक की आगति	१६४
पृथ्वीकाय में बेइद्रिय की आगति	९३	मनुष्य में पृथ्वीकाय की आगति	१६६ ०६-
पृथ्वीकाय में तेइंद्रिय की आगति	९७	मनुष्य में अपकाय आदि की आगति	१६८ १७०
पृथ्वीकाय में चर्डिरद्रिय की आगति	९५	मनुष्य में असुरकुमार की आगति मनुष्य में असुरकुमार की आगति	900 9109
पृथ्वीकाय में असन्ती तियँच पंचेंद्रिय की आगति	१०१	मनुष्य में नवनिकाय की आगति मनुष्य में नवनिकाय की आगति	१७१ १७२
पृथ्वीकाय में संख्याता वर्ष के सन्नी तियँच पंचेंद्रिय	0 - 2	•	१७२ १७३
की आगति	१०३	मनुष्य में सनत्कुमार आदि देवों की आगति	१७३

मनुष्य में नौर्वे देवलोक के देवों की आगति	१७३	पहले देवलोक में मनुष्य यौगलिक की आगति	190
मनुष्य में दसवें से बारहवें देवलोक के देवों की आगति	१७४	पहले देवलोक में संख्याता वर्ष के सन्ती मनुष्य	
मनुष्य में ग्रैवेयक देवों की आगति	१७६	की आगति	१९८
मनुष्य में अनुत्तर विमान के देवों की आगति	१७९	दूसरे देवलोक में ममुष्य योगलिक की आगति	१९९
व्यंतर में असन्ती तियंच पंचेंद्रिय की आगति	१८१	तीसरे देवलोक में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच	
व्यंतर में तिर्यंच यौगलिक की आगति	१८१	की अ!गति	२००
व्यंतर में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच की आगति	१८३	तीसरे देवलोक में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य	
व्यंतर में मनुष्य यौगलिक की आगति	१८३	की आगति	२००
व्यंतर में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	१८३	चौथे से आठवें देवलोक में सन्ती तिर्यंच व सन्ती	
ज्योतिषी में तिर्यंच यौगलिक की आगति	१८४	मनुष्य की आगति	२०१
ज्योतिषी में संख्याता वर्ष के सन्नी तियँच पंचेंद्रिय		नौवें देवलोक में सन्नी मनुष्य की आगति	२०२
की आगति	१८८	दसवें से बारहवें देवलोक में सन्नी मनुष्य की आगति	२०३
ज्योतिषी में मनुष्य यौगलिक की आगति	१९०	नौ ग्रैवेयक में सन्नी मनुष्य की आगति	२०४
ज्योतिषी में संख्याता वर्ष के सन्नी मनुष्य की आगति	१९१	चार अनुत्तर विमान में सन्नी मनुष्य की आगति	२०४
पहले देवलोक में तिर्यंच यौगलिक की आगति	१९३	3	२०५
पहले देवलोक में संख्याता वर्ष के सन्नी तिर्यंच		सर्वार्थसिद्ध में सन्नी मनुष्य की आगति	403
की आगति	१९६		

### चतुर्विशतितम शतक

# गमां नों अधिकार २४ दण्डक नां ४४ घर

<b>४ खं</b> ४ अ		संख्या			mr >>	_	<b>ઝ</b>	_	<u> </u>	•	>-	_		88		<u> </u>		328
सर्वार्थेसद्ध १		नां नाम	। ६ पृथ्वी ७ १२ असन्नी	मनुष्य १३ असन्नी तियंच पंचेद्रिय १४ सन्नी तियंच १५ सन्नी मनुष्य १६ दस भवनपति २६वाण-	देवलोक ४० ४२ सर्वाध-		सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ३ सन्नी मनुष्य कर्मभूमि ५	ायो १	न्नी मनुष्य	गयो १	नयो ३	च पंचेंद्रिय १		ર×૬		الالمرابع الالالالالالالالالالالالالالالالالالال		
४ अनुत्तर विमान १		जिण-जिण ठिकाणां नां ऊपजै तेहनां नाम	४३ डिकाणां नां ऊपजैं — छह नारकी अप्	असन्नी तियँच पंचेद्रिय १४ भी मनुष्य १६ दस भवनपति २	व्यतर २७ ज्यातिषो २८ बारह देवलोक ४० ग्रैवेयक ४१ च्यार अनुत्तर विमान ४२ सर्वार्थ- सिद्ध ४३	५ ठिकाणां नां ऊपजै असन्नी तियंच	सन्नी तिर्यंच सन्नी मनुष्य क	४ ठिकाणां नां ऊपजै - तियंच यूगलियो १	मनुष्य युगलियो २ सन्नी तियैच रे सन्नी मनुष्य क्रमंभनि ४	४ ठिकाणां नां ऊपजै तियैच यगलियो	सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय २ मनुष्य यूगलियो ३ सन्नी मनुष्य कर्मभूमि ४	२-२ ठिकाणां नां ऊपजैसन्नी तियैच पंचेंद्रिय	सन्नी मनुष्य २		ग्नै— मही मदस्य रूपेशिस	الله الله الله الله الله الله الله الله		
९ ग्रेबेयक १		जिण ठिकाणां	४३ ठिकाणांनां ऊपजै — छह नारकी अप् च बनस्पति ९ तीन विकरुंद्रिय	१३ असन्नी १४ सन्नी मनुष्ट	२७ ज्योतिषी ४१ च्यार अनु १	णां नां ऊपज्ञे	तिर्यंच युगलियो  २ मनुष्य युगलियो ४	णां ना ऊपजै	ाृगलियो २ सघ ∵×	णां नां ऊपजे	सन्नी तिर्येच पंचेंद्रिय २ सन्नी मनुष्य कर्मभूमि ४	काणां ना ऊप	सम्भ		१-१ ठिकाणां नां ऊपजै— =			
१२ देवलोक १२	4 2 2	- जिव	४३ ठिक अप् द इ	मनुष्य तियैच १	व्यतर ग्रैवेयक ४ सिद्ध ४३	४ ठिका	तियंच य मनुष्य य	४ ठिका	मनुष्य य	-	सन्नी ति सन्नी मन	2-२ कि				, lt		
ज्योतिषी <b>१</b>	३२१ ठिक णां नां ऊपजै तेहनों विवरो	घर	मनुष्य			वाणव्यंतर		ज्योतिषी		प्रथम दो देवलोक		तीसरे से आठबें	देवलोक		ऊपर के च्यार नेननोक मैनेगक	५५%।५%, ४५५५%, च्यार अनुत्तरविमान	सर्वार्थ सिद्ध	
ब्यंतर १	ां नां ऊपजै		9			75		38		30,38		38-5E			3a-8	, ip		
नुष्यपं चेंद्रिय १	२१ ठिकाण	सच्या		<b>6</b> 5	~-	×		~	m (r	ນ ອ				0				
(य तियैचपंचेंद्रिय मिनुष्यपंचेंद्रिय १	४४ घरां में ३	ाजै तेहनां नाम	ो तियैच पचेद्रिय १ । मनुष्य कर्मभूमि ३	सन्ती तियेच पचेद्रिय १ सन्ती मनुष्य २×६=	-असन्नी तिर्यंच पंचेद्रिय १ सन्नी तिर्यंच पंचेद्रिय ३ सन्नी मन्घ्य कर्मभूमि ४	= 0 × × ×	- पांच स्थावर ५ गितियुंच पंचेंदिय ९		र्श्वाणव्यंतर २	= X 3 X X 3 = + X 4 X 3 X X 3 X X X X X X X X X X X X X	पांच स्थावर ४ यैच पचेतिय ९	ी मनुष्य ११	)	= x × s s	-सात नारकी ७ नोत्र विकस्टेंनिम १५	भारताप्त्रचा ५५ तियाच पंचेंद्रिय	ध्य १९	वाणव्यंतर ३०
बर ३ विकलेंद्रिय ३		जिण जिण ठिकाणां नां ऊपजै	३ ठिकाणां ना ऊपजे — असन्ती सन्ती तियैच पंचेंडिय २  सन्ती ।	२-२ ठिकाणां नां उपजेसन्ती सन्नी	ा ऊपजे— २ ४		२६-२६ ठिकाणां नां ऊपजै — नीन निकलेंदिय ८	र्य	असन्ती मनुष्य १२ दस भवनपति >ि-१२ ८८ सल्ला को वेजलोक	- - - - - - - - - - - - - - - - - - -	१२-१२ ठिकाणां नां ऊपजै—पांच स्थावर ४ त्रीम तिक्रक्रेंटिंग ८ असती तियंच पंचेंदिय ९	सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय १० सन्नी	~ ~ ~ ~		पजे —	१९ पंचेंद्रिय १६ सर्घ	१८ सन्नी मनुष्य	
१० भवनपति ४ स्थावर १० ५		जिण जिण	३ ठिकाणां नां ऊपजे सन्नी तियैच पंचेंहिय	२-२ ठिकाणां	५-५ ठिकाणां नां तियैच युगलियो २ मनध्य यमलियो ४	9	२६-२६ ठिकाणां नीन विकलेंदिय द	सन्नी तियैच प	असन्ती मनुष्य	*   PD   PS	१२-१२ ठिका	सन्नी तिर्यंच ।	असन्नी मनुष्य १२		३९ ठिकाणा	्राच स्थावर १५ असन्नीतियैच पंचेति	असन्नी मनुष्य १ प	दस भवनपति २९ व
७ नारकी १० भा ७ ९		घर	प्रथम नरक	शेष छह नरक	दश भवनपति		पृथ्वी, पानी, ववस्पनि	NI LAILE			तेउ, वायु, तीन <sub>विस</sub> स्टेटिंग	-			तियंच पंचेंद्रिय			
-	-		~	9-k	ອ <b>~</b> ເກ		85-2°				28-38				87		•	

## २८०५ गमा नो विवरो

१. ओषिक ने ओषिक ४. जषन्य ने ओषिक	२. ओधिक नैं जधन्य 🔾 जघन्य मैं जघन्य	३. ओषिक ने उत्कृष्ट ६. जघन्य मै उत्कृष्ट	७. उत्कृष्ट ने ओषिक	त. उत्कृष्ट में जघन्य	९. उत्कृष्ट मैं उत्कृष्ट	९×३२१=२८८९ गमा	ूद४ गमा द्वर्ट-द <b>४</b>	२८०५ गमा
•~	ir	110						
		<ol> <li>अोधिक ने ओधिक</li> <li>अोधिक ने जधन्य</li> </ol> ४. जघन्य ने जधन्य	<ol> <li>अोधिक ने अोधिक</li> <li>अोधिक ने जधन्य</li> <li>अोधिक ने जस्कट</li> <li>अोधिक ने उस्क्रिट</li> </ol>	<ol> <li>अोधिक नै अोधिक</li> <li>अोधिक नै जधन्य</li> <li>अोधिक नै उरक्रुट</li> <li>अोधिक नै उरक्रुट्ट नै अोधिक</li> </ol>	<ol> <li>अोधिक ने अोधिक</li> <li>अोधिक ने जधन्य</li> <li>अोधिक ने उस्कृष्ट</li> <li>अोधिक ने उस्कृष्ट ने अोधिक</li> <li>उस्कृष्ट ने अोधिक</li> <li>उस्कृष्ट ने अधिक</li> </ol>	<ol> <li>अोधिक ने अोधिक ४. जघन्य ने अोधिक</li> <li>२. ओधिक ने जघन्य भे जघन्य ने उत्कृष्ट         <ul> <li>३. ओधिक ने उत्कृष्ट ने अोधिक</li> <li>६. जघन्य ने उत्कृष्ट</li> <li>द. उत्कृष्ट ने अोधिक</li> <li>८. उत्कृष्ट ने जघन्य</li> <li>९. उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट</li> </ul> </li> </ol>	<ol> <li>अोधिक ने अोधिक ४. जघन्य ने अोधिक</li> <li>श्रोधिक ने जघन्य १. जघन्य ने जघन्य ने उत्कृष्ट ३. ओधिक ने उत्कृष्ट ने अोधिक</li> <li>७. उत्कृष्ट ने अधिक</li> <li>८. उत्कृष्ट ने जघन्य</li> <li>९. उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट</li> <li>९. उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट</li> </ol>	<ol> <li>शोधिक ने अधिक</li> <li>शोधिक ने जधन्य</li> <li>शोधिक ने जधन्य</li> <li>शेधिक</li> <li>उत्कुष्ट ने अधिक</li> <li>उत्कुष्ट ने अधिक</li> <li>उत्कुष्ट ने अधिक</li> <li>उत्कुष्ट ने अधिक</li> <li>उत्कुष्ट ने उत्कृष्ट ने अधिक</li> <li>उत्कुष्ट ने उत्कृष्ट ने उत्कुष्ट</li> <li>उत्कुष्ट ने उत्कृष्ट ने उत्कुष्ट</li> </ol>

गमा दृटा	**************************************	d،	3=EXX	बे, २×३=६ ६		·ξυ	ÇŲ.	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
	असन्नी मनुष्य ऊपजतां ३-३ गमा हुनै ६-६ गमा दूउै ६	तियँच यगलियो उपजतां ७-७ गमा हुवै	२-२ गमा दूटै	मनुष्य युगलियो उपजतां ७-७ गमा हुने, २-२ गमा दूटै	सर्वार्थ सिद्ध थकी चनी मनुष्य ऊपजतां ३ गमा हुवै	शेष ६ गमा टूटे	कमेभूमि मनुष्य अपजतां ३ गमा हुवै, 5 गमा उनै	),6 
	पृथ्वी १ पानी २ वनस्पति ३ बेइंद्रिय ४ तेइंद्रिय ५ चर्डारदिय ६ असन्नी तियंच पंचेंद्रिय ७ सन्नी तियंच पंचेंद्रिय ८ असन्नी मनुष्य ९ सन्नी	मनुष्य कमभूषि १० ज्योतिषी १ सौधर्म २	ई्यान १		मनुष्य		सर्वार्थं सिद्ध	

द४ गमा टूटै तेहनों विव**रो** 

#### चतुर्विशतितम शतक

#### ढाल : ४१२

#### दूहा

- १. आख्यो शत तेवीसमो, अथ अवसर आयात। शत चउवीसम आदि में, द्वार संग्रह गाथ।। उपपात आदि बीस द्वार
  - २. नारक प्रभु! किहां थकी, ऊपजवो ऊपजस्यै नरकादि में, तसु परिमाण कहात।।
  - ३. किसा संघयण तणों धणी, नारक प्रमुखे जंत । अवगाहना, तेह तणीं स्यूं हुंत ।। उच्चपणें
  - ४. फुन संठाण रुलेश वलि, दृष्टि रु ज्ञान अज्ञान । जोग अने उपयोग फून, संज्ञा कषाय जान।।
  - इंद्रिय तिण में केतली, समुद्घात वेदन्न । कहिवा वेद रु आउखो, अध्यवसाय प्रपन्न।।
  - ६. कहिवो फुन अनुबंध तसु, कायसंवेध कहाय। चउवीसम शत नैं विषे, बीस द्वार ए आय।।
  - ७. हिव चउवीसम शतक नां, उद्देशक परिमाण। तेह जाणवा नें अर्थ, आगल गाथा जाण।।
  - द. नारक आदि देई करी, जीव पदे अवधार । जीव तणां चउवीस जे, दंडक करि सुविचार ।।'
  - तणों, उद्देशक इक-एक। दंडक उद्देशक चउवीस इम, शत चउवीसम पेख।।

बा० -ए गाथा उक्त द्वार नीं दोय गाथा थकी किहाइक पहिलां दीसे छै।

१०. नगर राजगृह नैं विषे, जाव वदै वच एम। गोतम भक्ता वीर नों, प्रश्न करें धर प्रेम।।

- १. व्याख्यातं त्रयोविशं शतम्, अथावसरायातं चतुर्विशं शतं व्याख्यायते, तस्य चादावेवेदं सर्वोद्देशकद्वारसंग्रह-गाथाद्वयम्---(वृ० प० ५०५)
- २. १. उववाय २. परीमाणं, 'उववाय' ति नारकादयः कुत उत्पद्यन्ते ? इत्येव-मुपपातो वाच्यः 'परीमाणं' ति ये नारकादिष्त्पत्-स्यन्ते तेषां स्वकाये उत्पद्यमानानां परिमाणं वाच्यं (वृ• प• ५०५)
- ३. ३.४. संघयणुच्चत्तमेव 'संघयणं' ति तेषामेव नारकादिष्टिपत्सूनां संहननं वाच्यम् 'उच्चत्तं' ति नारकादियायिनामवगाहना-प्रमाणं वाच्यम्, (বৃত খণ দণ্দ)
- ४. ५. संठाणं । ६. लेस्सा ७. दिट्टी ८. नाणे, अण्णाणे ९. जोग १०. उवओगे ॥१॥ ११ सण्णा १२. कसाय
- ५. १३. इंदिय, १४. समुग्वाया १५. वेदणा य १६ वेदे य। १७. आउं १८. अज्भवसाणा,
- ६. १९. अणुबंधो २०. कायसंवेहो ।।२।।
- ७. अथाधिकृतशतस्योद्देशकपरिमाणपरिज्ञानार्थं गाथा-(वृ० प० ५०९)
- ८,९. जीवपदे जीवपदे, जीवाणं दंडगम्मि उद्देसो । चउवीसतिमम्मि सए, चउव्वीसं होति उद्देसा ॥३॥

वा॰ — इयं च गाया पूर्वोक्तद्वारगाथाद्वयात् क्वचित् पूर्वं दृश्यत इति । (वृ० प० ८०९) १०. रायगिहे जाव एवं वयासी-

१. परि. १

#### नरक का अधिकार

\*जय जय ज्ञान जिनेंद्र नों ।। (ध्रुपदं)

- ११. प्रभु ! नारक किहां थकी ऊपजै ?

  स्यं नारक थी उपजंत हो ? जिनेंद्र !

  कै तिरि मनु सुर थी हुवै ?
  - जिन भाखें सुण संत हो। मुणिद्र!
- १२. नारक थी नहिं ऊपजै, तियँच थी उपजंत हो। मनुष्य थकी पिण ऊपजै, देव थकी नहिं हुंत हो।।
- १३. जो तियंच थी ऊपजै, स्यूं एकेंद्री थी उपजंत हो ? बे.ते. चउरिंद्री थी ऊपजै, तियंच पंचेंद्री थी हुंत हो ?
- १४. जिन कहै एकेंद्री थी निह हुवै, बे.ते. चउरिंद्री थी नांय हो । तिर्यंच पंचेंद्री थकी, नरक विषे उपजाय हो ।।
- १५. जो तिरि पंचेंद्री थकी, नरक विषे उपजंत हो । तो स्युंसन्नी पं. तिरि थकी,
  - असन्नी पं. तिरि थी हुंत हो ?
- १६. जिन कहै सन्नी-पंचेंद्री तिर्यंच थी पिण हुंत हो । असन्नी पं. तिरि थी पिण विल, नरक विषे उपजंत हो ।।
- १७. जो असन्नो-पंचेंद्री-तिर्यंच थी, नरक विषे उपजंत हो । तो स्यूं जलचर थी ऊपजै, कै थल-खहचर थी हुंत हो ?
- १८. जिन कहै जलचर पिण मरी, नरक विषे ऊपजेह हो । थलचर मरि पिण ऊपजै, खहचर पिण हवै तेह हो ।।
- १९. जो जल-थल-खहचर थकी, नरक विषे उपजंत हो । स्यूं पर्याप्ता थी ऊपजै, कं अपर्याप्ता थो हुंत हो ?
- २०. जिन कहै पर्याप्तो मरो, ऊपजै नरक मक्तार हो । अपर्याप्तो निहं ऊपजै, विल पूछै गणधार हो ।। प्रथम नरक में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय उपजै, तेहनों अधिकार ।
- २१ हे प्रभुजी ! पर्याप्त जे, असन्नी पंचेंद्री तिरि तेह हो । ऊपजवा जोग्य नरक में, किती पृथ्वी विषे उपजेह हो ?
- २२. जिन भाखै सुण गोयमा ! एक रत्नप्रभा रै मांय हो । असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच नों पर्याप्तो मरी थाय हो ॥
- \*लय: धिन-धिन जंबू स्वाम नै
- १. परि. २, यंत्र १
- ६ भगवती जोड

- ११. नेरइया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति—िकं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहितो उववज्जंति ? देवेहितो उववज्जंति ?
- १२. गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति नो देवेहिंतो उववज्जंति । (श० २४।१)
- १३. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—िंक एगिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
- १४. गोयमा ! नो एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उव-वज्जंति, नो बेंदिय. नो तेइंदिय, नो चउरिदिय, पंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति । (श० २४।२)
- १५. जइ पंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति किं सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ? असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ?
- १६. गोयमा ! सण्णिपंचितियतिरिक्खजोणिएहिंतो उत्रवज्जंति, असण्णि-पंचितियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति । (श० २४।३)
- १७. जइ असण्णिपंचितियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—िकं जलचरेहितो उववज्जति ? थल-चरेहितो उववज्जति ? खहचरेहितो उववज्जित ?
- १८. गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो वि उववज्जंति, खहवरेहिंतो वि उववज्जंति । (श० २४।४)
- १९. जइ जलचर-थलचर-खहचरेहितो उववज्जंति—िक पज्जत्तएहितो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहितो उववज्जंति ?
- २०. गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तए-हिंतो उववज्जंति । (श० २४।४)
- २१. पज्जताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पृढवोसु उववज्जेज्जा ?
- २२. गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा । (श॰ २४।६)

वा॰ इहां असन्नी-तियँच-पंचेंद्री रत्नप्रभा में ऊपजै, तेहनां नव गमा मोधिक नैं ओधिक १, ओधिक नैं जघन्य २, ओधिक नैं उत्कृष्ट ३, जघन्य नै सोधिक ४, जघन्य नैं जघन्य ५, जघन्य नैं उत्कृष्ट ६, उत्कृष्ट नैं ओधिक ७, उत्कृष्ट नैं जघन्य ६, उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट ९, ए नव गमक में ओधिक नैं ओधिक प्रथम गमो कहै छैं —

#### ओघिक नै ओघिक' [१]

#### १. उपपात द्वार

- २३. असन्नी पं. तिरि पर्याप्तो, रत्नप्रभा नैं विषेह हो । नारकपणैं ऊपजवा जोग्य जे, किति स्थिति विषे उपजेह हो ?
- २४. श्री जिन भाखै जघन्य थी, दश सहस्र वर्ष स्थितिकेह हो । उत्कृष्ट पत्योपम तणों, असंख्यातमा भाग विषेह हो ।।

#### २. परिमाण द्वार

- २५. असन्नी पंचेंद्री तिरियोनिक प्रभु! पर्याप्ता छै जेह हो । एक समय किता ऊपजै, रत्नप्रभा नैं विषेह हो?
- २६. श्री जिन भाखै जघन्य श्री, एक दोय नैं तीन हो । उत्कृष्ट संख्याता ऊपजै, अथवा असंख कशीन हो ।।

#### ३. संघयण द्वार

२७. स्यूं प्रभु ! ते जीवां तणें, तनु संघयणी कहाय हो ? श्री जिन भाषे छेवट्ट-संघयणी छै ताय हो ।।

#### ४. अवगाहना द्वार

- २८. हे प्रभुजी ! ते जीवा तणीं, किती मोटी काय हो । शरीर तणीं अवगाहना, असन्नी पं. तिरि नीं कहाय हो ?
- २९. श्री जिन भाखै जघन्य थी, आंगुल नों अवधार हो । असंख्यातमो भाग छै, उत्कृष्ट योजन हजार हो ।।

#### ५. संठाण द्वार

३०. हे प्रभु! ते जीवां तणों, तनु नों स्यूं संठाण हो ? जिन कहैं हुंड संठाण छै, ए आकार पिछाण हो ।।

#### ६. लेश्या द्वार

३१. हे प्रभु! ते जीवां तणें, कितरी लेश्या होत हो? जिन कहै त्रिण लेश्या कही, कृष्ण नील कापोत हो।

#### ७. दृष्टि द्वार

३२. हे प्रभुजी ! ते जीवड़ा, स्यूं समदृष्टी होय हो। कै मिथ्यादृष्टी तिके, कै समामिथ्यादृष्टी सोय हो?

- २३. पञ्जत्ताअसिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणपभाए पुढवीए नेरइएसु उवविज्जत्तए, से णं भंते ! केवितिकालिट्टितीएसु उववज्जेज्जा ?
- २४. गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिट्टितीएसु, उक्को-सेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्टितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।७)
- २४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
- २६. गोयमा! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिष्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। (श० २४।८)
- २७. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंघयणी पण्णत्ता । खेवट्टसंघयणी पण्णत्ता । (श० २४।९)
- २९. गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसह्रस्सं । (श० २४।१०)
- ३०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिया पण्णत्ता? गोयमा ! हुंडसंठिया पण्णत्ता । (श० २४।११)
- ३१. तेसि णं भंते ! जीवाणं कित लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा— कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा ।

(श० २४।१२)

३२. ते णंभते ! जीवा कि सम्मदिट्टी ? सिच्छादिट्टी सम्मामिच्छादिट्टी ?

श० २४, उ० १, ढा० ४१२ ७

असन्नी तियँच पंचेंद्रिय नीं समुच्चय स्थिति अनै रत्नप्रभा नै विषे पिण समुच्चय स्थिति ।

३३. जिन कहै ते असन्नी-तिरि., समदृष्टी निहं ताहि हो ।

मिथ्यादृष्टी तेह छै, समामिथ्यादृष्टी नांहि हो ।।

वा॰—इहां पर्याप्ता असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय नीं पूछा छै। ते पर्याप्ता में सास्वादन समदृष्टि न पार्व, ते भणी समदृष्टि वरजी दीसै छै।

#### प. ज्ञान-अज्ञान द्वार

३४. स्यूं ज्ञानी अज्ञानी तेह छैं ? जिन कहैं ज्ञानी नांय हो । अज्ञानी निश्चै करी, मित श्रुत अनाणी कहाय हो।।

#### ९. जोग द्वार

३५. ते मन जोगी स्यूं प्रभु! के वच काय प्रयोग हो? जिन कहैं मन जोगी नहीं, होवे वचन काय जोग हो।।

#### १०. उपयोग द्वार

३६. ते प्रभुजी ! स्यूं जीवड़ा, सागारोवउत्ता कहाय हो । अणागारोवउत्ता तिके ? जिन कहै दोनूं थाय हो ।।

#### ११. संज्ञा द्वार

३७. प्रभु ! संज्ञा कती ते जीव रें ? जिन कहै संज्ञा च्यार हो । आहार संज्ञा नें भय संज्ञा, मिथुन परिग्रह धार हो ।।

#### १२. कषाय द्वार

३८. हे प्रभुजी ! ते जीव रै, केतली कही कषाय हो ? जिन कहै च्यार कषाय छै, कोधादिक कहिवाय हो ॥

#### १३. इन्द्रिय द्वार

३९. कित इंद्री प्रभु ! तेहनैं ? जिन कहै इंद्रिय पंच हो । दाखी धुर श्रोतेंद्रिय, जाव फासेंदिय संच हो ।।

#### १४. समुद्घात द्वार

४०. प्रभु ! समुद्घात कित तेहनैं ? जिन भाखे त्रिण हुंत हो । समुद्घात धुर वेदना, कषाय नैं मारणंत हो ।।

#### १५. वेदग द्वार

४१. सातावेदगा ते प्रभु! कै असातावेदग हुंत हो ? जिन कहै सातावेदगा, असाता पिण वेदंत हो ।।

#### १६. वेद द्वार

४२. स्यूं प्रभु ! ते स्त्रीवेदगा, कै पुरुष नपुंसक सोय हो ? जिन भाखै स्त्री पुं. नहीं, वेद नपुंसक होय हो ।।

#### १७. स्थिति द्वार

४३. प्रभु ! किता काल नीं स्थिति तसु ? भाखे जिन गुणिमोड़ हो । अंतर्मुहूर्त्त जघन्य थी, उत्कृष्ट पूर्व कोड़ हो ।।

#### ८ भगवती जोड़

३३. गोयमा ! नो सम्मिदिट्टी, मिच्छादिट्टी, नो सम्मा-मिच्छादिट्टी। (श० २४।१३)

३४. ते णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा —

मइअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य। (श० २४।१४) ३४. ते णं भंते! जीवा किं मणजोगी? वइजोगी?

कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि । (भ० २४।१५)

३६. ते णं भंते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणा-गारोवउत्ता ?

गोयमा ! सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि । (श० २४।१८)

३७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कित सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा । (श० २४।१७)

३८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कित कसाया पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा— कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए । (श० २४।१८)

३९. तेसि ण भंते ! जीवाणं कित इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचेंदिया पण्णत्ता, तं जहा सोइंदिए जाव फासिंदिए। (श० २४।१९)

४०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कित समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा— वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतिय-समुग्घाए। (श० २४।२०)

४१. तेणं भंते! जीवा कि सायावेयगा? असाया-वेयगा?

गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि। (श० २४।२१)

४२. ते णं भंते ! जीवा कि इत्थीवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ? गोयमा ! नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसक-वेदगा । (श० २४।२२)

४३. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुब्व-कोडी । (श्र० २४।२३)

#### १८. अध्यवसाय द्वार

४४. प्रभु! अध्यवसाय तसु केतला ? जिन भाखे असंख्यात हो । पसत्य अपसत्थ स्यूं प्रभु! जिन कहै बिहुं आख्यात हो ।।

#### १९. अनुबंध द्वार

- ४५. हे प्रभु ! ते पर्याप्तो-असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच हो । काल थकी कितरो अद्धा ? ए अनुबंध सुसंच हो ।। ४६. श्री जिन भाखें जघन्य थी, अंतर्मुहूर्त्त होय हो । उत्कृष्ट पूर्व कोड़ है, आयु जितो अवलोय हो ।। २०. कायसंवेध द्वार
- ४७. ते प्रभुजी ! पर्याप्तो-असन्नी पंचेंद्रिय तियँच हो । रत्नप्रभा पृथ्वी विषे, नरकपणें रहि संच हो ।। ४८. पुनरिष ह्वं पर्याप्तो-असन्नी पंचेंद्री तिरि न्हाल हो । इम केतलो काल सेवै तिको,

करें गति आगति कितो काल हो?

४९. जिन भाखे भव आश्रयी, बे भव ग्रहण सुजोय हो । इक भव तिरि पं. असन्नियो, दूजो नारक भव होय हो ।।

#### सोरठा

- ५०. मरी नेरइयो सोय, अंतर रहित सन्नीज ह्वै। असन्नी न ह्वै कोय, ते माटै भव ग्रहण बे।।
- ५१. \*काल आश्रयी जघन्य थी, वर्ष सहस्र दश तास हो । अंतर्मृहुर्त्त अधिक ही, हिव तसु न्याय विमास ही ।।

#### सोरठा

- ५२. वर्ष सहस्र दश वक्क, जघन्य स्थिति नारक तणी । अंतर्मुहूर्त्तं अधिक्क, असन्नी पं. तिरि आउखो ।।
- ५३. उत्कृष्ट पत्योपम तणों, असंख्यातमो भाग हो । कोड़ पूर्व वले अधिक ही, हिव तसु न्याय सुमाग हो ।।

वा० इहां असन्नी भवे पूर्व कोड़ उत्कृष्ट आउखो भोगवी पहिली नरके पत्य के असंख्यातमे भाग नेरइयापणें ऊपनो । ए बिहुं भव उत्कृष्ट स्थिति नुं काल जाणवूं।

५४. सेवै कालज एतलो, करै गित आगित इतो काल हो । ओघिक नैं ओघिक गमो, दाख्यो प्रथम दयाल हो ।।

वाo — इहां ज्ञान-अज्ञान द्वार एक गिणियो ते मार्ट बीस द्वार जाणवा। इति ओधिक नै ओधिक प्रथम गमक कह्यो । असन्नी-तिर्यंच-पंचेंद्री पर्याप्तो

\*लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

- ४४. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्भवसाणा पण्णत्ता ?
  - गोयमा ! असंखेज्जा अज्अवसाणा पण्णत्ता । (श• २४।२४)

ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि।

(श० २५।२५)

- ४४. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्ख-जोणिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ?
- ४६. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुब्व-कोडी । (श० २४।२६)
- ४७. से णं भंते ! पज्जत्ताअसिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए,
- ४८. पुणरिव पञ्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ?
- ४९. गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, 'दो भवग्गहणाइं' ति एकत्रासञ्ज्ञी द्वितीये नारकः (वृ० प० ८०९)
- ४०. ततो निर्गतः सन्ननन्तरतया सञ्ज्ञित्वमेव लभते न पुनरसञ्ज्ञित्वमिति, (वृप०८०९)
- भ्र. कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भिहयाइं,
- ५२. दश वर्षसहस्राणि नारकजघन्यस्थितिरन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधि-कानि असञ्ज्ञिभवसम्बन्धिजघन्यायुः सहितानीत्यर्थः (वृ० प० ८०९)
- ५३. उक्कोसेणं पिलझोवमस्स असंबेज्जइभागं पुव्वकोडि-मब्भहियं,
  - वा० —इह पत्योपमासंख्येयभागः पूर्वभवासिङ्ज-नारकोत्कृष्टायुष्करूपः पूर्वकोटी चासङ्झुत्कृष्टा-युष्करूपेति, (वृ० प० ८०९)
- ४४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ।।१।। (श० २४।२७)

समुच्चय ग्रहण कियो । अनै प्रथम नरके नेरइयापणै उपजै ते नेरइयो पिण समुच्चय ग्रहण कियो । ए बिहुं नीं स्थिति निकेवल जघन्यईज ग्रहण न कीधी तथा निकेवल उत्कृष्टईज ग्रहण न कीधी , जघन्य-उत्कृष्ट बेहुं समुच्चय ग्रहण कीधी । तिणसूं असन्नी-तिर्यंच-पंचेंद्री अनै नारकी ए बिहुं नै ओघिक कह्या । ते मार्ट ओघिक नै ओघिक ए प्रथम गमक कह्यो ॥ १॥

#### औधिक नें जघन्य [२]

वा० -- असन्नी-तियँच-पंचेंद्री नैं तो ओघिक जघन्य स्थिति थकी उत्कृष्ट स्थिति लगै ग्रहण ए ओघिक अनैं प्रथम नरके नेरइयापणैं ऊपजै ए जघन्य। ते माटै ओघिक नैं जघन्य -- ए द्वितीय गमक बखाणियै छै--

५५. असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच पर्याप्तो-रत्नप्रभा में तेह हो। जघन्य काल स्थिति नें विषे,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेह हो।।

५६. ते कितै काल स्थितिक विषे अपजै ?

िजन कहै जघन्य विमास हो ।

ऊपजै दश सहस्र वर्ष स्थिति विषे,

उत्कृष्ट पिण दश सहस्र वास हो।।

- ५७. ते एक समय किता ऊपजै ? इम वक्तव्यता सहु एह हो । भणवी पूर्वली परै, यावत अनुबंध लेह हो ।।
- ५८. असन्नी पंचेंद्रि तियँच पर्याप्तो, रत्नप्रभा रै विषेह हो । ऊपजी ते नारकपणैं, जघन्य स्थिति भोगवी जेह हो ।।
- ५९. विल असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रि हुवै, सेवै केतलो काल हो । केतला काल लगै वली, करेंगित आगित ते बाल हो ?
- ६०. जिन भाखे भव आश्रयी, बे भव ग्रहण संभाल हो। धुर भव असन्नी पं. तिरि तणों, द्वितीय नारक भव न्हाल हो।।
- ६१. काल आश्रयी जघन्य थी, दश सहस्र वर्ष कहिवाय हो । अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही, बिहुं भव अद्धा न्याय हो ॥

#### सोरठा

- ६२. असन्नी प. तियँच, अंतर्मृहूर्त्तं स्थिति तसु। नारक भवेज संच, स्थिति सहस्र दश वर्षे ही।।
- ६३. \*उत्कृष्टो अद्धा इतो, पूर्व कोड़ पिछाण हो। वर्ष सहस्र दश अधिक ही, बिहु भव नां ए जाण हो।।

#### सोरठा

- ६४. असन्नी पं. तिर्यंच, उत्कृष्ट पूर्व कोड़ वर्ष । नारक भव नों संच, वर्ष सहस्र दश अधिक ही ।।
- ६५. \*सेवै कालज एतलो, करै गित आगित इतो काल हो । ओघिक नें वली जघन्य ही, द्वितीय गमक ए भाल हो ।।

\*लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

१० भगवती जोड

- ४५. पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालद्वितीएसु रयणप्पभापुढिविनेरइएसु उवविज्जित्तए,
- ५६ से णं भंते ! केवइकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिंद्वितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सिंद्वितीएसु उववज्जेजा ।

(भ० २४।२८)

- ५७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव अणुबंधो ति । (श० २४।२९)
- ४८. से णं भंते ! पज्जत्ताअसिक्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालिहितीयरयणप्पभापुढिविनेरइए,
- ४९. पुणरिव पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ?
- ६०. गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ,
- ६१. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भहियाइं,
- ६३. उक्कोसेणं पुव्वकोडी दसिंह वाससहस्सेहि अन्भिहिया,

६५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ।।२।। (श० २४।३०)

#### ओघिक नै उत्कृष्ट (३)

वा॰—असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री नों तो जघन्य अनै उत्कृष्ट ए बिहुं आउखो ग्रहण की घो ते ओघिक अनै रत्नप्रभा नै विषे उत्कृष्ट आउखै नेरइयापणै ऊपनो ते उत्कृष्ट, ते माटै ओघिक-उत्कृष्ट—ए तृतीय गमक बखाणियै छै—

६६. असन्नी तियँच पंचेंद्री-पर्याप्तो रत्नप्रभा में तेह हो । उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे, ऊपजवा योग्य नेरइयापणेह हो ।।

६७. प्रभु ! कितै काल स्थितिक ते उपजै ?

जिन कहै जघन्य थी तेह हो।

पल्य नों भाग असंख्यातमो, ते स्थितिक विषे उपजेह हो।।

- ६८. उत्कृष्ट थी पिण पत्य तणों, असंख्यातमो भाग हो । तेह स्थितिक विषे ऊपजै, ए जिन वचन सुमाग हो ।।
- ६९. हे प्रभुजी ! ते जीवड़ा, एक समय किता उपजेह हो ? अवशेष तिमज कहिवो सह, यावत अनुबंध लेह हो ।।

#### कायसंवेध द्वार

- ७०. असन्नी पंचेंद्री तिरि पर्याप्तो, रत्नप्रभा में तेह हो । नेरइयापणें ऊपजी करी, उत्कृष्ट स्थिति भोगवेह हो ।। ७१. विल असन्नो पं. तिरि पर्याप्त हवै,
  - जाव गति आगति कितो काल हो ? जिन भाखै भव आश्रयी, वे भव ग्रहण संभाल हो ।।
- ७२. काल आश्रयी जघन्य थी, बिहुं भव नों कहिवाय हो । पत्य नों भाग असंख्यातमो, अंतर्मुहूर्त्त अधिकाय हो ।।

#### सोरठा

- ७३. नारक भव नों न्हाल, भाग असंखिज पत्य तणों । असन्नी पं. तिरि काल, अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही ।।
- ७४. \*अद्धा उत्कृष्ट पत्य तणों, असंख्यातमों भाग हो । पूर्व कोड़ज अधिक ही, बिहुं भव अद्धा माग हो ।।

#### सोरठा

- ७५. नारक भव नों न्हाल, भाग असंखिज पत्य तणों। असन्नी पं. तिरि काल, अधिक कोड़ पूर्व इहां।।
- ७६. \*सेव कालज एतलो, करै गति आगति इतो काल हो । ओघिक नैं उत्कृष्ट हो, तृतीय गमक ए भाल हो ।।

#### जधन्य नै ओधिक [४]

वा - असन्ती-तिर्यंच-पंचेंद्रि नों तो जघन्य स्थिति काल ए जघन्य अनैं नरक नैं विषे ते जघन्य उत्कृष्ट स्थितिक काल नैं विषे ऊपजै, ए नरक नो ओघिक - ए च उथो गमक बखाणियै छै -

\*लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

- ६६. पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालद्वितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए,
- ६७. से णं भंते ! केवतियकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग-द्वितीएसु,
- ६८. उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जदभागट्टितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।३१)
- ६९. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति? अवसेसं तं चेब जाव अणुबंधो । (श० २४।३२)
- ७०. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालद्वितीयरयणप्यभापुढविनेरइए,
- ७१. पुणरिव पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ?

गोयमा! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,

- ७२. कालादेसेणं जहण्णेणं पिलक्षोवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहत्तमब्भिह्यं,
- ७४. उक्कोसेणं पिलओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडि-मन्भहियं।
- ७६. एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागितं करेज्जा ॥३॥ (श. २४/३३)

- ७७. असन्नी पंचेंद्री तियंच पर्याप्तो, जघन्य आयुवंत जेह हो । रत्नप्रभा पृथ्वी विषे अपजवा जोग्य नेरइयापणेह हो ।।
- ७८. ते कितै काल स्थितिक विषे ऊपजे ? जिन कहै जघन्य सुइष्ट हो । वर्ष सहस्र दश स्थितिक विषे,

पत्य नें असंख भाग उत्कृष्ट हो ।।

७९. हे प्रभुजी ! ते जीवड़ा, एक समय किता उपजेह हो । इत्यादिक जे सर्व ही, तिमहिज कहिवो तेह हो।।

#### नाणत्ता

द०. णवरं ए त्रिण णाणत्ता, तीन द्वार में फेर हो। आयु अध्यवसाय अनुबंध ही, जूजुओ आगल हेर हो।। द१. असन्नी पंचेंद्री तिरि पर्याप्तो,

ते जघन्य स्थितिक कहिवाय हो । ते रत्नप्रभा में ऊपजै, त्रिण णाणत्ता तिरि भव पाय हो ।।

नाणत्ता (१)

- ५२. तुर्यं गमक तिण कारणें, असन्नी पं. तिरि नं इष्ट हो । जघन्यायु अंतर्मृहूर्त्तं ही, अंतर्मृहूर्त्तं उत्कृष्ट हो ।। नाणत्ता (२)
- द ३. हे प्रभु ! ते असन्नी तणां, केतला अध्यवसाय हो ? श्री जिन भाखे असंख ही, अध्यवसाय कहाय हो ।।
- द४. स्यूं अध्यवसाय तेहनां, भला अथवा भूंडा ताय हो ? जिन भाखे नहिं छे भला, अपसत्थ अध्यवसाय हो ।।

#### सोरठा

- ५५. अध्यवसायज स्थान, अपसत्थ तेहनां आखिया । अंतर्मृहूर्त्तं जान, तेहनीं स्थिति तिण कारणे।।
- ८६. जघन्यायु तिरि ताय, नरक ऊपजवा जोग्य जे । अपसत्थ अध्यवसाय, पिण भला न आवै तेहनां ।।
- ८७. दीर्घ स्थिति जसु होय, असन्नी पं. तिरि पज्जत्त नीं। भला बुरा पिण जोय, काल बहु तिण कारणे।।
- दद्र. तिण कारण अवलोय, अपसत्थ अध्यवसाय नों। द्वितीय णाणत्तो होय, जघन्य स्थितिक पं. तिरि विषे।।

#### नाणता (३)

द९. अनुबंध अंतर्मुहूर्त्तं ही, आयु तितोइज थाय हो ।
 आख्यो तीजो णाणत्तो, शेष तिमज कहिवाय हो ।।

- \*लय : धिन-धिन जंबू स्वाम ने
- १२ भगवती जोड़

७७. जहण्णकालद्वितीयपञ्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्ख-जोणिए णं भंते !

जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उवविज्जित्तए।

- ७८. से णं भंते ! केवतियकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
  गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु,
  उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागद्वितीएसु
  उववज्जेज्जा । (श० २४।३४)
- ७९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ? सेसं तं चेव ।
- नवरं—इमाइं तिण्णि नाणत्ताइं—आउं,अज्भवसाणा, अणुबंधो य ।
- ८२. जहण्णेणं ठिती अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। (श० २४।३५)
- द३. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्भवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्भवसाणा पण्णत्ता ।

(श० २४।३६)

- द४. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ? गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था ।
- ८५,८६. अध्यवसायस्थानान्यप्रशस्तान्येवान्तर्मृहूर्त्तस्थितिक त्वात् । ्वि(वृ.प. ५०९)
- ५७. दीर्घस्थितीहि तस्य द्विविधान्यपि तानि संभवन्ति कालस्य बहुत्वात् । (वृ.प. ५०९)
- <९. अणुबंधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तंचेव। (श० २४।३७)

#### कायसंवेध द्वार

९०. जघन्य काल स्थितिक पर्याप्तो,

तिरि असन्नी पंचेंद्रि तेह हो। रत्नप्रभा में ऊपजी, आयु भोगवी नरकपणेह हो।। ९१. विल असन्नी पंचेंद्रि तियँच ह्वै,

जाव गित आगित कितो काल हो ? जिन भाखे भव आश्रयी, बे भव ग्रहण निहाल हो ।। ९२. काल आश्रयी जघन्य थी, वर्ष सहस्र दश जन्य हो ।। अंतर्महुत्तें अधिक ही, बे भव काल जघन्य हो ।।

#### सोरठा

- ९३. वर्ष दश सहस्र हजार, अद्धा नारक भव तणों। अंतर्मृहूर्त्ते धार, पर्याप्त असन्नी पं. तिरि।।
- ९४. \*उत्कृष्ट पत्योपम तणों, असंख्यातमो भाग हो। अंतर्मृहूर्त्त अधिक ही, उत्कृष्ट अद्धा माग हो।।
- ९५. सेवै कालज एतलो, करै गति आगति इतो काल हो। जघन्य अने ओघिक गमक, दाख्यो तुर्य दयाल हो।।

#### जघन्य नै जघन्य [४]

बाo — असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री नों आउखो जघन्य अनैं नरक नैं विषे जघन्य आउखे ऊपजै ते माटै जघन्य अनैं जघन्य — ए पंचमो गमक बखाणिये छै — ९६. असन्नी पंचेंद्रिय तिर्यंच पर्याप्तो,

जघन्य आयुवंत जेह हो । ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा विषे,

जघन्यस्थितिक नेरइयापणेह हो ।।

९७. प्रभु ! कितै काल स्थितिक विषे ऊपजै ? जिन कहै जघन्य विमास हो । ऊपजै दश सहस्र वर्ष स्थिति विषे,

उत्कृष्ट पिण दश सहस्र वास हो ।।

९८. एक समय किता ऊपजै ? शेष तिमज कहिवाय हो। त्रिण णाणत्ता पूर्वली परै, आयु अनुबंध अध्यवसाय हो।।

#### कायसंवेध द्वार

९९. जाव ते प्रभु ! जघन्य स्थिति नों धणी,
पर्याप्तो असन्नी पं. तिर्यंच हो ।
रत्नप्रभा जघन्य स्थिति नारके, आयु भोगवनैं संच हो ।।
१००. विल असन्नी पं. तिरि पर्याप्तो,

किता काल गतागति तास हो ? जिन भाखै भव आश्रयी, बे भव ग्रहण विमास हो।।  ९०,९१. से ण भंते ! जहण्णकालद्वितीयपञ्जत्ताअसिण्ण-पंचिदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए जाव गति-रागींत करेज्जा ?
 गोयमा! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ ।

९२. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहृत्त-मब्भहियाइं।

- ९४. उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेजजङ्भागं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं ।
- ९५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ४। (श० २४।३८)

वा॰ — एवं जघन्यस्थितिकं तं जघन्यस्थितिकेषु तेषूत्पादयन्नाह — (वृ.प. ८०९)

- ९६. जहण्णकालिहितीयपञ्जत्ताअसिण्णपंचिदियतिरिक्ख-जोणिए णं भंते ! जे भिवए जहण्णकालिहितीएसु रयणप्पभापुढिव-नेरइएसु उवविज्जित्तए ।
- ९७. से णं भंते ! केवतियकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
  गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु,
  उक्कोसेण वि दसवाससहस्सद्वितीएसु उववज्जेज्जा ।
  (श० २४।३९)
- ९८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइं ।

९९,१००. जाव— (श० २४।४०) से णं भंते! जहण्णकालद्वितीयपज्जत्ताअसण्णि-पंचिदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालद्वितीयरयणप्पभा-पुढिवनेरइए पुणरिव जाव गतिरागित करेज्जा? गोयमा! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं।

श० २४, उ० १, ढा० ४१२ १३

<sup>\*</sup>लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

वा० एक पर्याप्तो असन्नी तियँच पंचेंद्री नो भव अनै दूजो नारकी नो भव ए बे भव कह्या। पिण नरक थकी नीकल असन्नी पंचेंद्री तियँच न हुवै, तिणसूं तीजो भव न कह्यो।

- १०१. काल आश्रयी जघन्य थी, वर्ष सहस्र दश जन्य हो। अंतर्मृहुर्त्त अधिक ही, पंचम गमे काल जघन्य हो।।
- १०२ काल थकी उत्कृष्ट पिण, वर्ष सहस्र दस तास हो। अंतर्मुहूर्त्ते अधिक ही, बिहु भव काल विमास हो।।
- १०३. सेवै कालज एतलो, इतो काल गतागित होय हो। जघन्य अने विल जघन्य ही, ए गमो पंचमो जोय हो।।

#### सोरठा

१०४. जघन्य स्थिति पर्याप्त, असन्नी पं. तियँच ए। धुर नरके पिण प्राप्त, जघन्य स्थिति नारकपणें।। १०५. बिहुं भव स्थिति जघन्य, पंचम गमा विषे कही। ते माटै इहां जन्य, जघन्योत्कृष्टज तूल्य अद्धा।।

#### जघन्य नै उत्कृष्ट [६]

वा॰ — असन्नी तियँच पंचेंद्री पर्याप्ता नों जघन्य आउखो अने रत्नप्रभा ने विषे उत्कृष्ट आउखे ऊपजै, ते माटै जघन्य ने उत्कृष्ट —ए छठो गमक बखाणियै छै—

१०६. \*असन्नी पंचेंद्रि तियँच पर्याप्तो, जघन्य आयुवंत जेह हो । ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा विषे, स्थिति उत्कृष्ट नेरइयापणेह हो ।।

१०७. ते कितै काल स्थितिक विषे ऊपजै ? जिन कहै जघन्य विमास हो । पल्य नों भाग असंख्यातमो,

उत्कृष्ट पिण इतरो इज तास हो।

१०८. प्रभु ! एक समय किता ऊपजै ?
अवशेष तिमज कहिवाय हो ।
पूर्ववत त्रिण णाणत्ता, आयु अनुबंध अध्यवसाय हो ।।
कायसंवेध

१०९. जाव हे प्रभु ! जघन्य स्थितिक तिको,
पर्याप्त असन्नी पं. तिर्यंच हो ।
रत्नप्रभा उत्कृष्ट स्थिति नारके, आयु भोगवनें संच हो ।।
११०. विल असन्नी पं. तिरि पर्याप्तो,

कितो काल गतागति तास हो ? जिन भाखे भव आश्रयी, बे भव ग्रहण विमास हो।

\*लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

१४ भगवती जोड

- १०१. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भहियाइं।
- १०२. उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भिहयाइं।
- १०३. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ५। (श० २४।४१)

वा॰ -- एवं जघन्यस्थितिकं तमुत्कृष्टस्थितिषु-तेषूत्पादयन्नाह--- (वृ.प. ८०९)

- १०६. जहण्णकालिंद्वतीयपज्जत्ताअसिष्णपंचिदियतिरिक्ख-जोणिए णं भंते! जे भविए उक्कोस कालिंद्वतीएसु रयणप्पभापुढवि-नेरइएसु उववज्जित्तए।
- १०७. से णं भंते ! केवितयकालिट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं पिलओवमस्स असंखेज्जइभाग-द्वितीएसु, उक्कोसेण वि पिलओवमस्स असंखेज्जइ भागिट्ठितीएसु उववज्जेज्जा । (श. २४।४२)

१०८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ? अवसेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणताइं।

१०९,११०. जाव— (श० २४।४३)
से णं भंते ! जहण्णकालट्टितीयपज्जत्ताअसिष्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्टितीयरयणप्पभाए जाव गतिरागित करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं।

- १११. काल आश्रयी जघन्य थी, पत्य नों असंख्यातमो भाग हो। अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही, उत्कृष्ट पिण इतोइज माग हो।।
- ११२. सेवै कालज एतलो, गतागित करै इतो काल हो। जघन्य अने उत्कृष्ट गमो, षष्टम दाख्यो दयाल हो।।

#### उत्कृष्ट ने ओधिक [७]

वा० — असन्नी पंचेद्री तियँच पर्याप्ता नों उत्कृष्ट आउखो अनैं पहिली नरके ओघिक आउखे नेरइयापणैं उपनों ते माटै उत्कृष्ट अनै ओघिक — ए सातमों गमक बखाणियै छै—

- ११३. असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच पर्याप्तो, उत्कृष्ट स्थितिके जेह हो । ते रत्नप्रभा पृथ्वी विषे, ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेह हो ।।
- ११४. ते किते काल स्थितिक विषे ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य सुमाग हो । क विषे

दश सहस्र वर्ष स्थितिक विषे,

उत्कृष्ट पत्य नों असंखिज भाग हो।।

११५. तिके एक समय किता ऊपजै ? अवशेष बोल सुजोय हो। जिम ओघिक गमक विषे कहां,

तिमहिज जाणवो सोय हो।।

- ११६. णवरं ए बिहुं स्थानके, नानात्व कहितां भेद हो। कहिये वे तसु णाणत्ता, स्थिति अनुबंध संवेद हो।।
- ११७. स्थिति आउखो जघन्य थी, पूर्व कोड़ कहाय हो। पूर्व कोड़ उत्कृष्ट पिण, अनुबंध पिण इम थाय हो।।
- ११८. आयु नें अनुबंध विना, शेष सर्व ही बोल हो।
  ओधिक प्रथम गमक विषे, तिमहिज कहिवा तोल हो।।
  कायसंवेध द्वार
- ११९. हे प्रभु! उत्कृष्ट स्थितिक ते, पर्याप्त असन्नी पं. तिर्यंच हो । रत्नप्रभा में नेरइयापणें, आयु भोगवनें संच हो ।। १२०. विल असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री हुवै,

जाव गति आगति कितो काल हो ? जिन भाखे भव आश्रयी, बे भव ग्रहण संभाल हो ॥

१२१. काल आश्रयी जघन्य थी, बिहुं भव नों कहिवाय हो। पूर्व कोड़ पिछाणियै, दश सहस्र वर्ष अधिकाय हो।।

#### सोरठा

- १२२. पूर्व कोड़ पिछाण, असन्नी पं. तिरि आउखो। वर्ष सहस्र दश जाण, धुर नरके नारक तणें।।
- १२३. \*अद्धा उत्कृष्ट पत्य तणों, असंख्यातमो भाग हो। कोड़ पूर्व अधिको वली, बिहुं भव अद्धा माग हो।।

\*लय: धिन-धिन जंबू स्वाम ने

- १११. कालादेसेणं जहण्णेणं पिलओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भिह्यं, उक्कोसेण वि पिलओवमस्स असंखेज्जइभागं अतोमुहुत्तमब्भिह्यं।
- ११२. एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागित , करेज्जा ६।

(श० २४।४४)

वा० — एवमुत्कृष्टस्थितिकं तं सामान्येषु तेषूत्पादयन्नाह— (वृ.प. ८०९)

- ११३. उक्कोसकालिट्ठतीयपज्जत्ताअसिण्णपंचिदियतिरिक्ख-जोणिए णं भंते ! जे भिवए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उवविज्जित्तए,
- ११४. से णं भंते ! केवितयकालिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिद्वितीएसु, उक्कोसेणं पिलओवमस्स असंसेज्जइभागद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।४४)
- ११५ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहेव ओहियगमएणं तहेव अणुगंतव्वं,
- ११६. नवरं इमाइं दोण्णि नाणत्ताइं
- ११ : ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्व-कोडी। एवं अणुबंधो वि। ११८: अवसेसंतं चेव। (श० २४।४६)
- ११९,१२०. से णं भंते ! उक्कोसकालद्वितीयपञ्जत्ता-असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए जाव गतिरागति करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,
- १२१. कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसिंह वाससहस्सेहि अन्भहिया,
- १२३. उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जद्द भागं पुब्व-कोडीए अब्भहियं,

म० २४, उ० १, डा० ४१२ १५

#### सोरठा

१२४. पत्य तणों पहिछाण, असंख्यातमो भाग जे। नारक आयू जाण, असन्नी पं. तिरि कोड़ पुक्व।।

१२५. \*सेवे कालज एतलो, करै गित आगित इतो काल हो। उत्कृष्ट ने ओघिक कह्यूं, सप्तम गमक निहाल हो।।

#### उत्कृष्ट ने जघन्य [ ८ ]

वा॰—ते असन्नी पंचेंद्री तियँच पर्याप्ता नों उत्कृष्ट आउखो ए उत्कृष्ट अनैं ते प्रथम नरके जघन्य आउखै नेरइयापणैं ऊपनों ए जघन्य ते माटै उत्कृष्ट अनैं जघन्य—ए अष्टम गमक बखाणियै छै—

१२६. असन्नी पंचेंद्री तियँच पर्याप्तो, उत्कृष्ट स्थितिक जेह हो। जघन्य स्थिति रत्नप्रभा नैं विषे,

ऊपजवा योग्य नेरइयापणेह हो ।।

१२७. ते कितै काल स्थितिक विषे ऊपजै ?

्जिन कहै जघन्य विमास हो।

दश सहस्र वर्ष स्थितिक विषे,

उत्कृष्ट पिण दश सहस्र वास हो।।

१२८. ते एक समय किता ऊपजै ? शेष तिमज किहवाय हो।
गमक सातमां जिम सहु, जाव कायसंवेध हिव आय हो।।
कायसंवेध द्वार

१२९. हे प्रभु ! उत्कृष्ट स्थितिक ते,

पर्याप्त असन्नी पं. तियंच हो।

रत्नप्रभा में नेरइयापणें, जघन्य आयु भोगवनें संच हो।

१३०. विल असन्नी तियँच पंचेंद्री हुवै,

जाव गति भागति कितो काल हो ?

जिन भाखे भव आश्रयी, बे भव ग्रहण संभाल हो।।

१३१. काल आश्रयी जघन्य थी, पूर्व कोड़ पिछाण हो। वर्ष सहस्र दश अधिक ही, उत्कृष्ट पिण इतो जाण हो।।

#### सोरठा

१३२. पूर्व कोड़ सुपेख, असन्नी पं. तिरि आउखो। वर्ष सहस्र दश देख, रत्नप्रभा नारकपणें।।

१३३. \*सेवै कालज एतलो, जाव गति आगति इतो काल हो। उत्कृष्ट नैं विल जघन्य ही, अष्टम गमक निहाल हो।।

#### उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट [६]

वा॰ — उत्कृष्ट आउखावंत असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच पर्याप्तो ते प्रथम नरके उत्कृष्ट आउखे नेरइयापणैं ऊपजै, ते माटै उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट — ए नवमो गमक बखाणियै छै —

\*लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

१६ भगवती जोड़

१२५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ७ । (श० २४।४७)

वा॰ — एवमुत्कुष्टिस्थितिकं तं जघन्यस्थितिकेषु तेषूत्पादयन्नाह — (वृ॰ प॰ ८०८)

१२६. उनकोसकालद्वितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदय-तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकाल-द्वितीएसु रयणप्पभापुदिविनेरइएसु उवविज्जत्तए,

१२७. से णं भंते ! केवतियकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिंद्वितीएसु, उक्को-सेण वि दसवाससहस्सिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।४८)

१२८. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, जहा सत्तमगमए जाव— (श० २४।४९)

१२९,१३०. से णं भंते ! उक्कोसकालट्टितीयपज्जत्ता-असिष्णपंचिदयितिरिक्खजोणिए जहण्णकालट्टितीय-रयणप्पभाए जाव गतिरागित करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,

१३१. कालादेसेणं जहण्णेणं पुन्वकोडी दर्साह वाससहस्सेहि अन्महिया, उनकोसेण वि पुन्वकोडी दर्साह वाससहस्सेहि अन्महिया,

१३३. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागींत करेज्जा ८। (श० २४।५०)

वा० ─एवमुत्कृष्टस्थितिषूत्पादयन्नाह्─ (वृ० प० ८०९)

- १३४. असन्नी पंचेंद्री तियँच पर्याप्तो, उत्कृष्ट स्थितिक जेह हो। स्थिति उत्कृष्ट रत्नप्रभा विषे,
  - ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेह हो।।
- १३५. ते कितै काल स्थितिक विषे ऊपजै ?
  - जिन कहै जघन्य पिछाण हो। पल्य नां असंख भाग स्थितिक विषे,
    - उत्कृष्ट पिण इतोइज जाण हो।।
- १३६. हे भगवंत ! ते जीवड़ा, एक समय किता उपजेह हो ? शेष सहु कहिवो इहां, गम सातमा नीं पर एह हो ।।
- १३७. हे प्रभु ! उत्कृष्ट स्थितिक ते,

पर्याप्त असन्नी पं. तिर्यंच हो।

रत्नप्रभा में नेरइयापणें, उत्कृष्ट आयु भोगवनें संच हो ।।

१३८. विल असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री ह्वै,

जाव गति आगति कितो काल हो ? जिन भाखे भव आश्रयो, बे भव ग्रहण निहाल हो ।। कायसंवेध द्वार

१३९. वलि काल आश्रयी जघन्य थी,

पत्य नों असंख्यातमो भाग हो। कोड़ पूर्व अधिको वली, उत्कृष्टो पिण इतोइज माग हो।।

#### सोरठा

- १४०. नारक आयू जाण, असंख्यातमो भाग जे। पत्य तणों पहिछाण, असन्नी पं. तिरि कोड़ पुठ्व।।
- १४१. बिहुं भव स्थिति उत्कृष्ट, नवमा गमक विषे कही। ते माटै इहां इष्ट, तुल्य काल जघन्योत्कृष्ट।।
- १४२. \*सेवै कालज एतलो, करै गतागित इतो काल हो। उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट ही, नवम गमक ए न्हाल हो।। १४३. ओघिक नां धुर त्रिण गमा,

जघन्य काल स्थितिक विषे तीन हो । तीन उत्कृष्ट स्थितिक विषे, ए सहु नव गमका चीन हो ।।

#### सोरठा

- १४४. मध्यम गमका तीन, तेह जघनिया जाणवा। तेह विषे इम लीन, तीन णाणत्ता आखिया।।
- १४५. जघन्य अनें उत्कृष्ट, अंतर्मुहूर्त्त आउखो। इतोज अनुबंध इष्ट, अपसत्थ अध्यवसाय तसु।।
- १४६. सप्तम अष्टम नवम, एह तीन उत्कृष्ट गम। ते विषे अवगम, दोय णाणत्ता एहनां।।

- १३४. उक्कोसकालद्वितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदयितिरिक्ख-जोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालद्वितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उवविज्जत्तए,
- १३४. से णं भंते ! केवतियकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं पिलओवमस्स असंखेजजइभाग-द्वितीएसु, उक्कोसेण वि पिलओवमस्स असंखेजजइ-भागद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।४१)
- १३६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं जहा सत्तमगमए जाव— (श० २४।५२)
- १३७,१३८. से णं भते ! उक्कोसकालहितीयपज्जत्ता-असण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालहितीय-रयणप्पभाए जाव गतिरागित करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ,
- १३९. कालादेसेणं जहण्णेणं पिलओवमस्स असंखेजजइभागं पुत्वकोडीए अब्भिह्यं, उनकोसेण वि पिलओवमस्स असंखेजजइभागं पुत्वकोडीए अब्भिह्यं,

- १४२ एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ९।
- १४३. एवं एते ओहिया तिण्णि गमगा, जहण्णकाल-द्वितीएसु तिण्णि गमगा, उनकोसकालद्वितीएसु तिण्णि गमगा सब्वेते नव गमगा भवति । (श० २४।५३)

<sup>\*</sup>लय : धिन-धिन जंबू स्वाम नै

१४७. जघन्य अने उत्कृष्ट, पूर्व कोड़ज आउखो। इतोज अनुबंध इष्ट, चरम तीन गमा विषे।। १४८. \*असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच पर्याप्तो, रत्नप्रभा में जाय हो। विस्तार आख्यो तेहनों, हिवै सन्नो पं. तिरि कहिवाय हो।।

१४९. शत चउवीसम धुर देश ए, ज्यारसौ नैं बारमीं ढाल हो। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगलमाल हो।।

१४=. एवं तावदसञ्ज्ञिन: पञ्चेन्द्रियतिरम्चो नारकेष्त्पादो नवधोक्तः, अथ सञ्ज्ञिनस्तस्यैव तथैव तमाह— (वृ० प० ८०९)

#### ढाल : ४१३

#### दूहा

- १. जो सन्नी पंचेंद्रिय-तिरि मरि नरके जाय। स्यूं संख वर्ष आयु थकी, कै असंख वर्ष थी थाय?
- २. जिन भाखे सुण गोयमा! वर्षायु संख्यात । सन्नी पं. तिर्यंच थी, नरक विषे उपपात ॥ ३. पिण असंख वर्षायु सन्नी-तिरि पंचेंद्रिय ताय। नरक विषे नहिं ऊपजै, तेह युगल सुर थाय।। ४. वर्षायू संख्यात जो, जाव नरक में स्यूं जल. थल. थी ऊपजै, कै खेचर थी थाय?
- ५. जिन भाखे जलचर थकी, नरक विषे उपपात । जिम असन्नी नों आखियो, किह्न्ं तिम अवदात ।। ६. यावत पर्याप्ता थकी, नरक विषे उपपात । अपजत्त थकी न ऊपजें, विल शिष्य पूछै बात ।। †सन्नी तिर्यंच नारक नव गमका ।।
- ७. पर्याप्त संख्यात वर्ष आयुष जे, सन्नी पंचेंद्री तिर्यंचो । ऊपजवा जोग्य नरक विषे जे, नेरइयापणैंज संचो ।।
- द. प्रभु ! केतली पृथ्वी विषे ते ऊपजै ? जिन कहै सातूं मांह्यो । रत्नप्रभा नें आदि देई नें, जाव सप्तमी जायो ।।

#### प्रथम नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तियँच पंचेंद्रिय ऊपजें, तेहनों अधिकार' ओघिक नें ओघिक [१]

९. ते पज्जत्त संख्यात वर्षायुष प्रभुजी ! सन्नी पंचेंद्री तिर्यंचो ।ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा नां, नारक नैं विषे संचो ।।

\*लय: धिन-धिन जम्बू स्वाम ने || निवय: पर नारी नो संग न कीजे

१. परि० २, यंत्र २

१८ भगवती जोड़

- १. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति— कि संखेजजवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए-हितो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदिय-तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ?
- २. गोयमा ! संक्षेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति,
- ३. नो असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदयतिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जंति । (श० २४।४४)
- ४. जइ संक्षेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जंति — किं जलचरेहिंतो उववज्जंति — पुच्छा ।
- प्र. गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, जहा असण्णी
- ६. जाव पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति । (श० २४।५५)
- ७. पज्जत्तसंक्षेण्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उवविज्जित्तए,
- त. से णं भंते ! कितसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
   गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—
   रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए । (श० २४।५६)
- ९. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए रयणप्पभपुढिवनेरइएसु उवविज्जत्तए,

- १०. ते कितै काल स्थिति ऊपजै प्रभुं ? जिन कहै जघन्य सुलेखो । वर्ष सहस्र दश स्थितिक विषे जे, उत्कृष्ट सागर एको ।।
- ११. ते एक समय प्रभु! किता ऊपजै? जिम असन्नी आकंखा। जघन्य एक बे तीन ऊपजै, उत्कृष्ट संख असंखा।।
- १२. ते सन्नी पं. तिरि पर्याप्त केरा, स्यूं तनु नां संघयणी ? जिन कहै षटविध संघयणी छै, जु-जूअ नाम कहणी।।
- १३. वज्रऋषभनाराच संघयणी, द्वितीय ऋषभनाराचं। यावत छेवठ संघयणी ते, वर जिनवर नीं वाचं।।
- १४. तनु अवगाहन असन्नी जिम छै, जघन्य थकी अवधारं। असंख्यातमों भाग आंगुल नों, उत्कृष्ट योजन हजारं।।
- १५. तेहनां तन् प्रभु ! स्यूं संस्थानज ? जिन कहै षटिवध जाणं । समचउरंस णग्गोह इत्यादिक जाव हुंड संठाणं ।।
- १६. ते प्रभु ! जीव नें केतली लेश्या ? जिन भाखे षट लेशां। कृष्ण लेश जाव शुक्ल लेश्या, त्रिविध दृष्टि कहेसं।।
- १७. तीन ज्ञान नीं भजना भणवी, अथवा तीन अनाणं। ते पिण भजनाइं करि कहिवूं, हिव तसु न्याय पिछाणं।।

#### सोरठा

- १८. सन्नी पं. तियँच, नरकगामी छै तेह में। दोय ज्ञान हुवै संच, तथा ज्ञान फुन तीन ह्वे।।
- १९. इमहिज बे अज्ञान, अथवा तीन अज्ञान ह्वै। इम भजनाइं जान, कह्या ज्ञान अज्ञान त्रिण।।
- २०. नरकायु नों बंध, न पड़ै समदृष्टी तणें। ज्ञान विषे पिण संध, नरकायू बंधे नथी।।
- २१. नरकायु धुर बंध, सम्यकदृष्टि लही पछै। तदा ज्ञान गुण संध, श्रेणिक कृष्ण तणी परे।।
- २२. \*जोग त्रिविध पिण मन वच तनु नां, शेष असन्नी जिम संचो । यावत अनुबंध कहिवो णवरं, समुद्घात धुर पंचो ।।

#### सोरठा

- २३. असन्नी पं. तिर्यंच, समुद्घात तिण तेह विषे । सन्नी पं. तिरि संच, नरकगामी में पंच घुर।।
- २४. चरम दोय अवलोय, आहारक नेंं केवली वली। संयत मनु में होय, तिणसूं ए वर्जी इहां।।

\*लय: पर नारी नों संग न कीजें

- १०. से णं भंते ! केवितयकालिट्टितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिट्टितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमिट्टितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।५७)
- ११. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? जहेव असण्णी। (श.० २४।५८)
- १२. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छिव्वहसंघयणी पण्णत्ता, तं जहा —
- १३. वइरोसभनारायसंघयणी, उसभनारायसंघयणी जाव छेवट्ट संघयणी।
- १४. सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजजइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । (श० २४।५९)
- १५. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! छिव्वहसंठिया पण्णत्ता, तं जहा— समचउरंसा, निग्गोहा जाव हुंडा। (श० २४।६०)
- १६. तेसि णं भंते ! जीवाणं कित लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा — कण्ह-लेस्सा जाव सुक्कलेस्सा । दिट्ठी तिविहा वि ।
- १७. तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए ।
- १८,१९. 'तिन्नि नाणा तिन्ति अन्ताणा भयणाए' ति तिरश्चां सञ्ज्ञिनां नरकगामिनां ज्ञानान्यज्ञानानि च त्रीणि भजनया भवन्तीति द्वे वा त्रीणि वा स्युरित्यर्थः (वृ० प० ८११)
- २२. जोगो तिविहो वि । सेसं जहा असण्णीणं जाव अणुबंधो, नवरं - पंच समुग्धाया आदिल्लगा ।
- २३. 'नवरं पंच समुग्घाया आइल्लग' त्ति असञ्ज्ञिनः पंचेन्द्रियतिरश्चस्त्रयः समुद्घाताः सञ्ज्ञिनस्तु नरकं वियासोः पञ्चाद्याः, (वृ०प० ८११)
- २४. अन्त्ययोर्द्वयोर्ममुख्याणामेव भावादिति ।

(वृ०प० ८११)

श० २४, उ० १, ढा० ४१३ १९

२५. \*ते सन्नी पंचेंद्री मांहे, वेद त्रिविध पिण पायो। शेष बोल जे तिमहिज यावत, हिव निसुणो तसु न्यायो।।

#### सोरठा

२६. असन्नो विषेज पाय, वेद नपुंसक एक ह्वं । सन्नी पं तिरि मांय, त्रिविध वेद पिण पामिय ।। २७. शेष बोल सहु ताय, कहिवा असन्नी नीं परे । जाव प्रश्न हिव आय, द्वार कायसंवेध नों।।

२८. \*हे भगवंतजी ! पर्याप्तो जे, संख वर्षायुष तेहो । जाव तिर्यंच ते रत्नप्रभा में, ऊपजी नेरइयापणेहो ।। २९. सन्नी पंचेंद्री तिर्यंच हुवै विल,

करै गित आगित कितो कालो ? श्री जिन भाखै भव आश्रयी ते, जघन्य दोय भव न्हालो।।

#### सोरठा

३०. धुर भव सन्ती तिर्यंच, द्वितीय भवे ह्वं नारकी। इम जघन्य दोय भव संच, तृतीय भवे ते मनुष्य ह्वं।।

३१. \*उत्कृष्ट थी भव ग्रहण हुवै अठ, सन्नी पं. तिरि भव च्यारो । नारक नां पिण च्यार हुवै भव, नवमें भव मनु धारो ।।

#### सोरठा

३२. सन्नी पं. तिरि सोय, नारक विषेज ऊपजै। विल सन्नी तिरि होय, फुन नारक में नेरइयो।। ३३. विल सन्नी तिरि थाय, फुन नारक विल तिरि सन्नी। विल नारक में जाय, इम अठ नवमें भव मनुष्य।।

३४. \*काल आश्रयी जघन्य थकी जे, वर्ष सहस्र दश जोयो । अंतर्मुहूर्त्त अधिक कहीजै, जघन्य अद्धा भव दोयो ।।

#### सोरठा

३५. वर्ष सहस्र दश पेख, नारक भव अद्धा जघन्य। सन्नी पं. तिरि देख, अंतर्मृहूर्त्त आउखो।। ३६. \*अद्धा उत्कृष्ट अष्ट भवां नों, कहियै सागर च्यारो। च्यार पूर्व कोड़ अधिक भणीजै, अदल न्याय अवधारो।।

#### सोरठा

३७. सागर च्यार सुसंच, नारक चिउं भव नों अद्धा । सन्नी पं. तिर्यंच, च्यार कोड़ पूरव कह्यो ।।

\*लय: पर नारी नों संग न कीजे

२० भगवती जोड

२५. वेदो तिविहो वि, अवसेसं तं चेव जाव — (श० २४।६१)

२८,२९. से णं भंते ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचरिय-तिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए जाव गतिरागित करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं,

३०. 'जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं' ति सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रिय-तियंङ उत्पद्य पुनर्नरकेषूत्पद्यते ततो मनुष्येषु एवमधिन कृतकायसंवेधे भवद्वयं जघन्यतो भवति, (वृ० प० ८११)

३१. उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं।

- ३२,३३. सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यंक् ततो नारकः पुनः सञ्ज्ञि-सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्येङ् पुनर्नारकः पुनः सञ्ज्ञि-पञ्चेन्द्रियतिर्येङ् पुनर्नारकस्ततः पुनः सञ्ज्ञि-पञ्चेन्द्रितिर्येङ् पुनस्तस्यामेव पृथिव्यां नारक इत्येव-मष्टावेव वारानुत्पद्यते नवमे भवे तु मनुष्यः स्यादिति, (वृ० प० ८११)
- ३४. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भिहियाइं,
- ३६. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं,

- ३८. \*एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो। ओधिक नैं ओधिक गमक ए, दाख्यो प्रथम दयालो।।
  - ओघिक नें जघन्य [२]
- ३९. पर्याप्त संख वर्षायुष सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो । जघन्य स्थितिक विषे रत्नप्रभा में, ऊपजै नेरइयापणेहो ।।
- ४०. प्रभु ! किंते काल स्थितिक विषे ते ऊपजै ? जिन कहै जघन्य विमासो । वर्ष सहस्र दश विषे ऊपजै,

उत्कृष्ट पिण दश सहस्र वासो ।।

- ४१. ते एक समय प्रभु! किता ऊपजै ? इत्यादिक अवधारो । एवं तेहिज पहिलो गमको, समस्तपणें कहिवो सारो ॥ कायसंवेध द्वार
- ४२. जाव कालसंवेध ते काल आश्रयी, जघन्य थकी इम थायो । दश हजार वर्ष नों किहयै, अंतर्मुहर्त्त अधिकायो ॥

#### सोरठा

- ४३. नारक भव नों न्हाल, वर्ष सहस्र दश जघन्य ए । अंतर्मुहूर्त्तं काल, जघन्य काल ए तिरि भवे ।।
- ४४. \*उत्कृष्टो चिउं कोड़ पूर्व ही, सन्नी तिर्यंच भव च्यारो । वर्ष चालीस हजार अधिक ए, नारक भव चिउं धारो ।।
- ४५. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो । ओघिक नैं विल जघन्य कहीजै, द्वितीय गमक ए न्हालो ।। ओघिक नैं उत्कृष्ट [३]

४६. तेहिज पजत्त संख वर्षायु प्रभुजी !

सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो ।

उत्कृष्ट स्थिति विषे रत्नप्रभा में

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो ।।

४७. प्रभु ! कितै काल स्थितिक विषे ते ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य अवेखो ।

एक सागर स्थितिक विषे ऊपजै, उत्कृष्ट पिण सागर एको ।।

- ४८. अवशेष परिमाण आदि देई नें, भवादेश लग भणियै। तेहिज प्रथम गमक कह्यो पूर्वे, तिणहिज रीते थुणियै।। कायसंवेध द्वार
- ४९. जाव काल आश्रयी जघन्य थकी जे, एक सागर अवलोयो । अंतर्मृहूर्त्तं अधिक कहीजै, जघन्य अद्धा भव दोयो ।।

#### सोरठा

५०. अंतर्महूर्त्त एह, सन्नी तिरि भव जघन्य स्थिति । सागर एक कहेह, नारक भव उत्कृष्ट स्थिति ।।

\*लय: पर नारी नों संग न कीजें

- ३८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा १। (श० २४।६२)
- ३९. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालद्वितीएसु रयणप्पभा पुढविनेरइएसु उववज्जित्तए,
- ४०. से णं भंते ! केवतियकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिद्धितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सिद्वितीएसु उववज्जेज्जा ।

(श० २४।६३)

- ४१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो
- ४२. जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतो-मुहत्तमब्भहियाइं,
- ४४. उवकोसेणं चत्तारि पुब्वकोडीओ चत्तालीसः ए वास-सहस्सेहि अञ्महियाओ,
- ४५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा २ । (श० २४।६४)
- ४६,४७. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सागरोवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्आः।
- ४८. अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वी
- ४९. जाव कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं,

श० २४, उ० १, ढा० ४१३ २१

- ५१. \*उत्कृष्ट चिउं दिध च्यार नारक भव,
  अधिक पूर्व कोह च्यारो।
  ए सन्नी तिरि चिउं भव अद्धा, उभय उत्कृष्टज धारो।।
  ५२. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो।
  ओघिक नैं उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो तृतीय दयालो।।
  जघन्य नै ओघिक [४]
- ५३. जघन्य काल स्थितिक पजत्त संख वर्षागुष सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो । रत्नप्रभा पृथ्वी नें विषे जे, ऊपजवा जोग नेरइयापणेहो ।।
- ५४. प्रभु ! किता काल स्थितिक विषे ते ऊपजै ? जिन कहै जघन्य सुलेखो । ऊपज दश सहस्र वर्ष स्थितिक में, उत्कृष्ट सागर एको ।।
- ५५. ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ? इत्यादि शेष उदिष्टो । तेहिज गमक प्रथम जे कहिवूं, णवरं णाणत्ता अष्टो ।।
- ५६. ते सन्नी पं. तिरि नीं जघन्य अवगाहना, आंगुल नो जिन इष्टं । असंख्यातमों भाग कह्यो छै, पृथक धनु उत्कृष्टं।।

#### सोरठा

- ५७. सन्नी भ्रुर गम पेख, जघन्य तास अवगाहना। आंगुल तणोंज लेख, असंख्यातमों भाग जे।।
- ५८. उत्कृष्टी अवगाह, योजन सहस्र तणीं तिहां। इहां उत्कृष्टी पाह, पृथक धनुष्य अवगाहना।।
- ५९. \*जघन्यायु सन्नी ते माटै, प्रथम लेश त्रिण कहिये। जघन्य स्थितिक जे नरकगामी में,

भली लेश्या नहिं लहियै।।

#### सोरठा

- ६०. सन्नी धुर गम मांय, षट लेण्या आखी तिहां। जघन्य गमे त्रिण पाय, लेश णाणत्तो ते भणी।।
- ६१. \*तृतीय णाणत्तो दृष्टि तणों जे, मिथ्यादृष्टी जेहो । जघन्य स्थितिक तिरि नरकगामी में,

सम-मिश्र दृष्टि न बेहो।।

#### सोरठा

६२. सन्नी घुर गम मांय, आखा भव में दृष्टि त्रिण । जघन्य गमे मिच्छ पाय, दृष्टि णाणत्तो ते भणी ।।

- \*लय: पर नारी नो संग न कीजे
- २२ भगवती जोड़

- प्रश्त उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चर्जीह पुव्वकोडीिंह अब्भहियाइं,
- ५२. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागीतं करेज्जा ३ । (श० २४।६५)
- ४३. जहण्णकालद्वितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णि-पंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभ-पुढविनेरइएसु उवविज्जित्तए,
- ५४. से णं भंते ! केवितकालिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिद्वितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमिद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।६६)
- ४४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? अवसेसो सो चेव गमओ, नवरं—इमाइं अट्ट नाणत्ताइं--
- ४६. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धण्पुहत्तं
- ५८. तत्र शरीरावगाहनोत्कृष्टा योजनसहस्रमुक्ते ह धनुः पृथक्तवं, (वृ० प० ६११)
- ५९. लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ
- ६० तथा तत्र लेश्याः षड् इह त्वाद्यास्तिस्रः, (वृ० प० ५**११)**
- ६१. नो सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, नो सम्मामिच्छिदिद्वी
- ६२. तथा तत्र दृष्टिस्त्रिधा इह तु मिथ्यादृष्टिरेव, (बृ० प० ८११)

६३. \*नाण अनाण नों तुर्यं णाणत्तो, ज्ञानी ते निहं होयो । जघन्य स्थितिक जे नरकगामी में, निश्चै अज्ञानज दोयो ।।

### सोरठा

- ६४. सन्नी धुर गम मांय, तीन ज्ञान अज्ञान त्रिण। भजना ए कहिवाय, पूर्वे आख्यो छै तिहां।।
- ६५. इहां जघन्य गम जान, ज्ञान तणोंज निषेध छै। निश्चै दोय अज्ञान, ते माटै ए णाणत्तो।।
- ६६. \*पंचम णाणत्तो समुद्घात नों,

जघन्य स्थितिक तिरि मांह्यो ।। समुद्घात त्रिण प्रथम कहीजै, अन्य निषेध कहायो ।।

#### सोरठा

- ६७. सन्नी धुर गम मांय, समुद्घात धुर पंच त्यां। जघन्य गमे त्रिण पाय, समुद्घात नों णाणत्तो।।
- ६८. \*षष्टम णाणत्तो आयु तणों छै, जघन्य स्थितिक ए जोई। अंतर्मुहूर्त्त तास आउखो, अधिक आयु नहिं होई।।

### सोरठा

- ६९. सन्नी घुर गम जोड़, अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स्थिति । उत्कृष्ट पूर्व कोड़, ते माटै ए णाणत्तो ।।
- ७०. \*सप्तम णाणत्तो अध्यवसाय नों, अपसत्थ अध्यवसायो । जघन्य स्थितिक तिरि नरकगामी में,
  - भला अध्यवसाय नांह्यो ॥

### सोरठा

- ७१. सन्नी घुर गम जेह, प्रशस्त नें अप्रशस्त फुन । इहां अपसत्थ जघन्य गमेह, ते माटै ए णाणत्तो ।।
- ७२. \*अनुबंध नों कह्यो अष्टम णाणत्तो,
  - न्याय आयुवत जाणी । आयु जितो अनुबंध कह्यो छै, वारू जिनवर वाणी ।।
- ७३. अध्यवसाय आयु नैं अनुबंध, ए तीनूं अवलोई । असन्नी पंचेंद्री तिर्यंच नां आख्या, तेम इहां इम होई ।।
- ७४. अवशेष जिम गम प्रथमज एहनों,
  - सन्नी तियँच नों आख्यो । तेम इहां पिण कहिवो सगलो, किहां लगे ए भाख्यो ।।
- ७५. यावत काल आश्री कहीजै, जघन्य थकी ए ताह्यो । दश हजार वर्ष नों अद्धा, अंतर्मुहूर्त्त अधिकायो ।।

६३. नो नाणी, दो अण्णाणा नियमं

६४,६४. तथा तत्राज्ञानानि त्रीणि भजनया इह तु हे एवाज्ञाने, (वृ० प० ८११)

६६. समुग्घाया आदिल्ला तिण्णि

- ६७. तथा तत्र आद्याः पञ्च समुद्घाता इह तु त्रयः, (वृ० प० ८११)
- ६८-७३. आउं अज्भवसाणा अणुबंधो य जहेव असण्णीणं ।
  'आउअज्भवसाणा अणुबंधो य जहेव
  असन्नीणं' ति जघन्यस्थितिकासिञ्ज्ञगम इवेत्यर्थः,
  ततश्चायुरिहान्तर्मृहूर्त्तं, अध्यवसायस्थानान्यप्रशस्तान्येव, अनुबन्धोऽप्यन्तर्मृहूर्त्तमेवेति,
  (वृ० प० ६११)

७४. अवसेसं जहा पढमगमए 'अवसेस' मित्यादि, अवशेषं यथा सञ्ज्ञिनः प्रथमगमे औधिक इत्यर्थः (वृ० प० ८११,८१२)

७४. जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतो-मुहुत्तमब्भहियाइं,

श० २४, उ० १, ढा० ४१३ २३

<sup>\*</sup>लय: पर नारी नों संग न कीजें

- ७६. बे भव काल जघन्य, वर्ष सहस्र दश नरक स्थिति । सन्नी तिरि भव जन्य, अंतर्मुहर्त्तं ए अद्धा।।
- ७७. \*उत्कृष्ट सागर च्यार कहीजै, नारक चिउं भव कालो । अंतर्मुहुर्त्तं च्यार अधिक फून, तिर्यंच चिउं भव न्हालो ।।
- ७८. काल एतलो सेवै ते जंतु, करें गति आगति इतो कालो । जघन्य अनें ओघिक गमक ए, दाख्यो तुर्य दयालो।।

### जघन्य नैं जघन्य [४]

वा॰ — जवन्य अनै जवन्य ते सन्नी तियँच नी जवन्य स्थिति अनै नारकी नै विषे जवन्य स्थितिपणै ऊपनों — ए पंचम गमक कहै छै —

७९. तेहिज जघन्य स्थितिक पजत्त संख वर्षायुष,

सन्नो पंचेंद्रो तिरि जेहो ।

ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा में,

जघन्य स्थितिक नेरइयापणेहो।।

८०. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य विमासो ।

ऊपजै दश सहस्र वर्ष स्थितिक में,

उत्कृष्ट पिण दश सहस्र वासो।।

- =१. प्रभु ! एक समय ते किता ऊपजै ? इत्यादिक अवधारो । तुर्य गमक जिम एहनों आख्यो, भणवो तिमहिज सारो ।।
- दर, यावत अद्धा आश्रयी जघन्य थी, वर्ष सहस्र दश जेहो ।
  - े अंतर्मृहूर्स्त अधिक कहीजै, वे भव अद्धा एहो ।।
- द३. उत्कृष्ट चालीस वर्ष सहस्र ए, नारक चिउं भव न्हालो ।
  - अंतर्मुहूर्त्तं च्यार अधिक ए, तियँच चिछं भव कालो ॥
- द४. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो । जघन्य अनें विल जघन्य गमो ए, दाख्यो पंचम दयालो ।।

### जघन्य ने उत्कृष्ट [६]

वा॰ —हिवै जघन्य अने उत्क्रुष्ट ते सन्नी तिर्यंच नों तो जघन्य आयु अने उत्क्रुष्ट आयु नेरइयापणें ऊपनों —ए छठो गमक कहै छै—

८५. तेहिज जघन्य स्थितिक पजत्त संख वर्षायुष सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो ।

ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा में,

स्थिति उत्कृष्ट नेरइयापणेहो ।।

८६. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?

जिन भाषै तसु लेखो ।

जघन्य सागर स्थितिक विषे ऊपजै,

उत्कृष्ट पिण सागर एको ॥

\*लय: पर नारी नों संग न कीजे

२४ भगवती जोड़

- ७७. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउिंह अंतोमुहत्तेहिं अब्भहियाइं,
- ७८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ४। (श० २४।६७)

वा०—'सो चेव जघन्नकाले' त्यादिस्तु सञ्ज्ञिविषये पञ्चमो गमः ५, (वृ० प० ८१२)

- ७९. सो चेव जहण्णकालिहतीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सिहितीएसु, उनकोसेण वि दसवाससहस्स-द्वितीएसु उववज्जेज्जा। (श० २४।६८)
- ५१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति? एवं सो चेव चउत्थो गमयो निरवसेसो भाणियव्वो
- प्रताव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवासहस्साइं अंतो-मुहत्तमब्भिहयाइं,
- ५३. उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहि अंतो-मुहुत्तेहि अब्भहियाइं,
- प्यतियं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागितं करेज्जा ४ । (शब्द २४।६९)

वा॰—इह च 'सो चेव' त्ति स एव सञ्ज्ञी जघन्य-स्थितिकः, 'सो चेव उक्कोसे त्यादिस्तु षष्ठः ६,

(वृ० प० ८११)

 ८४,८६. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा। (श० २४।७०)

- ५७. ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ? इत्यादिक सहु जाणी। तुर्य गमक ए सन्ती तणों जिम, भणवो सर्व पिछाणी।।
- ददः जाव काल आश्रयी जघन्य थी, नारक सागर एको । अंतर्मुहूर्त्त सन्नी तियँच भव, जघन्य उभय भव लेखो ।। द९. उत्कृष्ट अद्धा च्यार सागर फून,

नारक चिउं भव भणियै ।

अंतर्मुहूर्त्तं च्यार अधिक ए,

चिउं तिरि भव स्थिति गिणियै।।

९०. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो । जघन्य अनैं उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो षष्टम दयालो ।।

### उत्कृष्ट नै ओघिक (७)

वा॰ —हिवै उत्कृष्ट नै ओघिक —ते सन्नी तिर्यंच नों तो उत्कृष्टो आउखो, नारकी नैं विषे ओघिक —ए सप्तम गमक कहै छैं—

६१. जेष्ठ काल स्थितिक पजत्त संख वर्षायुष,

सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो।

रत्नप्रभा पृथ्वी नें विषे जे, ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहों।। ९२. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य सूपेखो।

ऊपजै दश सहस्र वर्ष स्थितिक में, उत्कृष्ट सागर एको ।।

- ९३. ते एक समय प्रभु! किता ऊपजे ? शेष सर्व ही जाणी।
  परिमाण आदि देई भव आश्रयी, एतला लगे पिछाणी।।
- ९४. एहिज सन्नी पंचेंद्री तियंच नों घुर गम,

कह्यो ओघिक नें ओघीको । तेहनें विषे ऊपजाव्या तेहिज, कहिवो सर्व सधीको ।।

९५. णवरं स्थिति आउखो तेहनों, जघन्य पूर्व कोड़ जाणी।

- र. णवर स्थात जाउखा तहुना, जवन्य पूर्व काड़ जाणा । उत्क्रष्टी पिण कोड़ पूर्व नों, अनुबंध पिण इम ठाणी ।।
- ९६. ग्रेष तिमज घुर गमे कह्यो जिम, काल आश्रयी तासो। जघन्य पूर्व कोड़ तिरिभव आयु, नरक सहस्र दश वासो।।
- ९७. उत्कृष्ट अद्धा च्यार सागर ए, नारक चिउं भव न्हालो । च्यार पूर्व कोड़ तिर्यंच भव चिउं, ए अठ भव स्थिति कालो ॥
- ९८. एतलो काल सेवं ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो ।। उत्कृष्ट नें ओघिक गमक ए, दाख्यो सप्तम दयालो ।।

### उत्कृष्ट नें जघन्य [ ८ ]

बा॰ — ते सन्नी तिर्यंच नों उत्कृष्ट आउखो अनै नारक ने विषे जधन्य आउखापणों ऊपनों — ए अष्टम गमक कहै छै —

९९. तेहिज जेष्ठ स्थितिक पजत्त संख वर्षायुष,

सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो।

ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा में,

जघन्य स्थितिक नेरइयापणेहो ।।

- ८७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो
- ८८. जाव कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं,
- ५९. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउिंह अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं,
- ९०. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ६। (श० २४।७१)
  - वा॰ "उक्कोसकाले' त्यादिस्तु सप्तमः ७, तत्र च 'एएसि चेव पढमगमो' त्ति एतेषामेव सञ्ज्ञिनां प्रथमगमो यत्रौधिक औधिकेषुत्पादितः,

(वृ० प० ८१२)

- ९१. उक्कोसकालद्वितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णि-पंचिदियरिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयण-प्पभापुढविनेरइएसु उवविज्जित्तए,
- ९२. से णं भंते ! केवतियकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श॰ २४।७२)
- ९३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपञ्जवसाणो
- ९४. सो चेव पढमगमओ नेयव्वो,
- ९५. नवरं ठिती जहण्णेणं पुत्र्वकोडी, उक्कोसेण वि पुत्र्वकोडी । एवं अणुबंधो वि,
- ९६. सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसिंह वाससहस्सींह अब्भहिया,
- ९७. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चर्डीह पुब्वकोडीहि अब्भहियाइं,
- ९८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ७ । (श० २४।७३)

वा॰—'सो चेवे' त्यादिरष्टमः ८, इह च 'सो चेव' ति स एवोत्कृष्टस्थितिकः सञ्ज्ञी ८,

(वृ० प० ८१२) ९९,१००. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेणं वि दसवाससहस्स-द्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।७४)

श० २४, उ० १, ढा० ४१३ २५

१००. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ? जिन कहै जघन्य विमासो । ऊपजै दश सहस्र स्थितिक विषे,

उत्कृष्ट पिण दश सहस्र वासो ।।

- १०१. ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ? इत्यादिक इम लहियै । तेहिज सप्तम गमक सन्ती नों, आख्यो जिम सहु कहियै ।।
- १०२. यावत भव आदेश लगे ए, काल आश्रयी तासो जघन्य पूर्व कोड़ तिरि भव आयु,

नारक दश सहस्र वासो।।

- १०३. उत्कृष्ट पूर्व कोड़ च्यार जे, तिर्यंच चिउं भव बद्धा। चालीस सहस्र वर्ष नारक भव, अष्टम भवे इम लद्धा।।
- १०४. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो। उत्कृष्ट नें फुन जघन्य गमक ए, दाख्यो अष्टम दयालो।।

### उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट [६]

बाo — ते सन्नी तियँच नों उत्कृष्ट आउखो अने नारकी नैं विषे उत्कृष्ट आउखापणें ऊपनों — ए नवम गमक कहै छै —

१०५. जेष्ठ काल स्थितिक पजत्त संख वर्षायुष,

सन्नी पंचेंद्री तिरि जेहो।

रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थितिके,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो ॥

१०६. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य सुलेखो।

एक सागर स्थितिक विषे ऊपजै, उत्कृष्ट सागर एको ।।

- १०७. ते एक समय प्रभृ! किता ऊपजै ? इत्यादिक अवधारो । ते सन्ती तियँच नों गमक सप्तमों,
  - आख्यो तिम सुविचारो ।।
- १०८. यावत भव आदेश लगै इम, काल आश्रयी जोड़ो। जघन्य सागर इक नारक भव में, तिरि भव पूर्व कोड़ो।।
- १०९. उत्कृष्ट च्यार सागर नों किहयै, नारक चिछं भव एहो। च्यार पूर्व कोड़ चिछं तिर्यंच भव, अठ भव अद्धा लेहो।
- ११०. एतलो काल सेवै ते जंतु, करैं गति आगति इतो कालो । जस्क्रष्ट नैं उत्क्रष्ट गमक ए, दाख्यो नवम दयालो ।।
- १११. इम ए नव गम आख्या तिण में, उत्क्षेप निक्षेप कहेवो । नव ही गमा ने विषे पिण भणवा, असन्नी जिम स्वयमेवो ।।

बा० — नव ही गमका छै। ते एक-एक गमा नै विषे उत्क्षेप निक्षेप स्वयमेव किह्वा। उत्क्षेप ते गमो मांडिवो ते किम पर्याप्तो संख्यात वर्ष आयु सन्नी पंचेंद्री तियँच. रत्नप्रभा में नेरइयापणें ऊपजवा जोग्य इम गमक मांडिवो, तेहनैं उत्क्षेप किह्यै। अनै निक्षेप ते गमक पूरो किरवो ते किम एतलो काल सेवै एतलो काल गति-आगित करै। ए निक्षेप कही नैं ते एक-एक गमका विषे असन्नी नीं परै उत्क्षेप-निक्षेप स्वयमेव किहवा।

२६ भगवती जोड़

- १०१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो
- १०२. जाव भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्य-कोडी दर्साह वाससहस्सेहि अब्भहिया,
- १०३. उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वास-सहस्सेहि अब्भहियाओ,
- १०४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ८ । (श० २४।७५)

वा॰—'उक्कोसे' त्यादिर्नवमः ९, (वृ॰ प० ८१२)

- १०५. उक्कोसकालद्वितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णि-पींचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोस-कालद्वितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए,
- १०६. से णं भंते ! केवतिकालट्टितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोत्रमट्टितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्टितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।७६)
- १०७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो
- १०८. जाव भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुठवकोडीए अब्भहियं,
- १०९. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चर्जीह पुव्वकोडीहि अब्महियाइं,
- ११० एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ९।
- १११. एवं एते नव गमका । उक्खेव-निक्खेवओ नवसु वि जहेव असण्णीणं । (श० २४।७७)

वा० — 'उक्खेविनिक्खेवओ' इत्यादि, तत्रोत्क्षेप: — (ग्रन्थाग्रम् १६०००) प्रस्तावना स च प्रतिगम-मौचित्येन स्वयमेव बाच्य:, निक्षेपस्तु — निगमनं सोऽप्येवमेवेति। (वृ०प० ६१२) ११२. शतक चडबीसम प्रथम देश ए, च्यारसौ तेरमी ढालो। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे,

'जय-जश' हरष विशालो ।।

### ढाल : ४१४

दूहा

- १. संख्यायु पर्याप्तो, सन्नी पं. तियँच।
  रत्नप्रभा नें आश्रयी, पूर्वे आख्यो संच।।
  हिवै सक्करप्रभा नैं विषे पर्याप्त संख्यात वर्षायुष सन्नी पंचेंद्री तियँच
  ऊपजै, तेहनां नव गमा कहै छै—
- २. सक्करप्रभा नैं विषे, तेहिज ऊपजै ताय। ओघिक नैं ओघिक हिवै, प्रथम गमो कहिवाय।। ओ**घिक नै ओघिक [१]**

वा॰ — ओघिक नैं ओघिक ते संख्यात वर्ष आयु पर्याप्तो सन्नी पंचेंद्री तियँच जवन्य-उत्कृष्ट स्थिति नों धणी सवकरप्रभा में जवन्य-उत्कृष्ट स्थितिक नारकी नैं विषे ऊपजै ते माटै सन्नी तियँच पंचेंद्री नीं ओघिक, समचै स्थितिक नारकी नैं विषे पिण ओघिक ते समचै स्थितिक नैं विषे ऊपजै — ए प्रथम गमक बखाणियै छै—

दूजी नरक में संख्याता वर्ष नों सन्ती तियँच पंचेंद्रिय ऊपजै, तेहनों अधिकार'

\*सन्नि तियँच सक्कर प्रमुख ऊपजै ।। (ध्रुवदं)

- ३. पर्याप्तो जे संख्यात वर्षायुष प्रभु ! सन्नी पंचेंद्री तिर्यंचो रे । ऊपजवा जोग्य सक्करप्रभा में, नारकी नैं विषे संचो रे ।।
- ४. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?
  जिन कहै जघन्य थी इष्टो रे ।
  एक सागर स्थितिक विषे ऊपजै, तीन सागर उत्कृष्टो रे ।।
  ५. ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ?

जिम रत्नप्रभा रै मां ह्यो रे। ऊपजतां नें बोल कह्या जे, परिमाण संघयणादि ताह्यो रे।। ६. सक्करप्रभा विषे ऊपजतां नें,

कहियै सहु निर्विशेखो रे। यावत भव आदेश जघन्य बे, उत्कृष्ट अठ भव लेखो रे।। ७. काल आश्रयी जघन्य सागर इक, नारक भव स्थिति कालो रे। अंतर्मुहूर्त्त अधिक तिरि भव, बे भव अद्धा न्हालो रे।।

\*लय: प्रभवो चोर चोरां ने समझावै १. परि. २. यंत्र ४

- १. पर्याप्तकसंख्यातवर्षायुष्कसञ्ज्ञपञ्चेन्द्रियतिर्यंग्-योनिकमाश्रित्यरत्नप्रभावक्तव्यतोक्ता,
   (वृ० प० ५१२)
- २. अथ तमेवाश्वित्य शर्कराप्रभावक्तव्यतोच्यते, तत्रौधिक औधिकेषु तावदुच्यते—़े (वृ० प० ५१२)

- ३. पञ्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए,
- ४. से णं भंते ! केवितकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमिंद्वतीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।७८)
- ४,६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति?
  एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी सम्बेव
  निरवसेसा भाणियव्वा जाव भवादेसो ति ।
  'पज्जत्ते' त्यादि, 'लद्धी सम्बेव निरवसेसा भाणियव्वा'
  परिमाणसंहननादीनां प्राप्तिर्येव रत्नप्रभायामुत्पित्सोकक्ता सैव निरवशेषा शर्कराप्रभायामपि भणितव्येति,
  (वृ० प० ८१३)
- ७. कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमन्भहियं,

श॰ २४, उ० १, ढा० ४१४ २७

- प्रवक्तरप्रभा मांय, जघन्य स्थिति सागर तणीं।
   जघन्यायु तिरि पाय, अंतर्मृहूर्त्तं जाणवृं।।
- ९. \*उत्कृष्ट द्वादश सागर कितयै, च्यार नारक भव अद्धा रे। च्यार कोड़ पूर्व अधिकेरा, तिर्यंच भव चिउं बद्धा रे।।

### सोरठा

- १०. दूजो नरके देख, सागर त्रि उत्कृष्ट स्थिति। चतुर्गुणे करि लेख, द्वादश सागर चिउं भवे।।
- ११. कोड़ पूर्व उत्कृष्ट, संख्यायु सन्नी तिरि। चतुर्गुणे करि इष्ट, चिउं तिरि भव चिउं कोड़ पुष्व।।
- १२. \*काल एतलो सेवै ते इम, कर गित आगित इतो कालो रे। ओघिक नैं ओघिक गमक ए, दाख्यो प्रथम दयालो रे।।
- १३. इम रत्नप्रभा नां गमक सरीखा, सक्करप्रभा नैं विषेहो रे। नव गमा पिण भणवा णवरं, एतलो फेर कहेहो रे।। १३. सर्व गमक विषे पिण नारक स्थिति,

विल संवेधद्वारे लहिबू रे । सागरोपम भणवा विधि सेती, ते इह रीते कहिबूं रे ।।

#### सोरठा

- १५. रत्नप्रभा स्थिति द्वार, द्वार संवेध विषे वली। वर्ष सहस्र दश कार, इक सागर आखी तिहां।।
- १६. सक्कर विषे विचार, जघन्य एक सागर स्थिति । उत्कृष्टी अवधार, सागर तीन तणीं इहां ।।
- १७. उत्कृष्ट संवेधेह, त्रिण सागर उत्कृष्ट स्थिति। कियां चउगुणां जेह, बारह उदधि उत्कृष्ट अद्धा।।

तीजी स्यूं छठी नरक तक संख्यात वर्ष नों सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजं, तेहनों अधिकार'

१८. \*एवं यावत छठी पृथ्वी लग, णवरं इतरो विशेखो रे। नारक स्थिति जाव जे पृथ्वी नैं, जघन्य उत्कृष्टी लेखो रे।।

१९. तिका स्थिति तिणहिज अनुक्रम करी, चउगुणी करवी ताह्यो रे। उत्कृष्ट कायसंवेध विषे ए, जुई-जुई कहिवायो रे।।

### सोरठा

२० वालुकप्रभा मांय, जघन्य तीन सागर स्थिति । सागर सप्तज पाय, उत्कृष्टी स्थिति छै तिहां ।। २१. पंक जघन्य स्थिति दिध सात, दश सागर उत्कृष्ट स्थिति । धूम जघन्य दश ख्यात, सतर उदिध उत्कृष्ट ही ।।

\*लय: प्रभवो चोर चोरां नै समझावै १. परि० २. यंत्र ६, ८, १०, १२

२८ भगवती जोड़

- प्तागरावमं अंतोमुहुत्तम्ब्भिहियं ति द्वितीयायां
   जघन्या स्थितिः सागरोपममन्तर्मुहूर्तं च सञ्ज्ञिभव-सत्किमिति, (वृ०प०८१३)
- उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुब्वकोडीहिं अब्भहियाइं,
- १०. 'उक्कोसेणं बारसे' त्यादि द्वितीयायामुत्क्वष्टतः सागरोपमत्रयं स्थितिः तस्याश्चतुर्गुणत्वे द्वादश, (वृ० प० **८१**२)
- ११. एवं पूर्वकोटयोऽपि चतुर्षु सञ्ज्ञितिर्यग्भवेषु चतस्र एवेति । (वृ० प० ८१३)
- **१**२. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा।
- १३. एवं रयणप्पभपुढविगमसिरसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं—
- १४. सब्वगमएसु वि नेरइयद्विती-संवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा,
- १५. रत्नप्रभायामायुर्द्वारे संवेधद्वारे च दशवर्षसहस्राणि सागरोपमं चोक्तं (व०प० ८१३)
- १६. द्वितीयादिषु पुनर्जघन्यत उत्कर्षतम्च सागरोपमाण्येव वाच्यानि, (वृ० प० ८१३)
- १८. एवं जाव छट्ठपुढिव त्ति, नवरं नेरइयिठई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया
- १९. सा तेणं चेव कमेणं चउगुणा कायव्वा । 'चउगुणा कायव्व' त्ति उत्कृष्टे कायसंवेधे इति, (वृ. प. ८१३, ८१४)

- २२. तमा मही में ताम, जघन्य स्थिति सतरोदिध । उत्कृष्टी दुख धाम, उदिध बावीस तणीं कही ।।
- २३. \*वालुक सात सागर उत्कृष्टी, चउगुणी कीधां तेहो रे । सागरोपम अठवीस हुवै इम, उत्कृष्ट कायसंवेहो रे ।।
- २४. पंक उदिध दश चउगुणी कीधां, चालीस सागर होयो रे। धूम सत्तर दिध चउगुणी कीधां, अड़सठ सागर जोयो रे।। २५. छठी नरके उत्कृष्टी स्थिति, वावीस सागर इष्टो रे। चौगुणी कीधां उदिध अठघासी, कायसंवेध उत्कृष्टो रे।। २६. धुर वे नरके ऊपजै छै ते, षट संघयणी कहियै रे। आगल इक-इक नरक विषे जे, इक-इक हीणो लहियै रे।।
- २७. वालुकप्रभा विषे जे ऊपजै, पंच संघयणी जाणी रे।
  वज्रऋषभनाराच कहीजै, जाव कीलिका ठाणी रे।।
  २८. पंकप्रभा नें विषे ऊपजै, च्यार संघयणी धारो रे।
  कीलिका संघयणी निहं जावै, चउथी नरक मक्कारो रे।।
  २९. धूम विषे जाय तीन संघयणी, अर्द्धनाराच संघयणी रे।
  पंचमी नरक विषे निहं जावै, जिन वाणी सत्य कहणी रे।।
  ३०. तमा विषे जाय बे संघयणी, वज्जऋषभनाराचो रे।
  ऋषभनाराचवंत पिण जावै, शेष तिमज वच साचो रे।।
  सातवीं नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तियँच पंचेद्विय ऊपजै, तेहनों

<sup>अधिकार'</sup> ओघिक नै ओघिक (१)

- ३१. पर्याप्तो संख्यात वर्षायुष, सन्नी पंचेद्री तिर्यंचो रे। अपजवा जोग्य अधोसप्तमी, नरक विषे जे संचो रे।।
- ३२. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ? जिन कहै जघन्य कहायो रे । बावीस सागर स्थिति विषे ते, उत्कृष्ट तेतीस पायो रे ।।
- ३३. ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ?, जिम रत्नप्रभा नैं विषेहो रे । नव गमा कह्या तिणहिज रीते, कहिवा नव गम तेहो रे ।। ३४. लद्धी प्राप्ति पिण सहु तिम कहिवी, णवरं इतरो विशेखो रे । धुर संघयणी तिहां ऊपजै, अन्य निखेध संपेखो रे ।।

\*लय: प्रभवो चोर चोरां ने समझावै १. परि २. यंत्र १४

- २३. वालुयप्पभाए पुढवीए अट्टावीसं सागरीवमाइं चउ-गुणिया भवंति, 'वालुयप्पभाए अट्टावीसं' तत्र सप्त सागरोपमाण्यु-त्कर्षत स्थितिहक्ता सा च चतुर्गुणा अष्टाविशतिः स्यात्, (वृ. प. ८१४)
- २४. पंकप्पभाए चत्तालीसं, ध्मप्पभाए अट्ठसिंट्ट,
- २५. तमाए अट्टासीइं।
- २६. आद्ययोरेव हि पृथिव्योः सेवार्त्तेनोत्पद्यन्ते, एवं चतुर्थी ४ पञ्चमी ३ षष्ठी २ सप्तमीषु १ एकैकं संहननं हीयत इति । (वृ. प. ८१४)
- २७. संघयणाइं वालुयप्पभाए पंचिवहसंघयणी, तं जहा
   वइरोसहनारायसंघयणी जाव खीलियासंघयणी,
- २८. पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी,
- २९. धूमप्पभाए तिविहसंघयणी,
- ३०. तमाए दुविहसंघयणी, तं जहा —वइरोसभनाराय-संघयणीय, उसभनारायसंघयणीय, सेसं तं चेव। (श० २४।७९)
- ३१. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए अहे सत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उवविज्जित्तए,
- ३२. से णं भंते ! केवतिकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमिंद्वतीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा। (श० २४।८०)
- ३३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? एवं जहेव रयणप्पभाए नव गमका,
- ३४. लढी वि सच्चेव, नवरं-वइरोसभनारायसंघयणी।

**श० २४, उ० १, ढा० ४१४** २९

- ३५. स्त्री वेदक छठी लग जावै, सप्तमीं में निह जायो रे। शेष तिमज छठी तिम कहिवो, जाव अनुबंध ताह्यो रे।।
- ३६. कायसंवेधज भव आश्रयी ते, जघन्य तीन भव जाणी रे। उत्कृष्टा भव सात ग्रहण ह्वं, हिव तसु न्याय पिछाणी रे।।

३७. मच्छ सप्तमी जाय, नारकपणेंज ऊपजी।
मच्छ विषे विल आय, पुनः मच्छ तीजे भवे।।
३८. तुर्य तमतमा जाय, पुनः मच्छ पंचम भवे।
विल सप्तमी पाय, विल मच्छ सप्तम भव वृत्तौ।।
३९. \*काल आश्रयी जघन्य थकी जे, उदिध बावीस कहायो रे।
अंतर्मुहर्त्त दोय अधिक फुन, निसुणो एहनों न्यायो रे।।

#### सोरठा

४०. सागर बावीस जोय, सप्तमी नारक जघन्य स्थिति । अंतर्मुहूर्त्तं दोय, प्रथम तृतीय भव मच्छ स्थिति ।।

४१. \*काल आश्रयी उत्कृष्ट थी जे, उदिध छासठ ह्वं ताह्यो रे। पूर्व कोड़ज च्यार अधिक फुन, निसुणों तेहनुं न्यायो रे।।

### सोरठा

४२. तमतमा विषे भव तीन, बावीस बावीस उदिध नां। कोड़ पूर्व चिउं चीन, मच्छ तणां चिउं भव विषे।।

४३. नरक सातमीं मांय, जघन्य स्थितिक नारकपणें। उत्कृष्ट त्रिण भव पाय, एकांतरिकज इह विधे।।

वा०—एकांतरिक तमतमा नां तीन भव, ते किम ? तियँच १, तमतमा २, तियँच ३, तमतमा ४, तियँच ४, तमतमा ६, तियँच ७—इम एकांतरिक सातमीं नैं विषे जघन्य स्थितिक नां तीन भव करैं पिण अधिक न करैं। अनैं तियँच नां च्यार भव च्यार कोड़ पूर्व नां करें। ए सात भव उत्कृष्ट अद्धा। इहां सात भव नों काल परिमाण हुवै। जे 'कालओ' एहवूं पाठ इहां कह्यो छै ते काल उत्कृष्ट वांछ्यो, पिण नारक नां भव नी उत्कृष्टी स्थिति न बांछी। जे भणी तीन कोड़ पूर्व सातमी नारकी नां जघन्य स्थितिक नों काल अनैं च्यार कोड़ पूर्व तियँच भव नों काल अधिक ए लेखच्यो।

४४. \*काल एतलो सेवै जंतु, करैगति आगति इतो कालो रे। ओघिक ने ओधिक गमो ए, दाख्यो प्रथम दयालो रे।। ३५. इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव अणु-बंधो ति । 'इत्थिवेया न उववज्जंति' ति षष्ठचन्तास्वेव पृथिवीषु स्त्रीणामुत्पत्तेः (वृ० प० ८१४)

३६. संबेहो भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाई, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं।

३७,३८. 'उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं' ति मत्स्यो मृत्वा १ सप्तम्यां गतः २ पुनर्मत्स्यो जातः ३ पुनः सप्त-म्यां गतः ४ पुनरिप मत्स्यः ५ पुनरिप तथैव गतः ६ पुनर्मत्स्यः ७ इत्येविमिति । (वृ० प० ८१४)

३९. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं,

४०. 'कालादेसेण' मित्यादि, इह द्वाविशतिः सागरो-पमाणि जघन्यस्थितिकसप्तमपृथ्वीनारकसम्बन्धीनि अन्तर्मुहूर्त्तंद्वयं च प्रथमतृतीयमत्स्यभवसम्बन्धीति, (वृ० प० ८१४)

४१. उक्कोसेणं छार्वाट्ट सागरोवमाइं चर्डाह पुन्वकोडीहि अक्भहियाइं,

४२. 'छार्वाट्ठं सागरोवमाइं' ति वारत्रयं सप्तम्यां द्वाविंशति-सागरोपमायुष्कतयोत्पत्तेः चतस्रश्च पूर्वकोटच-श्चतुर्षु नारकभवान्तरितेषु मत्स्यभवेष्विति,

(वृ० प० ८१४)

४३. अतो वचनाच्चैतदवसीयते — सप्तम्यां जघन्यस्थिति -षूत्कर्षतस्त्रीनेव वारानुत्पद्यत इति, (वृ० प० ८१४)

४४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा १। (श० २४।८१)

<sup>\*</sup>लय: प्रभवो चोर चोरां ने समझावै

३० भगवती जोड़

### ओधिक नें जघन्य (२)

४५. तेहिज जघन्य काल स्थितिक विषे ऊपनों, वक्तव्यता सहु जाणी रे। लब्धि प्राप्ति कहियै विध सेती,

जाव भवादेश लग माणी रे ।।

वा॰—-तेहिज सन्नी तियँच जघन्य काल स्थितिक नैं विषे ऊपनों, इह वचने करी जघन्य थकी बावीस सागर नैं विषे ऊपनों अनैं उत्कृष्ट थकी पिण बावीस सागर नैं विषे ऊपनों, इम जाणवो। अनैं लद्धी प्रमुख नीं सर्व ही वक्तव्यता जाणवी।

४६. काल आश्रयी जघन्य थको जे, कालादेश पिण धारो रे। तिणहिज रीते कहिवो यावत, अधिक पूर्व कोड़ च्यारो रे।। ४७. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो रे। ओघिक नें विल जघन्य गमक ए,

दाख्यो द्वितीय दयालो रे ॥

### ओघिक नें उत्कृष्ट (३)

४८. तेहिज उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे ऊपनों, लब्धि सर्वे ही लहियै रे । यावत ही अनुबंध लगै ए, भवादेश हिव कहियै रे ।।

वा॰—तेहिज सन्नी तियँच उत्कृष्ट काल स्थितिक नैं विषे ऊपनों, इह वचने करी जघन्य थकी पिण ३३ सागर स्थितिक विषे ऊपनों, उत्कृष्ट थकी पिण ३३ सागर स्थितिक विषे ऊपनों, इम कहिवूं। अनैं सगली ही लढ़ी यावत अनुबंध लगै जाणव्ं।

- ४९. भव आश्रयी जघन्य थकी जे, तिण भव ग्रहण करेवो रे। प्रथम तृतीय भव तिर्यंच केरो, एक नारक भव लेवो रे।।
- ५०. उत्कृष्ट भव पंच ग्रहण जे, मच्छ तणां भव तीनों रे। बे भव सप्तमी उत्कृष्ट आयु, हिव तसु न्याय सुचीनो रे।।

### सोरठा

- ५१. मच्छ मरी नें जेह, तेतीस सागर सप्तमीं। ऊपजी नें विल तेह, मच्छ हुवै तीजे भवे।।
- ५२. तुर्य भवे फुन जाय, उत्कृष्टी स्थिति सप्तमीं। मच्छ पुनरपि थाय, उत्कृष्टा भव पंच इम।।
- ५३. सप्तमी नरक मभार, उत्कृष्टी स्थिति नै विषे । इम जावै बे वार,तीजी वार न ऊपजै ।।
- ५४. \*काल आश्रयी जघन्य थकी जे, नारक उदिध तेतीसो रे। अंतर्मुहूर्त्त दोय अधिक पिण, बे भव मच्छ कहीसो रे।।
- ५५. उत्कृष्ट छासठ सागर नारक, बे भव स्थिति उत्कृष्टो रे । कोड़ पूर्व त्रिण अधिक कहीजै,

त्रिण मच्छ भव स्थिति जिष्ठो रे।।

४४. सो चेव जहण्णकालिंद्वतीएसु उववण्णो, सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति ।

- ४६. कालादेसेणं जहण्णेणं कालादेसो वि तहेव जाव चर्डाह पुब्वकोडीहि अब्भहियाइं,
- ४७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा २। (श० २४।८२)
- ४८. सो चेव उक्कोसकालिहितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव अणुबंधो त्ति ।

- ४९. भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं,
- ४०. जक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। 'जक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं' ति त्रीणि मत्स्यभव-ग्रहणानि द्वे च नारकभवग्रहणे (वृ० प• ८१४)

- ५३. अत एव वचनादुत्कुष्टिस्थितिषु सप्तम्यां वारद्वय-मेवोत्पद्यत इत्यवसीयते ३ (वृ०प० ८१४)
- ५४. कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहृत्तेहिं अब्भहियाइं,
- ४४. उक्कोसेणं छाविंदुं सागरोवमाइं तिर्हि पुव्वकोडीहिं अक्भिहियाइं,

श० २४, उ० १, ढा॰ ४१४ ३१

<sup>\*</sup>लय: प्रभवो चोर चोरां ने समझावै

५६. एतलो काल सेवें ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो रे। ओघिक नैं उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो तृतीय दयालो रे।।

### जघन्य अनै ओघिक (४)

५७. पजत्त संख्यात वर्षायुष सन्नी तिरि, जघन्य स्थितिक छै जेहो रे । अधोसप्तमी पृथ्वी विषे जे,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो रे।।

- प्रद. रत्नप्रभा नां चउथा गमा नीं, वक्तव्यता सहु भणवी रे। यावत भव आदेश लगें इम, णवरं विशेषज थुणवी रे।।
- ५९. रत्नप्रभा में षट संघयणी, जघन्य स्थितिक तिरि जायो रे। तुर्य गमे इहां सप्तम पृथ्वी, धुर संघयणी ध्यायो रे।। ६०. रत्नप्रभा में स्त्रीवेदक पिण,

तिरि स्थिति जघन्य गच्छंतो रे।
तुर्य गमे इहां सप्तम पृथ्वी, स्त्री वेदक निह जंतो रे।।
६१. भव आश्रयी जघन्य थकी जे, त्रिण भव ग्रहण कहीजे रे।
उत्कृष्टा भव सप्त ग्रहण छै, न्याय पूर्ववत लीजे रे।।

#### सोरठा

६२. जघन्य तीन भव ख्यात, दोय मच्छ इक नारकी। उत्कृष्टा भव सात, त्रिण नारकी चिउं मच्छ नां।। ६३. \*काल आश्रयी जघन्य थकी जे, बाबीस सागर न्हालो रे।

अंतर्मृहूर्त्तं दोय अधिक पिण, त्रिण भव नुं ए कालो रे।।

६४. उत्कृष्ट छासठ सागर नारिक,

जघन्य स्थितिक भव तीनों रे। अंतर्मृहूर्त्तं चार अधिक फुन,

चिउं मच्छ भव अठ लीनो रे ।।

६५. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो रे। जघन्य अनें ओघिक गमक ए, दाख्यो तुर्य दयालो रे।।

### जघन्य नैं जघन्य (४)

६६. पजत्त संख्यात वर्षायुष सन्नी तिरि,

जघन्य स्थितिक छै जेहो रे।

जघन्य स्थितिक विषे नरक सप्तमी,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो रे।।

६७. जघन्य स्थितिक विषे तेह ऊपनों,

इम तुर्य गमो पहिछाणो रे । वो

तेहिज समस्त प्रकारे कहिवो,

जाव कालादेश लग जाणो रे।।

४६. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ३। (श० २४।८३)

५७,५८. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिहितीओ जाओ, सच्चेव रयणप्पभपुढविजहण्णकालिहितीयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव भवादेसो ति, नवरं—

- ४९,६०. पढमं संघयणं, नो इत्थिवेदगा।
  तत्र रत्नप्रभायां षट् संहननानि त्रयश्च वेदा उक्ताः
  इह तु सप्तमपृथिवीचतुर्थगमे प्रथममेव संहननं स्त्रीवेदनिषेधश्च वाच्य इति ४, (वृ० प० ५१४)
- ६१. भवादेसेणं जहण्येणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं।
- ६३. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं
- ६४. उक्कोसेणं छार्वाहे सागरोवमाइं चर्जाह अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं,
- ६५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ४ । (श० २४।८४)
- ६६,६७. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियन्त्रो जाव कालादेसो त्ति ४। (श० २४।८४)

<sup>\*</sup>लय: प्रभवो चोर चोरां नै समझावै

३२ भगवती जोड़

### जघन्य ने उत्कृष्ट (६)

६८. पजत्त संख्यात वर्षायुष सन्नी तिरि,

जघन्य स्थितिक छै जेहो रे । उत्कृष्ट स्थितिक विषे नरक सप्तमी,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो रे।।

- ६९. उत्कृष्ट स्थिति विषे तेह ऊपनों, लब्धि सर्व ही लहियै रे। यावत ही अनुबंध लगै ए, हिव भव आश्रयी कहियै रे।।
- ७०. भव आश्रयी जघन्य थकी जे, त्रिण भव ग्रहण पिछाणी रे। प्रथम मच्छ भव द्वितीय सप्तमी,

तृतीय मच्छ फुन जाणी रे।।

- ७१. उत्कृष्टा भव पंच कहीजें, बे भव सप्तमी लेहो रे। तिर्यंच नां भव तीन करें ते, हिव तसु काल सुणेहों रे।।
- ७२. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, तेतीस सागर तेहो रे। अंतर्मुहुर्त्त दोय अधिक फुन, त्रिण भव अद्धा एहो रे।।
- ७३. उत्कृष्ट छासठ सागर नारक, उत्कृष्ट स्थिति बे वारो रे। अंतर्मृहूर्त्त तीन अधिक फुन, त्रिण तिरि भव अद्ध धारो रे।।

७४. एतलो काल सेवै ते जंतु,

करै गित आगति इतो कालो रे ।। जघन्य अने उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो षष्ठम दयालो रे ।।

### उत्कृष्ट नें ओघिक (७)

७५. तेहिज उत्कृष्ट स्थितिक सन्नी तियँचज,

गयो सातमी विषे जगीसो रे । जघन्य बावीस सागर नें आउखै,

उत्कृष्ट सागर तेतीसो रे।।

७६. एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ? शेष लब्धि सहु लहवी रे। सप्तमी पृथ्वी नां प्रथम गमक नीं,

वक्तव्यता इहां कहवी रे।।

- ७७. यावत भव आश्रयी लग भणवूं, णवरं स्थिति अनुबंधो रे। जघन्य उत्कृष्ट पिण पूर्व कोड़ी, शेष तिमज जे संधो रे।।
- ७८. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, सागरोपम बावीसो रे। कोड़ पूर्व वे अधिक कहीजै, हिव तसु न्याय जगीसो रे।।

#### सोरठा

- ७९. बावीस सागर जोय, सप्तम पृथ्वी जघन्य स्थिति।
  पूर्व कोड़ी दोय, उत्कृष्ट स्थिति तिरि बे भवे।।
- \*उत्कृष्ट छासठ सागर नारिक,

त्रिण भव स्थिति जघन्यो रे। च्यार पूर्व कोड़ि उत्कृष्टी स्थिति,

तियाँच चिउं भव जन्यो रे।।

\*लय : प्रभवो चोर चोरां नैं समझावै

- ६८,६९. सो चेव उक्कोसकालिंद्वतीएसु उववण्णो, सच्चेव लढी जाव अणुबंधो त्ति ।
- ७०. भवादेसेणं जहण्णेणं तिष्णि भवग्गहणाइं,
- ७१. उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं,
- ७२. कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि अंतोमुहुत्तेहिं अ**ब्भहि**याइं,
- ७३. उक्कोसेणं छाविंदु सागरोवमाइं तिहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं,
- ७४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ६ । (श० २४।८६)
- ७५. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जहण्णेणं बावीससागरोवमद्वितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरो-वमद्वितीएसु उववज्जेज्जा। (श० २४।८७)
- ७६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमवत्त-व्वया भाणियव्वा
- ७७. जाव भवादेसो त्ति, नवरं—ि ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तं चेव।
- ७८. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं,
- ८०. उक्कोसेणं छाविंदुं सागरोवमाइं चर्जीहं पुन्वकोडीहिं अब्भहियाइं,

श० २४, उ० १, ढा० ४१४ ३३

दश्. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो रे। उत्कृष्ट नें ओघिक गमक ए. दाख्यो सप्तम दयालो रे।।

वा० इहां तीन भव सातमीं नां जघन्य स्थिति नां बावीस सागर नां ते माटै बावीस नै त्रिगुणा कियां छासठ सागर थया। अनै तिर्यच नां च्यार भव, तिर्यंच कोड़ पूर्व उत्कृष्ट स्थिति नां ते माटै च्यार कोड पूर्व अधिक ए उत्कृष्ट काल कहा। इहां कोई पूर्छ — जे सातमैं गमैं उत्कृष्ट नैं ओधिक छै, ते तिर्यंच नों उत्कृष्ट आउखो अनैं नारकी नों ओधिक माटै उत्कृष्ट तेतीस सागर नां दोय भव गिण्यां छासठ सागर हुवै। ते उत्कृष्ट स्थिति नां बे भव किम न गिण्या अनैं जघन्य स्थिति नां तीन भव किण न्याय गिण्या ?

तेहनो उत्तर - इहां कायसंवेध बीसमा द्वार नैं विषे एहवूं प्रश्न पूछ्यो जे सन्नी तिर्यंच मरी सातमीं जाय बलि तिहां थी नीकली सन्नी तिर्यंच हुवै। इम गतागित केतलो काल करैं ? जद भगवंत काल नों जाब दियो-जे भव आश्रयी जघन्य तीन भव, उत्कृष्टा सात भव। ते कोड़ पूर्व तिर्यंच भव संबंधी अनै बावीस सागर सातमीं नीं जघन्य स्थिति एतलुं काल बे भव आश्रयी जघन्य कह्यो । अर्ने उत्कृष्ट सात भव ते सप्तमी नां जघन्य स्थितिक नां तीन भव तेहनां छासठ सागर गिण्या । अनै च्यार तिर्यंच नां भव संबंधी च्यार कोड़ पूर्व अधिक गिण्या । अनै जो सातमीं नां दोय भव उत्कृष्ट आउखा नां गिणैं तो तिर्यंच नां उत्कृष्ट आउखा नां तीन भव नां तीन पूर्व कोड़ ईज हवे, इम पांच भव गिण्यां छतां उत्कृष्ट काल थोड़ो थावे अनैं सात भव नों काल गिण्यां छतां जघन्य स्थिति सातमीं नां छासठ सागर हुवै अनै उत्कृष्ट स्थितिक तिर्यच नां च्यार पूर्व कोड हुवै ए एक पूर्व कोड़ काल वधै ते माटै उस्कृष्ट काल नीं वांछा लेखवी नैं सातमीं नां जघन्य स्थिति नां छ।सठ सागर गिण्या। इम काल नो प्रश्न पुछये छते उत्कृष्ट अधिक काल सात भव गिण्या इज हुवै अनै पांच भव गिण्यां एक कोड पूर्व नो काल ओछो हुवै तिणसूं जघन्य स्थिति सातमी नां तीन भव नां छासठ सागर गिण्या।

### उत्कृष्ट नैं जघन्य (८)

तेहिज पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी-तिरि,

उत्कृष्ट स्थितिक जेहो रे।

ऊपजवा जोग्य सप्तम पृथ्वो,

जघन्य स्थितिक नेरइयापणेहो रे।।

८३. जघन्य स्थितिक विषे तेह ऊपनां,

लब्धि बोल सहु लहियै रे।

कायसंवेध पिण तिमहिज भणवूं, सप्तम गम सम कहियै रै।।

### उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट (६)

८४. तेहिज पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी-तिरि,

उत्कृष्ट स्थितिक जेहो रे।

अधो सप्तमीं पृथ्वी विषे जे,

स्थिति उत्कृष्ट नेरइयापणेहो रे।।

५५. उत्कृष्ट स्थितिक विषे ऊपनों, लब्धि सर्व ही भणिये रे। यावत अनुबंध लग ए कहिवूं, भवादेश इम थुणिये रे।।

३४ भगवती जोड

८१. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ७। (श० २४।८८)

५२,५३. सो चेव जहण्णकालट्टितीएसु उववण्णो, स<del>ञ्चे</del>व लद्धी संवेहो वि तहेव सत्तमगमगसरिसो **८ ।** (श० २४।८९)

५४,६५. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो एस चेव लद्धी जाव अण्बंधो ति ।

- ८६. भव आश्रयी जघन्य तीन भव, मच्छ नारक तिर्यंचो रे। उत्कृष्टा भव पंच नारक बे, तिरि भव तीन विरंचो रे।।
- ५७. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, नारक उदिध तेतीसो रे। कोड़ पूर्व वे अधिक जाणवा, वे तिरि भव स्थिति दीसो रे।।
- ८८. उत्कृष्ट छासठ सागर नारक जेष्ठ स्थितिक भव दोयो रे । कोड़ पूर्व त्रिण तिर्यंच त्रिण भव, उत्कृष्ट आयू जोयो रे ।।
- द९. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो रे। उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो नवम दयालो रे।।
- ९०. तिर्यंच नारिक जावे तेहनां, नव गम भव अधिकारो रे। लब्धि बोल नीं प्राप्ति दाखी, णाणत्ता भेद विचारो रे।।

९१. तुर्य पंचम षष्ठम, जघन्य त्रिण जाणवा । गमा गमाज तीन ए।। सप्तम अष्टम नवम, उत्कृष्ट जावै तस् जघन्य गमे। ९२. असन्नी धूर नरकेह, तीन णाणता लेह, उत्कृष्ट गमेज दोय जघन्योत्कृष्ट, अंतर्म्हृत्ते जघन्य ९३. आयु अनुबंध इतोज इष्ट, अपसत्थ अध्यवसाय फुन ॥ ९४. उत्कृष्ट गम अवलोय, पूर्व आउ अनुबंध इतोज होय, आख्या ए बे णाणता ॥ जाय, सातूं नारिक ९५. सन्नि तियँच तेहनां । जघन्य गमे कहिवाय, आठ-आठ है णाणता ॥ जघन्य, असंख्यातमें भाग ९६. अवगाहना आंगुल तणें सुजन्य, उत्कृष्ट पृथक धनुष्य नीं ॥ ९७. धुर लेश्या त्रिण पाय, दृष्टि एक मिथ्या ज्ञान नहीं तिण मांय, समुद्घात त्रिण प्रथम हो ।। ९८. अंतर्म्हर्त्तं स्थिति संध, अपसत्थ अध्यवसाय फुन । आयु जितो अनुबंध, अष्ट-अष्ट जघन्य पूर्व कोड़ ९९. उत्कृष्ट गमेज संघ, आउ दोय-दोय आउ जितो अनुबंध, ए णाणता ॥ १००. असन्नी धूर नरकेह, जावै तेहनां नव ही गमके लेह, नारक थी असन्नी न १०१. सन्नी पं. तियँच, घुर षट नरके जाय जघन्य दोय भव संच, उत्कृष्ट अठ नव ही गमे ॥ १०२. सन्नी पं. तिर्यंच, नरक सातमीं जाय तसु । संच, नव ही गमेज जघन्य तीन भव जाणवा ॥ तृतीय नवमे छठे गमे। १०३. उत्कृष्टा भव पंच, ह्वं ॥ शेष गमे षट संच, उत्कृष्टा भव सात

- ५६. भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं।
- प्तर्थः कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुत्वकोडीहिं अब्भहियाइं,
- ८८. उक्कोसेणं छाविंदु सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अक्भहियाइं
- ८९. एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागींत करेज्जा ९। (भ० २४।९०)

श० २४, उ॰ १, ढा० ४१४ ३४

१०४. \*चउवीसम शत देश प्रथम नों, चिउं सौ चवदमी ढालो रे । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमालो रे ।।

ढाल: ४१५

#### दूहा

- १. मनुष्य थकी जो ऊपजै, नारक में भगवान! स्यं सन्नी मनु थी हुवै, कै असन्नी थी जान?
- २. जिन कहै सन्नी मनुष्य मरि, ऊपजै नरक मभार। पिण असन्नी नहि ऊपजै, बलि पूछै गणधार।।
- इ. जो सन्नी मनु थी हुवै, तो स्यूं वर्ष संख्यात? आउखावंत ऊपजै, कै असंख वर्षायु जात?
- ४. जिन कहै संख्यायुष मनु सन्नी नरके जात । असंख वर्ष आयु सन्नी मनुष्य थकी नहि थात ।।
- ५. जो संख्याता वर्ष स्थिति, जाव नरक में जाय। स्युपर्याप्त थी हुवै, कै अपजत्त थी थाय?
- ६. जिन कहै पर्याप्त जिके, वर्षायु संखेह। सन्नी मनु थी ऊपजै, अपजत्त निंह ऊपजेह।।

  \*भाखै स्वामी, सन्नी मनुष्य नारक नव गमा। ध्रुपदं

  †सन्नी मनुष्य नारक में ऊपजै, तसु नव गमका कहियै रे।। ध्रुपदं
- ७. पर्याप्तो संख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य भगवान? जेह ऊपजवा जोग्य अछ जी, नारक नैं विषे जान।।
- द. ते कित पुढवी विषे ऊपजै प्रभुजी ! जिन कहै सातूं मांय । रत्नप्रभा विषे जाव सप्तमी, पृथ्वी विषे उपजाय ।।

- १. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति—िक सिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति ? असिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति ?
- २. गोयमा ! सिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति, नो असिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति । (श• २४।९१)
- ३. जइ सिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति कि संखेजज-वासाउयसिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति ? असंखेज्ज-वासाउयसिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति ?
- ४. गोयमा ! संखेजजवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उव-वज्जंति, नो असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति । (श० २४।९२)
- ५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति कि पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उव-वज्जंति ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ?
- ६. गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णि-मणुस्सेहितो उववज्जंति । (श० २४।९३)
- ७. पज्जत्तसंक्षेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,
- त. से णं भंते! कितमु पुढवीसु उववज्जेज्जा?
   गोयमा! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—
   रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए। (भ० २४।९४)

\*लय : प्रभवो चोर चोरां नें समझावै

\*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

तथा

†लय: लाल हजारी को जामो विराजे

नोट: दूसरी लय में दूसरे और चौथे पद में रे रहेगा।

३६ भगवती जोड

### प्रथम नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजे, तेहनों अधिकार ओधिक ने ओधिक (१)

९. पर्याप्तो संख्यात वर्षायुष, सन्नी मनुष्य प्रभु! जेह। अपजवा जोग्य रत्नप्रभा नां, नारक नें विषे तेह।।

१०. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?,

जिन कहै जघन्य सुलेखो । वर्ष सहस्र दश स्थितिक विषे ए, उत्कृष्ट सागर एको ।।

११. ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ? तब भाखै जगनाथं। जघन्य एक बे तीन ऊपजै, उत्कृष्टा संख्यातं।।

### सोरठा

- १२. गर्भज मनुष्य सुजोय, संख्याताज सदा हुवै। ते माटै अवलोय, संख्याता इज ऊपजै।।
- १३. \*षट संघयणी मनुष्य ऊपजै, तनु अवगाहन इष्टं। जघन्य थकी पृथक आंगुल नी, पांच सौ धनु उत्कृष्टं।।
- १४. एवं शेष जिम सन्नी पंचेंद्री, तिर्यंच नें आख्यातं। तेम इहां पिण कहिवूं यावत, भवादेश लग बातं।।
- १५. णवरं विशेषज च्यार ज्ञान नें, तीन अज्ञान सुजाणी। भजनांइं करिनें ते भणवा, इहां वृत्तिकार इम आणी।।

### सोरठा

- १६. जे अवध्यादि उचित्त, पड़िये छते केइक तणु । नारक में उपपत्त, वृत्तिकार इम आखियो ।।
- १७. फुन कहै चूर्णिकार, अवधि अने मनपज्जव तज विल । छांडी तनु आहार, नरके उपजै चूर्णि मत ।।
- १८. 'इहां पाठ में ख्यात, सन्नी मनु आखे भवे। भजनाइं करिथात, च्यार ज्ञान अज्ञान त्रिण।।
- १९. किणहिक में बे ज्ञान, किणहिक में त्रिण ज्ञान ह्वै। किणहिक में चिउं ज्ञान, इम भजनाइं ज्ञान चिउं।।
- २०. किण में दोय अज्ञान, किण में तीन अज्ञान ह्वै। आखै भव इम जान, भजना तीन अज्ञान इम।।
- २१. इण लेखे अवलोय, अंत समय तिरि भव विषे। विभंग अवधिज होय, एहवूं नियम न दीसतूं।।
- २२. युगल विषे बे ज्ञान, अथवा दोय अज्ञान ह्वै। अविध विभंग न जान, पन्नवण पंचम पद विषे।।
- २३. हुवै युगलिया देव, सुर धुर समये भवप्रत्यय । अवधि विभंग लहेव, एहवूं जे दीसै अछै ।।
- \*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो
- १. परि. २. यंत्र ३

- पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उवविज्जत्तए,
- १०. से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु जववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, जवको-सेणं सागरोवमद्वितीएसु जववज्जेज्जा ।

(श० २४।९५)

- ११. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उव-वज्जंति ?
  - गोयमा ! जहण्णेणं एकको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेजजा उववज्जंति ।
- १२. उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति' त्ति गर्भजमनुष्याणां सर्देव सङ्ख्यातानामेवास्तित्वादिति,

(वृ० प० ८१६)

- १३. संघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं।
- १४. एवं सेसं बहा सिण्पपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं जाव भवादेसो ति,
- १४. नवरं चत्तारि नाणा तिष्णि अण्णाणा भयणाए।
- १६. 'नवरं चत्तारि नाणाइ' ति अवध्यादौ प्रतिपतिते सित केषाञ्चिन्नारकेषूत्पत्ते:, (वृ०प० ६१६)
- १७. आह च चूर्णिकार:--'ओहिनाणमणपज्जवआहारय-सरीराणि लद्धूणं परिसाडित्ता उववज्जंति' त्ति, (वृ० प० ८१६, ८१७)

२२. एवं उक्कोसट्टितीए वि, नवरं—दो णाणा, दो अण्णाणा । (वण्णवणा ४।१०४)

श० २४, उ० १, ढा० ४**१५** ३७

- २४. तिम तिरि नरके जाय, नारक धुर समया विषे। अवधि विभंगज पाय, भवप्रत्यय छै ते २५. शत अष्टम द्वितीय उद्देश, लद्धी ज्ञान अज्ञान कहियै आख्यो तिहां विशेष, छै ते सांभलो। स्यूं ज्ञानी कहियै २६. नारक हे भगवंत ! हुंत ? जिन दोनू भाखे कै अज्ञानी हुइ ॥ तेह, निश्चै त्रिण २७. जे ज्ञानी छै ज्ञानी मित श्रुत अवधि लहेह, अर्थ कियो वृत्तिकार इम।
- नें २८. सम्यकदृष्टि मोय, नारक भवप्रत्यय। जे होय, तिणसूं निश्चै ज्ञान त्रिण। अवधिज्ञान केइक में अज्ञान वे। २९. जे अज्ञानी होय, में त्रिण जोय, वृत्तिकार तिहां इम कह्यो।। नारकि विषेज ३०. असन्नी छताज जेह, ऊपजे । अपर्याप्ता विषेह, बे अज्ञान विभंग पिण नहीं ।।
- जेह, थकोज ऊपजै । ३१. मिथ्याद्ष्टी सन्नी विभंग अनाण ते भवप्रत्यय लेह, ३२. नरकगतियो जेह, तिर्यंच मनुष्य ऊपजेह, गति जे अंतर वत्तेतो ॥ ३३. ते नरकगतिया मांय, निश्चै करिनें ज्ञान त्रिण। तीन अज्ञानज भजनाइं करि पाय, पूर्ववत ॥ नीं परै। ३४. सूरगतिया आख्यात, नारकगतिया वृत्तिकार विख्यात, अर्थ कियो इण रीत सूं 🛭 ३५. सुरगतिया नैं सोय, समय प्रथम देवायु नें।
- भवप्रत्यय अवलोय, अवधि ऊपजै नारिकवत।। ३६. इह वचने करि मंत, नारक सुर में ऊपजै। मनुष्य तिरिभव अंत, अवधि विभंग नों नियम नहीं।।' (ज०स०)
- ३७. \*समुद्घात षट केवल वर्जी, स्थिति अनें अनुबंध। जघन्य मास पृथक उत्कृष्टो, पूर्व कोड़ संबंध।।

- ३८. इह वचने अवलोय, आउखो बे मास थी। अंतरवर्त्ती होय, नरक न जावै ते मनु॥
- ३९. \*शेष तिमज कहिवो पूर्ववत, काल आश्रयी जघन्य। वर्ष सहस्र दश नारक जघन्य स्थिति,

मास पृथक मनु जन्य ।

४०. उत्कृष्ट चिउं सागर नारिक नां,

चिउ भव में स्थिति जिष्ठ। च्यार पूर्व कोड़ अधिक मनुष्य नां,

चिउं भव स्थिति उत्कृष्ट ।।

- २६. नेरइयाणं भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! नाणी वि अण्णाणी वि (भगवई ८।१०५)
- २७. जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, तं जहा आभिणि-बोहिय नाणो, सुयनाणी, ओहिनाणी। (भगवई ८।१०५)
- २८. सम्यग्दृष्टिनारकाणां भवप्रत्ययमविधज्ञानमस्तीति कृत्वा ते नियमात् त्रिज्ञानिनः। (वृ॰ प॰ ३४४)
- २९. जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। (भगवई ८।१०५)
- २०. असंज्ञिनः सन्तो ये नारकेषूत्पद्यन्ते तेषामपर्याप्त-कावस्थायां विभंगाभावादाद्यमेवाज्ञानद्वयमिति ते द्वयज्ञानिनः। (वृ० प० ३४५)
- ३१. ये तु मिथ्यादृष्टिसंज्ञिभ्य उत्पद्यन्ते तेषां भवप्रत्ययो विभंगो भवतीति ते त्यज्ञानिनः। (वृ० प० ३४४)
- ३३. एवं तिष्णि अण्णाणाणि भयणाए । [(भगवई ८।१०५)

- ३७. छ समुग्घाया केवलिवज्जा। ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुक्वकोडी,
- ३८. 'जहन्नेणं मासपुहुत्तं' ति, इदमुक्तं भवति मास-द्वयान्तर्वत्त्र्यायुर्नेरो नरकं न याति (बृ० प० ८१७)
- ३९. सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवासतहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं;
- ४०. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउिंह पुव्वकोडीहिं अक्भहियाइं,

<sup>\*</sup>लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

३८ भगवती जोड़

- ४१. मनुष्य च्यार भव इष्ट, इक नरके ह्वं नारकी। अठ भव स्थिति उत्कृष्ट, पछै ऊपजै तिरि विषे।।
- ४२. \*एतलो काल सेव ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो। अोधिक नें ओधिक गमक ए, दाख्यो प्रथम दयालो।।

### ओघिक नै जघन्य [२]

४३. तेहिज पर्याप्त संख्यात वर्षायुष, सन्नी मनुष्य छै जेह। रत्नप्रभा में जघन्य स्थितिके,

ऊपजवा जोग्य नारकपणेह ।।

- ४४. ते जघन्य काल स्थितिक विषे ऊपनों, एहिज पूठली पेखो । वक्तव्यता कहियै विध सेती, णवरं इतरो विशेखो ।
- ४५. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, वर्ष सहस्र दश जन्य। मास पृथक अधिकेरी कहियै, बिहुं भव काल जघन्य।।

### सोरठा

- ४६. वर्ष सहस्र दश जाण, जघन्य स्थितिक नारक तणी।
  पृथक मास पिछाण, गर्भ विषे मनु आउखो।।
- ४७. \*उत्कृष्टो चिउं पूर्व कोड़ी, चिउं मनु भव स्थिति जिष्टं। अधिक चालीस सहस्र वर्ष नरके, चिउं भव आयु कनिष्ठं।।
- ४८. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो। ओविक नै विल जघन्य गमक ए, दाख्यो द्वितीय दयालो।।

### ओघिक नें उत्कृष्ट (३)

४९. तेहिज पर्याप्त संख्यात वर्षायुष, सन्नी मनुष्य छै जेह। रत्नप्रभा मे उत्कृष्ट स्थितिके,

ऊपजवा जोग्य नारिक विषेह ।

५०. ते उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे ऊपनों,

एहिज पाछली जाणी।

वक्तव्यता कहियै पिण णवरं, इतरो विशेष पिछाणी।।

५१. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, एक सागर अवलोई। मास पृथक फुन अधिक कहीजै, बिहुं भव अद्धा जोई।।

#### सोरठा

- ५२. पृथक मास मनु स्थित्त, गर्भ विषे मरि नैं तिको । रत्नप्रभा उत्पत्त, इक सागर नैं आउखे।।
- ५३. \*उत्कृष्ट थी चिउं सागर नारकी, च्यार भवे स्थिति जिष्टं ।
  पूर्व कोड चिउं मनुष्य तणी ए, चिउं भव स्थिति उत्कृष्टं ।।
- ५४. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो। ओघिक नैं उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो तृतीय दयालो।।
- \*लयः राजा राघव रायां रो राय कहायो

- ४२. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा १ । (श० २४।९६)
- ४३,४४. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
- ४४. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्त मब्भिहियाइं,
- ४७. उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वास सहस्सेहि अब्भहियाओ,
- ४८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागितं करेज्जा २। (श. २४।९७)
- ४९,४०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएमु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं —
- ५१. कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्तः मन्भहियं।
- ५३. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चर्डीह पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं।
- ५४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ३। (श. २४।९८)

श॰ २४, उ० १, ढा० ४१५ ३९

### जघन्य ने ओघिक (४)

४५. पजत्त संख्यात वर्षायुष सन्नी मनु जघन्य स्थितिक छै जेह।
ऊपजवा जोग्य रत्नप्रभा में, नारकी नैं विषे तेह।।
५६. एहिज वक्तव्यता कही पूर्वे, तेहिज भणवी जान।
णवरं पंच णाणत्ता कहियै, भेद अछै पंच स्थान।।
५७. तनु अवगाहन जघन्य थकी जे, पृथक आंगुल लहियै।
उत्कृष्टो पिण पृथक आंगुल, प्रथम णाणत्तो कहियै।।

### सोरठा

- ५८. प्रथम गमे अवगाह, जघन्य पृथक आंगुल तणी। उत्कृष्टी कही ताय, धनुष्य पंच शत नीं तिहां।।
- ५९. इहां जघन्योत्कृष्ट पाय, पृथक आंगुल नीं कही। धनुष्य पंच सय नांय, तिणसूं धुर गम णाणत्तो।
- ६०. \*तीन ज्ञान नें तीन अज्ञान नीं, भजनाइं करि भणियै। जघन्य स्थितिक नां भाव थकी ए,

द्वितीय णाणत्तो गिणियै।।

### सोरठा

- ६१. प्रथम गमे चिउं नाण, जघन्य गमे मनपज्जव नहि। ते माटै इहां जाण, द्वितीय णाणतो ज्ञान नों।।
- ६२. \*समुद्घात पंच कही आदि नीं, आहारक केवल नांही । जघन्य स्थितिक नां भाव थकी ए, तृतीय णाणत्तो थाई ।।

#### सोरठा

- ६३. धुर गम षट समुद्घात, जघन्य स्थितिक नें पंच है। आह्यातक नहिं आख्यात, तृतीय णाणत्तो ते भणी।।
- ६४. \*आउ अनें अनुबंध जघन्य थी, पृथक मास कथित्तो । उत्कृष्टो पिण मास पृथक नों, तुर्य पंचम णाणत्तो ।।

### सोरठा

- ६५. घुर गम स्थिति अनुबंध, जघन्य मास पृथक कह्यो। उत्कृष्ट ए बिहुं संध, कोड़ पूर्व नों छै तिहां।।
- ६६. जघन्य गमे कनिष्ठ, स्थिति अनैं अनुबंध जे। पूर्व कोड़ नहि इष्ट, तिणसूं ए बिहुं णाणत्ता।।
- ६७. \*शेष तिमज जाव भवादेश लग, जघन्य दोय भव जाणी। उत्कृष्टा भव आठ कहीजै, हिव तसु काल पिछाणी।।
- ६८. काल आश्रयी जघन्य नारिक में, वर्ष सहस्र दश जन्य। पृथक मास अधिक मनुष्य भव स्थिति,

बिहुं भव काल जघन्य ॥

\*लय: राजा राघव रायां रो राय हायो

**४० भगव**ती जोड़

- ४४,४६. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—इमाइं पंच नाणताइं—
- ५७. १. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेण वि अंगुलपुहत्तं ।
- ४८. प्रथमगमे तु सा जघन्यतोऽङ्गुलपृथक्त्वमुत्कृष्टतस्तु पञ्च धनुःशतानीति १। (वृ. प. ८१७)
- ६०. २. तिष्णि नाणा तिष्णि अण्णाणाइं भयणाए । तथेह त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया जघन्यस्थितिकस्यैषामेव भावात् । (वृ. प. ८१७)
- ६१. पूर्वंच चत्वारि ज्ञानान्युक्तानीति २ । (बृ. प. ८१७)
- ६२. ३. पंच समुग्घाया आदिल्ला । तथेहाद्याः पञ्च समुद्घाताः जघन्यस्थितिकस्यैषामेव सम्भवात् । (वृ. प. ५१७)
- ६३ प्राक् च षडुक्ताः अजघन्यस्थितिकस्याहारकसमुद्-घातस्यापि सम्भवात् ३। (वृ. प. ८१७)
- ६४. ४, ५. ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेण वि मासपुहत्तं।
- ६५. प्राक् च स्थित्यनुबन्धो जघन्यतो मासपृथक्त्वमुत्क्रष्टतस्तु पूर्वकोट्घभिहितेति । (वृ. प. ८१७)
- ६७. सेसं तं चेव जाव भवादेसोत्ति ।
- ६८. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भिह्याइं।

- ६९. उत्कृष्ट सागर च्यार नारिक में, चिहुं भव स्थिति उत्कृष्टं । पृथक मास चिउं मनुष्य तणें भव,
  - चिउं भव स्थिति कनिष्ठं।।
- ७०. एतलो काल सेवै ते जंतु, करैं गति आगति इतो कालो। जघन्य अने ओघिक गमक ए, दाख्यो तुर्य जघन्य नें जघन्य (४)
- ७१. तेहिज पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, जघन्य स्थितिक छै जेहो। रत्नप्रभा में जघन्य स्थितिक विषे,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो ।।

- ७२. ते जघन्य काल स्थितिक विषे ऊपनों,
  - वक्तव्यता सहु तेही।

कहिवी चउथा गमक सरीखी, णवरं विशेष छै एही।।

७३. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, अद्धा सहस्र दश पृथक मास अधिक वलि कहियै, बे भव आश्रयी तास ।।

#### सोरठा

- ७४. वर्ष सहस्र दश जेह, जघन्य स्थितिक नारक मांहि। पृथक मास अधिकेह, मनुष्य भवे ए जघन्य स्थितिक ।।
- ७५. \*उत्कृष्ट चालीस सहस्र वर्ष नीं, चिउं भव नरक जघन्य । पृथक मास चिउं च्यार मनुष्य भव, अद्धा अष्ट भव जन्य ।।
- ७६. एतलो काल सेवें ते जंत्र, करै गति आगति इतो कालो । जघन्य अने विल जघन्य गमक ए, दाख्यो पंचम दयालो ।।

### जघन्य नें उत्कृष्ट (६)

- ७७. ते पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मन्,
  - जघन्य स्थितिक छै जेहो।

उत्कृष्ट स्थितिके रत्नप्रभा में,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो ।।

७८. ते उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे ऊपनों,

पूर्व गमो कह्यो जिम एही।

णवरं एह विशेष कहीजै, सांभलजो चित देई ।।

७९. काल आश्रयी जघन्य सागर इक,

नारिक भव स्थिति जिष्टं।

मास पृथक ए मनुष्य जघन्य स्थिति, बे भव अद्धा इष्टं ।।

द०. उत्कृष्ट अद्धा चिउं सागर नारिक,

चिउं भव स्थितिक उत्कृष्टं।

चिउं पृथक मास चिउं मनुष्य तणी ए, चिउं भव स्थितिक निष्ठं।।

६१. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो। जघन्य अने उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो षष्ठम दयालो रे ।।

\*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

- ६९ उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं।
- ७०. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित (श० २४।९९) करेज्जा ४।
- ७१,७२. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा, नवरं-

- ७३. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भ-हियाइं।
- ७५. उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहि मास-पुहत्तेहि अन्महियाइं।
- ७६. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति (ম০ ২४।१००) करेज्जा ५ ।
- ७७,७८. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव गमगो, नवरं---

- ७९. कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्त-मब्भहियं।
- उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चर्जीह मासपुहत्ते हिं अन्भहियाइं 🕽
- एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ६। (भ० २४।१०१)

श॰ २४, उ० १, ढा॰ ४१४ ४१

### उत्कृष्ट नें ओघिक (७)

५२. पज्जत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, उत्कृष्ट स्थितिक जेहो । अपजवा जोग्य रत्नप्रभा में, नारकी नें विषे तेहो ।। ५३. जाव तेहिज धुर गमो जाणवं, णवरं इतरो विशेखो ।

उत्कृष्ट गमे ए तीन णाणत्ता, जुआ-जुआ इम लेखो।।

८४. तनु अवगाहन जघन्य थकी जे, धनुष्य पंच सय जाणी । उत्कृष्टी पिण धनुष्य पंच सय, प्रथम णाणत्तो माणी ।।

वा॰ -जघन्य-उत्कृष्ट ५०० धनुष्य नी अवगाहना अने उत्कृष्ट कोड पूर्व नी स्थिति वालो बावनो हुवै तेहनों कथन न लेखव्यो । इहां बहुलपक्षे धोक-मारगं में उत्कृष्ट कोड पूर्व नी ५०० धनुष्य नी अवगाहणा कही । रत्नप्रभा में उत्कृष्ट गमे संख्याता वर्ष नो सन्नी मनुष्य ऊपजै अने और ठिकाणे संख्याता वर्ष नो सन्नी मनुष्य उपजै जना जाणवो ।

#### सोरठा

- ८५. प्रथम गमे अवगाह, जघन्य पृथक आंगुल पूर्व उत्कृष्टी कहिवाह, कोड़ तणी तिहां ॥ द६. इहां उत्कृष्ट गमेह, जघन्य अने उत्कृष्ट पंच सय लेह, आखी अवगाहना ॥ छे ८७. पृथक आंगुल पेख, उत्कृष्ट गमा विषे नथी। ते माटे इम देख, अवगाहना णाणत्तो ॥ धूर
- ८८. \*स्थिति जघन्य थी पूर्व कोड़ नीं, उत्कृष्ट पिण पुव्व कोड़ी। द्वितीय णाणत्तो स्थित तणों ए, अनुबंध पिण इम जोड़ी।।

### सोरठा

- ८९. प्रथम गमा रै मांय, पृथक मास नीं जघन्य स्थिति । उत्कृष्टि कहिवाय, पूर्व कोड़ तणी तिहां ॥ विषे ९०. पृथक मास पिछाण, उत्कृष्ट गमा नथी। द्वितीय ते माटै ए जाण, णाणत्तो स्थिति नु ॥ अनुबंध, तृतीय णाणत्तो तेहनुं ॥ ९१. आयु जिम गमे सुसंध, तीन णाणत्ता इह विधे ॥
- १२. \*काल आश्रयी जघन्य थकी जे, पूर्व कोड़ पिछाणी।
   वर्ष सहस्र दश अधिक कहीजे, बिहुं भव अद्धा जाणी।

#### सोरठा

- ९३. पूर्व कोड़ पिछाण, मनुष्य भवे उत्कृष्ट स्थिति । वर्ष सहस्र दश जाण, जघन्य स्थिति नारिक तणी ।।
- ९४. \*उत्कृष्ट च्यार सागर नारकी में, चिउं भव स्थिति उत्कृष्ट । पूर्व कोड़ चिउं मनुष्य विषे ए, च्यार भवे स्थिति जिष्टं ।।
- \*लय राजा राघव रायां रो राय कहायो
- १. उत्सर्ग मार्ग, सामान्य मार्ग
- ४२ भगवती जोड़

- पर,पर सो चेव अप्पणा उक्कोसकालहितीओ जाओ, सो चेव पढमगमओ नेयव्वो, नवरं—
- परीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं।

८८. ठिती जहण्णेणं पुब्वकोडी, उक्कोसेण वि पुब्वकोडी । एवं अणुबंधो वि ।

- तालादेसेणं जहण्णेणं पुत्वकोडी दसिंह वाससहस्सेिंह
   अन्महिया।
- ९४. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चंउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं ।

- ९५. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो। उत्कृष्ट नैं ओघिक गमक ए, दाख्यो सप्तम दयालो।।
  - उत्कृष्ट नैं जघन्य (८)
- ९६. तेहिज पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, उत्कृष्ट स्थितिक जेहो ॥ रत्नप्रभा में जघन्य स्थितिके,
  - ऊपजवा जोग्य नारकी विषेहो ।।
- ९७. ते जघन्य काल स्थितिक विषे ऊपनों, वक्तव्यता सह तेही । सातमा गमक सरीखी कहीवी, णवरं विशेष छै एही ।।
- ९८. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, पूर्व कोड़ पिछाणी। वर्ष सहस्र दश अधिक कहीजै, बिहुं भव अद्धा जाणी।।

- ९९. पूर्व कोड़ सुपेख, मनुष्य तणी उत्कृष्ट स्थिति । वर्ष सहस्र दश देख, जघन्यायु नारिक तणों ।।
- १००. \*उत्कृष्ट पूर्व कोड़ चिउं ए, नर भव चिउं स्थिति जिष्टं । चालीस सहस्र वर्ष नारिक नां, चिउं भव आयु कनिष्ठं ।।
- १०१. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो। उत्कृष्ट नैं विल जघन्य गमक ए, दाख्यो अष्टम दयालो।।

### उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट (६)

- १०२. तेहिज पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, उत्कृष्ट स्थितिक जेहो। रत्नप्रभा मे उत्कृष्ट स्थितिके,
- उपजवा जोग्य नारकी विषेहो ।।
- १०३. ते उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे,
- ऊपनों वक्तव्यता सहु तेही। सातमा गमक सरीखी कहिवी, णवरं विशेष छै एही।। १०४. काल आश्रयी जघन्य थकी जे, कहियै सागर एको। पूर्व कोड़ी अधिक कहीजै, बिहुं भव अद्धा लेखो।।

#### सोरठा

- १०५. सागर एक सुजोड़, रत्नप्रभा नारिक स्थिति। मनुभव पूर्व कोड़, बिहुं भव अद्धा एतलो।।
- १०६. \*उत्कृष्ट अद्धा चार सागर नों, अधिक पूर्व कोड़ च्यारो। अाठ भवां नों काल कह्यो ए, हिव तसु न्याय उदारो।।

#### सोरठा

- १०७. नारिक चिउं भव जाण, च्यार सागर उत्कृष्ट स्थिति । च्यार मनुष्य भव माण, पूर्व कोड़ चिउं जेष्ठ स्थिति ।।
- \*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

- ९५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ७ । (श० २४।१०२)
- ९६,९७. सो चेव जहण्णकालिंद्वतीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवरं—
- ९८. कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दर्साह वाससहस्सेहि अब्भहिया।
- १००. उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ ।
- १०१. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ८। (श० २४।१०३)
- १०२,१०३. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवरं—
- १०४. कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुब्वकोडीए अब्भहियं।
- १०६. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चर्जीह पुव्वकोडीहि अक्भहियाइं।

श० २४, उ० १, ढा० ४१५ ४३

- १०८. \* एतलो काल सेवै ते जंतु, करैं गित आगित इतो कालो । उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो नवम दयालो ।। दूजी नरक में संख्याता वर्ष नो सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनो अधिकार अोधिक ने ओधिक [१]
- १०९. पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, हे भगवंतजी ! जेहो । सक्करप्रभा पृथ्वी ने विषे ते,
  - **ऊपजवा जोग्य नेरइ**यापणेहो ।।
- ११०. किता काल स्थितिक विषेते प्रभु ! ऊपजै ? जिन कहै जघन्य लीनो । एक सागर स्थितिक विषे ऊपजै, उत्कृष्ट सागर तीनो ।।
- १११. इम तेहिज रत्नप्रभा पृथ्वी नां, गमा सरिखी संपेखो । वक्तव्यता कहिवी इहां सगली, णवरं इतरो विशेखो ।।
- ११२. तनु अवगाहन जघन्य थकी जे, पृथक हाथ पिछाणी। उत्कृष्टी तेहनी अवगाहन, धनुष पंच सय माणी।।

- ११३. दोय हस्त परिमाण, तेह थकी जे हीण अति । मनुष्य तणों तनु जाण, सक्कर विषे नहि ऊपजै ॥
- ११४. \*स्थिति जघन्य थी वर्ष पृथक नीं, उत्कृष्ट पूर्व कोड़ी। अनुबंध पिण इमहिज जाणवो, शेष तं चेव सुजोड़ी।।

### सोरठा

- ११५. पृथक वर्ष कहेह, दोय वर्ष थी हीण अति। मनुष्य तणी स्थिति तेह, सक्कर विषे नहि ऊपजै।।
- ११६. \*यावत कहिवो भवादेश लग, काल आश्रयी हेरं। जघन्य अद्धा इक सागर कहियै, वर्ष पृथक अधिकेरं।।

#### सोरठा

- ११७. सागर एकज तास, सक्करप्रभा में जघन्य स्थिति । मनु स्थिति पृथक वास, बे भव अद्धा जघन्य ए।।
- ११८. \*उत्कृष्ट अद्धाद्वादश सागर, पूर्व कोड़ी च्यारो। अष्ट भवां नों काल कह्यो ए, उत्कृष्टो अवधारो।।

#### सोरठा

११९ सक्करप्रभा नी स्थित्त, उत्कृष्ट सागर तीन नीं। ते चिउंभवे कथित्त, द्वादश सागर इम हुई।।

- \*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो
- १. परि. २. यंत्र ४
- ४४ भगवती जोड़

- १०८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ९। (श० २३।१०४)
- १०९. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए ।
- १९०. से णं भंते ! केवतिकालहितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमहितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमहितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।१०४)
- १११. सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवरं-
- ११२. सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं।
- ११३ ठिती जहण्णेण वासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । सेसं तं चेव । द्विहस्तप्रमाणेभ्यो हीनतरप्रमाणा द्वितीयायां नोत्पद्यन्ते (वृ० प०८१७)
- ११५. 'जहण्णेणं वासपुहुत्तं' ति अनेनापि वर्षद्वयायुष्केभ्यो हीनतरायुष्का द्वितीयायां नोत्पद्यन्त इत्यवसीयते । (वृ० प० ८१७)
- ११६ जाव भवादेसो ति । कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम वासपुहत्तमब्भहियं ।
- ११८. उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चर्छीह पुब्वकोडीहिं अब्भहियाइं ।

- १२०. उत्कृष्ट पूर्व कोड़, मनुष्य तणों जे आउखो। ते चिउंभवे सुजोड़, च्यार कोड़ पूर्व अद्धा।।
- १२१. \*एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो कालो । ओघिक नैं ओघिक गमक ए, दाख्यो प्रथम दयालो ।।
- १२२. इम ए ओघिक धुर त्रिण गमके, पाछे कही ते भणवी । मनुष्य लद्धी परिमाण संघयणादि, तसु प्राप्ति तिम थुणवी ।।
- १२३. नानापणुं ते भेद कह्युं ए, नारिक स्थिति रै मांह्यो। विल काल आश्रयी कायसंवेधज, फरक तास कहिवायो।।

- १२४. इहां प्रथम गमा रै मांहि, नारिक नीं स्थित्यादि जे। पूर्वे कह्यूंज ताहि, द्वितीय तृतीय गम हिव कह्यूं।।
- १२५. द्वितीय गमे इम जाण, ओघिक जघन्यायु विषे। इहां नारिक स्थिति माण, इक सागर जघन्योत्कृष्ट ।।
- १२६. काल थकी संवेध, जघन्य थकी वर्ष पृथक करि। सागर एक प्रबेध, बे भव अद्धा जघन्य ए।।
- १२७. उत्कृष्ट अद्धा एह, चिउं सागर चिउं कोड़ पुब्व । अठ भव काल कहेह, तिण में नारिक जघन्य स्थिति ।।
- १२८. तृतीय गमे पहिछाण, ओघिक उत्क्रुष्ट स्थिति विषे । इहां नारक स्थिति जाण, त्रिण सागर जघन्योत्क्रुष्ट ।।
- १२९. काल थकी संवेध, जघन्य थकी वर्ष पृथक करि। सागर तीन प्रबेध, बे भव अद्धा जघन्य ए।
- १३०. उत्कृष्ट अद्धा जाण, बार उदिध चिउं कोड़ पुब्व। अठ भव काल पिछाण, इहां बिहुं भव उत्कृष्ट स्थिति।।

### जघन्य नैं ओघिक [४]

- १३१. \*पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, जघन्य स्थितिक छै जेहो । ऊपजवा जोग्य सक्करप्रभा में, नारकी ने विषे तेहो ।।
- १३२. तेह जघनीया तीन गमा विषे, जघन्य मनुष्य स्थिति मांह्यो । एहिज लब्धि परिमाणादि प्राप्ति, धुर त्रिण गम जिम थायो ।।
- १३३. णवरं तीन णाणत्ता किहयै, तनु अवगाहन जाणी। जघन्य अने उत्कृष्ट थकी पिण, पृथक हाथ पिछाणी।।

#### सोरठा

- १३४. धुर गम कही ओगाण, उत्कृष्टी धनु पंच सौ। इहां पृथक कर जाण, ते माटैए णाणत्तो।।
- १३५. \*स्थिति जघन्य थी पृथक वर्ष नीं, उत्कृष्टी पिण संध । पृथक वर्ष तणी ए आखी, एतोइज अनुबंध ।।

\*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

१. अवगाहना

- १२१. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ।
- १२२. एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी।
- १२३. नाणत्तं —नेरइयद्विति कालादेसेणं संवेहं च जाणेण्जा १-३। (श० २४।१०६)
- १२४. तत्र प्रथमगमे स्थित्यादिकं लिखितमेव। (वृ० प० ८१७)
- १२५. द्वितीये त्वौघिको जघन्यस्थितिष्वित्यत्र नारकस्थितिर्जघन्येतराभ्यां सागरोपमं । (वृ० प० ८१७)
- १२६,१२७. कालतस्तु संवेधो जघन्यतो वर्षपृथक्त्वाधिकं सागरोपममुत्कृष्टतस्तु सागरोपमचतुष्टयं चतुः पूर्वकोट्यधिकं। (वृ०प०८१७)

- १३१,१३२. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिट्ठतीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी।
- १३३. नवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं।
- १३५. ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एवं अणुबंधो वि ।

श० २४, उ० १, ढा० ४१५ ४५

- १३६. घुर गम स्थिति अनुबंध, उत्कृष्ट पूर्व कोड़ त्यां। इहां पृथक वर्ष संध, ते माटै ए णाणता।।
- १३७. \*शेष ओघिक गमे जिम आख्यो, कहिवो सगलो तेमो । कायसंवेध विचारी भणवूं, बुद्धि सूं कहियै एमो ।।
- १३७. सेसं जहा ओहियाणं। संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६। (श० २४।१०७)

#### सोरठा

- १३८. तुर्य गमे संवेह, एक उदिध नैं पृथक वर्ष। जघन्य काल ए लेह, बिहुं भव अद्धा जघन्य स्थिति ।।
- १३९. नारक सागर बार, चिहुं मनु भव चिहुं पृथक वर्ष । उत्कृष्ट अद्धा धार, तुर्य गमक नुं एतलुं।।
- १४०. इक दिध पृथक वास, जघन्य अद्धा बे भव तणों। उत्कृष्ट काल विमास, च्यार उदिध चिउं पृथक वर्ष।।
- १४१. त्रिण दिध पृथक वास, षष्ठम गम अद्धा जघन्य । उत्कृष्ट काल विमास, बार उदिध चिउं पृथक वर्ष ।।

### उत्कृष्ट नें ओघिक [७]

१४२. \*तेहिज पज्जत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु,

उत्कृष्ट स्थितिक जेहो।

ऊपजवा जोग्य सक्करप्रभा में, नारकी नैं विषे तेहो।।

- १४३. तेहनां पिण छेहला तीन गमे मनु, उत्कृष्ट आयु जासो । ते तीन गमा विषे एह णाणत्ता, कहियै तीन विमासो ।।
- १४४. तनु अवगाहन जघन्य थकी जे, धनुष्य पंच सय होई। उत्कृष्टी पिण धनुष्य पांच सौ, प्रथम णाणत्तो जोई।।

### सोरठा

- १४५. ओघिक गम अवगाह, जघन्य पृथक कर नीं कही। इहां धनु पंच सयाह, ते माटै ए णाणत्तो।।
- १४६. \*स्थिति जघन्य थी कोड़ पूर्व नी, उत्कृष्ट पिण पुव्व कोड़ी। द्वितीय णाणत्तो स्थिति तणों ए, इमहिज अनुबंध जोड़ी।।

### सोरठा

- १४७. धुर गम स्थिति अनुबंध, जघन्य पृथक वर्ष नीं। इहां कोड पुव्व संध, ते माटै ए णाणत्ता।।
- १४८. \*शोष प्रथम गमा विषे कह्यूं छै, तिणहिज रीत कहेवूं। णवरं नारिक नीं स्थिति अनें विल, कायसंवेध जाणेवूं।।

### सोरठा

- १४९. सप्तम गम मनु जाय, जघन्य एक दिध स्थिति विषे । उत्कृष्ट नारकी मांय, ऊपजे त्रिण सागर विषे ।।
- \*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो
- ४६ भगवती जोड़

१३८,१३९. जघन्यस्थितिक औषिकेष्वित्यत्र गमे संवेधः कालादेशेन ज्ञेष्ठन्यतः सागरोपमं वर्षपृथक्तवाधिकं उत्कृष्टतस्तु द्वादश सागरोपमाणि वर्षपृथक्तवचतुष्का-धिकानि । (वृ० प० ८१७)

- १४२,१४३.ृंसो चेव अप्पणा उक्कोसकालहितीओ जाओ। तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं नाणत्तं—
- १४४. सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं।
- १४५. शरीरावगाहना पूर्वं हस्तपृथक्तवं धनुःशतपञ्चकं चोक्ता इह तु धनुःशतपञ्चकमेव। (वृ०प०८१७)
- १४६. ठिती जहण्णेणं पुब्वकोडी, उक्कोसेण वि पुब्वकोडी। एवं अणुबंधो वि ।
- १४⊂. सेसं जहा पढमगमए, नवरं—नेरइयठिइं कायसंवेहं च जाणेज्जा ७-९ ।

- १५०. कायसंवेध जघन्य, इक सागर नारकि अद्धा । कोड़ पूर्व मनु जन्य, बिहुं भव अद्धा जघन्य ए ।।
- १५१. उत्कृष्ट अद्धा जोय, द्वादश सागर नारके । कोड़ पूर्व चिउं होय, च्यार मनुष्य भव नीं स्थिति ।।
- १५२. अष्टम गम मनु जाय, जघन्य अनैं उत्कृष्ट पिण। उपजैनारिक मांय, इक सागर स्थिति नैं विषे॥
- १५३. कायसंवेधे ताय, जघन्य एक सागर कह्यो। कोड़ पूर्व अधिकाय, बिहुं भव अद्धा जाणवृं।
- १५४. उत्कृष्ट अद्धा जोड़, च्यार सागर नारक भव । अधिक चिउं पुब्व कोड़, चिउं मनु भव उत्कृष्ट स्थिति ।।
- १५५. नवम गमे मनु जाय, जघन्य अनें उत्कृष्ट फुन ऊपजै नारिक मांय, तीन सागर स्थिति नें विषे ॥
- १५६. कायसंवेध जघन्य, त्रिण सागर नैं कोड़ पुब्व । उत्कृष्ट अद्धा जन्य, बार सागर चिउं कोड़ पुब्व ।।
- १५७. सक्करप्रभा नां एह, नव गमके लद्धी कही। विल णाणत्ता जेह, कह्या जघन्य उत्कृष्ट गम।।

तीजी स्यूं छठी नरक तक संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार

- १५८. \*एवं जाव छठी पृथ्वी लग, णवरं विशेष पिछाणो । तीजी पृथ्वी थी आरंभी नैं, इक-इक संघयण हाणी ।।
- १५९. जिम तियँच पंचेंद्री सन्नी, नारिक में ऊपजेहो। तिणमें संघयण घटाया तिम ही, कहिवा मनुष्य विषेहो।।
- १६०. काल आश्रयी पिण तिम कहिवो, सन्नी तिर्यंच जेमो । णवरं मनुष्य नां गमा विषे जे,

कहिवी मनुष्य स्थिति एमो।।

#### सोरठा

- १६१. तियंच स्थिति जघन्य, अंतर्मुहूर्त्तं तिरिगमे। मनुष्य गमे फुन जन्य, मनुष्य तणी स्थिति जाणवी।।
- १६२. पृथंक वर्ष जघन्न, उत्कृष्ट पूर्व कोड़ मनु। सक्कर में उत्पन्न, इम यावत छठी विषे।। सातवीं नरक में संख्याता वर्ष नो सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार<sup>3</sup> ओधिक नैं ओधिक [१]
  - आ। घकन आ। घक[र]

१६३. \*पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, हे भगवंतजी ! तेहो । अधोसप्तमी पृथ्वी विषे जे,

ऊपजवा जोग्य नेरइयापणेहो ।।

१६४. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य थी इष्ट।

ऊपजै बावीस सागर स्थितिके, तेतीस सागर उत्कृष्ट ॥

\*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

१. परि० २. यंत्र ७, ९, ११, १३ २. परि० २. यंत्र १५

- १५८. एवं जाव छट्टपुढवी, नवरं—तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायति ।
- १५९. जहेव तिरिक्खजोणियाणं।
- १६०. कालादेसो वि तहेव, नवरं—मणुस्सट्टिती जाणियव्वा । (श**०** २४।१०८**)**
- १६१. तिर्यंक् स्थितिर्जंघन्याऽन्तर्मुहूर्त्तमुक्ता मनुष्यगमेषु तु मनुष्यस्थितिर्ज्ञातन्या । (वृ० प० ८१७)
- १६२. सा च जघन्या द्वितीयादिगामिनां वर्षपृथक्त्वमुत्कृष्टा तु पूर्वकोटीति । (वृ० प० ८१७)
- १६३. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसिण्णमणुस्से णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उवविज्जत्तए।
- १६४. से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
  गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमद्वितीएसु,
  उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा ।
  (श० २४।१०९)

श॰ २४, उ० १, ढा० ४१५ ४७

- १६५. ते एक समय प्रभु! किता ऊपर्जे ? शेष तिमहिज भणेवो । सक्करप्रभा नों घुर गम भाख्यो, तिमहिज ए जाणेवो ।।
- १६६. णवरं सातमी पृथ्वी विषे जे, ऊपजै प्रथम संघयणी। इत्थीवेदगा ऊपजै नांही, शेष तिमज विध कहणी।।
- १६७. यावत अनुबंध लगै जाणवो, भव आश्रयी भव दोयो।
  एक मनुष्य दूजो सप्तम नरके, तेहथी तियँच होयो।।
- १६८. काल आश्रयी जघन्य संवेधज, बावीस सागर जाणी। वर्ष पृथक बलि अधिक कहीजै, जघन्य काल ए माणी।।

- १६९. ए सागर बावीस, नरक सप्तमी जघन्य स्थिति।
  पृथक वर्ष जगीस, जघन्यायु मनुभव विषे।।
- १७०. \*उत्कृष्ट अद्धा तेतीस सागर, सप्तमी थिति उत्कृष्ट । पूर्व कोड़ी अधिक कहीजे, ए नर भव स्थिति जिष्ट ।।
- १७१. एतलो काल सेवै ते जंतु, करें गति आगति इतो कालो। ओघिक नें ओघिक गमक ए, दाख्यो प्रथम दयालो।।

### ओधिक नैं जघन्य (२)

१७२. तेहिज पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनु, जघन्य स्थितिक विषे उपन्नों। एहिज वक्तव्यता कहिवी तसु, णवरं विशेष सुजन्नों।। १७३. नारिक स्थिति मांहे फेर जाणवूं, विल कायसंवेध में फेरं। स्वयमेव उभय विचारो कहिवूं, आगल ते इम हेरं।।

#### सोरठा

१७४. नारिक स्थिति ए न्हाल, जघन्य अनैं उत्कृष्ट ही। बाबीस सागर काल, तेह विषे ए ऊपनों।। १७५. कायसंवेध जघन्य, वर्ष पृथक बावीस दिध। उत्कृष्ट अद्धा जन्य, बावीस सागर कोड़ पुज्व।।

## ओघिक नैं उत्कृष्ट [३] १७६.\* तेहिज पजत्त संख वर्षायु सन्नी मनु,

उत्कृष्ट स्थितिके उपनों।

एहिज वक्तव्यता किहवी तसु, णवरं विशेष सुजनों।।
१७७. नारिक स्थिति अनें संवेधे, भेद बिहुंरै मांह्यो।
ते स्वयमेव जाणेवा मन स्यूं, आगल ते कहिवायो।।

### सोरठा

१७८. नारिक स्थिति ए न्हाल, जघन्य अर्ने उत्कृष्ट ही। तेतीस सागर काल, तेह विषे ए ऊपनों।।

\*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

४८ भगवती जोड़

- १६५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया ज्ववज्जंति ? अवसेसो सो चेव सक्करप्पभापुढिविगमओ नेयव्यो ।
- १६६. नवरं पढमं संघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव।
- १६७. जाव अणुबंधो त्ति । भवादेसेणं दोभवग्गहणाइं ।
- १६८. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्त-मब्भहियाइं।
- १७०. उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं,
- १७१. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा १ । (श० २४।११०)
- १७२. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया। नवरं—
- १७३. नेरइयद्विति संवेहं च जाणेज्जा २। (श० २४।१**१**१)

१७६. सो चेव उनकोसकालट्टितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं— १७७. संवेहं च जाणेज्जा[३। (श०४२।११२)

- १७९. कायसंवेध जघन्य, वर्ष पृथक तेतीस दिध। उत्कृष्ट अद्धा जन्य, तेतीस सागर कोड़ पुन्व।। हिवै जघन्य नैं ओघिक, जघन्य नैं जघन्य नैं उत्कृष्ट—ए तीन जघन्य गमका कहै छै—
- १८०. तेहिज आपणपै जघन्य काल नों, स्थितिक हुओ जेही। तुर्य पंचम नें छठा गमा विषे, वक्तव्यता छै एही।। १८१. णवरं णाणत्ता तीन इहां छै, तनु अवगाहन मन्य। जघन्य अने उत्कृष्ट थकी पिण, पृथक हाथ सुजन्य।।

१६२. प्रथम गमे अवगाह, उत्कृष्टी धनु पंच सय। इहां उत्कृष्टी आह, पृथक कर ए णाणत्तो।। १६३. \*स्थिति जघन्य थी वर्ष पृथक नी, उत्कृष्टी पिण संघ। पृथक वर्ष तणी कहिवी जे, इमहिज छै अनुबंध।।

### सोरठा

- १८४. घुर गम स्थिति उत्कृष्ट, पूर्व कोड़ तणी तिहां। इहां उत्कृष्टी इष्ट, वर्ष पृथक अनुबंध स्थिति।। १८५. तुर्य गमे मनु जाय, नारिक स्थितिके जघन्य थी। बावीस सागर पाय, उत्कृष्ट तेतीस दिध विषे।।
- १८६. \*कायसंवेध जघन्य उत्कृष्टो, उपयोगे करि भणवो । तीनूं गमके आगल इह विधि, प्रवर विचारी थुणवो ।।

### सोरठा

- १८७. कायसंवेध जघन्य, वर्ष पृथक बावीस दोध। पृथक तेतीस उत्कृष्ट अद्धा जन्य, वर्ष दधि ॥ सातमीं नें विषे ॥ १८८. पंचम गम मनु जाय, नरक अने उत्कृष्ट बावीस सागर पाय, जघन्य १८९. पंचम गम पहिछाण, अनें उत्कृष्ट अद्ध। जघन्य कालसंवेध सुजाण, वर्ष पृथक बावीस दिधि ॥ पिछाणियै । षष्टम गमे सुइष्ट, १९०. कायसंवेध अद्धा जघन्य उत्कृष्ट, पृथक वर्ष तेतीस दिध । सातमीं विषे ॥ १९१. षष्टम गम मनु जाय, नरक पिण ।। तेतीस सागर पाय, जघन्य अनें उत्कृष्ट
- १९२. \*तेहीज उत्कृष्टायु मनुष्य ऊपनों, नरक सातमीं मांह्यो । सप्तम अष्टम नवम गमा विषे,

एहिज वक्तव्यता कहिवायो।।

१९३. णवरं तेहनां तीन णाणत्ता, तनु अवगाहन जाणी । जघन्य अनें उत्कृष्ट थकी पिण, धनुष्य पंच सय माणो ।।

- १८०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिंद्वतीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया।
- १८१. नवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं।
- १८३. ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एवं अणुबंधो वि ।

१८६. संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६। (श० २४।११३)

- १९२. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्टितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया,
- १९३. नवरं सरीरोगाहणा जहण्णेण पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं।

श० २४, उ० १, ढा०५ ४१ ४९

<sup>\*</sup>लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

- १९४. धुर गम में अवगाह, पृथक कर नीं जघन्य त्यां। इहां जघन्य पिण ताह, धनुष्य पंच सय नीं कही।।
- १९५. \*सप्तम अष्टम नवम गमा विषे, जघन्य स्थिति पुव्व कोड़ी। उत्कृष्टी पिण पूर्व कोड़ी, एवं अनुबंध जोड़ी।।

### सोरठा

- १९६. घुर गम स्थिति अनुबंध, जघन्य वर्ष पृथक तिहां। इहां जघन्य पिण संध, पूर्व कोड़ पिछाणजो।।
- १९७. \*नवही गमक विषे नारक स्थिति, विल संवेध पिछाणी। सर्वत्र नव गम बे भव किहये, मनुष्य सातमीं माणी।।

### सोरठा

- १९८. षट गम पूर्वे ख्यात, स्थिति सोरठिया दुहा विषे । तमतमा स्थिति अवदात, प्रगट संवेध कह्यो वली ।। उत्कृष्ट नें ओघिक (७)
- १९९. जेष्ठ स्थितिक मनु जाय, ओघिक स्थितिके सप्तमीं। बावीस सागर पाय, उत्कृष्ट तेतीस दिध विषे।। २००. अद्धा संवेध जघन्य, बावीस सागर कोड़ पुव्व। उत्कृष्ट अद्धा जन्य, कोड़ पूर्व तेतीस दिध।।

### उत्कृष्ट नें जघन्य (८)

- २०१. जेष्ठ स्थितिक मनु इष्ट, नरक सातमीं नें विषे । जघन्य अनें उत्कृष्ट, बावीस सागर आउखै।।
- २०२. कायसंवेधज काल, जघन्य अनै उत्कृष्ट अद्ध। बावीस सागर न्हाल, अधिक कोड़ पूर्व वली।।
- २०३. \*यावत नवम गमे इम कहिवो, काल आश्रयी ताह्यो । जघन्य अद्धा जे तेतीस सागर, कोड़ पूर्व अधिकायो ।।
- २०४. उत्कृष्टो पिण तेतीस सागर, पूर्व कोड़ी इष्टं। प्रगट पाठ मांहि प्रभु आखी, बिहुं भव स्थिति उत्कृष्टं।।
- २०५. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गति आगति इतो कालो । उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट नवम गम, मनुष्य सप्तमी न्हालो ।।

वा॰—प्रथम नारकी में सन्नी मनुष्य जावै, तेहनां जघन्य भव २, उत्कृष्ट भव ६ । नाणत्ता जघन्य गमे ४, तेहनों विवरो — अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट पृथक आंगुल नीं १, ज्ञान तीन री भजना २, समुद्घात पांच ३, आउखो पृथक मास ४, अनुबंध आउखा जेतो ४, उत्कृष्ट गमे ३ णाणत्ता — अवगाहना ४०० धनुष्य १, आउखो कोड़ पूर्व २, अनुबंध आउखा जेतो ३ ।

सातमी नारिक सन्नी मनुष्य जावै, तेहनां जघन्य भव २, उत्कृष्ट भव २। जघन्य गमे ३ णाणत्ता एवं चेव। उत्कृष्ट गमे ३ णाणत्ता एवं चेव। १९५. ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि ।

१९७. नवसु वि एतेसु गमएसु नेरइयद्विति संवेहं च जाणेज्जा। सन्वत्थ भवग्गहणाइं दोण्णि

- २०३. जाव नवमगमए । कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुक्वकोडीए अब्भहियाइं ।
- २०४. उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं
- २०५. एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं कालं गतिरागीत करेज्जा ७-९ । (श० २४।११४)

<sup>\*</sup>लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

५० भगवती जोड़

२०६ प्रथम नारिक मांय, सन्नी मनु जावै तस्। जघन्य गमे कहाय, पंच णाणत्ता पाइये ॥ सुजोय, २०७. उत्कृष्ट गर्म तीन णाणत्ता तेहनां । पूर्वे नाम जुजुआ सोय, आख्या २०८. सक्कर थी ले सोय, जाय तमतमा मनु सन्नी। तीन-तीन अवलोय, जघन्य गमेज णाणता।। २०९. उत्कृष्ट गमेज ताह, तीन-तीन है णाणत्ता । इम षट नरक तणांह, तीस अनै षट णाणत्ता।। नां णाणत्ता । २१०. इम सातूं नरकेह, सन्नी मनु कहेह, पूर्वे चउमालीस निर्णय आखियो ॥ २११. \*सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव गोतम विचरंतो । अर्थ थकी शत चउवीसम नों, प्रथम उद्देशक तंतो।। २१२. च्यारसौ पनरमीं ढाल कही ए, भिक्षु भारीमाल ऋषिरायो। तास प्रसादे गण वृद्धि संपति, 'जय-जश' हरष सवायो ।। चतुर्विशतितमशते प्रथमोद्देशकार्थः ।।२४।१।।

२११. सेवं भंते ! भंते ! त्ति जाव विहरइ । (श० २४।११५)

### ढाल : ४१६

### दूहा

- प्रथम उद्देशे आखियो, द्वितीय हिवै कहिवाय।
   तास संबंध विल इहां, बखाणियै वर वाय।।
   जीव पदे इत्यादि जे, पूर्व गाथा उक्त।
   सर्व उद्देश विषे अपि, इमहिज आदि सुजुक्त।।
   अथवा हिव एहनुं सूत्र घुर, राजगृहे वर रीत।
   यावत गोतम इम कहै, निरमल वचन पुनीत।।
   †धन प्रभु वीरजी, वच गुण हीर जी।
   धन घुर शीस जी, प्रक्रन जगीस जी।। [ध्रुपदं]
- ४. असुरकुमार किहां थी ऊपजै ? स्यूं नरक थकी उपजंत वे । कै तिरिक्ख मनुष्य नें देव थकी ह्वै ?तब भाखै भगवंत वे ।।
- ५. नारक सुर थी ऊपजै नांही, तिरि मनु थी उपजंत बे। इम जिम नारक प्रथम उद्देशे, दाख्यो तेम कहंत बे।।

\*लय: राजा राघव रायां रो राय कहायो

न्तय : धन प्रभु रामजी

- १,२. व्याख्यातः प्रथमोद्देशकः अथ द्वितीयो व्याख्यायते, सम्बन्धस्तु जीवपदे इत्यादिपूर्वोक्तगाथानिर्दाशत एव, (वृ० प० ८१८)
- ३. अस्य चेदमादिसूत्रम् (वृ० प० ८१८) रायगिहे जाव एवं वयासी—
- ४. असुरकुमारा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति—िकं नेरइएहितो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जंति ?
- प्रोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जति । एवं जहेव नेरइय उद्देसए

श रु, उ० २, ढा० ४१५,४१६ ५१

# असुरकुमार में असन्नी तियँच पंचेंद्रिय ऊपजे, तेहनी अधिकार

### ओघिक नें ओघिक (१)

- ६. जाव पर्याप्त असन्नी पंचेंद्री, तिर्यंच प्रभुजी ! तेह बे । ऊपजवा नैं जोग्य अर्छ जे, असुरकुमार विषेह बे।।
- ७. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजे ? जिन कहै जघन्य सुइष्ट बे। उपजे दश सहस्र वर्ष स्थितिके, पत्य ने असंख भाग उत्कृष्ट बे।।

### सोरठा

- भाग जे। द. इहां पल्य नों पेख, असंख्यातमों ग्रहिवे करि सुविशेख, ग्रहिवो पूर्व कोड़ जे।।
- ९. असन्नी तिरि नों जाण, आउखो उत्कृष्ट थी। पूर्व कोड़ परिमाण, आख्यो छै तिण कारणे।।
- १०. ते असन्नी सुर आयु, बांधे तो उत्कृष्ट थी। निज स्थिति तुल्यज पायु, पिण अधिक न बंधै इम वृत्तौ ।।
- ११. वृत्ति विषे ए बात, देखी जिम दाखी इहां। पिण निश्चय अवदात, वदै केवली तेह सत्य।।
- १२. \*ते एक समय प्रभु ! किता ऊपजै ? जिम रत्नप्रभारे मांहि बे। असन्नी ऊपजै तसु नव गमका, ते सम भणवा ताहि बे।।

१३. णवरं तुर्य पंचम षष्ठम गम, जघन्य स्थितिक तिरि ताय बे।

अध्यवसाय शुभ पिण नहिं भूंडा, शेष तिमज कहिवाय बे।।

- १४. असन्नी नरके जाय, जघन्यायु तिरि नां हुवै। सुरगामी नां शुभ हुवै।। माठा अध्यवसाय,
- १५. \*जो सन्नी पंचेंद्री तियंच थकी जे, उत्पर्ज असुर मभार बे। स्यू वर्ष संख्यायु सन्नी यावत ऊपजै, कै असंख वर्षायु थी धार बे ?
- \*लय: धन प्रभु रामजी
- १. परि० २. यंत्र १६
- २. इस सन्दर्भ में वृत्तिकार ने चूर्णिकार के मत को उद्धृत किया है। वह इस 🐰 प्रकार है 🚃

ं उक्कोसेणं स तुल्लपुव्वकोडी आउयत्तं निवत्तेइ । न य संमुच्छिमो पुव्वकोडी आउयत्ताओ परो अत्थि । (वृ० प० ८२०)

५२ भगवती जोड़

- (श० २४।११६) ६. जाव--पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए,
- ७. से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? दसवाससहस्सद्वितीएसु, गोयमा ! जहण्णेणं उनकोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।११७)
- इह पत्योपमासङ्ख्ये यभागग्रहणेन पूर्वकोटी ग्राह्या, (बृ० प० ५२०)
- ९. यतः संमूर्ण्छमस्योत्कर्षतः पूर्वकोटीप्रमाणमायुर्भवति, (वृ० प• ५२०)
- १०. स चोत्कर्षतः स्वायुष्कतुल्यमेव देवायुर्बध्नाति नाति-(वृ० प० ८२०)
- १२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? एवं रयणप्पभागमगसरिसा नव वि गमा भाणियव्वा,
- १३. नवरं जाहे अप्पणा जहण्णकालद्विती**ओ भ**वति ताहे अज्भवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु । अवसेसं तं चेव १-९ । (श० २४।११८)

१५. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति संखेजजवासाउय-सण्णिपचिदियतिरिक्ख-जोणिएहितो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्ण-पंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ?

१६. जिन कहै संख वर्षायुष यावत, ऊपजै असुर मक्तार बे। असंख वर्षायुष यावत ऊपजै, विल पूछे गणधार बे।।

असुरकुमार में तियंच युगलियो ऊपजं, तेहनों अधिकार'

### ओघिक नै ओघिक (१)

१७. हे प्रभु ! वर्ष असंख आयुष नां,

सन्नी पंचेद्री तिरि जेह बे।

ऊपजवा ने जोग्य अछै जे, असुरकुमार विषेह बे।।

१८. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभु ! ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य सुचीन बे।

ऊपजै दश सहस्र वर्ष स्थितिके, उत्कृष्टो पल्य तीन बे ।।

#### सोरठा

- १९. युगल देवकुरु आदि, त्रिण पत्य स्थितिक असुर ह्वं। जो उत्कृष्ट आयु लाधि, तो निज स्थिति सम तोन पत्य।।
- २०. \*ते एक समय प्रभु! किता ऊपजै? तब भाखे जगनाथ बे। जघन्य एक दोय तीन ऊपजै, उत्कृष्टा संख्यात बे।।

### सोरठा

- २१. युगल तिर्यंच सुजोय, संख्याता इज ते हुवै। विण असंख नहिं होय, इम संख्याता इज ऊपजै।।
- २२. \*वज्रऋषभनाराच संघयणी, ते ऊपजें असुर मक्तार बे । वर्ष असंख्याता स्थितिक जे, घुर संघयणी धार बे।।
- २३. जघन्य थकी अवगाहन जेहनी, पृथक धनुष्य पिछाण बे । उत्कृष्टी तो छ गाउ नीं, उभय न्याय इम जाण बे ।।

### सोरठा

- २४. जघन्य पृथक धनु थाय, ए छै पंखी आश्रयी। पंखी नीं अवगाह, धनुष्य पृथक उत्कृष्ट ह्वं।।
- २५. ते जुगल पंखी नीं स्थित्त, असंख्यातमों भाग जे। पत्य तणोंज कथित्त, वृत्ति विषे इम आखियो।।
- २६.षट गाउ उत्कृष्ट, देवकुरु प्रमुख विषे । हस्ति आदिक इष्ट, वर्ष असंख्यायु तिके ।।
- २७. \*ते समचउरंस संठाण संठिया, ऊपजै असुर मक्तार बे । सर्व युगलिया घुर संठाणिक, न ह्वं अन्य आकार बे ।।

\*लय: धन प्रभु रामजी १. परि० २, यंत्र १७

- १६. गोयमा ! संक्षेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंक्षेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।(श० २४।११९)
- १७. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जिंत्तए,
- १८. से णं भंते ! केवितकालिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिंद्वितीएसु, उक्कोसेणं तिपिलिओवमिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।१२०)
- १९. इदं देवकुर्वादिमिथुनकतिरण्चोऽधिकृत्योक्तं, ते हि त्रिपल्योगमायुष्कत्वेनासङ्ख्यातवर्षायुषो भवन्ति, ते च स्वायुः सदृशं देवायुर्वेध्नन्तीति । (वृ० प० ६२०)
- २०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संबेज्जा उवबज्जंति ।
- २१. 'संखेज्जा उववज्जंति' त्ति असङ्ख्यातवर्षागुस्तिर-श्वामसङ्ख्यातानां कदाचिदप्यभावात्, (वृ० प० ५२०)
- २३. ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं छ गाउयाइं।
- २४. 'जहन्नेणं घणुहपुहुत्तं' ति इदं पक्षिणोऽधिकृत्योक्तं, पक्षिणामुत्कृष्टतो धनु:-पृथक्तवप्रमाणशरीरत्वात्, आह च 'धणुयपुहत्तं पिक्खसु' त्ति (वृ०प० ८२०)
- २५. असङ्ख्यातवर्षायुषोऽपि ते स्युर्येदाह—'पिलय-असंखेज्जपक्खीसु' त्ति पत्योपमासङ्ख्येयभागः पक्षिणा-मायुरिति, (वृ० प० ८२०)
- २६. 'जनकोसेणं छ गाउयाइं' ति, इदं च देवकुर्वादिह-स्त्यादीनधिकृत्योक्तं, (वृ० प० ८२०)
- २७. समचउरससंठिया पण्णता ।

श० २४, उ० २, ढा० ४१६ ५३

www.jainelibrary.org

२८. चिउं लेश्या घुर तेह युगल में, समदृष्टि निहं होय बे। मिथ्यादृष्टि मरी असुर ह्वं, समामिथ्या निहं कोय बे।।

### सोरठा

- २९. समदृष्टि नैं सोय, बंध विमानिक नों हुनै । ते माटै अवलोय, मिथ्यादृष्टि ऊपजै ।।
- ३०. \*ज्ञानी नहीं ह्वं अज्ञानी ह्वं, नियमा बे अज्ञान बे। मित अज्ञानी नें श्रुत अज्ञानी, असूर विषे उपजान बे।।
- ३१. जोग त्रिविध पिण हुवै युगल में, फुन उपयोगज दोय बे । च्यार संज्ञा च्यार कषायज, इंद्रिय पांचूं होय बे ।।
- ३२. समुद्घात घुर तीन हुवै फुन, समोहया मृत्यु पाय बे । असमोहया पिण मरण मरै छै, युगल विषे कहिवाय बे ।।
- ३३. वेदना पिण हुवै दोय प्रकारे, सातावेदगा सोय बे । विल असातावेदगा पिण ह्वै, युगल विषे अवलोय बे ।।
- ३४. वेद बिहुं विधि पिण ते ह्वं छै, स्रीवेदगा पिणथाय बे । पुरुष वेद पिण हुवं युगलिया, वेद नपुंसक नांय बे।।

#### सोरठा

- ३५. वर्षायु असंख्यात, वेद नपुंसक नर्हि हुवै। तिण कारण अवदात, दोय वेद ह्व**ै यु**गल में।।
- ३६. \*स्थिति जघन्य थी पूर्व कोड़ी, कांइक जाभी जोय बे। उत्कृष्टी ह्वं तीन पत्योपम, युगल तणीं अवलोय बे।।

### सोरठा

- ३७. साधिक पूर्व कोड़, जघन्य स्थिति तिरि युगल नी । ए संख वर्ष स्थिति जोड़, असंख्यायु स्थिति किम कही ।।
- ३८. युगल तणों ए नाम, वर्ष असंख्यायु स्थितिक। संज्ञावाची ताम, तिणसुं एह विरोध नहीं।।
- ३९. \*अध्यवसाय भला पिण होवै, माठा पिण तसु होय बे । अनुबंध स्थिति कही तिम कहिवो, द्वार उगणीसम जोय बे।।
- ४०. कायसंवेधज भव आश्रयी, बे भव ग्रहण कहाय बे। प्रथम ग्रुगल नों द्वितीय असुर नों,
  - इह विधि बे भव थाय बे।।
- ४१. काल आश्रयी जघन्य अद्धा ए, साधिक प्वं कोड़ बे। वर्ष सहस्र दश अधिक कहीजै, उत्कृष्ट घट पत्य जोड़ बे।।

### सोरठा

४२. साधिक पूर्व कोड़, तिरि भव युगल जघन्य स्थिति । वर्ष सहस्र दश जोड़, असुर भवे स्थिति जघन्य थी।।

\*लय: धन प्रभु रामजी

५४ भगवती जोड़

२८. चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ। नो सम्मिदद्वी, मिच्छादिद्वी, नो सम्मामिच्छादिद्वी।

- ३०. नो नाणी, अण्णाणी, नियमं दुअण्णाणी—मति-अण्णाणी सुयअण्णाणी य ।
- ३१. जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया ।
- ३२. तिण्णि समुग्धाया आदिल्ला। समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति।
- ३३. वेदणा दुविहा वि-सायावेदगा, असायावेदगा ।
- ३४. वेदो दुविहो वि—इित्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि, नो नपुंसगवेदगा।
- ३५. 'नो नपुंसगवेयग' त्ति असङ्ख्यातवर्षायुषो हि नपुंसक-वेदा न संभवन्त्येवेति, (वृ० प० ८२०)
- ३६. ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं।

- ३९. अज्भवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबंधो जहेव ठिती ।
- ४०. कायसंवेही भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,
- ४१. कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुन्वकोडी दसिंह वाससहस्मेहि अञ्भहिया, उक्कोसेण छप्पलिओवमाइं,

- ४३. उत्कृष्ट अद्धा लेह, तीन पत्योपम तिरि युगल । असुर विषे ऊपजेह, तीन पत्योपम स्थितिके ।।
- ४४. सुर भव थकी उद्धृत, निश्चै नहीं ह्वै युगलिया । तिणसूं एम कथित, अद्धा बे भव नों इहां।।

४५. \*एतलो काल सेवै ते जंतु, करें गति आगति इतो काल बे।

ओघिक नैं ओघिक गमक ए, दाख्यो प्रथम दयाल बे।।

### ओघिक नैं जघन्य (२)

४६. तेहिज युगल तियँच ऊपनों, जघन्य स्थितिक नें विषेह बे । एहिज वक्तव्यता तसु कहिवी, णवरं विशेष छै एह बे ।। ४७. असुरकुमार नीं स्थिति विषे विल, कायसवेध मक्तार बे ।। ए दोनूं में फेर अछै ते, कहिवूं मन सू विचार बे ।।

#### सोरठा

४८. जघन्य स्थितिके इष्ट, युगल ऊपजै असुर में । जघन्य अनें उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र दश स्थितिके ।। ४९. कायसंवेध सुजोड़, जघन्य काल तेहनुं इतो । साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक ए।। ५०. उत्कृष्ट अद्धा जेह, तीन पल्योपम युगल स्थिति । वर्ष सहस्र दश एह, असुर तणें भव जघन्य स्थिति ।।

### ओघिक नैं उत्कृष्ट (३)

- ५१. \*तेहिज युगल तिरि जेष्ठ स्थितिक ते, ऊपनों उत्कृष्ट स्थितिक विषेह बे।। जघन्य अने उत्कृष्ट थकी ते, तीन पत्य स्थिति लेह बे।।
- ५२. एहिज वक्तव्यता तसु कहिवी, णवरं इतरो विशेख बे । स्थिति अनुबध जघन्य उत्कृष्टी, तीन पत्योपम देख बे ।।
- ५३. काल आश्रयी जघन्य अद्धा जे, पत्योपम षट पाय बे । उत्कृष्टो पिण षट पत्योपम, बिहुं भव नुं कहिनाय बे ।।
- ५४. एतलो काल सेव ते जंतु, करै गित आगित इतो काल वे । ओघिक नें उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो तृतीय दयाल वे।।

### जघन्य नैं ओघिक (४)

५५. तेहिज तिरि जघन्य काल स्थितिक हुओ, साधिक पूर्व कोड़ बे। ते असुरकुमार नें विषे ऊपजै, तुर्य गमो ए जोड़ बे।। ५६. ओघिक स्थितिक विषे ते ऊपजै,

जघन्य सहस्र दश वास बे । उत्कृष्ट साधिक कोड़ पूर्व नां, आयु विषे सुविमास बे ।।

\*लय: धन प्रभु रामजी

- ४३,४४. 'उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइ' ति त्रीण्यसङ्ख्रचात-वर्षायुस्तिर्यग्भवसम्बन्धीनि त्रीणि चासुरभवसम्बन्धी-नीत्येवं षट्, न च देवभवादुद्वृत्तः पुनरप्यसङ्ख्रचात-वर्षायुष्केषूत्पद्यत इति (वृ० प० ८२०)
- ४५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा १। (श० २४।१२१)
- ४६. सो चेव जहण्णकालिंदुतीएसु उववण्णो—एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
- ४७. असुरकुमारद्विति संवेहं च जाणेज्जा २। (श० २४।१२२)

- ५१. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवम-द्वितीएसु उववज्जेज्जा—
- ५२. एस चेव वत्तव्वया, नवरं—िठिती से जहण्णेणं तिण्णि पिलओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पिलओवमाइं। एवं अणुबंधो वि।
- ५३. कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं,
- ५४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा, सेसं तं चेव ३। (श० २४।१२३)
- ४५,४६. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेग-पुब्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा । (श॰ २४।१२४)

श० २४, उ० २, ढा० ४१६ ५५

- ५७. साधिक पूर्व कोड़, निज अ। यु तुल्य सुर स्थिति । उत्कृष्टी ए जोड़, पंखी प्रमुखज युगलिया।।
- ५८. \*ते एक समय प्रभु! किता ऊपजै,

तिमहिज शेष सुचीन बे।

यावत भव आदेश लगे ए, णवरं णाणत्ता तीन बे।।

५९. तनु अवगाहन जघन्य थकी जे, पृथक धनुष्य संपेख बे। उत्कृष्टी धनु सहस्र जाभेरी, तास न्याय इम देख बे।।

### सोरठा

- ६०. धनुष सहस्र अधिकाय, सप्तम कुलकर तेहथी। पूर्व काले पाय, भावी जे हस्त्यादि
- ६१. साधिक पूर्व कोड़, जघन्य स्थिति तिरि युगल नीं। ए संख वर्ष स्थिति जोड़, असंख वर्ष स्थिति किम कही।।
- ६२. युगल तणों ए नाम, असंख्यात वर्ष स्थितिकः । आगम में ववहार ताम,

वा॰ - अत्र जुगालियां नुं जघन्यायु साधिक पूर्व कोड़ हुवै, तेहनैं आगम वचने करी असंख्यात वर्षायुष कहिये। जे सर्व युगलिया नों असंख्यात वर्षायुष एहवी सज्ञा छै। जिम देवता मरै छै, तो पिण तेहनुं नाम अमर एहवूं संज्ञा छै। तिम युगलिया नीं पिण असंख्यात वर्षायुष एहवी संज्ञा छै।

- ६३.फुन एहवूं हस्त्यादि, कुलकर सप्तम तेह थी। काले लाधि, जघन्य स्थितिक अवगाहना।।
- ६४. तथाज सप्तम जाण, कुलकर नीं अवगाहना। धनुष पंच सय माण, पंचवीस धनु अधिक फुन्।।
- ६५. तेह थकी सुविचार, पूर्व काल जे भावि नैं। धनुष पंच सय धार, अतिहि अधिक अवगाहना।।
- ६६. ते काले हस्त्यादि, उच्चपणों द्विगुणो हुई । सहस्र धनुष तसु लाधि, अतिहि अधिक अवगाहना।।
- ६७. घुर गम उत्कृष्ट वक्क, षट गाऊ आखी तिहां। इहां धनु सहस्र अधिक्क, ते माटै ए णाणत्तो।।
- ६८. \*स्थिति जघन्य उत्कृष्ट थी, तेहनीं साधिक पूर्व कोड़ बे। तुर्य गमो ए छै ते माटै, एवं अनुबंध जोड़ बे।।

#### सोरठा

६९. घुर गम स्थिति उत्कृष्ट, तीन पल्य दाखी तिहां। इहां जेष्ठ स्थिति इष्ट, साधिक पूर्व कोड़ में।। ७०. अनुबंध स्थिति जिम होय, तृतीय णाणत्तो तेहनैं। धुर गम थी ए जोय, तुर्य गमे त्रिण णाणत्ता।।

- ५७. इह च जघन्यकालस्थितिकः सातिरेकपूर्वकोटचायुः स च पक्षिप्रभृतिकः प्रकान्तः (वृ० प० ५२०)
- ५८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? अवसेसं तं चेव जाव भवादेसी त्ति, नवरं---
- ५९. ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगं धणुसहस्सं ।
- ६०. 'उक्कोसेणं सातिरेगं धणुसहस्सं' ति यदुक्तं तत् सप्तमकुलकरप्राक्कालभाविनो हस्त्यादीनपेक्ष्येति (वृ० प० ५२०)
- ६१,६२. तथाहि—इहासङ्ख्रचातवर्षायुर्जघन्यस्थितिकः प्रकान्तः स च सातिरेकपूर्वकोटचायुर्भवति तथैवागमे व्यवहतत्वात्, (वृ० प० ५२०)

- ६३. एवंविधश्च हस्त्यादिः सप्तमकुलकरप्राक्काले लभ्यते, (बृ० प० ८२०)
- ६४,६५. तथा सप्तमकुलकरस्य पञ्चविंशत्यधिकानि पञ्च धनुःशतानि उच्चैस्त्वं तत्प्राक्कालभाविनां च तानि समधिकतराणीति (वृ० प० ५२०)
- ६६. तत्कालीनहस्त्यादयश्चैतद् द्विगुणोच्छ्रायाः (वृ० प० ८२०)
- ६८. ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि ।

<sup>\*</sup>लय: धन प्रभु रामजी

५६ भगवती जोड़

७१. \*काल आश्रयी जघन्य थकी जे, साधिक पूर्व कोड़ बे । वर्ष सहस्र दश अधिक कहीजै, बिहुं भव अद्धा जोड़ बे ।।

### सोरठा

- ७२. तिरि भव स्थिति संबंध, साधिक पूर्व कोड़ नीं। वर्ष सहस्र दश संध, असुर स्थिति ए धुर अद्धा।।
- ७३. \*काल आश्रयी उत्कृष्ट अद्धा, साधिक बे पुव्व कोड़ बे । एक युगल तिरि भव संबंधी, द्वितीय असुर भव जोड़ बे ।।
- ७४. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो काल बे। जघन्य अनैं ओघिक गमक ए, दाख्यो तुर्य दयाल बे।। जघन्य अनैं जघन्य (५)
- ७५. तेहिज तिर्यंच जघन्य आयुवंत, असुर विषे अवधार बे । जघन्य काल स्थितिक विषे ऊपनों,

पंचम गम सुविचार बे।।

७६. एहिज वक्तव्यता तसु कहिवी, णवरं इतलो फेर बे। असुरकुमार नीं स्थिति विषे छै, विल संवेध सुहेर वे।

### सोरठा

- ७७. जघन्य अनै उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र दश स्थितिक में। ऊपजवो इहां इष्ट, जघन्य स्थितिक तिरि युगलियो।।
- ७८. कायसंवेध सुजोड़, अद्धा जघन्य उत्कृष्ट पिण। साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।

### जघन्य ने उत्कृष्ट (६)

७९. \*तेहिज तियँच जघन्य आयुवंत, असुर विषे अवलोय बे । उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे ऊपनों,

षष्ठम गमे सुजोय बे।।

- द०. जघन्य अने उत्कृष्ट थकी पिण, साधिक पूर्व कोड़ बे। आउखा नें विषे ऊपजै, शेष तिमज विधि जोड़ बे।
- दश्. णवरं संवेधकाल आश्रयी, जघन्य अने उत्कृष्ट बे। साधिक वे पुक्व कोड़ कहीजै, इक तिरि इक सुर इष्ट बे।।
- द२. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो काल बे। जघन्य अने उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो षष्ठम दयाल बे।। उत्कृष्ट ने ओधिक (७)
- द ३. तेहिज तिरि उत्कृष्ट आयुवंत, ऊपजै असुर मभार बे । वक्तव्यता सहु प्रथम गमा नीं, भणवी तेहिज सार बे ।।

- ७३. उक्कोसेणं सातिरेगाओ दो पुन्वकोडीओ, 'सातिरेगाओ दो पुन्वकोडीओ' इति एका सातिरेका तिर्यग्भवसत्काऽन्या तु सातिरेकैवासुरभवसत्केति ४। (वृ० प० ८२०)
- ७४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ४। (श॰ २४।१२५)
- ७५. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो,
- ७६. एस चेव वत्तव्वया, नवरं असुरकुमारहिइं संवेहं च जाणेज्जा ४। (श० २४।१२६)
- ७७,७८. 'असुरकुमारिट्टइ' संवेहं च जाणिज्ज' ति तत्र जघन्याऽसुरकुमारिस्थितिर्दशवर्षसहस्राणि संवेधस्तु सातिरेका पूर्वकोटी दशवर्षसहस्राणि चेति ५, (वृ० प० ८२०)
- ७९. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- प्रतिरेगपुन्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि सातिरेगपुन्वकोडीआउएसु उववन्जेज्जा, सेसं तं चेव,
- ६१. नवरं —कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगाओ दो पुक्व-कोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुक्वकोडीओ,
- दर. एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गतिरागित करेज्जा ६। (श० २४।१२७)
- सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्टितीओ जाओ; सो चेव पढमगमगो भाणियव्वो,

श० २४, उ० २, ढा० ४१६ **१७** 

७१. कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दर्साह वाससहस्सीहं अब्भहिया,

<sup>\*</sup>लय: धन प्रभु रामजी

दथ. णवरं तिरि में दोय णाणत्ता, स्थिति जघन्य उत्कृष्ट वे। तीन पल्योपम तेह युगल नीं, एवं अनुबंध इष्ट वे।।

#### सोरठा

- ६५. धुर भव स्थिति जघन्य, साधिक पूर्व कोड़ नीं। इहां तीन पत्य जन्य, एवं अनुबंध पिण कह्यो।।
- द६. \*कायसंवेधज काल आश्रयी, जघन्य तीन पल्य होय वे । वर्ष सहस्र दश अधिक कहीजै, बिहुं भव अद्धा जोय वे ।।

### सोरठा

- द७. तीन पल्योपम तेह, युगल तियँचज भव स्थिति। असुर भव स्थिति जेह, वर्ष सहस्र दश नीं अधिक।।
- दद. \*उत्कृष्ट अद्धा षट पत्योपम, त्रिण पत्य युगल तियँच बे । तीन पत्योपम असुर भवायु, इम षट पत्यज संच बे ।।
- द९. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित इतो काल बे। उत्कृष्ट नैं ओघिक गमक ए, दाख्यो सप्तम दयाल बे।।

### उत्कृष्ट नें जघन्य (८)

९०. तेहिज उत्कृष्ट आयुवंत तिरि,
 जघन्य स्थितिक विषे उत्पन्न बे ।
 एहिज वक्तव्यता तसु कहवी, सप्तम गम जिम जन्न बे ।।
 ९१. णवरं विशेष एतलुं कहिव्ं, असुर स्थिति में फेर बे ।
 कायसंवेध विषे पिण अंतर, तेह जाणवं हेर बे ।

### सोरठा

९२. जघन्य अनें उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र दश स्थितिक में। ऊपजवो तसु इष्ट, स्थिति असुर नीं जाणवी।। ९३. कायसंवेध पिछाण, जघन्य अनें उत्कृष्ट पिण। तीन पत्योपम जाण, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।

### अत्कृष्ट नें उत्कृष्ट (E)

- ९४. \*तेहिज उत्कृष्ट आयुवंत तिरि, असुरकुमार रै मांय बे । उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे उपनों,
  - नवम गमे कहिवाय बे।।
- ९५. जघन्य तीन पत्य स्थितिक विषे जे, ऊपनों असुर मभार बे। उत्कृष्टो पिण तीन पत्योपम स्थितिक विषे सुविचार बे।।
- ९६. एहिज वक्तव्यता पिण णवरं, काल आश्रयी देख बे। जघन्य अनें उत्कृष्ट अद्धा पिण, षट पत्योपम पेख बे।।
- ९७. एतलो काल सेवै ते जंतु, करै गित आगित एतलो काल बे। उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट गमक ए, दाख्यो दीन दयाल बे।।

८४. नवरं — ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्को-सेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि।

<u>६६. कालादेसेण जहण्णेण तिष्णि पलिओवमाइं</u> दसहिं वाससहस्सेहि अञ्महियाइं,

- ८८. उक्कोसेणं छ पलिओवमाइं,
- पवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागितं
   करेज्जा ७। (श● २४।१२८)
- ९०. सो चेव जहण्णकालिंद्वतीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया,
- ९१. नवरं—असुरकुमारिहिति संवेहं च जाणेज्जा ९। (श० २४।१२८)

- ९४. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएस उववण्णो
- ९५. जहण्णेणं तिपलिओवमाइं, उनकोसेण वि तिपलि-ओवमाइं,
- ९६. एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं,
- ९७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ९। (श० २४।१३०)

प्र भगवती जोड

<sup>\*</sup>लय: धन प्रभु रामजी

# असुरकुमार में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै, तेहनों अधिकार

- ९८. जो वर्ष संख्यायुष सन्नो पंचेंद्रिय, जाव असुर में जाय बे। स्यूं जलचर थी ऊपजै प्रभुजी! एवं जाव कहाय बे।।
- ९९. पजत्त संख्यात वर्षायु सन्नी पं. तिर्यंचयोनिक तेह बे। कपजवा नें जोग्य अछै जे, असुरकुमार विषेह बे।।

१००. किता काल स्थितिक विषे ते प्रभुं! ऊपजै ?

जिन कहै गोयम! तेह बे।

जघन्य थकी दश सहस्र वर्ष नों,

स्थितिक विषे उपजेह बे ।। अनुस्कारी साधिक सागर तीं स्थितिक विषे उपजीत हो ।

१०१. उत्कृष्टी साधिक सागर नीं, स्थितिक विषे उपजंत बे। असुर उत्तर दिशि विल निकायज, तेह आश्रयी मंत बे।।

१०२. ते एक समय प्रभु! किता ऊपजै?

इम एहने पहिछाण बे।

रत्नप्रभानां गमा सरीखा, गमा नवूं ही जाण बे।।

१०३. णवरं एतलो विशेष कहीजै,

जघन्य स्थितिक हुओ आप बे। तुर्य पंचम नें षष्ठम गमके, जघन्य काल स्थिति स्थाप बे।। १०४. ए तीनूंइ गमा विषे इम, कह्या णाणत्ता एह बे। लेश्या च्यार कहीजै तिणमें, तास न्याय इम लेह बे।।

#### सोरठा

१०५. रत्नप्रभा रे मांहि, जाणहार जघन्यायु जे। सन्नी तिरि में ताहि, लेश्या तीन कही तिहां।। १०६. इहां लेश्या चिउं मंत, तेजु लेश्यावंत पिण। असुर विषे उपजंत, ते माटै ए णाणत्तो।।

१०७. \* अध्यवसाय पसत्थ कह्या तसु, पिण अपसत्थ नहीं आय बे । द्वितीय णाणत्तो तिर्यंच मांहै, हिव कहियै तसु न्याय बे ।।

#### सोरठा

स्थितिक नां। १०८. रत्नप्रभा रै मांय, जाणहार घुर आवै तिण भवे। माठा अध्यवसाय, भला न तिरि नैं विषे । १०९. इहां भलाहिज ख्यात, जघन्यायु नहि पात, अद्धा अल्पपणां थकी ।। अप्रशस्त ११०. दीर्घ स्थितिक तिरि जोय, जाणहार जे असूर प्रशस्त अप्रशस्त होय, अल्प स्थितिक नां शुभ हुवै।

- ९न. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जंति —िंक जलचरेहिंतो उववज्जंति ? एवं जाव— (श० २४।१३१)
- पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उवविज्जित्तए,
- १००. से णं भंते ! केवतिकालट्टितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्टितीएसु,
- १०१. उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमिट्ठतीएसु उववज्जेज्जा।
  (श॰ २४।१३२)
  'उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमिट्ठतीएसु' त्ति यदुक्तः
  तद्बलिनिकायमाश्चित्येति (वृ० प० ८२०)
- १०२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ? एवं एतेसि रयणप्पभपुढिवगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा,
- १०३. नवरं जाहे अप्पणा जहण्णकालठितीओ भवइ ताहे
- १०४. तिसु वि गमएसु, इमं नाणतं चतारि लेस्साओ।
- १०४,१०. 'चत्तारि लेसाओ' त्ति रत्नप्रभापृथिवीगामिनौ जघन्यस्थितिकानां तिस्रस्ता उक्ताः एषु पुनस्ताश-चतस्रः असुरेषु तेजोलेश्यावानप्युत्पद्यत इति । (वृ० प० ८२१)
- १०७. अज्भवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था ।
- १०८,१०९. तथा रत्नप्रभापृथिवीगामिनां जघन्यस्थिति-कानामध्यवसायस्थानान्यप्रशस्तान्येवोक्तानि इह तु प्रशस्तान्येव। (वृ• प० ८२१)
- ११०. दीर्घस्थितिकत्वे हि द्विविधान्यिप संभवन्ति न त्वितरेषु कायस्याल्पत्वात् । (वृ० प० ८२१)

शं २४, उ० २, ढा० ४१६ ५९

<sup>\*</sup>लय: धन प्रभु रामजी १. परि० २. यंत्र १८

१११. \*शेष तिमज किहवूं सगलोई, कायसंवेध विषेह बे। साधिक सागर एक संघाते, करिवूं संबंध जेह बे।।

१११. सेसं तं चेव । संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्यो १-९। (श० २४।१३३)

### सोरठा

११२. प्रथम गमे पहिछाण, कायसंवेधज जघन्य अद्ध । वर्ष सहस्र दश जाण, अंतर्मृहूर्त्त अधिक फून ॥ ११३. उत्कृष्ट अद्धा जोड़, साधिक सागर चिउं फून चिउं पूर्व कोड़, अठ भव स्थिति उत्कृष्ट ए ॥ ११४. द्वितीय गमे इम लेख, जघन्य थकी अद्धा इतो । वर्ष सहस्र दश देख, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फून ।। ११५. उत्कृष्ट अद्धा जास, कोड़ पूर्व चिउं तिरि भवे। चालीस सहस्र वास, असुर तणी ए जघन्य ११६. तृतीय गमे पहिछाण, अद्धा जघन्य थकी कह्यो। अंतर्मुहूर्त्त अधिक साधिक सागर जाण, ११७. उत्कृष्ट अद्धा काल, चिउं साधिक सागर असुर। कोड़ पूर्व चिउं न्हाल. तिर्यंच भव उत्कृष्ट स्थिति ।। ११८ तूर्य गमे संवेह, वर्ष सहस्र दश असुर अंतर्मुहर्त्त एह, सन्नी तिरि भव जघन्य ११९ उत्कृष्ट अद्धाधार, चिउं साधिक सागर अंतर्मुहर्त्तं च्यार, चिउं तिरि भव ए जघन्य स्थिति ।। अंतर्मुहूर्त्त तिरि गमे जघन्य, वर्ष सहस्र दश जन्य, बिहुं भव अद्धा जघन्य स्थिति।। धार, अंतम्हूत्ते च्यार १२१. उत्कृष्ट अद्धा वर्षं चालीस हजार, अष्ट भवे ए जघन्य स्थिति।। अंतर्मृहूर्त्तं तिरि गमे संवेह, १२२. षष्टम साधिक सागर लेह, षष्टम गम ए जघन्य अद्धा ॥ १२३. उत्कृष्ट अद्धा धार, साधिक सागर चिउं असुर । अंतर्मुहर्त्तं च्यार, षष्टम गम उत्कृष्ट अद्धाः ।। १२४. सप्तम गमे सुजोड़, जघन्य अद्धा संवेध नों। तिरि भव पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश असुर १२५. उकृष्ट अद्धा जोड़, चिउं साधिक सागर तिरि भव चिउं पुव्व कोड़, अष्ट भवां नों काल ए। १२६. अष्टम गमे सुजोड़, जघन्य थकी अद्धा तिरि भव पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश असुर वर्ष १२७. उत्कृष्ट अद्धा संच, सहस्र चालीस चिउं पुठव कोड़ तियँच, अष्ट भवां नों काल थकी अद्धा १२८. नवमे गर्म सुन्हाल, जघन्य साधिक सागर काल, कोड़ पूर्व बलि अधिक ही।। १२९. उत्कृष्ट अद्धा जोड़, साधिक सागर चिउं असुर । तिरि भव चिउं पुग्व कोड़, अठ भव उत्कृष्ट काल स्थिति ।।

<sup>\*</sup>लयः धन्य प्रभु रामजी

६० भगवती जोड़

तिरि । १३०. ए नव गमे संवेह, संख्यायु सन्नो कह्यो ॥ जघन्योत्कृष्ट अद्धा असूर विषे ऊपजेह, जघन्य गमे। १३१. असन्नी असुर मभार, जावै तस् गम णाणत्ता ॥ तीन णाणत्ता धार, उत्कृष्ट विषे १३२. युगल तियंच सुचीन, जावे तसु । असुर गम बे उत्कृष्ट णाणत्ता ॥ जघन्य गमेज तीन, १३३. संख्यायु तियंच, विषे जावे तसु। असुर णाणता ॥ जघन्य गमे अठ संच, उत्कृष्ट गम जघन्य गमे । १३४. इम तियंच विचार, जावे तस्र आख्या पूर्वे ए सहु ।। तीस णाणत्ता धार, १३५. \*शत चउवीसम द्वितीय देश ए, च्यार सौ नैं सोलमी ढाल बे। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जरा' मंगलमाल बे ।।

# ढाल : ४१७

#### दूहा

- १. मनुष्य थकी जो ऊपजें, असुरकुमार मफार। तो स्यूं सन्नी मनुष्य थकी, के असन्नी थी धार? २. जिन कहै सन्नी मनुष्य थी, असुर विषे ऊपजेह। असन्नी मनुष्य मरी करी, असुर हुवै नहीं तेह।।
- ३. जो सन्नी मनु थी हुवै, तो संख्यायु वास। तथा असंख्यायु मनुष्य ऊपजे तेह प्रकाश?
- ४. जिन कहै वर्ष संख्यायुष, यावत उपजै तेह। असंख वर्ष आयुष पिण, यावत ही ऊपजेह।।

- १. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति—कि सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ? असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ?
- २. गोयमा ! सिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति, नो असिण्णमणुस्सेहितो उववज्जंति । (श० २४।१३४)
- ३. जद्द सिष्णमणुस्सेहितो उववज्जंति कि संखेज्ज-वासाउयसिष्णमणुस्सेहितो उववज्जंति ? असंखेज्जवासा-उयसिष्णमणुस्सेहितो उववज्जंति ?
- ४. गोयमा ! संबेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति, असंबेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो वि उववज्जंति । (श० २४।१३५)

\*लयः धन्य प्रभु रामजी

१. प्रस्तुत गाथा में 'तीस णाणत्ता' लिखा है। किन्तु पूर्ववर्ती तीन गाथाओं, णाणत्ता के यन्त्र और गमा के थोकड़े के अनुसार 'बीस णाणत्ता' होना चाहिए। जोड़ की हस्तलिखित प्रतियों में 'तीस णाणत्ता' ही है। संभव है श्रृति या लिपि में रहे अन्तर के कारण यह पाठभेद हुआ है।

श० २४, उ० २, ढा० ४१६,४१७ ६१

# असुरकुमार में मनुष्य युगलियो ऊपजे, तेहनों अधिकार ओघिक नैं ओघिक (१)

\*सुगुण जन सांभलो रे ।। (ध्रुपदं)

- ५. असंख्यात वर्ष आउखो रे, सन्नी मनुष्य छै जेह। ऊपजवा नें जोग्य छै रे, असुरकुमार विषेह।।
- ६. किता काल स्थितिक विषे ऊपजै रे?,

तब भाखे जिनराय। जघन्य सहस्र दश स्थितिक में रे, उत्कृष्ट त्रिण पत्य पाय।।

#### सोरठा

- ७. उत्कृष्ट स्थितिक जान, देवकुर्वादिक मनुष्य नीं। ते निज आयु समान, देवायुष नां बंधका।।
- ते माटे इम ख्यात, त्रिण पत्य उत्कृष्ट स्थितिक थी।
   असुर विषे उपपात, सन्नी युगलिया मनुष्य नों।।
- ९. \*इम असंख्यात वर्ष आउलो रे, तिर्यंच सरखा देख। भणवा प्रथम गमा त्रिहुं रे, णवरं इतलो विशेख।।
- १० शरीर तणीं अवगाहना रे, प्रथम द्वितीय गम चीन। जघन्य साधिक धनु पांचसौ रे, उत्कृष्ट गाऊ तीन।

### सोरठा

- ११. प्रथम द्वितीय गमकेह, असंख्यात वर्षायु नर। जघन्य थकी इम लेह, ह्वं साधिक धनु पांचसी।।
- १२ सप्तम कुलकर जाण, तेहथी पूर्व काल जे। भावी ते पहिछाण, मनुष्य युगलिया नीं हुवै।।
- १३. उत्कृष्ट थीं संवादि, गाऊ तीन प्रमाण जे। यथा देवकुरु आदि, मनुष्य युगलिया नीं हुवै।।
- १४. ते उभय अवगाह, प्रथम अनें द्वितीये गमे। पुगल विषे कहिवाह, शेष तिमज भणवो सहु।।

वा० — असुरकुमार में जाणहार तियँच युगिलयो, युगिलया नीं प्रथम तीन गमे अवगाहना जघन्य पृथक धनुष्य नीं, उत्कृष्टी छ गाऊ नीं। अनैं इहां युगिलया मनुष्य नीं पहिले, दूजे गमे जघन्य पांच सय धनुष्य जाभोरी, उत्कृष्टी तीन गाऊ नीं। शेष तियँच युगिलया नैं कह्यो तिम कह्यो।

१५. \*तृतीय गमे अवगाहना रे, जघन्य अनें उत्कृष्ट। गाऊ तीन तणी कही रे, शेष तिरिक्ख जिम इष्ट।।

\*लय: सीता सुन्दरी रे

१. परि. २. यंत्र १९

६२ भगवती जोड

- असंखेज्जवासाउयसिण्णमणुस्से णं भंते ! जे भिवए असुरकुमारेसु उवविज्जित्तए।
- ६. से णं भंते ! केवतिकालट्टितीएसु जववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, जक्कोसेणं तिपलिओवमट्टितीएसु जववज्जेज्जा ।
- ७. 'उक्कोसेणं तिपलिओवमट्टिइएसु' त्ति देवकुर्वादिनरा
   हि उत्कर्षतः स्वायु:-समानस्यैव देवायुषो बन्धकाः ।
   (वृ० प० ८२१)
- द. अतः 'तिपलिओवमट्टिइएसु' इत्युक्तं । (वृ० प० द२**१**)
- ९. एवं असंखेजजवासाउयितिरिक्खजोणियसिरसा आदिल्ला तिण्णि गमगा नेयव्वा । नवरं—
- १०. सरीरोगाहणा पढमबितिएसु गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उनकोसेणं तिण्णि गाउयाइं।
- ११. तत्र प्रथम औषिक औषिकेषु द्वितीयस्त्वौषिको जघन्यस्थितिष्विति, तत्रौषिकोऽसंख्यातवर्षायुर्नरो जघन्यतः सातिरेकपञ्चधनुः शतप्रमाणो भवति । (वृ० प० ६२१)
- १२. यथासप्तमकुलकरप्राक्कालभावी मिथुमकनरः । (वृ० प० ८२१)
- १३. उत्कृष्टतस्तु त्रिगव्यूतमानो यथा देवकुर्वादिमिथुनक-नरः। (वृ० प० ८२१)
- १४. स च प्रथमगमे द्वितीये च द्विविद्योऽपि संभवति । (वृ० प० ८०१) सेसं तं चेव ।

१५. तइयगमे ओगाहणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाणं १-३। (श० २४।१३६)

#### सोरठा

- १६. तृतीय गमे पहिछाण, त्रिण गाऊ अवगाहना। ते अवगाहन जाण, उत्कृष्ट स्थितिक विषेज ह्वै।।
- १७. ओघिक नें उत्कृष्ट, उत्कृष्ट स्थितिक असुर में ॥ ऊपजवो इहां इष्ट, तेह तीन पत्य नें विषे॥
- १८. त्रिण पत्य स्थितिक विषेह, मनुष्य युगलियो ऊपजै। ते उत्कृष्ट सुलेह, स्वायु सम आयु बंधक।।
- १९. \*ते हिज आपणपै थयो रे, जघन्य स्थितिक जे काल। तुर्य पंचम छुठै वली रे, ए त्रिहुं गमके न्हाल।।
- २०. युगल तियँच ए त्रिहुं गमे रे, ऊपजै असुर मभार। तेह सरीखा जघनिया रे, ए त्रिहुं गमे विचार।।
- २१. णवरं तनु अवगाहना रे, तीनूं गमां विषे इष्ट। पंच सौ धनुष्य जाभी कही रे, जघन्य अनें उत्कृष्ट।।
- २२. शेष तिमज कहिवो सहु रे, जिम युगल तिरि ऊपजेह । असुरकुमार विषे तिको रे, मनुष्य युगल तिम लेह ।।
- २३. तेहिज आपणपै हुओ रे, उत्कृष्ट स्थितिक काल। ते मनु नां पिण जाणवा रे, चरम त्रिहुं गमे न्हाल।।
- २४. तेहिज तिर्यंच युगलियो रे, असुर विषे ऊपजेह। पाछिला तीन गमा तसु रे, तिमहिज मनुष्य नां लेह।।
- २५. णवरं तनु अवगाहना रे, तीनूई गमां विषेह। जघन्य अने उत्कृष्ट ही रे, गाऊ तीन कहेह।।
- २६. शेष तिमज कहिवो सहु रे, तिर्यंच जिम अधिकार। मनुष्य युगलियो असुर में रे, आख्यो तसु विस्तार।।

हिवै युगलियो मनुष्य नव गमे असुर नीं केतली स्थितिक विषे ऊपजै, तेहनुं निर्णय कहै छै—

# गीतक छंद

- २७. जे प्रथम सप्तम गम युगल मनु, असुर नीं स्थिति पाव ही । दश सहस्र वर्ष जघन्य, उत्कृष्ट तीन पत्य विषे सही ।।
- २८. फुन द्वितीय पंचम अष्टमे गम, जघन्य नैं उत्कृष्ट ही। दश सहस्र वर्षज असुर स्थितिके, ऊपजै नर मिथुन ही।।
- २९. फुन तृतीय नै नवमे गमे जु, जघन्य नैं उत्कृष्ट ही । त्रिण पत्योपम जे असुर स्थितिके, ऊपजै नर युगल ही ।।
- ३०. फुन तुर्य गमके जघन्य थी, दश सहस्र वर्ष स्थितिके वही । उत्कृष्ट साधिक कोड़ पूर्व, असुर स्थितिक विषे सही ।।
- ३१. षष्ठम गमे फुन जघन्य नैं, उत्कृष्ट थीज कहाव ही।
  पुन्व कोड़ साधिक असुर स्थितिके ऊपजे इम भाव ही।।

- १६-१८. तृतीये तु त्रिगच्यूतावगाहन एव यस्मादसावेवो-त्क्रुष्टस्थितिषु-पल्योपमत्रयायुष्केषूत्पद्यते उत्कर्षतः स्वायुः समानायुर्बन्धकत्वात्तस्येति ।
  - (बु० प० ८२१)
- १९,२०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिंद्वतीओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालिंद्वतीयितिरिक्खजोणियसिरसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा।
- २१. नवरं सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं वि सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं।
- २२. सेसं तं चेव ४-६। (श० २४।१३७)
- २३,२४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्टितीओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्ला तिण्णि गमगा भाणियव्वा।
- २५. नवरं सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उनकोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। २६. अवसेसं तं चेव ७-९। (श० २४।१३८)

- ३२. धुर गम संवेध जघन्य अद्धा, साधिको पुव्व कोड़ ही । दश सहस्र वर्षज अधिक ही, उत्कृष्ट षट पत्य जोड़ ही ।/
- ३३. गम द्वितीय साधिक कोड़ पूर्व, दश सहस्र वर्ष जघन्य ही। उत्कृष्ट अद्धा तीन पल्य, दश सहस्र वर्षज अधिक ही।।
- ३४. गम तृतीय कायसंवेध अद्धा, जघन्य नें उत्कृष्ट ही। बिहुं भव संबंधी षट पत्योपम, प्रवर न्यायज इम लही।।
- ३५. गम तुर्य घुर पुब्व कोड़ साधिक, दश सहस्र वर्ष अधिक ही । उत्कृष्ट वे पुब्व कोड़ साधिक, कायसंवेधे सही ।।
- ३६. गम पंचमे संवेध कहियै, जघन्य नैं उत्कृष्ट ही। पुक्व कोड़ साधिक फुन वर्ष दश सहस्र कहियै अधिक ही।।
- ३७. षष्ठम गमे संवेध ते इम, जघन्य नें उत्कृष्ट ही।
  पुव्व कोड़ बे साधिक कहीजै, प्रवर जिन वचने लही।।
  ३८. गम सप्तमे अद्ध जघन्य त्रिण पत्य,

दश सहस्र वर्ष अधिक ही । उत्कृष्ट अद्धा षट पल्योपम, बिहुं भवे ए स्थिति लही ।।

- ३९ गम अष्टमे संवेध कहिये, जघन्य नें उत्कृष्ट ही। पल्य तीन नें फुन सहस्र दश ए, वर्ष कहिये अधिक ही।।
- ४०. गम नवम फुन संवेध छै, इम जघन्य नें उत्कृष्ट ही। बिहुं भव संबंधी षट पत्योपम, स्वाम वच अति सरस ही।।

#### सोरठा

- ४१. जघन्य गमे सुजाण, तीन णाणत्ता तेहनां। अवगाहन नों माण, आयू नें अनुबन्ध नों।।
- ४२. जघन्योक्वष्ट अवगाह, तसु साधिक धनु पांच सौ। स्थिति अनुबन्ध सुलाह, कोड़ पूर्व जाभी कही।।
- ४३. धुर गम में अवगाह, उत्कृष्ट गाऊ त्रिण तणीं। इहां धनु पंच सयाह, साधिक छै उत्कृष्ट पिण।।
- ४४. धुर गम स्थिति अनुबन्ध, उत्कृष्टी त्रिण पल तणीं । इहां उत्कृष्टी संध, साधिक पूर्व कोड़ नीं ।।
- ४५ ते माटे कहिवाय, जघन्य गमे त्रिण णाणत्ता। बिचला त्रिण गम ताय, गमा जघन्य कहीजियै।।
- ४६. छेहला त्रिण गमकेह, गम उत्कृष्ट कह्या तसु। ते उत्कृष्ट गमेह, तीन णाणत्ता तेहनां।।
- ४७. अवगाहन पहिछाण, जघान्योत्कृष्ट तिण गाउ नी । आयु अनुबन्ध जाण, तीन पत्य जघान्योत्कृष्ट ।।
- ४८. अवगाहन पहिछाण, साधिक धनु पंच सय जहान्य। इहां जहान्य पिण जाण, त्रिण गाऊ अवगाहना।।
- ४९. धुर गम स्थिति अनुबन्ध, साधिक पुग्व कोड़ी जघान्य। इहां जघन्य पिण संध, तीन पत्योपम नीं कही।।
- ५०. ते माटै इम हेर, धुर गम थी उत्कृष्ट गमे। तीन बोल में फेर, तिणसूं ए त्रिण णाणत्ता।।
- ६४ भगवती जोड़

### असुरकुमार में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार'

- ५१. \*जो संख वर्षायु सन्ती मनुष्य थी रे, ऊपजै असुर मभार। तो पर्याप्त थी ऊपजै रे, कै अपर्याप्त थी धार?
- ५२. जिन कहै पर्याप्ता थकी रे, असुर विषे ऊपजेह। अपजत्त थी नहीं ऊपजै रे, विल गोयम पूछेह।। ओधिक नैं ओधिक (१)
- ५३. पजत्त संख्यात वर्षायुषो रे, सन्नीम नुष्य प्रभु ! जेह। ऊपजवा नें जोग्य छ रे, असुरकुमार विषेह।। ५४. ते किता काल स्थितिक विषे ऊपजै रे ?,

जिन कहै जघान्य सुइष्ट । वर्ष सहस्र दश स्थितिके रे, साधिक सागर जिष्ट ।।

- ५५. ते एक समय किता ऊपजै रे ? इम एहनां जिमहीज। धुर नरके ऊपजता थका रे, नव गम पूर्व कहीज।।
- ५६. तिमज इहां पिण नव गमा रे, करिवा णवरं संवेध। साधिक उदिध संघात ही रे, कहिवूं इतलुं भेद।। ५७. शेष परिमाणादिक सहु रे, कहिवा तिमज विचार। सन्नी मनुष्य धुर नारकी रे, उत्पजता जिम धार।।

वा॰ —हिनै एहने इज सुगम समक्तवा ने अर्थे जुओ-जुओ देखाड़ै छै— प्रथम तो सन्ती मनुष्य असुरकुमार नीं केतला काल नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै ते नव गमके जुओ-जुओ अर्थ देखाड़ै छै—

भोषिक नैं ओधिक प्रथम गमे जघन्य १० हजार वर्ष असुर नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै १। विषे ऊपजै १। परिमाणहारे एक समय जघन्य एक, दोय, तीन अनैं उत्कृष्ट संख्याता ऊपजै २। छ संघयणी ऊपजै ३। अवगाहना जघन्य पृथक आंगुल नीं, उत्कृष्ट पंच सय घनुष्य नों धणी ऊपजै ४। छ संठाण नों धणी ऊपजै ४। छ लेक्यावंत ऊपजै ६। तीन दृष्टिवंत असुर में ऊपजै ७। ते सन्नी मनुष्य में च्यार ज्ञान, तीन अज्ञान नीं भजना हुवै ६। जोग ३ हुवै ९। दोय उपयोगी ऊपजै १०। च्यार संज्ञावंत १४। च्यार कषाय नों धणी ऊपजै १२। पांच इद्रिय १३। षट समुद्घातवंत १४। साता-असाता वे वेदनावंत ऊपजै १४। त्रिण वेद नों धणी १६। आउखो जघन्य पृथक मास, उत्कृष्टो कोड़ पूर्व स्थितवंत ऊपजै १७। अध्यवसाय भला-भूंडा बिहुं हुवै १८। अनुबंध आउखा जेतो १९। एतली लब्धि नों धणी असुर में ऊपजै।

हिनै कायसंवेध २० मों द्वार कहै छै—भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८। काल आश्रयी जघन्य पृथक मास नैं १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ साधिक सागर॥१॥

हिवै ओघिक नै जघन्य द्वितीय गमे जघन्य उत्कृष्ट दश हजार वर्ष नीं

\*सय: सीता सुन्दरी रे १. परि. २. यंत्र २०

- ५१. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति— कि पज्जत्ता संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ? अपज्जत्ता संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से-हितो उववज्जंति ?
- ५२. गौयमा ! पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णि-मणुस्सेहितो उववज्जंति । (श० २४।१३९)
- ५३. पज्जत्तासंक्षेज्जवासाउयसिष्णमणुस्से णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उवविज्जत्तए ।
- ४४. से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववष्जेज्जा? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमद्वितीएसु उववष्जेज्जा । (श० २४।१४०)
- ४५. ते णं भंते !जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ? एवं जहेव एतेसि रयणप्पभाए उववज्जमाणाणं नव गमगा।
- ५६. तहेव इह वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—संवेहो सातिरंगेण सागरोवमेण कायव्वो ।
- ५७. सेसं तं चेव १-९। (श० २४।१४१)

श० २४, उ० २, हा॰ ४१७ ६५

१,२. यहां पज्जतग संखेज्ज और अपज्जत्तग संखेज्ज पाठ है। ग्कालोप होने से पज्जता अपज्जत्ता शब्द हो गए।

असुर नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै । अनैं परिमाणद्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे प्रथम गमे लद्धी कही, तिमज द्वितीय गमे जाणवी । भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८ । काल आश्रयी जघन्य पृथक मास १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४० हजार वर्ष ।।२।।

हिवै ओघिक नै उत्कृष्ट तृतीय गमे जघन्य नै उत्कृष्ट सागर जाभी स्थिति नै विषे ऊपजै। अनै परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे प्रथम गमे लद्धी कही, तिमज तृतीय गमे जाणवी। भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८। काल आश्रयी जघन्य पृथक मास एक साधिक सागर, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ साधिक सागर। ३।।

हिनै चतुर्थे गमे जघन्य नै ओघिक ए जघन्य स्थित वालो मनुष्य असुर नै विषे ऊपजै, ते जघन्य १० हजार वर्ष असुर नी स्थिति नै विषे ऊपजै, उत्कृष्ट साधिक सागर असुर नी स्थिति नै विषे ऊपजै। अनै परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे लदी प्रथम गमा नी परै जाणवी। णवरं पांच बोलां में फेर—अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट पृथक आंगुल मी १। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान नी भजना २। समुद्घात पांच पहिली ३। आऊ जघन्य-उत्कृष्ट पृथक मास ४। अनुबंध आउखा जेतो ४—ए पांच णाणत्ता। अनै कायसंवेध भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८। काल आश्रयी जघन्य पृथक मास अनै १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ४ पृथक मास अनै ४ साधिक सागर।।४।।

जघन्य नैं जघन्य पंचमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट दस हजार वर्ष असुर नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै। अनैं परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे लढ़ी चतुर्थ गमा नीं परै जाणवी। अनैं कायसंवेध भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८। काल आश्रयी जघन्य पृथक मास अनै १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ४ पृथक मास ४० हजार वर्ष।

हिवै जघन्य नैं उत्कृष्ट षष्ठम गमे जघन्य-उत्कृष्ट सागर जाभी असुर नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै। अनैं परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे चतुर्थ गमा नीं परै जाणवी। अनैं कायसंवेध भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८। काल आश्रयी जघन्य पृथक मास अनैं साधिक सागर, उत्कृष्ट ४ प्रथक मास ४ साधिक सागर।।६॥

हिवै सप्तमे गमे उत्कृष्ट नैं ओघिक ए उत्कृष्ट स्थितिवालो सन्नी मनुष्य असुर नैं विषे ऊपजै ते जघन्य १० हजार वर्ष असुर नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै, उत्कृष्ट साधिक सागर असुर नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै। अनैं परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे लद्धी प्रयम गमा नीं परै जाणवी। णवरं तीन बोलां में फेर—अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट ५०० धनुष्य १। स्थिति जघन्य उत्कृष्ट कोड़ पूर्व २। अनुबंध आउखा जेतो ३—ए तीन णाणता। अनैं कायसंवेध भव जघन्य २, उत्कृष्ट ५। काल आश्रयी जघन्य कोड़ पूर्व १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ साधिक सागर।।७।।

हिवै उत्कृष्ट नैं जघन्य अष्टमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट १० हजार वर्ष असुर नीं स्थिति नैं विषे उपजै। अनैं परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगे लद्धी सप्तम गमा नीं परै जाणवी। अनैं कायसंवेध भव जघन्य २, उत्कृष्ट द। काल आश्रयी जघन्य कोड़ पूर्व १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४० हजार वर्ष ॥द॥

हिवै उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट नवमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट साधिक सागर असुर नी स्थिति नै विषे ऊपजै। अनै परिमाण द्वार सूं लेई अनुबंध द्वार लगै लद्धी सप्तम

### ६६ भगवती जोड़

गमा नीं परै जाणवी । अनैं कायसंवेध भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८ । काल आश्रयी जघन्य कोड़ पूर्व साधिक सागर, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ साधिक सागर ॥९॥ असुर में सन्नी मनुष्य जाय तेहनां नव गमा नों विस्तार कह्यो । इम अनेरे ठिकाणे पिण संभवै, तिम विस्तार करी कहिवो ।

### सोरठा

- ५८. मिथुनक मनुष्य सुचीन, असुर विषे जावै तसु। जघन्य गमेज तीन, उत्कृष्ट गम त्रिण णाणत्ता।।
- ५९. सन्नी मनुष्य सुसंच, असुर विषे जावै तसु। जघन्य गमेज पंच, उत्कृष्ट गम त्रिण णाणत्ता।।
- ६०. मनुष्य असुर में जाय, इम तसु चवदै णाणत्ता। नाम जु-जुआ ताय, पूर्वे आख्याईज छै।
- ६१. \*सेवं भंते ! स्वाम जी रे, सत्य तुम वच सुविशेष। चउवीसम शत नुं कह्यों रे, अर्थ थी द्वितीय उद्देस।।
- ६२. ढाल च्यारसौ सतरमीं रे, जिन वच परम रसाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे, 'जय-जश' मंगलमाल।। चतुर्विशतितमशते द्वितीयोद्देशकार्थः।।२४।२॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० २४।१४२)

### ढाल : ४१८

#### दूहा

- १. द्वितीय उद्देश कह्या असुर, तृतीये नागकुमार।
   राजगृह यावत वदै, इम गोयम गणधार।।
- २. नागकुमारा हे प्रभु! किहां थकी उपजंत। स्यूं नारक थी ऊपजै, तिरि मनु सुर थी हुंत?
- ३. जिन भाखे नारक थकी, नागकुमार न हुंत। तिरि मनु थकीज ऊपजे, सुर थी नहिं उपजंत।।
- ४. जो तिर्यंच थकी हुवै, इम जिम असुर थकीज। वक्तव्यता दाखी तिहां, एहनीं पिण तिमहीज।। नागकुमार में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै, तेहनों अधिकार'
- ५. यावत असन्नी लग सहु, असन्नी नाग विषेह। ऊपजै तेहनां नव गमा, असुर तणीं पर एह।।

१. रायगिहे जाव एवं वयासी-

- २. नागकुमाराणं भंते ! कक्षोहितो उववज्जंति—िक नेरइएहितो उववज्जंति ? तिरिवखजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जंति ?
- गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जिति, तिरिक्ख-जोणिएहितो उववज्जिति, मणुस्सेहितो उववज्जिति, नो देवेहितो उववज्जिति । (श्र० २४।१४३)
- ४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो ? एवं जहा असुर-कुमाराणं वत्तव्वया तहा एतेसि पि ।
- ५. जाव असण्णित्ति १-९। (श० २४।१४४)

\*लय: सीता सुन्दरी रे १. परि० २, यंत्र २१

श० २४, उ० २,३, ढा० ४१७,४१८ ६७

- ६. जो सन्नी पं. तिरि थकी, ऊपजे नाग मभार। स्यूं संख्यायुष थी हुवे, के असंख्यायुष थी धार ?
- ७. जिन कहै संख्यायु थकी, विषे नाग उपजंत । वर्ष थकी, असंख्यायु जाव उपजवो हुंत ॥

# नागकुमार में तियंच युगलियो अपजे, तेहनों अधिकारी

# ओघिक नें ओघिक [१]

\*वार जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों, एतो जयवंता जिनराज रे। शिष्य गोयम जय जश गुणनिला,

ए तो प्रत्यक्ष भव दिध पाज रे।।(ध्रुपदं)

- द. असंख्यात वर्ष नों आउखो, तिरि सन्नी पंचेंद्री जेह रे। प्रभु ! ऊपजवा नें जोग्य छै, नागकुमार विषेह रे ।। ९. प्रभुं! किता काल स्थितिक विषे ऊपजे ?
- जिन भाखै जघन्य थी जोय रे। दश सहस्र वर्ष स्थितिक विषे, उत्कृष्ट देसूण पत्य दोय रे।।

### सोरठा

- १०. उत्तर दिशि नां नागकुमार निकाय सोय, उत्कृष्ट स्थितिक नें विषे ।। दोय, देश ऊण पल्य
- ११. \*प्रभु ! एक समय किता ऊपजै ? अवशेष तिमज अवधार रे । असुर में ऊपजतां गमो आखियो, कहिवो तिमहिज विचार रे।।
- १२. जाव भवादेश लग जाणवूं, काल आश्रयी जघन्य कहाय रे। पूर्व कोड़ जाभेरो जाणवू, दश सहस्र वर्ष अधिकाय रे।।

#### सोरठा

- १३. साधिक पूर्व कोड़, जघन्य भव स्थिति तिरियुगल। वर्ष सहस्र दश जोड़, नागकुमार स्थिति ॥ जघन्य
- १४. \*उत्कृष्ट थकी देश ऊण जे, पंच पल्योपम जोय रे। तिरि युगल पल्योपम त्रिण कही,

नाग देश ऊण पल्य दोय रे।।

१५. सेवै कालज एतलो, गति आगति एतलो ओघिक नैं ओघिक गमो, दाख्यो युगल नाग नों दयाल रे।।

# ओधिक नें जघन्य (२)

- १६. तेहिज युगल जघन्य काल स्थिति विषे, ओ तो ऊपनों नाग विषेह रे। तेहनीं पिण एहिज वारता, घुर गमे भाखी जेह रे।।
- \*लय : मोरी तूंबी देवो नीं हो सेठजी अथवा चम्पानगरी नां बाणिया १. परि० २, यंत्र २२
- ६८ भगवती जोड़

- ६. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति — कि संबेज्जवासाउय • ? असंबेज्जवासाउय ?
- ७. गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति । (श० २४।१४५)

- ८. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेस् उववज्जित्तए ।
- ९. से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्को-सेणं देसूणदुपलिओवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा। (श० २४।१४६)
- १०. 'उक्कोसेणं देसूणदुपलिओवमद्विईएस्' त्ति यदुक्तं यतस्तत्र द्वे तदौदीच्यनागकुमारनिकायापेक्षया, देशोने पल्योपमे उत्कर्षत आयुः स्यात् । (वु॰प॰ ५२२)
- ११. ते णं भंते ! जीत्रा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो ।
- जहण्णेणं १२. जाव भवादेसो ति। कालादेसेणं दसहि वाससहस्सेहि सातिरेगा पुग्वकोडी अब्भहिया ।
- १४. उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं।
- १५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागीत (श० २४।१४७) करेज्जा १।
- १६. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया ।

१७. पिण णवरं नागकुमार नीं, स्थिति नैं विल कालसंवेह रे। ते बुद्धि सूं विचारी जाणवो, सूत्र नैं अनुसारे जेह रे।।

#### सोरठा

- १८. प्रथम द्वार में लेह, कित स्थितिके ऊपजै। चरम द्वार संवेह, ए बिहुं आगल आखियै।।
- १९. स्थिति जघन्य उत्क्रष्ट, नागकुमार तणीं कही। वर्ष सहस्र दश इष्ट, तेह विषे ए ऊपजै।।
- २०. कायसंवेध सुजोड़, काल थकी जे जघन्य ए। साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।
- २१. फुन उत्कृष्टो काल, तीन पत्योपम तिरि स्थिति । वर्ष सहस्र दश न्हाल, नाग जघन्य स्थिति जाणिये ।।

# ओघिक नैं उत्कृष्ट (३)

२२. \*तेहिज युगल उत्कृष्टी स्थिति विषे,

नाग विषे ऊपनों संपेख रे।

तेहनीं पिण एहिज वारता,

णवरं स्थिति में इतरो विशेख रे।।

२३. जघन्य स्थिति ते युगल नीं, देश ऊण पल्योपम बेह रे। उत्कृष्ट तीन पल्य स्थितिक जे,

युगल नाग विषे उपजेह रे।।

वा० — इहां जघन्य स्थिति देश ऊण दोय पत्योपम, एह अवसिंपणी नां सुषमा नामे बीजा आरा नां केतला एक भाग गयां तियँच नों आउखो देश ऊण दोय पत्य नों। ते मरी नागकुमार नैं विषे उत्कृष्ट आउखै ऊपजै ते तियँच युगलिया नां देव आउ संबंधिया आउखा बरोबर देवता नों आउखो बांधै।

उत्कृष्टो तीन पल्योपम—एह देवकुर आदि देई तियँच युगलिया नां तीन पल्योपम नां आउखा नों धणी नागकुमार नैं विषे देश ऊण दोय पल्योपम नैं उत्कृष्ट आउखा नैं विषे ऊपजैं। ए युगलिया नैं आऊखा थकी देवतां नैं ओछे आऊखे ऊपने छते अत्र जघन्य देश ऊणो दोय पल्योपम युगलिया नों आउखो कह्यो ते किम ? अनैं कोड़ पूर्व जाभो किम न कह्यो ? उत्तर—इहां ओघिक नैं उत्कृष्ट तीजा गमा नों कथन छै। ते तियँच युगलिया नीं ओघिक स्थिति नों धणी नागकुमार नैं विषे उत्कृष्ट आउखे ऊपजै ते नागकुमार नों देश ऊणों दोय पल्योपम उत्कृष्टो आउखो छै तेहनैं विषे युगलियो ऊपजै, ते जघन्य देश ऊणों दोय पल्योपम आउखा वालोईज ऊपजै, विण ओछा आउखा वालो न ऊपजै, ते माटै कोड़ पूर्व जाभो आउखो न कह्यो। अनैं जघन्य देश ऊणों दोय पल्योपम नों धणी ऊपजै एहवूं कह्यो।

२४. शेष परिमाणादिक जिके, पूर्व कह्यो तिमज अवलोय रे। जाव भवादेश लग जाणवो, जधन्य उत्कृष्टा भव दोय रे।।

२५. हिव काल आश्रयी जघन्य अद्धा,

देश ऊण च्यार पल्य माग रे।

देश ऊण दोय पत्य तिरि स्थिति,

देसूण बे पल्य नाग रे।।

- १७. नवरं नागकुमारिट्टिति संवेहं च जाणेज्जा २ । (श० २४।१४८)
- १९. तत्र जघन्या नागकुमारस्थितिदंशवर्षसहस्राणि । (वृ० प० ८२२)
- २०. संवेधस्तु कालतो जघन्या सातिरेकपूर्वकोटी दशवर्षसहस्राधिका। (वृ०प० ८२२)
- २१. उत्कृष्टः पुनः पत्योपमत्रयं तैरेवाधिकमिति । (वृ०प० ५२२)
- २२. सो चेव उक्कोसकालट्टितीएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं --ठिती ।
- २३. जहण्णेणं देमूणाइं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिष्णि पलिओवमाइं।

वा॰—तथा 'ठिई जहन्नेणं दो देसूणाइं पिल ओव-माइं' ति यदुक्तं तदवसिंपिण्यां सुषमाभिधानिद्वती-यारकस्य कियत्यिप भागेऽतीतेऽसंख्यातवर्षायुषस्तिर-श्चोऽधिकृत्योक्तं, तेषामेवैतत्प्रमाणायुष्कत्वात् एषामेव च स्वायुः-समानदेवायुर्बन्धकत्वेनोकृष्ट-स्थितिषु नागकुमारेषूत्पादात् । तिन्नि पिल ओवमाइं' ति, एतच्च देवकुर्वाद्यसंख्यात-जीवितिरश्चोऽधिकृत्योक्तं, ते च त्रिपल्योपमायु-षोऽपि देशोनिद्वपल्योपममानमायुर्बध्नित्त यतस्ते स्वायुषः समंहीनतरं वा तद्बध्निन्त न तु महत्तर-मिति। (वृ०प॰ ८२२, ८२३)

- २४. सेसं तं चेव जाव भवादेसी ति।
- २४. कालादेसेणं जहण्णेणं देसूणाइं चत्तारि पलिओवमाइं।

श० २४, उ० ३, ढा॰ ४१८ ६९

<sup>\*</sup>लय: चम्पा नगरी नां बाणिया

२६. उत्कृष्ट अद्धादेश ऊण जे, पंच पल्योपम जोय रे। पल्य तीन युगल तिरि आउखो,

नाग देश ऊणों पल्य दोय रे।।

२७. सेवे कालज एतलो, करे गति आगति इतो काल रे। ओघिक अनें उत्कृष्ट गमो, दाख्यो तृतीय दयाल रे।।

# बिचला तीन गमा (४-६)

२८. तेहिज युगल जघन्य स्थिति नों धणी,
तेहनां तीनूंइ गमा विषेह रे।
च उथे पंचमे नैं छठे गमे, हिवै तेहनों लेखो सुणेह रे।।
२९. जिमहिज अस्रकुमार में, ऊपजता नैं पेख रे।
जघन्य काल स्थितिक नैं कह्युं, तिमहिज सर्व अशेख रे।।

# उत्कृष्ट ने ओघिक (७)

### सोरठा

३०. जघन्य सहस्र दश वास, उत्कृष्ट साधिक कोड़ पुन्व।
नाग स्थितिके जास, ऊपजै ए चउथे गमे।।
३१. परिमाणादिक पेख, युगल तिरि मिर ह्वं असुर।
तिमहिज ए संपेख, तीन णाणत्ता पिण तिमज।।
३२. तनु अवगाहन जाण, जघन्य पृथक धनु युगल तिरि।
उत्कृष्टी पहिछाण, सहस्र धनुष्य जाभी कही।।
३३. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट, साधिक पूर्व कोड़ नीं।
एवं अनुबंध इष्ट, ए तीन णाणत्ता असुरवत।।
३४. कायसंवेध पिछाण, साधिक पूर्व कोड़ तिरि।
वर्ष सहस्र दश माण, जघन्य थकी अद्धा इतो।।
३४. उत्कृष्ट अद्धा पेख, साधिक पूर्व कोड़ बे।
तिरि युगल भव एक, द्वितीय भवे फुन नाग स्थिति।।

#### उत्कृष्ट

३६. पंचम गमके हेर, तुर्य गमा जिम जाणवो।
नाग स्थिति में फेर, कायसंवेध विषे वली।।
३७. जघन्य अने उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र दश स्थितिक में।
ऊपजवो इहां इष्ट, जघन्य स्थितिक तिरि युगलियो।।
३८. कायसंवेध सुजोड़, अद्धा जघन्य उत्कृष्ट पिण।
साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।

# छट्टो गमो

- ३९. षष्ठम गमके हेर, तुर्य गमा जिम जाणवो।
  नाग स्थितिके फेर, कायसंवेध विषे वली।।
  ४०. जघन्य अनें उत्कृष्ट, साधिक पूर्व कोड़ जे।
  नाग स्थितिके इष्ट, तिरिख युगलियो ऊपजै।।
- ७० भगवती जोड़

- २६. उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं।
- २७. एवतियं कालं सेवेज्जाः एवतियं कालं गतिरागर्ति करेज्जा ३। (श० २४।१४९)
- २८. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिंद्वतीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु ।
- २९. जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकाल-द्वितियस्स तहेव निरवसेसं ४-६। (श० २४।१५०)

- ४१. कायसंवेध सुजोड़, जघन्य अन उत्कृष्ट अद्धा। साधिक बे पुव्व कोड़, बिहुं भव नों षष्ठम गमे।। छेहला तीन गमा (७-६)
- ४२. \*तेहिज युगल उत्कृष्टायु थयो, तेहनां पिण त्रिहुं गमा विषेह रे। सप्तमे अष्टमे नवमे गमे,

ए पिण तिणहिज रीत कहेह रे।।

- ४३. जिम जेष्ठ स्थितिक तिरि युगलियो,
  असुर विषे ऊपजता ने ख्यात रे।
  कहिवो तिणहिज रीत सुं, णवरं इतरो विशेषज थात रे।।
- ४४. नागकुमार नीं स्थिति विषे, विल कायसंवेध में फेर रे। कहिवो मन सूं विचार नैं रे, ते इम भणिवूं हेर रे।।
- ४५. शेष परिमाणादिक सहु, जिम असुरकुमार विषेह रे। तिरि युगल ऊपजता नैं कह्या,

ओ तो कहिवो जिमहिज एह रे।।

### सोरठा

- ४६. इहां णाणत्ता दोय, अग्यु नैं अनुबन्ध जे। तीन पल्योपम होय, उत्कृष्ट गमकपणां थकी।।
- ४७. सप्तम गमे विमास, नागकुमार नीं स्थिति विषे। जघन्य सहस्र दश वास, उत्क्रुष्ट देसूण पल्य बे।।
- ४८. अद्धा जघन्य संवेह, वर्ष सहस्र दश पत्य त्रिण। उत्कृष्ट अद्धा लेह, देश ऊण पत्य पंच फुन।।
- ४९. अष्टम गमे सुइष्ट, नागकुमार नीं स्थिति विषे। जघन्य अने उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र दश आउसे।।
- ५०. अष्टम गमे संवेह, जघन्य अनें उत्कृष्ट फुन। तीन पल्योपम लेह, वर्ष सहस्र दश अधिक ही।।
- ५१. नवमे गमे सुदृष्ट, नागकुमार नीं स्थिति विषे। जघन्य अने उत्कृष्ट, देश ऊण वे पत्य जे।।
- ५२. नवमे गमे संवेह, जघन्य अनें उत्कृष्ट ही। बेभव अद्धा लेह, देश ऊण पंच पल्य जे।। तियंच युगलियो नागकुमार में ऊपजै, तेहनां नव गमा कह्या।

# नागकुमार में संख्यात वर्ष नों सन्नी तियँच ऊपजे, तेहनों अधिकार

५३. \*जो संखेज वर्षायु सन्नी पंचेंद्रिय यावत तेह रे। स्यू पर्याप्तो अपर्याप्तो, ऊपजै नागकुमार विषेह रे?

\*लय: चम्पा नगरी नां बाणिया

१. परि. २, यंत्र २३

- ४२. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा।
- ४३. जहा असुरकुमारेसु छववज्जमाणस्स, नवरं-
- ४४. नागकुमारद्विति संवेहं च जाणेजजा।
- ४५. सेसं तं चेव ७-९। (श० २४।१५१)

५३. जइ संखेजजवासाउयसिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए-हितो उववज्जंति— कि पज्जत्तसखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ?

श० २४, उ० ३, ढा० ४१८ ७१

- ५४. जिन कहै संख वर्षायु सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री पर्याप्त रे। ते नागकुमार में ऊपजैं, पिण निंह उपजै अपर्याप्त रे। ओघिक नैं ओघिक [१]
- ४५. पजत्त संख वर्षायु सन्नी प्रभु ! पंचेंद्रिय तिर्यंच तेह रे। ऊपजवा जोग्य नागकुमार में,

कितै काल स्थितिक उपजेह रे ?

- ५६. श्री जिन भाखे जवन्य थी, दश सहस्र वर्ष स्थितिकेह रे। उत्कृष्टी देश ऊण जे, दोय पल्य विषे उपजेह रे।।
- ५७. इम जिम असुरकुमार में, वर्ष संख्यायु सन्नी तियँच रे। ऊपजता नीं वारता, इहां पिण तिम नव गम संच रे।।
- ५ प्रतः णवरं नागकुमार नीं, स्थिति विषे जे फेररे। विल कायसंविध में फेर छै, शेष तिमहिज कहिवूं हेररे।। हिवै नव गमे नागकुमार नीं स्थिति विषे ऊपजै, ते कहै छैं—

### सोरठा

- ५९. प्रथम तुर्यं सप्तम, जघन्य सहस्र दश स्थितिक में। उत्कृष्ट स्थिति अवगम, देश ऊण बे पल्य विषे।।
- ६०. द्वितीय पंचमे इष्ट, अष्टम गम फुन ऊपजै। जघन्य अने उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र दश स्थितिक में।।
- ६१. तीजे षष्ठम नवम, जघन्य अनें उत्कृष्ट ही। नाग स्थिति अवगम, देश ऊण बे पल्य विषे।।
- ६२. प्रथम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश लेह, अंतर्गुहुर्त्त अधिक फुन ॥
- ६३. उत्कृष्ट अद्धा काल, किहयै अष्टज भव तणों। अठ पत्य देसूण न्हाल, कोड़ पूर्व चिउं अधिक फुन।।
- ६४. दूजे गमे संवेह, बिहुं भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्महुर्त्त अधिक फुन।।
- ६५. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवे इम आखियो। पूर्व कोड़ज च्यार, वर्ष सहस्र चालीस फुन।।
- ६६. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। देश ऊण पल्य बेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही।।
- ६७. उत्कृष्ट अद्धा जोय, अष्ट भवां नों आखियो। अठ पत्य देसूण सोय, पूर्व कोड़ चिउं अधिक ही।।
- ६८. तुर्य गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त लेह, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति।।
- ६९. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवांनों इह विधे। अंतर्मुहर्त्त च्यार, अष्ट पल्य देसूण जे।।
- ७०. पंचम गमें संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मूहूर्त्त लेह, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति।।
- ७२ भगवती जोड

- ४४. गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, नो अपज्जत्त-संखेज्जवासाउय। (श० २४।१५२)
- ४५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदयितिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालिट्टतीएसु उववज्जेज्जा ?
- ५६. गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं।
- ५७. एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि नवसु वि गमएसु,
- ४८. नवरं नागकुमारिहिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव १-९। (श० २४।१५३)

७१. उत्कृष्ट अद्धाधार, अष्ट भवां नों इह विधे । अंतर्मुहर्त्ते च्यार, वर्षे सहस्र चालीस फुन ॥ ७२. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्महर्त्त देश ऊण बे लेह, पल्य फून ॥ ७३. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों आखियो। अंतर्मुहूर्त्त च्यार, देश ऊण पल्य अष्ट ७४. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थीः। पूर्व कोड़ज लेह, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति।। ७५. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों इह विधे। पूर्व कोड़ज च्यार, देश ऊण पत्य अब्ट फुन ।। ७६. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। कोड़ पूर्व तिरि लेह, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति ।। ७७. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों इह पूर्व कोड़ज च्यार, वर्ष सहस्र चालीस फुन ।। ७८. नवमे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। कोड़ पूर्व तिरि लेह, देश बे पल्य जे।। ऊण ७९. उत्कृष्ट अद्धाधार, अष्ट भवां नों इह पूर्व कोड़ज च्यार, देश ऊण पत्य अष्ट हिवै पर्याप्त सन्नी तियँच नागकुमार नैं विषे ऊपजै, तेहनां णाणता कहै छै — तियंच, वर्ष संख्यायु ऊपजे । सन्नो ८०. असूर णाणत्ता आखिया ।। जघन्य गमे सुसंच, अष्ट दोय जाणत्ता **८१. उत्कृष्ट गमे स्जोय,** तिम एहनां पिण होय, अष्ट अनें वे णाणत्ता।। ५२. \*चउवीसम देश तीजा तणों जी,

ढाल: ४१९

च्यारसौ नें अठारमीं ढाल रे।

सुख 'जय-जश' हरष विशाल रे ।।

### दूहा

- मनुष्य थकी जो ऊपजै, नागकुमार मफार।
   तो स्यू सन्नी मनुष्य थो, कै असन्नी मनु थी धार?
   जिन कहै सन्नी मनुष्य थी नाग विषे उपजंत।
   असन्नी मनुष्य मरी करी, नागकुमार न हुंत।।
   इम जिम असुरकुमार में, सन्नी मनुष्य सुजोय।
   अपजता ने आखियो, तिम कहिवो अवलोय।।
- \*लय: चम्पा नगरी नां बणिया

भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

- १. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति—िक सिण्णमणुस्से-हितो० ? असिण्णमणुस्सेहितो० ?
- २. गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो, नो असण्णिमणुस्सेहितो,
- ३. जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स

श॰ २४, उ० ३, ढा० ४१८,४१९ ७३

बा॰ सन्नी मनुष्य नागकुमार में जावै, तेहनां नवूं ही गमे जघन्य भव २, उत्कृष्ट भव ६। चउथे पांचमे छठे —ए तीन जघन्य गमे णाणत्ता १ — अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट पृथक आंगुल नीं १, आऊ जघन्य-उत्कृष्ट पृथक मास २, तीन ज्ञान अनैं तीन अज्ञान नीं भजना ३, समुद्धात पांच पेहली ४, अनुबंध आऊ जेतो ४, सम्तमे अष्ठमे नवमे — ए तीन उत्कृष्ट गमे णाणता ३ — अगवाहना जघन्य-उत्कृष्ट १०० धनुष्य नीं १, आऊ जघन्य-उत्कृष्ट कोड़ पूर्व २, अनुबंध आउखा जेतो ३।

# नागकुमार में मनुष्य युगलियो ऊपजै, तेहनों अधिकारे

\*जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों ।। (ध्रुपदं)

- ४. जाव असंख्याता वर्ष नों, आयुवंत मनु जेह प्रभुजी ! ऊपजवा नें जोग्य छै, नागकुमार विषेह प्रभुजी !
- ५. ते किते काल स्थितिक विषे ऊपजे ?
  जिन कहै जघन्य सुजोय गोयम जी !
  वर्ष सहस्र दश स्थिति विषे,

जेष्ठ देसूण पत्य दोय गोयम जी ! [वीर कहै सुण गोयमा]

- ६. इम जिम पूर्वे आखियो, असंख वर्षायु तियंच गोयम जी । नागकुमार में ऊपजै, तसु धुर गम त्रिण संच गोयम जी ।।
- ७. एहनां पिण तिमहीज जे, धुर त्रिण गम कहिवाय।
   णवरं इतरो विशेष छै, प्रथम द्वितीय गम माय।।
- द. तनु अवगाहन जघन्य थी, पांचसौ धनु अधिकाय। उत्कृष्टी अवगाहना, तीन गाउ कहिवाय।।

#### सोरठा

- ९. पूर्व काले संच, कुलकर तणी अपेक्षया। साधिक धनु शत पंच, गाउ त्रिण सुर कुरु प्रमुख।।
- १०. \*तृतीये गमे अवगाहना, जघन्य देसूण गाउ दोय। उत्कृष्ट तीन गाऊ तणी, शेष तिमज अवलोय।।

#### सोरठा

- ११. देश ऊण गाउ दोय, एते अवसर्पिणी तणां। द्वितीय आरा नां सोय, किताक भाग गयां ह्वि।।
- १२. \*तेहिज सन्नी मनु जुगलियो, पोतै जघन्य स्थितिवंत। तुर्य पंचमे नें छठे, ए त्रिहुं गमे उदंत।।
- १३. जिम तेहिज मनु युगल नों, जघन्य स्थितिक नों जेह। असुर में ऊपजतां थकां, गमे तीन कह्या तिम लेह।।
- \*लय: तारा हो प्रत्यक्ष मोहनी
- १. परि. २. यंत्र २४
- ७४ भगवती जोड़

- ४. जाव— (श० २४।१५४) असंखेज्जवासाउयसिण्णमणुस्से णं भते ! जे भविए नागकुमारेसु उवविज्जित्तए,
- ५. से णं भंते ! केवितकालिट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं।
- ६. एवं जहेव असंक्षेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं नागकुमारेसु आहिल्ला तिष्णि गमगा
- ७. तहेव इमस्स वि, नवरं-पढमबितिएसु गमएसु
- सरीरोगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं।
- १०. तइयगमे ओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उनकोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेसं तं चेव १-३। (११० २४।१५५)
- १२. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्टितीओ जाओ, तस्स तिसुवि गमएसु
- १३. जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं ४-६। (श० २४।१५६)

१४. तेहिज सन्नी मनु युगलियो,

निज उत्कृष्ट स्थितिवंत । सन्दर्भ अध्यय निज्ञ ए चित्रं समे उद्गंत ।।

- सप्तम अष्टम नवम जे, ए त्रिहुं गमे उदंत।। १५. जिम तेहिज मनु युगल नां, जेष्ठ स्थितिक नां जेह।
- असूर विषे ऊपजतां थकां, गमा तीन कह्या तिम लेह ।।
- १६. णवरं नागकुमार नीं, स्थिति अनें संवेध। बुद्धि सुंविचारी जाणवूं, शेषं तं चेव न भेद।।

वा॰—हिबै नागकुमार नी स्थिति अनै कायसंवेध नवूं ही गमे जूओ-जूओ कहै छै। तिण में सन्नी मनुष्य युगलियो नागकुमार नै विषे ऊपजै तिण में प्रथम नै सातमे गमे जघन्य १० हजार वर्ष नागकुमार नी स्थिति नै विषे ऊपजै, उत्कृष्ट देश ऊण बे पत्योपम नी स्थिति नै विषे ऊपजै। अनै दूजे, पंचमे, गमे जघन्य-उत्कृष्ट १० हजार वर्ष नाग नी स्थिति नै विषे ऊपजै। अनै तीजे, नवमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट देश ऊण बे पत्योपम नाग नी स्थिति नै विषे ऊपजै। चउथे गमे जघन्य दश हजार स्थिति नै विषे ऊपजै। उत्कृष्ट एक कोड़ पूर्व जाभी स्थिति नै विषे ऊपजै। अनै छठे गमे जघन्य-उत्कृष्ट कोड पूर्व जाभी स्थिति नै विषे ऊपजै।

#### सोरठा

- १७. प्रथम गमे इम जोड़, कायसंवेध जघन्य अद्ध। साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।
  १८. उत्कृष्ट अद्धा माग, देश ऊण पत्य पंच जे। देसूण बे पत्य नाग, तीन पत्य मनु युगल स्थिति।।
- १९. द्वितीय गमे सुजोड़, जघन्य थकी अद्धा इतो । साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन ।।
- २०. उत्कृष्ट अद्धा तास, तीन पल्य मनु युगल स्थिति । वली सहस्र दश वास, नाग तणीं ए जवन्य स्थिति ।।
- २१. तृतीय गमे अवधार, अद्धा जघन्य थकी इतो। देश कण पत्य च्यार, न्याय विचारी लीजियै।।
- २२. उत्कृष्ट अद्धा चीन, देश ऊण पत्य पंच जे।
- मनुष्य युगल पत्य तीन, देश ऊण बे नाग स्थिति ।। २३. तुर्य गमे इम जोड़, जघन्य काल तसु एतलो ।
- साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।
- २४. उत्कृष्ट अद्धा तास, साधिक पूर्व कोड़ बे। लीजो न्याय विमास, तुर्य गमो छै ते भणी।।
- २५. पंचम गम इम जोड़, जघन्य अने उत्कृष्ट अद्धा। साधिक पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।
- २६. षष्ठम गमे सुइष्ट, साधिक पूर्व कोड़ बे।
- २७. सप्तम गम अवलोय, जघन्य अद्धा ए जाणवूं। तीन पल्योपम सोय, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।

- १४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु
- १५. जहा तस्स चेव उक्कोसकालद्वितीयस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स,
- १६. नवरं—नागकुमारिट्टिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव ७-९। (श० २४।१५७)

<sup>\*</sup>लय: तारा हो प्रत्यक्ष मोहनी

२८. उत्कृष्ट अद्धा चीन, देश ऊण पल्य पंच जे।
मनुष्य युगल पल्य तीन, देश ऊण बे नाग स्थिति।।
२९. अष्टम गम इम न्हाल, जघन्य अनें उत्कृष्ट ही।
तीन पल्योपम काल, वर्ष सहस्र दश अधिक फुन।।
३०. नवम गमे इम संच, जघन्य अनें उत्कृष्ट ही।
देश ऊण पल्य पंच, बिहुं भव उत्कृष्टी स्थिति।।
नागकुमार में संख्यात वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजें, तेहनों अधिकार ।
३१. \*जो संख वर्षायु मनुष्य सन्नी, ऊपजें नाग विषेह।

३१. \*जो संख वर्षायु मनुष्य सन्नी, ऊपजै नाग विषेह। तो पर्याप्तो स्यूं ऊपजै, कै अपर्याप्तो ऊपजेह? ३२. जिन कहै पर्याप्ता थकी,

असुर विषे ऊपजंत गोयमजी ! अपजत्त थी नहीं ऊपजै, विल गोतम पूछंत प्रभुजी ! ३३. वर्ष संख्यायु पर्याप्तो, सन्नी मनुष्य छै जेह । ऊपजवा नें जोग्य छै, नागकुमार विषेह ।।

३४. ते कितै काल स्थितिक विषे ऊपजै ?

जिन कहै जघन्य सुइष्ट ।
वर्ष सहस्र दश स्थितिक में, देसूण बे पल्य जिष्ट ।।
३५. इम जिम असुरकुमार में, एहिज मनु उपपात ।
तास लब्धि नव गम विषे, आखी ते सर्व सुजात ।।
३६. णवरं जे नागकुमार नीं, स्थिति अछै ते कहेह ।
विल तसु कायसंवेध ही, बुद्धि सूं विचारी लेह ।

वा०—संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य असुरकुमार में ऊपजता नैं परिमाणादिक लद्धी कही, तिम कहिवी। तिमहिज णाणता जघन्य गमे १—अवगाहना
जघन्य-उत्कृष्ट पृथक आंगुल नीं १। तीन ज्ञान नै तीन अज्ञान नीं भजना २।
समुद्धात पांच पहिली ३। आज जघन्य-उत्कृष्ट पृथक मास ४, अनुबंध आज जेतो
१। उत्कृष्ट गमे ३—अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट १०० धनुष्य नीं १, आज
जघन्य-उत्कृष्ट कोड पूर्व २, अनुबंध आउखा जेतो ३। भव जघन्य २, उत्कृष्ट
६। णवरं नागकुमार नीं स्थिति अनैं कायसंवेध में फरे छै, ते नवूं ही गमैं कहै
छि—प्रथम, चउथे नैं सातमे गमे जघन्य १० हजार वर्ष नागकुमार नीं स्थिति नैं
विषे ऊपजै, उत्कृष्ट देश ऊण बे पल्योपम नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै। दूजे,
पांचमे, आठमे, गमे जघन्य-उत्कृष्ट १० हजार वर्ष नाग नीं स्थिति नैं विषे
ऊपजै। तीजे, छठे, नवमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट देश ऊण बे पल्योपम नी नाग नीं
स्थिति नैं विषे ऊपजै।

#### सोरठा

३७. प्रथम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश लेह, पृथक मास अधिको वली।। ३८. उत्कृष्ट अद्धा जोय, अष्ट भवां नों आखियो। कोड़ पूर्व चिउं होय, देश ऊण अष्ट पत्य फुन।।

- ३१. जइ संखेज्जवासाउयसिष्णमणुस्सेहितो उववज्जंति— कि पज्जत्तसंखेज्ज० ? अपज्जत्तसंखेज्ज ?
- ३२. गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज, नो अपज्जत्तसंखेज्ज । (श० २४।१५८)
- ३३. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसिष्णमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उवविज्जित्तए,
- ३४. से णं भंते ! केवितकालिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिंद्वितीएसु, उक्को-सेणं देसूणदोपिलओवमिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा।
- ३५. एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु,
- ३६. नवरं—नागकुमारहिति संवेहं च जाणेज्जा १-९ । (श० २४।१५९)

<sup>\*</sup>लय: तारा हो प्रत्यक्ष मोहनी

१. परि० २, यंत्र २५

७६ भगवती जोड़

बे भव अद्धाजघन्य थी। ३९. द्वितीय गमे इम जाण, पृथक मास पहिछाण, वर्ष सहस्र दश अधिक ही ।। अष्ट भवां नों इह विधे। ४०. उत्कृष्ट अद्धा ताय, ि चिउं पाय, वर्षे सहस्र चालीस फुन ।। कोड़ पूर्व ४१. तृतीये गमे इम ताय, बे भव अद्धा जघन्य थी। मास पृथक कहिवाय, ऊण पल्य दोय फुन । नों आखियो। अष्ट भवां ४२. उत्कृष्ट अद्धा वक्ष, देश ऊण पल्य अष्ट फुन ।। चिउं पुव्व कोड़ प्रत्यक्ष, बे भव अद्धा जघन्य थी। ४३. तूर्य गमे इम थाय, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति।। पृथक मास मनु मांय, कहियै इतो। अष्ट भवे ४४, उत्कृष्ट अद्धा धार, देश ऊण पत्य अष्ट फुन ॥ पृथक मास है च्यार, बेभव अद्धा जघन्य थी। ४५. पंचम गमे पिछाण, मास पृथक मनु जाण, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति ।। ४६. उत्कृष्ट अद्धा सोय, अष्ट भवां नों एतलो। मास पृथक चिउं होय, वर्ष सहस्र चालीस फुन ।। बे भव अद्धा जघन्य थी। ४७. षष्ठम गमेज तास, नर भव पृथक मास, देश ऊण पल्य दोय फुन ।। अष्ट भवां नो इह विघे। ४८. उत्कृष्ट अद्धा धार, मास पृथक है च्यार, देश ऊण पत्य अष्ट फुन ॥ ४९. सप्तम गमे सुजोड़, बे भव अद्धा जघन्य थी। नर भव पूर्व कोड़, वर्ष सहस्र दश नाग स्थिति। अष्ट भवां नों आखियो। ५०. उत्कृष्ट अद्धा लेख, चिउं पुन्व कोड़ संपेख, देश ऊण पल्य अष्ट फुन।। प्र. अष्टम गमे कथित्त, बे भव अद्धा जघन्य थी। कोड़ पूर्व नर स्थित, वर्ष सहस्र दश नाग नी।। भवां नों एतलो। अष्ट ५२. अद्धा उत्कृष्ट धार, कोड़ पूर्व है च्यार, वर्ष सहस्र चालीस फुन ।। ५३. नवमे गमे निहाल, बे भव अद्धा जघन्य थी। कोड़ पूर्व मनु भाल, देश ऊण पल्य दोयफुन ॥ अष्ट भवां नों इह विधे। ५४. उत्कृष्ट अद्धा जेह, कोड़ पूर्व चिउं लेह, देश ऊण पल्य अष्ट फुन ।। उपजेह, ५५. नाग विषे संख्यायु सन्नी मनुष्य। तसु ए कायसंवेह, बुद्धि सूं अवलोकी कह्यो।। पू६. \*सेवं ! भंते स्वाम जी ! शत चउवीसम सोय। त्तीय उद्देशक दाखियो, अर्थ थकी अवलोय।। चतुर्शितितमशते तृतीयोद्देशकार्थः ॥२४।३॥

\*लय: तारा हो प्रत्यक्ष मोहनी

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति । (श० २४।१६०)

श० २४, उ॰ ३, ढा० ४१९ ७७

सुपर्णकृमार स्यूं स्तनितकृमार तक नागकुमारवत, प्र ठिकाणां नों अधिकार

५७. शेष जे सुवन्तकुमार नें, आदि देई सुविशेष। जाव थणित लग जाणवा, ते पिण अष्ट उद्देश।। ५८. वक्तव्यता जिम नाग नीं, तिम कहिवूं निरवसेस। सेवं भंते! स्वाम जी, एकादशमों उद्देस।।

वा० — युगलियो मनुष्य असुर में जाय तो भव जघन्य-उत्कृष्ट २। णाणता जघन्य गमे ३ — अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट ५०० धनुष्य जाभी १। आउखो पूर्व कोड जाभेरो २। अनुबंध आउ जेतो ३। उत्कृष्ट गमे ३ — अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट ३ गस्य २। अनुबंध आउ जेतो ३। युगलियो तिर्यंच असुर में जाय तेहनां भव जघन्य-उत्कृष्ट २। णाणता ३ — अवगाहना जघन्य पृथक धनुष्य, उत्कृष्ट १००० धनुष्य जाभी १, आउखो पूर्व कोड़ जाभेरो २, अनुबंध आउ जेतो ३। उत्कृष्ट गमे २ — आउखो तीन पत्य नों १ अनुबंध आउ जेतो २। संख्यात वर्षायु सन्नी तिर्यंच असुर में जाय तेहना भव जघन्य २, उत्कृष्ट ६। जघन्य गमे णाणता ६ नारकीवत । पिण इहां अध्यवसाय भला कहिवा। उत्कृष्ट गमे २ — आउखो कोड़ पूर्व १, अनुबंध आउ जेतो २।

कमंभूमि नां सन्नी मनुष्य असुर में जाय तेहनां भव जघन्य २, उत्कृष्ट ८ । जघन्य गमे णाणता ४ — अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट पृथक आंगुल नीं १, तीन ज्ञान अनैं तीन अज्ञान नीं भजना २, समुद्रघात पांच पहली ३, जघन्य-उत्कृष्ट आउ पृथक मास ४, अनुबंध आउ जेतो ४ । उत्कृष्ट गमै ३ — अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट पांच सौ धनुष्य नीं १। आउ जघन्य-उत्कृष्ट कोड़ पूर्व नों २। अनुबंध आउ जेतो ३ । एवं नवनिकाय नां ठिकाणा १, गमा २, नाणत्ता ३ — एतला बोल असुर कुमार नीं पर जाणवा ।

५९. च्यारसौ नें उगणीसमीं, आखी ढाल रसाल।
भिक्षुभारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगलमाल।।
चतुर्विशतितमशते आचतुर्थादेकादशोद्देशकार्थः।।२४।४-११।।

५७. अवसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा एए अट्ट वि उद्देसगा

४८. जहेव नागकुमारा तहेव निरवसेसा भाणियव्वा । (श० २४।१६१) सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० २४।१६२)

#### ढाल: ४२०

#### दूहा

- १. अथ हिव पृथ्वीकाय नों, द्वादशमों उद्देश। अर्थ थको कहिये अछै, सांभलजो सुविशेष।।
- २. पृथ्वीकायिक हे प्रभु! किहां थकी ऊपजंत? स्यूंनारक थी ऊपजें, तिरि मनु सुर थी हुंत?
- ३. जिन भाखे नारक थकी, पृथ्वी में नहिं हुंत। निरिमन सुर थी ऊपजै, विल गोतम पूछत।।
- १. परि० २, यंत्र २१-२५
- ७८ भनवती जोड़

- २. पुढविक्काइया णं भंते ! कझोहिंतो उववज्जंति— कि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?
- ३. गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-जोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ।

(श• २४।१६३)

- ४. जो तियाँच थकी हुनै, तो स्यूं हे भगवंत!
  एकद्रिय तियाँच थी, पुढवी में ऊपजंत?
  ५. इम जिम पन्नवण पद छठे, ऊपजवो आख्यात।
  तिण विधि कहिवूं छै इहां, किहां लगै अवदात।।
  ६. जावत जो बादर पृथ्वीकाय थी ऊपजंत।
  तो स्यूं पर्याप्त थकी, कै अपजत्त थी हुंत?
- ७. जिन भाखे पर्याप्त जे, बादर पृथ्वीकाय। तेह थकी उपजै अछै, अपजत्त थी पिण थाय।।

# पृथ्वीकाय में पृथ्वीकाय ऊपजै, तेहनों अधिकार' ओघिक नै ओघिक (१)

\*जिनेश्वर धन-धन आपरो ज्ञान,

संशय तिमर निवारवा जी जाणक ऊगो भान ।। (ध्रुपदं)

- द. पृथ्वीकायिक जीवड़ो जी, हे भगवंत जी ! तेह। उपज्ञानें जोग्य छै जी, पुढवीकाय विषेह।।
  - ९. ते किता काल स्थितिक विषे जी, हे प्रभुजी ! ऊपजेह ? श्री जिन भाखें जघन्य थी जी, अंतर्मुहूर्त्त विषेह ।।
- १०. उत्कृष्ट वर्ष कहीजियै जी, सहस्र बावीस विख्यात। एह स्थितिक में ऊपजै जी, ए प्रथम द्वार उपपात।।
- ११. ते एक समय किता ऊपजे जी ? तब भाखे जगनाथ। समय-समय प्रति ऊपजे जी, विरह रहित असंख्यात।।
- १२. छेबट संघयणी ऊपजै जी, तनु अवगाहन माग। जघन्य थकी आंगुल तणों जी, असंख्यातमों भाग।।
- १३. उत्कृष्ट पिण आंगुल तणों जी, असंख्यातमों भाग।
  मसूर चंद्र संठाण छै जी, पंचम द्वार सुमाग।।
- १४. घुरे लेश्या चिउं तेह में जी, सम्यगदृष्टि न होय। मध्यादृष्टि ते हुवै जी, सम्मामिथ्या नहिं कोय।।
- १५. ज्ञानी तसु कहियै नहीं जी, ते अज्ञानी होय। बे अज्ञानी जाणवा जी, नियम थकी अवलोय।।
- १६. मन जोगी निह ह्वं तिके जी, वच जोगी निह कोय। काय जोगी कहिये तसु जी, बिहुं उपयोगी जोय।।
- १७. च्यारूंई संज्ञा हुवै जी, फुन च्यारूंई कषाय।
  एक फर्श इंद्री हुवै जी, समुद्घात त्रिण पाय।।
- १८. साता असाता वेदना जी, इत्थी वेद न कोय।

  पुरिस वेद पिण नहिं हुवै जी, वेद नपुंसक होय।
- \*लय: खिम्यावंत धिन भगवंत जी रो ज्ञान
- १. परि. २. यंत्र २६

- ४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—कि एगि-दियतिरिक्खजोणिएहिंतो
- ५. एवं जहा वक्कंतीए उववाओ
- ६. जाव (श० २४।१६४) जइ बायरपुढिविक्काइयएगिदियति रिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति कि पज्जत्ताबादर जाव उववज्जंति, अपज्जत्ताबादरपुढिवि ?
- ७. गोयमा ! पज्जत्ताबादरपुढिव, ,अपज्जत्ताबादरपुढिव जाव उववज्जंति । (११० २४।१६५)

- पुढिविक्काइए णं भंते ! जे भिवए पुढिविक्काइएसुउवविज्ञित्तए,
- ९. से णं भंते ! केवतिकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु,
- १०. उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सद्वितीएसु उववज्जेण्जा । (श० २४।१६६)
- ११. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं पुच्छा । गोयमा ! अणुसमयं अविरिह्या असंखेज्जा उव-वज्जंति ।
- क्षेवट्टसंघयणी । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
- १३. उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । मसूरा-चंदासंठिया ।
- १४. चत्तारि लेस्साओ । णो सम्मदिही, मिच्छादिही, नो सम्मामिच्छादिही ।
- १५. नो नाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा नियमं ।
- १६. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । उवओगो दुविहो वि ।
- १७. चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । एगे फासिदिए पण्णत्ते । तिण्णि समुरघाया ।
- १८. वेदणा दुविहा । नो इत्थिवेदगाः, नो पुरिसवेदगाः, नपुंसगवेदगा ।

श॰ २४; उ० १२, डा॰ ४२० ७९

- १९. स्थिति जघन्य थी तेहनीं जी, अंतर्मृहूर्त्त जगीस। जत्कुष्टी ह्वं एतली जी, वर्ष सहस्र बावीस।।
- २०. अध्यवसायज आखिया जी, प्रशस्त पिण तसु होय। अप्रशस्त पिण ह्वं वली जी,

अनुबंध स्थिति जिम जोय।।

२१. ते प्रभु! पृथ्वीकाइयो जी, पुनरिप पृथ्वी थाय। इम सेवै कालज केतलो जी,

कितो काल गतागति पाय?

- २२. जिन भाखे भव आश्रयी जी, जघन्य थकी भव दोय। उत्कृष्टा ते भव करै जी, असंख्यात अवलोय।।
- २३. काल आश्रयी जघन्य थी जी, अंतर्मुहूर्त्तं दोय। उत्कृष्टो अद्धा कह्यो जी, असंखेज्ज तसू जोय।।
- २४. सेवै कालज एतलो जी, करै गति आगति इतो काल। ओघिक नें ओघिक गमो जी, दाख्यो प्रथम दयाल।।

# ओघिक नें जघन्य (२)

- २५. तेहिज पृथ्वीकाइयो जी, पृथ्वीकायपणेह। जघन्य काल स्थितिक विषे जी, उपनों तसु स्थिति एह।
- २६. जघन्य अनें उत्कृष्ट ही जी, अंतर्मृहूर्त्तं कहीज। स्थितिक विषेज ऊपनां जी, सहु वक्तव्यता इमहीज।

### सोरठा

- २७. जघन्य कायसंवेह, अंतर्मुहूर्त्तं दोय तसु। जत्कुष्टो इम लेह, काल असंख्या पूर्ववत ।।
  ओधिक नैं उत्कृष्ट (३)
- २८. \*तेहिज पृथ्वीकाइयो जी, पृथ्वीकायपणेह। उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे जी, ऊपनों कर्म वसेह।।
- २९. घुर सहस्र वर्ष वावीस नीं जी, स्थितिक विषे ऊपजेह। उत्कृष्टी पिण एतली जी, सहस्र बावीस वर्षेह।।

#### सोरठा

- ३०. उत्कृष्ट स्थिति विषेह, एह ऊपनों ते भणी। सहस्र बावीस वर्षेह, जघन्य अनें उत्कृष्ट पिण।।
- ३१. \*शेष तिमज कहिवो सहु जी, यावत अनुबंध लग्ग। णवरं फेर परिमाण में जी, फुन कायसंवेध सुमग्ग।।
- ३२. परिमाण में इम आखियें जी, जघन्य एक वे तीन। उत्कृष्टा ते ऊपजें जी, संख असंख्या चीन।।
- \*लय: खिम्यावंत धिन भगवंत जी रो ज्ञान
- ५० भगवती जोड

- १९. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वास-सहस्साइं।
- २०. अज्भवसाणा पसत्था वि, अपसत्था वि। अणुबंधो जहा ठिती। (भ० २४।१६७)
- २१. से णंभंते ! पुढिविक्काइए पुणरिव पुढिविक्काइएस्ति केवितयं कालं सेवेज्जा ? केवितयं कालंगितरागिति करेज्जा ?
- २२. गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं।
- २३. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं।
- २४. एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा १। (श॰ २४।१६८)
- २४. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो
- २६. जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उनकोसेण वि अंतो-मुहुत्तद्वितीएसु, एवं चेव वत्तव्वया निरवसेसा २ । (श० २४।१६९)
- २८. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- हूँ २९. बाबीसवाससहस्सिट्ठितीएसु, उनकोसेण वि बाबीस-वाससहस्सिट्ठितीएसु।
  - ३१. सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति, नवरं-
  - ३२. जहण्णेणं एवको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संसेज्जा वा असंसेज्जा वा उववज्जेज्जा।

#### सोरठा

- ३३. उत्कृष्ट स्थिति विषेह, जाणहार थोड़ा हुवै। तिणसूं जघन्य कहेह, इक बे त्रिण उपजैकदा।।
- ३४. कदा बहु उपजेह, तो उत्कृष्ट पदे करी। संख असंख कहेह, आख्यो द्वार परिमाण ए।।
- ३५. \*कायसंवेध हिवै कहूं जी, भव आदेश करेह। जघन्य दोय भव जाणवा जी, उत्कृष्ट भव अठ लेह।।

वा॰—भवादेशे करी जघन्य दोय भव ग्रहण करै, उत्कृष्ट थकी आठ भव ग्रहण करै। इहां इम जाणवो— जिहां कायसंवेध में बे पक्ष नें मांहि एक पिण पक्ष नें विषे उत्कृष्ट स्थिति हुवै तिहां उत्कृष्टे अष्ट भव ग्रहण हुवै। तेह थकी अनेरा पक्ष नें विषे तो असंख्याता भव ग्रहण ते माटै इहां उत्पत्ति विषयभूत जीव नें विषे उत्कृष्ट थकी आठ भव ग्रहण करै। एहिज वार्ता विशेष करी ओलखावे छै— प्रथम गमे कायसंवेध जघन्य दोय अंतर्मुहर्त्त कह्या। इहां दोनूं भव नीं जघन्य स्थित कही, ते माटै उत्कृष्टा असंख्याता भव कह्या ?।

अनैं दूजै गमे कायसंवेधे जघन्य दोय भव । तेहनों जघन्य काल बे अंतर्मुहूर्त्तं कह्यो । इहां पिण दोनूं भव जघन्य स्थिति कही, ते माटै उत्कृष्टा असंख्याता भव कह्या २ ।

अनैं तीजे गमे जघन्य दोय भव। तेहनों काल जघन्य थी बावीस हजार वर्ष नैं अंतर्मुहूर्त्त । इहां एक पृथ्वी नां भव नीं जघन्य स्थिति अनैं एक भव नीं उत्कृष्ट स्थिति । ए बे पक्ष में एक पक्षे उत्कृष्ट स्थिति आई, ते माटै उत्कृष्टा अष्ट भव ३ ।

अनै चउथे, पांचमे गमे जघन्य दोय भव। तेहनों काल दोय अतर्मुहूर्त्तं ते माटै उत्कृष्टा असंख्याता भव। अनै छठे, सातमे, आठमे, नवमे गमे जघन्य बे-बे भव। तेहनों काल बावीस हजार वर्ष नै अंतर्मुहूर्त्तं। इहां पिण एक भव नीं जघन्य स्थिति एक भव नीं उत्कृष्ट स्थिति। एक भव रूप पक्ष नीं उत्कृष्ट स्थिति माटै आठ-आठ भव कहिस्यै।

३६. काल आश्रयी जघन्य थी जी, वर्ष सहस्र बावीस । अंतर्मुहूर्त्ते अधिक ही जी, बे भव स्थिति जगीस ।।

३७. उत्कृष्ट अद्ध इक लक्ष वली जी,

वर्ष सहस्र छीहंतर इष्ट ।

ए पुढवी नां जीव नीं जी,

अठ भव स्थिति उत्कृष्ट।।

३८. सेवै कालज एतलो जी, करै गति-आगति इतो काल। ओघिक नें उत्कृष्ट गमो जी, दाख्यो तृतीय दयाल।।

जघन्य नैं ओघिक (४)

३९. तेहिज आपणपै हुओ जी, जघन्य काल स्थितिवंत । तेहिज प्रथम गमे आखियो जी,

भणवो तिमज उदंत।।

३५. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं।

वा॰ — 'उनकोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं' ति, इहेदमव-गन्तव्यं — यत्र संवेधे पक्षद्वयस्य मध्ये एकत्रापि पक्षे उत्कृष्टा स्थितिभवति तत्रोत्कर्षतोऽष्टौ भवग्रहणानि तदन्यत्र त्वसङ्ख्ये यानि, ततश्चेहोत्पत्तिविषयभूत-जीवेषूत्कृष्टा स्थितिरित्युत्कर्षतोऽष्टौ भवग्रहणा-न्युक्तानि, (वृ॰ प० ६२४)

- ३६. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतो-मृहुत्तमब्भहियाइं,
- ३७. उनकोसेणं छावत्तरं वाससयसहस्सं,
- ३८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ३। (श॰ २४।१७०)
- ३९. सो चैव अप्पणा जहण्णकालहितीओ जाओ, सो चेव पढिमिल्लओ गमओ भाणियव्वो

श● २४, उ० १२, ढा०४२० ८१

<sup>\*</sup>लय: खिम्यावत धिन भगवंत रो जी जान

४०. णवरं लेण्या त्रिण हुवै जी,

जघन्य स्थितिक पृथ्वी मांय। सुर नहिं ऊपजै ते भणी जी, तेजुलेश न पाय।। ४१. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट थी जी, अंतर्मुहर्त्ते होय। अध्यवसाय हुवै बुरा जी, भलान पावै कोय।।

४२. अनुबंध स्थिति जिम जाणवो जी,

शेष बोल छै जेह। प्रथम गमा जिम जाणवा जी, तुर्य गमो इम लेह।।

# जघन्य नैं जघन्य (५)

४३. तेहिज जघन्य स्थिति नों धणी जी, जघन्य स्थितिके उप्पन्न। तुर्य गमक सम वारता जी, भणवी सर्व सुजन्न।। जघन्य नैं उत्कृष्ट (६)

४४. तेहिज जघन्य स्थिति नों धणी जी,
उत्कृष्ट स्थितिक विषेह ।
ऊपनों वक्तव्यता तसु जी, पूर्व रीत कहेह ।।
४५. णवरं विशेष एतलो जी, परिमाण कालसंवेह ।
फेर अछै ए बिहुं विषे जी, आगल कहियै जेह ।
४६. एक समय ते ऊपजै जी, जघन्य एक बे तीन ।
उत्कृष्ट संख्याता तथा जी, असंख्याता ही चीन ।।

४७. यावत ते भव आश्रयी जी, बे भव ग्रहण जघन्न । उत्कृष्ट अठ भव जाणवा जी,

हिव तसु काल कथन्न।।
४८. काल आश्रयी जघन्य थी जी, वर्ष सहस्र बावीस।
अंतर्मुहूर्त्त आखियो जी, बे भव अद्धा जगीस।।
४९. उत्कृष्ट अद्धा एतलो जी, सहस्र अठ्घासी वास।
अंतर्मुहूर्त्त चिउं विल जी, अधिका एह विमास।।

#### सोरठा

५०. जघन्य स्थितिक भव च्यार, जेष्ठ स्थितिक भव चिउं वली । वर्ष अठ्यासी हजार, अंतर्मृहूर्त्त चिउं अधिक ।।

५१. \*सेवै कालज एतलो जी, करै गित-आगित इतो काल। करै गित-आगित इतो काल। जघन्य अने उत्कृष्ट गमो जी, दाख्यो षष्ठम दयाल।।

# उत्कृष्ट नें ओघिक (७)

५२. तेहिज आपणपै थयो जी, उत्कृष्ट आयूवंत । इम तीजा गम सारिखो जी, भणवो सर्व उदंत ।।

- ४०. नवरं लेस्साओ तिष्णि । 'लेसाओ तिन्नि' त्ति जघन्यस्थितिकेषु देवो नोत्पद्यते इति तेजोलेण्या तेषु नास्तीति, (वृ० प० ८२५)
- ४१. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उनकोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अप्पसत्था अज्भवसाणा।
- ४२. अणुबंधो जहा ठिती । सेसं तं चेव ४ । (श० २४।१७१)
- ४३. सो चेव जहण्णकालट्टितीएसु उववण्णो सच्चेव चउत्थगमगवत्तव्वया भाणियव्वा ५। (श० २४।१७२)
- ४४. सो चेव उक्कोसकालहितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया,
- ४५. नवरं---
- ४६. जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संक्षेज्जा वा असंक्षेज्जा वा
- ४७. जाव भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं।
- ४८. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतो-मुहुत्तमब्भिहियाइं,
- ४९. उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउिंह अंतो-मुहुत्तेहि अब्भहियाइं,
- ५०. तत्र जघन्यस्थितिकस्योत्क्रुष्टस्थितिकस्य च चतुष्कृत्व उत्पन्नत्वाद् द्वाविशितिवेर्षसहस्राणि चतुर्गुणितान्य-ष्टाशीतिभवन्ति चत्वारि चान्तर्मृहूर्त्तानीति, (वृ० प० ८२५)
- ५१. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ६।

(श० २४।१७३)

५२. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, एवं तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो,

<sup>\*</sup>लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी ज्ञान

५२ भगवती जोड़

- ५३. णवरं आपणपै तिको जी, जघन्य अनै अत्कृष्ट । वर्षे सहस्र बावीस नों जी, आयुवंतज इष्ट ।। उत्कृष्ट नैं जघन्य (८)
- ५४. तेहिज जेष्ठ स्थिति नों धणी जी, जघन्य स्थितिके उप्पन्न। जघन्य अने उत्कृष्ट थी जी, अंतर्मुहूर्त्त प्रपन्न।।
- ४४. इम जिम सप्तम गम विषे जी, आख्यो तिम कहिवाय। यावत भव बे जघन्य थी जी, उत्कृष्टा अठ पाय।।
- पू६. काल आश्रयी जघन्य थी जी, वर्ष सहस्र बावीस। अंतर्मुहूर्त्त अधिक थी जी, बे भव काल जगीस।।
- ५७. उत्कृष्ट अद्धा एतलो जी, वर्ष अठ्यासी हजार। अंतर्मृहूर्त्त चिउं वली जी, अठ भव काल विचार।। ५८. सेवै कालज एतलो जी,

करें गति-आगित इतो काल। उत्कृष्ट अने जधन्य गमो जी, दाख्यो अष्टम दयाल।।

# उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट (६)

- ५९. तेहिज जेष्ठ स्थिति नों धणी जी, उत्कृष्ट स्थितिके उप्पन्न । जघन्य अनें उत्कृष्ट थी जी,
- वर्ष सहस्र बावीस कथन्न।। ६०. एहिज सप्तम गम तणीं जी, वक्तव्यता सुविशेष। आखी तिम कहिवी इहां जो, यावत भव आदेश।।
- ६१. काल आश्रयी जघन्य थी जी,

सहस्र चोमालीस वास ।। बे भव पृथ्वीकाय नां जी, उत्कृष्ट स्थिति नां विमास ।

- ६२. उत्कृष्ट इक लक्ष ऊपरै जी, वर्ष छीहंतर हुंत। अठ भव पृथ्वीकाय नां जी, उत्कृष्ट आयुवंत।।
- ६३. सेवै कालज एतलो जी, करै गति-आगति इतो काल। जिल्हें उत्कृष्ट ने उत्कृष्ट गमो जी, दाख्यो नवम दयाल।।

# पृथ्वीकाय में अपकाय ऊपजे, तेहनों अधिकार

- ६४. जो अपकायिक एकेंद्रियो जी, तियँच थी ऊपजेह। स्यू सूक्ष्म अपकाय थी जी, बादर अप थी लेह।।
- ६५. इम चिउं भेदे जाणवा जी, सूक्ष्म बादर तेम । पर्याप्तो अपर्याप्तो जी, पृथ्वीकाविक जेम ।।

# ओघिक नें ओघिक [१]

६६. हे प्रभुजी ! अपकाइयो जी, पृथ्वीकाय विषेह। अपजवा नें जोग्य छै जी,

कित काल स्थितिक ऊपजेह?

- ५३. नवरं—अप्पणा से ठिई जहण्णेणं बावीसं वास-सहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७ । (श० २४।१७४)
- ४४. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं।
- ५५. एवं जहा सत्तमगमगो जाव भवादेसो ।
- ५६. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतो-मुहत्तमब्भिह्याइं,
- ५७. उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहि अंतो-मृहुत्तेहि अब्भहियाइं,
- ४८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ६। (श० २४।१७५)
- ५९. सो चेव उक्कोसकालहितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसवाससहस्सहितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवास-सहस्सहितीएसु,
- ६०. एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा जाव भवादेसो ति ।
- ६१. कालादेसेणं जहण्णेणं चोयालीसं वाससहस्साइं,
- ६२. उक्कोसेणं छाबत्तरं वाससयसहस्सं,
- ६३. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा ९। (श० २४।१७६)
- ६४. जइ आउक्काइयएगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उव-वज्जंति— किं सुहुमआउ० ? बादरआउ० ?
- ६५. एवं चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाणं। (श. २४।१७७) 'चउक्कओ भेदो' त्ति सूक्ष्मबादरयोः पर्याप्तका-पर्याप्तकभेटात् (वृ० प० ७२५)
- ६६. आउक्काइए णंभते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उवविज्ञित्तए, से णंभते ! केवइकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?

श० २४, उ० १२, ढा० ४२० ६३

१. परि० २, यंत्र २७

- ६७. जिन कहै गोतम ! जघन्य थी जी, अंतर्मुहर्त्त लेह। वर्ष सहस्र बावीस नीं जी, उत्कृष्ट स्थितिक विषेह।
- ६८. इम पृथ्वीकायिक तणां जी, गमा सरीखा जी लेख। अपकायिक नां नव गमा जी, भणवा णवरं विशेख।।

६९. स्तिबुक बिंदु संठाण छै जी,

स्थिति जघन्य थी जी इष्ट। अंतर्मृहर्त्तं अप तणीं जी, सप्त सहस्र वर्ष जिष्ट।। ७०. अनुबंध पिण इम जाणवूं जी, त्रिहुं गम एम पिछाण। जघन्य जेष्ठ स्थिति अप तणीं जी,

संवेध सुजाण ॥ फुन अष्टम नवमे गमेह। ७१. तृतीय छठे सातमे जी, भवादेश धूर भव बिहुं जी, उत्कृष्ट अठ भव लेह ।। ७२. शेष चिउंगम नैं विषे जी, जघन्य दोयभवदेख। सुविशेख ।। असंख्यात उत्कृष्टा भव तेहनां जी,

हिवै तीजे, छठे सातमे, आठमे, नवमे गमे जघन्य दोय भव, उत्कृष्टा आठ भव कह्या। तेहनों कायसंवेध कहै छै-

७३. संवेध तीजा गम विषे जी, काल आश्रयी जघन्न। वर्ष सहस्र बावीस छै जी, अंतर्मुहर्त्त कथन्न।।

#### सोरठा

अपकायिक स्थिति भोगवी। ७४. अंतर्मुहर्त्त ताहि, ऊपनो पृथ्वी मांहि, स्थिति वर्ष सहस्र बावीस तसु ।। काल नैं वांछवै। जघन्य ७५. अप ओघिक संजात, सप्त सहस्रवर्ष नहिं कह्या।। अंतर्म्हर्त्त ख्यात, ७६. \*उत्कृष्ट अद्धा एतलूं जो, इक लक्ष वर्ष निहाल। सोल सहस्र वर्ष ऊपरे जी, ए अठ भव नूं काल ।।

#### सोरठा

- ७७. पुढवी नां भव च्यार, सहस्र अठ्घासी वर्ष जे। वर्ष सहस्र अठ वीस फुन ।। अप विउं भव अवधार, बर्ष एक लक्ष ऊपरै। ७८. ए बिहुं मेली तास, अष्ट भवे उत्कृष्ट स्थिति ॥ सोलै सहस्रज वास, ७९. सेवै कालज एतलो जी, करैं गति-आगति इतो काल। जघन्य अनें जघन्य गमो जी, दाख्यो दीनदयाल।।
- दo. \*छठा गमा ने विषे जी, जघन्य स्थितिक छै जेह। उत्कृष्ट स्थिति विषे तिको जी, उपनों तसु संवेह ।।
- ८१. काल आश्रयी जघन्य थी जी, वर्ष बावीस हजार। अंतर्म्हूर्त्त अधिक छै जी, बे भव अद्धा

- ६७. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सद्वितीएसु उववज्जेज्जा।
- ६८. एवं पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवरं ---
- ६९. थिबुगाबिंदुसंठिए । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं।
- ७०. एवं अणुबंधो वि । एवं तिसु वि गमएसु । ठिती संवेहो
- ७१. तइयछट्टसत्तमट्टमनवमेसु गमएसु---भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं,
- ७२. सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं।
- ७३. ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बाधीसं वास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं

७६. उक्केसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं,

- ७९. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा।
- ८०. छट्ठे गमए 'छट्ठे गमए' इत्यादि, षष्ठे गमे हि जघन्यस्थितिक उत्कृष्टस्थितिषूत्पद्यते (वृ० प० ५२६)
- द १. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतो-मुहुत्तमब्भहियाइं

<sup>\*</sup>लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी जान

५४ भगवती जोड़

५२. अद्धा उत्कृष्टो वली जी, वर्ष अठ्घासी हजार। अंतर्मुहूर्त्त चिउं वली जी, ए गति-आगति धार।।

### सोरठा

- ६३. वर्ष बावीस हजार, चिउं भव पुढवीकाय नां। ए सहस्र अठ्घासी धार, अंतर्मुहूर्त्तं च्यार अप ॥
- ८४. \*सप्तम गमा विषे वली जी, काल आश्रयी जघन्न । सप्त सहस्र वर्ष अप भवे जी, अंतर्मुहूर्त्त कथन्न ।।
- ५५. उत्कृष्ट इंक लक्ष ऊपरे जी, सोल सहस्र फुन वास। चिउं भव पुढवी अप चिउं जी,

स्थिति उत्कृष्टी तास।।

द६. सेवै कालज एतलो जी, करै गति-आगति इतो काल। उत्कृष्ट नैं ओघिक गमो जी, एह सप्तमो न्हाल।।

८७. अष्टम गम काल आश्रयी जी,

जघन्य थकी अवितत्थ। सप्त सहस्र वर्ष अप स्थिति जी, पृथ्वी अंतर्मुहुत्त।। ६६. उत्कृष्ट अद्धा एतलो जी, सहस्र वर्ष अठवीस। अंतर्मुहूर्त्त चिउं वली जी, इतलो काल जगीस।।

#### सोरठा

- द९. वर्ष सहस्र अठवीस, उत्कृष्ट स्थिति अप चिउं भवे । मही चिउं भवे जगीस, चिउं अंतर्मृहूर्त्त जघन्य ।।
- ९०. \*सेव कालज एतलो जी, करै गित-आगित इतो काल। जघन्य अने उत्कृष्ट गमो जी, दाख्यो दीनदयाल।।
- ९१. नवम गमे भव आश्रयी जी, जघन्य दोय भव देख। जल्हुष्टा अठ भव कह्या जी, हिव तसु काल संपेख।।
- ९२. काल आश्रयी जघन्य थी जी, वर्ष सहस्र गुणतीस। सप्त सहस्र वर्ष अप स्थिति जी,

पृथ्वी सहस्र बावीस।।

९३. अद्ध उत्कृष्ट वर्ष एतला जी, इक लक्ष सोल हजार। सेवै कालज एतलो जो, ए गति-आगति धार।।

#### सोरठा

- ९४. सहस्र अठघासी वास, पृथ्वी चिउं भव जेष्ठ स्थिति । अप चिउं भव स्थिति तास,
  - वर्ष सहस्र अठवीस फुन ॥
- ९५. प्रथम द्वितीय गम जोय, तुर्य गमें फुन पंचमें। जघन्य थकी भव दोय, उत्कृष्टा असंख भव हुवै।।
- ९६. जघन्य अद्धा तसु जोय, अंतर्मुहूर्त्तं दोय ह्वं। उत्कृष्टो अवलोय, काल असंखिज्ज ह्वंतसु।।

- प्रविक्तां अट्टासीति वाससहस्साइं चउिंह अंतो-मुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवितयं कालं सेवेज्जा, एव-तियं कालं गितरागित करेज्जा।
- ८३. इत्यन्तर्मृहूर्त्तस्य वर्षसहस्रद्वाविशतेश्च प्रत्येकं चतुर्भव-ग्रहणगुणितत्वे यथोक्तमुत्कृष्टं कालमानं स्यात् ८८००० (वृ० प० ८२६)
- प्रतमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भिहयाइं,
- ८५. उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं,
- ६६. एवतियं कालं सेवेण्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेण्जा।
- ८७. अट्टमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमञ्ज्ञाहियाइं।
- दद. उक्कोमेणं अट्टावीसं वाससहस्साइं चउहि अंतो-मुहुत्तेहि अब्भहियाइं,
- ९०. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा।
- ९१. नवमे गमए भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाई, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाई,
- ९२. कालादेसेणं जहण्णेणं एकूणतीसं वाससहस्साइं
- ९३. उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा । (श० २४।१७८)

श० २४, उ० १२, ढा० ४२० ६४

<sup>\*</sup>स्य : खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी ज्ञान

# हिव पृथ्वीकाय में तेऊकाय ऊपजे, तेहनों अधिकार'

- ९७. \*जो तेऊ थी ऊपजै, पृथ्वीकाय विषेह। तेऊ नीं पिण वारता जी, एहिज रीत कहेह।।
- ९८. णवरं नव ही गमा विषे जी, लेश्या तीनज पाय। देव थकी नहिं ऊपजै जी, तेऊकायिक मांय।।
- ९९. तेऊकायिक नों कह्यो, सूची समूह संठाण। ए आकारज जाणवो जी, स्थिति तास पहिछाण।।

### सोरठा

- १००. स्थिति जघन्य सुविचार, अंतर्मृहूर्त्तं नीं अखी । उत्कृष्टी अवधार, तीन दिवस-निश नीं तसु ।।
- १०१. \*तीजा गमक विषे कह्यो जी, काल आश्रयी जघन्न । वर्ष सहस्र बावीस नीं जी, अंतर्मुहूर्त्त कथन्न ।।
- १०२. उत्कृष्टो अद्धा इतो जी, वर्ष अठ्घासी हजार। रात्रि-दिवस द्वादश वली जी, एह अधिक अवधार।।

वा० — इहां तीजे गमे ओधिक तेऊकायिक छै, ते पृथ्वीकायिक उत्कृष्ट स्थितिक विषे ऊपजै। अत्र एक पक्ष ते पृथ्वीकायिक उत्कृष्ट स्थितिपणों छै, ते भणी उत्कृष्ट थकी अष्ट भव ग्रहण हुवै।

ते च्यार भव पृथ्वीकायिक नां उत्कृष्ट स्थिति बावीस हजार वर्ष नां करैं। ते चउगुणां कीधां अठ्यासी हजार वर्ष हुवै। अनैं उत्कृष्ट आउखा नां च्यार भव तेउकायिक नां करैं। एक-एक भव तीन-तीन दिन-रात्रि नां। ते चउगुणां कीधां बारै दिन-रात्रि हुवै।

१०३. गति-आगति इतरो अद्धा जी, कायसंवेधज एम । मन नें उपयोगे करी जी, कहिवूं सगलो तेम ।।

### सोरठा

- १०४. अठ भव पंचम गमेह, तृतीय गमे संवेध जे।
  पूर्वे आख्यो जेह, हिव गम षष्ठम प्रमुख ते।।
- १०५. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त तेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।।

वार — इहां तेऊकाय नीं अंतर्मुहूर्त्तं नीं स्थिति, पृथ्वीकाय नीं बावीस हजार वर्ष नीं स्थिति। एक पक्ष में उत्कृष्ट स्थिति कही ते माटै अष्ट भव छै।

१०६. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों इह विधे। अंतर्मुहूर्त्तं च्यार, वर्षे अठ्घासी सहस्र फुन।।

८६ भगवती जोड़

- ९७. जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जंति ? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया,
- ९८. नवरं नवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ ।

  'तिन्नि लेसाओ' ति अप्कायिकेषु देवोत्पत्तेः तेजोलेश्यासद्भावाच्चतस्रस्ता उक्ताः इह तु तदभावात्तिस्र
  एवेति, (वृ. प. ८२६)
- ९९. तेउक्काइया णं सूईकलावसंठिया । ठिई जाणियव्वा ।
- १००. 'ठिई जाणियव्व' त्ति तत्र तेजसो जघन्या स्थिति-रन्तर्मृहूर्त्तीमतरा तु त्रीण्यहोरात्राणीति । (वृ. प. ८२६)
- १०१. तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भिहयाइं,
- १०२. उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइं बारसिंह राइं-दिएहि अब्भहियाइं,

वा०—'तइयगमे' इत्यादि, तृतीयगमे औषिकस्तेज-स्कायिक उत्कृष्टिस्थितिषु पृथिवीकायिकेषूत्पद्यते इत्यत्रैकस्य पक्षस्योत्कृष्टिस्थितिकत्वमतोऽष्टो भव-ग्रहणान्युत्कर्षतः,

तत्र च चतुर्षु पृथिवीकायिकोत्कृष्टभवग्रहणेषु द्वा-विशतेर्वर्षसहस्राणां चतुर्गुणितत्वेऽष्टाशीतिस्तानि भवन्ति, तथा चतुर्ष्वेव तेजस्कायिकभवेष्टकर्षतः प्रत्येकमहोरात्रत्रयपरिमाणेषु द्वादशाहोरात्राणीति, (वृ० प० ८२६)

१०३. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा । एवं संवेही उवजुंजिऊण भाणियव्वी १-९। (श० २४।१७९)

१. परि० २, यंत्र २८

<sup>\*</sup>लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी ज्ञान

१०७. सप्तम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। तीन दिवस-निश्चि तेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक फुन।।

वा॰—तेऊकाय नीं उत्कृष्टी स्थित अनै पृथ्वीकायिक नीं जघन्य स्थित । तिहां पिण एक पक्ष उत्कृष्टी स्थिति कही ते माटै अष्ट भव ।

- १०८. उत्कृष्ट अद्धा धार, वर्ष अठ्यासी सहस्रजे। दिवस-रात्रिजे बार, अष्ट भवा नों आखियो।।
- १०९. अष्टम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। तीन दिवस-निशि जेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।।

बा॰—इहां पिण एक पक्ष उत्कृष्टी स्थिति, ते माटै अष्ट भव।

११०. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों आखियो। दिवस-रात्रि जे बार, अतर्मुहर्त्तं च्यार फुन।।

१११. नवमे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। तीन दिवस-निशि जेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।।

वा॰ अत्र तेऊकाय नीं तीन दिन-रात्रि नीं स्थिति अने पृथ्वीकाय नीं बावीस हजार वर्ष नीं स्थिति । इहां बिहुं पक्ष उत्कृष्टी स्थिति छै, ते मार्ट अष्ट भव ग्रहण ।

११२. उत्कृष्ट अद्धा धार, वर्ष अठ्घासी सहस्र जे। दिवस-निशा बलि बार, अष्ट भवे अद्धा इतो।। वा०—ए पंच गमे जघन्य दोय भव, उत्कृष्टा अष्ट भव नों कायसंवेध कह्यो। अनै शेष १, २, ४, ५ –ए च्यार गमे कायसंवेध कहै छै –

११३. शेष चिउं गमकेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त बेह, उत्कृष्ट काल असंख ही।।

बा॰ इहां जघन्य बे भव नों काल बे अंतर्मुहूर्त्तं। अत्र तेउकाय नीं अनै पृथ्वीकाय नीं पिण अंतर्मुहूर्त्तं —ए बिहुं पक्षे जघन्य स्थिति । ते माटे उत्कृष्ट असंख्याता भव । तेहनों असंख्यातो काल कह्यो ।

# पृथ्वीकाय में वाउकाय ऊपजे, तेहनों अधिकार

- ११४. \*जो वाऊकायिक थकी जी, ऊपजें पृथ्वी रै मांय । वायु नां पिण नव गमा जी, एवं चेव कहाय ।।
- ११५. जिमहिज तेउकाय नों जी, पृथ्वी में उपपात। तिमहिज वाऊ महि विषे जी, ऊपजतां नें थात।।
- ११६. नवरं वाऊ नों कह्यो जी, पताका नों संस्थान। तेऊ नों संठाण छै जी, सुची-कलाप जान।

वा॰ — इहां तेऊ में समुद्घात ३ पावै। वाऊ में समुद्घात ४ पावै, ते णवरं पाठ में खोली नथी। ते वाऊ ओदारिक मूल शरीर नीं अपेक्षाए संभावियै छै। वाऊ में वेकिय समुद्घात पावै छै, पिण ते उत्तर रूप माटै इहां लेखव्यो न दीसै।

११४. जइ वाउक्काइएहिंतो ? वाउक्काइयाण वि एवं चेव नव गमगा

११४. जहेव तेउक्काइयाणं,

**११**६. नवरं—पडागासंठिया पण्ण<del>ता</del> ।

श॰ २४, उ० १२, ढा० ४२० 🕫

<sup>\*</sup>लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी जान

१. परि. २, यंत्र २९

११७. विल संवेधज तेहनों जी, वर्ष सहस्र संघात। करियो वाऊकाय नों जी, तास न्याय इम ख्यात।।

### सोरठा

११८ तेऊ नें अधिकार, दिन-निशि कर संवेध कृत। इहां वायु में धार, करिवूं वर्ष सहस्रे करी।।

११९. तिहां दिवस-निशि तीन, स्थिति उत्कृष्ट तेऊ तणीं। इहां उत्कृष्टी चीन, वर्ष सहस्र त्रिण नीं कही।।

१२०. \*तीजे गमे काल आश्रयी जी, जघन्य थकी संवेह। वर्ष सहस्र बावीस नीं जी, अंतर्मुहर्त्तं अधिकेह।।

वा० — इहां एक पक्ष पृथ्वीकाय नीं उत्कृष्ट स्थिति माटै उत्कृष्ट अष्ट भव तेहनों काल कहै छैं —

१२१. उत्कृष्ट अद्धा एतलो जी, वर्ष एक लक्ष जाण। वायु नें पृथ्वी तणां जी, च्यार-च्यार भव माण।।

#### सोरठा

१२२. पृथ्वी स्थिति उत्कृष्ट, चिउं भव अठघासी सहस्र । वायु नीं स्थिति जिष्ट, चिउं भव द्वादश सहस्र वर्ष ।। १२३. ए बिहुं मेली जोय, वर्ष एक लक्ष आखियो । तृतीय गमे अवलोय, गतागित संवेध ए ।।

१२४. \*एवं कायसंवेध नें जी, गमक विषे अवधार। मन नें उपयोगे करी जी, कहिबूं सर्व विचार।।

वा॰ — जे गमा नैं विषे एक पक्षे अथवा बिहुं पक्षे उत्कृष्टी स्थिति हुवै, ते गमा नैं विषे उत्कृष्ट थकी अष्ट भव ग्रहण हुवै। अनैं जे गमा नैं विषे बिहुं पक्षे जघन्य स्थिति हुवै, तेहनां उत्कृष्ट असंख्याता भव हुवै। तेहनों काल पिण असंख्यातो हुवै। तिहां प्रथम, द्वितीय, चौथे, पंचमे गमे जघन्य दोय भव उत्कृष्ट असंख्याता भव हुवै। तेहनों काल पिण असंख्यातो हुवै। तिहां तृतीय छठे, सातमे, आठमे, नवमे गमे जघन्य दो भव, उत्कृष्ट आठ भव। तिहां तीजे गमे तो कायसंवेध कही।। हिवै छठे गमे कायसंवेध कहै छैं—

#### सोरठा

१२५. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी।। अंतर्मुहूर्त्तं लेह, वर्षं सहस्र बावीस ही।। इहां एक पक्ष पृथ्वीकाय नीं उत्कृष्ट स्थिति कही ते मार्ट उत्कृष्टा अष्ट भव—

१२६, उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों इह विधे। अंतर्मुहर्त्तं च्यार, वर्ष अठघासी सहस्र फुन।।

१२७. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी वर्ष सहस्र त्रिण लेह, अंतर्मृहूर्त्तं अधिक फुन। इहां एक पक्ष वाजकाय नी उत्कृष्ट स्थिति मार्ट अष्ट भव—

\*लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी जान

दद भगवती जोड़

११७. संवेही वाससहस्सेहि कायव्वी।

११८,११९. 'संवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो' ति तेज-स्कायिकाधिकारेऽहोरात्रैः संवेधः कृतः इह तु वर्ष-सहस्रैः स कार्यो वायूनामुत्कर्षतो वर्षसहस्रत्रय-स्थितिकत्वादिति । (वृ० प० ८२६) १२०. तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं,

१२१. उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्सं।

१२२,१२३. 'उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्सं' ति अत्राष्टी भवग्रहणानि तेषु च चतुष्वंष्टाशीतिर्वंषंसहस्राणि पुनरन्येषु चतुर्षु वायुसत्केषु वर्षसहस्रत्रयस्य चतुर्गुणिनतत्वे द्वादश उभयमीलने च वर्षलक्षमिति,

(वृ० प० ८२६)

१२४. एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९। (श० २४।१८०)

वा॰ — यत्रोत्कृष्टस्थितिसम्भवस्तत्रोरकर्षतोऽष्टौ भव-ग्रहणानि इतरत्र त्वसंख्येयानि, एतदनुसारेण च कालोऽपि वाच्य इति । (वृ० प० ५२६)

- १२८. उत्कृष्ट अद्धा ताय, वर्ष एक लक्ष आठ भवे। बार सहस्र वर्ष वाय, वर्ष अठचासी सहस्र मही।।
- १२९. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र त्रिण जेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।। इहां पिण एक पक्ष वायु नीं उत्कृष्ट स्थिति माटै उत्कृष्ट अष्ट भव—
- १३०. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। द्वादश सहस्रज वास, अंतर्मुहर्त्त च्यार फुन।।
- १३१. नवम संवेध जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र पणवीस, वाउ पृथ्वी जेष्ठ स्थिति।।

इहां वाजकाय नीं अनैं पृथ्वीकाय नीं ए बिहुं पक्षे उत्कृष्टी स्थिति ते माटै उत्कृष्ट अष्ट भव —

१३२. उत्कृष्ट अद्धाताय, वर्ष एक लक्ष अठ भवे। बार सहस्र वर्ष वाय, पुढवो अठघासी सहस्र।। हिवै प्रथम, बीजे चडथे पंचमे गमे जघन्य दो भव, उत्कृष्ट असंख्याता भव नों कायसंवेध कहैं कैं--

#### सोरठा

१३३. शेष चिउं गमकेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्तं बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा असंखा।

वा०—इहां वायुकाय नीं अनैं पृथ्वीकाय नीं बिहुं पक्षे जघन्य स्थिति ते माटै उत्कृष्ट असंख्याता भव। ए च्यार गमे जघन्य कायसंवेध में दोय अंतर्मृहूर्तं कहा। ते वाउकाय नों पिण जघन्य आउखो अनैं पृथ्वीकाय नों पिण जघन्य आउखो। तेहनां पिण दोय अंतर्मृहूर्त्तं। ए बिहुं पक्षे जघन्य स्थिति ते भणी उत्कृष्टा असंख्याता भव जाणवा। अनैं तीजे, छठे, सातमे, आठमे गमे तेहनीं जघन्य एक पक्षे उत्कृष्ट स्थिति, तिणसूं उत्कृष्ट आठ भव। अनैं नवमे गमे जघन्य यकी वे भव नीं बिहुं पक्षे उत्कृष्ट स्थिति ते भणी तेहनां उत्कृष्ट आठ भव जाणवा। ए वाउकाय पृथ्वीकाय नैं विषे ऊपजै, तेहनों अधिकार कही छै—

# पृथ्वीकाय में वनस्पतिकाय ऊपजे, तेहनों अधिकार'

- १३४. \*जो वनस्पति थो ऊपजै जी, पृथ्वीकाय विषेह। अप नां नव गम सारिखा जी, वनस्पति नां कहेह।।
- १३५. णवरं विशेष एतलो जी, वनस्पति नां संठाण । कह्या अनेक प्रकार नां जी, ए आकार पिछाण ।।

#### सोरठा

- १३६. अपकाय संठाण, स्तिबुक तणें आकार जे। वनस्पति नों जाण, नाना प्रकार नों कह्यो।।
- १३७. \*शरीर तणीं अवगाहना जी, घुर त्रिण गमक विषेह। अथवा त्रिण गम पाछिला जी, तेह विषे इम लेह।।
- \*लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी जान
- १. परि. २, यंत्र ३०

- १३४. जइ वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जंति ? वणस्सइ-काइयाणं आउकाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा,
- १३५. नवरं—नाणासंठिया ।
- १३६. अप्कायिकानां स्तिबुकाकारावगाहना एषां तु नाना संस्थिता । (वृ० प० ८२६)
- १३७. सरीरोगाहणा पढमएसु पिच्छल्लएसु य तिसु गमएसु

श० २४, उ० १२, ढा० ४२० ६९

१३८ जघन्य थकी आंगुल तणें जी, असंख्यातमे भाग। उत्कृष्ट योजन सहस्र नीं जी, जाभेरी तसु माग।।

#### सोरठा

- १३९. घुर ओघिक गम तीन, उत्कृष्ट स्थिति त्रिण गम चरम । वनस्पति नीं चीन, कहिवी जघन्योत्कृष्ट अवगाहना।।
- १४०. \*मध्यम त्रिण गम नैं विषे जी, जघन्य गमक ए जाण। तेह विषे इम आखियो जी, पृथ्वी नीं पर माण।

#### सोरठा

- १४१. पृथ्वीकाय विषेह, पृथ्वी ऊपजता तणें। आख्यो तेम कहेह, असंख भाग आंगुल तणों।।
- १४२. \*कायसंवेध अनें विल जी, वनस्पति नीं स्थित । तेह जाणवी बुद्धि करी जी, जिन वच करी पवित्त ।।

#### सोरठा

- १४३. वनस्पति स्थिति जाण, उत्कृष्टी दश सहस्र वर्ष। जघन्य प्रसिद्ध पिछाण, इण अनुसार संवेध पिण।।
- १४४. \*संवेध तीजा गम विषे जी, काल आश्रयी जघन्त। वर्ष सहस्र बावीस नीं जी, अतर्गुहूर्त्त कथन्त।।

#### सोरठा

- १४५. वर्ष सहस्र बावीस, पृथ्वी नीं उत्कृष्ट स्थिति। अंतर्मुहूर्त्त जगीस, वनस्पति नीं जघन्य स्थिति।। इहां बे भव में जघन्य थकी काल एक पक्षे पृथ्वीकाय नीं उत्कृष्टी स्थिति कही ते भणी उत्कृष्ट गमे आठ भव। तेहनों कायसंवेध कहैं छैं—
- १४६. \*उत्कृष्ट अद्धा एतलो जी, अष्ट भवे अवधार। वर्ष एक लक्ष आखियो जी, विल अठवीस हजार।।

#### सोरठा

- १४७. पृथ्वी नां भव च्यार, वर्ष अठ्यासी सहस्र जे। फुन चालीस हजार, चिउंभव वणस्सइ जेष्ठ स्थिति।।
- १४८. वर्षे सहस्र बावीस, उत्कुष्ट स्थिति पृथ्वी तणीं । वणस्सइ तणीं जगीस, उत्कृष्टी देश सहस्र नीं ॥
- १४९. च्यार-च्यार भव तास, तेह चउगुणां थी हुई । एक लक्षा जे वास, वर्षे सहस्र अठवीस फुन ।।
  - १५० इतो काल सेवंत, गति-आगति पिण एतलो। अद्धा करें जे जंत, तीजा गमा विषेज इम।।
  - \*सय : खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी ज्ञान
  - ९० भगवती जोड़

- १३८. जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जद्दभागं, उनकोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं,
- १३९. प्रथमकेष्वीिषकेषु गमेषु पाश्चात्येषु चोत्कृष्ट-स्थितिकगमेष्ववगाहना वनस्पतिकायिकानां द्विधाऽपि (वृ० प० ८२६)
- १४०. मज्भिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं ।
- १४१. मध्यमेषु जघन्यस्थितिकगमेषु त्रिष् यथा पृथिवी-कायिकानां पृथिवीकायिकेषूत्पद्यमानानामुक्ता तथैव वाच्या, अंगुलासंख्यातभागमात्रैवेत्यर्थः (वृ• प॰ ८२६)
- १४२. संवेहो ठिती य जाणियब्वा ।
- १४३. तत्र स्थितिरुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि जघन्या तु प्रतीतैव, एतदनुसारेण संवेधोऽपि ज्ञेयः
- (वृ० प० ८२६) १४४. तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमञ्भहियाइं

- १४६. उक्कोसेणं अट्ठावीसुत्तरं वाससयसहस्सं,
- १४७-१४९. इह गमे उत्कर्षतोऽष्टी भवग्रहणानि तेषु प चत्वारि पृथिव्याश्चत्वारि च वनस्पतेः तत्र चतुर पृथिवीभवेषूत्कुष्टेषु वर्षसहस्राणामण्टाशीतिः तथा वनस्पतेर्दशवर्षसहस्रायुष्कत्वाच्चतुर्षु भवेषु वर्षसह-स्राणां चत्वारिशत् उभयमीलने च यथोक्तं मानमिति। (वृ० प० ८२६)
- १५०. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा।

१५१. \*मन नें उपयोगे करी जी, कहिवूं इम संवेह। सूत्रे तो आख्यो इतो जी, तसु निर्णय इम लेह।। १५१. एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियन्वो १-९। (श॰ २४।१८१)

#### सोरठा

१५२. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्तं लेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। इहां पृथ्वी नीं एक पक्ष उत्कृष्ट स्थिति माटै उत्कृष्ट प्रभव। तेह्नों कायसंवेध कहै छै-

१५३. \*उत्कृष्टो अद्धा इतो जी, वर्ष अठघासी हजार । चिउं अंतर्मुहूर्त्तं वली जी, अष्ट भवे अवधार ।।

#### सोरठा

१५४. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश लेह, पृथ्वी अंतर्मुहूर्त्तं स्थिति।। इहां वनस्पति नीं एक पक्ष उत्कृष्ट स्थिति, ते माटै उत्कृष्ट प्रभव। तेहनों कायसंवेध कहैं छैं—

१५५. उत्कृष्ट अद्धा इष्ट, इक लख वर्ष अठवीस सहस्र।
पृथ्वी चिउं भव जिष्ट, जेष्ठ वणस्सइ भव चिउं।।
१५६. अष्टम भव संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी।
वर्ष सहस्र दश लेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।।
इहां पिण एक पक्षे वनस्पित नीं उत्कृष्ट स्थित, ते माटै उत्कृष्ट अष्ट
भव छै। तेहनों काल कहै छै—

१५७, उत्कृष्ट अद्ध विचार, अष्ट भवां नों इह विधे। वर्ष चालीस हजार, अंतर्मुहूर्त्तं च्यार फुन।। १५८. नवमे संवेध तास, बे भव अद्धा जघन्य थी। सहस्र बतीसज वास, वण० पुढवी उत्कृष्ट स्थिति।।

इहां वनस्पति अनै पृथ्वी ए बिहुं पक्षे उत्कृष्ट स्थिति माटै उत्कृष्ट आठ भव नों काल कहै छैं—

१५९. उत्कृष्ट अद्धा सोय, अष्ट भवां नों इह<sup>े</sup> विधे। इक लक्ष वर्ष सुजोय, वर्ष सहस्र अठवीस फुन<sup>ा</sup>।

अनैं पहिले, दूजे, चउथे, पंचमे गमे जघन्य दो भव, उत्कृष्ट असंख्याता भव। तेहनों कायसंवेध कहै छै---

१६०. चिउं भव शेष संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहूर्त्त बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा असंख।। इहां बिहुं पक्षे जघन्य स्थिति माटै उत्कृष्ट असंख्याता भव नो असंख्यातो काल कायसंवेध कह्यो। ए वनस्पति पृथ्वी नै विषै ऊपजै तेहनों अधिकार कह्यो।

श० २४, उ० १२, ढा० ४२० ९१

<sup>\*</sup>लय : खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी ज्ञान

#### नाणत्ता

१६१. पुढवी पृथ्वी मांय, ऊपजै तसु चिउं णाणता। जघन्य गमेज पाय, प्रथम तीन लेश्या हुवै।।

१६२. आयु नें अनुबंध, अंतर्मुहूर्त्त नों कह्यो । अध्यवसायज मंद, माठा ए चिउं णाणता ।

१६३. अप पुढवी में जाय, तसु पिण ए चिउं णाणता। तेऊ नां पिण ताय, लेश विना त्रिण णाणता।।

१६४. वायू पृथ्वी मांय, उपजे तसु चिउं णाणता । तेऊवत त्रिहुं पाय, समुद्घात वैकिय वली ।

१६५. धुर गम वैकिय पाय, मध्यम त्रिण गम अपज्जते। वेकिय लहिये नांय, इम समुद्घात वैकिय नहीं।।

बाo—'इहां सूत्रे प्रथम ओषिक गमे वाउकाय नां औदारिक मूल शरीर नां कथन माटै वैक्रिय समुद्घात न कही। तिणसूं इहां सूत्रं जघन्य गमे वैक्रिय समुद्घात नों णाणत्तो नथी कह्यूं। अनै पन्नवणा पद ३६ में वाउकाय में वेदनी, कषाय मारणांतिक, वैक्रिय—ए ४ समुद्घात कही। तथा जीवाभिगम पहिली पडिवत्ती में वाउकाय में एहिज ४ समुद्घात कही। तथा भगवती शतक ६ उद्देशे १ वाउकाय रा पर्याप्ता में वैक्रिय समुद्घात पावै। अनै जघन्य गमे अपर्याप्ता माटै न पावै। तिणसूं समुद्घात नों नाणत्तो चउथो कहियै। जिम पृथ्वी नै विषे वाऊ ऊपजतां नै वैक्रिय गमा नै विषे कह्यो, तिम अप में, तेऊ में, वाऊ में, वनस्पति में, विकलेंद्रिय में, तियँच पंचेंद्रिय में वाऊ ऊपजै तिण में वैक्रिय समुद्घात इहां न कही। ते औदारिक मूल शरीर माटै। पिण और सूत्रे वाउकाय में ४ शरीर, ४ समुद्घात कही। ते माटै जघन्य गमे समुद्घात नों चउथो णाणत्तो सर्व ठिकाणे संभवै। (ज॰ स०)

१६६. पुढवी पिछाण, ऊपजतो विष जं वणस्सइ। णाणत्ता गमं सुजाण, पंच तेहनां ।। जघन्य पंचमो । १६७. चिउं पुढवीवत इष्ट, अवगाहन भाग आंगुल तर्णा ।। जघन्य अने उत्कृष्ट, असंख

बा॰ — पृथ्वी अप, तेऊ, वाऊ, वनस्पति — ए पांच स्थावर पृथ्वी में आवै १, २, ४, ५ — ए च्यार गमा जघन्य दो भव, उत्कृष्ट असंख्याता भव। असंख्यातो काल अनै समैं-समै असंख्याता ऊपजै। तथा ३, ६, ७, ८, ९, — ए पांच गमा जघन्य २ भव, उत्कृष्ट ८ भव ऊपजै तो जघन्य १, २, ३ ऊपजै अनै उत्कृष्ट संख्याता-असंख्याता ऊपजै।

१६८. \*ए चउवीसम शत तणों जी, वर द्वादशम उद्देस। देथ अर्थ थी आखियो जी, देश रह्यो फुन शेष।। १६९. एह च्यारसौ बीसमीं जी, ढाले पृथ्वी संबंध। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी, 'जय-जश' परमानंद।।

वा॰--वाउक्काइयाणं चत्तारि समुग्धाया पण्णत्ता, तं जहा---

वेदणासमुग्घाए कषायसमुग्घाए मारणंतिय-समुग्घाए वेजिन्वयसमुग्घाए । (पण्ण० ३६।४६) तेसि (वाजनकाइयाणं) णं भंते ! .... चत्तारि समुग्घाया—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए वेजिन्वयसमुग्घाए । (जीवाजीवाभिगमे १।६२)

<sup>\*</sup>लय: खिम्यावंत धिन भगवंत रो जी ज्ञान

९२ भगवती जोड़

### ढाल : ४२१

#### दूहा

- १. जो पृथ्वीकायिक विषे, बेंद्रिय थी ऊपजेह तो स्यं पर्याप्त थकी, के अपजत्त थी लेह?
- २. जिन भाखै पर्याप्त थी, पुढवी में उपजंत । अपजत्त थी पिण ऊपजै, विल गोयम पूछंत ।।

# पृथ्वीकाय में बेइंद्रिय ऊपजे, तेहनों अधिकार

\*चतुर नर सुणजो पुढवी संबन्ध ॥ (ध्रुपदं)

- ३. हे प्रभुजी ! बेइंदिया जी, पृथ्वीकाय विषेह । ऊपजवा नें जोग्य छै ते, किते काल स्थितिक उपजेह ?
- ४. श्री जिन भाखै जघन्य थी जी, अंतर्मुहूर्त विषेह। जत्कृष्ट बावीस सहस्र नीं जी, काल स्थितिके जेह।।
- प्र. ते एक समय किता ऊपजै जी ? जिन कहै जघन्य सुअंक। एक दोय त्रिण ऊपजै जी, उत्कृष्ट संख असंख।।
- ६. छेवट संघयणी हुवै जी, अवगाहन इम माग। जघन्य थकी आंगुल तणों जी, असंख्यातमों भाग।।
- ७. उत्क्रुष्टी अवगाहना जी, कहियै जोजन बार। संख बेइंद्रिय आश्रयी जी, एम कह्यो वृत्तिकार।।
- द. हुंड संठाण हुवै तसु जी, धुर त्रिहुं लेशज होय। बेइंद्रिय में सुर नहीं ऊपजै, तिणस् तेजू लेश न कोय।।
- ९. समदृष्टि पिण ते हुवै जी, सास्वादन कहेह। ए ओघिक बेइंद्रिय तणों जी, ओघिक पृथ्वी विषेह।।
- १०. मिथ्यादृष्टि पिण हुवै जी, मिश्रदृष्टि नहीं थाय।
  द्वार कह्यो ए सातमों जी, ए बोल बेइंद्री में पाय।।
- ११. सास्वादन हुवै तरै जी, निश्चै छै बे नाण । अन्यथा दो अज्ञान नीं जी, नियमा निश्चै जान ।
- १२. मन जोगी ते नहीं हुवै जी, वच काय जोगी होय। द्विविध उपयोगी हुवै जी, च्यार संज्ञा हुवै सोय।।
- १३. च्यार कषाय ह्वं तेह में जी, इंद्रिय पावे दोय। जिभ्या इंद्रिय नें वली जी, फासिदिय अवलोय।।
- \*लय: चतुर नर समझो ज्ञान विचार
- १. परि. २, यंत्र ३१

- १. जइ बेंदिएहिंतो उववज्जंति—िंक पञ्जत्ताबेंदिएहिंतो उववज्जंति ? अपञ्जत्ताबेंदिएहिंतो उववज्जंति ?
- २. गोयमा ! पज्जत्ताबेंदिएहिंतो उववज्जंति, अपज्ज-त्ताबेंदिएहिंतो वि उववज्जंति । (श॰ २४।१८२)
- ३. बेंदिए णं भंते ! जे भिवए पुढिविक्काइएसु उव-विज्ञित्तए, से णं भंते ! केवितकालिट्टितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ४. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सद्वितीएसु । (श॰ २४।१८३)
- ५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।
- ६. छेवट्टसंघयणी! ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंक्षेज्जइभागं.
- ७. उक्कोसेणं बारस जोयणाइं । 'बारस जायणाइं' ति यदुक्तं तच्छङ्खमाश्रित्य । (वृ० प० ८२८)
- इंडसंठिया । तिण्णि लेसाओ ।
- ९. सम्मदिट्ठी वि ।
   ंसम्मदिट्ठी वि' त्ति एतच्चोच्यते सास्वादनसम्यक्त्वा पेक्षयेति, इयं च वक्तव्यतौषिकद्वीन्द्रियस्यौषिक पृथिवीकायिकेषु । (वृ० प० ६२६)
- १०. मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी।
- ११. दो नाणा, दो अण्णाणा नियमं।
- तो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि । उवओगे दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ ।
- चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, तं जहा— जिङ्भिदिए य फासिदिए य ।

श० २४, उ॰ १२, ढा॰ ४२१ ९३

- १४. समुद्घात त्रिण घुर कही जी, शेष वेदना आदि। जिम पृथ्वी में ऊपजै जी, कहिवं तिम संवादि।।
- १५. णवरं स्थिति बोइंद्रिय तणीं जी, जघन्य थकी सुविमास । अंतर्मृहुर्त्तं नीं हुवै जी, उत्कृष्टा द्वादश वास ।।
- १६. अनुबंध पिण तसु एतलो जी, शेष तिमज कहिवाय। कालसंवेध कहै हिवे जी, सांभलजो चित ल्याय।।
- १७. भव आश्रयी थी जघन्य जी, बे भव ग्रहण करेह। उत्कृष्टा भव तेहनां जी, संख्याता गिण लेह।।
- १८. काल आश्रयी जघन्य थीजी, अंतर्मुहूर्त्त बेह। उत्कृष्ट काल संखेज छैजी, एतलो काल सेवेह।।
- १९. तेहिज जघन्य स्थिति नैं विषे जी, ऊपनों द्वितीय गमेह। वक्तव्यता धुर गम कही जी, तेहिज कहिवी एह।।
- २०. तेहिज उत्कृष्ट काल नीं जी, स्थितिक विषे उपन्न। एहिज बेइंद्रिय तणीं जी, कहिवी लब्धि सुजन्न।।
- २१. णवरं विशेष संवेध में जी, भव आश्रयी जघन्य। बेभव ग्रहण करै तिको जी, उत्कृष्टा अठ जन्य।।
- २२. काल आश्रयी जचन्य थी जी, बे भव नों कहिवाय। बावीस सहस्र वर्ष मही जी, अंतर्मुहुर्त्त अधिकाय।।

#### सोरठा

- २३. जघन्य थकी भव दोय, धुर भव बेइंद्रिय तणों। बीजो भव अवलोय, उत्कृष्ट स्थिति पृथ्वी विषे।।
- २४. एक पक्ष नें पेख, उत्कृष्ट स्थितिकपणां थकी। उत्कृष्ट सुविशेख, अठ भव ग्रहण कह्या इहां।।
- २५. \*उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे जी, वर्ष अठघासी हजार। अधिक अड़ताली वर्ष वली जी, एतलो काल उचार।।

#### सोरठा

- २६. बेइंद्रिय भव च्यार, द्वादश वर्षज एक भव। चतुर्गुणो अवधार, अड़तालीसज वर्ष ह्वं।।
- २७. तिण कर अधिका एह, अन्य अठचासी सहस्र वर्ष । चिउं पृथ्वी भव लेह, तृतीय गमे उत्कृष्ट अद्धा ।।
- २८ तेहिज आपणपे थयो जी, जघन्य काल स्थितिवत । तेहने पिण एहिज विधे जी, वक्तव्यता सुवृतत ।।
- २९. विचला तीनूंइ गमा विषे जी, ओघिकवत अवदात । णवरं इतरो विशेष छै जी, एह णाणत्ता सात ।।
- ३०. शरीर तणीं अवगाहना जी, कहिवी पृथ्वी जेम।
  पुढवी पृथ्वी नैं विषे जी, ऊपजता नैं तेम।।

- १४. तिण्णि समुग्धाया । सेसं जहा पुढविक्काइयाणं ।
- १५. नवरं -- ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं।
- १६. एवं अणुबंधो वि । सेसं तं चेव ।
- १७. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेजजाइं भवग्गहणाइं ।
- १८. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहृत्ता, उक्कोसेणं संखेजज कालं, एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागितं करेज्जा १। (श० २४।१८४)
- १९. सो चेव जहण्णकालहितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २। (श० २४।१८४)
- २०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो एस चेव बंदियस्स लद्धी ।
- २१. नवरं भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाई, जक्कोसेणं अट्टु भवग्गहणाई।
- २२. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भहियाइं।
- २४. 'अट्ठ भवग्गहणाइं' ति एकपक्षस्योत्कृष्टस्थितिकत्वात् (वृ० प० ८२९)
- २५. उक्कोसेणं अट्टासीति वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहि अब्भिहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ३। (श० २४।१८६)
- २६,२७. 'अडयालीसाए संवच्छरेहि अब्भिह्याइं' ति चतुर्षु द्वीन्द्रियभवेषु द्वादशाब्दमानेष्वष्टचत्वारिशत् संवत्सरा भवन्ति तैरभ्यधिकान्यष्टाशीतिषंसहस्त्राणी ति । (वृ० प० ८२९)
- २८. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिंद्वतीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया।
- २९. तिसु वि गमएसु, नवरं—इमाइं सत्त नाणत्ताइं—
- ३०. १. सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं।

<sup>\*</sup>लय: चतुर नर समझो ज्ञान विचार

९४ भगवती जोड़

- बेइंद्रिय छै ते ३१. जघन्य आउखावंत, हुंत, पृथ्वीवत अवगाहना।। बिचलै त्रिहुं गम ३२. जिम पुढवी नीं आंगुल तणोंजभागजे। जाण, असंख्यातमां माण, जघन्य जेष्ठ अवगाहना ॥ ३३. बेन्द्रिय नीं पिण एह, जघन्य स्थितिक छै ते भणी। अनें ओघिक गमकेह, द्वादश योजन कही ॥
- ३४. \*सम्यकदृष्टि ते नहीं जी, मिथ्यादृष्टी होय। मिश्रदृष्टि पिण नहीं हुवै जी, तास न्याय अवलोय।।

## सोरठा

- ३५. जघन्य आउखावंत, बेइंद्रिय छै तेह में। सास्वादन निंह हुंत, सम्यक्त वमत न ऊपजै।। ३६. पूर्व चिउं गमा मांय, सम्यकदृष्टी पिण कह्यो। मध्यम स्थिति पिण पाय, सम्यक्त वमतो ऊपजै।।
- ३७. \*निश्चै बे अज्ञान छै जी, पिण ज्ञानी निहं थात। पूर्व त्रिहुं गम नैं विषे जो, ज्ञानी पिण आख्यात।।
- ३८. मन जोगी ते निहं हुवै जी, वच जोगी पिण नांय। काय जोगी कहियै तसु जी, हिवै तसु न्याय कहाय।

## सोरठा

- ३९. जघन्यायुष्कपणेह, अपर्याप्तपणां थकी । वचन योग निंह लेह, धुर त्रिहुं गम वच पिण कह्यां।।
- ४०. \*स्थिति जघन्य उत्कृष्ट थी जी, अंतर्मृहूर्त्त इष्ट । प्रथम त्रिहुं गम नें विषे जी, बार वर्ष स्थिति जिष्ट ।।
- ४१. अध्यवसाय बुरा हुवै जी, जीव बेइंद्रिय एह। जघन्य आउखावंत छै जी, पृथ्वी विषे ऊपजेह।।

#### सोरठा

- ४२. पूर्वे धुर गम तीन, प्रशस्त नें अपसत्थ पिण। उभय रूप त्यां चीन, छठो णाणत्तो ते भणी।।
- ४३. \*अनुबन्ध स्थिति तणीं परै जी, सप्तम णाणत्तो लेह । बिचला त्रिहुं गम नैं विषे जी, सप्त णाणत्ता एह ।। हिवै कायसंवेध कहै छै। तिण में बिचला तीन गमा में आदि नां दोय गमा नों संवेध प्रथम कहै छै—
- ४४. संवेध मध्यम त्रिण गम विषे जी, आदि वे घुर गमकेह। ओधिक आदि वे गम कह्या जी, तिमहिज कहिवूं एह।।
- \*लय: चतुर नर समझो ज्ञान विचार

- ३२,३३. शरीरावगाहना यथा पृथिवीकायिकानामंगुला-संख्येयभागमानिमत्यर्थः प्राक्तनगमत्रये तु द्वादश-योजनमानाऽप्युक्तेति ? (वृ०प०७२९)
- ३४. २. नो सम्मिदिट्टी, मिच्छादिट्टी, नो सम्मामिच्छा-दिट्टी।
- ३५. 'नो सम्मदिद्वी' जघन्यस्थितिकतया सासादनसम्यः-दृष्टीनामनुत्पादात्। (वृ० प० ८२९)
- ३६. प्राक्तनगमेषु तु सम्यग्द्बिटरप्युक्तोऽजघन्यस्थिति-कस्यापि तेषु भावात् २। (वृ० प० ८२९)
- ३७. ३. दो अण्णाणा नियमं । तथा द्वे अज्ञाने प्राक्च ज्ञाने अप्युक्ते ३। (व्० प० ८२९)
- ३८. ४. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी।
- ३९. तथा योगद्वारे जघन्यस्थितिकत्वेनापर्याप्तकत्वान्न वाग्योगः प्राक् चासावप्युक्तः ४। (वृ० प० ८२९)
- ४०. ५. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं तथा स्थितिरिहान्तर्मुहूर्त्तमेव प्राक् च संवत्सरद्वादशकमि ५ । (वृ• प० ८२९) ४१. ६. अज्भवसाणा अपसत्था ।
- ४२. तथाऽध्यवसानानीहाप्रशस्तान्येव प्राक् चोभयरूपाणि ६। (वृ० प० ६२९)
- ४३. ७. अणुबंधो जहा ठिती ।
- ४४-४६. संवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, संवेधस्तु द्वितीयत्रयस्याद्ययोर्द्वयोर्गमयोद्दत्कर्षतो संख्येयभवलक्षणः कालादेशेन च संख्येयकाललक्षणः भवादेशेन ७। (वृ० प० ८२९)

**श० २४, उ० १२, ढा० ४२१ ९**४

- ४५. तुर्यं अने पंचम गमे जी, भव आश्रयी आख्यात। जघन्य थी बे भव ग्रहण छै जी, उत्कृष्टा संख्यात।। ४६. काल आश्रयी जघन्य थी जी, अंतर्मुहूर्त्तं दोय। उत्कृष्ट काल संखेज छै जी, संख भवां नों सोय।।
- बा॰—इहां जघन्य वे अंतर्मुहूर्त्तं कह्या । बिहुं पक्षे जघन्य स्थिति माटै उत्कृष्ट संख्याता भव कह्या । हिवै बिचला तीनूं गमा में तीजा गमा नों संवेध भव आश्रयी तो ओघिक नां तीजा गमा नों कह्यो तिमहिज जघन्य २ भव, उत्कृष्ट प्रभव कहिवा। ते गाथाइं करी कहै छै—
  - ४७. बिचला तीजा गमा मभे जी, तीजे गमे इम इष्ट। भव आश्रयी तिमहीज छै जी, जघन्य बे अठ उत्कृष्ट।।
  - ४८. काल आश्रयी जघन्य थी जी, वर्ष बावीस हजार । अंतर्मुहर्त्त अधिक ही जी, बेभव अद्धा धार ।।
- ४९. उत्कृष्ट अद्ध अठ भव तणों जी, वर्ष अठघासी हजार । अंतर्मुहूर्त्तं चिउं विल जी, ए षष्ठम गम अधिकार ।। हिवै सातमो, आठमो, नवमो गमक कहै छै —
- ५०. तेहिज बेइंद्रिय हुवो जी, जेष्ठ काल स्थितिमंत। तेहनां पिण धुर त्रिण गम जिसा जी, चरम तीन गम हुंत।।
- ५१. णवरं चरम त्रिण गम विषे जी, स्थिति जघन्य उत्कृष्ट । बार सवंच्छर नीं कही जी, अनुबन्ध पिण इम इष्ट ।।

- ५२. उत्कृष्ट गमेज संध, दोय णाणता ए कह्या । आयुष नें अनुबन्ध, सात कह्या जघन्य गमे ।।
- ५३. \*भव आश्रयी जघन्य थी जी, बे भव ग्रहण कराय। धुर भव बेइंद्रिय तणों जी, पुढवी नों बीजो पाय।।
- ५४. उत्कृष्टा अठ भव कह्या जी, बेइंद्रिय भव च्यार।
  पृथ्वी नां भव चिउं वली जी, हिव अद्धा अधिकार।।
- ५५. किह्वो कालज आश्रयी जी, उपयोगे करि एह। यावत नवमा गम विषे जी, आख्यो सूत्र विषेह।।

#### सोरठा

५६. जाव शब्द में जेह, सप्तम अष्टम गम विषे। कायसंवेह, चित्त लगाई सांभलो ॥ कहियै जघन्य थी। ५७. सप्तम गमे संवेह, भव अद्धा पुढवी अंतर्म्हर्त्तं स्थिति ॥ द्वादश वर्षज लेह, वर्ष अठचासी सहस्र जे। तास, ५८. उत्कृष्ट अद्धा भवां नों काल ते ॥ वलि अड्ताली वास, अष्ट

- ४७. तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ट भवग्गहणाइं।
- ४८. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्हियाइं।
- ४९. उक्कोसेणं अट्टासीति वाससहस्साइं च उहि अंतो-मुहुत्तेहि अब्भहियाइं। (श० २४।१८७)
- ५०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा ।
- ५१. नवरं—ितसु वि गमएसु ठिती जहण्णेणं बारस संवच्छराइं, उक्कोसेण वि बारस संवच्छराइं। एवं अणुबंधो वि।
- ५३. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं,
- ५४. उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाई।
- ५५. कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं जाव

<sup>\*</sup>लय: चतुर नर समझो ज्ञान विचार

९६ भगगती जोड

- ५९. अष्टम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थो। द्वादश वर्षज तेह, अंतर्मृहूर्त्त अधिक फुन।। ६०. उत्कृष्ट अद्धा धार, अड़तालीसज वर्षजे। अंतर्मृहूर्त्तं च्यार, अष्ट भवां नों आखियो।।
- ६१. \*नवमा गमा विषे जघन्य थी जी, बे भव नों अवधार। वर्ष सहस्र बावीस छै जी, अधिक सवंच्छर बार।।

- ६२. द्वादश वर्ष जगीस, बेइंद्रिय उत्कृष्ट स्थिति। वर्ष सहस्र बावीस, पुढवी नीं पिण जेष्ठ स्थिति।। ६३ \*उत्कृष्ट अद्धा आखियो जी, वर्ष अठघासी हजार। वर्ष अड़ताली अधिक ही जी, एतलो काल विचार।।
- ६४. बेइंद्रिय भव च्यार, वर्ष अष्ट चालीस तसु।
  फुन अठघासी हजार, पुढवी चिउं भव नीं स्थिति।।
  पृथ्वीकाय में तेइंद्रिय अपजै, तेहनों अधिकार'
- ६५. \*जो तेइंद्रिय थी ऊपजै जी, पृथ्वीकायिक मांय। इमहिज पूर्वली परै जी, नव गमका कहिवाय।। ६६. णवरं धुर त्रिहुं गम विषे जो, तनु अवगाहन जघन्य। असंख भाग आंगुल तणों जी, जेष्ठ गाउ त्रिण जन्य।।
- ६७. इंद्रिय तीन हुवै तसु जी, फर्श रसन नें घ्राण ।
  स्थिति जघन्य तेइंद्रिय तणीं जी, अंतर्मृहूर्त्तं जाण ।।
  ६८. उत्कृष्टी स्थिति तेहनीं जी, जे एगुणपच्चास ।
  रात्रि अनें दिन नीं कही जी, वर जिन वचन विमास ।।
  ६९. तृतीय गमे काल आश्रयी जी, जघन्य थकी संवेह ।
  वर्ष सहस्र बावीस नीं जी, अंतर्मृहूर्त्तं अधिकेह ।।

#### सोरठा

७०. अंतर्मुहूर्त्तं जगीस, घुर भव तेइंद्रिय स्थिति। वर्षं सहस्र बावीस, पुढवी नीं उत्कृष्ट स्थिति।। ७१. \* उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे जी, वर्ष अठघासी हजार। एकसौ नें छिन्नूं विल जी, दिवस-रात्रि अवधार।।

#### सोरठा

७२. तेइंद्रिय नीं तास, इक भव उत्कृष्टी स्थिति। दिन-निशि गुणपच्चास, इकसौ छिन्नू चिउं भवे।। ७३. वर्ष बावीस हजार, पुढवी उत्कृष्टी स्थिति। चिउंभव करि सुविचार, वर्ष अठघासी सहस्र ह्वै।।

\*लय: चतुर नर समझो ज्ञान विचार

१. परि. २, यंत्र ३२

- ६१. नवमे गमए जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं बारसिंह संवच्छरेहि अञ्भहियाइं।
- ६३. उक्कोसेणं अट्टासीति वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ७-९। (श० २४।१८८)
- ६५. जइ तेइंदिएहिंतो उववज्जंति ? एवं चेव नव गमगा भाणियव्वा ।
- ६६. नवरं—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं।
- ६७. तिण्णि इंदियाइं। ठिती जण्हणेणं अंतोमुहुत्तं।
- ६८. उक्कोसेणं एगूणपन्नं राइंदियाइं।
- ६९. तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ।
- ७१. उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइं छण्णउयराइंदिय-सयमब्भिहियाइं,

श॰ २४, उ० १२, ढा० ४२१ ९७

- ७४. \*सेवै कालज एतलो जो, ए गति-आगति काल। ओघिक नैं उत्कृष्ट गमो जी, दाख्यो तृतीय दयाल।।
- ७५. बिचला जे तीनूं गमा जी, कहिवा तिणहिज रीत। छेहला पिण तीनूं गमा जी, इमहिज छै सुवदीत।।
- ७६. णवरं इतरो विशेष छै जी, जघन्य अनें उत्कृष्ट । गुणपचास दिन-रात्रि नीं जी, उत्कृष्ट गम स्थिति इष्ट ।।
- ७७. मन स्ं उपयोगे करी जी, जाणवो तास संवेह। जुओ-जुओ कहियै तिको जी, सांभलजो गुणगेह।।

- ७८. तुर्ये गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्ते बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।। इहां बिहुं भव नां बे अंतर्मुहूर्त्ते जघन्य थी कह्या। ते बिहुं पक्ष जघन्य स्थिति माटै उत्कृष्ट संख्याता भव कह्या।
- ७९. पंचम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहूर्त्त लेह, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।। इहां पिण चउथा गमा नीं परै बिहुं पक्ष जघन्य स्थिति माटै उत्कृष्ट भव संख्याता कह्या।
- ८०. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त लेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। इहां एक पक्ष उत्कृष्ट स्थिति मार्ट ८ भवां नों काल कहै छै—
- ५१. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों आखियो। अंतर्म्हृत्तं च्यार, वर्ष अठचासी सहस्र फून।।
- ५२. सप्तम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। गुणपचास निशि-देह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।। इहां एक पक्ष उत्कृष्ट स्थिति मार्ट उत्कृष्ट ५ भव। तेहनों काल कहै छै—
- ५३. उत्कृष्ट अद्धा धार, इक सय छिन्नूं दिवस-निशि। वर्ष अठ्यासी हजार, अष्ट भवां नों इह विधे।।
- ५४. अष्टम गम अवदात, बे भव अद्धा जघन्य थी। गुणपचास दिन-रात, अंतर्मुहर्त्त अधिक फुन।।
- ५५. उत्कृष्ट अद्धा ख्यात, बे भव अद्धा जघन्य थी। गुणपचास दिन-रात, वर्ष सहस्र बावीस फुन।।
- ५६. उत्कृष्ट अद्ध विचार, इक सय छिन्नूं दिवस-निशि। वर्ष अठ्यासी हजार, अष्ट भवां नों आखियो।। पृथ्वीकाय में चर्डारद्विय ऊपजै, तेहनों अधिकार
- का चर्डारद्विय थी ऊपजै जी, पृथ्वीकाय विषेह।
   कह्या नव गम तेइंद्री तणां तिम, चर्डारद्वी नां पिण लेह।

- ७४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा।
- ७५. मिज्समा तिण्णि गमगा तहेव, पिन्छमा वि तिण्णि गमगा तहेव ।
- ७६. नवरं— ठिती जहण्णेणं एगूणपन्नं राइंदियाइं, उक्कोसेण वि एगूणपन्नं राइंदियाइं।
- ७७. संवेहो उवजुंजिऊण भाष्यिक्वो १-९। (भ० २४।१६९)

८७. जइ चउरिंदिएहिंतो उववज्जंति ? एवं चेव चउरिं-दियाण वि नव गमगा भाणियन्वा ।

<sup>\*</sup>लयः चतुर नर समझो ज्ञान विचार

१. परि. २, यंत्र ३३

९८ भगवती जोड़

- ददः णवरं इता स्थानक विषे जी, नानात्व भेद भणेह। अवगाहना स्थिति इंद्रिये जी, अनुबंध मांहि कहेह।।
- ६९. तनु अवगाहन जघन्य थी जी, आंगल नों अवधार। असंख्यातमों भाग छै जी, उत्कृष्ट गाऊ च्यार।।
- ९०. स्थिति जघन्य थी जाणवी जी, अंतर्मृहूर्त्तं जास । उत्कृष्टी षट मास नीं जी, अनुबन्ध पिण इम तास ।।
- ९१. श्रोत विना चिउं इंदियां जी, शेष तिमज अवदात। यावत नवमा गमा विषे जी, संवेध सूत्रे ख्यात।।

- ९२. जाव शब्द में जेह, अष्ट गमां नों इह विधे। कहिवो जे संवेह, आखूं उपयोगे करी।
- ९३. प्रथम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।।
- ९४. द्वितीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।।

इहां प्रथम, बीजे गमे चर्डारद्री नीं अनैं पृथ्वी नीं ए बिहुं पक्षे जधन्य स्थिति माटै उत्कृष्ट संख्याता भव कह्या।

- ९५. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्म्हूत्तं लेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। इहां एक पक्ष पृथ्वी नीं उत्कृष्ट स्थिति माटै उत्कृष्ट अष्ट भव। तहनों काल कहै छैं—
- ९६. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। चुउरिद्रिय बे वास, वर्ष अठघासी सहस्र फुन।।
- ९७. तुर्यं गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहत्तं बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।
- ९८. पंचम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त बेह, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।।

इहां चउथे, पंचमे गमे बिहुं पक्षे चउरिंद्री अनै पृथ्वी नीं जघन्य स्थिति माटै उत्कृष्ट संख्याता भव कह्या ।

- ९९. षष्ठम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त तेह, वर्षे सहस्र बावीस फुन।। इहां एक पक्ष पृथ्वी नीं उत्कृष्ट स्थित माटै उत्कृष्ट आठ भव।
- इहां एक पक्ष पृथ्वी नीं उत्कृष्ट स्थिति माटै उत्कृष्ट आठ भव । तेहनों काल कहै छै-
- १००. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों इह विधे। अंतर्मुहूर्त्त च्यार, वर्षे अठघासी सहस्र फुन्।।
- १०१. सप्तम गम सुविमास, बे भव अद्धा जघन्य थी। चउरिद्रिय षट मास, पुढवी अंतर्मुहूर्त्त फुन।।

इहां एक पक्षे उत्कृष्ट स्थिति मार्ट उत्कृष्ट म भव । तेहनों काल कहैं फै---

- ८८. नवरं-एतेसु चेव ठाणेसु नाणत्ता जाणियव्वा।
- सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं।
- ९०. ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं य छम्मासा।एवं अणुबधो वि।
- ९१. चत्तारि इंदियाई । सेसं तहेव जाव नवमगमए-

- १०२ उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। चउरिद्रिय बे वास, वर्ष अठघासी सहस्र महि।।
- १०३. अष्टम गमके जास, बे भव अद्धा जघन्य थी। चउरिद्रिय षट मास, पुढवी अंतर्महूर्त्त फुन।। इहां एक पक्षे चउरिद्रिय नी उत्कृष्ट स्थिति माटे उत्कृष्ट प्रव। तेहनों काल कहे छै—
- १०४. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे।
  चर्जारद्रिय बे वास, अंतर्मुहूर्त्त चिउं महि।।
  १०५. सूत्रे नवम जगीस, काल आश्रयी जघन्य थी।
  वर्ष सहस्र बावीस, षट मासे करि अधिक फुन।।
  इहां चर्जारद्रिय नीं अने पृथ्वी नीं ए बे पक्ष उत्कृष्टी स्थिति माटै उत्कृष्ट
  आठ भव। तेहनों काल—
- १०६. उत्कृष्ट अद्धा तास, वर्ष अठघासी सहस्र जे। फुन चउवीसज मास, अष्ट भवां नों आखियो।।
- १०७.\*सेवै कालज एतलो, करै गति-आगति इतो काल। उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट गमो जी, दाख्यो नवम दयाल।।

१०८. इण ढाले इम ख्यात, जेह णाणत्ता नें संजात, ऊपजता विकलेंद्री नैं।। विषे १०९. जघन्य गमे सुजाण, सात णाणत्ता तेहनां। धुर अवगाहण माण, दृष्टि मिथ्या नैं ज्ञान इक संध, आयु अंतर्म्हर्त्तं ११०. काय जोग अनुबंध, खोटा अध्यवसाय तसु ॥ १११. उत्कृष्ट गमे प्रबन्ध, स्थिति उत्कृष्टी आख्या एवे णाणत्ता।। आयु सम अनुबन्ध, ११२. जेह ठिकाणे जोय, ऊपजता विकलेंद्रिय एह णाणत्ता होय, जघन्य फुन उत्कृष्ट गम।। ११३. \*देश चउबीसम बारमो जी, चिउंसौ इकवीसमीं ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी, 'जय-जश' मंगलमाल।।

- १०५. कालादेसेणं जहण्णेणं वावीसं वाससहस्साइं छहिं मासेहि अञ्भहियाइं।
- १०६. उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहि अब्भहियाइं।
- १०७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागीत करेज्जा १-९। (श• २४।१९०)

<sup>\*</sup>लय: चतुर नर समझो ज्ञान विचार

१०० भगवती जोड़

## ढाल: ४२२

#### दूहा

- १. जो पंचेंद्रिय थकी, पृथ्वी में ऊपजंत। स्यूं सन्नी पं. तिरि थकी, कै असन्नी थी हुंत?
- २. जिन कहै सन्नी पं. तिरि, असन्नी पं. तिरि जाण। एह उभय थी ऊपजै, पृथ्वी विषे पहिछाण।।
- ३. जो असन्नी पं. तिरि थकी, स्यूं जलचर थी हुंत। यावत पर्याप्त थकी, कै अपज्जत्त थी हुंत?
- ४. जिन भाखें पर्याप्त थी, पुढवी में ऊपजेह। अपज्जत्त थी पिण ऊपजै, विल गोयम पूछेह।।

पुण्वीकाय में असन्नी तिर्यच पंचेंद्रिय ऊपजै, तेहनों अधिकार'-

# ओघिक नैं ओघिक (१)

\*सुणजो बारमुद्देशक मही तणों रे लाल ।। (ध्रुपंद)

५. प्रभु ! असन्नी पंचेंद्रिय तिरि जिको रे,

पुढवीकाय विषेह हो । जिनेंद्र देव !

जे ऊपजवा जोग्य छै रे लाल,

ते कितै काल स्थितिक उपजेह हो ? जिनेंद्र देव !

६. श्री जिन भाखें जघन्य थी रे,

अंतर्मुहूर्त्त विषेह रे। गोयम गुणवंता ! जेष्ठ बावीस सहस्र वर्ष नीं रे लाल,

स्थितिक विषे उपजेह रे।। गोयम गुणवंता !

७. प्रभु ! एक समय किता ऊपजै रे ?;

इम जिम बेइन्द्रिय नां ताय रे। लब्धि ओधिक गमा विषे रेलाल,

दाखी तिमज कहाय रे।।

पवरं तनु अवगाहना रे, जघन्य थकी अवधार रे।असंख भाग आंगुल तणों रे लाल,

उत्कृष्ट योजन हजार रे।।

- ९. स्थिति अनुबन्ध पं. तिरि तणों रे, जघन्य अंतर्मृहूर्त्त होय रे। कोड़ पूर्व उत्कृष्ट थी रे लाल, शेष तिमज अवलोय रे।।
- १०. भवादेश भव आश्रयी रे, जघन्य थकी इम वट्ट रे। बेभव ग्रहण करें तिको रेलाल, उत्कृष्टा भव अट्ट रे।।

- १. जइ पंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—िकं सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जिति ? असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जित ?
- २. गोयमा ! सिण्णपंचिदिय, असिण्णपंचिदिय । (श. २४।१९१)
- ३. जइ असिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति — किं जलचरेहिंतो उववज्जंति जाव किं पज्जत्तए-हिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?
- ४. गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति, अपज्जत्त-एहिंतो वि उववज्जंति । (श॰ २४।१९२)

- ५. असिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भिविए पुढिविक्काइएसु उवविज्ञित्तए, से णं भंते ! केवितकालिट्टितीएसु उववञ्जेञ्जा ?
- ६. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहृत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सद्वितीएसु। (श० २४।१९३)
- ७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया जववज्जंति ? एवं जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव,
- प्तः नवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंवेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।
- ९. ठिती अणुबंधो य जद्गण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुन्वकोडी । सेसं तं चेव ।
- १०. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अटु भवग्गहणाइं।

श• २८, उ० १२, ढा० ४२२ - १०१:

<sup>\*</sup>लय : धीज करें सीता सती रे जाल

१. परि. २, यंत्र ३४

११. उत्कृष्टा भव अट्ठ, इण वचने इम जाणिये। ते पंचेंद्रिय प्रगट्ट, करै निरंतर अष्ट भव।। १२. इमज सरीखा ख्यात, भव अंतरिता पिण जिके। भव अंतरित संघात, अष्ट इज भव इम वृत्तौ।।

वाo—जिम उत्तराध्ययन अध्ययन १० में तियँच पंचेंद्रिय नां निरन्तर भव करैं तो उत्कृष्टा द कह्या, तिम अष्ट भव—एक भव तियँच पंचेंद्रिय नों, दूजो पृथ्वीकाय नों। तीजो तियँच पंचेंद्रिय नों, चउथो पृथ्वीकाय नों। पांचमों तियँच पंचेंद्री नों, छठो पृथ्वीकाय नों। सातमों पंचेंद्रिय नों, आठमों पृथ्वीकाय नों— इम भवांतरित पिण अष्ट भव जाणवूं। इम न्याय वृत्तिकार कह्यूं। इहां सूत्र में उत्कृष्ट आठ भव कह्या ते माटै।

- १३. \*काल आश्रयी जघन्य थी रे, अंतर्मृहूर्त्त बे धार रे। उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिउं रे लाल, वर्ष अठ्यासी हजार रे।।
- १४. सेव कालज एतलो रे, कर गित-आगित इतो काल रे। ओघिक नें ओघिक गमो रेलाल, दाख्यो प्रथम दयाल रे।।
- १५. नव ही गमक विषे तसु रे, कायसंवेध सुघट्ट रे। जघन्य थकी भव दोय छैरे लाल, उत्कृष्टा भव अहु रे।।
- १६. काल आश्रयी जेहनों रे, मन नैं उपयोगेह रे। कहिनो सर्व विचार नैं रे लाल, णवर विशेष छै एह रे।।
- १७. बिचला तीन गमा विषे रे, बेइंद्रिय नां जेम रे। जघन्य गम सत्त णाणता रेलाल, दाख्या कहिवा तेम रे।।
- १८. छेहला तीन गमा विषे रे, जिम एहनांज विचार रे। प्रथम गमा नैं विषे कह्यों रे लाल, कहिवूं तिमज प्रकार रे।।
- १९. णवरं इतरा विशेष छैरे, स्थिति अनैं अनुबंध रे।
- जघन्य अने उत्कृष्ट थी रे लाल, पूर्व कोड़ज संघ रे।। २०. शेष तिमज कहिवो सहु रे, यावत नवमे गमेह रे। काल थकी सूत्रे कह्यो रे लाल, आगल कहिस्ये जेह रे।।

इति प्रथम गमा नों कायसंवेध तो सूत्रे पूर्वे कह्य ंज छै। अनैं शेष आठ गमा नैं विषे कायसंवेध उपयोगे करी जूओ-जूओ कहिवो, ते लिखिये छैं—

# सोरठा

२१. द्वितीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहूर्त्त बेह, ए पिण बिहुं भव जघन्य स्थिति ॥ अष्ट भवां तणी। अवधार, अद्धा २२. उत्कृष्टो चिउं अधिक ।। च्यार, अंतर्मुहूर्त्त पूर्व कोड़ज बे भव अद्धा जघन्य थी। २३. तीजे गमे संवेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। जेह, अंतर्म्हृत्ते भवां तणों। अद्धा अष्ट अवधार, २४. उत्कृष्टी पूर्व कोड़ज च्यार, वर्ष अठघासी सहस्र वली।।

\*लय : धीज करें सीता सीत रे लाल

१०२ भगवती जोड़

११,१२. 'उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं' ति अनेनेदमव-गम्यते — यथोत्कर्षतः पञ्चेन्द्रियतिरक्ष्चो निरन्तरमष्टौ भवा भवन्ति एवं समानभवान्तरिता अपि भवान्तरैः सहाष्टैव भवन्तीति, (वृ० प० ८२९)

- १३. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ,
- **१**४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा।
- १४. नवसु वि गमएसु कायसंवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अहु भवग्गहणाइं।
- **१६. कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं, नवरं**—
- १७. मज्भिमएसु तिसु गमएसु जहेव बेइंदियस्स,
- १८. पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एतस्स चेव पढमगमएसु,
- १९. नवरं ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुब्वकोडी, उक्कोसेण वि पुब्वकोडी।
- २०. सेसं तं चेव जाव नवमगमएसु-

२१,२२. द्वितीये तूत्कृष्टोऽसौ चतस्रः पूर्वकोटघश्चर्जाभ-रन्तर्मुहूर्त्तेरिधकः, (वृ० प० ६२९)

२३,२४. तृतीये तु ता एवाष्टाशीत्या वर्षसहस्रैरधिकाः, (वृ० प॰ ८२९)

२५. चउथे गमे संवेह, बेभव अद्धा जघन्य थी। जघन्य स्थिति भव उभय नीं।। बेह, २६. उत्कृष्टो सुविमास, अद्धा अष्ट भवां तणों। सहंस अठचासी वास, अंतर्मुहर्त्त चिउं अधिक।। २७. पंचम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। असन्नी तिरि दूजो मही।। अंतर्मुहर्त्ते बेह, इक २८. उत्कृष्टो इम वट्ट, अद्धा अष्ट भवां अंतर्मुहूर्त्त अट्ठ, चिउं असन्नी तिरि चिउं मही।। गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य २९. षष्ठम सहस्र बावीस जे।। अन्तर्मृहत्ते जेह, वर्ष ३०. उत्कृष्टो अवधार, भवां तणों । अद्धा अष्ट वर्ष अठघ सी सहस्र अन्तर्म्हर्त्तं च्यार, फून ॥ संवेह, बे भव अद्धा जघन्य ३१. सप्तम गम थी। पूर्व कोड़ अन्तर्मुहूर्त्त कहेह, अधिक फून।। ३२. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। पूर्व कोड़ज च्यार, वर्ष अठघासो सहस्र वली।। ३३. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अधिक वली।। पूर्व कोड़ज अंतर्मृहूर्त्त लेह, ३४. उत्कृष्टो अष्ट भवां तणों। अवधार, अद्धा अंतर्मुहूर्त्ते चिउं अधिक।। पूर्व कोड़ज च्यार, ३५. नवमां सूत्र विषेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। पूर्व कोड़ कहेह, वर्ष सहस्र बावीस जे ॥ ३६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। पूर्व कोड़ज च्यार, वर्ष अठघासी सहस्र वली।। ३७. \*सेवै कालज एतलो रे, करै गति-आगति इतो काल रे। उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट गमो रे लाल, दाख्यो नवम दयाल रे।।

# पृथ्वीकाय में संख्याता वर्ष नां सन्नी तियँच पंचेंद्रिय ऊपर्ज, तेहनों अधिकार'-

३८. जो सन्नी पंचेंद्री तियाँच थी रे, पृथ्वी विषे उपजंत रे। तो संख्यात वर्षायुष थकी रेलाल,

कै असंख वर्षायु थी हुंत रे ?

३९. जिन कहै वर्ष संख्यात नां रे, स्थितिक सन्नी तिरि जोय रे।
पृथ्वी विषे ते ऊपजै रे लाल, असंख वर्षायु न होय रे।।

४०. जो संख वर्षायु सन्नी तिरि हुवै रे,

तो स्यूं जलचर थी थाय रे?

शेष जेम असन्ती भणी रे लाल , आख्यो तिम कहिवाय रे ।।

# ओघिक नें ओघिक (१)

४१. यावत ते प्रभु! जीवड़ा रे, एक समय रै मांय रे। केतला आवी ऊपजैरे लाल, इत्यादि कहिवाय रे?

\*लय: धीज करंसीता सती रेलाल

- ३५,३६. जहण्णेणं पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ,
- ३७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालंगितरागीत करेज्जा १-९। (श० २४।१९४)
- ३८. जइ सिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति
   कि संखेज्जवासाउय ? असंखेज्जवासाउय ?
- ३९. गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय। (श० २४:१९५)
- ४०. जइ संखेजजवासाउय० कि जलयरेहितो० ? सेसं जहा असण्णीणं,
- ४१. जाव— (श० २४।१९६) ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति?

श• २४, उ० १२, ढा• ४२२ १०३

१. देखे परि. २, यंत्र ३५

- ४२. इम जिम रत्नप्रभा विषे रे, सन्नी पंचेंद्री तियँच रे। ऊपजता नें आखियो रे लाल, तेम इहां पिण संच ।।
- ४३. यावत अद्धा आश्रयी रे, जघन्य थकी अवलोय रे। अंतर्म्हूर्त्त बेकह्या रे लाल, जघन्यायु भव दोय रे।।
- ४४. उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे रे, पूर्व कोड़ज च्यार रे। सहस्र अठघासी वर्ष वली रे लाल,

इतो काल गतागति धार रे।।

- ४५. संवेध इम नव गम विषे रे, जिम असन्नी नैं ख्यात रे। तेम इहां पिण सर्व ही रे लाल, कहिवूं जे अवदात रे।।
- ४६. परिमाण संघयणादिक तणीं रे, लब्धि प्राप्ति छै तेह रे। ए प्रथम तीनूंगम नैं विषेरे लाल,

जिम रत्नप्रभा मे अपजेह रे।।

#### सोरठा

- ४७. पृथ्वीकाय विषेह, सन्नी पं तियेंच जे। ऊपजता नेंं लेह, पहिला तीन गमा विषे॥
- ४८. रत्नप्रभा रै मांहि, सन्नी पं. तियँच जे। ऊपजता नैं ताहि, लब्धि कही तेहिज इहां।।
- ४९. \*बिचला पिण त्रिहुं गम विषे रे, एहिज लब्धि कहाय रे। णवरं इतलो विशेष छै रे लाल, एनव णाणत्ता पाय रे।।
- ५०. तनु अवगाहना तेहनीं रे, जघन्य अनैं उत्कृष्ट रे। असंख्यातमी भाग छैरे लाल, आंगुल नों तसू इष्ट रे।।
- प्रश. लेक्या तीन माठी कही रे, मिथ्यादृष्टी होय रे। दोय अज्ञान हुवै तसुरे लाल, काय जोगी इक जोय रे।।
- ५२. समुद्रघात घुर त्रिण हुवै रे, स्थिति जघन्य उत्कृष्ट रे। अंतर्महूर्त्त जाणवी रे लाल, अपर्याप्तो ए इष्ट रे।।
- ५३. अध्यवसाय माठा हुवे रे, स्थित जितो अनुबंध रे। शेष तिमज कहिवो सहु रे लाल, ओघिक गम जिम संध रे।।
- ५४. छेहला तीन गमा विषे रे, प्रथम गमे जिम लेख रे। कहिवो तिणहिज रीत सुरेलाल, णवरं इतरो विशेख रे।।
- ५५. स्थिति अनुबन्ध बे णाणत्ता रे, जघन्य अने उत्कृष्ट रे।
  पूर्व कोड़ तणां कह्या रे लाल, शेष तिमज सहु इष्ट रे।।
  पृथ्वीकाय में मनुष्य ऊपजै—
- ५६. मनुष्य थकी जो ऊपजे रे, पृथ्वीकाय विषेह रे। तो सन्नी मनुष्य थी उपजे रे लाल, क असन्नी मनु थी लेह रे?
- ५७. जिन भाखें सुण गोयमा ! रे, सन्नी मनुष्य थी थाय रे। असन्नी मनु थी पिण हुवें रे लाल, पृथ्वीकायिक मांय रे।।

\*लय: धीज करें सीता सती रे लाल

१०४ भगवती जोड़

- ४२. एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि,
- ४३. जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता,
- ४४. उक्कोसेणं चत्तारि पुब्वकोडीओ अट्टासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा।
- ४५. एवं संवेहो नवसु वि गमएसु जहा असण्णीणं तहेव निरवसेसो।
- ४६. लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, 'लब्धिः' परिमाणसंहननादिप्राप्तिः,

(वृ० प० ८२९)

- ४७. 'से' तस्य पृथिवीकायिकेषूत्पित्सोः सञ्ज्ञिन आद्ये गमत्रये, (वृ० प० ८२९)
- ४८. 'एस चेव' त्ति या रत्नप्रभायामुहिपत्सोस्तस्यैव मध्यमेऽपि गमत्रये एषैव लब्धिः, (वृ० प० ८२९)
- ४९. मिष्भिल्लएसु तिसु वि गमएमु एस चेव, नवरं— इमाइं नव नाणत्ताइं—
- ५०. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उनकोसेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं।
- ५१. तिष्णि लेसाओ। मिच्छादिट्टी। दो अण्णाणा। कायजोगी।
- ४२. तिण्णि समुग्वाया । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।
- ४३. अप्पसत्था अज्भवसाणा। अणुबंधो जहा ठिती। सेसंतं चेव।
- ५४. पिच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव पढमगमए, नवरं—
- ५५. ठिती अणुबंधो य—जहण्णेणं पुब्वकोडी, उक्कोसेण वि पुब्वकोडी । सेसं तं चेव १-९ । (श० २४।१९७)
- ४६. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—िक सिष्णमणुस्सेहितो उववज्जति ? असिष्णमणुस्सेहितो उववज्जति ?
- ५७. गोयमा ! सिण्णमणुस्सेहितो उववज्जति, असिण्ण-मणुस्सेहितो वि उववज्जति । (११० २४।१९८)

# पृथ्वीकाय में असन्ती मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार'---

४८. असन्नी मनुष्य भगवंत जी ! रे, पृथ्वीकाय विषेह रे। कपजवा नें जोग्य छै रे लाल,

कितै काल स्थितिक उपजे**ह**ेरे?

५९. इम जिम असन्नी पं. तियँच नां रे,

गम जघन्य स्थितिक नां तीन रे। तिम असन्नी मनुष्य नां ओहिया रे लाल,

भणवा त्रिण गम चीन रे।।

६०. तिमज सर्व कहिवो इहां रे, षट गम शेष न होय रे। ते माटै इहां षट गमा रे लाल, तूटै छै अवलोय रे।।

वा० — इहां वृत्तिकार कह्यो — अजघन्योत्कृष्ट स्थितिकपणां संमूर्चिछम मनुष्य नां शेष ६ गमा न हुवै।

# पृथ्वीकाय में संख्याता वर्षं नां सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार -

६१. जो सन्नी मनुष्य थी ऊपजै रे, पृथ्वोकायिक मांय हो। स्यू संख्यात वर्षायु थकी रे लाल,

कै असंख वर्षायु थी थाय हो ?

६२. जिन भार्खे सुण गोयमा ! रे, संख्यात वर्षायु थी हुंत रे। असंख्यात वर्षायु थकी रे लाल, पृथ्वी में नहि उपजंत रे।।

६३. जो संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य थी रे,

पृथ्वी विषे उपजंत रे।

यकी

तो पर्याप्त थी स्यूं ऊपजै रे लाल, कै अपजत्त थी हुंत रे?

६४. जिन कहै पजत्त संख्यायु सन्नी रे, मनुष्य थकी उपजंत रे। अपजत्त संख वर्षायु सन्नी रे लाल, मनुष्य थकी पिण हुंत रे।

# ओघिक नैं ओघिक (१)

६५. सन्नी मनुष्य भगवंत जी ! रे, पृथ्वीकाय विषेह रे। ऊपजवा जे जोग्य छै रे लाल,

ते किती स्थितिके ऊपजेह रे?

६६. श्री जिन भाखे जघन्य थी रे, अंतर्मृहूर्त विषेह रे।। वर्ष सहस्र बावीस नीं रे लाल, उत्कृष्टी स्थिति लेह रे।

६७. ते एक समय किता अपजै रे ?

इम जिम रत्नप्रभा ने विषेह रे। ऊपजतां सन्नी मनुष्य नां रे लाल, तीन गमा कह्या जेह रे।।

६८. तिमहिज तीनूंई गमा विषे रे, लब्धि कहतां परिमाण रे। संघयणादिक बोल नीं रे लाल, प्राप्ति कहेवी जाण रे।।

६९. णवरं इहां अवगाहणा रे, जघन्य आंगुल नों इष्ट रे। असंख्यातमों भाग छैरे लाल, पांचसौ धनु उत्कृष्ट रे।।

- ५०. असिणमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालिट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ४९. एवं जहा असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णकालद्वितीयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा,
- ६०. तहेव निरवसेसं १-३ । सेसा छ न भण्णंति । (श० २४।१९९)

वा० अजघन्योत्कृष्टस्थितिकत्वात्, संमूच्छिम-मनुष्याणां न शेषगमषट्कसम्भव इति । (वृ० प० ८३२)

- ६१. जइ सिंणमणुस्सेहितो उववज्जंति—िक संखेज्ज-वासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?
- ६२. गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय। (श॰ २४।२००)
- ६३. जइ संखेज्जवासाउय० कि पज्जत्तासंखेज्जवासाउय०? अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ?
- ६४. गोयमा ! पज्जत्तासंखेज्जवासाउय, अपज्जत्ता-संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।

(श० २४।२०१)

- ६५. सिण्णमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्टितीएसु उववञ्जंति ?
- ६६. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सद्वितीएसु। (श० २४।२०२)
- ६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स,
- ६८. तहेव तिसु वि गमएसु लढी,
- ६९. नवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ-भागं, उक्जोसेणं पंचधणुसयाइं।

श॰ २४, उ० १२, ढा० ४२२ १०५

१. परि० २, यंत्र ३६

२. परि० २, यंत्र ३७

- ७०. रत्नप्रभा रे मांह, ऊपजतो सन्नी मनुष्य। जघन्य तास अवगाह, पृथक आंगुल नी कही।।
- ७१. इहां पृथ्वीकाय रै मांह, ऊपजतां सन्नी मनुष्य। जघन्य तास अवगाह, असंखभाग आंगुल तणों।।
- ७२. \*स्थिति जघन्य थी तेहनों रे, अंतर्मृहूर्त्त संध रे। उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नीं रे लाल, इमहिज छै अनुबंध रे।।

## सोरठा

- ७३. रत्नप्रभा रै मांहि, ऊपजतां सन्नी मनुष्य। जघन्य स्थिति कही ताहि, पृथक मास तणीं तिहां।।
- ७४. पृथ्वीकाय रै मांय, ऊपजतां सन्नी मनुष्य। जघन्य स्थिति कहिवाय, अंतर्मुहूर्त्तं नीं इहां।।
- ७५. उत्कृष्टी स्थिति तास, पूर्व कोड तणीं कही। एवं अनुबंध जास, इतरो विशेषज आखियो।।
- ७६. \*संवेध नवूं ही गमा विषे रे, जिम पृथ्वी रै मांय रे। ऊपजतां सन्नी तिरि रे लाल, आख्यो तिमज कहाय रे।।

#### सोरठा

- ७७. सन्नी मनुष्य तिर्यंच, पृथ्वीकायिक नें विषे। ऊपजतां नें संच, ओघिक त्रिण गम ए स्थिति।।
- ७८. जघन्य थकी स्थिति जाण, अंतर्मुहूर्त्तं नीं कही। उत्कृष्टी पहिछाण, पूर्व कोड़ प्रमाण छै।।
- ७९. \*बिचला तीन गमा विषे रे, लब्धि परिमाणादि जेह रे। जिम सन्नी तिरि मक्सम त्रिहुंगमे रे लाल, आखी तिका जाणेह रे।।

## सोरठा

- द०. सन्नी पं. तिर्यंच, जघन्य स्थितिक छै जे विषे। लब्धि पूर्व कही संच, तेहिज सूत्र करी इहां कथन।।
- ५१. \*शेष तिमज किह्वो सहु रे, कायसंविध सुजोय रे। सन्नी तियँच पृथ्वी ने विषे रेलाल, ऊपजै तिम ए होय रे।।
- ८२. छेहला तीन गमा विषे रे, जिम एहनांज विचार रे । ओघिक त्रिण गमका कह्या रे लाल, कहिवूं तिमज प्रकार रे ।।

#### सोरठा

- द्भ ओघिक गमा विषेह, असंख भाग आंगुल तणों। अवगाहन जघन्येह, अंतर्मुहूर्त्तं जघन्य स्थिति।।
- \*लय: धीज करं सीता सती रे लाल
- १०६ भगवती जोड़

- ७०,७१. रत्नप्रभायामुत्पित्सोहि मनुष्यस्यावगाहना जघन्येनाङ्गुलपृथक्त्वमुक्तमिह त्वङ्गुलासङ्ख्येय-भागः, (वृ० प० ८३२)
- ७२. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो ।
- ७३,७४. स्थितिश्च जघन्येन मासपृथक्त्वं प्रागुक्तमिह त्वन्तर्मुहूर्त्तमिति, (वृ० प० ६२२)
- ७६. संवेहो नवसु गमएसु जहेव सण्णिपंचिदियस्स ।
- ७७,७८. सञ्ज्ञिनो मनुष्यस्य तिरक्ष्यक्य पृथिवीकायिकेषु समुत्पित्सोर्जवन्यायाः स्थितेरन्तर्मृहूर्त्तप्रमाणस्वा-दुत्कृष्टायास्तु पूर्वकोटीप्रमाणत्वादिति, (वृ० प० ८३२)
- ७९. मिक्किल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णि-पंचिदियस्स मिक्किल्लएसु तिसु।
- ५०. जघन्यस्थितिकसम्बन्धिन गमत्रये लब्धिस्तथेह वाच्या यथा तत्रैव गमत्रये सञ्ज्ञिषञ्चेन्द्रियतिरश्च उक्ता सा च तत्सुत्रादेवेहावसेया, ((वृ० प० ५३२)
- ८१. सेसं तं चेव निरवसेसं।
- द२. पिन्छिल्ला तिष्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा,
- द३ ८४. औधिकगमेषु हि अंगुलासंख्येयभागरूपाऽप्य-वगाहनाऽन्तर्मृहूर्त्तरूपाऽपि स्थितिरुक्ता सा चेह न वाच्या अत एवाह — (वृ० प० ८३२)

- द४. ते इहां कहिवी नांय, तिण कारण आगल हिवै। णवरं पाठ कहाय, चित्त लगाई सांभलो।।
- ५५. \*णवरं इतरो विशेष छै रे, तनु अवगाहन जाण रे। जघन्य अने उत्कृष्ट थी रेलाल, पांचसौ धनुष्य प्रमाण रे।।
- द६. स्थिति तथा अनुबन्ध वली रे, जघान्य अनैं उत्कृष्ट रे। कहिवो पूर्व कोड़ नों रे लाल, शेष तिमज सहु इष्ट रे।। पृथ्वीकाय में देव ऊपजै—
- ५७. देव थकी जो ऊपजै रे, स्यूं भवणवासी थी उपजंत हो। व्यंतर नैं ज्योतिषो थको रे लाल, वैमानिक थी हुंत हो?
- ८८. जिन भाखै सुण गोयमा ! रे, भवणवासी सुर ताहि रे। जाव विमानिक सुर थकी रेलाल, ऊपजै पुढवी मांहि रे।।
- द९. जो भवणवासी सुर थी हुवै रे, तो स्यू असुर थी हुत रे। यावत थणियकुमार थी रे लाल, पृथ्वो विषे उपजंत रे?
- ९०. जिन भाखे सुण गोयमा ! रे, असुरकुमार थी हुंत रे। यावत थणियकुमार थी रे लाल, पुढवी में ऊपजंत रे।।

पृथ्वीकाय में असुरकुमार ऊपजै, तेहनों अधिकार -

# ओघिक नैं ओघिक (१)

- ९१. असुरकुमार भगवंत जी ! रे, पृथ्वीकाय विषेह रे। जे ऊपजवा जोग्य छै रे लाल,
  - ते कितै काल स्थितिके उपजेह रे?
- ९२. श्री जिन भाखै जघन्य थी रे, अंतर्महूर्त्त विषेह रे। वर्ष सहस्र बावीस नीं रे लाल, जत्कुष्टी स्थिति लेह रे।।
- ९३. ते एक समय किता ऊपजै ? जिन कहै जवन्य सुइष्ट रे। एक दोय त्रिण ऊपजै रे लाल, संख असंख उत्कृष्ट रे।।
- ९४. हे प्रभुजी ! ते जीव नैं रे, शरीर तणों सुविचार रे। स्यं संघयण परूपियो रे लाल, तब भाखे जगतार रे।।
- ९५. छ संघयणज मांहिलो रे, इक ही नहिं संघयण रे। जाव परिणमै तेहनें रे लाल, वारू ए जिन वयण रे।।
- ९६. हे प्रभु! ते जीवां तणें रे, कितली मोटी माण रे। शरीर तणी अवगाहना रेलाल, वारू प्रश्न विनाण रे।।
- ९७. जिन कहै तन् अवगाहना रे, दाखी दोय प्रकार रे। मूलगी ते भवधारणी रे लाल, उत्तरवैक्रिय सार रे।।
- ९८. तिहां जिका भवधारणी रे, जघन्य थकी आख्यात रे। असंख भाग आंगुल तणों रे लाल, उत्कृष्टी कर सात रे।।

- ५५. नवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं,
   उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं।
- ८६. ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव १-९ । (श• २४।२०३)
- प्ति अववज्जंति कि भवणवासिदेवेहिनो उववज्जंति ? वाणमंतरदेवेहितो, जोइसियदेवेहितो, वेमाणियदेवेहितो उववज्जंति ?
- प्रमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जंति जाव वेमाणियदेवेहितो वि उववज्जंति ।

(श० २४।२०४)

- ५९. जइ भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति िंक असुर-कुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणिय-कुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ?
- ९०. गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जिति जाव थिणयकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जिति । (श० २४।२०४)
- ९१. असुरकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालिट्टितीएसु उवविज्जेज्जा ?
- गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तिहितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सिहितीएसु। (श० २४।२०६)
- ९३. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । (श० २४।२०७)
- ९४. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंघयणी पण्णत्ता ?
- ९५. गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी जाव परिणमंति । (श॰ २४।२०८)
- ९६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ?
- ९७. गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा— भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य ।
- ९८. तत्थ णं जा साभवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उककोसेणं सत्त रयणीओ ।

श २४, उ० १२, ढा० ४२२ १०७

<sup>\*</sup>लय: धीज करें सीता सती रे लाल

१. परि. २, यन्त्र ३८

- ९९. तिहां उत्तरवैिकय तिका रे, जघन्य थकी इम इष्ट रे। संख्यातमों भाग आंगुल तणों रे लाल,
  - लक्ष योजन उत्कृष्ट रे।।
- १००. हे प्रभु! ते जीवां तणां रे, तन् नों स्यूं संठाण रे? संठाण ते आकार नों रे लाल, पूछचो प्रश्न सुजाण रे।।
- १०१. श्री जिन भाषे द्विविधा रे, तनु नों छै संठाण रे। भवधारणी तनु मूलगो रे लाल, उत्तर वैकिय जाण रे।।
- १०२. तत्र जिहां भवधारणी रे, समचउरंस संठाण रे। उत्तरवैकिय जे तिहां रे लाल, अनेक संठाणे जाण रे।।
- १०३. प्रथम चिउं लेश्या हुवै रे, दृष्टि त्रिविध पिण होय रे। ज्ञानी में निश्चै करी रेलाल, तीन ज्ञान अवलोय रे।।
- १०४. भजना तीन अज्ञान नीं रे, असन्नी असुर में आय रे। अपज्जत्त अंतर्मुहूर्त्त लगै रे लाल, दोय अज्ञानज पाय रे।।
- १०५. त्रिविध जोग पिण असुर में रे, द्विविध पिण उपयोग रे। च्यार संज्ञा हुवै तेहमें रे लाल, च्यार कषाय संयोग रे।।
- १०६. इंद्रिय पंच हुवै वली रे, समुद्घात घुर पंच रे। द्विविध पिण हुवै वेदना रे लाल, सात असातज संच रे।।
- १०७. इत्थि पुरिस वेद बे हुवै रे, वेद नपुंसक न होय रे। इण न्याय असुरकुमार में रे लाल, वेद सन्नी रादोय रे।।
- १०८. स्थिति जघन्य थी असुर नीं रे, वर्ष सहस्र दश होय रे। उत्कृष्टी छै एतली रेलाल, साधिक सागर सोय रे।।
- १०९. अध्यवसायज जेहनां रे, असंख्यात संजात रे। भला नैं भूंडा पिण हुवै रेलाल,
  - अनुबंध जिम स्थिति ख्यात रे।।
- ११०. भव आश्रयी वे भव कह्या रे, इक भव असुरकुमार रे। बीजो भव पृथ्वी तणों रे लाल, हिव तसु काल विचार रे।।
- १११. काल आश्रयी जघन्य थी रे, वर्ष सहस्र दश देव रे। अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही रे लाल, पुढवी भव स्थिति भेव रे।।
- ११२. उत्कृष्ट साधिक उदिध नीं रे, विल सामानिक आदि रे। वर्ष बावीस सहस्र अधिक ही रे लाल,
  - पुढवी स्थिति संवादि रे।।
- ११३. सेवें कालज एतलो रे, ए घुर गम नों लेख रे। इस नव पिण गम जाणवा रेलाल,
  - णवरं इतरो विशेख रे।।
- ११४. बिचला तीन गमा विषे रे, विल छेहले गम तीन रे। जाणवूं असुरकुमार नीं रे लाल, स्थिति विशेष सुचीन रे।।
  - १०५ भगवती जोड़

- ९९. तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। (श० २४।२०९)
- **१००.** तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिया पण्णत्ता ?
- १०१. गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा —भवधारणिज्जा य उत्तरवेजिक्या य ।
- १०२. तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरंससंठिया
  पण्णत्ता । तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते नाणासंठिया पण्णत्ता ।
- १०३. लेस्साओ चत्तारि। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि नाणा नियमं,
- १०४. तिण्णि अण्णाणा भयणाए ।

  'तिन्नि अन्नाणा भयणाए' त्ति येऽसुरकुमारा
  असिक्तभ्य आगत्योत्पद्यन्ते तेषामपर्याप्तकावस्थायां
  विभंगस्याभावात् शेषाणां तु तद्भावादज्ञानेषु
  भजनोक्ता, (वृ० प० ८३२)
- १०५. जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया ।
- १०६. पंच इंदिया । पंच समुग्घाया । वेयणा दुविहा वि ।
- १०७. इत्थिवेदगा वि, पुरिसवेदगा वि, नो नपुंसगवेदगा।
- २०८. ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ।
- १०९. अज्भवसाणा असंखेजजा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबंधो जहा ठिती ।
- ११०. भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,
- १११. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भहियाइं, तत्र दशवर्षसहस्राण्यसुरेषु अन्तर्मृहूर्त्तं पृथिवीकायिकेष्विति, (वृ० प० ८३२)
- ११२. उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वास सहस्सेहि अब्भहियं,
- ११३. एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागितं करेज्जा। एवं नव वि गमा नेयव्वा, नवरं—
- ११४. मज्भिल्लएसु पिञ्छल्लएसु तिसु गमएसु असुर-कुमाराणं ठिइविसेसो जाणियव्दो,

- ११५. मज्मम गमे सुइष्ट, असुरकुमार तणीं कही। स्थित जघन्य उत्कृष्ट, वर्ष सहस्र जे दश तणीं।।
- ११६ चरम गमे फुन तीन, असुर स्थिति जघन्योत्कृष्ट । साधिक सागर चीन, इतरो विशेष जाणवो ।।
- ११७. \*शेष ओघिक गमा नीं परै रे, परिमाण संघयणादि जेह रे। कहिवी छै तेहनीं लढ़ी रे लाल,

विल जाणवूं कायसंवेह रे।।

वा॰ — 'लेशद्वारे — भवणपित पृथ्वीकाय में ऊपजै, तिणरा ओधिक गमा में तो लेश्या ४ कही। अनैं तिणरो जघन्य गमो ठिति, अनुबंध बिना ओधिक नैं भलायो। तिण भलावण मे तो लेश्या ४ हुवै।

उत्तराध्येन अध्येन ३४।४८-५१ मे भवणपति में लेश्या री स्थिति कही ते कहै छै-

कृष्ण लेश्या री स्थित जवन्य दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट पत्य नों असंख्यातमो भाग। अनै जेतली कृष्ण लेश्या री उत्कृष्ट स्थिति, ते ऊपरै एक समय
अधिक नील लेश्या री जवन्य स्थिति अनै उत्कृष्ट पत्य रो असंख्यातमों भाग
अधिक। ओविक अने उत्कृष्ट नील लेश्या री स्थिति सूं एक समय अधिक
कापीत री जवन्य स्थिति अनै उत्कृष्ट पत्य रो असंख्यातमों भाग अधिक। तिण
उपरंत आउखावाला में एक तेजु पावै। तेजु री स्थित भवणपित में जवन्य १०
हजार वर्ष, उत्कृष्ट एक सागर जाभी कही। इण वचने जवन्य १० हजार वर्ष
आयु में लेश्या दो — कृष्ण अनै तेजु संभवै। उत्कृष्ट आयुवाला में एक तेजु
संभवै।

इहां असुरकुमार पृथ्वी में प्रथम गमे ४ लेश्या कही। जघन्य उत्कृष्ट गमे िठिति, अनुबंध विना ओधिक नै भलाया। तिण लेखी ४ लेश्या हुनै। पिण नवरं कही जघन्य गमे १० हजार वर्ष आउखा वाला में लेश्या २, उत्कृष्ट आयु वाला में लेश्या १—इम न कह्यो। लेश्या रो णाणत्तो नथी। तेहनों न्याय—एक-एक देव में लेश्या एक-एक हीज पानै। तिण कारण लेश्या रो नाणत्तो नथी कह्यो दीसै। पिण उत्तराध्येन [३४।४८, ५३] मे कृष्ण अनै तेजु नीं जघन्य १० हजार वर्ष नीं स्थिति कही। किणहिक में कृष्ण, किणहिक में तेजु, अनै उत्कृष्ट आउखा बाला में १ तेजु कही। इण वचन सूं जघन्य गमे २ लेश्या, उत्कृष्ट गमे लेश्या १ ईज संभवै। विल बहुश्रुत कहै ते सत्य। व्यंतर पृथ्वी में ऊपजै, १० भवनपित अनै व्यंतर अप में, वनस्पित में, तियँच पंचेंद्रिय में, मनुष्य मे ऊपजतां लेश्याद्वार में एहिज न्याय जाणवो।

ज्ञानद्वारे असुरकुमार पृथ्वीकाय में ऊपजै तिणमें प्रथम गमे तीन ज्ञान नीं नियमा अनैं ३ अज्ञान नीं भजना कही । तिणमें असन्नी मिर नैं जाय तिबारे अंतर्मृहूर्त्त विभंग अज्ञान न हुवै, ते माटै तीन अज्ञान नीं भजना कही । अनैं उत्कृष्ट गमे लिख्य ओधिक नैं भलाई । पिण उत्कृष्ट गमे तो आयु सागर जाभो । अनैं असन्नी असुरकुमार में जधन्य १० हजार वर्ष आऊखे ऊपजै । पल्य नैं असंख्यातमे भाग आयु पावै तिण में तो ३ अज्ञान नीं भजना । पिण साधिक १ सागर उत्कृष्ट आयु विषे तो असन्नी न ऊपजै, ते माटै उत्कृष्ट गमे ३ अज्ञान

\*लय: धीज करें सीता सती रे लाल

- ११५,११६. 'मिंज्यिल्लएसु पिच्छिल्लएसु' इत्यादि, अयं चेह् स्थितिविशेषो मध्यमगमेषु जघन्यासुरकुमाराणां दशवर्षसहस्राणि स्थितिः अन्त्यगमेषु च साधिकं सागरोपममिति । (वृ०प० ६३२)
- ११७. सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसंवेहं च जाणेज्जा।

श• २४, उ० १२, ढा• ४२२ १०९

नीं नियमा संभवे। ते भणी भलावण में लाभै ते लेणा। किंचित फर्क जाणी सुत्रेन कह्यो एहवो जणाय छै।

तथा असन्ती भवणपित में जाय, तेहनों आउखो उत्कृष्ट पत्य नै असंख्या-तमे भाग कहा। सन्ती मिरनै जाय, तेहनों आउखो उत्कृष्ट १ सागर जाभो कहा। तिहां असन्ती मिर नै जाय, ते असन्ती नीं अपेक्षया उत्कृष्ट आयु, सन्ती मिर नै जाय ते सन्ती नीं अपेक्षया उत्कृष्ट आयु। ए बेहुं उत्कृष्ट गमां में लेखव्या ह्वं तो ते पिण ज्ञानी जाणै। विल बहुश्रुत कहै ते सत्य। नव निकाय अनै व्यंतर पृथ्वी में ऊपजै। १० भवनपित अनै व्यंतर अप में, वनस्पित में, तियंच पंचेंद्री में, मनुष्य में ऊपजतां ज्ञानद्वार में एहिज न्याय जाणवो।

वेद हारे—असुरकुमार पृथ्वी में ऊपजै तिणमें प्रथम ओघिक गमे वेद २ कहा। स्त्री, पुरुष । अने उत्कृष्ट गमे ओघिक नै भलायो । ते भलावण में तो २ वेद आया । अनै देवी नों आउखो उत्कृष्ट ४।। पत्य नों हुनै । अने उत्कृष्ट गमे तो आयु जघन्य उत्कृष्ट सागर जाभो कहा। इण वचन सूं तो उत्कृष्ट गमे एक वेद संभने तो ओघिक नै भलायो ते किम ? इति प्रश्न । उत्तर—इहां वेद हार में उत्कृष्ट आयु स्त्री वेद में तो देवी नों उत्कृष्ट आयु लियो हुनै, पुरुष वेद में उत्कृष्ट वेद नों आयु लियो हुनै, इण न्याय तो उत्कृष्ट गमे २ वेद हुनै अने उत्कृष्ट सागर जाभो ईज लेनै तो १ पुरुष वेद ईज हुनै । नवनिकाय, व्यंतर, ज्योतिषी अनै पहिला-दूजा देवलोक रा देवता पृथ्वी में उपजै, १० भवनपति अनै व्यंतर अप में, वनस्पति में, तियँच पंचेंद्रिय में अनै मनुष्य में उपजतां वेद हार में एहिज न्याय जाणवो । (ज० स०)।

११८. वले सगलाइ गमा नें विषे रे, बे भव ग्रहण करेह रे। जाव नवमा गमा नें विषे रेलाल, साख्यात सूत्रे लेह रे।। असुरकुमार पृथ्वी नैं विषे ऊग्जै, तेहनां ९ गमा जुदा-जुदा कहै छै—

#### सोरठा

- ११९. धुर गम कायसंवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।।
- १२०. उत्कृष्ट काल जगीस, साधिक सागर असुर स्थिति । वर्ष सहस्र बावीस, पुढवी पिण उत्कृष्ट स्थिति ।।
- १२१ द्वितीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश लेह, अतर्मुहर्त्त अधिक फुन।।
- १२२. उत्कृष्ट अद्धा जाण, ए पिण दोय भवां तणों। साधिक सागर माण, अंतर्मुहुर्त्त अधिक मही।।
- १२३. तीन गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र बत्तीस, जघन्य असुर महि जेष्ठ स्थिति।।
- १२४. उत्कृष्ट अद्ध जगीस, साधिक सागर असुर में । वर्ष सहस्र बावीस, बिहुं भव नीं उत्कृष्ट स्थिति ।।
- १२४. चउथे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी।
- वर्ष सहस्र दश लेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन ।। १२६. उत्कृष्ट अद्धा तास, वर्ष सहस्र बत्तीस नीं ।
  - असुर सहस्र दश वास, वर्ष सहस्र बावीस महि।।

११० भगवती जोड़

११८. सब्वत्य दो भवग्गहणाइं जाब नवमगमए,

- १२७. पंचम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट। वर्ष सहस्र दश लेह, अंतर्म्हर्त्त अधिक फुन।। १२८. षष्ठम गमे संवेह, बे भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट । वर्ष सहस्र बत्तीस, जघन्य असुर उत्कृष्ट महि।। १२९. सप्तम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। साधिक सागर लेह, अंतर्म्हूर्त्त अधिक फून।। १३०. उत्कृष्ट अद्धा जोय, ए पिण दोय भवां तणों। साधिक सागर होय, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। १३१. अष्टम गमे संवेह, बे भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट । साधिक सागर तेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।। १३२. नवम गमक स्त्रेह, बे भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट । साधिक सागर लेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।।
- १३३. \*सेवे कालज एतलो रे, करै गित-आगित इतो काल रे। असुर पृथ्वी में ऊपजै रे लाल, तसु नव गम ए न्हाल रे॥ १३४. देश चउवीसम बारम तणों रे,

चिउं सौ बावीसमीं ढाल रे। सुगुणनर ! भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे लाल, 'जय-जश' हरष विशाल रे।। सुगुणनर !

१३२. कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगं साग रोव मं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, जक्कोसेण वि सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं,

१३३. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा १-९। (श०२४।२१०)

ढाल : ४२३

#### दूहा

# पृथ्वीकाय में नवनिकाय अपजै, तेहनों अधिकार'

- १. नागकुमारादिक हिवै, पुढवी में उपजंत। नवे गमे अधिकार तसु, सांभलजो धर खंत।। †अर्थ द्वादशम उद्देश नों।। (ध्रुपदं)
- २. नागकुमारा हे प्रभु! पृथ्वीकाय विषेहो जी। जे ऊपजवा जोग्य छै, इत्यादिक इम लेहो जी।।
- एहिज वक्तव्यता तसु, असुर ऊपजतां नें लहियै जी।
   परिमाणादिक बोल जे, नाग विषे तिम कहियै जी।।
- ४. यावत भव आश्रयी लगै, णवरं इतरो विशेखो जी । स्थिति अनैं अनुबन्ध नैं, कहिवो इम संपेखो जी ।

\*लय: धोज करें सीता सती रे लाल †लय: कर जोड़ी आगल रही

१. देखें परि. २, यंत्र ३९

- २. णागकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु ?
- ३. एस चेव वत्तव्वया
- ४,५. जाव भवादेसो त्ति, नवरं ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि।

श० २४, उ० १२, ढा० ४२२,४२३ १११

- ५. स्थिति अने अनुबन्ध जे, जघन्य सहस्र दश बासो जी। उत्कृष्टी देसूण जे, दोय पल्योपम तासो जी।।
- ६. काल आश्रयी जघन्य था, प्रथम गमे संवेहो जी। जघन्य सहस्र दश वर्ष नीं, अंतर्मुहुर्त्त अधिकेहो जी।।
- ७. उत्कृष्ट अद्धा एतलो, देश ऊर्ण पल्य दोयो जी। वर्ष सहस्र बावोस ही, अधिकेरी अवलोयो जी।।
- द. एवं एहनां नव गमा, असुर गमक सम भणवा जी। णवरं स्थिति काल आश्रयी, उपयोगे करि थुणवा जी।।

## दूहा

- ९. धुर त्रिहुं गम स्थिति नाग नीं, जघन्य सहस्र दश वास ।
   उत्कृष्टी देसूण जे, बे पल्योपम तास ।।
- १०. मभ्रम तीन गमें स्थिति, जघन्य उत्कृष्ट कहाय। वर्ष सहस्र दश स्थितिक सूर, ऊपजे पृथ्वी मांय।।
- ११. छेहले तीन गमे स्थिति, जघन्य अने उत्कृष्ट । देसूण बे पल्य स्थितिक, ऊपजवो तसु इष्ट ।।

#### सोरठा

- १२. कायसंवेध विख्यात, काल आश्रयी हिव तसु।
   कहियै छै अवदात, प्रथम गमो पूर्वे कह्युं।।
- १३. द्वितीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक फुन।।
- १४. उत्कृष्टो अवलोय, अद्धा उभय भवां तणों। देश ऊण पल्य दोय, अंतर्मुहुर्त्त अधिक ही।।
- १५. तृतीय गमे संवेह, जघन्य सहस्र बत्तीस वर्ष। नाग सहस्र दश लेह, वर्ष सहस्र बावीस महि।।
- १६. उत्कृष्ट अद्धा जोय, ए पिण दोय भवां तणों । देश ऊण पल्य दोय, वर्ष सहस्र बावीस फुन ।।
- १७. चउथे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मृहूर्त्त अधिक फुन।।
- १८. उत्कृष्ट अद्धा तास, वर्ष सहस्र बत्तीस जे। नाग सहस्र दश वास, वर्ष सहस्र बावीस महि।।
- १९. पंचम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट । वर्ष सहस्र दश लेह, अन्तर्मुहूर्त्त अधिक फुन ।।
- २०. षष्ठम जघन्योत्कृष्ट, वर्ष सहस्र बत्तीस जे। नाग सहस्र दश इष्ट, वर्ष सहस्र बावीस महि।।
- २१. सप्तम गमे सुजोय, बे भव अद्धा जघन्य थी। देश कण पत्य दोय, अंतर्मृहूर्त्त अधिक फुन।।
- २२. उत्कृष्ट अद्धा सोय, ए पिण दोय भवां तणों। देश ऊण पत्य दोय, वर्ष सहस्र बावीस फुन।।
- २३. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट । देश ऊण पल्य बेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही ॥

# ११२ भगवती जोड़

- ६. कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मब्भिहयाइं,
- ७. उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाइं।
- प्वं नव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवरं
   ठिति कालादेसं च जाणेज्जा १-९ ।

- २४. नवम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट । देश ऊण पत्य बेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन १।
- २५. \*एवं यावत जाणवो, थणियकुमार लगेहो जी। प्रश्न हिवे व्यंतर तणों, सांभलजो चित देहो जी।।
- २६ व्यंतर थी जो ऊपजै, पृथ्वीकाय विषेहो जी। स्यूपिशाच व्यंतर थकी, जाव गंधर्व थी लेहो जी।।
- २७. श्रीजिन भाखै पिशाच जे, ब्यंतर थी उपजेहो जी। जाव गंधर्व ब्यंतर थकी, ऊपजै पृथ्वी विषेहो जी।। ओधिक नै ओधिक (१)
- २८. हे प्रभु ! व्यंतर देवता, पृथ्वीकाय विषेहो जी । जे अपजवा जोग्य छै, इत्यादिक पूछेहो जी ?
- २९. एह तणां पिण नव गमा, असुरकुमार नां जेहो जी। नव गम आख्या ते सारिखा, वारु रीत जाणेहो जी।।
- ३०. णवरं इतरो विशेष छै, स्थिति अरु कालादेशों जी। तेह विषे जे फेर छै, जाणेवो सुविशेषो जी।।
- ३१. स्थिति जघन्य थी तेहनीं, वर्ष सहस्र दश जाणी जी। उत्कृष्टी इक पल्य नीं, शेष तिमज पहिछाणी जी।।

# पृथ्वीकाय में व्यंतर अपजे, तेहनों अधिकार'

## सोरठा

३२. घर गम कायसंवेह, बे भव अद्धा जघन्य वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहर्त्त अधिक ३३. उत्कृष्ट अद्धा ताय, ते पिण दोय भवां तणों। एक पत्य कहिवाय, वर्ष सहस्र बावीस ३४. बीजे गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्म्हर्त्त अधिक ३५. उत्कृष्ट अद्धा तास, ते पिण दोय भवां तणों।। एक पल्योपम जास, अंतर्मृहूर्त्ते अधिक फुन।। ३६. तृतीय गमे संवेह, जघन्य सहस्र बत्तीस जे। वर्ष सहस्र दश लेह, वर्ष सहस्र बावीस महि।। ३७. उत्कृष्ट अद्धा होय, दोय भवां नों इह विधे। एक पल्योपम जोय, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। ३८. चउथे गमे सहस्र दश लेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक फुन।। ३९. उत्कृष्ट अद्धा जेह, वर्ष सहस्र बत्तीस जे। व्यंतर सहस्र दशेह, वर्ष सहस्र बावीस महि।। ४०. पंचम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट । लेह, अंतर्मृहुर्त्त अधिक वर्ष सहस्र दश फुन ॥

\*लय: कर जोड़ी आगल रहै

१. देखें परि. २, यंत्र ४०

- २४. एवं जाव थणियकुमाराणं। (श० २४।२११)
- २६. जइ वाणमंतरेहितो उववज्जति—कि पिसायवाण-मंतरदेवेहितो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहितो ?
- २७. गोयमा ! पिसायवाणमंतरदेवेहितो जाव गंधव्ववाण-मंतरदेवेहितो । (श० २४।२१२)
- २८. वाणमंतरदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए ?
- २९ एतेसि पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा
- ३०. नवरं —िठिति कालादेसं च जाणेज्जा ।
- ३१. ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलि-भोवमं । सेसं तहेव १-९ ।

(श॰ २४।२**१**३)

- ४१. षष्ठम गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट । वर्ष सहस्र बत्तीस, व्यंतर पुढवी भव स्थिति ।।
- ४२. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। एक पल्योपम लेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही।।
- ४३. उत्कृष्ट अद्धा जाण, ए पिण दोय भवां तणों। एक पत्योपम माण, वर्ष सहस्र बावीस फुन।।
- ४४. अष्टम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट। एक पत्योपम लेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक फुन।।
- ४५. नवम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट । एक पल्योपम लेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन ।। पृथ्वीकाय में ज्योतिषी ऊपजे, तेहनों अधिकार'
- ४६. \*जो जोतिषो सुर थकी, ऊपजै पुढवी मांह्यो जी। तो स्यूं चंद्र विमाण थी, जाव तारा थी आयो जी?
- ४७. जिन कहै चंद्र विमाण थी, यावत तार विमाणो जी। जोतिषी सुर थी ऊपजै, पुढवी में पहिछाणो जी।।
- ४८. जोतिषी देवा हे प्रभु ! पुढवीकाय विषेहो जी। जे अपजवा जोग्य छै, ते कितै काल स्थितिके अपजेहो जी ?
- ४९. परिमाणादिक जे लद्धी, जिम कही असुर नैं लेखो जी। कहिवी तिणहिज रीत सूं, णवरं इतरो विशेखो जो।।
- ५०. लेक्या एक तेजू हुवै, तीन ज्ञान नीं ज्यांही जी। नियमा तास कहीजियै, समद्ष्टी रै मांही जी।।
- ५१. नियमा तीन अज्ञान नीं, सुर मिथ्याती मांही जी। असन्नी मर नींह ऊपजै, ते माटै कहिवाई जी।।

- ५२. सन्नी मनु तिर्यंच, उत्पत्ति-समय ईज ते । समदृष्टि रै संच, नियमा तसु छे अवधि नीं ।।
- ५३. सन्नी मनु तियंच, उत्पत्ति-समय ईज ते। मिथ्याती रै संच, नियमा तसु छै विभंग नीं।।
- ५४. \*स्थिति जघन्य पत्योपम तणों, भाग अष्टमो संधो जी । उत्कृष्ट पत्य लक्ष वर्ष नों, इतरोइज अनुबंधो जी ।।

#### सोरठा

५४.भाग अष्टमो ईज, समुदायज उपचार थी। अवयव विषे कहीज, तारक सुर सुरी आश्रयी।।

- \*लय: कर जोड़ी आगल रहे
- १. देखें परि. २, यंत्र ४१
- ११४ भगवती जोड़

- ४६. जइ जोइसियदेवेहितो उववज्जंति—कि चंदविमाण-जोइसियदेवेहितो उववज्जंति जाव ताराविमाण-जोइसियदेवेहितो ?
- ४७. गोयमा ! चंदविमाण जाव ताराविमाण। (श० २४।२१४)
- ४८. जोइसियदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उवविज्जित्तए ?
- ४९. लद्धी जहा असुरकुमाराणं, नवरं-
- ५०. एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता । तिण्णि नाणा,
- ५१. तिण्णि अण्णाणा नियमं ।
- ५२,५३. 'तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमं' ति इहा-सञ्ज्ञी नोत्पद्यते सञ्ज्ञिनस्तूत्पत्तिसमय एव सम्यग्-दृष्टेस्त्रीणि ज्ञानानि मत्यादीनि इतरस्य त्वज्ञानानि मत्यज्ञानादीनि भवन्तीति, (वृ० प० ८३२)
- ५४. ठिती जहण्णेणं अटुभागपिलओवमं, उनकोसेणं पिलओवमं वाससयसहस्समब्भिह्यं। एवं अणुबंधो वि।
- ४५. 'अट्ठभागपिलओवमं' ति अष्टमो भागोऽष्टभागः स एवावयवे समुदायोपचारादष्टभागपत्योपमं, इदं च तारकदेवदेवीराश्चित्योक्तम्, 'उनकोसेणं पिलओवमं वाससयसहस्समब्भिह्यं' ति इदं च चन्द्रविमान-देवानाश्चित्योक्तमिति,। (वृ०प०८३२)

# कायसंवेध विषे ओधिक ने ओधिक

- ४६. \*काल आश्रयी जघन्य थी, पत्य नों अष्टम भागो जी। अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही, बे भव अद्धा मागो जी।।
- ५७. उत्कृष्ट पत्य लक्ष वर्ष ही, चंद्र विमाण नां देवो जी । सहस्र वर्ष वावीस महि, इतरो काल सेवेवो जी।।
- ५८. इमहिज शेष पिण अठ गमा, भणवा णवरं विशेखो जी । सुर स्थिति ने काल आश्रयी, ते कहिवूं करि लेखो जी ।।

## सोरठा

- ५९. द्वितीय तृतीय गमकेह, जघन्य पल्योपम भाग अठ। उत्कृष्टो इम लेह, पल्य लक्ष वर्षाधिक।। आठ गमा रो कायसंवेध
- ६०. द्वितीये गमे जघन्य, भाग अष्टमो पल्य तणों। अंतर्मृहूर्त्त जन्य, बिहुं भव अद्धा जघन्य स्थिति।।
- ६१. उत्कृष्ट अद्धा ताय, पल्योपम लक्ख वर्ष जे। चंद्र तणीं अपेक्षाय, अंतर्मुहर्त्त अधिक महि।।
- ६२. तृतोय गमे संवेह, जघन्य अद्धा जे पत्य नों। भाग अष्टमो लेह, वर्ष सहस्र बावीस फून।।
- ६३. उत्कृष्ट अद्ध जगीस, पत्योपम लक्ख वर्ष जे। वर्ष सहस्र बावीस, बिहुं भव नी उत्कृष्ट स्थिति।।
- ६४. चउथे गमे संवेह, जघन्य अद्धा जे पल्य नों। भाग अष्टमो लेह, अंतर्मुहर्त्त अधिक ही।।
- ६५. उत्कृष्ट काल जगीस, भाग अष्टमो पल्य नो । वर्ष सहस्र बावीस, ए पुढवी उत्कृष्ट स्थिति ॥
- ६६. पंचम गमे संवेह, जघन्योत्कृष्टज पत्य नों। भाग अष्टमो लेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।।
- ६७. षष्ठम गम इम माग, जघन्य अने उत्कृष्ट अद्ध। पत्य नो अष्टम भाग, वर्ष सहस्र बाबीस फुन।।
- ६८. सप्तम गमे विमास, जघन्य थकी अद्धा इतो।
- एक पल्य लक्ष वास, अंतर्मृहूर्त्त अधिक फुन ।। ६९. उत्कृष्ट अद्ध जगीस, एक पल्य ने वर्ष लक्खा
- वर्ष सहस्र बावीस, अद्धा ए बिहुं भव तणुं।।
- ७०. अष्टम गर्मज तास, जघन्य अने उत्कृष्ट अद्धः पल्योपम लख वास, अंतर्मुहर्त्त अधिक फून ॥
- ७१. नवमे गमे प्रकाश, जघन्य अने उत्कृष्ट अद्ध । एक पत्य लक्ष वास, वर्ष सहस्र बावीस महि।।

## पृष्वीकाय में वैमानिक ऊपजे

- ७२. \*जो वैमानिक देव थी, पुढवी में उपजंतो जी। तो स्यूं कल्पवासी थकी, कै कल्पातीत थी हुंतो जी?
- \*लयः कर जोड़ी आगल रहै

- ५६. कालादेसेणं जहण्णेणं अटुभागपलिओवमं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं.
- ५७ जक्कोसेण पिलओवमं वाससयसहस्सेणं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गितरागित करेज्जा।
- ४८. एवं सेसा वि अट्ट गमगा भाणियव्वा, नवरं—ि ठिति कालादेसं च जाणेज्जा १-९।

(श० २४।२१५)

७२. जइ वेमाणियदेवेहितो उववज्जंति— कि कप्योवा-वेमाणियदेवेहितो ? कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो ?

श● २४, ड● १२, ढा० ४२३ ११५

- ७३. जिन कहै कल्पवासी सुरा, वैमानिक उपजंतो जी। कल्पातीत विमाणिया, यावत ते नहिं हुंतो जी।।
- ७४. जो कल्पवासी सुर ऊपजै, तो स्यूं सौधर्म नां वासी जी। वैमानिक जाव ऊपजै, कै अच्युत नां विमासी जी?
- ७५. जिन कहै वासी सौधर्म नां, विल ईशाण नां हुंतो जी। पिण निंह सनतकुमार नां, जाव अच्युत नां न उपजंतो जी।

# पृथ्वीकाय में सौधर्मवासी देव ऊपजे, तेहनों अधिकार' ओघिक ने ओघिक (१)

- ७६. सुर सौधर्मक हे प्रभुजी ! पृथ्वीकाय विषेहो जी। जे ऊपजवा जोग्य छै, ते कितै काल स्थितिक ऊपजेहो जी?
- ७७. इम जिम जोतिषी नों गमो,

दाख्यो तिम कहिवायो जी। णवरं सुर स्थिति नें वली, अनुबन्ध इह विधि थायो जी।।

- ७८. सुर स्थिति नें अनुबंध जे, जघन्य थकी अवलोयो जी । सोहम्म सुर इक पत्य स्थिति, उत्कृष्ट सागर दोयो जी ।।
- ७९. काल आश्रयी जघन्य थी, इक पत्य सुर स्थिति माणी जी। अंतर्महुर्त्त अधिक ही, ए पुढवी स्थिति जाणी जी।।
- ५० उत्कृष्टी अद्धा तसु, सोहम्म सागर दोयो जी। वर्ष पहन्त्र बावीस ही, पुढवी स्थिति अवलोयो जी।।
- ५१. सेवै कालज एतलो, करै गित-आगित इतो कालो जी।
  ओघिक न ओघिक गमो, दाख्यो प्रथम दयालो जी।।
- द२. इमज शेष पिण अठ गमा, भणवा णवरं विशेखो जी। स्थिति अनें कालादेश छै, ते कहिवूं करि लेखो जी।।

वा०—इहां स्थिति ते सौधर्म देव नीं जाणवी ते प्रथम तीन गमे जघन्य एक पत्य उत्कृष्टो वे सागर। अनै विचलै तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट १ पत्य। अनै छेहले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २ सागर।

हिवै काल आश्रयी प्रथम गभी तो पूर्वे कह्योहीज छै, शेष आठ गमा कहै छै—

## सोरठा

- द३. द्वितीय गमे संवेह, काल आश्रयी जघन्य थी।
   एक पत्योपम लेह, अंतर्मुहर्त्त अधिक फुन।।
- ५४. उत्कृष्ट अद्धा जोय, ते पिण बे भव नों तसु। सोहम्म सागर दोय, अंतर्मुहुर्त्त अधिक महि।।
- ५५. तृतीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी एक पत्योपम लेह, वर्ष सहस्र बाबीस फुन।

\*लयं कर जोड़ी आगल रहे देखे परि. २, यंत्र ४२

११६ भगवती जोड़

- ७३. गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो कप्पातीता-वेमाणियदेवेहिंतो । (श० २४।२१६)
- ७४. जइ कप्पोवावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति कि सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहितो जाव अच्चुयकप्पो-वावेमाणियदेवेहितो ?
- ७४. गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहितो ईसाण-कप्पोवावेमाणियदेवेहितो, नो सणंकुमार जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहितो ।

(श० २४।२१७)

- ७६. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ७७. एवं जहा जोइसियस्स गमगो, नवरं-
- ७८. ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं।
- ७९. कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं,
- प्त उनकोसेणं दो सागरोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाइं,
- एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा।
- ५२. एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—िर्ठितं कालादेसं च जाणेज्जा । (श० २४।२१८)

- ६६. उत्कृष्ट अद्धा सोय, ते पिण दोय भवां तणों। सोहम्म सागर दोय, वर्ष सहस्र बावीस महि।। संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। ८७. चउथे गमे एक पल्योपम लेह, अन्तर्मुहुर्त्त अधिक ही ।। अद्धा लेख, ए पिण दोय भवां तणों। एक पत्योपम पेख, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। **८९. पंचम गमे संवेह, बे** भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट । अन्तर्मुहूर्त्त अधिक फुन।। पल्योपम लेह, ९०. षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट । एक पत्योपम लेह, वर्ष सहस्र बावीस फुन।। गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। ९१. सप्तम बेह, अन्तर्मुहूर्त्त अधिक फुन।। कहियै सागर ९२. उत्कृष्ट अद्धा सीय, ए पिण बे भव नों तसु। सोहम्म सागर दोय, वर्ष सहस्र बावीस महि।। ९३. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्योत्कृष्ट । बे सागर तसु लेह, अन्तर्मुहूर्त्त अधिक महि।। ९४. नवम गमें संवेह, बे भव अद्ध जघन्योत्कृष्ट। सोहम्म सागर बेह, वर्ष सहस्र बावीस महि।। पृथ्वीकाय में ईशानवासी देव ऊपजे, तेहनों अधिकार —
- ९५. हे प्रभु ! देव ईशाण जे, पुढवीकाय विषेहो जी । जे ऊपजवा जोग्य छे, इत्यादिक इम लेहो जी ।। ९६. सुर ईशाण नां पिण वली, इमहिज नव गम भणवा जी । णवरं सुर स्थिति नें वली, अनुबन्ध इम थुणवा जी ।। ९७. जघन्य पल्य जाभी कही, उत्कृष्ट स्थिति अनुबन्धो जी । साधिक बे सागर तणीं, शेष तिमज सहु संधो जी ।। पृथ्वीकाय में पांच स्थावर ऊपकें, तेह में नाणता

मांय, जावै तसु जघन्य गमे। ९८. पृथ्वी पृथ्वी च्यार णाणत्ता पाय, प्रथम तीन लेश्या हुई ॥ अनुबन्ध, माठा अध्यवसाय तसु। ९९. जघन्य स्थिति उत्कृष्ट गमेज संघ, स्थिति अनुबन्ध बे णाणत्ता ॥ १० • . अप पुढवी में आय, तेहनां पिण जघन्ये गमे। णाणत्ता पाय, उत्कृष्ट गम वे णाणत्ता ॥ आवै तसु जघन्ये गमे। १०१. तेऊ पृथ्वी मांय, लेश्या नों कहिये नथी।। तीन णाणत्ता पाय, आवै तसु जघन्ये गमे। १०२. वायु पृथ्वी मांय, समुद्घात वैक्रिय बघ्यो।। च्यार णाणत्ता पाय,

१. देखें परि. २, यंत्र ४३ ग्लय: कर जोड़ी आगल रही

- ९५. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए?
- ९६. एवं ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं-
- ९७. ठिती अणुबंधी जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइंदो सागरोवमाइं। सेसं तं चेव १-९। (श० २४।२१९)

भाव २४, उ० १२, ढा० ४२३ - **११**७ :

- १०३. विल पृथ्वी रै मांय, वनस्पित आवै (तसुं। पंच णाणत्ता पाय, अवगाहन नों पंचमो।। पृथ्वीकाय में विकलेंद्रिय ऊपजै, तेहमें नाणत्ता
- १०४. विल पृथ्वी रै मांय, विकलेन्द्रिय आवे तसु जघन्य गमे कहाय, सात णाणत्ता तेहनां।
- १०५. जघन्योत्कृष्ट अवगाह, असंख भाग आंगुल तणों। मिथ्यादृष्टिज पाय, ज्ञान नथी ए तीसरो।।
- १०६. जोग काया नों एक, आयु नैं अनुबन्ध फुन। अन्तर्मुहूर्त्तज पेख, माठा अध्यवसाय ह्वै।।

# पृथ्वीकाय में तियाँच पंचेंद्रिय अपजै, तेहमें नाणत्ता

- १०७. वलि पृथ्वी में आय, असन्नी पंचेंद्रिय तिरि । सात णाणत्ता पाय, जघन्य गम विकलेंद्रीवत ।।
- १०८. पृथ्वी मांहै पेख, सन्नी तिरि आवै तसु। जघन्य गमे विशेख, कहिये छै नव णाणत्ता।।
- १०९. अवगाहना जघन्य, लेश तीन पहलीज ह्वै। मिध्यादृष्टिज जन्य, ज्ञान तास पावै नहीं।।
- ११० समुद्घात त्रिण संध, योग एक काया तणों। जघन्यायु अनुबन्ध, माठा अध्यवसाय ह्वै।।
- १११. सहु पृथ्वी रै मांय, आवै तसु उत्कृष्ट गम । दोय णाणत्ता पाय, आयु ने अनुबन्ध नां ।।

## पृथ्वीकाय में मनुष्य ऊपजे, तेहमें नाणत्ता

- ११२. विल पृथ्वो में जात, असन्ती मनु षट भंगा नथी। ओघिक त्रिण गम ख्यात, नित्थ णाणत्ता तेहनां।।
- ११३. विल पृथ्वी रै मांय, सन्नी मनु जावै तसु। जघन्य गमे कहाय, किहयै छै नव णाणत्ता।।
- ११४. जघन्योत्कृष्ट अवगाह, असंख भाग आंगुल तणों। प्रथम लेश त्रिहुं पाह, दृष्टि मिथ्या त्रिहुं ज्ञान नहीं।।
- ११५. काय योग इक संध, समुद्घात घुर त्रिहुं हुवै। जघन्य स्थिति अनुबन्ध, माठा अध्यवसाय तसु।।
- ११६. उत्कृष्ट गमे कहाय, तीन णाणत्ता तेहनां। अवगाहन नों पाय, जेष्ठ स्थिति अनुबन्ध फुन।।

# पृथ्वीकाय में देव ऊपजै, तेहमें नाणता

- ११७. भवनपति दश देख, सोल जाति नां व्यंतरा।
  पंच जोतिषी पेख, सुर सोहम्म ईशाण नां।।
- ११८ ए पुढवी में आय, जघन्य गमे बे णाणता। स्थिति अनुबन्ध कहाय, उत्कृष्ट गम तेहीज बे।।

## पृथ्वीकाय में पांच स्थावर अपजै, तेहनां भव

११९. पृथ्वी पृथ्वी मांहि, अप तेऊ वाऊ वली। वनस्पति वली ताहि, एह ठिकाणा पंच नों।।

## ११८ भगवती जोड़

- १२०. आवे पृथ्वी मांय, प्रथम द्वितीय तुर्य पंचमे। जघन्य दोय भव थाय, उत्कृष्ट भव अद्धा असंख।। १२१. ए चिउंगमे विचार, समय-समय जे ऊपजै। असंख्यात अवधार, शेष गमा हिव पंच कहूं।।
- १२२ तीजे छठे जोय, सप्तम अष्टम नवम गम। जघन्य थकी भव दोय, उत्कृष्ट भव अष्ट तस्।।
- १२३ ए गम पंच कथीन, ऊपजतो पृथ्वी विषे। जघन्य एक बे तीन, उत्कृष्ट असंख्याता ह्वै।।

## पृथ्वीकाय में तीन विकलेंद्रिय ऊपजै, तेहनां भव

- १२४. त्रिण विकलेंद्रिय ताहि, एह ठिकाणा तीन रो। ऊपजे पृथ्वी माहि, तसु भव लेखो सांभलो।।
- १२५. प्रथम द्वितीय गम जोय, फुन गम चउथे पंचमे। जघन्य थकी भव दोय, उत्कृष्ट भव अद्धा संख्या।।
- १२६ तीजे षष्ठम तेह, सप्तम अष्टम नवम गम। भव गम पंच विषेह, जघान्य दोय उत्कृष्ट अठ।।

# पृथ्वीकाय में तियाँच पंचेंद्रिय अने मनुष्य ऊपजे, तेहनां भव

- १२७. फुन असन्नी तिर्यंच, सन्नी तिरि सन्नी मनुष्य। तीन स्थान नों संच, उपजै पृथ्वी नें विषे।।
- १२८. गमे नवू ही इष्ट, जधन्य थकी भव दोय तसु।
  हुवै अष्ट उत्कृष्ट, किणही गम नहिं ह्वै अधिक।।
- १२९. पुढवी में उपजंत, असन्नी मनु षट गम नथी। ओघिक त्रिण गम हुंत, जघन्य दोय भव जेष्ठ अठ।।

# पृथ्वीकाय में देव ऊपजै, तेहनां भव

- १३०. भवणपति दश जाण, व्यंतर नैं विल जोतिषी। सोहम्म नैं ईशाण, ए सुर चवद ठिकाण रा।।
- १३१. पृथ्वी में उपजेह, तेह नवूं ही गम विषे। जघन्य थकी भव बेह, उत्कृष्ट पिण भव दोय ह्वै।।
- १३२. स्थावर पंच सुपेख, विकलेंद्रिय असन्नी तिरि। सन्नी तिर्यंच देख, असन्नी मनु सन्नी मनुष्य।।
- १३३. भवनपति दश जाण, वाणव्यंतर नें जोतिषी । सोहम्म नें ईशाण, ए षटवीस ठिकाण रा ।।
- १३४. पृथ्वी में उपजेह, कह्या णाणत्ता भव तसु। नव गम कायसंवेह, ते पूर्वे आख्याज छ।।
- १३५. \*सेवं भंते ! इम कही, जाव गोयम विचरंता जी । संजम तप करि स्वाम जी, आतम प्रति भावंता जी ।।
- १३६. चउवीसम नों बारमों, ढाल च्यार सय तेवीसो जी। भिक्षु भारोमाल ऋषिराय थी जी,

'जय-जश' हरष जगीसो जी।।

चतुर्विशतितमशते द्वादशोद्देशकार्थः ।।२४।१२।।

\*लय: कर जोडी आगल रही

१३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ । (श॰ २४।२२०)

 $\mathcal{O}_{\mathcal{A}}(A) \to (A,A,A)$ 

ग० २४, उ• १२, ढा० ४२३ ११९

# ढाल: ४२४

## दूहा

- १. नमस्कार श्रुत देव नैं, श्रुतकर्ता सुखदाय।
  गणधर घुर चारित्र गुणी, नमण तास सिर नाय।।
  अपकाय में पृथ्वीकाय ऊपजै, तेहनों अधिकार'
- २. अपकायिक भगवंत जी! किहां थकी ऊपजेह। इम जिम पृथ्वीकाय नों, कह्यो उद्देशक तेह।।
- ३. तिण विधि कहिवो छै इहां, यावत पृथ्वीकाय। ते ऊपजवा जोग्य प्रभु! अपकायिक रै मांय।।
- ४. ते प्रभु! कितरा काल नीं, स्थितिक विषे ऊपजेह? प्रश्न एम पूछे थके, जिन उत्तर इम देह।।
- प्र. अंतर्महूर्त्त जघन्य थी, फुन उत्कृष्टी लेह । सप्त सहस्र जे वर्ष नीं, स्थितिक विषे उपजेह ।।
- ६. इम महि उद्देशक सदृश, भणवो णवरं स्थित । फुन संवेधज जाणवो, शेष तिमज कथित ।।
- ७. स्थिति अनें संवेध फुन, नव ही गमा विषेह । यथायोग्य ते जाणवूं, उपयोगे करि लेह।। नवूं हो गमे पृथ्वी अप में ऊपजं, तेहनों कायसंवेध
- द. प्रथम द्वितीय तुर्य पंचमे, ए चिउं गम भव दोय । अद्धा अंतर्मुहूर्त्तं वे, जघन्य थकी अवलोय।।
- ९. ए चिउं गम उत्कृष्ट थो, असंख्यात भव ख्यात । अद्धा काल असंख ही, गति-आगति सजात ।।

#### सोरठा

- १०. तृतीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहुत्तं लेह, सप्त सहस्र वर्ष अप स्थिति।।
- ११. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। सहस्र अठचासी वास, वर्ष सहस्र अठवीस अप।।
- १२. षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त लेह, सप्त सहस्र वर्ष अप स्थिति।।
- १३. उत्कृष्ट अद्धा धार, अष्ट भवां नों आखियो । अंतर्मुहुर्त्त च्यार, वर्ष सहस्र अठवीस अप ॥
- १४ सप्तमे गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र बाबीस, अंतर्मृहत्तं अप स्थिति।।
- १५. उत्कृष्ट अद्ध विमास, अष्ट भवां नों आखियो। सहस्र अठवासी वास, वर्ष सहस्र अठवीस अप।।
- १. देखें परि. २, यंत्र ४४-६१
- १२० भगवती जोड़

- २. आउनकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जित ? एवं जहेव पुढविनकाइयउद्देसए
- जाव— (श० २४।२२१)
   पुढिवक्काइए णं भंते ! जे भिवए आउक्काइएसु
   उवविज्ञित्तए,
- ४. से णं भते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ४. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सद्वितीएसु उववज्जेज्जा ।
- ६. एवं पुढिविक्काइयउद्देसगसिरसो भाणियव्वो, नवरं— ठिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तहेव । (श० २४।२२२)

१६. अष्टम गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी।
वर्ष सहस्त्र बावीस, अंतर्मुहूर्त्त अप स्थिति।।
१७. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे।
सहस्त्र अठघासी वास, अंतर्मुहूर्त्त च्यार अप।।
१८. नवमे गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी।
वर्ष सहस्त्र बावीस, सप्त सहस्त्र अप भव स्थिति।।
१९. उत्कृष्ट अद्ध विमास, ए पिण अष्ट भवां तणों।
सहस्त्र अठघासी वास, वर्ष सहस्त्र अठवीस अप।।

वा॰ — शेष विस्तार जिम पृथ्वी नैं विषे २६ ठिकानां नां ऊपजै तेहनां णाणत्ता लब्धि प्रमुखा कह्या, तिमहिज अप नैं विषे २६ ठिकाणां नां ऊपजै, तेह में परिमाणादिक लद्धी णाणत्ता कहिवा। अनैं कायसंवेध सर्व नों विचारी कहिवा।

## दूहा

२०. सेवं भंते ! हे प्रभु ! इम कही गोतम स्वाम । शत चउवीसम नों अर्थ, त्रयोदशम अभिराम ॥ चतुर्विशतितमशते त्रयोदशोहेशकार्थः ॥२४।२३॥ तेउकाय में १२ ठिकाणां नां ऊपजै, तेहनों अधिकार । (ध्रुपदं)

२१. तेऊकाइया हे प्रभु! किहां थकी ऊपजंतो जी?
प्रकृत इत्यादिक पूछिया, भाख्या श्री भगवंतो जी ।।
२२. इम जे पृथ्वीकाय नों, दाख्यो प्रवर उद्देशों जी।

तेह सरिखो उद्देशको, भणवो ए सुविशेषो जी।। २३. णवरं स्थिति तथा वली, संवेध प्रति जाणेहो जी। देव तेऊ में न ऊपजै, तिमहिज शेष कहेहो जी।।

वा॰ — इहां स्थिति तेऊकाय नीं १,४,७ गमे जघन्य अंतर्मुहूर्त्ते, उत्कृष्टा तीन अहोरात्रि । २,४,८ गमे जघन्य-उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्ते । ३,६,९ गमे जघन्य-उत्कृष्ट ३ अहोरात्रि । भव, स्थिति अनैं कायसंवेध उपयोगे करी विचारी कहिवो ।

#### सोरठा

२४. तेऊ मांहै ताहि, आवे बार ठिकाण नां। सुरवर आवे नांहि, तेह तणां चवदे टल्या।। विकर्लेद्रिय तीन जे। फुन २५. आवे स्थावर पच, असन्नी सन्नी तिर्यंच, असन्नी मनु सन्नी मनुष्य ।। पृथ्वी आवे तेहनां । २६. तेऊ मांहै ताम, च्यार णाणत्ता पाम, मध्यम जघन्य त्रिहुं गमे।। २७. अप तेऊ में आय, तेहनां पिण चिउं णाणता। तेऊ तेऊ मांय, आवै तसु त्रिण णाणत्ता।।

\*लय: धर्म दलाली चित्त करें १. देखे परि., यंत्र ४४-५५ २०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति । (श० २४।२२३)

२१. तेउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

२२. एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो उद्देसो भाणियव्वो,

२३. नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा । देवेहितो न उववज्जंति । सैसं तं चेव । (श०।२२४)

२४. देवेभ्य उद्वृत्तास्तेजस्कायिकेषु नोत्पद्यन्ते (वृ० प० ८३३)

शि २४, उ॰ १२, ढा० ४२४ १२१

- २८ विल तेऊ रै मांय, वायू आवे तेहनां। च्यार णाणत्ता पाय, वनस्पति नां पंच फुन।।
- २९. फुन तेऊ रै मांय, विकलेंद्रिय आवे तसु। सात-सात कहिवाय, पूर्ववत ते णाणत्ता।।
- ३०. विल तेऊ रै मांय, असन्नी तिरि आवे तसु। सात णाणता पाय, ते पिण पूर्वेली परै।।
- ३१. फुन तेऊ में ताम, सन्नी तिरि सन्नी मनुष्य। आवै तेहनां पाम, पूर्ववत नव णाणता।।
- ३२. उत्कृष्ट गम अवलोय, सप्तम अष्टम नवम गम।
- पृथ्वी नीं पर जोय, कहियै एहनां णाणत्ता।।
- ३३. विल तेऊ रै मांहि, आवै छै असन्नी मनुष्य। तास णाणत्ता नांहि, जघन्य गमेज ते भणी।।
- ३४. तेऊ मांहै ताम, पंच स्थावर आवै तसु। प्रथम द्वितीय गम आम, फुन चउथे नें पांचमे।।
- ३५. जघन्य थकी भव दोय, असंख्यात उत्कृष्ट भव। समय-समय अवलोय, असंख्यात ते ऊपजै।।
- ३६. शेष पंच गम पेख, जघन्य थकी भव दोय ह्व<sup>ै</sup>। उत्कुष्टा अठ लेख, पंच स्थावर उपजे तसू॥
- ३७. जघन्य एक बे तीन, उत्कृष्ट असंख्या ऊपजै। एक समय में चीन, शेष पंच गम नैं विषे।
- ३८. विल तेऊ रै ताम, त्रिण विकलेंद्रिय जावै तसु। प्रथम द्वितीय गम आम, विल चउथै ने पंचमे।।
- ३९. जघन्य थकी भव दोय, उत्कृष्टा संख्यात भव। शेष पंच गम जोय, जघन्य दोय उत्कृष्ट अठ।।
- ४०. विल तेऊ रै माहि, असन्नी पं तिरि ऊपजै। सन्नी पं. तिरि ताहि, उपजै तेऊ ने विषे।।
- ४१. नव ही गमे निहाल, जघन्य थकी भव दोय ह्वे । उत्कृष्टा अठ भाल, अधिक नहीं किणही गमे।।
- ४२. जुओ-जुओ संवेह, कहिवो तेह विचार नैं। संघयणादिक जेह, लाभै तेहिज लीजियै।।
- ४३. विल तेऊ रै माहि, असन्नी मनुष्यज ऊपजै। ओघिक त्रिण गम ताहि, भव बे पिण अधिका नथी।।
- ४४. असन्नी मनु नी जाण, ओघिक त्रिण गम में स्थिति । अंतर्मुहुर्त्त माण, कायसंवेध हिबै कहूं।।
- ४५. प्रथम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य स्थिति । अंतर्मुहर्रा बेह, तेऊ मरि न हुवै मनुष्य ।।
- ४६. उत्कृष्ट अद्धा ख्यात, दोय भवां नों इह विधे । तीन दिवस नें रात, अंतर्मुहर्रा अधिक ही ।।
- ४७. द्वितीय गमे संवेह, जघन्य अनैं उत्कृष्ट अद्ध । अंतर्मुहूर्ना बेह, दोय भवां नों जाणवो ।।

१२२ भगवती जोड

४८ तीजे गमें संवेह, तीन दिवस ने रात्रि फुन। अंतर्मुहर्ता जेह, जघन्योत्कृष्ट बे भव अद्धा।। ४९. विल तेऊ में इष्ट, सन्नी मनुष्यज ऊपजै। जघन्य अनें उत्कृष्ट, बे भव पिण अधिका नथी।। ५०. स्थिति मनुष्य नीं जाण, धूर त्रिण गमके जघन्य थी। माण, उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नीं।। ५१. मक्सम त्रिण गम मांय, अंतर्मुहूर्त्ता जघन्य जिट्ठ । अंतिम त्रिण गम पाय, पूर्व कोड़ जघन्योत्कृष्ट ।। ५२. नव ही गम उपजेह, संख्याता उत्कृष्ट थी। पिण तसु कायसंवेह, कहिवो सर्व विचार नैं।। ५३. सूत्रे तेऊ हेर, पृथ्वी नीं पर आखियो। स्थिति संवधे फेर, फुन सुर नहिं उपजै कह्यो।। ५४. पिण पृथ्वी में जोय, मनुष्य ऊपजै तेहनां। जघन्य थकी भव दोय, उत्कृष्टा भव अठ कह्या।। ५५. इहां तेऊ रै मांय, मनुष्य ऊपजै तेहनां । बे भव ईज कहाय, पिण अधिका हुवै नथी।। ५६. तेउ वाउ में ताम, मनुष्य विषे ऊपजै नथी। सूत्र विषे बहु ठाम, तिणस् तेहनां दोय भव।। ५७. मनु तेऊ में आय, मनु पुढवी जिम आख्यि। लढ़ी आश्री ताय, पिण भव आश्री न संभवै।। ५८. \*सेवं भंते ! स्वामजी, जाव गोयम विचरंतो जी ।

वायुकाय में १२ ठिकाणां नां ऊपजै, तेहनों अधिकार

चउवोसम नों चवदमो, अर्थ थकी ए तंतो जी।।

चतुर्विशतितमशते चतुर्दशोद्देशकार्थः ।।२४।१४।।

५९. \*वाउकाइया हे प्रभु ! किहां थकी ऊपजेहो जी ? इम जिम तेऊ नों कह्यो, प्रवर उद्देशो तेहो जी ।। ६०. तिमहिज कहिवो वायु तणों, णवरं स्थिति संवेहो जी । उपयोगे करि जाणवो, सेवं भंते ! सत्य एहो जी ।।

#### सोरठा

६१. आवं तेऊ मांय, तेहिज वायु ने विषे।
फुन भव णाणत्ता पाय, तेऊ नी पर जाणवा।।
चतुर्विशतितमशते पंचदशोद्देशकार्थः।।२४।१५।।

वनस्पतिकाय में २६ ठिकाणां नां ऊपजै, तेहनों अधिकार

६२. \*प्रभु ! वनस्पतिकाइया, किहां थकी ऊपजेहो जी ? एवं पृथ्वी सारिखो, उद्देशक पभणेहो जी ।।

\*लय: धर्म दलाली चित्त करै

१. देखें परि. २, यंत्र ४४-५५

२. देखें परि. २, यंत्र ४४-६१

४८. सेवं मंते ! सेवं मंते ! त्ति जाव विहरइ । (श∙ २४।२२५)

- ४९. वाउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? एवं जहेव तेउक्काइयउद्देसओ,
- ६०. तहेव, नवरं—िठिति संवेहं च जाणेज्जा । (श० २३।२२६) सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति । (श० २४।२२७)

६२. वणस्सद्दकादया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? एवं पुढविक्काइयसरिसो उद्देसो,

श० २४, उ० १५,१६, ढा० ४२४ १२३

६३. णवरं इतरो विशेष छै, वणस्सइ जीव जिवारे जी। वनस्पतिकायिक विषे, उपजै तेह तिवारै जी ।। ६४. प्रथम द्वितीय तुर्य पंचमे, ए चिउं गमक विषेहो जी। एक समय मांहि ऊपजे, तसु परिमाण कहेहो जी।। ६५. समय-समय प्रति चिउं गमे, विरह-रहित विसरालो जी। जीव अनंता ऊपजै, ए स्वकाय थी न्हालो जी।।

## सोरठा

- ६६. वनस्पति थी जोय, नीकलवो छे अनंत नों। अन्य काय थी सोय, अनंत जीव नहिं नीकलै।। पृथ्वी अप ६७. शेष काय जे पंच, तेऊ पवन। वलि त्रस विषेज संच, सर्वे असंख्याताज छ।। ऊपजवो छे अनंत ६८. वनस्पति रौ माहि, अन्य काय में ताहि, जीव अनंत न ऊपजे।। ६९. पृथ्वी अप रे मांय, तेऊ वाऊ जीव अनंत न पाय, तिणसू अनंत न ऊपजे।। ७०. प्रथम द्वितीय गम मांय, तुर्य पंचमा उत्कृष्ट स्थिति न पाय, एहवूं आख्यूं वृत्ति में।। ७१. तिण कारण उत्कृष्ट, भवादेश करि भव काल आश्रयी इष्ट, काल उत्कृष्ट अनंत थी।।
- ७२. \*भवादेश करि जघन्य थी, बे भव ग्रहण करेहो जी। उत्कृष्टा भव अनंत ही, च्यारूं गमक विषेही ७३. काल आश्रयी जघन्य थी, अंतर्म्हुर्त्त दोयो उत्कृष्ट काल अनंत ही, एह गतागति होयो जी ।।
- ७४. शेष तीजो छठो सातमो, अष्टम नवम तिमहिज अठ भव ग्रहण छै, उत्कुष्ट स्थितिकपणेहो जो ।। ७५. णवरं इतरो विशेष छै, स्थिति अनें संवेहो जी। उपयोगे करि जाणवो, तास न्याय इम लेहो जी।।

#### सोरठा

- ७६. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट, सहु गम विषे प्रसिद्ध छै। फून संवेधज इष्ट, ते इम पंच गमा विषे 🛚 ७७. तीजे गमे संवेह, जघन्य थी। बे भव अद्धा स्थिति वली।। अंतर्मुहर्त्त जेह, वर्षे सहस्र दश अष्ट भवां नों ७८. उत्कृष्ट अद्धा तास, इह सहस्र असी जे वास, इक-इक भव दश सहस्र वर्ष।। ७९. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष दश जाणव्ं।। अंतम्हत्ते जेह, सहस्र अद्ध प्रकार, अष्ट भवां नों इह विधे। वर्ष सहस्र चालीस फुन ॥
- \*लय: धमं दलाली चित्त करें

च्यार,

१२४ भगवती जोड़

अंतर्महर्त्त

- ६३. नवरं—जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएस् उववज्जिति ताहे
- ६४. पढम-बितिय-चउत्थ-पचमेसु गमएसु परिमाण
- ६५. अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति
- ६६. अनेन वनस्पतेरेवानन्तानामुद्वृत्तिरस्ति (वृ० प० ५३३) इत्यावेदितं,
- ६७. शेषाणां हि समस्तानामप्यसङ्ख्यातत्वात्, (वृ० प० ८३३)
- ६८,६९. तथाऽनन्तानामुत्पादो वनस्पतिष्वेव कायान्तर-स्यानन्तानामभाजनत्वादित्यप्यावेदितं,(वृ० प० ५३३)
- ७०,७१. इह च प्रथमद्वितीयचतुर्थपञ्चमगमेष्वनुत्कृष्ट-स्थितिभावादनन्ता उत्पद्यन्त इत्यभिधीयते, (वृ० प० ५३३)
- ७२. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं।
- ७३. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ।
- ७४. सेसा पंच गमा अटुभवग्गहणिया तहेव,
- ७५. नवरं--िठिति संवेहं च जाणेज्जा । (श० २४।२२८)
- ७६. तत्र स्थितिर्जघन्योत्कृष्टा च सर्वेष्विप गमेषु प्रतीतैव, (बु॰ प॰ ८३३)
- ७७. संवेधस्तु तृतीयसप्तमयोर्जंघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्त-(बू॰ प॰ ५३३) र्मुहर्त्ताधिकानि
- ७८. उत्कर्षतस्त्वष्टासु भवग्रहणेषु दशसाहस्त्याः प्रत्येकं भावादशीतिर्वर्षसहस्राणि, (वृ० प० ८३३)
- ७९. षढठाष्टमयोस्तु जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मृहूर्त्ताधि-(वृ० प० ८३३)
- ८०. उत्कृष्टतस्तु चत्वारिशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मृहूर्त्तचतुष्टया-(वृ॰ प॰ ८३३) भ्यधिकानि,

८१. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्म्हर्ते अधिक फून।। ५२. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। असी हजारज वास, ए तृतीय गमा तुल्य सप्तमो।। ५३, अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहर्त्त अधिक फुन ॥ द४. उत्कृष्ट अठ भव धार, वर्ष सहस्र चालीस जे । अंतर्म्हर्त्ते च्यार, षष्ठम तुल्य सम ८५. नवम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वीस सहस्र बरसेह, बिहुं भव नीं उत्कृष्ट स्थिति।। **८६. उ**त्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवे उत्कृष्ट असी सहस्र जे वास, इक-इक भव दश सहस्र वर्ष ।। ८७. जे षटवीस ठिकाण, तेहथी वनस्पति कपजता ने जाण, पुढवी नीं पर दद. \*सेवं भंते ! स्वाम जी, शत चउवीसम जाणी जी। सोलम उद्देशक तणों, वारु रीत बखाणी जी।। चतुर्विशतितमशते षोडशोद्देशकार्थः ।।२४।१६।।

## सोरठा

द९. अप्प वणस्सइ मभार, उपजै स्थान छ्वीस नों। तास णाणत्ता धार, पृथ्वी नीं पर जाणजो।। ९०. तेळ वाळ मांय, उपजै द्वादश स्थान नों। तास णाणत्ता पाय, पुढवी नीं पर जाणवा।। बेइन्द्रिय में १२ ठिकाणां नां ऊपजै, तेहनों अधिकार'

६१. \*बेइन्दिया भगवंत जी! किहां थकी ऊपजंतो जी? इत्यादिक यावत विल, पूछे गोयम संतो जी।। ९२. पुढवीकायिक हे प्रभु! बेइन्द्रिय नैं विषेहो जी। जे ऊपजवा जोग्य छै, ते कितै काल स्थितिक ऊपजेहो जी?

वा०— 'बेइंदिया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? जाव पुढवीकाइए णं भंते ! जे भविए बेइंदिएसु उववज्जित्तए इत्यादिक इहां पूछ्यो — बेइन्द्रिय भगवान ! किहां यकी ऊपजें ? पछे जाव पुढवीकाइए णं भंते ! जे भविए इति । इहां जाव शब्द में किसा पाठ आया ? उत्तर—जे पृथ्वीकाय नै विषे ऊपजे तेहनीं पूछा । उत्तर नां पाठ कहिवा ।

जब कोई पूछे पृथ्वी नै विषे देवता पिण ऊपर्ज छै अने बेइन्द्रिय नै विषे देवता अपजता नथी तो ए पृथ्वी में अपर्ज जे पाठ जाव शब्द में इहां किम आवें? तेहनों उत्तर — पृथ्वीकाय नां प्रश्नोत्तर में इम कह्यो — पृथ्वीकाय भगवान किहां थकी ऊपर्ज ? स्यूं नारकी थकी ऊपर्ज, कै तियंच, मनुष्य, देव थकी ऊपर्ज, गोतम ! नारक थकी न ऊपर्ज । तियंच, मनुष्य, देव थकी ऊपर्ज,

\*लयः धर्म दलाली चित करै १. देखें परि. २, यन्त्र ६२-७३ ५४,५६. नवमे तु जघन्यतो विश्वतिवंषंसहस्राणिउत्कर्षतस्त्वशीतिरिति । (वृ० प० ६३३)

दद. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० २४।२२९)

- ९१. बेंदिया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? जाव (श० २४।२३०)
- ९२. पुढिविक्काइए णं भंते ! जे भविए बेंदिएसु उव-विजत्तिए, से णं भंते ! केवितकालिट्ठितीएसु उव-वज्जेज्जा ?

श० २४, उ० १७, ढा० ४२४ १२५

जो तिर्यंच थकी ऊपजै तो स्यूं एकेंद्रिय तिर्यंच थकी ऊपजै ? 'एवं जहा वक्कंतीए' इम जिम पन्नवणा नां व्युतकांत छठा पद (सू० ८२-८५) नैं विषे उपपात कह्युं तिम कहिवुं।

पृथ्वीकाय नै विषे उपपात पन्नवणा नां छठा पद नै विषे कह्यो ते भलायो। तिम इहां पिण बेहन्द्रिय विषे उपपात छठा पद (सू० ६६) नै विषे कह्यो ते जाणवो। छठा पद नै विषे पृथ्वी में देवता ऊपजै इम कह्युं। अनै बेहन्द्रिय नै विषे देव न ऊपजै इम छठै पद कह्युं। ते माटै इहां जाव शब्द में विरोध नथी।' (ज०स०)

- ९३. पृथ्वीकायिक जीव नें, पृथ्वीकाय विषेहो जी।
  .... ऊपजता नें लब्धि जे, पूर्वे भाखी जेहो जी।।
- ९४. बेइन्द्रिय नैं विषे जिका, पृथ्वीकायिक ताह्यो जी। ऊपजता नैं बोल नीं, लब्धि सर्व ही पायो जी।।
- ९५. यावत घुर गम काल थी, जघन्य अंतर्मुहूर्त्त दोयो जी। उत्कृष्ट अद्धा भव संख्या, इतो काल गतागति होयो जी।।
- ९६. इम धुर द्वितीय गमा विषे, तुर्य पंचमे संवेहो जी। जघन्य वे अंतर्मुहूर्त्त ही, उत्कृष्ट काल संबेहो जी।। ९७. शेष तीजो छठो सातमो, अष्टम नवम संवेहो जी। तिमज जघन्य भव दोय छै, उत्कृष्ट भव अठ लेहो जी।।

## सोरठा

- ९८. तोजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त जेह, बार वर्ष बेइंद्रिय।।
- ९९. उत्कृष्ट काल विमास, आठ भवां नों इह विधे। सहस्र अठघासी वास, वर्ष अष्ट चालीस फून।।
- १००. षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी । अंतर्मुहुर्त्त जेह, द्वादश वर्षज द्वीन्द्रिये ।।
- १०१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों । अंतर्मुहर्त्तं च्यार, वर्षे अष्टचालीस फून ।।
- १०२. सप्तम गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र बावीस, अंतर्मुहूर्त्त अधिक फुन।।
- १०३. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। सहस्र अठघासी वास, वर्ष अष्ट चालीस फुन।।
- १०४. अष्टम गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र बावीस, अंतर्म्हुर्त्त अधिक ही।।
- १० प्र. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। सहस्र अठघासी वास, अंतर्मुहुर्त्त अधिक चिहुं।।
- १०६. नवमे गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र बावीस, वर्ष बारै अधिक वली।।

९३. सच्चेव पुढिवकाइयस्स लढी

- ९५. जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं — एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागींत करेज्जा।
- ९६. एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो,
- ९७. सेसेसु, पंचसु तहेव अट्ट भवा।

<sup>\*</sup>लय: धर्मं दलाली चित्त करै

१२६ भगवती जोड़

- १०७. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। सहस्र अठघासी वास, वर्ष अष्ट चालीस फुन।।
- १०८. \*इम जाव चर्डारद्री संघात ही, चिउं गम भव संखेहो जी। शेष पांचूंइ गमा विषे, उत्कृष्ट अठ भव लेहो जी।।

- १०९. पृथ्वी सात संवेह, आख्यो बेइन्द्रिय तणों। इम अप साथ कहेह, तेज संघाते पिण इमज।।
- ११०. वायु वणस्सइ साथ, बे ते चर्डारद्री तणें। कहिवो एह संघात, संवेध बेइन्द्रिय तणों।।
- १११. चिउं गम विषेज लेह, उत्कृष्टा संख्यात भव। फुन गम पंच विषेह, भव उत्कृष्ट थकीज अठ।।
- ११२. काल आश्रयी जेह, जिका स्थिति छै जेहनी। संयोजवै करि तेह, कायसंवेधज जाणवो।।
- ११३. \*पंचेंद्रिय तिरियोनिका, फुन मनु योनि संघातो जी। बेइन्द्रिय में जातो थको, तिमज अष्ट भव ख्यातो जी।।

#### सोरठा

- ११४. तिरि पं. मनु कहेह, जातो बेइंद्रिय विषे। नवूं ही गमा विषेह, उत्कृष्टा भव अष्ट ह्वै।।
- ११५. \*स्थिति अनें संवेध जे, नवूं ही गमक विषेहो जी। उपयोगे करि जाणवो, वारु विधि करि जेहो जी।।
- ११६. सेवं भंते ! स्वाम जी, शत चउवीसम केरो जी। सतरम उद्देशक तणों, आख्यो अर्थ सुमेरो जी।। चतुर्विशतितमशते सप्तदशोद्देशकार्थः ।।२४।१७।।

# तेइन्द्रिय में १२ ठिकाणां नां ऊपजै, तेहनों अधिकार'

११७. प्रभु ! तेइन्द्रिया किहां थी उपजै, ?

इम तेइन्द्रिय नैं जेहो जी। जिमज उद्देशो बेंद्री नों, तिम तेइन्द्रिय नों लेहो जी।। ११८. णवरं इतरो विशेष छे, स्थिति अने संवेहो जी। उपयोगे करि जाणवूं, इहां वृत्तिकार कहेहो जी।।

#### सोरठा

११९ तेइन्द्रिय रै मांहि, ऊपजवा वाला जिके।
पुढवी प्रमुख ताहि, तसु आयु नें स्थिति कही।।
१२०. पृथिव्यादिक नीं स्थित, स्थिति फुन तेइन्द्रिय तणीं।
तास संयोग कथित्त, संवेध कहियै इम वृत्तौ।।

\*लयः धर्म दलाली चित्त करें १. देखें परि. २, यंत्र ६२-७३ १०८. एवं जाव चर्डारिदिएणं समं चल्रसु संखेज्जा भवा, पंचसु अट्ठभवा।

११३. पंचिदियतिरिक्खजोणियमण्स्सेसु समं तहेव अट्ठ भवा ।

- ११५. ठिति संवेहं च जाणेज्जा। (श० २४।२३१)
- ११६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० २४।२३२)
- ११७. तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? एवं तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाणं उद्देशो,
- ११८. नवरं ठिति संवेहं च जाणेज्जा।
- ११९. 'स्थिति' त्रीन्द्रियेषू त्पित्सूना पृथिव्यादीनामायुः (वृ० प० ८३४)
- १२०. 'संवेधं च' त्रीन्द्रियोत्पित्सुपृथिव्यादीनां त्रीन्द्रियाणां च स्थिते: संयोगं जानीयात् (वृ० प० ८३४)

श० २४, उ० १८, ढा• ४२४ १२७

- १२१. तेहिज कायसंवेह, किहांइक देखाड़े अछै। आख्यो सूत्र विषेह, तृतीय गमो इण रीत सूं॥
- १२२. \*तेऊ स्थिति संग मेलवै, तेंद्रिय नीं स्थिति सोई जी। तेह संवेध तीजे गमे, कहिये छै अवलोई जी।।
- १२३. तृतीय गमे संवेध जे, उत्कृष्टो इम जाणी जी। दोय सौ अष्ट दिवस निशा, तास न्याय पहिछाणी जी।।

- १२४. ओघिक तेजसकाय, उत्कृष्ट स्थिति त्रिण दिन-निशा। ते चिउं भव जे आय, अहो-रात्रि द्वादश थया।।
- १२५. जेष्ठ तेइन्द्रिय स्थित, गुणपचास दिन नें निशा। चिउंभव करी कथित, हुवै एक सय नें छिनूं।।
- १२६. बिहुं मेलावियां एह, दोय सौ नें अठ रात्रि-दिन । तेऊ साथ संवेह, तृतीय गमे तेइंद्रिय ।
- १२७. \*विल बेइंद्रिय ऊपजै, तेइंद्रिय नैं मांह्यो जी। तीजा गमा नैं विषे हिवै, कायसंवेध कहायो जी।।
- १२८. तृतीय गमे उत्कृष्ट थी; अष्टचालीस वासो जी। एक सौ छिनूं दिवस-निज्ञा, एह अधिक सुविमासो जी।।

## सोरठा

- १२९. वर्ष अड़ताली धार, बेइन्द्रिय चिहुं भव स्थिति । तेइन्द्रिय भव च्यार, इक सय छिन्नू दिवस-निशि ।।
- १३०. \*तेइन्द्रिय तेइन्द्री में ऊपजै, तृतीय गमे संवेहो जी। तीन सौ बाणूं दिवस-निशा, उत्कृष्ट अद्धा एहो जी।।

## सोरठा

- १३१. तेइन्द्रिय भव एक, गुणपचास दिन-रात्रि नों। अष्ट भवे इम लेख, त्रिण सय बाणूं दिवस-निशि।।
- १३२. \*एवं सर्वत्र जाणवा, चर्डारद्वियादिक जेहो जी। जाव सन्नी मनु साथ ही, कहिवो तास संवेहो जी।।

## सोरठा

- १३३. चर्डारद्रिय सुविचार, असन्नी सन्नी तिरि मनु। तसु स्थिति सह अवधार, तेइंद्रिय नीं जे स्थिति।।
- १३४. तृतीय गमे संवेह, देखाड़वै करिनै वली। षष्ठम आदि गमेह, ते संवेध पिण जाणवा।।

\*लय: धर्म दलाली चित करें

१२८ भगवती जोड़

- १२१. तदेव क्वचिद्दर्शयति (वृ० प० ६३४)
- १२२,१२३. तेउवकाइएसु समं ततियगमे उक्कोसेणं अट्ठृत्तराइं वेराइंदियसयाइं,
- १२४. औषिकस्य तेजस्कायिकस्य चतुर्षु भवेषूत्कर्षेण व्यहोरात्रमानत्वाद् भवस्य द्वादशाहोरात्राणि उत्कृष्ट-स्थितेश्च (वृ० प० ८३४)
  - १२५. त्रीन्द्रियस्योत्कर्षतश्चतुर्षु भवेष्वेकोनपञ्चाशन्मान-त्वेन भवस्य शतं षण्णवत्यधिकं भवति
  - (वृ० प० ८३४) १२६. राशिद्वयमीलने चाष्टोत्तरे द्वे रात्रिन्दिवशते स्यातामिति । (वृ० प० ८३४)
- १२७,१२८. बेइंदिएहिं समं तितयगमे उक्कोसेणं अडयालीसं संवच्छराइं छन्नउयराइंदियसत-मब्भहियाइं,
- १२९. द्वीन्द्रियस्योत्कर्षतो द्वादशवर्षप्रमाणेषु चतुर्षु भवेष्व-ष्टचत्वारिशत्संवत्सराश्चतुर्ष्वेव त्रीन्द्रियभवग्रहणेषू त्कर्षेणैकोनपञ्चाशदहोरात्रमानेषु षण्णवत्यधिकं दिनशत भवतीति । (वृ० प० ८३४)
- १३०. तेइदिएहिं समं तित्यगमे उक्कोसेणं बाणउयाइं तिण्णि राइदियसयाइं।
- १३१. 'बाणउयाइं तिन्ति राइंदियसथाइं' ति अष्टासु त्रीन्द्रियभवेषूत्कर्षेणैकोनपञ्चाशदहोरात्रमानेषु त्रीणि शतानि द्विनवत्यधिकानि भवन्तीति, (वृ०प० ८३४)
- १३२. एवं सञ्वत्थ जाणेज्जा जाव सण्णिमणुस्स ति । (श० २४।२३३)
- १३३-१३५. चतुरिन्द्रियसंझ्यसिङ्ज्ञितियंग्मनुष्यैः सह त्रीन्द्रियाणां तृतीयगमसंवेधः कार्ये इति सूचितं, अनेन च तृतीयगमसवेधदर्शनेन षष्ठादिगमसंवेधा अपि सूचिता द्रष्टव्याः, तेषामप्यष्टभविकत्वात्,

(वृ॰ प० ८३४)

- १३४. ए गम पंच विषेह, अठ भव आख्या ते भणो । वर उपयोग करेह, तसु संवेध विचारियो ।। १३६ शेष गमक त्रिहुं ख्यात, गमन पंचेंद्रिय अष्ट भव । विकलेंद्रिय संख्यात, स्थावर साथे संख भव ।। १३७. \*सेवं भंते ! स्वामजी, शत चउवीसम सारो जी । अष्टदशम उद्देश नों, आख्यो अर्थ उदारो जी ।। चतुर्विशतितमशते अष्टादशोद्देशकार्थः ।।२४।१८।।
  - चर्जीरद्रिय में १२ ठिकाणां नां ऊपजे, तेहनों अधिकार'
- १३८. चर्डारेद्रिया भगवंतजी ! किहां थकी उपजेहो जी ? जिम तेइंद्री उद्देश छै, तिम चर्डारेद्रिया लेहो जी ।। १३९. णवरं स्थिति तथा वली, संवेध प्रति जाणेहो जी । सेवं भंते ! स्वाम जी, एगुणवीसमो लेहो जी ।

१४०. पंच स्थावर पहिछाण. बे ते चडरिंद्रिय वली। असन्नी तिरि मनु जाण, फुन सन्नी तियँच मनु।। १४१. विकलेंद्रिय रै मांय, आवै बार ठिकाण नों। जघन्य गमेज पाय, गमा णाणत्ता पृथ्वीवत ।। १४२. उत्कृष्ट गमेज पाय, ते पिण पृथ्वी नीं परै। असन्नी मनु जे आय, तेह विषे नहि णाणत्तो।। १४३. विकलेंद्रिय में आय, पंच स्थावर विकलेंद्रिय । चिहुं गम उत्कृष्ट पाय, संख्याता भव ने अद्धा ।। १४४. तीजे छट्ठे जाण, सप्तम अष्टम नवम गम। जघन्य दोय भव आण, उत्कृष्टा भव अष्ट फुन ॥ १४५. विकलेंद्रिय में आय, असन्नी तिरि पर्चेद्रिय। सन्नी तिरि मनु ताय, नव गम उत्कृष्ट अठ भव ।। १४६. विकलेंद्रिय रै मांय, असन्नी मनु आवै तसु। मध्यम त्रिण गम पाय, उत्कृष्टा भव अप्ट जे।। १४७. \*च्यारसौ नें चउवीसमीं, आखी ढाल अमंदो जी। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थीं, 'जय-जश' हरष आणंदो जी ।। चतुर्विशतितमशते एकोनविशोद्देशकार्थः ॥२४।१६॥

\*लय: धर्म दलाली चित करें

त्रिण विकलेंद्रिय मांय, उपजैद्धादश स्थान नों । तास णाणत्ता पाय. ते पिण पृथ्वी नीं परै ॥ ने के बाद यह क्यों दिया गया ? इस सम्बन्ध में रचना

ढाल पूरी होने के बाद यह क्यों दिया गया ? इस सम्बन्ध में रचनाकर द्वारा कोई संकेत न देने के कारण इसे पाद टिप्पण में दिया गया है। १३७. सेबं भंते ! सेवं भंते ! ति जाव विहरइ। (श० २४।२३४)

- १३८. चउरिदिया णं भंते ! कओहिं वे उववज्जंति ? जहा तेइदियाणं उद्देसओ तहेव चउरिदियाणं वि,
- १३९. नवरं ठिति संवेहं च जाणेज्जा । (श० २४।२३५) सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति । (श० २४।२३६)

श॰ २४, उ० १९, ढा॰ ४२४ १२९

१. देखें परि. २, यंत्र ६२-७३

२. भगवती जोड़ की मूल प्रति में ४२४वीं ढाल की सम्पूर्ति के बाद निम्नलिखित नोंध और एक सोरठा उपलब्ध है - पांच स्थावर ५ तीन विकलेन्द्रिय ६ असन्ती तिर्यंच पंचेंद्रिय ९ सन्ती तिर्यंच पंचेद्रिय १० असन्ती मनुष्य ११ और सन्ती मनुष्य १२—एव १२ ठिकाणां ना विकलेंद्रिय में अपर्ज ।

#### ढाल: ४२५

#### दूहा

तियँच पंचेंद्रिय में प्रथम नरक नां नेरइयां ऊपजे, तेहनों अधिकार

- १. पंचेंद्रिय तिरिक्खयोनिका, प्रभु! किहां थकी ऊपजंत । स्यूं नारिक थी ऊपजें, के तिरि मनु सुर थी हुंत?
- २. जिन भाखे सुण गोयमा ! नारिक थी पिण जेह । तिरि मनु सुर थी पिण तिके, ऊपजे कर्म वसेह ।।
- ३. जो नारिक थी ऊपजै, तो स्यू रत्नप्रभाह। पृथ्वी घुर नारिक थकी, ऊपजै स्वामीनाह!
- ४. जाव अधोसप्तम मही, नारिक थी ऊपजेह? जिन कहै सातूंई थकी, ऊपजे तिरिक्खपणेह।।

# ओधिक नैं ओधिक (१)

\*जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों।। (ध्रुपदं)

५. प्रभु ! रत्नप्रभा मही नारकी, पंचेंदिय निर्ध

पंचेंद्रिय तिर्यंच विषेह लाल रे।

जे उपजवा योग्य छ,

ते कितै काल स्थितिक ऊपजेह लाल रे?

६. श्री जिन भाखें जघन्य थी, अंतर्मुहूर्त्तं स्थितिकेह लाल रे । उत्कृष्ट पूर्व कोड़ जे, वर्षायुवंत विषेह लाल रे ।।

#### सोरठा

- ७. नारिक मिर नें सोय, निंह ह्वं तियँच युगिलयो। ते माटे ए जोय, पूर्व कोड़ विषे कह्यो।।
- s. \*प्रभु! एक समय किता अपजै?
  - इम जिम पृथ्वी मांहि लाल रे। असुरकुमारज ऊपजै, वक्तव्यता कहि ताहि लाल रे।।
- ९. इमज पंचेंद्रि तियंच में, रत्नप्रभा नां जाण लाल रे। नारिक ऊपजता तणों, परिमाणादि पिछाण लाल रे।।
- १०. णवरं विशेषज एतलो, नारिक संघयण विषेह लाल रे । पुद्गल अनिष्ट अकांत ही, जाव तिके परिणमेह लाल रे ।।
- ११ अवगाहना नारिक तणीं, दाखी दोय प्रकार लाल रे। प्रथम अर्छे भवधारणी, उत्तर वैकिय धार लाल रे।।
- \* लय: भूंडी रे भूख अभावणी
- १. देखें परि० २, यंत्र ७४
- १३० भगवती जोड

- १. पंचिदियतिरिक्खजोणिया ण भंते ! कओहिता उववज्जंति—कि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो० देवेहितो उववज्जंति ?
- २. गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिए-हिंतो, मणुस्सेहिंतो वि, देवेहिंतो वि उववज्जति । (श० २४।२३७)
- ३. जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति—कि रयणप्पमपुढवि-नेरइएहिंतो उववज्जंति,
- ४. जाव अहेसत्तमपुढिविनेरइएहिंतो उववज्जिति ? गोयमा ! रयणप्पभपुढिविनेरइएहिंतो उववज्जिति जाव अहेसत्तमपुढिविनेरइएहिंतो उववज्जिति । (श० २४।२३८)
- ५. रयणप्पभपुढिविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिदिय-तिरिक्खजीणिएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालिट्टतीएसु उववज्जेज्जा ?
- ६. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पृव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा । (श॰ २४।२३९)
- द. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया,
- १०. नवरं संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकंता जाव परिणमंति ।
- ११. आगाहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य ।

- १२. तिहां तिका भवधारणा, जघन्य आंगुल नों ताय लाल रे। असंख्यातमे भाग छे, उत्पत्ति समये पाय लाल रे।।
- १३. उत्कृष्टी धनु सप्त नीं, तीन हस्त नीं विल ताय लाल रे। षट आंगुल अधिकी कही, तेरम प्रतर पेक्षाय लाल रे।।

- १४. वृत्ति विषे इम् ख्यात, रत्नप्रभाइं धुर प्रतर । ऊचपणे त्रिण हाथ, पभणी देह नारिक तणीं।।
- १५. साढा छप्पन्न सोय, आंगुल नीं करवीज वृद्धि । प्रतर-प्रतर अवलोय, तेरम प्रतर यथोक्त ह्वै ।।
- १६. \*उत्तर वैकिय छै तिहां. जघन्य थकी ते जाण लाल रे । आंगुल नौंज कहीजियै, भाग संख्यातमुं माण लाल रे ।।
- १७. उत्कृष्ट धनुष्य पनर तणीं, अधिक अढाई हाथ लाल रे । भवधारणी काया थकी, ए दुगुणीज आख्यात लाल रे ।।
- १८. हे भगवंत ! ते जीव नें, शरीर तणों सुविचार लाल रे । स्यूं सांठाण परूपियो ? किहयें स्यूं आकार लाल रे।।
- १९. श्री जिन भाखे गोयमा ! दाख्या दोय प्रकार लाल रे । प्रथम कही भवधारणी, उत्तरवैकिय धार लाल रे ।।
- २०. जेह तिहां भवधारणी, हुंड संठाणे जाण लाल रे। उत्तरवैक्रिय जे तिहां, ते पिण हुंड संठाण लाल रे।।
- २१. एक कापोत लेश्या कही, समुद्घात घुर च्यार लाल रे । स्त्री पुं. वेद म नारकी, वेद नपुंसक धार लाल रे ।।
- २२. स्थिति जघन्य दश सहस्र नी, उत्कृष्ट सागर एक लाल रे। अनुबंध पिण इम जाणवी, शेष असुरवत पेख लाल रे।।
- २३. भवादेश करि जघन्य थो, बे भव ग्रहण करेह लाल रे। उत्कृष्टा अठ भव करे, हिवै तसु काल कहेह लाल रे।।
- २४. काल आश्रयी जघन्य थी, वर्ष सहस्र दश जन्य लाल रे । अंतर्म्हृतं अधिक ही, बे भव स्थिति जघन्य लाल रे ।।
- २५. उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे, नारक सागर च्यार लाल रे। पूर्व कोड़ चिउं अधिक ही,
  - उत्कृष्ट तिरि स्थिति धार लाल रे।।
- २६. सेव कालज एतलो, करै गतागित इतो काल लाल रे। ओघिक नें ओघिक गमो, दाख्यो प्रथम दयाल लाल रे।।

- तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
- १३. उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिष्णि रयणीओ छच्चंगुल।इं । इदं च त्रयोदशप्रस्तटापेक्षं । (वृ० प० ८३९)
- १४,१५. प्रथमप्रस्तटादिषु पुनरेवम्— रयणाइ पढमपयरे हत्थतियं देहउस्सयं भणियं। छप्पन्नंगुलसङ्ढा पयरे पयरे य वुड्ढीओ ॥१॥ (वृ० प० ८३९)
- १६. तत्थ ण जा सा उत्तरवेउ व्विया सा जहण्णेण अगुलस्स संखेजजइभाग,
- १७. उक्कोसेणं पण्णरस धणूइ अड्ढाइज्जाओ रयणीओ। (श० २४।२४०) इय च भवधारणीयाऽवगाहनाया द्विगुणेति। (वृ० प० ८४०)
- १८. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिया पण्णता ?
- १९. गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहः —भवधारणिज्जा य, उत्तरवेजिवया य ।
- २०. तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंटिया पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउन्विया ते वि हुडसटिया पण्णत्ता।
- २१. एगा का उलेस्सा पण्णता । समुग्घाया चत्तारि । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसंगवेदगा ।
- २२. ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरो-वमं । एवं अणुबंधो वि । सेसं तहेव । 'सेसं तहेव' त्ति शेष—-दृष्टयादिक तथैव यथाऽसुर-कुमाराणां । (वृ० प० ५४०)
- २३. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइ।
- २४. कालादेसेण जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त-मन्भहियाइं,
- २५. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोबमाइं चउहि पुन्वकोडीहि अक्भहिमाइं,
- २६. एवतियं कालं सेवेण्जा, एवतियं कालंगतिरागित करेण्जा १। (श॰ २४।२४१)

<sup>\*</sup>लय: मूंडी रे भूख अभावणी

# जघन्य ने ओधिक [२]

- २७. तेहिज धुर मही नारकी, द्वितीय गमे कहिवाय लाल रे। जघन्य काल स्थितिक विषे, ऊपनों पं० तिरि मांय लाल रे।। २८. जघन्य अनें उत्कृष्ट थी, अंतर्महूर्त्तं जाण लाल रे। आयुवत विषे ऊपजें, इम भाखे जगभाण लाल रे।। २९. शेष तिमज कहिवो सहु, ओघिक धुर गम जेम लाल रे। णवरं इतरों विशेष छैं, सांभलजों धर प्रेम लाल रे।।
- ३०. काल आश्रयी जघन्य थी, तिमहिज धुर गम जेम लाल रे । वर्ष सहस्र दश नारकी, अंतर्मुहूर्त्त तेम लाल रे ।। ३१. द्वितीय गमे उत्कृष्ट अद्धा, नारिक सागर च्यार लाल रे ।। अंतर्मुहूर्त्त चिहुं विल, इतो काल गतागित धार लाल रे ।।
- ३२. धुर वे गम ए दाखिया, अनुक्रमे करि जाण लाल रे । इम शेष गमा पिण सप्त हि, भणवा न्याय पिछाण लाल रे ।।

#### सोरठा

- ३३. जेहवी स्थितिज जाण, जघन्योत्कृष्टज भेद थी। बिहुं धुर गमे पिछाण, आखी जे नारकी तणी।। ३४. स्थिति तेहवीज सुजोय, मध्यम अंतिम त्रिहुं गमे।
- ते लाभै नहिं कोय, तसु उत्तर कहियै हिवै।।
- ३५. अजमहिज नारको उद्देसके,

एहिज शतक नां जाण लाल रे । प्रथम उद्देशक नें विषे, आख्यो ते पहिछाण लाल रे ।।

३६. तिरि सन्नी पंचेंद्रि संघात ही, नारकी नैं जे चीन लाल रे। मध्यम तीन गमा विषे रे, अंतिम गमके तीन लाल रे।।

वा॰ - तिम इहां पिण कहिवो, एहवूं पाठ में नथी कह्यो । ते इति वाक्य शेष ए वचन शेष रह्यो जे ।

#### सोरठा

- ३७. त्रिण गम मध्यभकेह, रत्नप्रभा नारिक तणीं। वर्ष सहस्र दश जेह, स्थिति कही ते जाणवी।। ३८. अंतिम तीन गमेह, जघन्य अने उत्कृष्ट थी। स्थिति इक सागर जेह, ए स्थिति नों नानापणों।। ३९ \*शेष तिमज कहिवो सहु, सर्वत्र सगलै स्थान लाल रे। स्थिति अने सर्वेध जे, उपयोगे करि जान लाल रे।।
- वा० प्रथम नरक सूं नीसरी बीसमा दंडक में ऊपजै, तिणरा ओघिक गमें अवगाहणा जघन्य आंगुल रो असंख्यातमे भाग, उत्कृष्ट ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल कही। जघन्य ३ गमे अवगाहणा द्वारे ओघिक ने भलायो। इम भलावण कै लेखे जघन्य १० हजार वर्ष नां नेरइया नी अवगाहणा जघन्य आंगुल

- २७. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो,
- २- जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तद्वितीएसु ।
- २९. अवसेसं तहेव, नवरं— 'अवसेसं तहेव' त्ति यथौघिकगमे प्रथमे । (वृ० प० ८४०)
- ३०. कालादेसेणं जहण्णेणं तहेव,
- ३१. उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउिंह अंतोमुहुत्ते हिं अब्भिहियाइं, एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गतिरागितं करेज्जा।
- ३२. एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा एवं च्दयनन्तरोक्तगमद्वयक्रमेण शेषा अपि सप्त गमा भणितव्याः, (वृष्पण्ड४०)
- ३३,३४. नन्वत्रैवंकरणाद् यादृशी स्थितिर्जघन्योत्कृष्ट-भेदादाद्ययोगंमयोर्नारकाणामुक्ता तादृश्येव मध्यमेऽ-न्तिमे च गमत्रये प्राप्नोति ? इति, (वृ० प० ८४०)
- ३५,३६. जहेव नेरइयज्देसए सिण्णपंचिदिएहिं समं। नेरइयाणं मिल्फिमएसु तिसु गमएसु पिच्छमएसु य तिसु गमएसु ठितिनाणत्तं भवति।

वा०-तथैवेहापीतिवाक्यशेषः। (वृ० प० ५४०)

३९. सेसं तं चेव । सब्बत्थ ठिति संवेहं च जाणेज्जा २-९। (श० २४।२४२)

<sup>•</sup>लय: मूंडी रे मूख अमावणी

१३२ भगवती जोड़

रै असंख्यातमे भाग, उत्कृष्ट ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल ह्वं । अने संघयणी तथा अन्य प्रन्थे पहिले पाथर उत्कृष्ट ३ हाथ नी कही । ते सूत्र नो वचन तो निसंदेह अने प्रकीण की बात सूत्र सूं मिल ते प्रमाणे । अने पाथरे पायरे स्थिति परमाणे अवगाहणा हुनै तो पन्नवणा पद (२१ सूत्र ७०) में पहिले, दूजे देवलोके ७ हाथ नी अवगाहणा कही । तीजे, चोथे देवलोके ६ हाथ नी कही । पांचमे छठे ५ हाथ नी कही । ७ में, ६ में देवलोके ४ हाथ नी कही । ९ में, १० में, ११ में, १२ में देवलोके ३ हाथ नी कही । नव ग्रीवेयक में २ हाथ नी कही । पांच अनुत्तर विमान में १ हाथ नी । पांचमा, छठा देवलोक रै बीच में असंख्याता जोजन नों आंतरो अने अवगाहणा में फरक न कहा । अने स्थित पांचमे जघन्य ७ सागर, उत्कृष्ट १० सागर । छठे जघन्य १० सागर, उत्कृष्ट १४ सागर । स्थित में एनलो फरक । अने अवगाहणा पंचम कल्प ना देव नी ५ हाथ नी पष्टम कल्प ना देव नी ५ हाथ नी पष्टम कल्प ना देव नी ५ हाथ नी पष्टम कल्प ना देव नी ५ हाथ नी विषटम कल्प ना देव नी ५ हाथ नी विषटम कल्प ना देव नी १ हाथ नी विषटम ना हाथ नी विषटम ना हाथ ना हाथ नी विषटम ना हाथ ना हाथ ना हाथ ना हाथ नी विषटम ना हाथ ना हाथ

इहां स्थिति ते नारकी नी प्रथम ३ गमे जघन्य १० सहस्र वर्ष, उत्कृष्टी १ सागर । मध्यम तीन गमे जघन्य अनै उत्कृष्ट थी १० सहस्र वर्ष । छेहलै तीन गमे जघन्य अनै उत्कृष्ट थी १० सहस्र वर्ष । छेहलै तीन गमे जघन्य अनै उत्कृष्ट थी १ सागर स्थिति नो धणी नेरइयो पंनेद्रिय तिर्यंच में ऊपजै । हिनै कायसबेध जूओ-जूओ कहै छै । तिण में दोय गमे कायसबेध पूर्वे कह्योज छै ।

# सोरठा

बे ४०. तीजे गमे संवेह, भव अद्धा जघन्य वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व तिरि पं. स्थिति ।। ४१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां नारिक सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक तिरि ।। बे भव अद्धा जघन्य थी। गमे संवेह, वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मृहत्ते अधिक फून ।। ४३. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां वर्ष चालीस हजार, तिरि भव पूर्व कोड़ चिउं।। ४४. पंचम गम संवेह, बं भव अद्धा जघन्य थी। वर्षे सहस्र दश जेह, अतम्हर्त अधिक फून ॥ तणों। ४५. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवा वर्ष चालीस हजार, अंतम्ह्रत च्यार ४६. छठे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व तिरि भव स्थिति ॥ ४७. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणो। तिरि भवे।। वर्ष चालीस हजार, पूर्व कोड़ चिउं ४८. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य सागर एक कहेह, अतम्ह्रत अधिक फून ॥ ४९. उत्कृष्टो अवधार, अष्ट भवां तणो । अद्धा नाराक सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउ तिरि भवे।। ५०. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। सागर एक कहेह, अंतर्महत्ते तिरि भवं ॥

- ५१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवा तणों। कहिये सागर च्यार, अंतर्मुहर्त्त चिउं अधिक।।
- ५२. नवम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। सागर एकज तेह, पूर्व कोड़ज अधिक फुन ॥
- ५३. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहिये सागर च्यार, पूर्व कोडज चिउं तिरि।। तियंच पंचेंद्रिय में दूसरी स्पू छट्टी नरक नां नेरइया ऊपजै, तेहनों अधिकारे

# ५४. \*प्रभु ! सक्करप्रभा नां नारका, तियँच पंचेंद्री विषेह लाल रे। ऊपजवा नें योग्य छै, इत्यादिक पूछेह लाल रे।।

- ४४. इम जिम रत्नप्रभा तणां, नव गम भाख्या ताय लाल रे। सक्करप्रभा विषे अपि, तिमहिज नव गम पाय लाल रे।।
- ५६. णवरं तनु अवगाहना, जिम ओगाहण संठाण लाल रे। पन्नवण पद इकवीसमे, ते सामान्य थी इम जाण लाल रे।।

## सोरठा

- ५७. सप्त धनुष्य त्रिण हाथ, षट आंगुल उत्कृष्ट घुर। शेष नरक षट ख्यात, दुगुण-दुगुण भवधारणी।।
- ५८. भवधारणी थकीज, दुगुणी उत्तरवैक्रिय। सात् मही कहीज, सहस्र धनुष्य है तमतमा।।
- ५९. \* नियमा तीनज ज्ञान नीं, समदृष्टि में होय लाल रे। नियमा तीन अज्ञान नीं, मिथ्याती में जोय लाल रे।।

# सोरठा

- ६०. द्वितीयादि नरकेह, सन्नी थकीज ऊपजे। ते माटे इम लेह, नियमा तीन अज्ञान नीं।।
- ६१ \*स्थिति तथा अनुबंध जे, पूर्वे भाख्यो चीन लाल रे। जघन्य एक सागर तणों, उत्कृष्ट सागर तीन लाल रे।।
- ६२. एवं जे नव श्री गमा, किहवा उपयोगेह लाल रे। इम यावत छठी मही, णवरं विशेष एह लाल रे।।
- ६३. अवगाहना लेश्या स्थिति, अनुबंध नें संवेह लाल रे। द्वितीयादिक छठी विषे, जे छै ते जाणेह लाल रे।।

# तियँच पंचेंद्रिय में सातवीं नरक नां नेरइया ऊपजै, तेहनों अधिकार

- ६४. तल सप्तम पृथ्वी तणां, नारक प्रभुजी ! जेह लाल रे। ऊपजवानें जोग्य जे, इत्यादिक पूछेह लाल रे।।
- ६५. इमहिज निश्चै नव गमा, कहिवा णवरं एह लाल रे। अवगाहना लेश्या स्थिति, अनुबंध प्रति जाणेह लाल रे।।

- ४४. सक्करप्पभापुढिविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उवविज्जित्तए ?
- ४५. एवं जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करपभाए वि,
- ५६. नवरं सरीरोगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे।
- ४७. सत्त धणु तिन्नि रयणी छन्नेव य अंगुलाइं उच्चतं । पढमाए पुढवीए बिउणा बिउणं च सेसासु । (वृ० प० ८४०)
- ५९. तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमं।
- ६०. 'तिन्ति णाणा तिन्ति अन्ताणा नियमं' ति द्वितीया-दिषु सञ्ज्ञिभ्य एवोत्पद्यन्ते ते च त्रिज्ञानास्त्र्यज्ञाना वा नियमाद् भवन्ति, (वृ० प० ८४०)
- ६१. ठिती अणुबंधा पुव्वभणिया ।
- ६२. एवं नव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा १-९। एवं जाव छट्टपुढवी,
- ६३. नवरं ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा संवेहो य जाणियव्वा। (श० २४।२४३)
- ६४. अहेसत्तमपुढवीनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उवविज्जित्तए ?
- ६५. एवं चेव नव गमगा, नवरं —ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा जाणियव्वा ।

<sup>\*</sup>लय: भूंडी रे भूख अभावणी

१. देखें परि. २, यंत्र ७४-७९

१३४ भगवती जोड़

- ६६. कायसंवेध भव आश्रयी, जघन्य थकी भव दोय लाल रे। प्रथम भव नारक तणों, बीजो तिरि पं. होय लाल रे।।
- ६७. उत्कृष्टा षट भव हुवै, नारक नां भव तीन लाल रे। पंचेंद्रिय तिर्यंच नां, ए पिण तीन कथीन लाल रे।
- ६८. काल आश्रयी जघन्य थी, बावीस सागर होय लाल रे। अंतर्मुहुर्त्त अधिक ही, जघन्यायू भव दोय लाल रे।।
- ६९. उत्कृष्ट षट भव आश्रयी, छासठ सागर जोय लाल रे। पूर्व कोड़ज त्रिण वली, अधिक हुवै अवलोय लाल रे।।

- ७०. छासठ सागर ख्यात, इहां त्रिण भव नां काल नों। बहलपणों आख्यात, तेहिज वांछघो छै इहां।।
- ७१. पिण भव नीं जे स्थित, उत्कृष्टी वांछी नथी। बहु भव काल कथित, जघन्य स्थिति करिकै इहां।।
- ७२. नरक सप्तमी मांय, जघन्य स्थिति प्रति भोगवी। मरि तियँचज थाय, पूर्व कोड़ नैं आउखै।।
- ७३. इम त्रिण वार करेह, छासठ सागर नरक स्थिति । फून तिर्यंच भवेह, पूर्व कोडज तीन ह्वं।।
- ७४. जो उत्कृष्ट स्थिति ताय, तेतीस सागर भोगवी। तिरि पंचेंद्रिय थाय, पूर्व कोड़ि ने आउखै।।
- ७५. तो उपजे बे वार, इम छासठ सागर हुवे पूर्व कोड़ि बे धार, तृतीय पूर्व कोडी न ह्वं।
- ७६. उत्कृष्ट स्थिति करि एम, काल अने भव अल्प ह्वे। तिणसूं आख्यो तेम, घुर स्थिति करि बहु भव अद्धा।।
- ७७. \*सेर्वे कालज एतलो, करं गति-आगति इतो काल लाल रे । ओघिक नें ओघिक गमो, दाख्यो प्रथम दयाल लाल रे ।।
- ७६. पहिला षट गम ने विषे, जघन्य थकी भव दोय लाल रे । उत्कृष्टा षट भव हुवै, न्याय विचारी जोय लाल रे ।।
- ७९. छेहला तीन गमा विषे, जघन्य करे भव दोय लाल रे। उत्कृष्टा चिउं भव करें, उत्कृष्ट गमके सोय लाल रे।।
- लब्धि नवं ही गमा विषे, प्रथम गमे जिम पेख लाल रे।
   आख्यो जिम कहिवो इहां,

णवरं स्थिति नों विशेख लाल रे ।।

#### सोरठा

- दश. त्रिण ओघिक गम इष्ट, फुन मध्यम त्रिण गम स्थिति। जघन्य अनें उत्कृष्ट, बावीस सागर नीं कही।।
- द२. अंतिम त्रिण गम दीस, जघन्य अनें उत्कृष्ट फुन। स्थिति सागर तेतीस, ते पं. तिरि में ऊपजै।।

- ६६. संवेही भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं,
- ६७. उनकोसेणं छब्भवग्गहणाइं।
- ६८. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोतमाई अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ,
- ६९. उक्कोसेणं छाविंदु सागरोवमाइं तिर्हि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं,
- ७०,७१. 'उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं' इत्यादि, इह भवानां कालस्य च बहुत्वं विवक्षितं, तच्च जघन्य-स्थितिकत्वे नारकस्य लभ्यत इति, (वृ० प० ८४०)
- ७२,७३. द्वाविंगतिसागरोपमायुर्नारको भूत्वा पञ्चेन्द्रिय-तिर्यक्षु पूर्वकोटचायुर्जातः एवं वारत्रये षट्षिटः सागरोपमाणि पूर्वकोटीत्रयं च स्यात् । (व० प० ८४०)
- ७४-७६. यदि चोत्कृष्टिस्थितिस्त्रयस्त्रिगत्सागरोपमायु-नीरको भूत्वा पूर्वकोटघायुः पञ्चेन्द्रियतिर्यक्षृत्पद्यते तदा वारद्वयमेवैवमुत्पत्तिः स्यात् ततश्च षट्षिटः सागरोपमाणि पूर्वकोटीद्वयं च स्यात्, तृतीया तिर्यग्भवसम्बन्धिपूर्वकोटी न लभ्यत इति नोत्कृष्टता भवानां कालस्य च स्यादिति । (वृ• प० ८४०)
- ७७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा।
- ७८. आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उनकोसेणं छ भवग्गहणाइं।
- ७९. पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाई, जनकोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइ।
- ५०. लढी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवरं —ठितीविसेसो।

श २४, उ० २०, डा • ४२५ १३५

<sup>\*</sup>लय: भूंडी रे भूख अभावणी

- ५३. \*द्वितीय गमे काल आश्रयी, जघन्य थकी कहिवाय लाल रे। बावीस सागर नारकी, अंतर्मुहूर्त्त अधिकाय लाल रे।
- ८४. उत्कृष्ट छासठ उदधि ही, नारक नां भव तीन लाल रे। त्रिण अंतर्मुहूर्त्त तिरि, इतो काल गतागित चीन लाल रे।।
- ५५. तृतीय गमा विषे जघन्य थी, बावीस सागर जोय लाल रे। पूर्व कोड़ज अधिक हो, बे भव अद्धा होय लाल रे।
- ५६. उत्कृष्ट छासठ उदिध ही, पूर्व कोड़ज तीन लाल रे। त्रिण भव नारक भव स्थिति,

तिरि भव तीन कथीन लाल रे।।

- ८७. तुर्य गमा विषे जघन्य थी, वे भव अद्धा ताय लाल रे। बावीस सागर जाणवो, अंतर्मुहुर्त्त अधिकाय लाल रे।।
- ८८. उत्कृष्ट षट भव आश्रयी, छासठ सागर ताय लाल रे। पूर्व कोडज त्रिण बली, काल वांछ्यो अधिकाय लाल रे।।
- ५९ पचम गमा विषे जघन्य थी, बावीस सागर जन्य लाल रे । अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही, बे भव स्थिति जघन्य लाल रे ।।
- ९०. उत्कृष्ट अद्धा एतलो. षट भव नों इम चीन लाल रे। छासठ सागर जाणवो, अंतर्मृहुर्त्त तीन लाल रे।।
- ९१. छठा गमा विषे जघन्य थी, नारक उदधि बावीस लाल रे।
  पूर्व कोड़ज तिरि भवे, वे भव अद्धा जगीस लाल रे।।
- ू९२. उत्कृष्ट छासठ उदिधि हो, पूर्व कोड त्रिण इष्ट लाल रे।
- त्रिण भव नारक जघन्य स्थिति, तिरि भव त्रिण उत्कृष्ट लाल रे।।
  - ९३. सप्तम गमके जघन्य थी, नारक उदिध तेतीस लाल रे। अतर्मुहूर्त्त तिरि भवे, बे भव काल जगीस लाल रे।।
  - ९४. उत्कृष्ट छासठ उदिध ही, कोड़ पूर्व बे होय लाल रे। नारक नांभव बेकरै, तिर्यंचभव पिण दोय लाल रे।।
  - ९५. अष्टम गमके जघन्य थी, नारक उद्धि तेतीस लाल रे। अंतर्मृहुर्त्त तिरि भवे, बे भव काल जगीस लाल रे।।
  - ९६. उत्कृष्ट छासठ उदिध ही, अंतर्मुहूर्त वे जन्य लाल रे। जेष्ठायु वे भव नारिक, तिरि भव दोय जघन्य लाल रे।।
  - ९७. नवमे गमे जघन्य थी, तेतीस सागर इष्ट लाल रे। पूर्व कोडज अधिक ही, बे भव स्थिति उत्कृष्ट लाल रे।।
  - ९८. उत्कृष्ट छासठ उदिध ही, कोड़ पूर्व वे इष्ट लाल रे। उत्कृष्ट वे भव नारकी, तिरि वे भव उत्कृष्ट लाल रे।।
  - ९९. सेवै कालज एतलो, करैं गति-आगति इतो काल लाल रे। उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट गमो, दाख्यो नवम दयाल लाल रे।।
- १००. चउवीसम देश बीसमो, चिउं सौ पचीसमीं ढाल लाल रे। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

'जय-जश' मंगलमाल लाल रे।।

- =३. कालादेसो य बितियगमएसु जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतीमुहुत्तमब्भहियाइं:
- प्तर. उक्कोसेण छार्वाट्ठ सागरोवमाइ तिहि अंतोमृहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा।
- प्रश्निम् जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइं पुव्यकोडीए अब्भहियाइं,
- ८६. उक्कोसेणं छार्वाहु सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं।
- प्यः चउत्थगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतो-मुहुत्तमब्भहियाइं,
- प्तः उक्कोसेण छाविंद्धं सागरोवमाइं तिर्हि पुत्र्वकोडीहिं अन्भहियाइं।
- पचमगमए जहण्णेणं बाबीसं सागरोवमाइ अंतोमुहुत्त-मन्भिह्याइं,
- ९०. उक्कोसेणं छाविंदुं सागरोवमाइं तिर्हि अंतोमुहुत्तेहिं अन्भहियाइं।
- ९१. छट्टगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं।
- उ≆कोसेणं छार्वाट्ट सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं।
- ९३. सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्त-मब्भहियाइ,
- ९४. उक्कोसेणं छाविंद्व सागरोवमाइं दोहि पुन्वकोडीहि अब्भहियाइ ।
- ९५. अट्टमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरीवमाइं अंतोमुहुत्त-मब्भिहियाइं,
- ९६. उक्कोसेणं छार्वाह सागरोवमाइं दोहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं ।
- ९७. नवमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं,
- ९८. उक्कोमेणं छाविंद्व सागरोवमाइं दोहि पुब्वकोडीहि अब्भहियाइं,
- ९९. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा १।९ । (श० २४।२४४)

<sup>\*</sup>लय: भूंडी रे भूख अभावणी

१३६ भगवती जोड़

# ढाल: ४२६

# दूहा

- १. जिंद तिरिक्खयोनिक थकी, ऊपजै तिरि-पं मांय। तो स्यं एकेंद्रिय तिरि-योनिक थी उपजाय?
- २. कहिवो इम उपपात जे, जिम पृथ्वी उद्देस। तेह विषे आख्यो तिमज, वारू विधि सुविशेष।।

तियँच पंचेंद्रिय में पृथ्वीकाय ऊपजे, तेहनों अधिकार

\*गोयम नां प्रश्न भला।। (ध्रुपदं)

- ३. जाव पृथ्वीकायिक प्रभु ! हो, तिरि पंचेंद्री विषेह। जे ऊपजवा जोग्य छै हो, ते कितै काल स्थितिके उपजेह?
- ४. श्री जिन भाखे जघन्य थी हो, अंतर्मृहूर्त्त स्थितिकेह । उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नें हो, आयु विषे उपजेह ।।
- ५. हे प्रभुजी ! ते जोव रा हो, इत्यादिक इम जाण। परिमाण आदि देई करी हो, अनुबंध पर्यवसाण।।
- ६. पृथ्वीकायिक पोता तणां हो, स्व स्थाने उपपात । पृथ्वी विषे उपजता तणें हो, वक्तव्यता आख्यात ।।
- ७. तेहिज पंचेंद्री तिर्यंच में हो, पृथ्वीकाय संपेख। ऊपजता नें आखियै हो, णवरं इतरो विशेख।।
- द. ए नव ही गमा ने विषे हो, परिमाण जघन्य सुइब्ट। एक दोय त्रिण ऊपजै हो, संख असंख उत्कृब्ट।।

# सोरठा

परिमाण द्वारे मांहि, तिहां । ९. पृथ्वी पृथ्वी कह्यो ।। समय-समय प्रति ताहि, असंख ऊपजै इम १०. इहां जे पृथ्वीकाय, अपजै पं. तिरि नें विषे । दोय त्रिण ऊपजे ॥ जघन्य थकी कहिवाय, एक ११ \*वलि नवूं ही गमा नैं विषे हो, कायसंवेध द्वारेह। जघन्य थकी भव बे करै हो, उत्कृष्टा अठ लेह ॥

#### सोरठा

संवेध जे। ऊपजतो मांय, १२. पृथ्वी पृथ्वी पंचमे ॥ चउथे प्रथम द्वितीय गम पाय, फून गम १३. ए चिउं गमेज संच, उत्कृष्टा असंख्यात भव। भव कह्या।। शेष गमे जे यंच, अठ उत्कृष्टा

\*लय: राम को सुजश घणो १. देखें परि. २, यंत्र ८१

- १. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—िक एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो ?
- २. एवं उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए
- ३. जाव (श॰ २४।२४४)

  पुढिविकाइए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उवविजित्तए, से णं भंते ! केवितिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ४. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहृत्तद्वितीएसु, उनकोसेणं पुन्वकोडी-आउएसु उनवज्जेज्जा । (श० २४।२४६)
- प्र. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? एवं परिमाणादीए अणुबंधपज्जवसाणा
- ६. जच्चेव अप्पणो सट्टाणे वत्तव्वया
- ७. सच्चेव पॉचिदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्ज-माणस्स भाणियव्वा, नवरं—
- नवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेण एकको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेजना वा असंखेजना वा उववज्जंति ।
- ९,१०. केवल तत्र परिमाणद्वारे प्रतिसमयमसंख्येया उत्पद्यन्त इत्युक्तं इह त्वेकादिरिति, (वृ० प० ८४०)
- ११. भवादेसेण वि नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अटु भवग्गहणाइं।
- १२-१४. तथा पृथिवीकायिकेभ्यः पृथिवीकायिकस्योत्पद्य-मानस्य संवेधद्वारे प्रथमद्वितीयचतुर्थपञ्चमगमेषू-त्कर्षतोऽसंख्यातानि भवग्रहणान्युक्तानि शेषेषु त्वष्टौ भवग्रहणानि इह पुनरष्टावेव नवस्वपीति । (वृ०प० ८४०)

श**० २४, उ० २०, डा० ४२६** १३७

- १४. इहां नवूं गम ताय, संवेध द्वार विषे वली। उत्कृष्टा कहिवाय, अठ भव ग्रहणज आखियै।।
- १५. शेष संघयण संठाण, प्रमुख बोल अनुबंध लग।
  पृथ्वी पृथ्वी में जाण, ऊपजता नें तिम इहां।।
- १६. \*संवेधे काल आश्रयी हो, पृथ्वीकायिक जेह। विल सन्नी पंचेंद्रिय तिर्यंच ने हो, कहिवूं स्व स्थिति करेह।।

- १७. प्रथम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहुर्त्त बेह, इक महि बीजो पं. तिरि।।
- १८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष अठघासी हजार, पूर्व कोड़ज च्यार फुन।।
- १९. बीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त बेह, पृथ्वी पं. तिरि जघन्य स्थिति।।
- २०. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों । वर्ष अठघासी हजार, अंतर्मुहर्त्त च्यार फुन ।।
- २१. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त जेह, कोड़ पूर्व तिरि जेष्ठ स्थिति।।
- २२. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष अठचासी हजार, पूर्व कोड़ज च्यार फुन।।
- २३. चउथे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त बेह, पृथ्वी पं.तिरि जघन्य स्थिति।।
- २४. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। अतर्महर्त्तं च्यार, पूर्व कोड़ज चिउं तिरि।।
- २५. पंचम गमे संवेह, वे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त बेह, जघन्य स्थिति बिहुं भव तणीं।।
- २६. उत्कृष्ट काल प्रगट, अष्ट भवां नों इह विधे।
- अंतर्मृहूर्त्त अठ, चिउं भव पृथ्वी चिउं तिरि।। २७.षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी।
- अंतर्मृहूर्त्त जेह, कोड़ पूर्व तिरि जेष्ठ स्थिति।।
- २८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवा तणों। अंतर्महर्त्त च्यार, पूर्व कोड़ज च्यार तिरि।।
- २९. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। सहस्र बावीस वर्षेह, अंतर्मुहूर्त अधिक फुन।।
- ३०. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों।
- वर्ष अठघासी हजार, पूर्व कोड़ज च्यार फुन ।।
- ३१ अष्टम गमे जगीस, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र वावीस, अंतर्मुहर्त्त अधिक फुन।।

\*लय: राम को सुजश घणो

१३८ भगवती जोड

- १४. सेसंतं चेव।
- १६. कालादेसेण उभमो ठितीए करेज्जा १-९। (श० २४।२४७)
- १७. प्रथमे गमे 'कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ताइं' ति पृथिवीसत्कं पञ्चेन्द्रियसत्कं चेति, (वृ० प० ८४०)
- १८. उत्कवंतोऽष्टाशीतिवंषंसहस्राणि पृथिवीसत्कानि चतस्रश्च पूर्वकोट्यः पञ्चेन्द्रियतियंक्सत्काः, (वृ० प० ८४०)

- ३२. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष अठघासी हजार, अंतर्मुहूर्त्त च्यार तिरि।।
- ३३. नवमे गमे विचार, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष बावीस हजार, कोड़ पूर्व तिरि जेष्ठ स्थिति।।
- ३४. उत्कृष्टो सुविमास, अद्धा अष्ट भवां तणों। सहस्र अठघासी वास, पूर्व कोड़ज च्यार तिरि।।

तियंच पंचेंद्रिय में अपकाय स्यूं चउरिंद्रिय तक ऊपजे, तेहनों अधिकार

- ३५. \*जो ऊर्रजे अपकायिक थकी हो, पंचेंद्री तिर्यंच विषेह । इत्यादिक प्रश्नोत्तर तणीं हो, आगल वात कहेह ।।
- ३६. इम अपकाइया पिण जाणवा हो, इम जाव चर्डारद्रिया जाण । क्रपजे पं. तिरि नें विषे हो, ते कहिवा सर्व पिछाण ।।

वा॰—जिम पृथ्वीकाय नां जीव मरी पंचेंद्रिय तियँच नैं विषे ऊपजै ते कह्या, तिम अपकायिक थकी जाव चउरिद्रिय थकी पंचेंद्रिय नैं विषे ऊपजै ते कहिवा।

३७. णवरं इतरो विशेष छै हो, सर्वत्र सगलै स्थान । भणवी लब्धिज आपणी हो, पूर्वली पर जान।।

# सोरठा

- ३८. सर्वत्र कहितां जेह, अप जावत चउरिद्री थी। पं. तिर्यंच विषेह, तिण में ऊपजतां तणें।।
- ३९. अपणो कहितां एह, अपकायादिक नीं लद्धी । परिमाणादिक जेह, भणवी जेहनीं छै तिका।।
- ४०. तिका लब्धि सुविचार, पूर्व सूत्र समूह थी । दिल मांहै अवधार, वारू विधि करि जाणवी ।।
- ४१. \*नव ही पिण गमा नै विषे हो, जे भन आश्रयो जाण । जघन्य थकी भव दोय छै हो, उत्कृष्ट अष्ट पिछाण ।।
- ४२. काल आश्रयी इह विधे हो, अप प्रमुख ने माण । विल पंचेंद्री तिर्यंच ने हो, बिहुं नी स्थिति करि जाण ।।

# सोरठा

- ४३. अथ हिव आगल जेह, वाक्य उक्त तेहिज अर्थ। अतिही प्रगटपणेह, कहिये छै ते सांभलो।।
- ४४. \*जिम पृथ्वीकायिक थकी हो, तिरि पंचेंद्री विषेह । ऊपजता नें कही लढ़ी हो, सगलै गमा विषे जेह ।।
- ४५. तिमहिज अपकायिक थकी हो, जाव चउरिंद्री थी ताय । तिरि पंचेंद्रिय नैं विषे हो, लब्धि ऊपजतां नैं पाय।।

- ३५. जइ आउनकाइएहितो उववज्जंति ?
- ३६. एवं आउक्काइयाण वि । एवं जाव चर्डारदिया उववाएयव्वा,

वा - यथा पृथिवीकायिकेम्यः पंचेन्द्रियतियाक्ष्र्त्पद्य-मानानां जीवानां लिब्धिक्ताः तथैवाप्कायादिभ्यश्चतु-रिन्द्रियान्तेभ्य उत्पद्यमानानां सा वाच्येति । ३७. नवरं - सब्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा ।

- ३८. सर्वत्राप्कायिकादिभ्यश्चतुरिन्द्रियान्तेभ्य उद्वृत्तानां पंचेदियतिर्यक्ष्त्पादे (वृ० प० ८४०)
- ३९. 'अप्पणो' ति अप्कायादेः सत्का लब्धिः परिमाणा-दिका भणितन्या, (वृ० प० ८४०)
- ४०. सा च प्राक्तनसूत्रेश्योऽवगन्तव्या, (वृ. प. ८४०)
- ४१. नवसु वि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गह-णाइं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं।
- ४२. कालादेसेणं उभओ ठिति करेण्जा सब्वेसि सब्ब-गमएसु ।
- ४३. अयानन्तरोक्तमेवार्थं स्फुटतरमाह (वृ० प० ८४०)
- ४४. जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणाणं लढी
- ४५. तहेव सब्वत्थ

श० २४, उ० २७, ढा० ४२६ १३९

१. देखें परि. २, यंत्र ६२-६६ \*सय: राम को सुजश घणो

४६. स्थिति अने संवेध ने हो, नवूई गमा विषेह। उपयोगे करि जाणवूं हो, वारू जिन बचनेह।। ४७. जो तिरि पंचेंद्रिय थी ऊपजै हो, तिरि पंचेंद्री विषेह। स्यूं सन्नी पंचेंद्री तिर्यंच थी हो,

कै असन्नी पं. तिरि थी जेह ।।

४८. जिन कहै सन्नी पं. तिरि थकी हो,

असन्नी पं. तिरि थी सोय । तिरि पंचेंद्री में ऊपजै हो, तास भेद इम जोय।।

- ४९. जिम पृथ्वीकायिक विषे हो, तिरि पंचेंद्री संवेद । भेद कह्या ऊपजतां थकां हो, तिमहिज कहिवा भेद ।। तिर्यंच पंचेंद्रिय में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय कपजे, तहनों अधिकार
- ५०. जाव असन्नी पंचेंद्री तिरि हो, हे भगवत जी ! तेह । जे ऊपजवा योग्य छै हो, तिरि पंचेंद्री विषेह ।।
- ५१. ते प्रभु ! केतला काल नीं हो, स्थितिक विषे उपजेह ? श्री जिन भाखे जघन्य थी हो, अंतर्मुहूर्त्त लेह ।। ५२. उत्कृष्ट पत्योपम तणें हो, असंख्यातमे भाग । आयुवंत विषे ऊपजे हो, एह युगलिया माग ।।

### सोरठा

- ५३. इह वचने करि जोय, असन्नी पं. तिर्यंच जे। काल करीनें सोय, युगल तिर्यंच हुवै जिके।।
- ५४. \*ते प्रभु! असन्नी पं. तिरि हो, इत्यादि अवशेख । परिमाणादिक द्वार नीं हो, वक्तव्यता इम लेखा।
- ४४ जिमहिज पृथ्वी नैं विषे हो, असन्नी पंचेंद्री ताहि। ऊपजता नैं जे कह्यो हो, पृथ्वी उद्देसक माहि।।
- ४६. तिमहिज असन्नी पं. तिरि हो, पं. तिर्यंच रै मांहि। अपजता नें आखियै हो, निरिवशेष सहु ताहि।। ४७. यावत भव आश्रयी लगै हो, काल आश्रयी जवन्य। अतर्मृहूर्त्तं दोय छै हो, जघन्यायु बिहुं भव जन्य।। ४६. उत्कृष्ट पत्योपम तणों हो, असंख्यातमों भाग। पृथक पूर्व कोड़ अधिक हो हो, धुर गम अद्धा माग।।

#### सोरठा

५९. उत्कृष्ट पल्य नों पेख, असंख्यातमो भाग जे। अधिक वलि सुविशेख, पृथक पूर्व कोड़ किम।।

देखें परि. २, यत्र ८९

\*लय: राम को सुजश घणो

१४० भगगती जोड़

- ४६. ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९।
- ४७. जइ पंचिदिचितिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति कि सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जित ? असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जित ?
- ४८. गोयमा ! सण्णिपंचिदिय, असण्णिपंचिदिय, भेओ
- ४९. जहेत पुढविक्काइएस उववज्जमाणस्स
- ५०. जाव— (श० २४।२४९) असिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उवविज्जित्तए,
- ५१. से णं भंते ! केवतिकालिंद्वतीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु,
- ५२. उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागहितीएसु उववज्जेज्जा। (श० २४।२५०)
- ४३. अनेनासंज्ञिपंचेन्द्रियाणामसंख्यातवर्षायुष्केषु पंचे-न्द्रियतिर्यक्षूत्पत्तिरुक्ता (वृ० प० ५४०)
- ५४,५५. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? अवसेसं जहेव पुढिविक्काइएसु उववज्ज-माणस्स असण्णिस्स 'अवसेसं जहेवे' त्यादि, अवशेषं—परिमाणादिद्वार-जातं यथा पृथिवीकायिकेषूत्पद्यमानस्यासिङ्कानः पृथिवीकायिकेषूत्पद्यमानस्यासिङ्कानः पृथिवीकायिकेद्देशृत्पद्यमानस्य वाच्यमिति ।

# ५६. तहेव निरवसेसं

५७. जाव भवादेमी ति । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुता,

(वृ० प० ८४० ८४१)

- ४८. उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुत्वकोडि-पुहत्तमञ्महियं,
- ५९. 'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुब्वकोडि-पृहत्तमब्भहियं' ति, कथम् ? (वृ० प० ८४१)

- ६०. पूर्व कोड़ स्थितिवंत, असन्नी पंचेंद्री मरी। पंचेंद्री तिरि हुंत, कोड़ पूर्व आयू विषे।।
- ६१. इम भव ग्रहणज सात, अष्टम भव तिरि युगल ह्वे । पत्य तणों विख्यात, असंख्यातमें भाग स्थिति ॥
- ६२. \*सेवै कालज एतलो हो, करें गित-आगित इतो काल। ओघिक नें ओघिक गमो हो, दाख्यो प्रथम दयाल।।
- ६३. द्वितीय गमा नें विषे लद्धी हो, परिमाणादिक नीं एहीज । णवरं इतरो विशेष छै हो, आगल तेह कहीज।।
- ६४. काल आश्रयी जघन्य थी हो, अंतर्मुहूर्त्त दोय। बिहु भव पं. तियँच नां हो, जघन्य आउखो होय।।
- ६५. उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिउं हो, अंतर्मुहूर्त्त च्यार । अठ भव आश्रयी आखियो हो, ए गति-आगति धार ।।
- ६६. तेहिज असन्नी पंचेंद्री तिरि हो, उत्कृष्ट काल नीं जेह । स्थितिक नैं विषे ऊपनो हों, ते केतलो आयू पावेह?
- ६७. जघन्य अनें उत्कृष्ट थी हो, पल्योपम नों तेह । असंख्यातमा भाग नें हो, स्थितिक में ऊपजेह।।
- ६८. हे प्रभु! ते असन्नी तिरि हो, जिम रत्नप्रभा रै मांहि । ऊपजतां असन्नी तणैं हो, दाख्यो तिम सहु ताहि।।
- ६९. जाव काल आश्रयी लगे हो, णवर इतरो विशेख । परिमाण द्वार विषे तसु हो, कहिवू इण विधि पेखा।
- ७०. जघन्य एक बे त्रिण हुवै हो, उत्कृष्टा अवलोय। संख्याता हिज ऊपजे हो, शेष तिमज सहु जोय।।

- ७१. असंख वर्षायू जोय, पंचेंद्रिय तियँच जे । असंख्याता नहिं होय, तिणसू संख्याता ऊपजै ।।
- ७२. \*तेहिज असन्नी पंचेंद्रो तिरि हो, आपणपै इज तेह । जघन्य काल स्थितिक थयो हो, कितै काल स्थितिके ऊपजेह?
- ७३. जघन्य थकी अंतर्मुहूर्त्त नीं हो, स्थितिक विषे अपजेह । उत्कृष्ट कोड़ पूर्व तणां हो, अग्रजे आयु विषेह ॥

# सोरठा

- ,७४. असन्ती पं. तिर्यंच, जघन्यायु मरि युगलियो । हुवै नहीं इम संच, साधिक पूर्व कोड नहीं।।
- ७५. \*ते प्रभु ! असन्तो पं. तिरि हो, इत्यादिक अवधार । परिमाणादिक पूछियो हो, भाखै जिन जगतार ।।

- ६०. असंज्ञी पूर्वकोटचायुष्कः पूर्वकोटचायुष्केष्वेव पञ्चेन्द्रियतिर्यक्षुत्पन्नः (वृ० प० ८४१)
- ६१. इत्येवं सप्तसु भवग्रहणेषु सप्त पूर्वकोटघः अष्टम-भवग्रहणे तु मिथुनकतिर्यक्षु पल्योपमासंख्येयभाग-प्रमाणायुष्केषूत्पन्न इति, (वृ० प० ८४१)
- ६२. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गेतिरागीतं करेज्जा।
- ६३. बितियगमए एस चेव लद्धी, नवरं-
- ६४. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता,
- ६५. उनकोसेणं चत्तारि पुब्वकोडीओ चर्जीह अंतोमुहु-त्तेहि अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा १,२। (श० २४।२५१)
- ६६. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- ६७. जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागद्वितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागद्वितीएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।२४२)
- ६ ८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं
- ६९. जाव कालादेसो ति, नवरं-परिमाणे
- ७०. जहण्णेण एकको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संक्षेज्जा उववज्जति । सेसं तं चेव ३। (श० २४।२५३)
- ७१. 'उक्कोसेणं संबेज्जा उववज्जंति' ति असंख्यात-वषायुषां पञ्चेन्द्रियतिरश्चामसंख्यातानामभावा-दिति, (वृ० प० ८४१)
- ७२. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ
- ७३. जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुब्व-कोडिआउएसु उववज्जेज्जा। (श॰ २४।२४४)
- ७४. जघन्यायुरसञ्ज्ञी सङ्ख्यातायुष्केस्वेव पञ्चेन्द्रियतिर्य-क्षृत्पद्यत इति कृत्वा पूर्वकोटचायुष्केष्वित्युक्तम्, (वृ० प० ८४१)
- ७४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उव-वज्जति ?

श० २४, उ० २०, ढा० ४२६ १४१

<sup>\*</sup>लय: राम को सुजश घर्गो

- ७६. शेष परिमाणादिक जिके हो, जिम एहिज कह्य ताहि । असन्नी पंचेंद्री तिरि हो, ऊपजतो पृथ्वी मांहि।। ७७. मध्यम तीन गमा विषे हो, जाव अनुबंध लगेह । जिम तिहां आख्यो तिम इहां हो, मध्यम तीन गमेह ।। ७८. भव आदेश करी इहां हो, जघन्य थकी इम जोय।
- बे भव ग्रहण करै तिको हो, उत्कृष्टा अठ होथ।। ७९ काल आश्रयी जघन्य थी हो, अंतर्मुहर्त्त दोय। उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिउं हो, अंतर्मुहूर्त चिउं होय।।
- ८०. तेहिज ज्वन्य काल स्थिति नों धणी हो, असन्नी पं. तिर्यंच । जघन्य स्थितिक पं. तिरि विषे हो, ऊपनों कर्म विरंच ।। ८१. एहिज वक्तब्यता तसु हो, णवरं इतरो विशेख । काल आश्रयी फेर छै हो, सांभलजो तसु लेख।। जघन्य अद्धा बे भव तणों हो, अंतर्मृहूर्त्त दोय। उत्कृष्ट अद्ध अठ भव तणों हो, अंतर्मुहूर्त्त अठ होय ।। ८३. सेवै कालज एतलो हो, ए गति-आगित काल। जघन्य अने जघन्य गमो हो, दाख्यो पंचम दयाल ॥ ८४. तेहिज असन्नी पं. तिरि हो, जघन्य आयुवंत जेह । उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे हो, ऊपनों कर्म वसेह।। प्र. जघन्य कोड़ पूर्व विषे हो, उत्कृष्ट थी पिण जेह । कोड़ पूर्व विषे अपनों हो, षष्ठम गमक विषेह।। ८६. एहिज वक्तव्यता तसुं हो, णवर इतरो विशेख।

काल आश्रयी जाणवो हो, ते कहिवं करि लेख।।

- ८७. षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। जेह, कोड़ पूर्व अंतर्मुहर्त्त तिर्यं<del>च</del>-पं. ॥ दद. उत्कृष्ट<u>ो</u> अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कोड़ पूर्व चिउं पं. तिरि ।। अंतर्मुहर्त्त च्यार,
- द९. \*तेहिज असन्नी पं. तिरि हो, आपणपै अवलोय । उत्कृष्ट काल स्थितिक थयो हो, सप्तम गमके सोय।।
- ९०. तेहिज असन्नी पं. तिरि तणां हो, प्रथम गमक नी पेख । वक्तव्यता कहिवी इहां हो, णवरं इतरो विशेख।।
- ९१. स्थिति जघन्य पुन्व कोड़ नी हो, उत्कृष्ट पिण पुन्व कोड़। असन्नी पं. तिर्यंच नीं हो, शेष तिमज सहु जोड़।।
- ९२. काल आश्रयी जघन्य थी हो, पूर्व कोड़ कहेह । अंतर्मृहुत्तं अधिक ही हो, बे भव अद्धा एह।।
- ९३. उत्कृष्ट पल्योपम तणों हो, असंख्यातमों भाग। पूर्व कोड़ पृथक वली हो, इतो काल गतागति माग।।
- \*लय: राम को सुजश घणो
- १४२ भगवती जोड

- ७६. अवसेसं जहा एयस्स पुढविवकाइएसु उववज्जमाणस्स
- ७७. मिज्मिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मिज्मिमेसु तिसु गमएसु जाव अणुबंधो ति ।
- ७८. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उनकोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं ।
- ७९ कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अंतोपुहुत्तेहि अब्भ-हियाओ ४। (श० २४।२५५)
- ५०. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो
- ८१. एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं
- ८२. जहण्णेणं दो अंतोपुहत्ता, उक्कोसेणं अट्ट अंतोपुहत्ता,
- एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ५। (श० २४।२५६)
- ८४. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- प्रतिकृति । जहण्णेणं पुरुव कोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुरुव-
- ८६. एस चेव बत्तव्वया, नवरं कालादेसेणं जाणेजजा ६। (श० २४।२५७)

- ८९. सो चेव अप्पणा उनकोसकालद्वितीओ जाओ
- ९०. सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं 😁
- ९१. ठिनी जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण ति पुव्वकोडी। सेसं तं चेव ।
- ९२. कालादेसेणं जहण्णेणं पुत्रवकोडी अंतोमुहत्तमब्भहिया,
- ९३. उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुब्वकोडि-पुहुत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ७। (श० २४।२५८)

- ९४. तेहिज असन्नी पं. तिरि हो, उत्कृष्ट आयुवंत । जघन्य काल स्थितिक विषे हो, ऊपनों तास उदंत ।।
- ९५. एहिज वक्तव्यता तसु हो, जिम सप्तम गम माय । दाखी तिम कहिवी इहां हो, णवरं विशेष कहाय।।
- ९६. काल आश्रयी जघन्य थी हो, घुर भव पूर्व कोड़। अंतर्मुहर्त्त दूजे भवे हो, बे भव अद्धा जोड़।।
- ९७. उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे हो, पूर्व कोड़ज च्यार । अतर्मृहूर्त्त चिउं वली हो, इतो काल गतागतिकार ।।
- ९८. तेहिज असन्नी पं. तिरि हो, उत्कृष्ट आयुवत । उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे हो, ऊपनों तास वृतंत ।।
- ९९. जघन्य अने उत्कृष्ट थी हो, पत्योपम नो पेख । असंख्यातमे भाग में हो, ऊपजवो तसु देख ।।
- १००. इम जिम रत्नप्रभा विषे हो, असन्नी पं. तियंच । ऊपजता नें नवम गमे हो, तिमहिज सर्व विरंच।।

- १०१. रत्नप्रभा रै मांहि, असन्नी पंचेद्रिय तिरि । ऊपजता नें ताहि, नवम गमा विषे कह्यो ।।
- १०२. संघयण अवगाहनादि, कायसंवेध लगै इहां। तिमहिज सर्वे संवादि, यावत कालादेश इम।।
- १०३. \*णवरं परिमाणे करी हो, जिम एहनां इज ताय। तीजा गमक विषे कह्य हो, तिम इहां पिण कहिवाय।।

# सोरठा

- १०४. जघन्य एक वे तीन, उत्कृष्टा संख्यात जे। ऊपजवूज कथीन, इम तीजा गम सम कह्यू।।
- १०५. \*शेष संघयणादिक सहु हो, रत्नप्रभा में ताम । असन्नी ऊपजता ने कह्यो हो, तिमहिज कहिवू आम ।। १०६. शत चउवीसम देश बीसम तणों हो,
  - चिउं सी छ्वीसमी ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी हो, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

- ९४. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो;
- ९४. एस चेव वत्तव्वया जहा सत्तमगमे, नवरं-
- ९६. कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया,
- ९७. उक्कोसेणं चत्तारि पुब्वकोडीओ चर्जीह अंतोमुहुत्तेहिं अब्महियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागीत करेज्जा व । (श० २४।२५९)
- ९८. सो चेव उनकोसकालट्ठितीएसु उववण्णो
- ९९. जहुण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं उनकोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं।
- १००. एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स नवमगमए तहेव निरवसेसं
- **१०२.** जाव कालादेसो त्तिः
- १०३. नवरं —परिमाणं जहा एयस्सेव तित्यगमे ।

१०५. सेसं तं चेव ९। (श० २४।२६०)

\*लय: राम को मुजश घणों

#### ढाल : ४२७

# तियंच पंचेंद्रिय में सन्नी पंचेंद्रिय तियंच ऊपर्ज, तेहनों अधिकार'-

#### दूहा

- १. जो सन्नी पंचेंद्रिय, तिरियोनिक थी जेह। ऊपजै कर्म प्रभाव थी, तिरि पंचेंद्री विषेह॥
- २. तो स्यूं संख्याता वर्ष, आयुष थी उपजेह। के असंख्यात वर्षायु थी ऊपजें ? इम पूछेह।।
- ३. जिन भाखें संख्यात वर्ष, आयुष थी उपजंत। असंख्यात वर्षायु थी, ऊपजवो नहिं हुंत।।

वाo — इहां असंख्यात वर्ष आयुषवंत ते युगलिया मरि देवता हुवै ते माटै तिर्यंच पंचेंद्री नैं विषे न ऊपजै।

- ४. जो संख्यात वर्षायु थी, यावत ते उपजंत । तो स्यूं पर्याप्त थकी, कै अपज्जत्त थी हुंत?
- प्र. जिन भाखें दोनं थकी, तिरि पंचेंद्री विषेह। क्रपजें छैं सन्नी तिरि, विल गोयम पूछेह।।

  \*जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों।। [ध्रुपदं]
- ६. संख्यात वर्षायु सन्नी तिरि, ऊपजवा योग्य एह। तिरि पंचेंद्रिय ने विषे, ते कितै काल स्थितिक उपजेह?
- ७. श्री जिन भाखें जघन्य थीं, अंतर्मृहूर्त्त विषेह। उत्कृष्ट त्रिण पत्योपम, स्थितिक विषे ऊपजेह।।
- ंदि. हे प्रभु ! ते सन्नी तिरि, इत्यादिक पूछेह। परिमाणादिक शेष जे, तेहनुं उत्तर एह।।
  - ९. जिम एहिज सन्नी तियँच नें, रत्नप्रभा नें विषेह। ऊपजता नें आखियो, प्रथम गमक विषे जेह।।
- १० तिमज इहां पिण जाणवो, णवरं इतरो विशेख। अवगाहणा में फेर छै, ते कहिवूं इम लेख।।
- ११. जघन्य थकी अवगाहना, आंगुल नों अवधार। असंख्यातमों भाग छै, उत्कृष्ट योजन हजार।।

बाo — 'सन्नी तिर्यंच तिर्यंच-पंचेंद्रिय में ऊपजै, तेहनें प्रथम गमे सन्नी तिर्यंच रत्नप्रभा में ऊपजै तेहनां प्रथम गमा नी परै कह्यूं। णवरं अवगाहणा जघन्य आंगुल नों असंख्यातमों भाग, उत्कृष्ट सहस्र योजन। शेष तिमहिज

- १. जइ सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो **उब**-
- २. कि संबेज्जवासाउय ? असंबेज्जवासाउय ?
- ३. गोयमा ! संक्षेज्जवासाउय, नो असंक्षेज्जवासाउय। (श्व० २४।२६१)
- ४. जइ संखेज्जवासाउय जाव कि पज्जत्तसंखेज्जवासा-उय ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ?
- ४. दोसु वि । (श॰ २४।२६२)
- ६. संक्षेज्जवासाउयसिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उद-विज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालिंद्वतीएसु उव-वज्जेज्जा ?
- ७. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएस्, उक्कोसेण तिपलिओवमद्वितीएस् उववज्जेज्जा। (श० २४।२६३)
- तेण भंते! जीवा एगसमएणं केवितया उव-वज्जिति? अवसेसं
- ९,१०. जहां एयस्स चेव सण्णिस्स रयणपाभाए उववज्ज-माणस्स पढमगमए, नवरं — ओगाहणा
- जहण्णेणं अंगुलस्स असंक्षेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं।

<sup>\*</sup>लय: वेग पधारो महल

१. देखें परि. २, यंत्र ९०

१४४ भगवती जोड़

कह्यो भवादेश लगें। तिहां सन्नी तियँच रत्नप्रभा में जाय तेहनीं अवगाहना असन्नी तियँच रत्नप्रभा में जावें तेहनी पर भलावण में आई। तिण ठामें पिण जघन्य आंगुल रो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्ट हजार योजन कही। अने इहां पिण सन्नी तियँच नियँच-पंचेंद्रिय नैं विषे ऊपजै, तेहनी अवगाहना नवरं कही नैं एतलीज कही। तो णवरं कहिवा रो कारण स्यूं?

उत्तर — असन्ती पंचेंद्रिय तथा सन्ती पंचेंद्रिय रत्नप्रभा में ऊपजै ते तो पर्याप्तो इज ऊपजै पिण अपर्याप्तो ऊपजै नथी। ते रत्नप्रभा में जाय ते पर्याप्ता री खवगाहना जघन्य आंगुल नों असंख्यातमों भाग बड़ो छै पर्याप्ता माटै। अनैं इहां सन्ती तियंच तियंच-पंचेंद्रिय में ऊपजै ते अपर्याप्तो पिण ऊपजै छै। ते अपर्याप्ता नीं अवगाहना जघन्य आंगुल रा असंख्यातमा भाग नीं छै, पिण ए असंख्यातमों भाग छोटो छै अपर्याप्ता माटै। णवरं कहिण में एहवूं न्याय जणाय छै। वलि बहुश्रुत न्याय कहै ते सत्य। (ज. स.)

इहां हजार योजन री अवगाहनां कही ते मत्स्यादिक नीं जाणवी।

- १२. शेष संघयणादिक तिके, तिमहिज कहिवूं ताय। यावत भव आश्रयी लगै, हिव तसु अद्धा आय।।
- १३. काल आश्रयी जघन्य थी, अंतर्मुहूर्त्त बे जोड़। उत्कृष्ट त्रिण पत्य ने वली पृथक पूर्व कोड़।।
- १४. सेवे कालज एतलो, ए गति-आगति काल। ओधिक नें ओघिक गमो, दाख्यो प्रथम दयाल।।
- १५. ते संख वर्षायु सन्नी तिरि, जघन्य काल स्थितिकेह । उपनों वक्तव्यता तसु, एहिज रीत कहेह।।
- १६. णवरं इतरो विशेष छै, काल आश्रयी जोय। जघन्य अद्धा बे भव तणों, अंतर्महर्त्तं दोय।।
- १७. उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिउं, ए सन्नी तिरि संच। अंतर्मृहूर्त्त चिउं वली, ए पंचेंद्री तिर्यंच।।
- १८. तेहिज संख वर्षायु सन्नी तिरि, उत्कृष्ट काल नी जेह। स्थितिक ने विषे ऊपनों, तिरि पंचेंद्री विषेह।।
- १९. जघन्य अनें उत्कृष्ट थी, तीन पत्य नीं जाण। स्थितिक ने विषे ऊपनों, तीजे गमे पिछाण।
- २०. एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं परिमाण जाण। जघन्य एक बे त्रिण तथा, ऊपजवूं पहिछाण।।
- २१. उत्कृष्टा ते ऊपजै, संख्याता थी जोय। मिथुनक असंख हुवै नहीं, अदल न्याय अवलोय।।
- २२. अवगाहना सन्नी तिरि तणीं, जघन्य आंगुल नों धार । असंख्यातमों भाग छै, उत्कृष्ट योजन हजार ॥

वा॰—इहां हजार योजन रो मत्स्यादिक मरी उत्कृष्ट आउखै युगलियापणैं ऊपजै।

२३. शेष संघयणादिक सहु, तिमहिज कहिवा ताय। यावत अनुबंध लग जिके, हिव संवेधज आय।। वा॰—इह तूत्कर्षतो योजनसहस्रमाना, सा च मत्स्यादीनाश्रित्यावसेयेति, (वृ॰ प॰ ८४१)

- १२. सेसं तं चेव जाव भवादेसो ति।
- १३. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमृहुत्ता उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुत्र्वकोडी पृहत्वमब्मिहियाइं,
- १४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा १। (श० २४।२६४)
- १५. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्या.
- १६. नवरं-कालादेसेणं जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता,
- १७. उक्कोसेणं चत्तारि पुब्वकोडीओ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ २। (श० २४।२६४)
- **१**८. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- १९. जहण्णेण तिपलिओवमद्वितीएसु, उनकोक्षेण वि तिपलिओवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा,
- २०. एस चेव वत्तक्वया, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा,
- २१ उनकोसेणं संखेजजा उववज्जति।
- २२. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसहस्सं।
- २३. सेसंतं चेव जाव--अणुबंधो ति ।

श० २४, उ॰ २०, ढा० ४२७ १४५

- २४. भवादेश भव आश्रयी, तस भव दोय विरंच। एक भव सन्नी तिर्यंच नों, बीजो युगल तिर्यंच।
- २५. काल आश्रयी जघन्य थी, पत्योपम त्रिण जोय। अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही, जघन्य स्थितिक भव दोय।।
- २६. उत्कृष्टो अद्धा तसु, पल्य तीन संवेह । पूर्व कोड़ज अधिक ही, जेष्ठ स्थितिक **भव** बेह ।।
- २७. तेहिज संख वर्षायु सन्नी-तिरि आपणपै जेह। जघन्य काल स्थितिक थई, उपनों तिरि पं. विषेह।।
- २८ जघन्य अंतर्मुहूर्त्त आउखै, उत्कृष्ट पूर्व कोड़। आयुवंत विषे ऊपनों, चउथे गमके जोड़।।
- २९. लब्धि परिमाणादिक तणीं, जिम एहनैंज कहाय। सन्नी पंचेंद्री तिर्यंच नैं, ऊपजतां पृथ्वी मांय।।
- ३० मध्यम तोन गमा विषे, सर्वहीज लद्धी तेह । इहां पिण बिचले त्रिण गमे, कहिवी लेखो करेह ॥
- ३१ संवेध जिमहिज जाणवो, एहिज निश्चै सुजोय। पंचेंद्रिय तिर्यंच नां, उद्देशक विषे सोय।।
- ३२ असन्नी पं. तिर्यंच ते, तिरि पंचेंद्री विषेह। अवजतां नें लद्धी कही, बिचले तीन गमेह।।
- ३३. तिमज संख वर्षायु सन्नी-पंचेद्रिय तियँच। कपजतां पं. तिरि विषे, मध्यम त्रिण गम संच।।

- ३४. चउथा गमा विषेह, भवादेश करि जघन्य थी। बे भव ग्रहण करेह, उत्कृष्ट भव ग्रहण अठ।।
- ३५. काल आश्रयी सोय, जवन्य थकी अद्धा तसु। अंतर्मुहुर्त्त दोय, बिहुं भवनीं ए जवन्य स्थिति।।
- ३६ उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवा तणों। अंतर्मृहूर्त्त च्यार, पूर्व कोड़ज च्यार फुन।।
- ३७ पंचम गमे सुजोय, भवादेश करि जघन्य थी। बे भव ग्रहणज होय, उत्कृष्टा भव ग्रहण अठ।।
- ३८. काल आश्रयी सोय, जघन्य अद्धा बे भव तसु। अंतर्मुहूर्त्त दोय, उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त अठ।।
- ३९ षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। पूर्व कोड़ज लेह, अंतर्मृहूर्त्त अधिक तिरि ।।
- ४०. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। अंतर्मुहूर्त्तं च्यार, पूर्व कोड़ज च्यार वलि।।
- ४१. \*तेहिज संख वर्षायु सन्नी-तिरि पं. आपणपेह। उत्कृष्ट काल स्थितिक थई, उपनों तिरि पं. विषेह।।
- \*लय: वेग पधारो महल
- १४६ भगवती जोड

- २४. भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं।
- २५. कालादेसेणं जहण्येणं तिण्णि पिलओवमाइं अंतो-मुहुत्तमब्भहियाइं,
- २६. उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुन्वकोडीए अन्ध-हियाइं ३। (श० २४।२६६)
- २७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जातो
- २८. जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडी-आउएसु उववज्जेज्जा ।
- २९. लद्धी से जहा एयस्स चेव सिष्णपंचिदियस्स पुढिव-क्काइएसु उववज्जमाणस्स
- ३०. मिष्मिल्लएसु तिसु गमएसु सन्चेव इह वि मिष्मिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा ।
- ३१. संवेहो जहेव एत्थ चेव 'एत्थ चेव' ति अत्रैव पञ्चेन्द्रियतिर्यगुद्देशके,
- (वृ० प० ८४१) ३२, ३३. असण्णिस्स मज्मिमेसु तिसु गमएसु ४-६। (श० २४।२६७)
- ३४. स चैवं भवादेशेन जघन्यतो द्वी भवी उत्क्रुब्टतस्त्वब्ट भवाः, (वृ० प० ८४१)
- ३४. कालादेशेन जघन्येन द्वे अन्तर्मुहूर्ते (वृ० प० ८४१)
- ३६. उत्कर्षतश्चतस्रः पूर्वकोटघोऽन्तर्मृहूर्त्तचतुष्काधिकाः, (वृ० प० ८४१)

४१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ

- ४२. जिम प्रथम गमक कह्य एहनों, कहिव तिमहिज हेर। णवरं इतरो विशेष छै, स्थित अनुबन्ध में फेर।।
- ४३. स्थिति अने अनुबन्ध जे, जघन्य अने उत्कृष्ट। पूर्व कोड़ज जाणवो, हिव संवेधज इष्ट।।
- ४४. काल आश्रयी जघन्य थी, घुर भव पूर्व कोड़। अंतर्मुहर्त्त दूजे भवे, बिहुं भव अद्धा जोड़।।
- ४५. उत्कृष्ट अद्धा अष्ट भवे, पृथक पूर्व कोड़। तीन पल्य भव आठमे, वारू न्याय सुजोड़।।

वा॰ इहां पृथक पूर्व कोड़ कह्या, ते सात पूर्व कोड़ जाणवा। ते उत्कृष्टा आउखा नां ७ भव संख्यात वर्षायू सन्नी तियँच नां करी आठमें भव तीन पत्योपम आउखे युगलियो तियँच थयो।

- ४६. तेहिज पंचेंद्री सन्नी तिरि, उत्कृष्ट आयुवंत । जघन्य काल स्थितिक पं.-तिरि, तेह विषे उपजंत ।।
- ४७. एहिज वक्तव्यता तसु, पूर्वली पर पेख। णवरं इतरो विशेष छै, सांभलजो तसु लेख।।
- ४८. काल आश्रयी जघन्य थी, धुर भव पूर्व कोड़। अंतर्मृहुर्त्त दुजे भवे, बे भव अद्धा जोड़।।
- ४९. उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिछ, तिरि सन्नी भव च्यार। अंतर्मुहर्त्त चिछ वली, तिरि पंचेंद्रिय धार।।
- ५०. तेहिज पंचेंद्री सन्नी तिरि, उत्कृष्ट आयुवंत। जिष्ठ काल स्थितिक पं.-तिरि, तेह विषे उपजंत।
- ५१. जघन्य अने उत्कृष्ट थी, तीन पत्योपम देख। स्थितिक ने विषे ऊपजै, शेष तिमज संपेख।।
- ५२. णवरं परिमाण अवगाहना, जिम एहनांज आख्यात । तीजा गमक विषे जिके, कहिवूं तिम अवदात ।।

#### सोरठा

- ५३. तसु परिमाण जघन्य, एक दोय त्रिण ऊपजै। एक समय में जन्य, उत्कृष्ट संख्याता हुवै।।
- ५४. अवगाहना उत्कृष्ट, योजन सहस्र तणीं हुवै। ए तीजे गम इष्ट, तेम इहां पिण जाणवृं।।
- ५५. \*भवादेश करि तेहनों, बे भव ग्रहण करेह। धुर भव सन्नी तियंच नों, द्वितीय युगल तिरि लेह।।
- ५६. काल आश्रयी बिहुं भवे, जघन्य अने उत्कृष्ट । पूर्व कोड़ सन्नी तिरि, युगल पत्य त्रिण इष्ट ।।
- ५७ सेवै कालज एतलो, ए गति-आगति काल। उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट गमो, दाख्यो नवम दयाल।।

इति तियँच पंचेंद्रिय नैं विषे संख्यात वर्षायु सन्नी तियँच ऊपजै तेहनां नव गमा कह्या। हिवै मनुष्य थकी तियँच पंचेंद्रिय नैं विषे ऊपजै, तेहनों अधिकार कहै छै---

- ४२. जहा पढमगमओ नवरं---
- ४२. ठिती अणुबंधो जहण्णेणं पुन्वकोडी, उक्कोसेण वि पुन्वकोडी।
- ४४. कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया,
- ४५. उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुक्कोडीपुहत्त-मन्भहियाइं ७। (श० २४।२६८)
- ४६. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो,
- ४७. एस चेव वत्तव्वया नवरं
- ४८. कालादेसेणं जहण्णेणं पुब्वकोडी अंतोमुहत्तमब्महिया,
- ४९ उक्कोसेणं चत्तारि पुन्यकोडीओ चर्डाहं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ द। (श० २४।२६९)
- ५०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- ४१. जहण्णेण तिपलिओवमट्टितीएसु, उनकोसेण वि तिपलिओवमट्टितीएसु। अवसेसं तं चेव,
- ५२. नवरं परिमाणं ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए।
- ५३. 'नवरं परिमाण' मित्यादि, तत्र परिमाणमुत्कर्षतः सङ्ख्याता उत्पद्यन्ते, (वृ० ह० ८४१)
- ४४. अवगाहना चोत्कर्षतो योजनसहस्रमिति । (वृ० प∙ ८४१)
- ४४. भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,
- ५६. कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुन्व-कोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुन्वकोडीए अब्भहियाइं,
- ५७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागींत करेज्जा ९। (श० २४।२७०)

श• २४, उ• २०, ढा॰ ४२७ १४७

<sup>\*</sup>लय: वेग पधारो महल

- ४ प्र. मनुष्य थको जो ऊपजै, तिरि पंचेंद्री विषेह। तो स्यूं सन्नी मनुष्य थी, कै असन्नी मनु थी लेह?
- ५९. जिन कहै सन्नी मनुष्य थकी, तिरि पंचेंद्री विषेह । असन्नी मनुष्य थकी अपि, ऊपजै कर्म वसेह ।। तिर्यंच पंचेंद्रिय में असन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार
- ६०. असन्नी मनुष्य भदंतजी ! तिरि पंचेंद्री विषेह । जे ऊपजवा योग्य ते, कितै काल स्थितिक उपजेह ?
- ६१. श्री जिन भाखे जघन्य थी, अंतर्मृहूर्त्त लेह। उत्कृष्ट कोड़ पूर्व तणां, आयु विषे ऊपजेह।।
- ६२. परिमाणादिक नीं जिका, लब्धि प्राप्ति तेह। असन्नी मनुष्य नें धुर त्रिहुं गमक विषेज कहेह।।

- ६३. नवृंगमा रै मांहि, आदि ईज त्रिण गम इहां। एह संभवे ताहि, वृत्तिकार इम आखियो।।
- ६४. जघन्य थकी पहिछाण, उत्कृष्टी पिण विल तसु । अंतर्मृहूर्त्तं जाण, एक स्थितिक थी आदि गम ।।
- ६४. \*जिमहिज पृथ्वीकाय में, असन्नी मनुष्य सुजोय। ऊपजता नें लद्धी कही, तिमहिज कहिवी सोय।।
- ६६. कायसंवेधज इह विधे, जिम एहिज कहेह। पंचेंद्रिय तिर्यंच नां, उद्देशक नें विषेह।।
- ६७. असन्ती पंचेंद्री तियँच थी, तिरि पंचेंद्रिय मांहि। उत्पत्ति नां अधिकार थी, मध्यम त्रिण गम ताहि।।
- ६८. तेह तीनूई गमा विषे, आख्यो छै तिमहीज। समस्त कायसंवेध ते, असन्नी मनु नों कहीज।। तिर्यंच पंचेंदिय में सन्नी मनुष्य ऊपजं, तेहनों अधिकार
- ६९. जो सन्नी मनुष्य थी ऊपजै, तिरि ष'चेंद्री विषेह। तो स्यूं संख वर्षायु थी, कै असंख वर्षायु थी जेह?
- ७०. जिन कहै संख वर्षायु थी, ऊपजै तिरि-पं. विषेह। असंख्यात वर्षायु थी, ऊपजवूं न कहेह।।
- ७१. जो संख वर्षायु थी ऊपजै, तो स्यू पजत्त संबेह। वर्षायु थकी ऊपजै, कै अपजत्त थी कहेह?
- ७२. जिन कहै पज्जत्त संख्यात जे, वर्षायुष थी हुंत । अपजत्त संख वर्ष तणां, आयुष थी उपजंत ।।
- ७३. सन्नी मनुष्य भगवंत जी !, तिरि पंचेंद्री विषेह। ऊपजवा नैं योग्य ते, कितै काल स्थितिक उपजेह?
- \*लय: वेग पधारो महल
- १. देखें परि. २, यंत्र ९१
- २. देखें परि. २, यंत्र ९२
- १४८ भगवती जोड़

- ४८. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति—िक सण्णिमणुस्से-हितो ? असण्णिमणुस्सेहितो ?
- ५९. गोयमा ! सिण्णमणुस्सेहितो वि, असिण्णमणुस्सेहितो वि उववज्जीति । (श० २४।२७१)
- ६०. असिण्णमणुस्से णं भंते! जे भविए पंचिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते! केवितकालिट्टितीएसु उववज्जेज्ञा?
- ६१. गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तिहितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएस् उववज्जेज्जा ।
- ६२. लद्धी से तिसु वि गमएसु लब्धि:—परिमाणादिका (वृ० प० ८४१)
- ६३. 'से' तस्यासिङ्ज्ञमनुष्यस्य त्रिष्विप गमेष्वाद्येषु यतो नवानां गमानां मध्ये आद्या एवेह त्रयो गमाः संभवन्ति, (वृ० प० ८४१)
- ६४. जवन्यतोऽप्युत्कर्षतोऽपि चान्तर्मुहूर्त्तस्थितिकत्वेनैक-स्थितिकस्वात्तस्येति, (वृ• प० ६४१)
- ६५. जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स ।
- ६६-६८ संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपचिदियस्स
  मिष्मिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो
  १-३। (श० २४।२७२)
  'एत्थ चेव' ति अत्रैव पञ्चेन्द्रियतिर्यगुद्देशकेऽसञ्जिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्भ्यः पञ्चेन्द्रियतिर्यगुद्देशकेऽस्रोञ्ज(वृ० प० ८४१)
- ६९. जइ सिंणमणुस्सेहितो उववज्जिति—िक संखेज्ज-वासाउयसिंणमणुस्सेहितो ? असंखेज्जवासाउयसिंण-मणुस्सेहितो ?
- ७०. गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय। (श० २४।२७३)
- ७१. जइ संखेज्जवासाउय कि पज्जत्त ? अपज्जत्त ?
- ७२. गोयमा ! पञ्जत्तसंखेज्जवासाउय, अपञ्जत्तसंखेज्ज-वासाउय । (श० २४।२७४)
- ७३. सिण्णमणुरसे णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्ख-जोणिएस् उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकाल-द्वितीएस् उववज्जेज्जा ?

- ७४. श्री जिन भाखं जघन्य थी, अंतर्म्हूर्त्त विषेह। उत्कृष्ट तीन पल्योपम, स्थितिक में उपजेह।।
- ७५. हे प्रभु ! ते सन्नी मनुष्य नें, लब्धि प्राप्ति कहिवाय।
  परिमाणादिक नीं जिका, इह विधि कहियै ताय।।
  ७६. जिम एहिज सन्नी मनुष्य नें, पृथ्वीकायिक मांय।
  ऊपजता नें प्रथम गमे, दाखी तिम कहिवाय।।

७७. तिका लब्धि इम चीन, जे परिमाण थकीज जघन्य एक बे तीन, उत्कृष्ट संखेज्ज ऊपजै ॥ ७८. स्वभाव थी पिण जेह, सन्नी मनुष्य संख्यात समयेह, इक संख्याता इज ऊपजे ॥ ७९. षट संघयणज जाण, जघन्य थकी अवगाहना । आंगुल तणों पिछाण, असंख्यातमा भाग नीं ॥ धनुष्य ८०. उत्कृष्टी पहिछाण, पंच सय नीं हुवै। विल षटविध संठाण, षट लेण्या ने दृष्टि **८१.** ज्ञान च्यार अवलोय, फून अज्ञानज भजनाइं करि जोय, जोग तीन उपयोग संज्ञा च्यारज होय, कषाय च्यार कहीजियै । समुद्घात षट ह्वं वली।। इद्रिय पंच सुजोय, ८३. वेदन सात असात, त्रिविध वेद स्थिति जघन्य थी। कोड़ नीं।। अंतर्मुहर्त्त उत्कृष्ट पूर्व ख्यात, ८४. पसत्थ अपसत्थ संघ, अध्यवसायज उभय ह्वै। कह्यं कायसंवेध आयु सम अनुबंध, ५५. भवादेश करि इष्ट, बे भव ग्रहणज जघन्य थी। ह्वं अठ भव उत्कृष्ट, सूत्रे काल लिख्योज छै।।

#### सोरठा

उत्कृष्ट तीन पल्योपमे, पृथक पूर्व कोड़।।

द६. \*काल आश्रयी जघन्य थी, अंतर्मुहूर्त्त बे जोड़।

८७. पूर्व कोड़ज सात, एकांतर भव मनु अष्टम भव आख्यात, युगल हुवै पल्य तीन स्थिति।। दद. \*तेहिज सन्नी मनुष्य ही, नीं लेह। जघन्य तिरि पंचेंद्री विषेह ।। स्थितिक नैं विषे ऊपनों, ८९. वक्तव्यता तसु सर्व ही, प्रथम गमक ख्यात । णवरं कायसंवेध नो, अद्धा इहविध आत ॥ ९०. काल आश्रयी जघन्य थी, अंतर्मृहर्त्त बे धार । उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिउं, अंतर्मुहर्त्त च्यार ॥

\*लय: वेग पधारो महल

- ७४. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएस्, उनकोसेणं तिपलिओवमद्वितीएस् उनवज्जेज्जा ।
  - (श॰ २४।२७५)
- ७५,७६ ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? लढी से जहा एयस्सेव सण्णिमणुस्सस्स पुढिविक्काइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए 'लढी से' इत्यादि, लब्धिः परिमाणादिप्राप्तिः

(वृ० प० ८४१)

- ७७. सा चैवं —परिमाणतो जघन्येनैको द्वौ वा उत्कर्षण तु सङ्ख्याता एवोत्पद्यन्ते (वृ० प० ६४१)
- ७८. स्वभावतोऽपि सङ्ख्यातत्वात् सञ्ज्ञिमनुष्याणां, (वृ० प० ८४१)
- ७९-६१. तथा षड्विधसहनिन उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतावगाहनाः षड्विधसंस्थानिनः षड्लेश्यास्त्रिविध-वृष्टयो भजनया चतुर्ज्ञानास्त्र्यज्ञानाश्च त्रियोगा द्विविधोपयोगाः (वृ० प० ८४१)
- प्रसमुद्-घाताः प्रविच्याः प्रविन्द्रयाः प्रटसमुद्-घाताः (व० प० ८४१)
- प्रातासातवेदनास्त्रिविधवेदा जघन्येनान्तर्भृहूर्त्तस्थितय
   उत्कर्षेण तु पूर्वकोटघायुषः (वृ० प० ८४१)
- ५४,५५. जाव—भवादेसो ति । प्रशस्तेतराध्यवसानाः स्थितिसमानानुबन्धाः काय-संवेधस्तु भवादेशेन जघन्यतो द्वी भवी उत्कर्षतोऽष्टी भवाः कालादेशेन तु लिखित एवास्ते १ ।

(वृ० प० ८४१)

- प्रकालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहृत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुत्वकोडिपृहत्तमब्भिहियाइं १। (श० २४।२७६)
- ८८. सो चेव जहण्णकालद्वितिएसु उववण्णो,
- ८९. एस चेव वत्तव्वया, नवरं-
- ९०. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उनकोसेणं चत्तारि पुब्वकोडीओ चर्जीह अंतोमुहुत्तेहि अब्भ-हियाओ २। (श० २४।२७७)

श० २४, उ० २०, ढा० ४२७ १४९

- ९१. तेहिज सन्नो मनुष्य ही, उत्कृष्ट काल नीं तेह। स्थितिक नैं विषे ऊपनों, तिरि पंचेंद्री विषेह।
- ९२. जघन्य अने उत्कृष्ट थी, तीन पत्योपम ताय। आयुवंत विषे ऊपजै, तृतीये गमक कहाय।।
- ९३. वक्तव्यता तसु सर्व ही, पूर्ववत कहिवाय। णवरं इतरो विशेष छै, सांभलजो चित ल्याय।।
- ९४. जघन्य थकी अवगाहना, पृथक आंगुल पेखा उत्कृष्टी धनु पांचसौ, वारू न्याय अवेखा।

- ९५. इह वचनेज कहेह, आंगुल पृथक आदि मनु। काल करी उपजेह, उत्कृष्ट स्थितिक नें विषे।।
- ९६. \*स्थिति जघन्य जे मनुष्य नीं, पृथक मासज पेख। जत्कृष्ट पूर्व कोड़ नीं, अनुबंध पिण इम लेख।

## सोरठा

- ९७. इह वचनेज कहेह, पृथक मासज आदि मनु। काल करो उपजेह, उत्कृष्ट स्थितिक तिरि विषे।।
- ९८. \*भवादेश करि ने तिको, बे भव ग्रहण करेह। धुर भव सन्नो मनुष्य नों, द्वितीय युगल तिरि लेह।।
- ९९. काल आश्रयी जघन्य थी, मनु स्थिति पृथक मास। तीन पल्योपम नीं वली. युगल तिरि भव तास।।
- १००. उत्कृष्ट अद्धा बिहुं भवे, मनु भव पूर्व कोड़। तीन पत्योपम तिरि भवे, युगल तणीं स्थिति जोड़।।
- १०१. सेवै कालज एतलो, ए गति-आगति काल । ओघिक नैं उत्कृष्ट गमो, दाख्यो तृतीय दयाल ।।
- १०२. तेहिज सन्नी मनुष्य ही, आपणपैज कहेह। जघन्य काल स्थितिक थई, ऊपनों तिरि-पं. विषेह।।
- १०३. जिमज सन्नी पं.-तिरि तणां, तिरि पंचेंद्री विषेह । ऊपजता नें लद्धी कही, मध्यम त्रिण गमकेह ।।
- १०४. वक्तव्यता सहु जे कही, तेह सर्व ही जोय। एहनें पिण मध्यम त्रिण गमे, सगली भणवी सोय।।
- १०५. णवरं इतरो विशेष छै, जे परिमाणज ताय। उत्कृष्ट संखेज ऊपजै, शेष तिमज कहिवाय।।

#### सोरठा

१०६. तिरि पंचेंद्री मांय, अपजतां सन्नी तिरि।। तिहां परिमाण कहाय, उत्कृष्ट असंख अपजे।।

- \*लय: वेग पधारो महल
- १५० भगवती जोड

- ९१. सो चेव उक्कोसकालट्टितिएसु उववण्णो
- जहण्णेणं तिपलिओवमिट्ठतीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमिट्ठतीएसु,
- ९३. सच्चेव वत्तव्वया, नवरं-
- ९४. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं।
- ९५. अनेनेदमवसितम् अंगुलपृथक्त्वाद्धीनतरशरीरो मनुष्यो नोत्कृष्टायुष्केषु तिर्यक्षूत्पद्यते, (वृ० प० ८४१, ८४२)
- ९६. ठिती जहण्णेणं मासपुहत्तं, जनकोसेणं पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि।
- ९७. अनेनापि मासपृथक्त्वाद्धीनतरायुष्को मनुष्यो नोत्कृष्टस्थितिषु तिर्यक्षूत्पद्यत इत्युक्तं, (वृ० प० ८४२)
- ९८. भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,
- कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पिलओवमाइं मास-पुहत्तमञ्चिहियाइं,
- १००. उनकोसेणं तिष्णि पलिओवमाइं पुरुवकोडीए अब्भ-हियाइं,
- १०१. एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गतिरागितं करेज्जा ३ । (श॰ २४।२७६)
- १०२. सो चेव अप्पणा कालद्वितीओ जाओ,
- १०३. जहा सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणियस्स पंचिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मिष्किमेसु तिसु गमएस्
- १०४. वत्तव्वया भणिया एस चेव एयस्स वि मिष्मिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा,
- १०५. नवरं─परिमाणं उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । सेसं तं चेव ४-६ । (श० २४।२७९)
- १०६. तत्र परिमाणद्वारे उत्कर्षतोऽसङ्ख्रघेयास्ते उत्पद्यन्ते इत्युक्तः (वृ० प० ८४२)

- १०७. इहां विल इम वाय, संख्याता सन्नी मनुष्य। तिणसूं तिरि-पं. मांय, संख्याता हिज ऊरजै।।
- १०८. संघयणादिक द्वार, फुन जिम आख्या छै तिहां। तिमज इहां अधिकार, कहिवं ते कहियै अछै।।
- १०९. षट संघयणज तास, जघन्य अने उत्कृष्ट फुन। अवगाहना विमास, असंख भाग आंगुल तणों।।
- ११०. फुन ह्वं षट संठाण, लेश तीन दृष्टि मिथ्या । वे अज्ञान पिछाण, जोग एक उपयोग वे।।
- १११. संज्ञा हुवैज च्यार, कषाय च्यार हुवै विल । इंद्रिय पंचज धार, समुद्घात हुवै आदि त्रिण ।।
- ११२. वेदन सात असात, वेद तीन ने आउखो अंतर्महर्त्तं थात, जघन्य अने उत्कृष्ट करि।
- ११३. अपसत्य अध्यवसाय, आयु सम अनुबन्ध फुन। कायसंवेध कहाय, जघन्य थकी भव ग्रहण बे।।
- ११४. ह्वं अठ भव उत्कृष्ट, काल आश्रयी मनु सन्नी। तिरि पंचेंद्रिय इष्ट, बिहुं नीं स्थिति करि जाणवृं।।
- ११५. \*तेहिज सन्नी मनुष्य जिको, आपणपैज कहेह। उत्कृष्ट काल स्थितिक हुओ, पं.-तिरि में उपजेह।।
- ११६. तेहिज प्रथम गमे करी, वक्तव्यता इहां जाण। णवरं पांचसौ धनुष्य नीं, जघन्योत्कृष्ट अवगाण।।
- ११७. स्थिति अने अनुबंध वलि, जघन्य अने उत्कृष्ट।
  पूर्व कोड़ पिछाणिये, शेष तिमज सहु इष्ट।।
- ११८. यावत भव आश्रयी लगै, काल आश्रयी कहाय। जघन्य कोड़ पूर्व कह्यो, अंतर्गुहुर्त्त अधिकाय।।
- ११९. उत्कृष्ट तीन पल्योपमे, पृथक पूर्व कोड़। एतलो काल सेवै तिको, ए गम सप्तम जोड़।।
- १२०. तेहिज सन्नी मनुष्य तिको, उत्कृष्टज स्थितिवंत। जघन्य काल स्थितिक पं.-तिरि, तेह विषे उपजंत।।

१,२. पन्नवणा पद १ में जघन्य स्थितिक मनुष्य, तियँच में बे अज्ञान हीज कह्या। ते मार्ट सास्वादन नों धणी जे मनुष्य, तियँच नीं जघन्य स्थिति छै, तेहनैं विषे न ऊपजै, ते मार्ट इहां मिथ्या दृष्टि अनैं बे अज्ञान हीज कह्या। ए जघन्य स्थितिक ते २१६ आविलका नों एक भव अपर्याप्त अवस्था में मरें तेहनैं विषे सास्वादन न पार्व। बीजुं सौधमं देवलोके सन्नी तियँच जघन्य गमा बालो ऊपजै, तेहनैं विषे बे ज्ञान कह्या छै। ए पर्याप्त अवस्था छै तेहनीं जघन्य स्थिति मोटो अंतर्मृहूर्त्तं छै. पिण २१६ आविलका नुं ए भव नथी ते मार्ट। विल सौधमें सन्नी मनुष्य जघन्य गमे ऊपजै, तेहनी स्थिति जघन्य पृथक मास नीं कही छै, तिण में ज्ञान पार्व छै। तिम सौधमें सन्नी तियँच ऊपजै, तेहनैं जघन्य गमे मोटा अंतर्मृहूर्त्तं नीं स्थिति जाणवी।

\*लय: वेग पधारो महल

- १०७. इह तु सञ्ज्ञिमनुष्याणां सङ्ख्येयत्वेन सङ्ख्येया उत्पद्यन्त इति वाच्यं, (वृ० प० ८४२)
- १०८ संहननादिद्वाराणि तु यथा तत्रोक्तानि तथेहावगन्त-व्यानि, (वृ० प० ८४२)
- १०२. तेषां षट् संहननानि जवन्योत्कर्षाभ्यामङ्गुला-सङ्ख्ययभागमात्राऽवगाहना (वृ० प० ८४२)
- ११०. षट् संस्थानानि तिस्रो लेश्या मिथ्या दृष्टि: द्वे अज्ञाने कायरूपो योगो द्वौ उपयोगौ (वृ० प० ८४२)
- १११. चतस्रः सञ्ज्ञाश्चत्वारः कषायाः पञ्चेन्द्रियाणि त्रयः समुद्घाताः (वृ० प० ६४२)
- ११२. द्वे वेदने त्रयो वेदा जघन्योत्कर्षाभ्यामन्तर्मुहूर्त्तप्रमाण-मायु: (वृ० प प प्र पर)
- ११३. अप्रशस्तान्यध्यवसायस्थानानि आयुः समानोऽनुबन्धः कायसंवेधस्तु भवादेशेन जघन्येन द्वे भवग्रहणे (व० प० ८४२)
- ११४. उत्कर्षतस्त्वष्टौ भवग्रहणानि कालादेशेन तु सञ्ज्ञि-मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यक्स्थित्यनुसारतोऽवसेय इति । (वृ० प० ६४२)
- ११५. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जातो,
- ११६. सच्चेव पढमगमगवत्तव्यया, नवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं।
- ११७. ठिती अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव
- ११८. जाव भवादेसो त्ति कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया,
- ११९. उक्कोसेणं तिष्णि पलिओवमाइं पुब्वकोडिपुहत्तमब्भ-हियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ७ । (श० २४।२५०)
- १२०. सो चेव जहण्णकालद्वितिएसु उववण्णो,

- १२१. एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं काल आदेश । जघन्य थी कोड़ पूर्व वली, अंतर्मृहूर्त्तं विशेष ।।
- १२२ उत्कृष्ट कोड़ पूर्व चिउं, अंतर्मृहूर्त्त च्यार। सेवै कालज एतलो, ए गम अष्टम धार।।
- १२३ तेहिज सन्नी मनुष्य जिको, उत्कृष्टज स्थितिवंत । उत्कृष्ट काल स्थितिक तिरि, पंचेंद्री में उपजंत ।।
- १२४. जघन्य अने उत्कृष्ट थी, तीन पत्योपम ताय। आउवंत विषे ऊपनों, लब्धि हिवै कहिवाय।।
- १२५. एहिज लब्धि कहीजियै, जिम सप्तम गम माय। दाख्यो तिणहिज रीत सूं, हिव संवेधज आय।।
- १२६ भवादेश करि तेहनां, बे भव ग्रहण करेह। धुर भव सन्नी मनुष्य तणों, द्वितीय युगल तिरि लेह।।
- १२७. काल आश्रयी तसु अद्धा, जघन्य अने उत्कृष्ट। तीन पत्योपम जाणवूं, पूर्व कोड़ज इष्ट।।
- १२८ सेवें कालज एतलो, ए गति-आगति काल। उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट गमो, दाख्यो नवम दयाल।।
- १२९. संख वर्षायु सन्नी मनु, तिरि-पं. में उपजेह । चउवीसम शत नें विषे, वीसम देश कहेह ॥
- १३०. ढाल च्यारसो ऊपरे, सतावीसमीं न्हाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगलमाल।।

- १२१. एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया,
- १२२. उक्कोसेणं चत्तारि पुष्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तीह्ं अब्भहियाओ द। (श॰ २४।२८१)
- १२३. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो,
- १२४. जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं,
- १२४. एस चेव लढ़ी जहेव सत्तमगमे।
- १२६. भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ।
- १२७. कालादेसेणं जहण्णेणं तिष्णि पिलओवमाइं पुन्व-कोडीए अन्भिहियाइं, उनकोसेण वि तिष्णि पिल-ओवमाइं पुन्वकोडीए अन्भिहियाइं,
- १२८. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ९। (श● २४।२६२)

## ढाल : ४२८

## तियंच पंचेंद्रिय में देव ऊपजै---

#### दूहा

- १. देव थकी जो ऊपजै, तिरि पंचेंद्री विषेह। तो स्यूं भवनपित थकी, कै व्यंतर थी जेह?
- २. कै अमर ज्योतिषी थी हुवै, कै वैमानिक जेह। तेह देव चव ऊपजै, तिरि पंचेंद्री विषेह?
- ३. जिन भाखै सुण गोयमा ! भवनपति थी होय। यावत वैमानिक थकी, ऊपजवूं अवलोय।।
- ४. जो सुर भवनपति थकी, ऊपजै तिरि-पं. मांय। तो स्यूं असुरकुमार थी, जाव थणित थी थाय।।
- ५. जिन भाखे पं.-तिरि विषे, असुर थकी उपजेह। यावत थणियकुमार थी, ऊपजे कर्म बसेह।।

- जइ देवेहिंतो उववज्जंति कि भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ? वाणमंतर-
- २. जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो ?
- ३. गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि । (श० २४।२८३)
- ४. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—िक असुरकुमारभवण-वासिदेवेहिंतो जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो ?
- प्र. गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासि-देवेहितो । (श० २४।२८४)

१५२ भगवती जोड़

# तियँच पंचेंद्रिय में अभुरकुमार ऊपजे, तेहनों अधिकार

\*प्रवर ज्ञान प्रभुजी तणों।। (ध्रुपदं)

- ६. हे प्रभु ! असुरकुमार ते, तिरि पंचेंद्री विषेहो जी कांइ । जे ऊपजवा जोग्य ते, कितै काल स्थितिक उपजेहो जी कांइ ?
- श्री जिन भाखे जघन्य थी, अंतर्मुहूर्त्त विषेहो जी कांइ।
   उत्कृष्ट पूर्व कोड़ जे, स्थितिक में उपजेहो जी कांइ।।
- परिमाणादिक नीं जिका, लिब्ध प्राप्ति जे पायो जी कांइ।असुरकुमार विषे हुवै, ते इह विध कहिवायो जी कांइ।।
- ९. जिम पृथ्वीकायिक विषे, असुर उपजता नें आखीजी कांइ। एवं जाव ईंशाण नें, तिमहिज लढ़ी दाखी जी कांइ।।

### सोरठा

- १०. जिम जे पुथ्वी मांहि, अमर ऊपजें तसु लढ़ी। असुर थकी ले ताहि, ईशाण पर्यंत इम करी।।
- ११. पंचेंद्री तिरि मांहि, असुरादिक ईशाण लग। ऊपजतां नें ताहि, लब्धि प्राप्ति कहिनी तिमज।।
- १२. पंचेंद्रिय तिरि मांय, असुरकुमारज सुर तणें। कपजता नें पाय, लब्धि प्राप्ति कहियै तिका।।
- १३. जघन्य एक बे तीन, उत्कृष्ट संख असंख नों। समये ऊपजवो चीन, तिरि पंचेंद्रिय नें विषे।।
- १४. तथा संघयण न होय, षट संघयणज मांहिलो । असंघयणी सोय, हिव कहिये अवगाहना ।।
- १५. भवधारणी जघन्य, असंख भाग आंगुल तणों। फून उत्कृष्टी जन्य, सप्त हस्त देह असुर नीं।।
- १६. जघन्य आंगुल नों इष्ट, कह्यू भाग संख्यात नों। लक्ष योजन उत्कृष्ट, उत्तर वैकिय तनु तणी।।
- १७. समच उरंस पिछाण, भवधारणी तणुं कह्युं। नानाविध संठाण, उत्तर वैकिय नों वली।।
- १८. चिउं लेश्या त्रिण दृष्ट, नियमा तीनज ज्ञान नीं। तीन अज्ञानज इष्ट, भजनाइं करि असुर में।।
- १९. जोग त्रिविध पिण होय, हुवै द्विविध उपयोग पिण। संज्ञाच्यारज जोय, फुन चिउं कषाय असुर में।।
- २०. इन्द्रिय पंच पिछाण, समुद्घात धुर पंच फुन। द्विविध वेदना जाण, वेद नपुंसक रहित बे।।
- २१. स्थिति जघन्य थी तास, वर्ष सहस्र दश असुर नीं। विल उत्कृष्ट विमास, साधिक सागर नीं कही।।
- २२. अध्यवसाय असंख, प्रशस्त नैं अपसत्थ पिण। अनुबंध स्थिति सम अंक, कायसंवेध कह्यूं हिवै।।

- ६. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्ख-जोणिएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकाल-द्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ७. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुन्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ।
- असुरकुमाराणं लद्धी नवसु वि गमएसु
- जहा पुढिविक्काइएसु उववज्जमाणस्स । एवं जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी ।
- १०, ११. यथा पृथिवीकायिकेषु देवस्योत्पत्तिरुक्ता असुर-कुमारमादावीशानकदेवं चान्ते कृत्वा एवं तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यक्षु सा वाच्या, (वृ• प० ८४२)
- १२. असुरकुमाराणां चैवं लब्धिः— (वृ० प॰ ८४२)
- १३. एकाद्यसङ्ख्रघेयान्तानां तेषां पञ्चेन्द्रियतियंशु समयेनोत्पादः, (वृ० प० ५४२)
- १४. तथा संहननाभावः (वृ० प० ५४२)
- १५. जघन्यतोऽङ्गुलासङ्खचेयभागमाना उत्कर्षतः सप्त-हस्तमाना भवधारणीयावगाहना (वृ• प० ८४२)
- १६. इतरा तु जघन्यतोऽङ्गुलसङ्ख्ययभागमाना उत्कर्ष-तस्तु योजनलक्षमाना (वृ० प० ८४२)
- १७. संस्थानं समचतुरस्रं उत्तरवैिक्रयापेक्षया तु नानाविधं (वृ० प● ८४२)
- १८. चतस्रो लेश्यास्त्रिविधा दृष्टिः त्रीणि ज्ञानान्यवश्यं अज्ञानानि च भजनया (वृ० प० ८४२)
- १९, २०. योगादीनि पञ्च पदानि प्रतीतानि समुद्घाता आद्याः पञ्च वेदना द्विविधा वेदो नपुंसकवर्जः (वृ० प० ८४२)
- २१. स्थितिर्देश वर्षसहस्राणि जघन्या इतरा तु सातिरेकं सागरोपमं (वृ० प० ८४२)
- २२. शेषद्वारद्वयं तु प्रतीतं संवेधं तु सामान्यत आह— (वृ० प० ८४२)

श २४, उ० २०, ढा० ४२८ १५३

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणों

१. देखें परि. २, यंत्र ९३

- २३. \*भवादेश करि सहु गमे, ह्वं अठ भव उत्कृष्टो जी कांइ। जघन्य थकी भव बे करें, श्री जिन वचन विशिष्टो जी कांइ।।
- २४. स्थिति अने संवेध ने, गमा-गमा विषे जाणी जी कांइ। किह्यूं सर्व विचार नें, वर उपयोगज आणी जी कांइ।।

- २५. स्थिति असुर नीं जास, ओघिक धुर त्रिण गम विषे। जघन्य सहस्र दश वास, उत्कृष्ट साधिक उदिध नीं।।
- २६. तेहिज असुरकुमार, जघन्य काल स्थितिक थयो। वर्ष सहस्र दश सार, मध्यम त्रिण गम नें विषे।।
- २७. तेहिज असुरकुमार, जेष्ठ काल स्थितिक थयो। साधिक सागर सार, अंतिम त्रिण गम नें विषे।
- २८ प्रथम गमक संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक ही।।
- २९. उत्क्रुष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। साधिक सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक फून।।
- ३०. दूजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहृत्तं अधिक ही।।
- ३१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। साधिक सागर च्यार, अंतर्मृहूर्त्तं चिउं वली।।
- ३२. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्वा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व तिरि-पं. भवे।।
- ३३. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। साधिक सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।।
- ३४. चउथे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहर्त्त अधिक ही।
- ३५. उत्कृष्टो सुजगीस, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष सहस्र चालीस, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।।
- ३६ पंचम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक ही।।
- ३७. उत्कृष्ट काल जगीस, अष्ट भवां नों जाणवो। वर्ष सहस्र चालीस, अंतर्मुहुर्त्त च्यार तिरि॥
- ३८ षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व तिरि-पं. भवे।।
- ३९. उत्कृष्टो सुजगीस, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष सहस्र चालीस, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।।
- ४०. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। साधिक सागर जेह, अंतर्मृहूर्त्त पं.-तिरि।।

- २३. भवादेसेण सन्वत्थ अह भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं जहण्णेणं दोण्णि भवग्गहणाइं।
- २४. ठिति संवेहं च सञ्वत्थ जाणेज्जा १-९। (श० २४।२८५)

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणीं

१५४ भगवती जोड़

- ४१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। साधिक सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।।
- ४२. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। साधिक सागर जेह, अंतर्म्हर्त्त पं.-तिरि।।
- ४३. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। साधिक सागर च्यार, अंतर्मुहूर्त्त चिउं तिरि।।
- ४४. नवमे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। साधिक सागर जेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवे।।
- ४५. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। साधिक सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि ।।

# तियंच पंचेंद्रिय में नवनिकाय ऊपजै, तेहनों अधिकार

- ४६. \*नागकुमार नां हे प्रभु ! तिरि पंचेंद्री विषेहो जी कांइ। जे ऊपजवा योग्य छै, तास प्रश्न पूछेहो जी कांइ।।
- ४७. एहिज वक्तव्यता तसु, स्व बुद्धि करिनें भणिये जी कांइ। णवरं इतरो विशेष छै, तेहिज आगल थुणिये जी कांइ।।
- ४८. स्थिति तथा संवेध नैं, उपयोगे करि जाणेवो जी कांइ। एवं यावत थणित नैं, न्याय विचारी लेवो जी कांइ।।

वा॰—प्रथम त्रिण ओघिक गमे नागकुमार नीं स्थिति जघन्य १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट देसूण २ पत्योपम । मध्यम त्रिण गमे नाग नीं स्थिति जघन्य-उत्कृष्ट १० हजार वर्ष । छेहले तीन गमे नाग नीं स्थिति जघन्य-उत्कृष्ट देसूण २ पत्योपम ।

#### सोरठा

४९. पहिले गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अधिक ही ।। अंतर्मुहर्त्त ५०. उत्कृष्टो सुप्रगट, भवां तणों। अद्धा अष्ट देश ऊण पल्य अठ, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि ॥ ५१. दूजे गमे संवेह, वे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र अधिक ही।। दश जेह, अंतर्महत्ते ५२. उत्कृष्टो सुप्रगट, अद्धा अष्ट भवां तणों। अंतर्मृहूर्त्त देश ऊण पल्य अठ, चिउं तिरि।। ५३. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवे ॥ ५४. उत्कृष्टो सुप्रगट, अद्धा अष्ट भवां देश ऊण पल्य अठ, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि ।। ५५. चउथे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहर्त्त पं.-तिरि ।। ५६. उत्कृष्टो सूजगीस, भवां तणों। अद्धा अष्ट वर्षे सहस्र चालीस, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।। ४६. नागकुमारे णं भंते ! जे भविए ?

४७. एस चेव वत्तव्वया, नवरं—

४८. ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव थणिय-कुमारे। (श॰ २४।२८६)

१. देखें परि. २, यंत्र ९४

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणों

- ५७. पंचम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्म्हर्त्त अधिक ही।।
- ४८. उत्कृष्टो सुजगीस, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष सहस्र चालीस, अंतर्मुहर्त्तं चिउं तिरि।।
- ५९. षष्ठम गर्मे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवे।।
- ६०. उत्कृष्टो सुजगीस, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष सहस्र चालीस, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।।
- ६१. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। देश ऊण पल्य बेह, अंतर्म्हर्त्त पं.-तिरि।।
- ६२. उत्कृष्टो सुप्रगट, अद्धा अष्ट भवां तणों। देश ऊण पल्य अठ, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि॥
- ६३. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। देश ऊण पल्य बेह, अंतर्मुहूर्त्त पं.-तिरि।।
- ६४. उत्कृष्टो सुप्रगट, अद्धा अ<sup>ष्</sup>ट भवां तणों। देश ऊण पल्य अठ, अंतर्मृहृत्तं चिउं तिरि।।
- ६५. नवमे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। देश ऊण पल्य बेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवे।।
- ६६. उत्कृष्टो सुप्रगट, अद्धा अष्ट भवां तणों। देश ऊण पत्य अठ, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।। वा॰ इम यावत शणित नै स्थित अनै कायसंवेध कहिवो। तियंच पंचेंद्रिय में व्यंतर ऊपजै, तहनों अधिकार'
- ६७. \*जो व्यंतर थी कपजै, तिरि पंचेंद्रिय मां ह्यो जी कां इ। तो स्यूं पिशाच थी हुवै, तिमहिज कहिवूं ता ह्यो जी कां इ।।
- ६८. जाव व्यंतर भगवंत जी ! तिरि पंचेंद्री विषेहो जी कांइ। जे ऊपजवा योग्य ते, एवं चेव कहेहो जी कांइ।
- ६९. णवरं इतरो विशेष छै, स्थिति अनैं संवेहो जी कांइ। उपयोगे करि जाणवूं, नव ही गमक विषेहो जी कांइ।।

- ७०. प्रथम तीन गमकेह, जघन्य स्थिति व्यंतर तणीं। वर्ष सहस्र दश जेह, उत्कृष्टी इक पत्य तणीं।।
- ७१. तेहिज व्यंतर देव, जघन्य काल स्थितिक थयो। वर्ष सहस्र दश हेव, मध्यम त्रिण गम ने विषे।।
- ७२. तेहिज व्यंतर देव, जेष्ठ काल स्थितिक थयो। एक पत्योपम हेव, अन्तिम त्रिण गम नैं विषे।।
- ७३. पहिले गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहूर्त्त अधिक ही।।

१५६ भगवती जोड़

६७. जइ वाणमंतरेहितो कि पिसाय तहेव

६८. जाव (श० २४।२८७) वाणमंतरे णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्ख-जोणिएसु उवविज्जित्तए ? एवं चेव,

६९. नवरं — िंठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९। (श० २४।२८८)

१. देखें परि. २, यंत्र ९४

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणीं

भवां तणों । अवधार, अद्धा अष्ट ७४. उत्कृष्टो च्यार पल्योपम सार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि ।। संवेह, बेभव अद्धा जघन्य थी। गमे वर्ष सहस्र दश जेह, अंतर्मुहर्त्त अधिक ही ।। ७६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणो। अंतर्मुहूर्त्त चिउं च्यार पल्योपम सार, तिरि ॥ ७७. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवे।। अष्ट भवां ७८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा च्यार पल्योपम सार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि ॥ ७९. चउथे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त पं.-तिरि ॥ सहस्र दश जेह, वष सुजगीस, अद्धा अष्ट भवां तणों। ८०. उत्कृष्टो वर्ष सहस्र चालीस, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।। ८१. पंचम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य अंतर्मृहर्त्त अधिक वर्षे सहस्र दश जह, **८२. उत्कृष्टो सुजगीस**, अद्धा भवां तणों । अष्ट अंतर्मुहर्त्त चिउं वर्ष सहस्र चालीस, बे भव जघन्य थी। ५३. षष्ठम गम संवेह, अद्धा वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवां सुजगीस, अद्धा **८४. उत्कृष्टो** अष्ट चिउं पं.-तिरि ॥ वर्ष सहस्र चालीस, कोड़ पूर्व बे जघन्य थी। ५५. सप्तम गम संवेह, भव अद्धा अंतर्मुहुर्त्त पं.-तिरि ॥ पल्य व्यंतर लेह, इक ८६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणो। च्यार पल्योपम सार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि ।। जघन्य थी। ८७. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा लेह, अतर्मुहर्त्ते पं.-तिरि।। पल्य व्यंतर इक दद. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां च्यार पल्योपम सार, तिरि ॥ अंतर्मुहूर्त्त चिउं ८९. नवम गमे संवेह, बे भव जघन्य अद्धा पूर्व पं.-तिरि भवे।। इक पल्य व्यंतर लेह, कोड़ ९०. उत्कृष्टो अवधार, अष्ट भवां अद्धा च्यार पल्योपम सार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।। ९१. \*जो देव जोतिषी थी वली, कहियै ते उपपातो जी कांइ। तिमहिज पूर्व रीत स्यूं, भेद करी आख्यातो जी कांइ।।

तियंच पंचेंद्रिय में ज्योतिषी ऊपजे, तेहनों अधिकार'
९२. जाव जोतिषी हे प्रभु! तिरि पंचेंद्री विषेहो जी कांइ।

जे ऊपजवा योग्य ते, इत्यादिक पूछेहो जी कांइ।।

१. देखें परि. २, यंत्र ९६

\*लय: कुशल देश सुहामणों

९१. जइ जोतिसिय ? उववाओ तहेव

९२. जाव— (श० २४।२८९) जोतिसिए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्ख-जोणिएसु उवविज्जित्तए ?

श• २४, ७० २०, ढा० ४२८ १५७

- ९३. एहिज वक्तव्यता तसु, जिम पृथ्वी नें उद्सो जी कांइ। पृथ्वी विषे जे ज्योतिषी, ऊपजता नें कहेसो जी कांइ।।
- ९४. तिमहिज कहिवूं छै इहां, नव ही गमा विषेहो जी कांइ। उत्कृष्टा अठ भव करें, यावत काल कहेहो जी कांइ।।
- ९५. काल आश्रयी जघन्य थी, बे भव आश्रयी ताह्यो जी कांइ। भाग अष्टमो पत्य तणों, अन्तर्मुहूर्त्तं अधिकायो जी कांइ।।

- ९६. पल्य नों अष्टम भाग, तेह जोतिषी आश्रयी। अंतर्मुहुर्त्त माग, तिरि पंचेंद्रिय आश्रयी।।
- ९७. \*उत्कृष्ट अद्धा पत्य चिउं, पूर्व कोड़ज च्यारो जी कांइ। वर्ष लक्ष चिउं अधिक ही, ए गति-आगतिकारो जी कांइ।।

# सोरठा

- ९८. चिउं पत्य चिउं लक्ष वास, शशी चिउं भव में जेष्ठ स्थिति ।। कोड़ पूर्व चिउं जास, तिरि पंचेंद्रिय चिउं भवे ।।
- ९९. \*इम नव ही गमका विषे, णवरं स्थित में फेरो जी कांइ।
  फेर संवेध विषे वली, उपयोगे करि हेरो जी कांइ।

वा॰—प्रथम तीन गमे जोतिषी नीं स्थिति जघन्य पत्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट १ पत्योपम लक्ष वर्ष अधिक । ए ओघिक मध्यम तीन गमे जोतिषी नीं स्थिति जघन्यईज कहिवी । ते पत्य नों आठमों भाग छेहले तीन गमे जोतिषी नीं स्थिति उत्कृष्टहीज कहिवी—ते एक पत्य नैं लक्ष वर्ष ।

#### सोरठा

- १००. दूजे गमे संवेह, भाग अष्टमों पत्य तणों। अंतर्मुहर्त्त लेह, जघन्य अद्धा बे भव तणों।।
- १०१. उत्कृष्ट अद्धातास, अष्ट भवां नों इह विधे। चिउंपल्य चिउंलक्ष वास, अंतर्मुहर्त चिउं वली।।
- १०२. तीजे गमे संवेह, भाग अष्टमों पल्य तणों। पूर्व कोड़ स्थिति लेह, जघन्य अद्धा बे भव तणों।।
- १०३. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवे उत्कृष्ट अद्ध। चिउं पत्य चिउं लक्ष वास, च्यार कोड़ पूर्व वली।।
- १०४. तुर्यं गमे संवेह, भाग अष्टमों पत्य तणों। अंतर्मृहर्त्तं लेह, बे भव आश्रयी जघन्य अद्ध।।
- १०५. उत्कृष्ट अद्धा धार, अर्द्ध पल्य चिउं भव जोतिषी। पुर कोड़ज च्यार, उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे।।
- १०६ पंचम गम सर्वेह, भाग अष्टमों पल्य तणीं। अंतर्मुहूर्त्त लेह, जघन्य अद्धा बे भव तणीं।।

- ९३. एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविवकाइयउद्देसए
- ९४. भवग्गहणाइं नवसु वि गमएसु अट्ठ जाव
- ९५. कालादेसेणं जहण्णेणं अटुभागपिलओवमं अंतोमुहृत्त-मन्भहियं,
- ९७. उक्कोसेणं चत्तारि पिलओवमाइं चउिंह पुन्वकोडीहिं चउिंह य वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागित करेज्जा।
- ९९. एवं नवसु वि गमएसु, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९। (श० २४।२९०)

<sup>\*</sup>लय : कुशल देश देश सुहामणों

१४८ भगवती जोड़

- १०७. उत्कृष्ट अद्धाधार, अर्द्ध पत्य चिउंभव जोतिषी। अंतर्मुहर्त्त च्यार, अष्ट भवां नों काल ए।।
- १०८. षष्ठम गम संवेह, भाग अष्टमों पत्य तणों। कोड़ पूर्व स्थिति लेह, जघन्य अद्धा बे भव तणों।।
- १०९. उत्कृष्ट अद्धाधार, अर्द्ध पत्य चिउं भव जोतिषी। कोड़ पूर्व फुन च्यार, अद्धा अष्ट भवां तणों।
- ११०. सप्तम गम संवेह, एक पत्य ने वर्ष लक्षा। अंतर्मुहूर्त्त लेह, वे भव आश्रयी जघन्य अद्धा।
- १११. उत्कृष्टो अवधार, चिउं पत्य वर्षज लक्ष चिउं। पूर्व कोड़ज च्यार, उत्कृष्ट अद्धा अठ भवे।।
- ११२ अष्टम गम संवेह, एक पल्य नें वर्ष लक्षा। अंतर्मुहुर्त्त लेह, बे भव आश्रयी जघन्य अद्ध।
- ११३. उत्कृष्ट अद्धा तास, आख्यो अष्ट भवां तणों। चिउं पत्य चिउं लक्ष वास, अंतर्मुहूर्त च्यार फुन।।
- ११४. नवम गमे संवेह, एक पत्य नैं वर्ष लक्षा। कोड़ पूर्व फुन लेह, बे भव आश्रयी जघन्य अद्धा।।
- ११५. उत्कृष्ट अद्धा तास, अष्ट भवां नों इह विधे। चिउं पत्य चिउं लक्ष वास, पूर्व कोड़ज च्यार फुन।। ए जोतिषी थकी पंचेंद्रिय तियँच नैं विषे ऊपजै, तेहनां ९ गमा कह्या। पंचेंद्रिय तियँच में वैमानिक ऊपजैं—
- ११६. \*जो वैमानिक थी ऊपजै, तिरि पंचेंद्री विषेहो जी कांइ। तो स्यूं बारै कल्प थी, कै कल्पातीत थी लेहो जी कांइ?
- ११७. श्री जिन भाखै कल्प थी, तिरि पंचेंद्रिय मांही जी कांइ। ऊपजै वैमानिक सुरा, कल्पातीत थी नांही जी कांइ।
- ११८. कल्प थकी जो ऊपजै, जाव कल्प सहसारो जी कांइ। तसु वासी सुर ऊपजै, तिरि पंचेंद्री मक्तारो जी कांइ।।
- ११९. आणत जाव अच्युत नां कल्प-वासी ते देवा जी कांइ। तिरि पंचेंद्री नैं विषे, ऊपजै नहीं स्वयमेवा जी कांइ।। तियंच पंचेंद्रिय में सौधर्मवासी देव ऊपजै, तेहनों अधिकार'
- १२०. सोहम्म सुर भगवंत जी! तिरि पंचेंद्री विषेहो जी कांइ। जे ऊपजवा योग्य ते, कितै काल स्थितिक उपजेहो जी कांइ?
- १२१. श्री जिन भाखै जघन्य थी,

अंतर्मृहूर्त्तं स्थितिके हो जी कांइ । उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नां, आयु विषे उपजेहो जी कांइ ।।

१२२. शेष सर्व जिमहोज जे, पृथ्वीकाय उद्देसे जी कांइ। नव ही गमक विषे कह्युं, तिम कहिवूं सुविशेषे जी कांइ।। ११६ जइ वेमाणियदेवेहितो कि कप्पोबावेमाणिय?

- ११७. गोयमा ! कप्पोवावेमाणिय, नो कप्पातीतावेमाणिय। (श॰ २४।२९१)
- ११८. जइ कप्पोवा जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणिय-देवेहिंतो वि उववज्जंति,
- ११९. नो आणय जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणिय । (श० २४।२९२)
- १२०. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्ख-जोणिएसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकाल-द्वितीएसु उवविज्जेज्जा ?
- १२१. गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुन्वकोडीआउएसु ।
- १२२. सेसं जहेव पुढिविक्काइयउद्देसए नवसु वि गमएसु,

श० २४, उ॰ २०, डा॰ ४२८ १५९

कप्पातीतावेमाणिय ? ११७. गोयमा ! कप्पोवावेमाणियः नो कप्पातीनावेमाणियः

**१**. देखें परि. २, यत्र **९७** 

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणों

- १२३. पृथ्वीकायिक मांय, सोहम नां सुर ऊपजै। लद्धी तिहां कहाय, तिमहिज कहिवं छै इहां।।
- १२४. \*जघन्य थकी भव बे करै, उत्कृष्टा अठ लेहो जी कांइ। स्थिति फुन कालादेश नैं, उपयोगे जाणेहो जी कांइ।।

वा०—स्थिति ते प्रथम तीन गमे सौधर्म देव जघन्य एक पत्य, उत्कृष्ट २ सागर स्थिति बोधिक कहियै। मध्यम तीन गमे सौधर्म सुर जघन्य काल स्थितिक थयो ते १ पत्योपम स्थितिवंत कहियै। छेहले तीन गमे सौधर्म सुर उत्कृष्ट काल स्थितिक थयो ते २ सागर स्थितिवंत कहियै।

#### सोरठा

१२५. पहिले गमे संवेह, बे भव अद्धा जेह, पल्योपम अंतर्मुहर्त्त अधिक १२६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धाः अष्ट भवां तणो। सागर अष्ट उदार, पूर्व कोड़ चिउं तिरिभवे॥ संवेह, बे १२७. द्वितीय गमे भव अद्धा जघन्य थी। अधिक जेह, अंतर्मुहर्त्त एक पल्योपम १२८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट तणों । भवां उदार, अंतर्मुहुर्त्त चिउं वली।। अष्ट बे भव १२९. तृतीय गमे संवेह, अद्धा जघन्य थी। जेह, कह्युं वली ।। एक पल्योपम पूर्व कोड़ १३०. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों । पूर्व कोड़ज चिउं तिरि ॥ सागर अष्ट उदार, १३१. चउथे गमे संवेह, बे थी। भव अद्धा **जघन्**य अंतर्मृहूर्त्त अधिक एक पल्योपम जेह, १३२. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। प्रवर पल्योपम च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही ।। १३३. पंचम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। पत्योपम जेह, अंतर्मुहुर्त्त अधिक ही।। अवधार, अद्धा भवां १३४. उत्कृष्टो अष्ट चिउं पत्य सुर भव च्यार, चिउं अंतर्मृहर्त्त तिरि।। १३५. षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। एक पल्योपम जेह, कोड़ पूर्व फुन अधिक १३६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों । प्रवर पत्योपम च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। १३७. सप्तम गम बेह, पं.-तिरि ।। सागर अंतर्मुहर्त्ते स्र भव १३८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणो । पूर्व च्यार कोड़ वली । सागर अष्ट उदार, १३९. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। बेह, सुर भव सागर अंतर्मुहूर्त्त पं.-तिरि ॥

१२४. नवरं—नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाई, उनकोसेणं अट्ठ भवग्गहणाई। ठिति कालादेसं च जाणेज्जा १-९।

१६० भगवती जोड़

- १४०. उत्कृष्टो अवधार, तणों। अद्धा अष्ट भवां अंतर्मुहूर्त्त चिउं वली ॥ सागर अष्ट उदार,
- १४१. नवमे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। सुर भव सागर बेह, कोड़ पूर्व पं.-तिरि भवे।
- तणों। १४२. उत्कृष्टो अवधार. अष्ट भवां अद्धा सागर अष्ट उदार, कोड़ पूर्व चिउं पं.-तिरि।। सौधर्म कल्प नां सुर पंचेंद्रिय तिर्यंच नैं विषे ऊपजै, तेहनां ९ गमा कह्या ।

तियंच पर्चेद्रिय में दूसरे देवलोक स्यूं आठवें देवलोक तक नां देव ऊपजे, तेहनों अधिकार

- १४३. \*इम ईशाण सुर ने विषे, इम इण अनुक्रमेहो जी कांइ। शेष जाव अष्टम सुरे, उपजाविवो कहेहो जी कांइ।।
- १४४. णवरं जे अवगाहना, इकवीसम पद मांह्यो जी कांइ। नाम ओगाहण संठाण में, आख्यो तिम कहिवायो जी कांइ।।

# सोरठा

- सोहम्म ईशाण सुर। १४५. भवण व्यंतरा जेह, फुन नीं देह, उत्कृष्टी अवगाहना ।। सप्त हस्त
- हाथ, ब्रह्म लंतके पंचकर। १४६. तृतीय तुर्य षट सप्तम अष्टम ख्यात, चिउं कर नीं अवगाहना ॥
- १४७. चिउं कल्पे कर तीन, ग्रेवेयक कर दोय फुन । चीन, एक हस्त अवगाहना ।। पंच अणुत्तर
- १४८. \*लेक्या कहियै छै हिवै, सनतकुमार मांहिंदो जी कांइ। ब्रह्म विषे इक पद्म छै, ऊपर शुक्ल कथियो जी कांइ।।
- १४९. वेद हिवै कहियै अछै, तृतीय कल्प थी ताह्यो जी कांइ। पुरिस वेद एकज .हुवै, इत्थि नपुंस न थायो जी कांइ।।
- १५०. आयु नें अनुबंध ही, जिम पन्नवणा मांह्यो जी कांइ। स्थिति पद चउथा नैं विषे,

आख्यो तिम कहिवायो जी कांइ।।

१५१. शेष ईशाणक देव नैं, जिमहिज ए अधिकारो जी कांइ। कायसंवेध फुन जाणवो, सेवं भंते ! सारो जी कांइ।।

#### सोरठा

- १५२. तिरि पंचेंद्रिय मांय, गुणचालीसज स्थान नों। कहिवाय, षटवीस जे।। पृथ्वीवत आवै
- तीज। सूं अष्टम लगे। सोय, १५३. सात नारकी होय, एगुणचाली एह कल्प षट इम हुई ॥
- १. देखें परि. २, यंत्र ९८-१०४ \*लय: कुशल देश सुहामणों

- १४३. एवं ईसाणदेवे वि । एवं एएणं कमेणं अवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववाएयव्वा,
- १४४. नवरं ओगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे (सू० ७०) अवगाहना यथाऽवगाहनासंस्थाने प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे पदे ((वृ० प० ८४२)
- १४५-१४७. भवणवणजोईसोहम्मीसाणे सत्त हुंति रयणीओ। एक्केक्कहाणि सेसे दुदुगे य दुगे चउक्के य ॥ (बृ० प० ८४२)
- १४८. लेस्सा सणंकुमार-माहिंद-बंभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाणं एगा सुक्कलेस्सा ।
- १४९. वेदे नो इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुंसकवेदगा।
- १५०. आउ-अणुबंधा जहा ठितिपदे । 'जहा ठितिपए' ति प्रज्ञापनायाश्चतुर्थपदे स्थितिश्च (वृ० प० ५४२) प्रतीतैवेति ।
- १५१. सेसं जहेव ईसाणगाणं कायसंवेहं च जाणेज्जा। (भ॰ २४।२९३) सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति । (श० २४।२९४)

श• २४, उ• २०, ढा० ४२८

- १५४. षट नारिक नां ताय, ऊपजतां पं.-तिरि जघन्य दोय भव थाय, उत्कृष्टा भव अष्ट फुन ।। उपजे सप्तम १५५. तिरि पंचेंद्रिय मांय, नरक नों। नव ही गमे कहाय, जघन्य थकी भव दोय तस् ।। १५६. घर षट गमे पिछाण, उत्कृष्टा भव षट करै। छेहले त्रिण गम जाण, उत्कृष्टा भव च्यार ह्वै।। १५७. इम अ।गल उत्कृष्ट, सर्व विषे भव अष्ट जसु ओछा भव इष्ट, ते कहिसै नामे करी। १५८. तिरि पंचेंद्रिय मांय, उपजै सात्ं नरक नां। गमे कहाय, दोय णाणत्ता तेहनां ॥ १५९. उत्कृष्ट गम पिण जोय, सप्तम अष्टम नवम गम। आयु नैं दोय णाणत्ता होय, अनुबंध नो ॥ १६०. भवनपती थी लेह, अष्टम कल्प तणां सुरा। तिरि पंचेंद्री विषेह, उपजै तेहनीं वारता ॥ नैं अनुबंध नां। १६१. जघन्य गमे सुजोय, आयू एहिज बे उत्कृष्ट गम ।। दोय णाणत्ता होय, १६२. तिरि पंचेंद्रिय मांय, पांच स्थावर विकलेंद्रिय । पाय, पूर्व उक्त जे णाणता।। ऊपजता नें १६३. जघन्य गमे कथीन, पृथ्वी अप नां चिउं-चिउं। तेऊ नां फुन तीन, च्यार णाणत्ता वायु नां ॥ १६४. वनस्पति नां पंच, विकलेंद्रिय नां सप्त वलि। विरंच, इकतालीस ए सहनांज १६५. असन्नी पं.-तियंच, जाय पंचेंद्रिय तिरि विषे। जघन्य गमे विरंच, सात णाणता कहाय, आयू नैं अनुबंध नों। १६६. उत्कृष्ट गमे पिण तीजे नवमे दोय णाणत्ता पाय, गमे।। कहेह, पांच बोल नों १६७. तृतीय गमे फेर छै। संख्याता उपजेह, ज्ञान नहीं दृष्टिट मिथ्या ॥ ते दोय करेह, पर्याप्ताज ए तीजा गमक विषेह, पंच बोल नों फेर छै।। तीन बोल नों १६९. फुन नवमे गमकेह, पर्याप्ता उपजै वली।। संख्याता उपजेह, १७०. भव फुन दोय करेह, फेर बोल ए त्रिहुं तणो। युगल विषे उपजेह, उत्कृष्ट आयू नों धणो।। तिर्यंच, ऊपजतां पं.-तिरि विषे। सन्नी जघन्ये गमेज संच, पूर्व उक्त नव णाणत्ता।। १७२. उत्कृष्ट गमेज संध, दोय णाणत्ता तेहनां । आयू नें अनुबंध, न्याय विचारी लीजियै।। १७३. तृतीय नवम गमकेह, संख्याता हिज ऊपजै । पर्याप्ता उपजेह, जघन्योत्कृष्टज दोय भव।।
  - १६२ भगवती जोड़

१७४. बाकी सात गमेह, जघन्य थकी भव बे करै। उत्कृष्ट अठ भव लेह, कायसंवेधज जू-जुओ।।

१७५. तिरि पंचेंद्रिय मांही, ऊपजतां असन्नी मनुष्य। नथी णाणत्ता ताहि, तीन गमा छै ते भणी।।

१७६. पंचेंद्रिय तिरि मांय, ऊपजतां सन्नी मनुष्य। जघन्य गम नव पाय, उत्कृष्ट गम त्रिण णाणता।।

१७७. तीजे गमे कहाय, अवगाहना तसु जघन्य थी। पृथक आंगुल पाय, उत्कृष्टी धनु पंच सय।

१७८. जघन्य थकी स्थिति जोड़, आयू पृथक मास नों। उत्कृष्ट पूर्व कोड़, संख्याता हिज ऊपजै।।

१७९. पर्याप्ता उपजंत, जघन्योत्कृष्टज दोय भव। तीजे गमके हुंत, एह बोल नों फेर छै।।

१८०. नवम गमे अवदात, संख्याता हिज ऊपजै। पर्याप्त उपपात, जघन्योत्कृष्टज दोय भव।।

वा—७ नारकी ७, १० भवनपति १७, पंच स्थावर २२, ३ विकलेंद्रिय २४, असन्नी तियँच पंचेद्रिय २६, संख्यात वर्ष नां सन्नी तियँच पंचेद्रिय २७, संख्यात वर्ष मां सन्नी प्रत्यंच पंचेद्रिय २७, संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य २८, असन्नी मनुष्य २९, ब्यंतर ३०, जोतिषी ३१, आठ पहिला देवलोक ३९—एवं ३९ ठिकाणा नों तियँच पंचेद्रिय में ऊपजै।

१८१. तिरि पंचेंद्रिय मांय, गुणचाली स्थानक तणों। तास णाणत्ता पाय, कहिये छैते सांभलो।।

१८२. तिरि पंचद्रिय माय, उपजे सातूं नरक नों। जघन्य गमे बे पाय, आयू नें अनुबन्ध नों।।

१८३. उत्कृष्ट गमके जोय, कहिंयै बे-बे णाणत्ता। आयू तणोंज होय, फुन अनुबन्ध तणों कह्यो।।

१८४. भवनपती दश भेव, व्यंतर थी सहस्सार लग। ए बीस स्थानक नां देव, ऊपजै पं.-तिर्यंच में।।

१८५. जघन्य गमे बे जोय, उत्कृष्ट गमके पिण बिहुं। आय तणोंज होय. फन अनबन्ध नों णाणत्तं।

आयू तणोंज होय, फुन अनुबन्ध नों णाणत्तं।। १८६. पृथव्यादि चउरिद, तिरि मनु असन्नी नें सन्नी।

१८६. पृथव्याद चडारद, ।तार मनु असन्ना न सन्ना। ए बार स्थान नों संघ, ऊपजतां पं.-तिरि विषे।।

१८७. ए बारै ही स्थान, ऊपजतां पृथ्वी विषे। कह्या णाणत्ता जान, तिमज इहां जघन्योत्कृष्ट ॥

१८८. \*शत चउवीसम नों बीसमो,

च्यारसौ अठवीसमों ढालो जी कांइ। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

'जय-जश' हरष विशालो जी कांइ।।

चतुर्विशतितमशते विशोद्देशकार्थः ।।२४।२०।।

श० २४, ७० २०, ढा० ४२८ १६३

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणीं

# ढाल : ४२९

## दूहा

- १. मनुष्य अहो भगवंतजी! किहां थकी उपजंत। स्यूंनारक थी ऊपजै, तिरि मनु सुर थी हुंत!
- २. इम ऊपजवो जिम कह्यो, तिरि पंचेंद्री विषेह। तिमहिज कहिवो जाव ते, तमा थकी उपजेह।।
- ३. अधो सप्तमीं महि तणां, नारक थकी निहाल।
  मनुष्य विषे नहिं ऊपजै, विल पूछै गुणमाल।
  मनुष्य में प्रथम नरक नां नेरइया ऊपजै, तेहनों अधिकार'
  \*मनुष्य विषे जे ऊपजै जी कांइ, तसु प्रश्नोत्तर जाण।।(ध्रुपदं)
- ४. रत्नप्रभा नां नारका जी प्रभु ! मनुष्य विषे आख्यात । जे ऊपजवा योग्य छै जी कितै काल स्थितिके उपपात जी कांइ ?
- प्र. श्री जिन भाखै जघन्य थी जी कांइ, मास पृथक स्थितिकेह । उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नां जी कांइ, आयु विषे उपजेह जी कांइ ।।

#### सोरठा

- ६. रत्नप्रभा नां जाण, नारक बांधै जघन्य थी। मनुष्य आयु पहिछाण, पृथक मास तणोंज ते।।
- 9. पृथक मास थी पेख, अतिहि हीन बंधै नथी।
   तथाविधि सुविशेख, जीव परिणाम अभाव थी।।
- प्म अन्य पिण स्थान, कारण किंत्र्वं निपुण जन।जिन प्रणीत पहिछाण, वचन तणांज प्रमाण थी।।
- ९. \*अवशेष वक्तव्यता तसु जी कांइ, जिम पंचेंद्रिय तिर्यंच । तेह विषे जे ऊपजै जी कांइ,

तिमहिज एह विरंच जी कांइ।।

१०. णवरं द्वार परिमाण में जी कांइ, जघन्य एक बे तीन। उत्कृष्टा फुन ऊपजै जो कांइ, संख्याताज कथीन जी कांइ।

## सोरठा

- ११. नारक नों उपपात, संमूच्छिम मनु में नथी। गर्भज विषेज थात, ते तो संख्याताज छै।।
- \*लय: म्हांरी सासूजी रेपांच पुत्र कांइ अथवा वीरमती तरु अंब नेंजी कांइ १. देखें परि. २, यंत्र १०५
- १६४ भगवती जोड़

- १. मणुस्सा णं भंते ! कझोहितो उववज्जंति—िक नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उववज्जंति ?
- गोयमा ! णेरइएहिंतो वि उववज्जंति जाव देवे-हिंतो वि उववज्जंति । एवं उववाओ जहा पंचिदिय तिरिक्खजोणिउद्देसए जाव तमापुढविनेरइएहिंतो वि उववज्जंति,
- ३. नो अहेसत्तमपुढिविनेरइएिंहतो उववज्जंति । (श॰ २४।२९४)
- ४. रयणप्पभपुढिविनेरइए णं भंते ! से भविए मणुस्सेसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालिंदुतीएसु उववज्जेज्जा ?
- थ. गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुन्वकोडिआउएसु ।
- ६,७. रत्नप्रभानारका जघन्यं मनुष्यायुर्बध्नन्तो मास-पृथक्त्वाद्धीनतरं न बध्नंति तथाविधपरिणामाभावा-दिति, (वृ०प० ५४४)
- प्वमन्यत्रापि कारणं वाच्यं, (वृ० प० ५४५)
- ९. अवसेसा वत्तव्वया जहा पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव,
- १०. नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेजजा उववज्जंति ।
- ११. नारकाणां संमूच्छिमेषु मनुष्येषूत्पादाभावाद् गर्भ-जानां च सङ्ख्यातत्वात्सङ्ख्याता एव ते उत्पद्यन्त इति, (वृ० प० ८४५)

- १२. \*जिम तिहां अंतर्मुहूर्त्तं करी जी कांइ, तेम इहां कहिवेह । मास पृथक करिनें वली जी कांइ,
  - करिवूं कायसंवेह जी कांइ।।

- १३. रत्नप्रभा थी जेह, ऊपजता पं.-तिरि विषे। अंतर्मुहुर्त्त करेह, जिम कीधो संवेध त्यां।।
- १४. तिम इहां मनुष्य विषेह, ऊपजता घुर नारकी। पृथक मास करेह, करिवो कायसंवेध प्रति।।

वा॰ — जिम तिहां पंचेंद्रिय तियँच उद्देशक नैं विषे रत्नप्रभा नारकी कपजतां पचेंद्रिय तियँच नैं जघन्य अंतर्मृहूर्त्तं स्थितिकपणां थकी अंतर्मृहूर्त्तं करिकै संवेध की छो। तिम इहां मनुष्य उद्देशक नैं विषे मनुष्य नैं जघन्य स्थिति प्रतै आश्रयी पृथक मास करिकै संवेध करिवो इसो भाव।

- १५. फुन कालादेशेन, धुर गम अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश येन, मास पृथक फुन अधिक ही।
- १६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहियै सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।।
- १७. बीजे गमे संवेष्ठ, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, मास पृथक फुन अधिक ही।।
- १८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहियै सागर च्यार, पृथक मास चिउं अधिक फून।।
- १९. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व फुन अधिक ही।।
- २०. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहियै सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।
- २१. चउथे गमें संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, पृथक मास फुन अधिक ही।
- २२. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष चालीस हजार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।।
- २३. पंचम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, पृथक मास फुन अधिक ही।
- २४. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष चालीस हजार, पृथक मास चिउं अधिक ही।।
- २५. षष्ठम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। वर्ष सहस्र दश जेह, कोड़ पूर्व फुन अधिक ही।।
- २६. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। वर्ष चालीस हजार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।।
- \*लय: म्हारी सासूजी रंपांच पुत्र कांइ
- १. वृत्ति के जिस अंश के आधार पर वार्तिका लिखी गई है, वह सोरठों के सामने आ गई।

- १२. जहा तिह अंतोमुहुत्तेहि तहा इहं मासपुहुत्तेहि संवेहं करेज्जा।
- १३. यथा तत्र पञ्चेन्द्रियतिर्यगुद्देशके रत्नप्रभानारकेभ्य उत्पद्यमानानां पञ्चेन्द्रियतिरश्चां जघन्यतोऽन्तर्मृहूर्तं-स्थितकत्वादन्तर्मृहूर्त्ते संवेधः कृतः (वृ० प० ५४५)
- १४. तथेह मनुष्योदेशके मनुष्याणां जघन्यस्थितिमाश्रित्य मासपृथक्तवै: संवेध: कार्य इति भाव (वृ०प० ८४४)
- १५. 'कालादेसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं मासपुहुत्त-मब्भिहियाइं' इत्यादि । (वृ० प० ५४५)

श० २४, उ• २१, ढा• ४२९ १६४

- २७. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थो। सागर एक कहेह, पृथक मास फुन अधिक ही।।
- २८. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहियै सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।।
- २९. अष्टम गम संवेह, बेभव अद्धा जघन्य थी। सागर एक कहेह, मास पृथक फुन अधिक ही।।
- ३०. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहिये सागर च्यार, मास पृथक चिउं अधिक ही।।
- ३१. नवम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थो । सागर एक कहेह, कोड़ पूर्व फून अधिक ही ।।
- ३२. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कहिये सागर च्यार, कोड़ पूर्व चिउं अधिक ही।।
- ३३. \*शेष संघयणादिक सहु जी कांइ, तिरि पंचेंद्री विषेह। रत्नप्रभा नां नारका जी कांइ, ऊपजता तिम एह जी कांइ।।

# मनुष्य में दूसरी स्यूं छट्टी नरक नां नेरइयां ऊपजै, तेहनों अधिकार'

- ३४. जिम रत्नप्रभा नें विषे कही जी कांइ, वक्तव्यता अवलोय । तिमहिज कहिवी वारता जो कांइ, सक्करप्रभा में सोय जी कांइ ।।
- ३५. णवरं जघन्य थी जाणवो जी कांइ, पृथक वर्ष स्थितिकेह। उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नैं जी कांइ, आयु विषे उपजेह जी कांइ।।
- ३६. अवगाहना लेश्या वली जी कांइ, ज्ञान स्थिति पहिछाण । अनुबंध फुन संवेध नैं जी कांइ, भेद नानापणं जाण जी कांइ।।
- ३७. जिमहिज तिरि उद्देशके जी कांइ, आख्यो तिम कहिवाय। एवं जाव तमा मही जी कांइ,

# नारक लग वर न्याय जी कांइ।।

वा॰ जो रत्नप्रभा थकी मनुष्य में ऊपजै तो कितै काल स्थितिक नैं विषे ऊपजै ? हे गोतम ! जघन्य पृथक मास उत्कृष्ट कोड़ पूर्व आयु विषे ऊपजै । शेष वक्तव्यता जिम तियँच पंचेंद्रिय में ऊपजतां नैं कही तिमज । पिण एतलो विशेष जाणवो —पिरमाण जघन्य १, २, ३, उत्कृष्ट संख्याता ऊपजै । जिम तिहां अंतर्मृहूर्त्तं कह्यो, तिम इहां पृथक मास सूं संवेध करिवो । हिवै सक्कर-प्रभादिक जाव छठी तांइ रो विस्तार कहै छै —

इहां पाठ में इम कह्यो — जिम रत्नप्रभा नीं वक्तव्यता तिम सक्करप्रभा नीं, पिण एतलो विशेष — जघन्य पृथक वर्ष नीं स्थितिक नैं विषे उत्कृष्ट पूर्व कोड़ आयु नैं विषे ऊपजै। अवगाहणा १, लेश्या २, ज्ञान ३, ठिति ४, अनुबंध ४, संवेध ६ ए छह बोल नैं विषे नानापणुं विल जाणवूं। जिम तिर्यंच पंचेंद्रिय नैं उद्देशे कह्यो इम यावत तमा पृथ्वी नां नारका इति शब्दार्थः।

हिर्व भावार्थ कहै छै — जिम रत्नप्रभा नीं वक्तव्यता कही तिम सक्कर-प्रभा आदि नै विषे पिण, णवरं एतलो विशेष — रत्नप्रभा थकी नीकली जघन्य पृथक मास स्थितिक नै विषे ऊपजै। अनै सक्करप्रभादिक जाव छठी थी नीकली ३३. सेसं तं चेव १-९।

- ३४. जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया,
- ३५. नवरं ─जहण्णेणं वासपुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु ।
- ३६. श्रोगाहणा-लेस्सा-नाण-द्विती-अणुबंध संवेह-नाणत्तं च जाणेण्जा
- ३७. जहेव तिरिक्खजोणियउद्देसए। एवं जाव तमापुढिव-नेरइए। (श० २४।२९६)

१. देखें परि. २, यंत्र १०६-११०

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र कांइ

१६६ भगगती जोड़

जधन्य पृथक वर्षं स्थितिक नैं विषे ऊपजै, उत्कृष्ट कोड़ पूर्वं आयु नैं विषे ऊपजै। अनैं अवगाहणा, लेश्या, ज्ञान, ठिति, अनुबंध अनैं संवेध—एहनैं विषे नानापणुं जाणवूं। जिम तियँच उद्देशे कह्युं, तिम किह्वूं। इम जान छठी लगै जाणवूं। सक्करप्रभा थी लेई छठी नां नेरइया तियँच पंचेंद्री में ऊपजता नैं अवगाहणा, लेश्या, ज्ञानद्वार में अज्ञान पिण ग्रहिवा। स्थिति, अनुबंध, संवेधे एहनुं नानापणुं तियँच पंचेंद्रिय उद्देशे कह्युं, तिम इहां सक्करप्रभादिक छठी थी निकली मनुष्य नै विषे ऊपजता नें अवगाहणा, लेश्या, ज्ञान, ठिति, अनुबंध अनै संवेध—एहनें विषे नानापणुं जाणवूं। इहां लेश्या नों नानापणुं कह्युं, ते पहिली में कापोत लेश्या, दूजी में ही कापोत लेश्या। एहनुं नानापणुं न हुवै ते भणी निकेवल दूजी नरक रा नेरइया आश्री न जणाय। दूजी प्रमुख जाव छठी तांइ रा नेरइया संभवै तथा तियँच उद्देशे पाठ कह्युं ते कहै छै—

इहां कहा। —रत्नप्रभारै विषे ९ गमा कहा, तिम सक्करप्रभाने विषे पिण किहिना। एतलो विशेष — शरीर, अवगाहणा इकवीसमा पद में कहाूं तिम। ३ ज्ञान की नियमा। स्थिति, अनुबंध पूर्वे कहाूं तिम। इहां निकेवल सक्करप्रभा आश्री वारता कही ते रत्नप्रभाने भलाई, पिण णवरं पाठ में लेश्या नथी कही ते किम? रत्नप्रभा में लेश्या छै तिकाईज सक्करप्रभा में छै ते माटै णवरं पाठ कही लेश्या नों फरक नथी पाड़्यो। इम नव गमा उपयोगे किर किहिना।

इम यावत छठी पृथ्वी तांइ। एतली विशेष—अवगाहणा, लेश्या, स्थिति, धनुबंध, संवेध जाणवा। इहां दूजी सूं लेई छठी मिलायां णवरं पाठ में लेश्या नों फरक पाड़चो, लेश्या जुदी-जुदी ते माटै। अनै ज्ञान नों फरक नथी पाड़चो। सक्करप्रभा कही नै जाव छठी पुढवी किहवी, इम कही णवरं पाठ कहाो जिण में ज्ञान नों फरक नथी पाड़चो। तिहां दूजी सूं छठी नै विषे ३ ज्ञान, ३ अज्ञान नीं नियमा छै ते माटै ज्ञानद्वार में फरक नथी पाड़चो। ए तियँच उद्देशा नीं वारता कही ते माटै इण मनुष्य उद्देशा नैं विषे रत्नप्रभा नीं वक्तव्यता कही तिम सक्करप्रभा नीं पिण किहवी। णवरं जघन्य पृथक वर्ष अनै उत्कृष्ट कोड़ पूर्व आयु नै विषे ऊपजै। णवरं में सक्करप्रभा में विशेष जाणवूं। अनै अवगाहणा, लेश्या, ज्ञान, ठिति, अनुबंध अनै संवेध—एहनैं विषे नानापणुं जाणवूं। जिम तियँच उद्देशे कहाूं, तिम कहिवो। इम जाव छठी तांइ एहवूं कहाूं। इण वचने करी रत्नप्रभा सूं लेइ छठी तांइ तियँच उद्देशा नै विषे ए छ बोल कहा। तिम कहिवा।

तिहां तियँच उद्देशे कह्यं—रत्नप्रभा नैं विषे कह्यं तिम सक्करप्रभा नैं विषे कहिवं । णवरं पाठ में लेश्या नों फरक नथी पाड़घो तिम मनुष्य उद्देशा नैं विषे पिण रत्नप्रभा में कह्यो तिम सक्करप्रभा में कहिवं, पिण तिण में लेश्या नों फरक न करिवो । अनैं तियँच उद्देशा नैं विषे सक्करप्रभा नैं विषे वारता कहीं—एवं जाव छठी इम कही । णवरं शब्द में ज्ञान नों फरक नथी पाड़घो, तिम मनुष्य उद्देशा नैं विषे पिण सक्करप्रभा नैं विषे कह्यं । इम जाव छठी लगैं कहिवं । णवरं शब्द में ज्ञान नों फरक नथी कहिवं । एवरं शब्द में ज्ञान नों फरक नथी कहिवो ते माटै पहिली सूं जाव छठी रा नेरइया में अवगाहणा, लेश्या, ज्ञानादिक रो फरक पड़ै ते बोल एवं जाव तमा पुढवीए इण पाठ पहिलां कह्या छै। तियँच उद्देशे तो रत्नप्रभा कहीं तिम सक्कर। पछै णवरं में लेश्या नों फरक नथी पाड़घो अनैं ज्ञानद्वारे फरक

श० २४, उ० २१, ढा० ४२९ १६७

कह्यो अनै सक्कर तिम जाव छठी कही। णवरं पाठ में लेक्या नों फरक पाड़चो, ज्ञान नों फरक नथी पाड़चो। इम दोय ठिकाणे णवरं पाठ कही जूओ-जूओ फरक कह्यो। अनै इहां मनुष्य उद्देशे पहिली सूं एवं जाव तमापुढवीनेरइया—ए पाठ थी पहिलां अवगाहणा, लेक्या, ज्ञानादिक नों नानापणुं जिम तियँच उद्देशे कह्यो तिम कहिवो, इम कह्यो ते भणी रत्नप्रभा थी जाव तमा नैं विषे ए अवगाहणादिक नै विषे नानापणुं विचारी कहिवं।

## मनुष्य में तिर्यंच ऊपजै —

- ३८. \*जो तियँचयोनिक थकी जी कांइ, मनुष्य विषे उपजेह। तो स्यूं एकेंद्रिय तिरि थकी जी कांइ, जाव पं.-तियँच थी लेह जी कांइ?
- ३९. जिन कहै एकेंद्रिय थकी जी कांइ, इत्यादिक जे भेद। जिम पं.-तिरि उद्देश में जी कांइ,

दाख्यो तिम संवेद जी कांइ।।

४०. णवरं तेउ वाउ थकी जी कांइ, नीकल मनुष्य न थाय। शेष तिमज कहिवो सहु जी कांइ,

भेद पूर्ववत ताय जी कांइ।।

## मनुष्य में पृथ्वीकाय ऊपजै, तेहनों अधिकारी

- ४१. जाव पृथ्वोकायिक प्रमुजी ! कांइ, मनुष्य विषेज कहेह ।
  ए ऊपजवा योग्य छै जी कांइ,
  कितै काल स्थितिके उपजेह जी कांइ ?
- ४२. जिन भाखे जघन्य थी जी कांइ, अंतर्म्हूर्त्तं स्थितिकेह। उत्कृष्ट पूर्व कोड़ नैं जी कांइ, आयुष्के उपजेह जी कांइ।। ४३. हे प्रभुजी! ते जीवड़ो जी कांइ, इम जिम पृथ्वीकाय। ऊपजता पं. तिरि विषे जी कांइ, वक्तव्यता कहिवाय जी कांइ।।

४४. वक्तव्यता ते सहु इहां जो कांइ, पृथ्वीकायिक जेह। अपजतो जे मनुष्य में जो कांइ, किह्न् नव ही गमेह जी कांइ।। ४५. णवरं इतरो विशेष छै जी कांइ, तृतीय छठे नवमेह। ए तीनूई गम विषे जी कांइ, इम परिमाण कहेह जी कांइ।। ४६. परिमाण जघन्य थकी कह्यू जी कांइ, इक बे अथवा तीन। संख्याता उत्कृष्ट थी जी कांइ,

उपजै एम कथीन जी कांइ।।

वा०— तीजे गमे ओघिक पृथ्वीकायिक थकी उत्कृष्ट स्थिति वाला मनुष्य नै विषे जे ऊपजै, ते उत्कृष्ट थकी संख्याताइज हुवै। जदिप मनुष्य संमूच्छिम सग्रह थकी असंख्याता हुवै तो पिण उत्कृष्ट स्थिति नां धणी पूर्व कोड़ आउखा वाला संख्याताइज जाणवा। अनै तीजे गमे ओघिक पृथ्वीकायिक थकी पंचेंद्रिय तियंच नै विषे जे ऊपजै, ते असंख्याता पिण हुवै। इम छठे अनै नवमे गमे पिण संख्याता उपजै, इति।

१६८ भगवती जोड़

- ३८. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—िंक एगिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जित जाव पंचिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जित ?
- ३९. गोयमा ! एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो भेदो जहा पंचिदियतिरिक्खजोणियउद्देसए,
- ४०. नवरं─तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा । सेसं तं चेव ।
- ४१. जाव— (श० २४।२९७)
  पुढिविक्ताइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेस् उवविज्जित्तए, से णं भते ! केवितकालिंद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ४२. गोपमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु उक्कोसेणं पुब्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा । (श० २४।२९८)
- ४३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? एवं जहेव पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया
- ४४. सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा नवसु वि गमएसु,
- ४५. नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु
- ४६. परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, जक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जति।

वा॰ — तत्र तृतीये ओघिकेभ्यः पृथिवीकायिकेभ्य उत्कृष्टिस्थितिषु मनुष्येषु ये उत्पद्यन्ते ते उत्कृष्टतः सङ्ख्याता एव भवन्ति, यद्यि मनुष्याः संमूच्छिम-संग्रहादसङ्ख्याता भवन्ति तथाऽप्युत्कृष्टस्थितयः पूर्वकोट्यायुषः सङ्ख्याता एव पञ्चेन्द्रियतियंञ्च-स्त्वसङ्ख्याता अपि भवन्तीति, एवं षष्ठे नवमे चेति। (वृ॰ प॰ ८४४)

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रे पांच पुत्र कांइ

१. देखें परि. २, यंत्र १११

४७. आपणपैज पृथ्वी जदा जी कांइ, जघन्य स्थितिक जो होय। मध्यम त्रिहुं गम जघनिया जी कांइ,

तसु लेखो ए जोय जी कांइ।।

४८. प्रथम जघन्य गमे जदा जी कांइ, पुढवी नां अवलोय। अध्यवसाय हुवै भला जी कांइ,

भूंडा पिण तसु होय जो कांइ।

### सोरठा

- ४९. महि जघन्यायुवंत, जघन्यायु मनु नैं विषे। ऊपजतां तसु हुंत, अपसत्थ अध्यवसाय जे।।
- ५०. महि जघन्यायुवंत, उत्कृष्टायू मनु विषे । ऊपजतांज कहंत, अध्यवसाय भलाज तसु ।।
- ५१. तुर्य गमो छै एह, जघन्य अनें ओघिक तणों। जघन्य स्थितिक महि जेह, ओघिक मनु में ऊपजै।।
- ५२. \*द्वितीय जघनिया गमा विषे जी कांइ, पृथ्वी न पहिछाण । अध्यवसाय हुवै बुरा जी कांइ,

वर जिनवर नीं वाण जी कांइ।।

### सोरठा

- ५३. पंचम गम ए हुंत, जघन्य अने विल जघन्य ए। जघन्यायु महि जंत, जघन्य स्थितिक मनु नैं विषे।।
- ५४. प्रशस्त अध्यवसाय, तेहथी जघन्य स्थितिक विषे। अपजवं नहिं थाय, वृत्ति विषे पिण इम कह्यां।।
- ५५. 'माठा अध्यवसाय, तिण करि बांध्यो आउखो। जघन्य स्थितिक मनुथाय, ए आयू प्रकृति पाप नीं।।
- ५६. असुभज अध्यवसाय, तिणसूं पुन्य बंधै नहीं। पाप कर्म बंधाय, प्रवर न्याय ए पाधरो।।
- ५७. प्रकीर्ण मांहि पिछाण, तिर्यंच मनु नो आउखो। एकंत पुन्य नीं जाण, प्रकृति स्थापै विरुद्ध ते।।'[ज०स०]

वा॰ — इहां जघन्य स्थिति वालो पृथ्वीकाइयो जघन्य स्थितिक मनुष्य नैं विषे जे ऊपजै, तेहनां अध्यवसाय माठा कह्या। इण वचने करि जे जघन्य स्थितिक सन्नी मनुष्य नैं विषे तथा असन्नी मनुष्य नैं विषे जघन्य स्थितिक पृथ्वीकाइयो माठा अध्यवसाय सूं ए आउखो बांधै, ते भणी जघन्य स्थितिक सन्नी मनुष्य नों आउखो तथा असन्नी मनुष्य नों आउखो तथा संभवै।

४८. \*तीजा जघनिया गमा विषे जी कांइ, पृथ्वीकाय नां पेख । अध्यवसाय हुवै भला जी कांइ,

जिन वच विमल विशेख जी कांइ।।

४७. जाहे अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ भवति ताहे

४८. पढमगमए अज्भवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि

४९,५०. मध्यमगमानां प्रथमगमे औषिकेषूत्पद्यमानताया-मित्यर्थः अध्यवसानानि प्रशस्तानि उत्कृष्टस्थिति-कत्वेनोत्पत्तौ अप्रशस्तानि च जघन्यस्थितिकत्वे-नोत्पत्तौः (वृ० प० ८४४)

५२. बितियगमए अप्पसत्या,

५३,५४. 'बीयगमए' ति जघन्यस्थितिकस्य जघन्यस्थिति-षूत्पत्तावप्रशस्तानि, प्रशस्ताध्यवसानेभ्यो जघन्य-स्थितिकत्वेनानुत्पत्तेरिति, (वृ० प० ८४५)

५८. ततियगमए पसत्था भवंति ।

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रे पांच पुत्र कांड़

### सोरठा

- ५९. 'षष्ठम गमके ताहि, जघन्य स्थितिक महि ऊपजै। जेष्ठ स्थितिक मनु मांहि, अध्यवसाय भलाज तसुं।।
- ६०. प्रशस्त अध्यवसाय, तिण करि बांध्यो आउखो। जेष्ठ स्थितिक मनु थाय, ए आयू पुन्य प्रकृति छै।।
- ६१. पंचम षष्ठम पेख, ए बिहुं गम नैं न्याय किर । मनुष्यायु सुविशेख, प्रकृति पाप फुन पुन्य री ।।
- ६२. जेह मनुष्य नों जोय, जघन्य आउखो पाप छै। उत्कृष्ट आयू होय, तेह पुन्य नीं प्रकृति छै।।'[ज०स०]
- ६३. शेष संघयणादिक सहु जी कांइ, महि णं. तिरि ने मांय। अपजतां ने आखिया जी कांइ

तिमज इहां काहेवाय जी कांइ।।

वा॰ — 'पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, तीन विकलेंद्रिय, असन्नी तियँच पंचेंद्रिय, संख्यात वर्षायु सन्नी तियँच पंचेंद्रिय, संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य—ए ९ मनुष्य में ऊपजतां नैं छठे गमे प्रथम ३ लेश्या अनैं अध्यवसाय भला कह्या। ते भला अध्यवसाय में माठी लेश्या किम संभवै ? तेहनुं उत्तर—ए ३ माठी लेश्या द्रव्य लेश्या संभवै, पिण अध्यवसाय रूप भाव लेश्या न संभवै।

अनै उत्तराध्येन अध्येन ३४।३३ में लेश्या नां अध्यवसाय असंख कह्या। तिहां अध्यवसाय रूप लेश्या कही, ए भाव लेश्या छै।

तथा पन्नवणा पद १७ उद्देशे ३ सू॰ ११२ कृष्ण लेक्या में ४ ज्ञान कह्या। तिहां टीका में इम कह्यो — कृष्ण लेक्या नां अध्यवसाय नां स्थानक असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण छै। तिण मांहिलो कोई मंद अध्यवसाय में मनपर्यंव पाय जावै।

इहां पिण अध्यवसाय रूप लेश्या कही, ते भाव लेश्या छै। ते माटै पृथन्यादि ९ मनुष्य में ऊपजतां नैं छठे गमे अध्यवसाय भला कह्या, तिण में कृष्णादि ३ लेश्या अध्यवसाय रूप भाव लेश्या न संभवै, द्रन्य लेश्या संभवै।' (ज० स०)

मनुष्य में अपकाय आदि ९ ठिकाणां नां ऊपजै, तेहनों अधिकार

- ६४. इम अप मनु में ऊपजें जी कांइ, इमज वणस्सइकाय।
  एवं जाव चर्डोरिद्रिया जी कांइ, ऊपजतां मनु मांय जी कांइ।।
  ६५. असन्नी पंचेंद्रिय तिरि जी कांइ, फुन सन्नी तियंंच।
  असन्नी मनुष्य सन्नी मनु जी कांइ, ए सगलाई संच जी कांइ।।
- ६६. जिम पं.-तिरि उद्देशके जी कांइ, तिमहिज भणवो एह। अपजतां पं.-तिरि विषे जी कांइ,
- तिमहिज मनुष्य विषेह जी कांइ।। ६७. णवरं एहिज निश्चै करी जी कांइ, एह तणों परिमाण। अध्यवसाय तणों विल जी कांइ,

भेद नानापणुं जाण जी कांइ।।

६८. पृथ्वीकायिक नों कह्यो जी कांइ, मनुष्य विषे उपपात। उद्देशक एहिज विषे जी कांइ,

तिम इहां पिण अवदात जी कांइ।।

६३. सेसं तं चेव निरवसेसं १-९। (भ्र॰ २४।२९९)

वा०—इह लेश्यानां प्रत्येकासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि, तत्र कानिचित् मन्दानुभावान्यध्यवसायस्थानानि प्रमत्तसंयतस्यापि लभ्यन्ते,
अत एव कृष्णनीलकापोतलेश्या अन्यत्र प्रमत्तसंयतान्ता गीयन्ते. मनः-पर्यवज्ञानं च प्रथमतोऽप्रमत्तसंयतस्योत्पद्यते ततः प्रमत्तसंयतस्यापि लभ्यते
इति सम्भवति कृष्णलेश्याकस्यापि मनःपर्यवज्ञानम् ।
(प्रज्ञा० वृ• प० ३५७)

- ६४. जइ आउक्काइए ? एवं आउक्काइयाण वि । एवं वणस्सइकाइयाण वि । एवं जाव चउरिंदियाण वि ।
- ६५. असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपंचिदियतिरि-जोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सन्वे वि
- ६६. जहा पंचिदियतिरिक्खजोणियउद्देसए (२४।२४८-२८२) तहेव भाणियव्वा,
- ६७. नवरं एयाणि चेव परिमाण-अज्भवसाणनाणत्ताणि जाणिज्जा
- ६८. पुढिविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि।

१. देखें परि. २, यंत्र ११२-१२०

१७० भगवती जोड़

वा॰ —असन्नी तियँच पंचेंद्रिय, सन्नी तियँच पंचेंद्रिय, असन्नी मनुष्य, सन्नी मनुष्य —ए च्यार ठिकाणां रो सन्नी मनुष्य नैं विषे ऊपजै, तेहनां भव अनैं नाणत्ता री विधि उद्देशक वीसमा नीं परै जाणवी। जिम वीसमें उद्देसे कहां तियँच पंचेंद्रिय नैं विषे असन्नी-सन्नी तियँच पंचेंद्रिय, असन्नी-सन्नी मनुष्य ऊपजतां नैं भव अनैं नाणत्ता कह्या, तिम असन्नी-सन्नी तियँच पंचेंद्रिय, असन्नी-सन्नी मनुष्य मनुष्य में ऊपजता नै भव अनै नाणत्ता। पिण णवरं एतलो विशेष —ए च्याकं मनुष्य नैं विषे ऊपजतां नैं परिमाण, अध्यवसाय नों नानापणुं जे पृथ्वीकाय मनुष्य विषे ऊपजता नैं परिमाण अध्यवसाय कह्या, तिम कहिवा।

६९. शेष संघयणादिक सहु जी कांद्र, जिम पं.-तियँच मांय। ए चिउं ऊपजतां कह्या जी कांद्र,

तिमज इहां कहिवाय जी कांइ।।

हिंवै देव थकी मनुष्य नै विषे ऊपजै-

७०. देव थकी जो ऊपजै जी कांइ, तो स्यू भवनपित थी होय? व्यंतर ने जोतिषी थकी जी कांइ,

वैमानिक थी जोय जी कांइ?

७१. जिन कहै भवनपति थकी पिण, मनुष्य विषे उपजेह। जाव वैमानिक सुर चवी जी कांइ,

मनुष्य तणों भव लेह जी कांइ।। मनुष्य में असुरकुमार ऊपजै, तेहनों अधिकार

७२. जो भवनपति सुरवर थकी जी कांइ, मनुष्य विषे उपजेह। तो स्यूं असुरकुमार थी जी कांइ,

जाव थणित थी लेह जी कांइ?

७३. जिन कहै असुरकुमार थी जी कांइ, यावत थणियकुमार। ते पिण सुरवर नीकली जी कांइ,

उपजै मनुष्य मभार जी कांइ।।

७४. असुरकुमारज हे प्रभुजी ! कांइ, मनुष्य विषेज कहेह। जे ऊपजवा जोग्य छै जी किते

काल स्थितिके उपजेह जी कांइ?

७५. श्री जिन भाखै जघन्य थी जी कांइ, मास पृथक स्थितिकेह। उत्कृष्ट कोड़ पूर्व तणैं जी कांइ,

आयु विषे उपजेह जी कांइ।।

७६. एवं जिकाहिज वारता जी कांड, तिरि पंचेंद्री उद्देश। तिरि पंचेंद्रिय नैं विषे जी कांड,

असुर ऊपजे शेष जी कांइ।।
७७. तेहिज वक्तव्यता इहां जी कांइ, भणवी ए अवधार।
मनुष्य विषे जे ऊपजै जी कांइ, सुरवर असुरकुमार जी कांइ।।
७८. णवरं इतरो विशेष छै जी कांइ,

जिम तिहां जघन्य आख्यात । अंतर्मुहर्त्त तिरि स्थितिक में जी कांइ,

असुर तणों उपपात जी कांइ।।

६९. सेसं तहेव निरवसेसं १-९। (श० २४।३००)

- ७०. जइ देवेहितो उववज्जंति—िक भवणवासिदेवेहितो उववज्जंति ? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो उववज्जंति ?
- ७१. गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि जाव वेमाणिय-देवेहितो वि जववज्जंति । (श॰ २४।३०१)
- ७२. जइ भवणवासिदेवेहितो कि असुरकुमार जाव थणियकुमार ?
- ७३. गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमार । (श० २४।३०२)
- ७४. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उव-विज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालद्वितीएसु उव-वज्जेज्जा ?
- ७५. गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुत्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ।
- ७६. एवं जच्चेव पंचिदियतिरिक्खजोणियउद्देसए
- ७७. वत्तव्वया सच्चेव एत्थ वि भाणियव्वा,
- ७८. नवरं--जहा तिंह जहण्णगं अंतोमुहुत्तिट्टितीएसु

श० २४, उ० २१, ढा• ४२९ १७१

१. देखें परि. २, यंत्र १२१

७९. तेम इहां पिण जाणवो जी कांइ, जघन्य थकी कहिवाय। मास पृथक मनु स्थितिक में जी कांइ, असुर ऊपजे आय जी कांइ।। द०. द्वार परिमाण विषे विल जी कांइ, जघन्य एक बे तीन। उपजे फुन उत्कृष्ट थी जी कांइ,

संख्याताज सुचीन जी कांइ ।। ८१. शेष तिमज कहिवो सहू जी कांइ, जाव तिरि-पं. मांय । ऊपजतां तिम मनु विषे जी कांइ, असुर उपजतां पाय जी कांइ ।।

मनुष्य में नवनिकाय यावत दूसरे देवलोक तक नां देव ऊपजै, तेहनों अधिकार'

द्र एवं यावत जाणवो जी कांइ, नागकुमार थी लेह। देव ईशान थकी चवी जी कांइ, ऊपजवूंज कहेह जी कांइ।। द्र जिम तिहां जघन्य स्थितिक तणों जी कांइ,

अथवा विल परिमाण।
भेद नानापणुं भाखियो जी कांइ, तेम इहां पिण जाण जी कांइ।।
८४. सनतकुमार थी आदि दे जी कांइ, यावत सुर सहसार।
तिरि पंचेंद्री उद्देशके जी कांइ, जिम भाख्यो तिम धार जी कांइ।।
८५. णवरं इतरो विशेष छै जी कांइ, इम परिमाण जघन्य।
एक दोय त्रिण ऊपजै जी कांइ, उत्कृष्ट संख्या जन्य जी कांइ।।
८६. फुन उपपातज जघन्य थी जी कांइ, पृथक वास स्थितिकेह।
उत्कृष्ट कोड़ पूर्व तणें जी कांइ,

आयु विषे उपजेह जी कांइ।।

द७. शेष संघयणादिक सहु जी काँइ, तिरि पंचेंद्री उद्देस। उपजै पं-तिरि ने विषे जी कांइ,

इमज मनु में कहेस जी कांइ।

दद. संवेध मास पृथक नों जी कांइ, पूर्व कोड़ विषेह। करिवो असुरादिक विषे जी कांइ,

देव ईशाण लगेह जो कांइ।

द९. संवेध वर्ष पृथक ने जी कांइ, पूर्व कोड़ विषेह। सनतकुमारादिक विषे जी कांइ, उपजै ते मनु लेह जी कांइ।। ९०. सनतकुमार नी स्थित वली जी कांइ, उत्कृष्ट सागर सात। चतुर्गुणी कीधां तसु जी कांइ, अठवीस सागर आत जी कांइ।।

#### सोरठा

- ९१. जदा ओघिक थी जेह, फुन उत्कृष्टज स्थितिक थी। जे सुरवर उपजेह, ओघिक आदिज मनु विषे॥
- ९२. उत्कृष्टी स्थिति इष्ट, तिण काले ह्वं सुर तणीं। तिका स्थिती उत्कृष्ट, संवेध वांछा ने विषे।।
- ९३ मनुभव च्यार करेह, अनुक्रम अंतरिता करी। तेह थकी इम लेह, सनतकुमारादिक तणीं।।

- ७९. तहा इहं मासपुहत्तद्वितीएसु ।
- परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति।
- ८१. सेसं तं चेव १-९।
- एवं जाव ईसाणदेवो ति ।
- < ३. एयाणि चेव नाणत्ताणि ।
- पणंकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति जहेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणिउद्देसए,
- परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेजजा उववज्जंति ।
- ५६. उववाओ जहण्णेणं वासपुहत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणंपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ।
- ५७. सेसं तं चेव।
- **५९**. संवेहं वासपुहत्तं पुव्वकोडीसु करेज्जा ।
- ९०. सणंकुमारे ठिती चउगुणिया अट्ठावीससागरोवमा भवति
- ९१. यदा औषिकेभ्य उत्कृष्टस्थितिकेभ्यश्च देवेभ्य औषि-कादिमनुष्येषूत्पद्यते (वृ० प० ८४५)
- ९२. तदोस्कष्टा स्थितिर्भवति सा चोत्कृष्टसंवेधविवक्षायां (वृ० प० ८४५)
- ९३. चतुर्भिमंनुष्यभवैः ऋमेणान्तरिता ऋयते,
  (वृ० प० ८४५)

१. देखें परि. २, यत्र १२२-१२६

१७२ भगवती जोड़

# मनुष्य में तीसरे स्पूं आठवें देवलोक तक नां देव ऊपजें, तेहनों अधिकार

- ९४. सनतकुमार विषेह, सात सागर उत्कृष्ट स्थिति । कियां चउगुणी लेह, अष्टवीस सागर हुवै ।।
- ९५. \*माहेंद्र सात जाभी कही जी कांइ, चतुर्गुणी किया ताय। अष्टवीस सागर तिका जी कांइ,

जाभेरी कहिवाय जी कांइ।

९६. ब्रह्म जेष्ठ दश उदिध नीं जी कांइ, चतुर्गुणी कियां ताय। चालीस सागर नीं हुवैं जी कांइ,

स्थिति उत्कृष्ट कहाय जी कांइ।।

- ९७. लंतक चवद उदिध तणीं जी कांइ, उत्कृष्टी स्थिति एह । चतुर्गुणी कीधां हुवै जी कांइ, सागर छप्पन जेह जी कांइ ।। ९८. महाशुक सतरोदिध जी कांइ, उत्कृष्ट भव स्थिति थाय । चतुर्गुणी कीधां तिका जी कांइ, अड़सठ सागर आय जी कांइ ।। ९९. अष्टम कल्प अठार नीं जी कांइ, उत्कृष्टी स्थिति होय । चतुर्गुणी कीधां तिका जी कांइ,
  - उदधि बहोत्तर जोय जी कांइ।।

१००. ए उत्कृष्टो स्थिति कही जी कांइ,जघन्य स्थिति पिण तास । चतुर्गुणी करवी वली जी कांइ,

वर जिन वचन विमास जी कांइ।

## सोरठा

- १०१. जदा जघन्य स्थिति जाण, चवी तृतीय कल्पादि थी। उपजै तेह पिछाण, ओघिक आदिक मनु विषे।।
- १०२. जघन्य स्थिति अवलोय, हुवै तदा ते सुर तणीं। तिका स्थितो फुन जोय, तिमहिज करवी चउगुणी।।
- १०३ सतनकुमारज आदि, जघन्य दोय सागर प्रमुख । कियां चउगुणी लाधि, अष्ट आदि सागर हुवै ।।

वा॰ — जघन्य नैं ओघिक, जघन्य नैं जघन्य, जघन्य नैं उत्कृष्ट — ए बिचले तीन गमे जघन्य स्थिति वाला सनतकुभारादिक ओघिकादिक मनुष्य में ऊपजै। तेहनां जघन्य बे भव, उत्कृष्ट प्रभव करैं तिहां सनतकुमारादिक जघन्य स्थिति नां ४ भव। तिहां जघन्य स्थिति नैं च उगुणी करणी। प्रथम तीन गमे अनैं छेहले तीन गमे प्रभव में सनत्कुमारादिक सुर नीं उत्कृष्ट स्थिति नैं च उगुणी करवी।

### मनुष्य में नौवें देवलोक नां देव ऊपजै, तेहनों अधिकार<sup>3</sup>

१०४. आणत सुरवर हे प्रभु ! कांइ, मनुष्य विषेज कहेह। सुर ऊपजवा जोग्य छै जी कांइ,

कितै काल स्थितिक उपजेह जी कांइ?

- \*लय: म्हारी सासूजी रे पांच पुत्र कांइ
- १. देखें परि. २, यंत्र १२७-१३२
- २. देखें परि. २, यंत्र १३३

- ९४. ततक्व सनत्कुमारदेवानामण्टाविक्यत्यादिसागरोपम-माना भवति सप्तादिसागरोपमप्रमाणत्वात्तस्य इति; (वृ० प० ८४४)
- ९५. माहिंदे ताणि चेव सातिरेगाणि,
- ९६. बम्हलोए चत्तालीसं
- ९७. लंतए छप्पन्नं,
- ९८. महासुक्के अटुसिंटु,
- ९९. सहस्सारे बावत्तरि सागरोवमाइं।
- १००. एसा उक्कोसा ठिती भणिया। जहण्णहिति पि चउगुणेज्जा। (श० २४।३०३)
- १०१. यदा पुनर्जंघन्यस्थितिकदेवेभ्य औधिकादिमनु-व्येषूत्पद्यते (वृ० प० ५४४)
- १०२. तदा जघन्यस्थितिर्भवति, सा च तथैव चतुर्गुणिता (वृ० प० ५४५)
- १०३. सनत्कुमारादिसागरोपममाना भवति द्वघादिसागरो-पममानत्वात्तस्या इति । (वृ०प• ५४४)

१०४. आणयदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उवविज्जित्तए, से णं भंते ! केवितकालिंद्वतीएसु उववज्जेजा ?

श॰ २४, उ० २१, ढा० ४२९ १७३

- १०५. श्रीजिन भाखे जघन्य थी जी कांइ, वर्ष पृथक स्थितिकेह। उत्कृष्ट कोइ पूर्व तणें जी कांइ,
  - आयु विषे उपजेह जी कांइ।।
- १०६. हे भगवंतजी ! ते सुरा जी कांइ, आणत थीज चवेह। एक समय किता ऊपजे जी कांइ! इत्यादिक पूछेह जी कांइ।।
- १०७. इम जिम आखी वारता जी कांइ, सुर सहसार तणेह। तिम कहिवी णवरं इतो जी कांइ,

विशेष भणवो एह जी कांइ।।

१०८. अवगाहन स्थिति देव नीं जी कांइ, फुन अनुबंध में फेर। उपयोगे करि जाणवूं जी कांइ,

शेष अष्टम जिम हेर जी कांइ।।

### सोरठा

- १०९. आणत आदिक च्यार, देव तणीं अवगाहना । उत्कृष्टी अवधार, तीन हस्त भवधारणी ।।
- ११०. आणत स्थिती जघन्य, अष्टादश सागर तणीं। उत्कृष्टी तसु जन्य, सागर एगुणवीस नीं।।
- १११. पाणत कल्पे जोय, जघन्य एगुणवीस दिध। जत्कृष्टी स्थिति होय, सागर वीस तणीं तिहां।। मनुष्य में दसवें स्यूं बारहवें देवलोक नां देव ऊपजे, तेहनीं अधिकार'
- ११२. आरण जघन्य जेह, स्थिती वीस सागर तणीं। उत्कृष्टी इम लेह, एक वीस जे उदिध नीं।।
- ११३. अच्युत सुर स्थिति जाण, एकवीस सागर जघन्य। उत्कृष्टी पहिछाण, सागर जे बावीस नीं।।
- ११४ आऊ जितो अनुबंध, शेष संघयणादिक जिके। सहसार जिम संध, कायसंवेध हिवै कहूं।।
- ११४. \*भवादेश करि जघन्य थी जी कांइ, बे भव ग्रहण करेह। जत्कृष्टज षट भव करी जी कांइ,

त्रिण सुर त्रिण मनु लेह जी कांइ।।

- ११६. कालादेश करि जघन्य थी जी कांइ, कहियै उदिध अठार।
  वर्ष पृथक अधिका वली जी कांइ, बे भव अद्धा धार जी कांइ।।
- ११७. उत्कृष्टो अद्धा तसु जी कांइ, षट भव नू इम जोड़। उदिध सतावन आखिया जी कांइ,

फुन त्रिण पूर्व कोड़ जी कांइ।।

- १०५. गोयमा ! जहण्णेण वासपुहत्तद्वितीएसु, उनकोसेणं पुब्वकोडीटितीएसु उववब्जेब्जा । (श० २४।३०४)
- १०६. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
- १०७. एवं जहेव सहस्सारदेवाणं वत्तव्वया, नवरं-
- १०८ ुंओगाहणा-ठिति-अणुबंधे य जाणेज्जा । सेसं तं चेव ।

११५. भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, रिजकोसेणं छ भवग्गहणाइं। 'जक्कोसेणं छब्भवग्गहणाइं' ति त्रीणि दैविकानि त्रीण्येव ऋमेण मनुष्यसत्कानीत्येवं षट्,

(बु० प० ५४४)

- ११६. कालादेसेणं जहण्णेणं किट्ठारस सागरोवमाई वास-पुहत्तम•महियाइं,
- ११७. उक्कोसेणं सत्तावन्नं ृँसागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं,

१७४ भगवती जोड

१. देखे परि. २, यंत्र १३४-१३६

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र कांइ

### सोरठा

- ११८. उत्कृष्ट एगुणवीस, सागर तीन गुणां किया। सप्त पचास जगीस, उदधि हुवै आणत विषे।।
- ११९. \*सेव कालज एतलो जी कांइ, ए गति-आगति काल। ओघिक नें ओघिक गमो जी कांइ,

दाख्यो प्रथम दयाल जी कांइ।।

१२०. एम नवूं ही गमा प्रतै जी कांइ, कहिवा विचारी जेह। णवरं स्थिति अनुबंध नैं जी कांइ,

फुन संवेध जाणेह जी कांइ।।

१२१. इम यावत अच्युत लगै जी कांइ, णवरं स्थिति अनुबंध । संवेध प्रति फुन जाणवूं जी कांइ,

उपयोगे करि संध जी कांइ।।

१२२. पाणत सुर स्थिति जेष्ठ थी जी कांइ, आखी सागर बीस। ते त्रिगुणी कीधां हुवै जी कांइ,

सागर साठ जगीस जी कांइ।।

१२३. आरण स्थिति उत्कृष्ट थी जी कांइ, एक बीस दिध सोय। ते त्रिगुणां कीधां थकां जी कांइ, सागर तेसठ होय जी कांइ।।

१२४. अच्युत स्थिति उत्कृष्ट थी जी कांइ, उदिध बावीस उदार । ते त्रिगुणां कीधां हुवै जी कांइ, सागर छासठ सार जी कांइ।

बा० — आणत सुर नीं स्थित अनैं अनुबंध जघन्य दूजे, तीजे गमे १ द सागर, उत्कृष्ट १९ सागर। चउथे, पांचमे, षष्ठम गमे जघन्य-उत्कृष्ट १८ सागर। सातमे, आठमे, नवमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट १९ सागर। पाणत सुर नीं स्थिति अनैं अनुबंध प्रथम ३ गमे जघन्य १९ सागर, उत्कृष्ट २० सागर। बिचले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट १९ सागर। छेहले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २० सागर। आरण सुर नीं स्थिति प्रथम ३ गमे जघन्य २० सागर, उत्कृष्ट २१ सागर। बिचले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २० सागर। बिचले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २१ सागर। अन्युत सुर नीं स्थिति प्रथम तीन गमे जघन्य २१ सागर, उत्कृष्ट २१ सागर। बिचले ३ गमे जघन्य-उत्कृष्ट २१ सागर। छेहले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २२ सागर। बिचले ३ गमे जघन्य-उत्कृष्ट २१ सागर। छेहले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २२ सागर। भव सर्वत्र जघन्य २, उत्कृष्ट ६। कायसंवेध सर्व नुं विचारी किहिवो।

# मनुष्य में कल्पातीत देव ऊपजे —

- १२५. कल्पातीतज सुर थकी जी कांइ, मनुष्य विषे उपजेह। तो स्यूं ग्रैवेयक थकी जी कांइ,
  - अनुत्तर विमान थी लेह जी कांइ?
- १२६. जिन कहै ग्रैवेयक थकी जी कांइ, अनुत्तर विमान थी जेह। ए बिहुं कल्पातीत सूं जी कांइ,

मनुष्य विषे उपजेह जी कांइ।।

- ११८. आनते उत्क्रष्टस्थितेरेकोनविंशतिसागरोपमप्रमा-णाया भवत्रयगुणनेन सप्तपञ्चाशत्सागरोपमाणि भवन्तीति। (वृ० प० ८४४)
- ११९. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ।
- १२०. एवं नव वि गमा, नवरं—िठिति अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा।
- १२१. एवं जाव अच्चुयदेवो, नवरं—ि ठिति अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा।
- १२२. पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सिंह सागरोवमाइं,
- १२३. आरणगस्स तेविंदु सागरोवमाइं,
- १२४. अच्चुयदेवस्स छार्वाद्घं सागरोवमाइं। (श० २४।३०५)

- १२५. जइ कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति—िंक गेवेज्जाकप्पातीता ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता ?
- १२६. गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातिय-कप्पातीता । (श॰ २४।३०६)

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रैपाच पुत्र कांइ

१२७. ग्रैवेयक थी जो ऊपजै जी कांइ, तो स्यूं हेठिम-हेठिम । ग्रैवेयक कल्पातीत थी जी कांइ,

जाव उवरिम-उवरिम जी कांइ?

१२८. जिन कहै हेठिम-हेठिम थकी जी कांइ,

जाव उवरिम-उवरिम।

ए नवमा ग्रैवेयक थी जी कांइ,

मनुष्य विषे अवगम जी कांइ।।

# मनुष्य में ग्रंबेयक देव ऊपजे, तेहनों अधिकार'

१२९. सुर ग्रैवेयक थी प्रभुजी ! कांइ, मनुष्य विषेज कहेह। जे ऊपजवा योग्य छै जी कांइ,

कितै काल स्थितिक उपजेह जी कांइ?

- १३०. श्री जिन भाखे जघन्य थी जी कांइ, वर्ष पृथक स्थितिकेह। उत्कृष्ट कोड़ पूर्व तणें जी कांइ, आयु विषे उपजेह जी कांइ।।
- १३१. शेष संघयणादिक सहू जी कांइ, वक्तव्यता संपेख। दाखी आणत देव नीं जी कांइ,

कहिवो तिमज अशेख जी कांइ।।

१३२. णवरं तसु अवगाहना जी कांइ, इक भवधारणी माग। जघन्य थकी आंगुल तणों जी कांइ,

असंख्यातमो भाग जी कांइ।।

**१३३.** उत्कृष्टी बे कर तणीं जी कांइ, फुन तेहनोंज संठाण। समचउरंस आकार छै जी कांइ,

तिण करि संस्थित जाण जी कांइ।

१३४. समुद्घात पंच विल कह्या जी कांइ, प्रथम वेदना जोय। यावत तेजस पंचमी जी कांइ,

फुन जिन भाखे सोय जी कांइ।। १३५. पिण निष्चे करिने तिके जी कांइ, वैक्रिय तेजस ताहि।

समुद्घात कीधा नथी जी कांइ, न करें करस्यै नांहि जी कांइ ।।

### सोरठा

१३६. वैकिय तेजस दोय, प्रयोजन तणां अभाव थी। न कियान करें कोय, आगामिक करिस्यं नथी।।

वा० 'इहां नव ग्रैवेयक में समुद्घात ५ कही। तिण मांहिली वैकिय, तेजस ए २ समुद्घात कीधी नहीं, करैं नहीं, करिस्यैं नहीं। अनैं जीवाभिगम में नव ग्रैवेयक अनुत्तर विमान में प्रथम ३ समुद्घात कही। इहां भगवती में ५ कही। ते वैकिय, तेजस शक्ति रूप जाणवी। अनैं जीवाभिगम में ३ कही ते करिवा रूप। जिम नंदी सूत्रे (सू० २२) कह्यो अवधिज्ञान थी उत्कृष्ट देखैं तो लोक में सर्व रूपी द्रव्य जाणैं-देखैं अनैं लोक जेता असंख खंडवा अलोक में

- १. देखें परि. २, यत्र १३७
- २. जैन विश्वभारती द्वारा प्रकाशित 'उवंगसुत्ताणि' भाग १ के अन्तर्गत जीवा-जीवाभिगमप. ३।१११३ में नवग्रैवयेक देवों में समुद्घात का पाठ भगवती सूत्र की तरह ही है। संभव है, जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में समुद्घात तीन हों।
- १७६ भगवती जोड़

- १२७. जइ गवेज्जा कि हेट्टिम-हेट्टिम-गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ?
- १२८. गोयमा ! हेट्टिम-हेट्टिम-गेवेज्जा जाव उवरिम-उव-रिम गेवेज्जा। (श० २४।३०७)
- १२९. गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उव-विजत्तए, से णं भंते ! केवितकालिंद्वतीएसु उव-वज्जेज्जा ?
- १३०. गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुत्र्वकोडीद्वितीएसु ।
- १३१. अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया,
- १३२. नवरं—ओगाहणा—एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
- १३३. उक्कोसेणं दो रयणीओ । संठाणं एगे भवधार-णिज्जे सरीरे । से समचउरंससंठिए पण्णत्ते ।
- १३४. पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए,
- १३५. नो चेव णं वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहि समोहणिसु वा, समोहणित वा, समोहणिस्संति वा।

वा॰—'नो चेव णं वेउव्विए' त्यादि, ग्रैवेयकदेवाना-माद्याः पञ्च समुद्घाताः लब्ध्यपेक्षया संभवन्ति, केवलं वैक्रियतैजसाभ्यां न ते समुद्घातं कृतवन्तः कुर्वन्ति करिष्यन्ति वा, प्रयोजनाभावादित्यर्थः,

(बृ० प० ५४५, ५४६)

- देखै, इम कह्यों ते देखवा री शक्ति छै। तिम नव ग्रैवेयक अनुत्तर विमान में वैक्रिय, तेजू कही ते तो शक्ति रूप अनै जीवाभिगम में ३ कही, ते करिवा रूप।' (ज॰ स०)
- १३७. स्थिति अनुबंध जघन्य थी जी कांइ, बावीस दिध घुर पाय । उत्कृष्ट इकतीस उदिध नीं जी कांइ,

नवम ग्रैवेयक मांय जी कांइ।।

१३८. शेष संघयणादिक सहू जी कांइ, देव तणों अवदात। जिम आणत सुर नीं वारता जी कांइ,

तिमज एह विख्यात जी कांइ।।

वा॰—'नव ग्रैवेयक नां देव मनुष्य में ऊपजतां लिख आणत देव नैं भलाई। सो आणत देव में दृष्टि ३ कही। इण भलावण लेखें तो नव ग्रैवेयक में ३ दृष्टि हुवै। अनै जीवाभिगमें नव ग्रैवेयक में २ दृष्टि कही ते किम ? इति प्रश्न। उत्तर—जीवाभिगम में २ दृष्टि कही। बहुलएणैं २ दृष्टिईज हुवै। अनै किणही वेला किणहि देव में मिश्र दृष्टि हुवै, तिहां अल्प काल माटै मिश्र दृष्टि न लेखवी हुवै ते पिण केवली जाणैं। अनैं जो नव ग्रैवेयक में मिश्रदृष्टि नहींज ह्वै तो इहां ओधिक गमे आणत नैं भलायो ते बहुल पक्षपणै भलावण हुवै। पिण जे दृष्टि लाभै ते लीजै।' (ज०स०)

१३९. काल आश्रयी जघन्य थी जी कांइ, बे भव अद्धा ताय। बावीस सागर नीं कही जी कांइ, पृथक वर्ष अधिकाय जी कांइ।।

### सोरठा

- १४०. धुर ग्रैवेयक मांय, जघन्य बावीस उदिध स्थिति । ते चव नर भव पाय, पृथक वर्ष मनु जघन्य स्थिति ।।
- १४१. \*उत्कृष्ट अद्धा षट भवे जी कांइ, त्र्यांणु सागर ताम। कोड़ पूर्व त्रिण अधिक ही जी कांइ,

त्रिण सुर त्रिण नर पाम ।।

### सोरठा

- १४२. नवम ग्रैवेयक तीन, उत्कृष्ट स्थिति इकतीस दिध। त्राणू सुर भव तीन, त्रिण भव पूर्व कोड़ त्रिण।।
- १४३ \*सेवे कालज एतलो जी कांइ, ए गति-आगति काल। ओघिक नैं ओघिक गमो जी कांइ,

दाख्यो प्रथम दयाल जी कांइ।।

१४४. शेष गमा अठ नें विषे जी कांइ, इमहिज कहिवो तेह। णवरं स्थिति तथा वली जी कांइ,

संवेध प्रति जाणेह जी कांइ।।

१३७. ठिती अणुबंधो जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं।

१३८. सेसं तं चेव।

- १३९. कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वास-पुहत्तमब्भिहियाइं,
- १४०. प्रथमग्रैवेयके जघन्येन द्वाविशतिस्तेषां भवति (वृ० प० ८४६)
- १४१,१४२. उक्कोसेणं तेणउति सागरोवमाइं तिहि पुव्व-कोडीहि अब्भहियाइं इहोत्कर्षतः षड् भवग्रहणानि ततश्च त्रिषु देवभव-ग्रहणेषूत्कृष्टस्थितिषु तिसृभिः सागरोपमाणामेकत्रिश-द्भिस्त्रिनवतिस्तेषां स्यात् त्रिभिश्चोत्कृष्टमनुष्यजन्म-भिस्तिस्रः पूर्वकोटघो भवन्तीति । (वृ० प० =४६)
- १४३. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ।
- १४४. एवं सेसेसु वि अट्टगमएसु, नवरं -- ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९: (श० २४।३०८)

\*लय: म्हारी सासूजी रे पांच पुत्र कांइ

१. जैन विश्वभारती द्वारा प्रकाशित 'उवंगसुत्ताणि' भाग १ के अन्तर्गत जीवाजीवाभीगम पं. ३।११०५ में नव ग्रैवेयक देवों में दृष्टि तीन कही है। प्रस्तुत प्रकरण में दृष्टि दो बताई है। संभव है, जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में दो दृष्टि हो।

श० २४, उ० २१, ढा० ४२९ १७७

वा॰ — ग्रैवेयक सुर नीं स्थिति दूजे, तीजे गमे जघन्य २२ सागर, उत्कृष्ट ३१ सागर। बिचले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट २२ सागर। छेहले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट ३१ सागर। भव सर्वत्र जघन्य २, उत्कृष्ट ६। कायसंवेध सर्व नुं विचारी कहियो।

हिवै अनुत्तर विमान थकी मनुष्य नै विषे अपजै, तेहनों विस्तार कहै छै-

१४५, अनुत्तरोपपातिक सुरा जी कांइ, चवी मनुष्य में आय। तो स्यूं विजय वेजयंत थी जी कांइ,

जाव सव्वद्वसिद्ध थी थाय जी कांइ?

१४६. जिन कहै विजय तणां सुरा जी कांइ, चवी मनुष्य में आय। जाव सर्वार्थसिद्ध तणां जी कांइ,

अमर मनुज भव पाय जी कांइ।।

१४७. हे प्रभु! विजय अनै वली जो कांइ, वैजयंत सुविचार। जयंत तणां सुर शोभता जी कांइ,

अपराजित थो सार जी कांइ।।

१४८. ए च्यारूं नां देवता जी कांइ, मनुष्य विषेज कहेह। जे ऊपजवा योग्य छै जी कांइ,

कितै काल स्थितिके उपजेह जी कांइ?

१४९. जिम ग्रैवेयक सुर तणीं जी कांइ, वक्तव्यता संपेख। आखी तिम कहिवी इहां जी कांइ,

णवरं इतरो विशेख जी कांइ।।

- १५०. जघन्य थकी अवगाहना जो कांइ, आंगुल नों सुविशेख। असंख्यातमो भाग छै जी कांइ, उत्कृष्टी कर एक जी कांइ।।
- १५१. सम्यकदृष्टी ते हुवै जी कांइ, मिथ्यादृष्टी नांहि समामिथ्यादृष्टी नहिं जी कांइ,

च्यार अनुत्तर मांहि जो कांइ।।

१५२. ज्ञानी ते सुरवर हुवै जी कांइ, अज्ञानी नहिं होय नियमा तीनज ज्ञान नीं जी कांइ,

मित श्रुत अवधि सुजोय जी कांइ।।

१५३. स्थिति जघन्य थी जेहनीं जी कांइ, सागर जे इकतीस।
फुन सागर तेतीस नीं जी कांइ,

उत्कृष्टी सुजगीस जी कांइ।।

- १५४. शेष परिमाणादिक सहू जी कांइ, ग्रैवेयक जिम सार। भवादेश घुर बे भवे जी कांइ, उत्कृष्टा भव च्यार जी कांइ।
- १५५. कालादेश करि जघन्य थी जी कांइ, अमर उदिध इकतीस । वर्ष पृथक अधिका वली जा कांइ,

नर भव स्थिती जगीस जी कांइ।।

१५६. उत्कृष्ट छासठ दिध कह्या जी कांइ, पूर्व कोड़ज दोय। जेष्ठ स्थितिक सुर बे भवे जी कांइ,

फुन बे नर भव होय जा कांइ।।

१५७. सेवै कालज एतलो जी कांइ, ए गति-आगति काल। ओघिक नैं ओघिक गमो जी कांइ,

दाख्यो प्रथम दयाल जी कांइ।।

१७८ भगवती जोड

- १४५. जइ अणृत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति—कि विजयअणुत्तरोववाइय ? वेजयंत-अणुतरोववाइय जाव सव्बट्टसिद्ध ?
- १४६. गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध-अणुत्तरोववाइय । (श० २४।३०९)
- १४७. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं भंते !
- १४८. जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- १४९. एवं जहेव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं-
- १५०. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जद्दभागं, उक्को-सेणं एगा रयणी ।
- १५१. सम्मिदद्वी, नो मिच्छिदद्वी, नो सम्मामिच्छिदद्वी।
- १५२. नाणी, नो अण्णाणी, नियमं तिण्णाणी, तं जहा— आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी।
- १५३. ठिती जहण्णेणं एककतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं।
- १५४. सेसं तं चेव । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं ।
- १५५. कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वास-पुहत्तमब्भहियाइं,
- १५६. उक्कोसेणं छार्वाट्ट सागरोवमाइं दोहि पुन्वकोडीहि अब्भहियाइं,
- १५७. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा।

१५८. एम शेष पिण अठ गमा जी कांइ, णवर विशेष एह। स्थिति अने अनुबंध नें जी कांइ,

संवेध प्रति जाणेह जी कांइ।।

वा० — च्यार अनुत्तर विमान नां देवता नीं स्थित अनै अनुबंध दूजे, तीजे गमे जघन्य ३१ सागर, उत्कृष्ट ३२ सागर। बिचले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट ३१ सागर। छेहले तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट ३३ सागर। भव सर्वत्र जघन्य २, उत्कृष्ट ४। तेहनुं कायसंवेध विचारी नैं कहिवो।

## मनुष्य में अनुत्तर विमानवासी देव ऊपजे, तेहनों अधिकार

- १५९. शेष परिमाणादिक सहू जी काइ, जिम ग्रैवेयक ख्यात। च्यार अनुत्तर सुर तणों जी काइ,
  - कहिवूं तिम अवदात जी कांइ।।
- १६०. सर्वार्थसिद्धिक देवता जी प्र'मु! मनुष्य विषेज कहेह। जे ऊपजवा योग्य छै जी कांइ,
  - कित काल स्थितिके उपजेह जी कांइ?
- १६१. विजयादिक नीं सर्व ही जी कांद्र, वक्तव्यता संपेख। आखी तिम कहिवी इहां जी कांद्र,
  - णवरं इतरो विशेख जी कां**इ** ।।
- १६२. स्थिति अजघन्य अने वली जी कांइ, अनुत्कृष्ट तसु संध । तेतीस सागर नी कही जी कांइ,
  - इतरोहिज अनुबंध जी कांइ।।
- १६३. शेष तिमज कहिवो सहू जी कांइ, भवादेश करि सोय। बे भव ग्रहण करै तिके जी कांइ,
  - इक सुर इक नर होय जी कांइ।।
- १६४. कालादेश करि जघन्य थी जी कांइ, सुर सागर तेतीस ।। वर्ष पृथक अधिका वली जी कांइ,
  - मनु घुर स्थिती जगीस जी कांइ।।
- १६४. उत्कृष्ट अद्धा आखियो जी कांइ, सुर सागर तेतीस। कोड़ पूर्व अधिका वली जी कांइ,
  - मनु स्थिति जेष्ठ जगीस जी कांइ।।
- १६६. सेवै कालज एतलो जी कांड, ए गति-आगति काल। धुर त्रिण गम माहे गमो जी कांड,
  - दाख्यो प्रथम दयाल जी कांइ।।
- १६७. तेहिज जघन्य काल नीं जी कांइ, स्थितिक विषे उत्पन्न । एहिज वक्तव्यता तसुं जी कांइ, णवरं विशेष जन्न जी कांइ।।
- १६८. कालादेश करि आखियो जी कांइ, जघन्य अने उत्कृष्ट । तेतीस सागर सुर भवे जी कांइ,
  - पृथ ह वर्ष नर इष्ट जी कांइ।।
- १६९. तेहिज उत्कृष्ट काल नीं जी कांइ, स्थितिक विषे उत्पन्न।
- एहिज वक्तव्यता तसुं जी कांड, णवरं विशेष जन्न जी कांड् ।।
- १७०. कालादेश करि आखियो जी कांइ, जघन्य अनें उत्कृष्ट । तेतीस सागर सुरवरू जी कांइ, कोड़ पूर्व नर इष्ट जी कांइ।।
- १. देखें परि. २, यंत्र १३८,१३९

१५८. एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर — ठिति अणुबंधं संवेधं च जाणेज्जा।

१५९. सेसं एवं चेव १-९।

(श० २४।३१०)

- १६०. सब्वट्ठसिद्धगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उवविज्ञित्तए ?
- १६१. सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं-
- १६२. ठिती अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं अणुबंधो वि ।
- १६३. सेसं तं चेव । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं,
- १६४. कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वास-पुहत्तमब्भहियाइं,
- १६४. उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भ-हियाइं,
- १६६. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १। (श॰ २४।३११)
- १६७. सो चेव जहण्णकालिंद्वतीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
- १६८. कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वास-पुहत्तमब्भिहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भिहियाइं, (श० २४।३१२)
- १६९. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
- १७०. कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्व-कोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोव-माइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं

श॰ २४, उ॰ २१, ढा० ४२९ १७९

- १७१. सेवै कालज एतलो जी कांइ, ए गति-आगित काल। त्रिण गमा मांहे गमो जी कांइ, दाख्यो तृतीय दयाल जी कांइ।
- १७२. एहिज तीन गमा हुवै जी कांइ, शेष गमा न कहाय। सेवं भंते ! स्वाम जी ! कांइ, सत्य तुम्हारी वाय जी कांइ।।

### सोरठा

- १७३. वृत्ति विषे इम वाय, सवार्थसिद्ध नें विषे। आदि तीन गम पाय, षट गम शेष नहीं तिहां।।
- १७४. जघन्य स्थिति निह थाय, इम मध्यम त्रिण गम नहीं। उत्कृष्ट स्थिती पिण नांय, इम त्रिण गम अंतिम नथी।।

वा॰ —इहां मनुष्य नैं विषे ४३ ठिकाणां नों उपजै ते कहैं छैं — ६ नारकी ३ स्थावर ते पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, तीन विकलेंद्रिय, संख्याता वर्षायु सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय, संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य, असन्नी मनुष्य, दश भवनपति, ब्यंतर, जोतिषी, बारै देवलोक, नव ग्रैवेयक, च्यार अनुत्तर विमान रो एक, सर्वार्थ सिद्ध रो एक — एवं ४३।

- १७५. षट नारिक फुन देव, सब्बट्टसिद्ध विण बीस षट। ए बत्तीसज हेव, ऊपजतां मनु दंडके ।।
- १७६. जघन्य अनें उत्कृष्ट, गमके बे-बे णाणत्ता। आयुतणोंज इष्ट, फुन अनुबन्ध तणों कह्यो।।
- १७७. मही जल वनस्पतीह, विकलद्विय तिरि-पं. मनु । सन्नी असन्नी ईह, ए दश मनु में ऊपजै।।
- १७८. जघन्य गमे कहाय, पृथ्वी में चिहुं णाणता। अप में पिण चिहुं पाय, वनस्पती में पंच फुन।।
- १७९. त्रिण विकलेंद्रिय तेह, असन्नी तिरि ए स्थान चिहुं। मनुष्य विषे उपजेह, सात-सात तसु णाणत्ता।।
- १८०. सन्नी मनु तिरि तेह, ऊपजतां बे मनु विषे। णाणत्त नव-नव लेह, ए सहु आख्या जघन्य गम।।
- १८१. पृथ्व्यादिक दश जाण, ऊपजतां मनु नें विषे । तुर्य गमे पहिछाण, अध्यवसाय बिहुं कह्या ।
- १८२. पंचम गम अपसत्थ, पसत्थ छठा गम विषे श्री जिन वच अवितत्थ, मनुष्यायु पुन्य पाप है।
- १८३. उत्कृष्ट गमे कहाय, पृथ्व्यादिक सन्नी तिरि। एनव मनु में आय, तेहनां बे-बे नाणता।।
- १८४. सन्नी मनुष्य छै जेह, अपजतां मनु नें विषे। उत्कृष्ट गमे कहेह, तीन णाणत्ता तेहनां।।
- १८५. \*चउवीसम इकवीसमों जी कांइ,

च्यार सौ गुणतीसमीं ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी कांइ,

'जय-जश' हरष विशाल जी कांइ ।। चतुर्विशतितमशते एकविंशोद्देशकार्थः ।।२४।२१।।

\*लय: म्हारी सासूजी रेपांच पुत्र कांइ

१८० भगवती जोड़

- १७१. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ३।
- १७२. एते चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० २४।३१४)
- १७३. सर्वार्थसिद्धिकदेवाधिकारे आद्या एव त्रयो गमा भवन्ति सर्वार्थसिद्धिकदेवानां (वृ० प० ८४६)
- १७४. जघन्यस्थितेरभावान्मध्यमं गमत्रयं न भवति उत्कृष्ट-स्थितेरभावाच्चान्तिममिति । (वृ० प० ८४६)

### ढाल: ४३०

### दूहा

- १. वाणमंतरा हे प्रभु!, किहां थकी उपजंत?
   स्यूं नारिक थी उपजै, तिरि मनु सुर थी हुंत?
   ब्यंतर में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय अपजै, तेहनों अधिकार'
- २. इम जिम नागकुमार नां, उद्देशक रै मांहि। ऊपजवो असन्नी तणों, पूर्वे भाख्यो ताहि।।
- ३. तिमज इहां कहिवो सहु, वाणव्यंतरा माय। ऊपजवो असन्नी तणों, नाग जेम कहिवाय।।
- ४. जो सन्नी पंचेंद्रिय, इत्यादिक पूछेह। जाव असंख वर्षायु जे, सन्नी तिरी कहेह।। ब्यंतर में तिर्यंच युगलियों ऊपजै, तेहनों अधिकार<sup>2</sup>

# ओघिक नें ओघिक (१)

\*सुगुण जन ! सुणजो व्यंतर विचार ।। (ध्रुपदं)

- ५. असंख वर्षायु सन्नी तिरी रे, वाणव्यंतर नैं विषेह। जे ऊपजवा योग्य छै रे, कितै काल स्थितिके उपजेह?
- ६. श्री जिन भाखें जघन्य थी रे, वर्ष सहस्र दशकेह। उत्कृष्ट पल्योपम तणीं रे, स्थितिक में उपजेह।
- शेष तिमज कहिवो सहू रे, नागकुमार उद्देश ।
   जिह विधि आख्यो छै तिहां रे, तिमहिज कहिवो एस ।।
- द. यावत अद्धा आश्रयी रे, जघन्य थकी छैतास। साधिक कोड़ पूर्व कह्यो रे, अधिक सहस्र दश वास।।

#### सोरठा

- ९. युगल तियँच भवेह, साधिक पूर्व कोड़ स्थिति ।व्यंतर भवे कहेह, स्थिति सहस्र दश वर्ष नीं ।।
- १०. \*उत्कृष्ट चिहुं पत्य जाणवी रे, युगल तिरी पत्य तीन । इक पत्य •यंतर नें विषे रे, च्यार पत्य इम चीन ।।

#### सोरठा

- ११. त्रि पल्य स्थितिक तिर्यंच, युगल व्यंतर में ऊपनों। इक पल्य स्थितिके संच, उत्कृष्ट चिउं पल्य इह विधे।।
- १२. \*सेवं कालज एतलो रे, ए गति-आगति काल। ओघिक नें ओघिक गमो रे, दाख्यो प्रथम दयाल।।
- १. देखें परि. २, यंत्र १४०
- २. देखें परि. २, यंत्र १४१
- \*लय: कपूर हुवे अति ऊजलो रे

- १. वाणमंतरा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति—िकं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्ख॰ ?'
- २. एवं जहेव नागकुमारउद्देसए असण्णी
- ३. तहेव निरवसेसं। (श० २४।३१५)
- ४. जइ सिष्णपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जिति
  —िकं संखेजजवासाउय ? असंखेजजवासाउय ?
  गोयमा ! संखेजजवासाउय, असंखेजजवासाउय जाव
  उववज्जिति । (श० २४।३१६)
- ५. सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भने ! जे भिविए वाणमंतरेसु उवविज्ञित्तए, से णं भने ! नेवितकाल-द्वितीएसु उववञ्जेज्जा ?
- ६. गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सिट्टिनीएमु, उक्को-सेणं पिलओवमिट्टितीएसु ।
- ७. सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए
- जाव कालादेसेणं जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी
   दर्साह वाससहस्सेहि अब्भहिया,
- १०. उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं,
- ११. त्रिपत्योपमायुः सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यक् पत्योपमा-युर्व्यन्तरो जात इत्येवं चत्वारि पत्योपमानि,

(वृ० प० द४६)

१२. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा १। (श० २४।३१७)

अ**० २४, उ० २२, डा**० ४३० १८१

# ओघिक नैं जघन्य (२)

- १३. तेहिज तियँच युगलियो रे, ओघिक आयूवंत। जघन्य स्थितिक व्यंतर विषे रे, ऊपनों तास वृतंत।
- १४. जिम नागकुमार नीं वार्ता रे, द्वितीय गमक विषेह ।। आखी तिम कहिवी इहां रे, निपुण विचारी लेह ।।

वा०—इहां वृत्तिकार कह्यं — द्वितीय गमा नै विषे जिम नागकुमार नीं वक्तव्यता बीजा गमा नै विषे कही, तिम कहवी। तिका प्रथम गमा समानइज जाणवी। णवरं जघन्य थकी साधिक पूर्व कोड़ दश हजार वर्ष अधिक अनै उत्कृष्ट थी तीन पत्योपम दश हजार वर्ष अधिक।

# ओघिक नैं उत्कृष्ट (३)

- १५. तेहिज तिर्यंच युगलियो रे, ओघिक आयूवंत । उत्कृष्ट स्थितिक व्यंतर विषे रे, ऊपनों तास उदंत ।।
- १६. जघन्य अने उत्कृष्ट थी रे, पल्योपम नो जेह। व्यंतर नों छै आउखो रे, ऊपनों तास विषेह।।
- १७. एहिज वक्तव्यता कही रे, पूर्वे भाखी जेह। णवरं इतरो विशेष छैरे, सांभलजो चित देह।।
- १८. स्थिति युगलिया तिरि तणीं रे, जघन्य पल्योपम एक। उत्कृष्टी स्थिति तेहनीं रे, त्रिण पल्योपम पेखा।

### सोरठा

- १९. यद्यपि जाभी जाण, पूर्व कोड़ज जघन्य थी। युगल तिरि नीं माण, स्थिती कही छै एतली।।
- २० तथापि इहां विख्यात, पत्योपम तिरि युगल नीं। जघन्य स्थिति आख्यात, तास न्याय कहियै अछै।।
- २१. पत्योपम नों पेख, जे व्यंतर नों आउखो। तेह विषे सुविशेख, उपजै ए तीजे गमे।।
- २२. असंख वर्षायू जंत, निज आयू थी सुर तणों। अधिक आउखावंत, तेह विषे नहिं ऊपजै।।
- २३. \*कायसंवेधज जघन्य थी रे, दोय पल्योपम देख एक पल्योपम तिरि भवे रे, इक पल्य व्यंतर पेखा।
- २४. उत्कृष्टो पत्य च्यार नों रे, युगल तिरि पत्य तीन। पत्योपम व्यंतर विषे रे, एम चिउं पत्य चीन।।
- २५. सेवै कालज एतलो रे, ए गति-आगति काल। अोिंघक नैं उत्कृष्ट गमो रे, दाख्यो तृतीय दयाल।।
- २६. बिचला तीनूं ही गमा विषे रे, जिम पूर्वे अधिकार। नागकुमार विषे कह्युं रे, कहिवूं तेम उदार।।
- २७. छेहला तीन गमा विषे रे, तिमहिज निश्चै माण । नागकुमार उद्देशके रे, जिम भाख्यो तिम जाण ।।
- २८. णवरं स्थिति में फेर छैरे, तथा संवेध में फेर। उपयोगे करि जाणवा रे, जूआ-जूआ गम हेर।।
- \*लय: कपूर हुवै अति ऊजलो रे
- १८२ भगवती जोड़

- १३. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो,
- १४. जहेव नागकुमाराणां बितियगमे वत्तव्वया २ । (श० २४।३१८)

वा॰ हितीयगमे 'जहेव नागकुमाराणं बीयगमे वत्त-व्वय' ति सा च प्रथमगमसमानैव नवरं जघन्यत उत्कर्षतक्ष्व स्थितिदंशवर्षसहस्राणि,

(वृ० प० ५४६)

- १५. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- १६. जहण्णेणं पिलओवमिट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पिल-ओवमिट्ठितीएसु ।
- १७. एस चेव वत्तव्वया, नवरं-
- १८. ठिती से जहण्णेणं पिलओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पिलओवमाइं।
- १९. यद्यपि सातिरेका पूर्वकोटी जघन्यतोऽसङ्ख्यातवर्षा-युषां तिरश्चामायुरस्ति (वृ० प० ८४६)
- २०. तथाऽपीह पल्योपममुक्तं (वृ० प० ५४६)
- २१. पत्योपमायुष्कच्यन्तरेषूत्पादियध्यमाणत्वाद् (वृ० प० ८४६)
- २२. यतोऽसङ्खचातवर्षायुः स्वायुषो बृहत्तरायुष्केषु देवेषु नोत्पद्यते एतच्च प्रागुक्तमेवेति । (वृ० प० ८४७)
- २३. संवेहो जहण्णेणं दो पलिओवमाइं,
- २४. उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइं,
- २५. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागितं करेज्जा।
- २६. मिक्समगमगा तिण्णि वि जहेव नागकुमारेसु
- २७. पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा नागकुमारुद्देसए,
- २८. नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा।

वा॰ — ब्यंतर ने विषे युगलियो तियँच ऊपजै तेहनीं सातमे, आठमे, नवमे गमे जघन्य उत्कृष्टी स्थिति ३ पत्य नीं अनै कायसंवेध विचारी कहिवो।

### व्यंतर में संख्याता वर्ष सन्नी तियँच ऊपजे, तेहनों अधिकार

- २९. संख वर्षायु सन्नी तिरी रे, तिमहिज कहिवूं तेह। णवरं इतरो विशेष छैरे, आगल जेह कहेह।।
- वा॰ संख्यात वर्षायुष सन्नी तिर्यंच व्यंतर नैं विषे अपजै, ते संख्यात वर्षायुष सन्नी तिर्यंच नागकुमार नें विषे अपजै तिमज कहिवो। णवरं एतलो विशेष कहै छै —
- ३०. स्थिति अनुबन्ध जघन्य थी रे, वर्ष सहस्र दश लेख। एक पत्योपम जाणवो रे, उत्कृष्टो सूविशेख।।
- ३१. संवेध फुन बिहुं भव तणों रे, स्थिती गिणी जाणेह। संख वर्षायु सन्नी तिरि तणों रे, विल ब्यंतर स्थिति लेह।।
- ३२. मनुष्य थकी जो ऊपजै रे, तो स्यूं वर्षायू संखेज। कै असंख वर्षायू ऊपजै रे ? इत्यादिक सुकहेज।। ब्यंतर में मनुष्य युगलियो ऊपजै, तेहनों अधिकार
- ३३. असंख वर्षायू मनु थर्का रे, व्यंतर में उपपात । जिमहिज नागकुमार नेंं रे, उद्देशे आख्यात ।।
- ३४. तिमहिज वक्तव्यता इहां रे, कहिवी सर्व विचार। णवरं इतरो विशेष छै रे, तीजा गमक मक्तार।।
- ३५. स्थिति जघन्य मनु युगल नीं रे, एक पल्योपम ताय। उत्कृष्टी त्रिण पल्य नीं रे, ते व्यंतर में जाय।।
- ३६. अवगाहना तसु जघन्य थी रे, एक गाऊ नीं थाय। त्रिण गाऊ उत्कृष्ट थी रे, शेष तिमज कहिवाय।।

#### सोरठा

- ३७. इक पल्य आयू जास, तेह तणीं अवगाहना। गाऊ एक विमास, सुषमदुषमादी युगल।।
- ३८. \*कायसंवेध कहीजियै रे, ते जिम एहिज उद्देश। असंख वर्षायू तिर्यंच नें रे, आख्यो तिमज कहेस।। व्यंतर में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य अपने, तेहनों अधिकार
- ३९. संख वर्षायु सन्नी मनुष्य नों रे, हिव कहिये अधिकार । नागकुमार उद्देशके रे, जिम आख्यो तिम धार ।।
- ४०. णवरं वाणव्यंतर तणीं रे, स्थिती विषे जे फेर। फुन संवेध में फेर छै रे, उपयोगे करि हेर।।

२९. संखेज्जवासाउय तहेव, नवरं—

- ३०,३१. ठिती अणुबंधो संवेहं च उभओ ठितीए जाणेज्जा ३-९। (श० २४।३१९)
- ३२. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति ?
- ३३. असंखेज्जवासाउयाणं जहेव नागकुमाराणं उद्देसे
- ३४. तहेव वत्तव्वया, नवरं-तइयगमए
- ३५. ठिती जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसण तिण्णि पलि-ओवमाइं।
- ३६. ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं उक्कोसेणं तिण्णि गाउ-याइं। सेसं तहेव।
- ३७. 'ओगाहणा जहन्नेणं गाउयं' ति येषां पत्योपममाना-युस्तेषामवगाहना गव्यूतं ते च सुषमदुष्षमायामिति । (वृ० प० ८४७)
- ३८. संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउय-सण्णिपीचिदयाणं।
- ३९. संखेज्जवासाउथसिंणमणुस्से जहेव नागकुमारुद्देसए,
- ४०. नवर—वाणमंतरे ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९। (श० २४।३२०) सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० २४।३२१)

\*लय: कपूर हुवं अति ऊजलो रे

श० २४, उ० २२, ढा० ४३० १८३

१. देखें परि. २, यंत्र १४२

२. देखें परि. २, यंत्र १४३

३. देखे परि. २, यंत्र १४४

वा॰ — वाणव्यंतर नैं विषे पांच ठिकाणां रो आवै — असन्ती तियँच पंचेंद्री, असंख्यात वर्षायुष सन्ती तियँच पंचेंद्री, संख्यात वर्षायुष सन्ती तियँच पंचेंद्री, असंख्यात वर्षायुष सन्ती मनुष्य, संख्यात वर्षायुष सन्ती मनुष्य — ए पांच ठिकाणां रो जीव वाणव्यंतर में आवै तेहनों अधिकार — जिम ए ५ ठिकाणां रो नागकुमार में आवै तेहनों अधिकार पूर्वे कह्यां छै तिमज जाणवं । णवरं व्यंतर नीं स्थिति में अनैं कायसंवेध में उपयोगे करि कहित्ं।

### सोरठा

- ४१. पंच स्थान नां पेख, उपजै ब्यंतर नें विषे । तास णाणत्ता लेख, असुर विषे उपजै तिमज ।।
- ४२. \*एह च्यारसौ तीसमी रे, आखी ढाल उदार।
  भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे, 'जय-जश' संपति सार।।
  चतुर्विशतितमशते द्वाविशोद्देशकार्थः।।२४।२२।।

### ढाल : ४३१

### दूहा

- कहां थकी प्रभु! ऊपजै, देव जोतिषी वेद।
   स्यंनारक थी प्रमुख जे? कहिवा जेहनां भेद।।
- २. जाव सन्नी पंचेंद्रिय, तिरिक्ख थकी उपजंत । असन्नो पं-तियँच थी, सुर जोतिषी न हुंत ।।
- ३. जो सन्नी पं.-तिरि थकी, अमर जोतिषी होय। तो स्यूंवर्ष संख्यायु थी, कै असंख्यायु थी जोय?
- ४. जिन भाखे संख्यात जे, वर्षायुष थी होय। असंख्यात जे वर्ष नां, आयुष थी पिण जोय? ज्योतिषी में तियंच युगलियो ऊपजें, तेहनों अधिकार

†चतुर नर! अमर ज्योतिषी भेव।। (ध्रुपदं)

- ५. असंख वर्षायू सन्नी तिरी रे, जोतिषी देव विषेह। जे ऊपजवा योग्य छै रे, कितै काल स्थितिके ऊपजेह?
- ६. श्री जिन भाखै जघन्य थी रे, पल्य तणों पहिछाण। अष्टम भाग स्थितिक विषे रे, युगल ऊपजै आण।।

#### सोरठा

७. तारक विमाण जाण, देव अने देवी तणीं। जघन्य स्थिति पहिछाण, पल्य नां अष्टम भाग नीं।।

\*लय: कपूर हुवै अति ऊजलो रे †लय: राम पूछै सुग्रीव नें रे १. देखें परि. २, यंत्र १४५

१८४ भगवती जोड़

- जोइसिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—िंक नेरइएहिंतो ? भेदो
- २. जाव सिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति, नो असिण्णपंचिदियतिरिक्ख। (११० २४।३२२)
- ३. जइ सण्णि कि संखेज्ज ? असंखेज्ज ?
- ४. गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय । (श० २४।३२३)
- ५. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ६. गोयमा ! जहण्णेणं अटुभागपलिओवमद्वितीएसु,

- इ. \*उत्कृष्ट पल्योपम वली रे, लक्ष वर्ष अधिकेह।
   ए चंद्र विमान नां देव नूं रे, आयुष भाख्यो एह।।
- ९. शेष असुर उद्देशके रे, भाख्यों छै जिम लेख।तिमहिज कहिवूं छै इहां रे, णवरं इतरो विशेख।
- १०. स्थिति जघन्य तिरि युगल नीं रे, पल्य नों अष्टम भाग। उत्कृष्टी पल्य तीन नीं रे, अनुबन्ध पिण इम माग।।

वा० — स्थिति जवन्य पत्योपम नों आठमों भाग ते विमलवाहन कुलगर थी पूर्व काल युगलिया तिर्यंच इत्यादि लेवा । उत्कृष्टे तीन पत्योपम स्थिति ते देवकुर आदि युगल अपेक्षाये लेवा ।

११. शेष तिमज कहिवूं सहू रे, णवरं कालादेश। जघन्य थकी इक पल्य नांरे, भाग अष्टम बे एस।।

### सोरठा

- १२. अष्टम भागज एक, तियँच युगल संबंधियो। द्वितीय भाग संपेख, तेह जोतिषी भव स्थिति।।
- १३. \*उत्कृष्ट पत्योपम चिउं रे, लक्ष वर्ष फुन तास। तिरि युगल पत्य त्रिण वली रे, चंद पत्य लक्ष वास।।
- १४. सेवं कालज एतलो रे, ए गति-आगति काल। ओघिक नें ओघिक गमो रे, दाख्यो प्रथम दयाल।।
- १५. तेहिज तियँच युगलियो रे, ओघिक आयूवंत । जघन्य स्थितिक जोतिषी विषे रे, उपनों तास वृतंत ।
- १६. जघन्य अने उत्कृष्ट थी रे, पत्योपम नों पेख। अष्टम भाग स्थितिक विषे रे, उपनों ते सुविशेख।
- १७. एहिज वक्तव्यता तसुं रे, पूर्वली परमाण । णवरं कालादेश नैं रे, उपयोगे करि जाण ।।

### सोरठा

- १८. द्वितीय गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। एक पल्य नां जेह, दोय आठमा भाग है।।
- १९. उत्कृष्टा पत्य तीन, भाग अष्टमों पल तणों। त्रिण पल युगल सुचीन, भाग अष्टमों जोतिषी।
- २०. \*तेहिज तिर्यंच युगलियो रे, ओघिक आयूवंत। उत्कृष्ट स्थितिक नें विषे रे, उपनों तास वृतंत।।
- २१. एहिज वक्तव्यता तसू रे, णवरं विशेष तास । स्थिति जघन्य थी युगल नीं रे, पल्योपम लख वास ।।
- \*लय: राम पूछै सुग्रीव नै रे

- प्रिकासिणं पिलञ्जोवमवाससयसहस्सिद्वितीएसु उव-वज्जेज्जा,
- ९. अवसेसं जहा असुरकुमाद्देसए, नवरं-
- १०. ठिती जहण्णेणं अटुभागपिलओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पिलओवमाइं । एव अणुबंधो वि ।
- सेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जह०णेणं दो अटुभाग-पिलओवमाइं,
- १२. द्वौ पल्योपमाष्टभागावित्यर्थः तत्रैकोऽसङ्ख्रचातायुष्क-सम्बन्धी द्वितीयस्तु तारकज्योतिष्कसम्बन्धीति, (वृ० प० ८४८)
- १३. उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्स-मन्भिह्याइं, त्रीण्यसङ्ख्यातायुःसत्कानि एकं च सातिरेकं चन्द्र-विमानज्योतिष्कसत्किमिति, (वृ • प० ८४८)
- १४. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागींत करेज्जा १। (श० २४।३२४)
- १४. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो
- १६. जहण्णेणं अट्टमागपिलओवमिट्टतीएसु, उक्कोसेणं वि अट्टभागपिलओवमिट्टितीएसु।
- १७. एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जाणेज्जा २। (श० २४।३२४)

- २०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो,
- २१. एस चेव वत्तव्वया, नवरं—िठिती जहण्णेणं पलि-ओवमं वाससयसहस्समब्भहियं,

ग॰ २४, ७० २३, बा॰ ४३१ १८४

### सोरठा

- २२. यद्यपि युगल तियंच, साधिक पुग्व कोड़ी जघन्य। तथापि इहां विरंच, इक पत्योपम लक्ष वर्ष।।
- २३. तृतीय गमे कहेह, ए प्रमाण आयू विषे ।। जोतिषी में उपजेह, स्थिति समानपणां थकी ।।
- २४ वर्षायु असंख्यात, निज आयू थी अधिकतर। सुर नों आयु ख्यात, तेह विषे नहिं ऊपजै।।
- २५. पूर्वे पिण ए ख्यात, सुखे समभ्रवा विल कह्यां। युगल असुर में जात, सम हीनायुष ने विषे।।
- २६. \*उत्कृष्टो त्रिण पल्य तणों रे, आयुवंत तिरि जेह। उपजे जोतिषी ने विषे रे, एवं अनुबंध लेह।।
- २७ काल आश्रयी जघन्य थी रे, पत्योपम जे दोय। बेलक्ष वर्षज अधिक ही रे, बे भव अद्धा जोय।।

### सोरठा

- २८ पल्योपम लख वास, युगल तिर्यंच तणीं कही। अमर जोतिषी तास, पल्योपम लक्ष वर्ष फुन।।
- २९. \*उत्कृष्ट पत्योपम चिउं रे, लक्ष वर्ष विल तास। युगल तिरिक्ख पत्य त्रिण स्थिती रे, चंद्र पत्य लक्ष वास।।
- ३०. तेहिज तियँच युगलियो रे, आपणपै अवधार। जघन्य काल स्थितिक थयो रे, उपनों ओघिक मभार।।
- ३१. श्री जिन भाखै जघन्य थी रे, पत्योपम नों जाण। अष्टम भाग स्थितिक विषेरे, ऊपजवो पहिछाण।।

### सोरठा

- ३२ चउथे गमे उदंत, जघन्य काल स्थितिक युगल। ओघिक जोतिषि मंत, तेह विषे ए ऊपनों।।
- ३३. युगल तिरिक्ख नीं चीन, यद्यपि पल्योपम तणां। भाग अष्टम थी हीन, आयु जघन्य थकी हुवै।।
- ३४. तथापि जोतिषि मांहि, तेह युगल तियँच थी। स्थिती हीनतर नांहि, पल्य नां अष्टम भाग थी।।
- ३५. जेह युगल तिर्यंच, स्वायू तुल्यायु बंधक। जघन्यस्थितिका संच, पत्य नुं अष्टम भाग ह्वै।।
- ३६. विमलवाहनादेह, कुलकर काल थकी तिके। अतिपूर्व कालेह, हस्ती प्रमुख जे हुआ।।
- ३७. ओघिक जोतिषि मांय, तसु उत्पत्ति नों स्थान ह्वि। जघन्य थकी इम पाय, पत्य नों अष्टम भाग जे।।

१८६ भगवती जोड़

- २२. यद्यप्यसङ्ख्यातवर्षायुषां सातिरेका पूर्वकोटी जघन्यतः स्थितिभवति तथाऽपीह पत्योपमं वर्षलक्षाभ्यधिक-मुक्तं, (वृ० प० ८४८)
- २३. एतत्प्रमाणायुष्केषु ज्योतिष्केषूत्पत्स्यमानत्वाद्, (वृ० प० ८४८)
- २४. यतोऽसङ्ख्यातवर्षायुः स्वायुषो बृहत्तरायुष्केषु देवेषु नोत्पद्यते, (वृ० प● ६४६)
- २४. एतच्च प्रागुपदिशतमेव, (वृ० प० ८४८)
- २६. उक्कोसेणं तिष्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि।
- २७. कालादेसेणं जहण्येणं दो पलिओवमाइं दोहि वास-सयसहस्सेहि अब्भहियाइं,
- २९. उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्स-मब्भिहियाइं ३। (श० २४ ३२६)
- ३०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ
- ३१. जहण्णेणं अटुभागपिलओवमद्वितीएसु,
- ३२. चतुर्थे गमे जघन्यकालस्थितिकोऽसङ्ख्यातवर्षायु-रौधिकेषु ज्योतित्केषूत्पन्नः, (व० प० ८४८)
- ३३. तत्र चासङ्ख्ञ्चातायुषो यद्यपि पत्योपमाष्टभागाद्धीन-तरमपि जघन्यत आयुष्कं भवति (वृ० प० ८५८)
- ३४. तथाऽपि ज्योतिषां ततो हीनतरं नास्ति, (वृ० प० ८४८)
- ३५. स्वायुस्तुत्यायुर्बन्धकाश्चोत्कर्षतोऽसङ्ख्रचातवर्षायुष इतीह जघन्यस्थितिकास्ते पत्योपमाष्टभागायुषो भवन्ति, (वृ०प०८४८)
- ३६. ते च विमलवाहनादिकुलकरकालात्पूर्वतरकालभुवो हस्त्यादय: (वृ० प० ८४८)
- ३७. औधिकज्योतिष्का अप्येवविधा एव तदुत्पत्तिस्थानं भवन्तीति 'जहन्नेण अटुभागपिलओवमट्टिईएसु' इत्याद्युक्तम्, (वृ० प० ८४८)

<sup>\*</sup>लय । राम पूर्छ सुग्रीव ने रे

३८. \*उत्क्रुष्टो पिण आखियो रे, पल्योपम नों जाण। अष्टम भाग स्थितिक विषे रे, तेह ऊपजे आण।।

#### सोरठा

- ३९. जेह युगल तियंच, जघन्य स्थितिक छै ते भणी। जोतिषि में उपजंच, अष्टम भाग विषेज ते।।
- ४०. \*हे प्रभु जी ! ते जीवड़ा रे, एक समय रें मांय। किता ऊपजै छै तिके रे ? इत्यादिक पूछाय।।
- ४१. एहिज वक्तव्यता तसू रे, कहिवी पूर्व जेम । णवरं इतरो विशेष छै रे, सांभलजो धर प्रेम ।।
- ४२. अवगाहना तसु जघन्य थी रे, पृथक धनुष्य संपेख । न्याय कहुं छुं तेहनों रे, सांभलजो सृविशेख ।।

वा० — जघन्य पृथक धनुष्य नीं जे कही ते पत्योपम नों अष्टम भाग मान बाउखों ते विमलवाहनादि कुलकर थकी अतिही पूर्व काल भावी हस्त्यादिक टाली अनेरा लघुकाय नां चतुष्पद नीं अपेक्षाये जाणवो । तेहनीं स्थिति पिण पत्य नों अष्टम भाग हुवै ।

४३. उत्कृष्टो अवगाहना रे, जाफेरी इम संध। अष्टादश सौधनुष्य नीं रे, युगल गजादि प्रबंध।।

वा॰— उत्कृष्ट अठारें सौ धनुष्य जाभी ते किम ? ए विल विमलवाहन कुलकर थी अति ही पूर्वकाल भावी हस्त्यादिक नीं अपेक्षाये कह्यो। जे भणी विमलवाहन नीं नवसौ धनुष्य मान अवगाहना, ते काले हस्त्यादिक नीं ते विमलवाहन थकी उगुणी अठारें सौ धनुष्य नीं। ते माटें ते विमलवाहन थकी अतिही पूर्व काल थया ते हस्त्यादिक नीं अवगाहना अठारें सौ धनुष्य जाभेरी प्रमाण हुवै, ए वृत्ति थी कह्युं।

- ४४. स्थिति ते तिर्यंच युगल नीं रे, जघन्य अनें उत्कृष्ट । पत्य नां अष्टम भाग नीं रे, अनुबंध इतोज इष्ट ।।
- ४५. शेष तिमज कित्वुं सहू रे, पूर्व आख्यो जेम। काल थकी किहय हिव रे, सांभलजो धर प्रेम।।
- ४६. काल आश्रयी जघन्य थी रे, उत्कृष्टो पिण जोय। एक पत्योपम नां कह्या रे, भाग आठमा दोय।।
- ४७. जघन्य काल स्थितिक तणों रे, एहिज गमो एक । सूत्र विषे इम आखियो रे, वृत्ति विषे हिव लेख ।।

वा॰ — पंचम अने षष्टम ए — बे गमा नो इहां चउथा गमा नै विषेईज अंतर्भाव थकी एतले पंचमो, छठो — ए बे गमा चउथा गमा नै विषे आन्या जे भणी पंचमा गमा नै विषे पिण तियँच युगलिया पत्य ना आठमा भाग मान आउखावंत हुवै। विल छठा गमा नै विषे पिण तियँच युगलिया नो आऊखो पत्य नो आठमो भाग मान हीज आयु हुवै, पूर्वे इम कह्योज छै।

४८. तेहिज तिरिक्ख युगल थयो रे, जेष्ठ काल स्थितिवंत। ज्योतिषी ओघिक स्थितिक रे, उपनों तास उदंत।।

\*लय: राम पूछै मुग्रीव नै रे

- ३८. उक्कोसेण वि अट्टभागपिलओवमहितीएसु उद-वज्जेज्जा। (श॰२४।३२७)
- ४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
- ४१. एस चेव वत्तत्र्वया, नवरं-
- ४२. ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं,

वा॰—'ओगाहणा जहन्नेणं धणुहपुहुत्तं' ति यदुक्तं तत्पल्योपमाष्टभागमानापुत्रो विमलवाहनादिकुलकर-कालात्पूर्वतरकालभाविनो हस्त्यादिव्यतिरिक्तक्षुद्रकाय-चतुष्पदानपेक्ष्यावगन्तव्यं, (वृ० प० ८४८)

४३. उक्कोसेणं सातिरेगाइं अट्ठारसधणुसयाइं ।

वा० — 'उक्कोसेणं सातिरेगाइं अट्ठारसघण्सयाइं' ति एतच्च विमलवाहनकुलकरपूर्वतरकालभाविहस्त्या दीनपेक्ष्योक्तं, यतो विमलवाहनो नवधनुःशतमानाव-गाहनः तत्कालहस्त्यादयश्च तद्द्विगुणाः तत्पूर्वतर-कालभाविनश्च ते सातिरेकतत्प्रमाणा भवन्तीति,

(वृ० प० ५४८)

- ४४. ठिती जहण्णेणं अटुभागपलिओवमं, उक्कोसेणं वि अटुभागपलिओवमं। एवं अणुबंधोवि ।
- ४५. सेसं तहेव।
- ४६. कालादेसेण जहण्णेण दो अहभागपिलओवमाइ, उनकोसेण वि दो अहभागपिलओवमाइ,
- ४७. जहण्णकालद्वितियस्स एस चेव एकको गमो ४। (श० २४।३२८)

वा०—'जहन्नकालट्टिइयस्स एस चेव एक्को गमो' ति पञ्चमषष्ठगमयोरश्रैवान्तर्भावाद्, यतः पल्यो-पमाष्टभागमानायुषो मिथुनकतिरश्चः पञ्चमगमे षष्ठगमे च पल्योपमाष्टभागमानमेवायुर्भवतीति, प्राग् भावितं चैतदिति, (वृ० प० ८४८)

४८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ,

श• २४, उ• २३, दा• ४३१ १=७

- ४९. सर्वं ही वक्तव्यता तसू रे, ओधिक गम जिम लेख। किहिवो तिणहिज रीत सुंरे, णवरं इतरो विशेख।।
- ५०. स्थिती युगल तियँच नीं रे, जघन्य अनें उत्कृष्ट । तीन पल्योपम जाणवी रे, अनुबन्ध पिण इम इष्ट ।।
- ५१. शेष तिमज किहवो सहू रे एम चरम गम तीन। णवरं संवेध जाणवुं रे, उपयोगे करि चीन।।

वा०—सातमा, आठमा, नवमा गमा नैं विषे उत्कृष्ट ईज तीन पल्योपम युगलिया तियँच नीं स्थित । अनैं जोतिषी नैं विषे ऊपजै, तिहां जोतिषी नीं स्थिति उत्कृष्ट-ओधिक ए सातमा गमा नैं विषे दोय प्रकार नीं प्रसिद्ध ईज । ते जघन्य तो पल्य नां आठमा भाग नीं, उत्कृष्टी एक पल्योपम नैं लक्ष वर्ष नींज हुवै । अनैं आठमा गमा नैं विषे जघन्य-उत्कृष्ट पल्योपम नां अष्टमा भाग नैं विषे ऊपजै । अनैं नवमा गमा नैं विषे जघन्य-उत्कृष्ट पल्योपम लक्ष वर्ष अधिक स्थिति नैं विषे ऊपजै ।

अनैं कायसंवेध विचारी करिवूं। सातमे गमे संवेध जघन्य थी ३ पल्य नैं पल्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट अद्धा ४ पल्य नैं लक्ष वर्ष। तीन पल्य तो युगलिया तियँच रो, एक पल्य नैं लक्ष वर्ष जोतिषी नों। अष्टमे गमे संवेध जघन्य अनैं उत्कृष्ट अद्धा तीन पल्य अनैं पल्योपम नों आठमों भाग अनैं नवमे गमे संवेध जघन्य-उत्कृष्ट अद्धा ४ पल्य नैं लक्ष वर्ष। न्याय पूर्ववत।

५२. एवं सप्त गमा कह्या रे, पहिला तीन पिछान। छेहला तीन गमा कह्या रे, मध्यम इक त्रिण स्थान।

वा० प्रथम तीन गमा अनै बिचला तीन गमा रै स्थानके एक गमो छेहला तीन गमा ए जोतिषी नै विषे तियँच युगलियो ऊपजै तेहनां ६ गमा नो अधिकार कह्यो।

ज्योतिषी में संख्याता वर्ष नों सन्ती तियँच पंचेंद्रिय ऊपजै, तेहनों अधिकार'

- ५३. जो संख्यात वर्षायु सन्नी रे, पंचेंद्री तिरि ताहि। तेह थकी जे ऊपजे रे, देव जोतिषि मांहि।।
- ५४. संख्यात वर्षायू तिरो रे, जिमहिज असुर विषेह। ऊपजता नां आखिया रे, तिमज गमा नव एह।।
- ५५. णवरं स्थिति जोतिषि तणीं रे, तथा संवेध पिछाण। उपयोगे करि जाणवूं रे, शेष तिमज सहु आण।।

वा०—संख्याता वर्षायु सन्नी पंचेंद्रिय तियँच जोतिषी नै विषे उपजतां प्रथमे, चउथे, सातमे गमे जघन्य पल्योपम नां आठमा भाग स्थितिक नै विषे उपजै, उत्कृष्ट पल्योपम लक्ष वर्ष अधिक स्थितिक नै विषे उपजै। अनै दूजे, पांचमे, आठमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट पल्योपम नां आठमा भाग स्थितिक नै विषे उपजै। अनै तीजे, छठे नवमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट पल्योपम लक्ष वर्ष अधिक स्थितिक नै विषे उपजै।

- ४९. सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं---
- ५०. ठिती जहण्णेणं तिण्णि पिलओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पिलओवमाइं। एवं अणुबंधो वि।
- ५१. सेसं तं चेव । एवं पिच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं — िठितं संवेहं च जाणेज्जा ७-९ ।

वा॰ — सप्तमादिगमेषूत्कृष्टैव त्रिपत्योपमलक्षणा तिरश्च: स्थितः, ज्योतिष्कस्य तु सप्तमे द्विविधा प्रतीतैव, अष्टमे पत्योपमाष्टभागरूपा, नवमे साति-रेकपत्योपमरूपा,

संवेधश्चैतदनुसारेण कार्यः

(वृ० प० ८४६)

५२. एते सत्त गमगा।

(श० २४।३२९)

वा॰—'एते सत्त गम' ति प्रथमास्त्रयः मध्यमत्रय-स्थाने एकः पश्चिमास्तु त्रय एवेत्येवं सप्त । (वृ॰ प० ६४६)

- ५३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदिय ?
- ५४. संखेजजवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्ज-माणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा,
- ४४. नवरं जोतिसिय-ठिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तहेव निरवसेसं १-९ । (श० २४।३३०)

<sup>\*</sup>लय : राम पूछे सुग्रीव नै रे १. देखें परि. २, यंत्र १४७

१८८ भगवती जोड़

### सोरठा

- ५६. पहिले गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहूर्त्त जेह, भाग आठमों पल्य नों।
- ५७. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। पूर्व कोड़ज च्यार, चिउं पल्य चिउं लक्ष वर्ष फुन।।
- ५८. दूजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहर्त्तं जेह, भाग आठमों पल्य नों।।
- ५९. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों । पूर्व कोड़ज च्यार, पत्य नां अष्टम भाग चिउं ।।

वा०—इहां एक पत्योपम नां आठवां भाग नां ज्योतिषी नैं विषे च्यार भव करैं, ते च्यारूं भवे अर्द्ध पत्योपम हुवै ।

- ६०. तीजे गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त जेह, एक पत्योपम वर्ष लक्षा।
- ६१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। पूर्वकोड़ज च्यार, चिउंपल्य चिउंलक्षा वर्ष फुन।।
- ६२. तुर्य गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त जेह, भाग आठमों पल्य नों।
- ६३. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। अंतर्मुहर्त्तं च्यार, चिउं पत्य चिउं लक्ष वर्ष विला।
- ६४. पंचम<sup>ें</sup> गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मुहर्त्त जेह, भाग आठमों पल्य नों।
- ६५. उत्कृष्टो अवधार, अद्ध अष्टा भवां तणों। अंतर्मुहुर्त्तं च्यार, पत्य नां अष्टम भाग चिउं।।
- ६६. षष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। अंतर्मृहर्त्त जेह, एक पत्योपम वर्ष लक्षा।
- ६७. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। अंतर्मुहूर्त्तं च्यार, चिउं पत्य चिउं लक्ष वर्षे फुन ॥
- ६८. सप्तम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी।
- कोड़ पूर्व तिरि जेह, भाग आठमों पल्य नों।। ६९. उत्क्रुष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों।
- कोड़ पूर्व जे च्यार, चिहुं पत्य चिहुं लक्ष वर्ष विल ।
- ७०. अष्टम गम संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। कोड़ पूर्व तिरि जेह, भाग आठमों पल्य नों।
- ७१. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कोड़ पूर्व जे च्यार, पत्य नां अष्टम भाग चिउं।।
- ७२. नवम गमे संवेह, बे भव अद्धा जघन्य थी। कोड़ पूर्व तिरि जेह, एक पत्योपम वर्ष लक्ष।
- ७३. उत्कृष्टो अवधार, अद्धा अष्ट भवां तणों। कोड़ पूर्व जे च्यार, चिहुं पत्य चिहुं लख वर्ष फुन।।

ए सन्नी पंचेंद्रिय तियँच जोतिषी नें विषे ऊपने, तेहनां नव गमा कह्या !

श० २४, उ० २३, ढा० ४३१ १८९

- द२. शेष तिमज कहिवो सहू रे, जाव संवेध लगेह।
  युगल तिरी जोतिषि विषे रे, उपजे तेम कहेह।।
  ए मनुष्य युगलियो जोतिषी नें विषे ऊपजे, तेहनां सात गमा कह्या।
  ज्योतिषी में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजे, तेहनों अधिकार
- ५३. संख वर्षायुषवंत जिंद रे, सन्नी मनुष्य छै जेह। जोतिषि नैं विषे ऊपजै रे, इत्यादिक पूछेह।।
- ५४. संख वर्षायू सन्तो मन् रे, जिमहिज असुर विषेह। ऊपजतां नैं आखिया रे, तिम नव गमा कहेह।।
- ५५. णवरं स्थिति जोतिषि तणीं रे, अथवा कायसंवेह । उपयोगे करि जाणवूं रे, शेष तिमज सहु जेह ।।

वा० — संख्यात वर्षाय सन्नी मनुष्य असुर में ऊपजै, तिहां असुर नीं स्थिति प्रथम, चतुर्य, सप्तम गमके जघन्य १० सहस्र वर्ष, उत्कृष्ट १ सागर जाभी। द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्योत्कृष्ट १० सहस्र वर्ष। तृतीय, पष्ठम, नवम गमके जघन्योत्कृष्ट १ सागर जाभी। तिहां ए असुर नीं स्थिति कहीं अनैं इहां संख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य जोतिषी नैं विषे ऊपजै, तिहां जोतिषी नीं स्थिति इम कहिवी — प्रथम, चतुर्थ, सप्तम गमके जघन्य पत्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट १ पत्योगम लक्ष वर्ष। अनैं द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्योत्कृष्ट पत्य नों आठमों भाग। अनैं तृतीय, पष्ठम, नवम गमके जघन्योत्कृष्ट १ पत्योपम लक्ष वर्ष स्थिति में ए विशेष जाणवी।

अनैं कायसवेध भव आश्रयी नवही गमके जघन्य बे, उत्कृष्ट अठ। अनैं काल आश्रयी प्रथम गमके जघन्य पृथक मास पल्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष १ । द्वितीय गमके जघन्य पृथक मास पत्य नों थाठमों भाग, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व पत्य नां आठमां ४ भाग २। तृतीय गमके जघन्य पृथक मास १ पल्योपम लक्ष वर्ष, उत्क्रुब्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष ३ । चतुर्थ गमके जघन्य पृथक मास पत्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट ४ पृथक मास ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष ४ । पंचम गमके जघन्य पृथक मास पल्य नों बाठमों भाग, उत्कृष्ट ४ पृथक मास पत्य नां आठमा ४ भाग ५ । षष्ठम गमके जघन्य पृथक मास १ पल्योपम १ लक्ष वर्ष, उत्कृष्ट ४ पत्योपम ४ लक्ष वर्ष ६। सप्तम गमके जघन्य कोड़ पूर्व पल्य नों आठमों भाग, उत्क्रुब्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष ७, अष्टम गमके जघन्य कोड़ पूर्व पल्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व पत्य नां आठमा ४ भाग ८ । नवम गमके जवन्य १ कोड़ पूर्व १ पत्योपम १ लक्ष वर्ष, उत्क्विष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पत्योपम ४ लक्ष वर्ष ९— ए कायसवेध जाणवू । जोतियी में च्यार ठिकाणां रो ऊपजै - युगलियो तियँच १. संख्यात वर्षायुष सन्नी तियंच २, युगलियो मनुष्य ३, संख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य ४। असन्ती तिर्यंच न जावै।

### सोरठा

द६. देव जोतिषी मांय, युगल तिरिक्ख उपजै तसु। सातूं गमे कहाय, जघन्योत्क्रुष्टज दोय भव।।

- प्तर. सेसं तहेव निरवसेसं जाव संवेहो ति । (श० २४।३३२)
- दरे. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो ?
- प्तरं संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्ज-माणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा,
- ५४. नवरं जोतिसियिठिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव निरवसेसं १-९ । (श० २४।३३३)

१. देखें परि० २, यत्र १४७

- द२. शेष तिमज कहिवो सहू रे, जाव संवेध लगेह।
  युगल तिरी जोतिषि विषे रे, उपजे तेम कहेह।।
  ए मनुष्य युगलियो जोतिषी नें विषे ऊपजे, तेहनां सात गमा कह्या।
  ज्योतिषी में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजे, तेहनों अधिकार
- ५३. संख वर्षायुषवंत जिंद रे, सन्नी मनुष्य छै जेह। जोतिषि नैं विषे ऊपजै रे, इत्यादिक पूछेह।।
- ५४. संख वर्षायू सन्तो मन् रे, जिमहिज असुर विषेह। ऊपजतां नैं आखिया रे, तिम नव गमा कहेह।।
- ५५. णवरं स्थिति जोतिषि तणीं रे, अथवा कायसंवेह । उपयोगे करि जाणवूं रे, शेष तिमज सहु जेह ।।

वा० — संख्यात वर्षाय सन्नी मनुष्य असुर में ऊपजै, तिहां असुर नीं स्थिति प्रथम, चतुर्य, सप्तम गमके जघन्य १० सहस्र वर्ष, उत्कृष्ट १ सागर जाभी। द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्योत्कृष्ट १० सहस्र वर्ष। तृतीय, पष्ठम, नवम गमके जघन्योत्कृष्ट १ सागर जाभी। तिहां ए असुर नीं स्थिति कहीं अनैं इहां संख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य जोतिषी नैं विषे ऊपजै, तिहां जोतिषी नीं स्थिति इम कहिवी — प्रथम, चतुर्थ, सप्तम गमके जघन्य पत्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट १ पत्योगम लक्ष वर्ष। अनैं द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्योत्कृष्ट पत्य नों आठमों भाग। अनैं तृतीय, पष्ठम, नवम गमके जघन्योत्कृष्ट १ पत्योपम लक्ष वर्ष स्थिति में ए विशेष जाणवी।

अनैं कायसवेध भव आश्रयी नवही गमके जघन्य बे, उत्कृष्ट अठ। अनैं काल आश्रयी प्रथम गमके जघन्य पृथक मास पल्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष १ । द्वितीय गमके जघन्य पृथक मास पत्य नों थाठमों भाग, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व पत्य नां आठमां ४ भाग २। तृतीय गमके जघन्य पृथक मास १ पल्योपम लक्ष वर्ष, उत्क्रुब्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष ३ । चतुर्थ गमके जघन्य पृथक मास पत्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट ४ पृथक मास ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष ४ । पंचम गमके जघन्य पृथक मास पल्य नों बाठमों भाग, उत्कृष्ट ४ पृथक मास पत्य नां आठमा ४ भाग ५ । षष्ठम गमके जघन्य पृथक मास १ पल्योपम १ लक्ष वर्ष, उत्कृष्ट ४ पत्योपम ४ लक्ष वर्ष ६। सप्तम गमके जघन्य कोड़ पूर्व पल्य नों आठमों भाग, उत्क्रुब्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पल्योपम ४ लक्ष वर्ष ७, अष्टम गमके जघन्य कोड़ पूर्व पल्य नों आठमों भाग, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व पत्य नां आठमा ४ भाग ८ । नवम गमके जवन्य १ कोड़ पूर्व १ पत्योपम १ लक्ष वर्ष, उत्क्विष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पत्योपम ४ लक्ष वर्ष ९— ए कायसवेध जाणवू । जोतियी में च्यार ठिकाणां रो ऊपजै - युगलियो तियँच १. संख्यात वर्षायुष सन्नी तियंच २, युगलियो मनुष्य ३, संख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य ४। असन्ती तिर्यंच न जावै।

### सोरठा

द६. देव जोतिषी मांय, युगल तिरिक्ख उपजै तसु। सातूं गमे कहाय, जघन्योत्क्रुष्टज दोय भव।।

- प्तर. सेसं तहेव निरवसेसं जाव संवेहो ति । (श० २४।३३२)
- दरे. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो ?
- प्तरं संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्ज-माणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा,
- ५४. नवरं जोतिसियिठिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव निरवसेसं १-९ । (श० २४।३३३)

१. देखें परि० २, यत्र १४७

८७. जघन्य गमे सुजोय, तीन णाणत्ता अवगाहन नों होय, आयू नें अनुबंध नों।। ८८. अवगाहना जघन्य, पृथक धनुष्य नीं पेखिये । उत्कृष्टी तसु जन्य, साधिक धनुष्य अठार भाग आठमों पल्य ८९. आयु जघन्योत्कृष्ट, नों । आयू जितोज इष्ट, अनुबन्ध कहियै तेहनों ।। ९०. उत्कृष्ट गमे विचार, दोय नाणत्ता दाखिया। अनुबंध सार, तीन पल्योपम जाणव्।। ९१. उपजै जोतिषि मांय, संख्यायू सन्नी तिरि। भव नव गमे कहाय, जघन्य दोय उत्कृष्ट अठ।। ९२. जघन्ये गमे कहाय, नारकवत अठ णाणता । पिण सुभ अध्यवसाय, उत्कृष्ट गम बे णाणत्ता ।। ९३. युगल मनुष्य उपजेह, अमर जोतिषी नैं विषे। भव सातूं गमकेह, जघन्य अनें उत्कृष्ट बे।। ९४. जघन्य गमे त्रिण इष्ट, धुर अवगाहन जघन्य अनें उत्कृष्ट, साधिक नवसौ धनुष्य नीं।। ९५. आयू नैं अनुबंध, भाग आठमों पल्य नों। तीन गमा नों संध, एक गमो जघन्यो कह्यो।। ९६. उत्कृष्ट गम पिण तीन, त्रिण गाऊ अवगाहना। आयु अनुबंध चीन, तीन पल्योपम जाणव् ।। ें में उपजेह, संख्यायू सन्नी मनु। ९७. जोतिषि भव नव गमे कहेह, जघन्य दोय उत्कृष्ट अठ। ९८. पंच णाणत्ता पेख, जघन्ये गमे सूजाणजो। तसु अवगाहन देख, जघन्योत्कृष्ट अंगुल पृथक। ९९. भजनाइं त्रिण ज्ञान, समुद्घात धुर पंच फुन। आयु अनुबंध मान, मास पृथक नों प्रभु कह्युं।। १००. उत्कृष्ट गमेज तीन, अवगाहन धनु पांचसौ। अनुबंध चीन, कोड़ पूर्व नों आखियो ।। १०१. असन्नी विण चिहुं स्थान, अमर जोतिषी उत्पत्ति। तास नाणत्ता जान, असुर विषे उपजै तिमज।। १०२. \*सेवं भंते ! स्वामजी रे, चउवीसम शतकेह। उद्देशक तेवीसमो रे, अर्थ थकी कह्यो एह।। १०३. च्यारसौ नैं इकतीसमी रे, जोतिषी नीं ए ढाल।

भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

चतुर्विशतितमशते त्रयोविशोद्देशकार्थः ।।२४।२३।।

**१**०२. सेवं भते ! सेवं भंते ! ति । (श० २४।३३४)

\*लय: राम पूर्छ सुग्रीव नै रे

१९२ भगवती जोड़

### ढाल: ४३२

### दूहा

- १. सौधर्म देवा हे प्रभु ! किहां थकी उपजंत ? स्यूं नारक थी ऊपजें ? इत्यादिक पूछंत ।।
- २. भेद जूजुआ एहनां, जिम जोतिषि उद्देश। आख्यो तिम कहिवो इहां, हिव धुर तिरि मिथुनेस।।

पहले देवलोक में तियँच युगलियो ऊपजे, तेहनों अधिकार क्माव वैमाणिक नां सुणो ।। (ध्रुपदं)

- ३. प्रभु! असंख वर्षायु सन्नी तिरि, सोहम्म कल्प विषेह जी। जे ऊगजवा योग्य ते प्रभु! कितै काल स्थितिके उपजेह जी?
- ४. जिन कहै गोयम ! जघन्य थी, इक पत्य स्थितिक विषेह जी। उत्कृष्ट तीन पत्योपम स्थितिक विषे उपजेह जी।।

### सोरठा

- प्र. जघन्य पत्य आख्यात, सौधर्मे स्थिति जघन्य थी।
   पत्य थी हीण न थात, तिण सूं पत्योपम कही।।
- ६. तीन पल्य उत्कृष्ट, तेह विषे उपजै कह्यो । यद्यपि इहां गरिष्ठ, बहुतर छै बे उदधि लग ।।
- ७. तो पिण युगल तिर्यंच, त्रिण पल्य आयुवंत जे। निज आयूथी रंच अधिक न बांधै सुर स्थिति।।
- द. \*प्रभु ! इक समय ते किता ऊपजै ? शेष परिमाणादि सोय जी । जिम जोतिषि में तिरि युगलियो, ऊपजता ने अवलोय जी ।।
- तिहां कह्यं तिम कहिवं इहां, णवरं विशेष छै एह जी।
   सम्यकदृष्टि पिण अपजै, मिच्छिदिट्टी पिण उपजेह जी।
- १०. मिश्रदृष्टि तिरि युगलियो, तेह वैमानिक मांहि जी। ऊपजवूं नहीं तेहनों, मिश्रदृष्टि युगल में नांहि जी।।

### सोरठा

- ११. तिहां जोतिषी मांय, ऊपजता तिरि-युगल में। सम्यगदृष्टि न पाय, तिण सूं ए निहं ऊपजै।।
- १२. समदृष्टी तिर्यंच, इक वैमानिक देव नुं। आयू-बंध विरंच, अपर आय बांधै नथी।।
- १३. इहां युगल तियँच, समदृष्टी विण ऊपजै। वैमानिक में संच, एह विशेषज जाणवूं।।
- \*लय: मम करो काया माया
- १. देखें परि० २, यंत्र १४९

- १. सोहम्मदेवा ण भते ! कशोहितो उववज्जति िक नेरइएहिता उववज्जति ?
- २. भेदो जहा जोइसियउद्देसए। (श० २४।३३५)
- ३. असंखेजजवासाउयसिण्णपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ४. गोयमा ! जहण्णेण पिलओवमिट्टतीएसु उक्कोसेणं तिपिलओवमिट्टतीएसु उववज्जेज्जा । (॥० २४।३३६)
- ४. 'जहन्नेणं पलिओवमट्ठिइएसु' त्ति सौधर्मे जघन्येना-न्यस्यायुषोऽसत्त्वात्, (वृ० प० ५४१)
- ६,७. 'जक्कोसेणं तिपिलओवमिठइएसु' त्ति यद्यपि सौधर्मे बहुतरमायुष्कमिस्ति तथाऽप्युत्कर्षस्त्रिपत्यो-पमायुष एव तिर्यञ्चो भवन्ति तदनितिरिक्तं च देवायुर्बधनन्तीति, (वृ०प० ६५१)
- द. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उव-वज्जंति ? अवसेसं जहा जोइसिएसु उववज्जमाणस्स,
- ९. नवरं सम्मदिद्वी वि, मिच्छादिद्वी वि,
- १०. नो सम्मामिच्छादिट्टी।

- ४. \*ज्ञानी पिण हुवै तिरि युगलियो, अज्ञानी पिण तिके थाय जी। ज्ञान वे दोय अज्ञान ते, नियमा निश्चै करिपाय जी।।
- वा॰—तिहां जोतिषी नैं विषे तियँच युगलियो ऊपजै, तिण में ज्ञान न पावै। अनैं इहां वैमानिक में ऊपजै, तेहनैं ज्ञानी पिण कहियै। ए विशेष। अनैं अज्ञानी पिण ऊपजैं, एहवूं कह्युं। ते अज्ञानी तो जोतिषी नैं विषे पिण ऊपजै छै, ते णवरं पाठ में किम कह्युं? उत्तर—ज्ञानद्वारे संलग्न पाठ माटै अज्ञानी पिण ऊपजैं, इम कह्युंपिण ए विशेष नथी।
- १५. स्थिति जघन्य इक पत्य नीं, उत्कृष्ट त्रिण पत्य ताय जी। अनुबंध पिण कहिवूं इतो, शेष तिमहिज कहिवाय जी।।
- १६. काल आदेश करि जघन्य थी, दोय पत्योपम देख जी। एक पत्योपम तिरि भवे, सुर भवे इक पत्य शेख जी।।
- १७. उत्कृष्ट षट पल्य नीं कही, त्रिण पल्य तिरि भव न्हाल जी । त्रिण पल्य सोहम्म सुर भवे, ए गति-आगति काल जी ।।
- १८. तेहिज तियँच युगलियो, ओघिक आयुषवंत जी। जघन्य जे काल स्थितिक विषे ऊपनों तास वृतंत जी।।
- १९. एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं विशेष छै एह जी । कालसंवेध विषे अछै, आगल तेह कहेह जी ।।
- २०. काल आदेश करि जघन्य थी, दोय पत्योपम जोय जी। इक पत्य युगल तिरि भव विषे, इक पत्य सुर भव होय जी।
- २१. उत्कृष्ट चिहुं पत्य नों कह्यो, त्रिण पत्य युगल तिर्यंच जी। इक पत्य सोहम्म सुर भवे, ए गति-आगति संच जी।।
- २२. तेहिज तिर्यंच युगलियो, ओघिक स्थितिक कहिवाय जी । उत्कृष्ट काल स्थितिक विषे, ऊपनों सौधर्म मांय जी ।।
- २३. जघन्य त्रिण पत्य स्थितिक विषे,

उत्कृष्ट पिण पत्य तीन जी । स्थितिक विषे तिको ऊपजै, सोहम्म सुर स्थिति लीन जी ।।

- २४. एहिज वक्तब्यता तसु, णवरं युगल स्थिति जोय जी। जघन्य उत्कृष्ट त्रिण पत्य तणीं, शेष तिमहिज अवलोय जी।।
- २५. काल आदेश करिनें तसु, षट पत्य जघन्य उत्कृष्ट जी। त्रिण पत्य युगल तियँच नीं, त्रिण पत्य सोहम्म इष्ट जी।।
- २६. तेहिज तियँच युगलियो, आपणपै कहिवाय जी। जवन्य ते काल स्थितिक थयो, ऊपनों वैमानिक मांय जी।।
- २७. ऊपनों जघन्य उत्कृष्ट थी, इक पत्य स्थितिक विषेह जी। एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं विशेख छै एह जी।।

\*लय: मम करो काया माया

१९४ भगवती जोड़

१४. नाणी वि, अण्णाणी वि, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं।

- १५. ठिती जहण्णेण पिलओवमं, उक्कोसेण तिण्णि पिल-ओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव।
- १६. कालादेसेणं जहण्णेणं दो पिलओवमाइं, 'दो पिलओवमाइं' ति एकं तिर्यग्भवसत्कमपरं च देवभवसत्कं, (वृ० प० ८५१)
- १७. उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागींत करेज्जा १। (श० २४।३३७) 'छ पलिओवमाइं' ति त्रीणि पत्योपमानि तिर्यग्भव-सत्कानि त्रीण्येव देवभवसत्कानीति, (व० प० ६५१)
- १८. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो,
- १९. एस चेव वत्तव्वया, नवरं--
- २०. कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं,
- २१. उक्कोसेणं चतारि पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालंगितिरागीत करेज्जा २। (श० २४।३३८)
- २२. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो
- २३. जहण्णेणं तिपलिओवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमद्वितीएसु,
- २४. एस चेव वत्तव्वया, नवरं ठिती जहण्णेणं तिण्णि पिलओवमाइं। उनकोसेणं वि तिण्णि पिलओवमाइं सेसं तहेव।
- २५. कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उनकोसेण वि छप्पलिओवमाइं, (श० २४।३३९)
- २६. सो चेव अप्पणा जहण्णकालिंदुतीओ जाओ
- २७. जहण्णेणं पिलओवमिट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पिल-ओवमिट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—

२८. अवगाहना तसु जघन्य थी, पृथक धनुष्य नीं पेख जो। उत्कृष्ट दोय गाऊ तणीं, युगल गज आदि सुविशेख जी।।

वाo—ए जघन्य पृथक धनुष्य ते लघु काया नों धणी चतुष्पद युगलिया नीं अपेक्षाए। अनै उत्कृष्ट बे गाऊ नीं ते जे क्षेत्र नैं विषे तथा जे काल नैं विषे युगलिया मनुष्य नीं एक गाऊ नीं अवगाहना हुवै ते संबंधी हस्त्यादिक प्रतै आश्रयी उत्कृष्ट बे गाऊ नीं कहिवी। एतलै जे क्षेत्रे तथा ते काले मनुष्य तियँच नों एक पत्य नों आउखो हुवै, तिवारै मनुष्य नीं तो एक गाऊ नीं अवगाहना, गज प्रमुख युगलिया नीं बे गाऊ नीं अवगाहना हुवै, ते तियँच एक पत्य स्थितिक बे गाऊवंत इहां ग्रहण कियो।

- २९. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट थी, एक पत्योपम होय जी। ए जघन्य गमो धुर कल्प में ऊपजवा योग्य जोय जी।
- ३०. काल आदेश करिनें तिको, जघन्य अनें उत्कृष्ट जी। दोय पत्योपम जाणवो, ए गति-आगति इष्ट जी।।

### सोरठा

- ३१. इक पल्य तिरि भव इष्ट, इक पल्य सोहम्म सुर स्थिति । जघन्य अने उत्कृष्ट, दोय पल्य इम जाणवृं।।
- ३२. जघन्य त्रिण गम जोय, तेह विषे ए इक गमो। जुगल जोतिषी होय, तेह तणीं पर जाणवूं।।
- ३३. \*तेहिज आपणपे थयो, उत्कृष्ट आउखावंत जी। प्रथम गमक सरीखा तिहां, चरम गमा त्रिहुं हुंत जी।।
- ३४. णवरं स्थिति अथवा वली, काल आदेश पहिछाण जी। उपयोगे करि जाणवो, वारू है जिनवर वाण जी।।

### सोरठा

- ३५. युगल तिरिक्ख नीं जाण, जघन्य अनें उत्कृष्ट थी। स्थिति तीन पल्य माण, देव तणीं स्थिति हिव कहूं।।
- ३६. सप्तम गमे उप्पन्न, ओघिक स्थितिक नैं विषे। अष्टम गमे सुजन्न, जघन्य स्थितिक सुर नैं विषे।।
- ३७. नवम गमे पहिछाण, उत्कृष्ट स्थितिक नैं विषे । काल आश्रयी जाण, कहियै हिव संवेध प्रति ।
- ३८. सप्तम गम संवेह, जघन्य थकी पत्य च्यार नों। त्रिण पत्य युगल भवेह, इक पत्य सोहम्म सुर स्थिति।।
- ३९. उत्कृष्ट अद्धा संच, षट पत्योपम बिहुं भवे। त्रिण पत्य युगल तिर्यंच, त्रिण पत्य सोहम्म सुर स्थिति।।
- ४०. अष्टम गम संवेह, जघन्य नें उत्कृष्ट थी । च्यार पत्योपम जेह, त्रिण पत्य तिरि इक पत्य सुरे ।।
- ४१. नवम गमे संवेह, जघन्य अनैं उत्कृष्ट थी। षट पत्योपम जेह, त्रिण पत्य तिरि त्रिण पत्य सुरे।। ए असंख्यात वर्षायु सन्नी तिर्यंच सौधर्मे ऊपजै, तेहनां ७ गमा कह्या।

२८. ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उनकोसेणं दो गाउयाइं।

वा०—'जहन्नेणं धणुहपुहुत्तं' ति क्षुद्रकायचतुष्पदा-पेक्षं 'उक्कोसेणं दो गाउयाइं' ति यत्र क्षेत्रे काले वा गव्यूतमाना मनुष्या भवन्ति तत्सम्बन्धिनो हस्त्या-दीनपेक्ष्योक्तमिति । (वृ० प० ६५१)

- २९. ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण वि पलि-ओवमं।
- ३०. कालादेसेणं जहण्णेणं दो पिलओवमाइं, उक्कोसेण वि दो पिलओवमाइं, एवितयं काल सेवेज्जा, एव-तियं कालं गितरागित करेज्जा ४-६। (श० २४।३४०)
- ३३. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिण्णि गमगा नेयव्वा,
- ३४. नवरं—िटिति कालादेसं च जाणेज्जा ७-९ । (श० २४।३४१)

श॰ २४, उ० २४, ढा० ४३२ १९५

<sup>\*</sup>लय: मम करो काया माया

## पहिले देवलोक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तियँच ऊपजे, तेहनों अधिकार

- ४२. \*जो संख वर्षायु सन्नी तिरि ? इत्यादिक पूछेह जी। जिम संख वर्षायु तिरि असुर में, ऊपजता नैं कहेह जी।।
- ४३. तिमहिज नव गम पिण इहां, णवरं विशेष छै एह जी।। स्थिति फून कायसंवेध नैं, उपयोग करीनैं जाणेह जी।।

वा॰—इहां कह्युं णवरं—ठिति संवहं च जाणेज्जा—ते स्थिति सौधर्म विषे ऊपजै, ते देव नीं जाणवी। इहां सौधर्म नों नाम तो नथी कह्युं, पिण समचं स्थिति कही। ए तियंच नां भव नीं स्थिति न सभवै, ते असुरकुनार नें विषे संख्यात वर्षायु सन्नी तियंच ऊपजै, ते सन्नी तियंच नीं स्थिति प्रथम तीन गमे जघन्य अंतर्मृहूर्त्तं, उत्कृष्ट कोड़ पूर्व। मभभ तीन गमे जघन्य-उत्कृष्ट अंतर्मृहूर्त्तं। उत्कृष्ट तीन गमे जघन्योत्कृष्ट कोड़ पूर्व। अनैं संख्यात वर्षायुष सन्नी तियंच सौधर्मे ऊपजै, तेहनीं पिण नव गमे एतलीज स्थिति हुवै, ते माटै ए तियंच नीं स्थिति न संभवै। सौधर्मे देवपणैं ऊपजै, ते देव नीं स्थिति संभवै। जे पूर्वे कह्युं— संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य जोतिषी में ऊपजै. तेहनां प्रश्नोत्तर में जिम असुरकुमार नैं विषे संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य ऊपजतां नैं ९ गमा कह्या तिम कहिवा। णवरं—जोतिसियिटिति संवहं च जाणेज्जा। इहां जोतिषी नों नाम लेई नैं कह्युं तिम इहां सौधर्म नों नाम नथी लीधूं। पिण स्थिति सौधर्म नीं संभवै।

वित संख्याता वर्षायु सन्ती तियँच जोतिषी में ऊपजै तिके पिण जिम असुरकुमार नैं विषे संख्यात वर्षायु सन्ती तियँच ऊपजता नैं कह्युं, तिमज नवही गमा कहिवा। णवरं जोतिसियठितिसवेह च जाणेज्जा। इहां पिण जोतिषी रो नाम लेई देव नीं स्थिति कही, िम इहां सौधर्म देव नीं स्थिति जाणवी।

तथा आगल एहवं कहिसे -- संख्याता वर्षायुष सन्ती मनुष्य सौधर्म में ऊपजै, ते जिम असुरकुमार नै विषे संख्याता वर्षायुष सन्ती मनुष्य उपजतां नै कह्या, तिमहिज नव गमा कहिवा। णवरं सोहम्मग देव ठिति संवेह च जाणेज्जा। इहां पिण देव नी स्थिति कही, इम आगल पिण सनतकुमार महेंद्र।दिक नाम लेई देव नी स्थिति कही। तिम इहां सौधर्म नो नाम तो नथी लियो समचै स्थिति कही, पिण देव नी स्थिति जाणवी।

तथा असंख्याता वर्षायु सन्नी तिर्यंच व्यंतर में ऊपजता नैं बिचला तीन गमा अनैं छेहला तीन गमा जिम नागकुमार नां उद्देशा में कह्या, तिम कहिवा। णवरं ठितिसवेहं च जाणेज्जा। इहां पिण समचै स्थिति कही, वाणव्यंतर नों नाम नथी कह्यां। पिण ए वाणव्यंतरां नों स्थिति संभवै। जे नागकुमार में तो उत्कृष्ट देश ऊण दोय पल्य नीं स्थिति, इहां व्यंतर में एक पल्य नीं स्थिति। तिम संख्यात वर्षायु सन्नी तिर्यंच सौधमं में ऊपजै, तिहां पिण देव नीं स्थिति जाणवी। ए स्थिति कही ते प्रथम उपपात द्वारे एतली स्थिति में ऊपजै। प्रथम द्वार में फेर अनैं संवेध ते छेहला वीसमा द्वार में फेर जाणवं।

४४. आपणपै सन्नी तिरि हवै,

जघँन्य काल स्थितिक जिह वार जी ।। तीनूई गमा विषे तदा, एह लद्धो सुविचार जी ।।

\*लय: मन करो काया माया १. देखें परि. २, यंत्र १५२

१९६ भगवती जोड़

- ४२. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदय ? संखेज्जवासा-उयस्स जहेव असुरक्मारेस उववज्जमाणस्स
- ४३. तहेव नव वि गमा, नवरं—िर्ठित संवेहं च जाणेज्जा।

४४. जाहे य अप्पणा जहण्णकालद्वितिओ भवति ताहे तिस् वि गमएस् ४५. सम्यकदृष्टि हुवै तिको, मिथ्यादृष्टि पिण होय जी। मिश्रदृष्टि नहिं ह्वै जिको, जघन्य स्थितिक थकी जोय जी।।

### सोरठा

- ४६. जघन्य स्थितिक तिरि मांय, मिश्रदृष्टि पावै नथी। दृष्टि त्रिहुं पिण थाय, अजघन्य आयुवंत में।।
- ४७. \*सम्यकदृष्टि रै नियमा बे ज्ञान नीं, मिथ्यादृष्टि तणैं जोय जी। नियमा है दोय अज्ञान नीं, शेष तिमहीज अवलोय जी।।

#### सोरठा

- ४८. जघन्य स्थितिक तिरिमांय, ज्ञान तथा अज्ञान बे। अविधि विभंग न पाय, तिण सूं नियमा बे तणीं।।
- ४९. \*मनुष्य थकी जो ऊपजै, भेद जिम जोतिषी मांय जी। ऊपजता थकां नें कह्यो, तिम इहां पिण कहिवाय जी।
- ५०. जाव असंख वर्षायुष, सन्नी मनुष्य छै जेह जी। ऊपजवा नैं योग्य छै, सौधर्म देवपणेह जी? पहलै देवलोक में मनुष्य युगलियो ऊपजै, तेहनों अधिकार'
- ५१. इम हिज असंख वर्षायुष, सन्नी पंचेंद्रिय तिर्यंच जी । सोहम्मे ऊपजता तणां, सप्त गमा कह्या संच जी ।।
- ५२. तिमहिज सप्त गमा इहां, णवरं बे धुर गम माय जी। ओगाहण जघन्य गाऊ तणीं, उत्कृष्ट गाऊ त्रिण पाय जी।।

#### सोरठा

- ५३. तिहां युगल तिरि इष्ट, जधन्य पृथक धनु नीं कही। षट गाऊ उरकृष्ट, इहां गाऊ इक तीन नीं।।
- ५४. \*तृतीय गमा नें विषे विल, जघन्य अनें उत्कृष्ट जी। तीन गाऊ नीं अवगाहना, श्री जिन वचन ए श्रेष्ठ जी।

#### सोरठा

- ५५. तिहां जघन्य उत्कृष्ट, आखी षट गाऊ तणीं। इहां गाऊ त्रिण इष्ट, जघन्य अनें उत्कृष्ट थी।।
- ५६. \*तुर्य गमा नें विषे वली, जघन्य अनें उत्कृष्ट जी।
  एक गाऊ नीं अवगाहना, अंतर बे गम इष्ट जी।।
  वा॰—इहां पांचमों, छठो गमो, चउथा गमा नें अंतरगत जाणवो।

#### सोरठा

५७. तिहां धनु पृथक जघन्य, उत्कृष्ट बे गाऊ तणीं। इहां इक गाऊ जन्य, जघन्य अनें उत्कृष्ट थी।।

\*लय: मम करो काया माया

१. देखें परि. २, यंत्र १५४

- ४५. सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्**छा-**दिट्ठी।
- ४६. 'नो सम्मामिच्छादिट्टी' त्ति मिश्रदृष्टिनिषेध्यो जघन्यस्थितिकस्य तदसम्भवादजंघन्यस्थितिकेषु दृष्टित्रयस्यापि भावादिति, (वृ० प० ८५१)
- ४७. दो नाणा दो अण्णाणा नियमं। 'सेसं तं चेव' १-९। (श० २४।३४२)
- ४८. तथा ज्ञानादिद्वारेऽपि द्वे ज्ञाने वा अज्ञाने वा स्यातां, जघन्यस्थितेरन्ययोरभावादिति । (वृ० प० ८५१)
- ४९. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति ? भेदो जहेव जोति-सिएसु उववज्जमाणस्स,
- ५०. जाव— (श० २४।३४३) असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उवविज्जत्तए ?
- ५१. एवं जहेव असंक्षेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिदिय-तिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स
- ४२. तहेव सत्त गमगा, नवरं—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं।
- ५३. आद्यगमयोहि सर्वत्र धनुःपृथक्त्वं जघन्यावगाहना उत्कृष्टा तु गव्यूतषट्कमुक्ता इह तु 'जहन्नेणं गाउय' मित्यादि, (वृ० प० ८५१)
- ४४. तितयगमे जहण्णेण तिष्णि गाउयाइं. उक्कोसेण वि तिष्णि गाउयाइं।
- ४४. तृतीयगमे तु जघन्यत उत्कर्षतश्च षड् गन्यूतान्यु-क्तानि इह तुत्रीणि, (वृ० प० ८५१)
- ५६ चउत्थगमए जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं।
- ४७. चतुर्थे गमे तु प्राग् जघन्यतो धनुष्पृथक्तवमुत्कर्षतस्तु हे गव्यूते उक्ते इह तु जघन्यत उत्कर्षतश्च गव्यूतम्, (वृ० प॰ ६४१)

श० २४, उ० २४, ढा० ४३२ १९७

- ५८. \*पाछला तीन गमा विषे, जघन्य अनें उत्कृष्ट जी। तीन गाऊ नीं अवगाहना, शेष तिमज सहु इष्ट जी।। वा॰ —ए असंख वर्षायु सन्नी मनुष्य सौधर्मे ऊपजै, तेहनां ७ गमा कह्या। पहलै देवलोक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार'
- ५९. जो संख वर्षायु सन्नो मनुष्य, इम संख वर्षायुष जाण जी । सन्नी मनुष्य जिम असुर में, ऊपजता नैं पिछाण जी ।।
- ृ६०. तिमज इहां पिण नव गमा, णवरं सौधर्म सुर स्थित जी । कायसंवेध विल जाणवूं, शेष तिमहिज कथित जी ।।

वा० — प्रथम, चतुर्थं, सप्तम गमे जघन्य १ पल्य, उत्कृष्ट २ सागर। द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्य-उत्कृष्ट १ पल्य नी स्थिति। तृतीय, षष्टम, नवम गमके जघन्य-उत्कृष्ट २ सागर नी थिति।

हिवै कायसंवेधे भव जघन्य गमे २, उत्कृष्ट गमे ६। तेहनों नव ही गमे काल कहै छै -प्रथम गमे जघन्य पृथक मास १ पत्य, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ६ सागर। द्वितीय गमे जघन्य पृथक मास १ पत्य, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ४ पत्य। तृतीय गमे जघन्य पृथक मास २ सागर, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ६ सागर। चतुर्ष गमे जघन्य पृथक मास १ पत्य, उत्कृष्ट ४ पृथक मास ६ सागर। पंचम गमे जघन्य पृथक मास १ पत्य, उत्कृष्ट ४ पृथक मास ४ पत्य। षष्ठम गमे जघन्य पृथक मास १ पत्य, उत्कृष्ट ४ पृथक मास ४ पत्य। षष्ठम गमे जघन्य कोड़ पूर्व १ पत्य, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ६ सागर। अष्टम गमे जघन्य कोड़ पूर्व १ पत्य, उत्कृष्ट ४ कोड पूर्व ४ पत्य। नवम गमे जघन्य कोड़ पूर्व ६ सागर, उत्कृष्ट ४ कोड़ पूर्व ६ सागर।

- ६१. ईशाण सुर प्रभु ! किहां थकी ऊपजै ते सलहीज जी ? सौधर्म सुर सम वारता, ईशाण सुर नीं एहीज जी।। दूजें देवलोक में तिर्यंच युगलियो ऊपजै, तेहनों अधिकार'
- ६२. णवरं जे युगल तिर्यंच नीं, जेह स्थानक विषे जात जी। ऊपजता नें सौधर्म में, स्थिति पल्योपम ख्यात जी।।
- ६३. तिम इहां युगल तिर्यंच नें, स्थानक तेह विषेह जी। ऊपजता नें ईशाण में, साधिक पत्य करेह जी।।

#### सोरठा

- ६४. ईशाणे अवलोय, साधिक पल्योपम तणीं । स्थिति जघन्य छै सोय, तिणसूं साधिक पल्य कही ।।
- ६५. \*तुर्य गमे अवगाहना, जघन्य पृथक धनु जाण जी । उत्कृष्ट साधिक गाउ बे, शेष तिमहिज पहिछाण जी ।।

- ४८. पिच्छमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव निरव-सेसं। (श० २४।३४४)
- ५९. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणृस्सेहितो ? एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणृस्साणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं
- ६०. तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेव-द्विति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव १-९ । (श० २४।३४५)

- ६१. ईसाणदेवा णं भते ! कओहितो उववज्जिति ? ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वत्तव्वया,
- ६२. नवरं असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्ख-जोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पिलओवमठिती
- ६३. तेसु ठाणेसु इह सातिरेगं पलिओवमं कायव्वं।
- ६४. 'सातिरेगं पलिओवमं कायव्वं' ति ईशाने सातिरेक-पत्योपमस्य जघन्यस्थितिकत्वात्, (वृ० प० ६५१)
- ६५. चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेणं घणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो गाउयाइं। सेसं तहेव। (श० २४।३४६)

Committee of the Commit

<sup>\*</sup>लयः ममुकरो काया माया १. देखें परि० २, यंत्र १५०

१८६ भगवती जोड़

वा० अवगाहना जघन्य पृथक धन्ष्य नीं कही, तेहनुं न्याय जे सुषम अरा नैं विषे साधिक पत्योपम आउखावंत तिर्यंच ऊपनां, ते तिर्यंच में जेहनीं लघु काय छै, तेहनीं अपेक्षाए कह्युं। उत्कृष्ट साधिक बे गाऊ नीं कही, तेहनों न्याय जे काल नैं विषे जे मनुष्य नीं अवगाहना साधिक गाऊ नीं हुवैं। ते काल नैं विषे ऊपनां जे हस्ती प्रमुख तेहनीं अपेक्षाए साधिक बे गाऊ नीं कही।

# दूजै देवलोक में मनुष्य युगलियो ऊपजै, तेहनों अधिकार'

६६. असंख वर्षायुष नां सन्नी मनुष्य नैं पिण तिमहीज जी। स्थिति जिम युगल तियँच नैं, आखी छै तिम सलहीज जी।।

वा० असंख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य ईशान कल्पे ऊपजै, तेहनीं पिण जिम सौधर्मे युगलियो मनुष्य ऊपजै तेहनीं वक्तव्यता कही तिमहीज कहिवी। अने स्थिति जिम तियंच युगलियो ईशाने ऊपजै, तेहनीं कही तिम कहिवी। एतर्ले तियंच युगलिया नैं जे स्थानक नैं विषे सौधर्मे ऊपजता थका नैं पत्यापम स्थिति कही, तिम तियंच युगलिया नैं ते स्थानक नैं विषे ईशाने ऊपजता नैं स्थिति साधिक पत्य नीं कहिवी एहवूं तियंच नैं अधिकारे कह्यां छै, तिमहिज युगलिया मनुष्य नैं अधिकारे कहिवूं। तेहनीं विधि कहै छै— जे असंख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य नैं जे स्थानक नैं विषे सौधर्मे अपजता थका नैं पत्योपम नीं स्थिति कही, तिम युगलिया मनुष्य नैं ते स्थानक नैं विषे ईशान कल्पे ऊपजतां थकां नैं स्थिति साधिक पत्योपम नीं कहिवी।

६७. अवगाहना पिण इह विधे, जे स्थानके गाऊ नीं ख्यात जी। तेह स्थानक नें विषे इहां, साधिक गाऊ नीं थात जी।।

वाo—अवगाहना पिण सौधर्म कल्प में युगलियो मनुष्य ऊपजें, ते अधिकारे जे स्थानक नैं विषे असंख्यात वर्षायुष सन्नी मनुष्य नीं एक गाऊ नीं अवगाहना कही, ते स्थानक नैं विषे ईशान कल्पे युगलियो मनुष्य ऊपजता थका नीं साधिक गाऊ नीं कहिवी।

- ६ द. शोष परिमाणादि जे लद्धी, तिणहीज रीत कहेह जी। सोहम्मे युगल मनु ऊपजै, तिमज ईशान विषेह जी।।
- ६९. संख वर्षायु सन्नी तिरि', अथवा सन्नी मनु' जाण जी। जिमहिज सौधर्म कल्प में, ऊपजतां नें पिछाण जी।।
- ७०. तिमहिज नव गमका सहु, णवरं ईशान विषेह जी ।
   देव तणीं स्थिति जाणवी, विल जाणवूं कायसंवेह जी ।।

वा॰ — स्थिति जे प्रथम, चोथे, सातमे गमे संख्यात वर्षायु सन्नी तियंच पर्याप्तो सन्नी मन्ष्य ईशान कल्पे जघन्य साधिक पल्योपम काल स्थितिक नैं विषे ऊपजै, उत्कृष्ट साधिक दोय सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजै। अनै वा॰—'चउत्थगमए ओगाहणा जहन्नेणं धणुहपुहुत्तं' ति ये सातिरेकपल्योपमायुषस्तियंञ्चः सुषमा-रोद्भवाः क्षद्रतरकायास्तानपेक्ष्योक्तम्,—'उक्कोसेणं साइरेगाइं दो गाउयाइं' ति एतच्च यत्र काले साति-रेकगव्यूतमाना मनुष्या भवन्ति तत्कालभवान् हस्त्यादीनपेक्ष्योक्तं, (वृ० प० ८५१)

६६. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा पचिदियतिरिक्खजोणियस्स असंखेज्जवासा-उयस्स ।

६७. ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउयं।

वा०—'जेसु ठाणेसु गाउयं' ति सौधम्मंदेवाधिकारे
येषु स्थानेष्वसङ्ख्यातवर्षायुर्मनुष्याणां गव्यूतमुक्तं
'तेसु ठाणेसु इहं साइरेगं गाउयं' ति जघन्यतः सातिरेकपल्योपमस्थितिकत्वादीशानकदेवस्य प्राप्तव्यदेवस्थित्यनुसारेण चासङ्ख्यातवर्षायुर्मनुष्याणां
स्थितिसद्भावात् तदनुसारेणेव च तेषामवगाहनाभावादिति । (वृ० प० ८५१)

६८. सेसं तहेव। (श० २४।३४७)

- ६९. संखेज्जवासाउयाणं तिरिक्ख गोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्जमाणाणं
- ७०. तहेव निरवसेसं नव वि गमगा, नवरं ईसाणिठितिं संवेहं च जाणेज्जा। (श० २४।३४८)

श० २४, उ० २४, ढा० ४३२ १९९

१. देखें परि २, यत्र १५३

२. देखें परि २, यंत्र १५१

३ देखें परि २, यंत्र १५४

दूजे, पांचमे, आठमे गमे जवन्य-उत्कृष्ट साधिक पल्योपम काल स्थितिक नैं विषे ऊपजैं। अनैं तीजे, षष्ठम, नवम गमे जघन्य उत्कृष्ट साधिक बे सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजे। अनैं कायसंवेध गमे-गमे प्रति बिहुं भव नीं स्थिति विचारी कहिवूं।

- ७१. सनतकुमार सुर हे प्रभु ! किहां थकी ऊपजेह जी ? इह विधि प्रक्त पूछ्ये छते, श्री जिन उत्तर देह जी।।
- ७२. जिम सक्करप्रभा पृथ्वी तणां, नेरइया नुं उपपात जी। आखियो तिणहिज रीत सूं, इहां कहिवूं अवदात जी।। तीजं देवलोक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तियंच ऊपजें, तेहनों अधिकार
- ७३. यावत जेह पर्याप्ता, संख वर्षायु सन्नी तिर्यंच जी। जेह ऊपजवा नैं योग्य प्रभु! सुर सनतकुमार में संच जी।।
- ७४. शेष परिमाण नें आदि दे, फुन भवादेश पर्यंत जी। जिम ऊपजता नें सौधर्म मे, तिम सहु वार्ता हुंत जी।।
- ७५. णवरं जे सनतकुमार नीं, स्थिति फुन कायसंवेह जी। उपयोगे करी जाणवूं, गमे-गमे प्रति जेह जी।।

वा० - प्रथम, चतुर्थ, सप्तम गमके संख्यात वर्षायु सन्नी तियंच पर्याप्तो सनतकुमार कल्पे जघन्य २ सागर, उत्कृष्ट ७ सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजें। अने द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्योत्कृष्ट २ सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजें। अने तृतीय, पष्टम, नवम गमके जघन्य-उत्कृष्ट ७ सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजें। अने कायसंवेधे संख्यात वर्षायु सन्नी तियंच अने सनत-कुमार देव ए बिहुं भव नीं स्थिति विचारी कहितूं।

७६. आपणपै सन्नी तिरि हुवै,

जैंघन्य काल स्थितिक जिहवार जी। तीनूई गमक विषे तदा, कहिवी धुर लेश पंच धार जी।।

वा० जघन्य स्थितिक तिर्यंच सनतकुमार नै विषे ऊपजै तो जघन्य स्थिति सामध्यं थकी कृष्णादि च्यार लेश्या मांहै अनेरी एक लेश्या नै विषे परिणत थई मरण समये पद्मलेश्या प्रते आसादी नै मरें, तिवारे आंगला भव नी लेश्या परिणाम थयां जीव परभव प्रते जावै। इसो आगम मांहै कह्युं छै। तिवारे एहनै पंच लेश्या हुवै।

७७. शेष तिमज कहिवो सहु, ए कह्यो सन्नी तिर्यंच जी। सन्नी मनुष्य थकी ऊपजै, कहियै छै तेह सुसंच जी।। तीर्ज देवलोक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार

७८. जो सन्नी मनुष्य थकी ऊपजै, मनुष्य नै जिमहिज जाण जी । सक्करप्रभा नारिक विषे ऊपजता नै पहिछाण जी ।।

- ७१. सणंकुमारदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?
- ७२. उववाओ जहा सक्करप्पभापुढिविनेरइयाणं,
- ७३. जाव (श० २४।३४९) पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणंकुमारदेवेसु उववज्जित्तए ?
- ७४. अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा सोहम्मे उववज्जमाणस्स,
- ७५. नवरं --सणंकुमारद्विति संवेहं च जाणेज्जा।

७६. जाहे य अप्पणा जहण्णकालिंद्वतीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ काय-व्वाओ।

वा० 'पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ' त्ति जघन्यस्थितिकस्तिर्यक् सनत्कुमारे समुह्पित्सुर्जघन्य-स्थितिसामर्थ्यात्कृष्णादीनां चतसृणां लेश्यानामन्य-तरस्यां परिणतो भूत्वा मरणकाले पद्मलेश्यामासाद्य मित्रयते ततस्तत्रोत्पद्यते, यतोऽग्रेतनभवलेश्यापरिणामे सित जीवः परभवं गच्छतीत्यागमः, तदेवमस्य पञ्च लेश्या भवन्ति । (वृ० प० ८५१)

७७. सेसं तं चेव। (श० २४।३५०)

७८. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति ? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाणं

१. देखें परि २, यंत्र १५५

२. देखें परि २, यंत्र १५७

२०० भगवती जोड

७९ तिमज इहां पिण नव गमा, णवरं विशेष छै एह जी ।। सनतकुमार नीं स्थिति वली, कायसंवेध जाणेह जी ।।

वा०—सन्नी तियँच सनतकुमार में ऊपजै तिहां नव गमे सनतकुमार देव नीं स्थिति कही, तिका इहां पिण जाणवी। अनैं कायसंवेध नवूं गमे यंत्र थकी जाणवो।

चौर्यं स्यूं आठवें देवलोक तक सन्नी तिर्यंच अने सन्नी मनुष्य अपजै, तेहनों अधिकार'

- प्रकार पाहेंद्र देव ! भगवंत जी ! किहां थकी उपजंत जी ? जिम कह्युं सनतकुमार नों, तिम माहेंद्र सुर पिण हुंत जी ।।
- ५१. णवरं माहिंदग सुर स्थिति, साधिक भणवी है सोय जी। सर्व ही इम ब्रह्मलोक नां, सुर नीं पिण वारता जोय जी।। ५२. णवरं ब्रह्मलोक सुर नीं स्थिति, अथवा संवेध पहिछाण जी।। एम यावत ही सहस्सार लग, णवरं स्थिति संवेध जाण जी।।

वा० - ब्रह्मलोक सुर नीं स्थित पहिले, चौथे, सातमे गमे जघन्य ७ सागर, उत्कृष्ट १० सागर। द्वितीय, पंचम, अष्टम गमे जघन्य-उत्कृष्ट ७ सागर। तीजे, छठे, नवमे गमे जघन्य-उत्कृष्ट १० सागर। अनें कायसंवेध सन्नी मनुष्य अनें ब्रह्मलोके सुर ए बिहुं नां भव नीं स्थिति नों काल जघन्योत्कृष्ट विचारी कहिवूं। लंतक सुर नीं स्थिति १, ४, ७ गमे जघन्य १० सागर, उत्कृष्ट १४ सागर। २, ५, ५, गमे जघन्य-उत्कृष्ट १० सागर। ३, ६, ९ गमे जघन्य-उत्कृष्ट १४ सागर। महाशुक्र देव नीं स्थिति १, ४, ७ गमे जघन्य १४ सागर, उत्कृष्ट १४ सागर। नहां शुक्र देव नीं स्थिति १, ४, ७ गमे जघन्य १४ सागर, उत्कृष्ट १७ सागर। २, ५, ६, गमे जघन्य-उत्कृष्ट १७ सागर। सहस्सार देव नीं स्थिति १, ४, ७ गमे जघन्य १७ सागर, उत्कृष्ट १८ सागर। २, ६, ९ गमे जघन्य-उत्कृष्ट १८ सागर। ३, ६, ९ गमे जघन्य-उत्कृष्ट १८ सागर। ३, ६, ९ गमे जघन्य-उत्कृष्ट १८ सागर। सर्व ठिकाणें कहिवो।

५३. लंतकादिक विषे ऊपजै, जघन्य काल स्थितिक तिर्यंच जी ।
त्रिण मध्य गमक तेहनैं विषे, किहवी लेश्या छहुं संच जी ॥

वा० सनतकुमार नै विषे जघन्य काल स्थितिक तिरि ऊपजता नै पंच लेक्या पूर्वे जिणे न्याय करिकै कही, तिण न्याय करे स्रंतकादिक नै विषे ऊपजता नै इहां षट लेक्या कहिवी ।

दथ. ऊपजतो ब्रह्म लंतके, पंच संघयण धुर पेख जी।
 महाशुक्र सहस्सार फुन, च्यार संघयण धुर देख जी।

वाo — छेवटा संघयण नां धणी प्रथम च्यारईज देवलोक नां गमन निबंधपणां थकी अनैं पांचमां, छठा कल्प नैं विषे ऊपजता थका नैं छेवटा बिना पंच संघयण पार्वे। अनैं सातमां, आठमां कल्प में ऊपजैं, तिण में कीलिका, छेवटा बिना च्यार संघयण पार्वे।

दर्थ. चिहुं संघयण तियँच में पिण अछै, मनुष्य में पिण चिहुं जाण जी। शेष तिमहिज कहिवो सहु, श्री जिन आण प्रमाण जी।।

१ देखें परि. २, यंत्र १४४-१५७

७९. तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवरं—सणंकुमार-द्विति संवेहं च जाणेज्जा। (श० २४।३५१)

- माहिदगदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ?
   जहा सणंकुमारदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिदगदेवाण वि भाणियव्वा.
- ५१. नवरं—माहिदगदेवाणं ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सच्चेव। एवं बंभलोगदेवाण वि वत्तव्वया,
- नवरं—बंभलोगट्विति संवेहं च जाणेज्जा । एवं जाव सहस्सारो, नवरं—िठिति संवेहं च जाणेज्जा ।

- ५३. लंतगाडीणं जहण्णकालद्गितियस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्पाओ कायव्वाओ । वा०—'लंतगाईणं जहण्णे' त्यादि, एतद्भावना चानन्तरोक्तन्यायेन कार्या, (वृ० प० ८५१)
- ५४. संघयणाइ बंभलोग-लंतएसु पंच आदिल्लगाणि,
  महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि ।
   चा० सेवार्तसंहननस्य चतुर्णामेव देवलोकानां गमने
  निबन्धनत्वात्, यदाह—
  ''छेवट्ठेण उ गम्मइ चत्तारि उ जाव आइमा कप्पा ।
  वड्ढेण्ज कप्पजुयलं संघयणे कीलियाईए ॥१॥''
  (व्० प० ६५१)
- ८४. तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि । सेसं तं चेव । (श० २४।३४२)

जाठ २४. 🐃 २४, हार ४३२ 🏸 २०१

## नोवें देवलोक में सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार'

- द्ध. आणत देवता हे प्रभु! किहां थकी उपजेह जी? उपपात जिम सहस्सार देव नों, आख्यो तेम कहेह जी।।
- द७. णवरं विशेष छै एतलो, आणत कल्प विषेह जी। तिरिक्खयोनिक नहि ऊपजै, मनुष्य थकी उपजेह जी।।
- ५८. जाव पर्याप्त संख्यात जे, वर्षायु सन्नो मनु जेह जो । जेह ऊपजवा नैं योग्य छै, आणत कल्प विषेह जी ।।
- द९. इत्यादि मनुष्य नीं वारता, जिम सहस्सार विषेह जी। ऊपजता नें आखी तिका, वक्तव्यता इहां लेह जी।।
- ९०. णवरं घुर तीन संघयण ह्वं, शेष परिमाणादि जाण जी। कहिवो है कल्प सहस्सार ज्यूं, अनुबंध लग पहिछाण जी।।
- ९१. भवादेश करि जघन्य थी, तीन भव ग्रहण करेह जी। उत्कृष्ट सप्त भव ग्रहण छै, हिव तसु न्याय वरेह जी।।

### सोरठा

- ९२. आणत प्रमुख माय, उपजै मनुष्य थकीज ते। चवी मनुष्य में आय, जघन्य थकी भव तीन इम।।
- ९३. प्रथम मनुष्य भव पेख, आणत सुर दूजे भवे। तीजे भव मनु लेख, जघन्य थकी भव तीन इम।।
- ९४. भव उत्कृष्टज सात, मनुष्य देव मनु सुर विल । मनुष्य देव मनु ख्यात, इम उत्कृष्टज सप्त भव।।
- ९५. \*काल आदेश करि जघन्य थी, सागर किह्यै अठार जी । दोय पृथक वर्ष अधिक ही, हिव तसु न्याय अवधार जी ।।

### सोरठा

- ९६. प्रथम मनुष्य भव मांय, वर्ष पृथक नों आउखो। भोगव आनत जाय, उदिध अठार जघन्य स्थिति।।
- ९७. तीजै भव अवधार, वर्ष पृथक स्थितिक ह्वै। एवं उदिध अठार, वर्ष पृथक वे अधिक फुन।।
- ९८. \*उत्कृष्ट काल भव सप्त नों, उदिध सत्तावन न्हाल जी। कोड़ पूर्व चिहुं अधिक ही, ए गति-आगति काल जी।।

### सोरठा

- ९९. आनत कल्पे सोय, उत्क्रष्ट स्थिति उगणीस दिध । ते त्रिण सुर भव होय, उदिध सतावन इम हुवै ।।
- १००. कोड़ पूर्व नां पेख, करै च्यार भव मनुष्य नां। इणन्याये करिलेख, कोड़ पूर्व चिहुं अधिक ही।।
- \*लय: मन करो काया माया
- १. देखे परि. २, यंत्र १५६
- २०२ भगवती जोड़

- ५६. आणयदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं,
- ८७. नवरं तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा,
- प्रः जाव -- (श्र० २४।३५३) पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए आणयदेवेसु जववज्जित्तए ?
- पणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्ज-माणाणं,
- ९०. नवरं तिण्णि संघयणाणि, सेसं तहेव जाव अणु-बंधो।
- ९१. भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं।
- ९२. 'जहन्नेणं तिन्ति भवग्गहणाइ' ति आनतादिदेवो मनुष्येभ्य एवोत्पद्यते तेष्वेव च प्रत्यागच्छतीति जघन्यतो भवत्रयं भवतीति, (वृ० प० ८५१,८५२)
- ९४. एवं भवसप्तकमप्युत्कर्षतो भावनीयमिति, (वृ० प० ५५२)
- ९५. कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं,

- ९८. उक्कोसेणं सत्तावन्तं सागरोवमाइं चउिंह पुन्व-कोडीहि अन्भहियाइं, एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं काल गितरागित करेज्जा।
- ९९. 'उक्कोसेणं सत्तावन्न' मित्यादि, आनतदेवाना-मुत्कर्षत एकोनिविश्वतिसागरोपमाण्यायुः, तस्य च भवत्रयभावेन सप्तपञ्चाश्वतसागरोपमाणि। (वृ० प० ६५२)
- १००. मनुष्यभवचतुष्टयसम्बन्धिपूर्वकोटिचतुष्काभ्यधिकानि भवन्तीति । (वृ० प• ५५२)

१०१. \*शोष पिण अठ गमा इह विधे, भणवा पिण णवरं विशेख जी । स्थिति संवेध प्रति जाणवृं, शोष तिमहिज संपेख जी ।।

वा० — इहां आणत सुर नैं विषे मनुष्य ऊपजै, तेहनें सहस्सार नैं विषे मनुष्य ऊपजै तेहनें भलायो। जिवारै कोई पूछै – मनुष्य सहस्सार देव नैं विषे ऊपजै तेहनें भिलायो। जिवारै कोई पूछै – मनुष्य सहस्सार देव नैं विषे ऊपजै तेहनीं स्थित जवन्य १७ सागर, उत्कृष्ट १८ सागर हुवै। अनैं आणत देव नीं जवन्य १८ सागर, उत्कृष्ट १९ सागर हुवै। ते इहां सहस्सार सुर थकी आणत देव नीं स्थिति में फेर नथी पाड़चो ते किम ? इति प्रश्न। तेहनों उत्तर — जे पूर्वे ब्रह्मलोक में ऊपजै, ते माहेंद्र में ऊपजै तिण नैं भलायो। णवरं ठितिसंवेहं च जाणेज्जा। ए ब्रह्मलोक नां देव नीं स्थिति अनैं संवेध में फेर जाणवो एवं जाव सहस्सारो जवरं — ठितिसंवेहं च जाणेज्जा — इम यावत सहस्सार सुर नीं स्थिति संवेध में फेर जाणवो। अनैं आणत सुर किहां थकी ऊपजै ? तेहनों उपपात सहस्सार नीं पर किहां। जवरं तिर्यंच न ऊपजै। जाव पर्याप्त संख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य भगवान! आणत देव नैं विषे ऊपजवा योग्य तेहनीं पूछा — मनुष्य नीं वक्तव्यता जिमहिज सहस्सार नैं विषे ऊपजवा योग्य तेहनीं पूछा — मनुष्य नीं वक्तव्यता जिमहिज सहस्सार नैं विषे ऊपजवा योग्य तेहनीं पूछा — मनुष्य नीं संघण। शेष तिमज अनुबंध लगै।

इहां आणत नैं सहस्सार भलायो, ते सहस्सार नैं विषे ठितिसंवेहं च जाणेजजा कह्यो । ते आणत सुर नीं स्थिति में अनैं संवेध में फेर इहां पिण कहिवो । तिहां स्थिति प्रथम, चतुर्थ, सप्तम गमके जघन्य १८ सागर, उत्कृष्ट १९ सागर । अनैं द्वितीय, पंचम, अष्टम गमके जघन्योत्कृष्ट १८ सागर । अनैं तृतीय, षष्ठम, नवम गमके जघन्योत्कृष्ट १९ सागर । अनैं कायसंवेध मनुष्य, आणत सुर ए बिहुं नां जघन्योत्कृष्ट भव नुं काल विचारी कहिवूं।

दसवैं स्यूं बारहवें देवलोक तक सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार'

१०२. एवं यावत ही अच्युत सुरा, णवरं विशेष छै एह जी । द्वितीय तथा कायसंवेध प्रति, उपयोग करीनें जाणेह जी ।।

वा०—पाणत, आरण, अच्चु सुर नैं विषे ऊपजवा योग्य मनुष्य ऊपजै, ते केतला काल नीं स्थिति नैं विषे ऊपजै ? इहां पाणत सुर नीं स्थिति १,४,७ गमे जघन्य १९ सागर, उत्कृष्ट २० सागर। २,४,५ गमे जघन्योत्कृष्ट १९ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट २० सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजै। अनैं आरण सुर नीं स्थिति १,४,७ गमे जघन्य २० सागर, उत्कृष्ट २१ सागर। २,४, ६ गमे जघन्योत्कृष्ट २१ सागर। २,५,६ गमे जघन्योत्कृष्ट २१ सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजै। अनैं अच्चु सुर नीं स्थिति १,४,७ गमे जघन्य २१ सागर, उत्कृष्ट २२ सागर। २,५,६ गमे जघन्योत्कृष्ट २१ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट २१ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट २२ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट २१ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट २१ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट २२ सागर। अनै कायसंवेध सर्व नुं विचारी कहिवूं।

१०३. आनतादिक चिहुं कल्प में, ऊपजता ने कहाय जी। तीन संघयण जे आदि नां, आखिया श्री जिनराय जी।

\*लयः मम करो काया माया १. देखें परि. २ यत्र १५७ १०१. एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं— ठिर्ति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव।

१०२. एवं जाव अच्चुयदेवा, नवरं—िटिति संवेहं च जाणेज्जा ।ै

१०३. चउसु वि संघयणा तिण्णि आणयादीसु । (श० २४।३५४)

श० २४, उ० २४, ढा० ४३२ १०३

#### नव ग्रेवेयक में सन्नी मनुष्य ऊपजै, तेहनों अधिकार'

- १०४. सुर ग्रैवेयक भगवंत जी ! किहां थकी उपजंत जी । एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं विशेष ए हुंत जी ।। १०५. दोय संघयण ते मनुष्य में, देव नीं स्थिति उदार जी । कायसंवेध बिहु भव तणों, जाणवो मन सूं विचार जी ।।
- वा० इहां ग्रेवेयक देव नीं स्थिति १,४,७ गमे जघन्य २२ सागर, उत्कृष्ट ३१ सागर। २,४,८, गमे जघन्योत्कृष्ट २२ सागर। ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट ३१ सागर काल स्थितिक नै विषे ऊपजै। कायसंवेध विचारी कहिवूं।

#### चार अनुत्तर विमान में सन्नी मनुष्य ऊपजे, तेहनों अधिकार<sup>र</sup>

- १०६. हे भगवंत जी ! विजय सूर, फुन वैजयंत कहेह जी। जयंत अपराजित देव ते, किहां थकी उपजेह जी?
- १०७. एहिज वक्तव्यता सहु, जाव अनुबंध लगेह जी णवरं विशेष संघयण घुर, शेष तिमहिज कहेह जी ।

वा० -- इहां विजयादिक नीं स्थिति जघन्य ३१ सागर, उत्कृष्ट ३३ सागर। ए ग्रैवेयक थकी ओघिक छै, ते किम नथी कहां ? एहनों उत्तर—इहां विजया-दिक नों प्रश्न करी ग्रैवेयक नीं वक्तव्यता ते सहु भलाई तिण ग्रैवेयक री वक्तव्या में एहवूं पाठ कहां छै— 'ठितिसंवेहं च जाणेज्जा—ए पाठ इहां पिण कहिवो। ते माटै स्थिति रो जुदो विशेष नथी करघो अनै मनुष्य नां संघयण नों जुदो विशेषण करघो।

- १०८. भवादेश करि जघन्य थी, तीन भव ग्रहण करेह जी। प्रथम मनुष्य भव जाणवूं, द्वितीय सुर तृतीय नर लेह जी।।
- १०९. उत्कृष्ट पंच भव ग्रहण ह्वं, धुर मनु द्वितीय भव देव जी। तृतीय मनु तुर्य भव सुर तणों नर भव पंचमो हेव जी।।
- ११०. काल आदेश करि जघन्य थी, सागर सुर इकतीस जी।
  पृथकज वर्ष वे अधिक हो, मनुभव एह जगीस जी।।
- १११. उत्कृष्ट दिध छासठ विल, कोड़ पूर्व विल तीन जी। उत्कृष्ट सुर स्थिति भवे, त्रिण भव मनुष्य नां चीन जी।।
- ११२. करै काल गति-आगति एतलुं, शेष पिण अठ गम एम जी । णवरं स्थिति कायसंवेध प्रति, जाणवूं ते धर प्रेम जी ।।

चा॰ — इहां च्यार अनुत्तर विमान देव नीं स्थिति १,४,७ गमे जघन्य ३१ सागर, उत्कृष्ट ३३ सागर । २,५,८ गमे जघन्योत्कृष्ट ३१ सागर । ३,६,९ गमे जघन्योत्कृष्ट ३३ सागर काल स्थितिक नैं विषे ऊपजे । अनैं कायसंवेध विचारी कहिवूं।

- ११३. मनुष्य विषेज लद्धी जिका, परिमाणादिक नीं पहिचाण जी। गमक नव ही नैं विषे जिका, आगल कहिये सुजाण जी।।
- ११४. जिम ग्रैवेयक नें विषे, ऊपजता नें आख्यात जी। कहिवो है तिणहीज रीत सूं, णवरं संघयण धुर थात जी।।

- १०४. गेवेज्जगदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
- १०५. दो संघयणा । ठिति संवेहं च जाणेज्जा । (श० २४।३५५)

- **१०६. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजित देवा णं भंते** कओहिंतो उववज्जंति ?
- १०७. एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव अणुबंधो ति, नवरं—पढमं संघयणं । सेसं तहेव ।

- १०८. भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं,
- १०९. उनकोसेणं पंच भवग्गहणाइं।
- ११०. कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं,
- १११. उक्कोसेणं छाविंदु सागरोवमाइं तिर्हि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं,
- ११२ एवितयं कालं सेवेज्जा, एवितयं कालं गितरागीत करेज्जा । एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ।
- ११३. मणूसलद्भी नवसु वि गमएसु
- ११४. जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, ्नवरं पढम-संघयणं (श॰ २४।३४६)

१. देखें परि. २, यंत्र १५८

२. देखें परि. २, यंत्र १५९

२०४ भगवती जोड़

#### सर्वार्थंसिद्ध में सन्नी मनुष्य ऊपजे, तेहनों अधिकार'

- ११४. सन्वट्ठसिद्धग सुरा हे प्रभु! किहां थकी उपजंत जी? ऊपजवोज विजयादि नों, जिम कह्यो तिमज ए हुंत जी।।
- ११६. यावत ते भगवंतजी ! केतला काल नीं ताय जी। स्थितिक विषे तिको ऊपजै ? ताम कहै जिनराय जी।।
- ११७. स्थिति जघन्य उत्कृष्ट थी, तेतीस सागर तेह जी। काल स्थितिक विषे ऊपजै, मनु ऊपजवा योग्य जेह जी।।
- ११८. शेष परिमाण नैं आदि दे, विजयादिक विषे विख्यात जी। ऊपजता नैं जिम आखियो, तिमज कहिवूं अवदात जी।।
- ११९. भवादेशे करि तीन भव, प्रथम मनुष्य नु पेख जी। द्वितीय सर्वार्थसिद्ध सुरा, तृतीय फुन मनु भव लेख जी।।

१२०. काल आदेश करि जघन्य थी,

सुर स्थिति उदधि तेतीस जी । पृथक जे वर्ष बे अधिक फुन,

मनुष्य भव स्थिति जगीस जी।।

- १२१. उत्कृष्ट उदिध तेतीस सुर, पूर्व कोड़ बे न्हाल जी। एतलो काल सेवै तिको, ए गति-आगित काल जी।।
- १२२. तेहिज आपणपै थयो, जघन्य काल स्थितिकवंत जी। एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं विशेष कहंत जी।।
- १२३. पृथक कर नीं अवगाहना, पृथक वर्ष स्थिति तास जी। शेष तिमहीज कहिवो सहु, संवेध जाणवूं जःस जी।।

#### सोरठा

- १२४. कालादेश संवेह, जघन्य अने उत्कृष्ट यी । दिध तेतीस सुरेह, वर्ष पृथक बे अधिक ही ।।
- १२५. \*तेहिज आपणपै थयुं, जिष्ठ काल स्थितिकमंत जी । एहिज वक्तव्यता तसु, णवरं विशेष ए हुंत जी ।।
- १२६. मनुभव में अवगाहना, जघन्य अने उत्कृष्ट जी। पांचसौ धनुष्य नी जाणवी, आउखो हिव तसु इष्ट जी।।
- १२७. स्थिति तसु जघन्य थी कोड़ पुव्व,

उत्कृष्ट पिण पूर्व कोड़ जी । शेष तिमहिज कहिवो सहु, लद्घी परिमाणादि जोड़ जी ।।

१२८. यावत भव आश्रयी लगै, काल तसु जघन्य उत्कृष्ट जी। तेतीस सागर सुर भवे, बे पुग्व कोड़ मनु इष्ट जी।।

\*लय: मम करो काया माया १. देखें परि. २, यंत्र १६०

- ११५. सव्बट्टगसिद्धगदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? उववाओ जहेव विजयादीणं,
- ११६. जाव (श० २४।३५७) से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
- ११७. गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीससागरोवमिट्ठतीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवमिट्ठतीएसु उववज्जेज्जा।
- ११८. अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जंताणं,
- ११९. नवरं-भवादेसेणं तिण्णि भवग्गहणाइं,
- १२०. कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तींहं अब्भहियाइं,
- १२१. उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोबमाइं दोहि पुब्व-कोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा १!

(श० २४।३५८)

- १२२. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्या, नवरं—
- १२३. ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि । सेसं तहेव । संवेहं च जाणेज्जा २ । (श० २४।३५९)
- १२५. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालहितीओ जाओ, एस चेव वत्तक्वया, नवरं—
- १२६. ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं।
- १२७. ठिती जहण्णेणं पुन्वकोडो, उक्कोसेण वि पुन्वकोडी। सेसं तहेव
- १२८. जाव भवादेसो ति । कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुब्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्को-सेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुब्वकोडीहिं अब्भहियाइं,

शब २४, उ० २४, ढा० ४३२ २०५

१२९. एतलो काल सेवै तिको, ए गति-आगित काल जी । सब्बट्टसिद्ध सुर नां ए त्रिण गमा,

सेवं भंते ! गुणमाल जी ।।

१३०. इम कही गोतम गुणनिला, भगवंत ते ज्ञानवंत जी। यावत विचरै संजम करी, तप करि आतम भावंत जी।।

#### सोरठा

१३१. सर्वार्थसिद्ध मांय, जावै इक मनु स्थान नों। गमका तीनज थाय, तूटा शेषज षट गमा।।

वा० — पहिला दूजा देवलोक में च्यार ठिकाणां रो आवै — असंख्यात वर्षायु सन्नी तिर्यंच १, संख्याता वर्षायु सन्नी तिर्यंच २, असंख्यात वर्षायु सन्नी मनुष्य ३, अनैं संख्याता वर्षाय सन्नी मनुष्य ४।

१३२. सौधर्म कल्पे सोय, तिरिक्ख युगलियो ऊपजै। जघन्य गमे सुजोय, तीन णाणत्ता तेहनां।।

१३३. अवगाहन अवलोय, जघन्य पृथक धनु नीं कही । उत्कृष्ट गाऊ दोय, मध्यम त्रिण गम नें विषे ।।

१३४ आयू जघन्योत्कृष्ट, एक पल्य नों आखियो। अनुबंध इतोज इष्ट, ए तीनुई णाणत्ता।।

१३५. उत्कृष्ट गमे पिण तीन, अवगाहण षट कोस नीं। आयू अनुबंध चीन, तीन पल्योपम जाणवं।।

१३६. सौधर्म कल्पे सोय, मनुष्य युगलियो ऊपजै। जघन्य गमे सुजोय, तीन णाणत्ता तेहनां।।

१३७. अवगाहन अवलोय, इक गाऊ जघन्योत्कृष्ट । आयू अनुबंध जोय, जघन्योत्कृष्टज एक पत्य ।।

१३८. उत्कृष्ट गमके तीन, अवगाहन जघन्योत्कृष्ट । गाऊ तीन सुचीन, आयु अनुबंध तीन पल्य ।।

१३९. कल्प ईशान मभार, तिरिक्ख-युगलियो ऊपजै। जघन्य गमे विचार, तीन ण।णत्ता तेहनां।।

१४०. अवगाहन अवलोय, जघन्य पृथक धनुष्य नीं। उत्कृष्ट गाऊ दोय, जाभेरी तिरि युगल नीं।।

१४१. आयु जघन्योत्कृष्ट, साधिक पत्योपम तणों। अनुबंध इतोज इष्ट, तुर्य गमे त्रिण णाणत्ता।।

१४२. उत्कृष्ट गमे पिण तीन, अवगाहण षट कोस नीं। आयु अनुबंध चीन, तीन पत्योपम जाणवूं।।

१४३. कल्प ईशान मभार, मनुष्य युगलियो ऊपजै। जघन्य गमे विचार, तीन णाणत्ता तेहनां।

१४४. अवगाहन अवलोय, साधिक गाऊ जघन्य जिठ।। आयु अनुबंध सोय, साधिक पत्य जघन्योत्कृष्ट।

१४५. उत्कृष्ट गमके तीन, अवगाहन जघन्योत्कृष्ट । गाऊ तीन सुचीन, आयु अनुबंध तीन पत्य ।।

२०६ भगवती जोड़

१२९. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागित करेज्जा ३ । एते तिष्णि गमगा सव्बट्टसिद्धगदेवाणं । (श० २४।३६०)

सेवं भते ! सेवं भंते !

१३०. त्ति भगवं गोयमे जाव विहरइ। (श० २४।३६१)

तिरि । पंचेंद्रिय सन्नी वर्षायु जेह, १४६. संख कल्प लग ऊपजै।। विषेह, ब्रह्म सौधमदि अवगाहन आंगूल तणों। १४७. जघन्य गमेज आठ, असंख भाग घुर वाट, उत्कृष्ट पृथक धनुष्य नीं।। च्यारज पाय, ऊपजता धुर कल्प बी। सनत आदि त्रिण मांय, ऊपजता नैं लेश पंच।। तिरिक्ख में दोय, दोय ज्ञान अज्ञान वे। १४९. दुष्टि समुद्घात त्रिण होय, अध्यवसाय कह्या भला।। अनुबंध, जघन्य अनें उत्कृष्ट हो। नें अंतर्म्हूर्त्त संध, जघन्य गमे अठ णाणत्ता ॥ आयू फुन अनुबंध हो। गमके दोय, १५१. उत्कृष्ट जघन्योत्कृष्ट मुजोय, कोड़ पूर्व नों जिन कह्युं।। सन्नी सहस्सार, तिरि-पं १५२. लंतकादि लेश्या नों नहि णाणत्तो ।। सात णाणता धार, आयू नैं १५३. उत्कृष्ट गमके दोय, अनुबंध फुन। कोड़ पूर्व नों आखियो।। सुहोय, जघन्योत्कृष्ट ईशाण में। सौधर्म नें १५४. सन्नी मनु संख्याय, ऊपजतां ने पाय, जघन्य गमे पंच णाणत्ता।। १५५. पृथक अंगुल अवगाह, भजना ज्ञान अज्ञान त्रिण। समुद्घात पंच ताह, पृथक मास अनुबंध स्थिति।। तीन, अवगाहन जघन्योत्कृष्ट । १५६. उत्कृष्ट गमके धनुष्य पंच सय चीन, आयु अनुबंध कोड़ पुन्व।। आदि, विमान च्यार अनुत्तरे। १५७. सनतकुमारज मनु ऊपजतां लाधि, जघन्य गमे त्रिण णाणता।। पृथक हस्त तणीं कही। १५८. जघन्योत्कृष्ट अवगाह, आयु अनुबंध ताह, पृथक वर्ष जघन्योत्कृष्ट ।। तीन, अवगाहन जघन्योत्कृष्ट। १५९. उत्कृष्ट गमके धनुष्य पंच सय चीन, आयु अनुबंध कोड़ पुव्व।। १६०. सव्बद्वसिद्ध रै मांहि, जघन्य स्थितिक मनु ऊपजै। तीन णाणत्ता ताहि, घुर गम तणीं अपेक्षया।।

वा०—मनुष्य मरी नैं सर्वार्थिसिद्ध में ऊपजै, तेहनैं विषे पहिला तीन गमा हिज हुवै। इहां जघन्य स्थिति नां अभाव थी मध्यम तीन गमा न हुवै। अनैं उत्कृष्ट स्थिति नां अभाव थी छेहला तीन गमा पिण न हुवै। तिहां अजघग्योत्कृष्ट तेतीस सागर नीं स्थिति माटै तेहनैं ओधिक कहियै ते माटै प्रथम तीन गमा हुवै, इम पूर्वे वृत्तिकार कहाूं। तिण लेखे मनुष्य मरी सर्वार्थिसिद्ध नैं विषे ऊपजै, तेहनां तीन गमा ए हुवै — ओधिक नैं ओधिक, जघन्य नैं ओधिक, उत्कृष्ट नैं ओधिक ए लौकिक केहण माटै पहिलो, चोथो अनैं सातमो गमक हुवै इहां जघन्य गमे णाणता ३, उत्कृष्ट गमे णाणता ३ हुवै। अनैं कोटा वाला यंत्र नैं विषे कहाुं मनुष्य सर्वार्थिसिद्ध नै विषे ऊपजै, तेहनां ३ गमा— तीजो, छठो, नवमो गमो हुवै।

१६१. जघन्योत्कृष्ट अवगाह, पृथक हस्त तणीं कही। आयु अनुबंध ताह, पृथक वर्ष जघन्योत्कृष्ट।।

श० २४, उ० २४, ढा० ४३२ २०७

१६२. जेष्ठ स्थितिक मनु जंत, अवगाहन जघन्योत्कृष्ट । धनुष पंच सय हुंत, आयु अनुबंध कोड़ पुब्व।। रै मांय, ऊपजतां सन्नी १६३. सव्वट्टीसद्ध मनुष्य । गमा तीनज पाय, टूटै शेषज षट गमा।। रै मांय, ऊपजतां नैं १६४. वैमानिक णाणता। इक सय त्राणुं पाय, बे सय गुणती गमक सहु।। १६५. सत्तवीस छै स्थान, इक-इक स्थानक नां नव-नव गमका जान, बे सय तयांलीस १६६. सौधर्म नें ईशाण, ऊपजतां तिरि मनु गम जाण, बे-बे तूटा अष्ट इम।। १६७. सव्वट्ठसिद्ध रै मांहि, मनु ऊपजतां त्रिण गमा। तूटा षट गम ताहि, इम तूटा चवदै गमा।। १६८ शेष रह्या ए सीय, बे सय गुणती गमक जे। जोय, निपुण बुद्धि करि एहनों ।। न्याय विचारी १६९. \*ए चउवीसम शतक नां, त्रिण सय इकवीस स्थान जी। अष्टवीस सय ऊपरै, गमा निव्यासी जान जी।। १७०. संमृच्छिम मनु साठ गम, युगल तिरिय मनु वार जी। षट-षट गति आगति सव्वट्ठ, ए तूटा असी च्यार जी।। १७१. पृथ्वी प्रमुख मनुष्य में, संमूच्छिम मनु जंत जी। तूटै तसु षट-षट गमा, साठ गमा इम हुंत जी।। १७२. धुर बे कल्प रु जोतिषी, युगल तिरिय मनु जंत जी। तूटै तसु चिहुं-चिहुं गमा, द्वादश गम इम हुंत जी।। सब्बट्टसिद्ध, षट-षट गम तूटंत जी। १७३. गमनागमने तूटै तसु विरतंत जी।। एवं चउरासी गमा, १७४. शतक चउवीसम अर्थ थी, आख्यो चउवीसमुद्देश जी। उगणीसै तेवीस आसाढ़ विद, तीज भृगुवार विशेष जी।। १७५. ढाल ए च्यार सय ऊपरै, प्रवर बतीसमीं पेख जी। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशेख जी ।।

१७४. चतुर्विशतितमशते चतुर्विशतितमः ॥२४॥ समाप्तं च विवरणतश्चतुर्विशतितमं शतम् ॥२४॥ (वृ० प० ६४२)

१,२. चरमजिनवरेन्द्रप्रोदितार्थे परार्थं, निपुणगणधरेण स्थापितानिन्द्यसूत्रे । विवृतिमिह शते नो कर्त्तुमिष्टे बुधोऽपि, प्रचुरगमगभीरे कि पुनमदिशोऽज्ञः ?॥१॥

#### गीतक छंद

चतुर्विशतितमशते चतुर्विशोद्देशकार्थः ।।२४।।२४।।

चउवीसमें शत चरम जिनवर, अर्थ आख्या गुणनिला।
पर अर्थ निपुणज गणधरे, जे स्थापिया सूत्रे भला।।
 तसु बुद्धि पिण बहु गमक करि, विस्तारवा वांछै नहीं।
फुन अम्ह जिसा किम कही सकै,
गंभीर अर्थ जिके सही।।

\*लय: मम करो काया माया

२०८ भगवती जोड़

# गमा रा यंत्र

#### २४ दंडकां में जे जे ठिकाणां नां ऊपजै तेहनों यंत्र

	9	2	3	8	પ્	Ę	· ·	٠,	ξ	90	99	92	9;
२४ दंडक के नाम	सात नारकी	असुर कुमार	नाग कुमार	सुपर्ण कुमार	विद्युत कुमार	अग्नि कुमार	द्वीप कुमार	उदधि कुमार	दिग कुमार	वायु कुमार	स्तनित कुमार	पृथ्वीकाय	अपक
जेतला ठिकाणां नां ऊपजै	૧૫્	ų	ų	પ્	પ્	ધ	4	પ્	ų	પ્	પ્	२६	२६
	प्रथम नारकी में ३ ठिकाणां नां ऊपजै — असन्नी तिर्यंच	असत्री तिर्यंच पंचेंद्री १	अ	ঞ	34	अ	<b>अ</b>	अ	अ	34	34	भवनपति १० पांच स्थावर १५	ŀ
	पंचेंद्री ९ सन्नी तियैच पंचेंद्री २ सन्नी मनुष्य ३	सन्नी तियँच पंचेद्री २	Æ	सु	सु	सु	₹3	सु	सु	सु	₹3	तीन विकलेंद्री १८ असन्नी तियेंच	1
न्यारा न्यारा		सत्री मनुष्य ३	₹	₹	₹	₹	₹	र	₹	₹	₹	पंचेद्री १६ सन्नी तियाँच पंचेद्री २०	톄
	दूनी नारकी में २ ठिकाणां नां ऊपजै — सन्नी	तियंच	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	क्	संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २१	ā
छे	तियँच पंचेंद्री १ सन्नी मनुष्य २	युगलियो ४	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	असत्री मनुष्य २२	1
	शेष पांच नारकी में पिण दो—दो ठिकाणां नां	मनुष्य युगलियो ५	₹	₹	₹	₹	₹	₹	₹	₹	₹	व्यंतर २३	1
	ऊपजै – सन्नी तियँच पंचेंद्री १		व	व	व	व	व	व	व	व	य	ज्योतिषी २४	đ
	सत्री मनुष्य २ एवं सात नारकी में सर्व १५ ठिकाणां नां ऊपजै ।		त	a	त	त	त	π	त	त	त	प्रथम दो देवलोक २६	

प्रथम नरक रतनप्रभा में ३ ठिकाना नां ऊपजै—असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय १, संख्याता वर्षनां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय २, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ३ ' ९ प्रथम नरक में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (९)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण एक सम्मर्ग में	द्वार हे केता ऊपजै	३ संघयण द्वार	1	४ गहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	इ. ज्ञान–अ		६ योग द्वार	% खपवोन <b>॥</b>
	अनै तेहनां नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	चत्कृष्ट	Ę	जधन्य	.उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	<b>પ્</b>	3	3	1
۹.	ओघिक नैं ओघिक	१० हजार वर्ष	पत्य नै अंसखभाग	৭.২.३ ভঘতী	संख्याता या असंख्याता	9 छेवटो	आंगुल नों असंख्यातमो	हजार जोजन जलचरादि	9 हंडक	3 कृष्ण, नील	१ मिथ्या दृष्टि	असन्नी पर्याप्ता में	२ मति श्रुत	२ वाचन, काया	? सागाः,
₹. ₹.	ओधिक नैं जघन्य ओधिक नै उत्कृष्ट		९० हजार वर्ष पल्य नैं असंख भाग		<b>জ</b> ঘ <b>ত্ত</b>		भाग	नी अपेक्षा		कापोत	पर्याप्ता माटै	न हुवै	j		अणम्
૪. પ્ર દ્વ.	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट		पल्य नैं अंसख्य भाग १० हजार वर्ष पल्य नैं असंख भागे	१.२.३ उपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	9 छेवटो	आंगुल नों असंख्यातमो भाग	हजार जोजन जलचरादि नी अपेक्षा	9 हुंडक	३ कृष्ण,नील कापोत	९ मिथ्या दृष्टि पर्याप्ता माटै	असन्त्री पर्याप्ता में न हुवै	२ मति श्रुत	२ वचन, काया	२ सम्बद्धः जनसङ्ख
(9. Ξ. ξ.			पत्य नैं अंसख भाग १० हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	૧.૨.३ ভ্রদতী	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख्यातमो भाग	हजार जोजन जलचरादि नी अपेक्षा	9 हुंडक	३ कृष्ण,नील कापोत	१ मिथ्या दृष्टि पर्याप्ता माटै	असन्नी पर्याप्ता में न हुवै	२ मति श्रुत	. २ वचन;काया	२ सामा अणामा

वर्तिका — 'असनी तिर्यंच पंदेदी प्रथम नरक में ऊपजै तिण में समदृष्टि तथा ज्ञान न कहा। अनै असत्री तिर्यंच में और सुने समदृष्टि तथा बे ज्ञान कहा।। इहां समदृष्टि अनै ज्ञान न कहा।। अने असत्री तिर्यंच पंदेदी थकी ऊपजै। जो तिर्यंच पंदेदी थकी ऊपजै। जो तिर्वंच पंदेदी थकी ऊपजै। जो तिर्वंच पंदेदी थकी उपजै। जो तिर्वंच पंदेदी अक्र अक्षेचर थकी, कै खेवर थकी उपजै। जिन कहैं — हे गोतम! तिर्वं थकी उपजै। जो तिर्वंच पंदेदी उपजवा जोग्य ते रत्नप्रभा नै विषे उपजै, रोष ६ नारक न ऊपजै। पर्याप्तो असत्री तिर्यंच पंदेदी उपजवा जोग्य ते रत्नप्रभा नै विषे उपजै, रोष ६ नारक न ऊपजै। पर्याप्तो असत्री तिर्यंच पंदेदी उपजवा जोग्य ते किति स्थिति नै विषे उपजै? इत्यादि द्वार।। सातमा द्वार में १ मिथ्यादृष्टि कही। आठमा द्वार में २ अज्ञान कहा।। ते इंडा पर्याप्तोज नरक में ऊपजै, ते ऊपजवा जोग्य पर्याप्तो। तिण में समदृष्टि तथा ज्ञान न हुवै एहर्वू जणाय छै। अथवा सारवादन सम्यक्त्ववंत असत्री तिर्यंच पंदेदी जपजै निहां पिण समदृष्टि तथा ज्ञान न कहा।। ते पिण असत्री तिर्यंच पंदेदी उपजवा जोग्य ते पर्याप्तो। सिन् में समदृष्टि तथा ज्ञान न कहा।। ते पिण असत्री तिर्यंच पंदेदी उपजवा जोग्य ते पर्याप्तो। समदृष्टि तथा ज्ञान न कहा। इति भाव जणाय छै। (ज.स.)

२९० भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

98	94	96,	90	95,	95,	50	२१	२२	२३	58
तेत्रकाय	वायुकाय	वनस्पतिकाय	बेंद्रिय	तेंद्रिय	चउरिद्रिय	तिर्यंच पंचेंद्री	मनुष्य	व्यंतर	ज्योतिषी	वैमानिक
92	92	२६	45	92	92	3€	83	ų	8	રહ
पंत्र धावर ५						सात नारकी ७ दस भवनपति २७ पांच थावर २२ तीन विकलेंद्री २५	छह नारकी ६ दस भवनपति १६ पृथ्वी १७ अप १८ वनस्पति १६ तीन	અ	संख्यात वर्ष नां	पहिला दूजा देंव लोक में चार–चार ठिकाणां
तैन विकलेंद्री ८	ते	9	ते	तै	ते	असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री २६		₹	सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री १	नां ऊपजै–संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री १
असनी तियैच	उ	ध्वी	उ	उ	उ	संख्यात वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री २७	विकलेंद्री २२	₹	संख्यात वर्ष नां सन्नी-	संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य २ तियँच युगलियो ३
पंदी ६	का	का	का	का	का	संख्यात वर्ष नां सन्नी मनुष्य २८ असन्नी मनुष्य २६	असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री २३ संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच	कु	मनुष्य २ तिर्यंच युगलियो ३	मनुष्य युगलियो ४ एवं ८ तीजा देव लोक स्यूं आठवां देवलोक ता <b>ईं</b> दो—दो
स्त्री तियैच विदी%,	य	य	य	य	य	व्यंतर ३० ज्योतिषी ३१	पंचेंद्री २४ असन्नी मनुष्य २५ संख्यात वर्ष नां सन्नी मनुष्य २६	मा	मनुष्य युगलियो ४	ठिकाणां नां ऊपजै—संख्याता वर्ष नो सन्नी
सस्त्री मनुष्य ११	व	व	व	. व	व	आठ पहिला देव लोक ३६		₹		तिर्यंच १ संख्याता वर्ष नो सन्नी मनुष्य २
स्त्री मनुष्य १२	त	त	त	त	त		खंतर २७ ज्योतिषी २८ बारह देवलोक ४० नव ग्रैवेगक ४९ चार अनुत्तर विमान ४२ सर्वार्थ सिद्ध ४३	व त		एवं १२ नवमां देवलोक सूं बारमा देवलोक ताईं, नौ ग्रैवेयक चार अनुत्तर विमान अनै सर्वार्थसिद्ध—ए सात ठिकाणां में एक—एक ठिकाणां नां ऊपजौ—संख्यात वर्ष नां रान्नी मनुष्य १ एवं ८+१२+७ सर्व २७ ठिकाणां नां वैमानिक में ऊपजै।

49 संज्ञाद्वार	9२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार		७ । द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार असंख्याता	l .	६ बंध द्वार	नाणता	,	<b>ा</b> व	२ कायसं	० वध द्वार
¥	8	ų	(9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	SICIOARII	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट भव	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ų	3	२	9							२	ર	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष	9 कोड पूर्व पल्य रो असंख्यातमो भाग
बहार, भय,	क्रोध, मान,	श्रोत, यक्षु,	वेदना, कषाय,	साता,	नपुंसग	अंत-	कोड	भला,	अंत-	कोड	0	2	२	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष	१ कोड पूर्व १० हजार वर्ष
ब्युन, परिग्रह	माया, लोभ,	घ्राण, रस, स्पर्श	मारणांतिक	असाता		र्मुहूर्त	पूर्व	भूंडा	र्मुहूर्त	पूर्व		2	2	१ अंतर्मु, पल्य नों असंख्या-	१ कोड पूर्व पल्य रो
														तमो भाग	असंख्यातमो भाग
४ <b>बह</b> ार, भय,	¥	ų	3	ર	9						ą	२	२	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष	१ अंतर्मु. पल्य रो असंख्यातमो भाग
म्युन, परिग्रह	क्रोध, मान,	श्रोत, चक्षु,	वेदना, कषाय,	साता,	नपुंसग	अंत-	अंत-	भूंडा, नरक	अंत-	अंत-	आयु,	ą.	2	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष	१ अंतर्मु. १० हजार वर्ष
٠,	माया, लोभ,	घ्राण, रस, स्पर्श	मारणांतिक	असाता		र्मुहूर्त	र्मुहूर्त	में जावै ते माटै	र्मुहूर्त	र्मुहूर्त	अध्य	₹	7	१ अंतर्मु, पल्य रो असंख्य	
											-वसाय, अनुबंध			तमो भाग	१ अंतर्मु० पल्य रो असंख्यतमो भाग
४ बहार भय,	४ क्रोध, मान,	५ श्रोत, चक्ष,	३ वेदना, कषाय,	२ साता.	१ नपुंसग	कोड	कोड	भला, भूंडा,	कोड	कोड	२ आयु	~ ~	۶ ۲	१ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व १० हजार वर्ष	१ कोड पूर्व पत्य रो असंख्या-तमो भाग १ कोड पूर्व १० हजार वर्ष
<b>ब्रु</b> न् परिग्रह	माया, लोभ,	गारा, चयु, घाण, रस, स्पर्श	मारणांतिक	असाता	13/11	पूर्व	पूर्व	नता, नूबा,	पूर्व	पूर्व	अनु०	?	2	१ कोड पूर्व पत्य रो असंख्या तमो भाग	१ कोड पूर्व भे हजार वर्ष १ कोड पूर्व पत्य रो असंख्या-तमो भाग

## २ प्रथम नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनो यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	9 उपपात जघन्य	त द्वार उत्कृष्ट	परिमा जघन्य	२ ण द्वार जिल्लुष्ट	३ संघयण द्वार ६	1	४ गहना द्वार जिल्कृष्ट	५ संठाण द्वार ६	६ लेश्या द्वार ६	७ दृष्टिद्वार ३	রান–अ <b>র</b> ধ	च् गन द्वार 3	६ योग द्वार ३	90 उपयोग द्वा २
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	90 हजार वर्ष 90 हजार वर्ष 9 सागर	9 सागर 90 हजार वर्ष 9 सागर	१.२.३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę	अंगुल नों असंख भाग	हजार योजन	Ę,	Ę	3	३भजना	३ मजना	३ मन, वचन, काया	साकार, अनाकार
ų	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	90 हजार वर्ष 90 हजार वर्ष 9 सागर	१ सागर १० हजार वर्ष १ सागर	<del>१,२,३</del> ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę	अंगुल नों असंख भाग	पृथक् धनुष्य	Ę	३ पहिली	१ मिश्या	o	२ नियमा	३ मन, वचन, काया	साकार, अनाकार
τ.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	90 हजार व <b>र्ष</b> 90 हजार वर्ष 9 सागर	१ सागर १० हजार वर्ष १ सागर	৭.২.३ জদতী	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę	अंगुल नों असंख भाग	हजार जोजन	ધ	Ę	ą	३भजना	३भजना	३ मन, वचन. काया	साकार, अनाकार

#### ३ प्रथम नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनो यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप जघन्य	१ पात द्वार उत्कृष्ट	२ परिमाण जघन्य	द्वार उत्कृष्ट	३ संघयण द्वार ६	४ अवग जघन्य	ाहना द्वार उत्कृष्ट	५ संठाण द्वार - ६	६ लेश्या द्वार ६	७ दृष्टि द्वार ३	ज्ञान–अ ५	ट ज्ञान द्वार ३	६ योग द्वार ३	१० उपयोगद्वार २
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर	९ सागर ५० हजार ९ सागर	9,२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् अंगुल	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भेजना	३भजना	3	₹
8 4 4	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष १ सागर	१ सामर १० हजार वर्ष १ सामर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	ξ,	पृथक् अंगुल	पृथक अंगुल	Ę	Ę	3	३भजनाः	३ भजना	3	?
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर	१ सामर १० हजार वर्ष १ सागर	· ৭,২,३ ক্তম্বর্গী	संख्याता ऊपजै	Ę	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३भजना	э	<b>ર</b>

#### दूजी नरक सक्करप्रमा में २ ठिकानां नां ऊपजै-संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २।

#### ४ दूजी नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय उपजै तेहनों यंत्र (१)

	२० द्वार नी संख्या		9	?		3	8		<u>,</u> 4	ξ	9		ζ	Ę	90
गमः	२० हार ना सख्या	9,	मपात द्वार	पारमाप	ग द्वार	संघयण द्वार	अवगाह	हना द्वार	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोगद्वाः
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	ξ	3	પ્	3	3	7
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नै उत्कृष्ट	9 सागर 9 सागर ३ सागर	३ सागर १ सागर ३ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę	अंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	ધ	€,	3	3 भजना	3 भजना	3	<b>ર</b>
૪ પ્	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ सागर १ सागर ३ सागर	३ सागर १ सागर ३ सागर	५.२.३ कपजै	संख्याता या असंख्याता उपजै	Ę	अंगुल नों असंख भाग	पृथक् धनुष्य	Ę	३ पहली	9 मिथ्या	0	२ नियमा	3	я
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९ सागर ९ सागर ३ सागर	३ सागर १ सागर ३ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता उपजै	દ્દ	अंगुल नों असंख भाग	हजार योजन	· Es	Ę	Э	३ भजना	३ भजना	3	₹

भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

१९ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धातद्वार	१५ वेदनाद्वार	9६ वेदद्वार		क्षार इ.स.	१८ अध्यवसाय द्वार असंख्याता	9: अनुब	ध द्वार	नाणता	भव	[	२० काय-संवे	ध द्वार
ę	8	પ્	y	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
			. 4									२	E,	9 अंतर्मु० 9० हजार वर्ष	४ कोड पूर्व ४ सागर
¥	R	ų	वेदना, कबाय, मारणा० वेक्रिय, तेजस	2	Э	अंतर्मु०	कोड पूर्व	भला, भूंडा	अंतर्मु०	कोड पूर्व	0	२ २	ŭ ŭ	१ अंतर्मु० १० हजार वर्ष १ अंतर्मु० १ सागर	४ क्रोड पूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोड पूर्व ४ सागर
			3								८ अवगाहना, लेश्या,	?	τ.	१ अंतर्मु० १० हजार वर्ष	४ अंतर्मु० ४ सागर
¥	8	ų	वेदना, कषाय, मारणांतिक	2	3	अंतर्मु०	अंतर्मु०	भूंडा	अंतर्मु०	अंतर्मु०	दृष्टि, अज्ञान, समुदघात, आयु, अध्यवसाय, अनुबंध	२ २	ŭ	१ अंतर्मु० १० हजार वर्ष १ अंतर्मु० १ सागर	४ अंतर्मु० ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु० ४ सागर
¥	R	ų	ч								3	2	ř.	१ कोड पूर्व १० हजार वर्ष	४ कोड पूर्व ४ सागर
			पहिली	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला, भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	आयु, अनुबंध	ર ૨	τ .	१ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व १ सागर	४ कोड पूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोड पूर्व ४ सागर

११ संज्ञा द्वार	<b>१२</b> कषा <b>व</b> द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धातद्वार	9५् वेदनाद्वार	9६ वेदद्वार	१। आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	9६ अनुबं		नाणत्ता				o विध द्वार
¥	ß	ય્	(9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		भ जघन्य	व उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	¥	ų	६ पहली	3	3	पृथक मास	कोड पूर्व	भला भूंडा	पृथक् मास	कोड पूर्व	0	२ २ २		९ पृथक मास १० हजार वर्ष ९ पृथक मास १० हजार वर्ष ९ पृथक मास १ सायर	४ कोड पूर्व ४ सागर ४ कोड पूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोड पूर्व ४ सागर
¥	8	ц	५् पहिली	7	'3	पृथक मास	पृथक् मास	भला भूंडा	पृथक् मास	पृथक् मास	५ अवगाहना, ज्ञान, समुद्घात, आयु अनुबन्ध	२ २ २	U U U	९ पृथक मास १० हजार वर्ष ९ पृथक मास १० हजार वर्ष ९ पृथक मास ९ सागर	४ पृथक मास ४ सागर ४ पृथक मास ४० हजार वर्ष ४ पृथक मास ४ सागर
8	8	ų	६ पहिली	?	ş	कोड पूर्व	कोड पूर्व	. भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अवगाहना, आयु अनुबंध	२ २ २	י מי מי	9 कोड़पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड़पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड़पूर्व १ सागर	४ कोड पूर्व ४ सागर ४ कोड पूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोड पूर्व ४ सागर

१९ तंत्रा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेदद्वार	१ आयु		<sup>9</sup> द अध्यवसाय द्वार	११ अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	1	<b>ा</b>	२० कायसंवेध	द्वार
¥	R	પ્	69	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	R	ų	५् पहिली	3	3	१अंतर्मु <b>हूर्त</b>	कोड पूर्व	भला, भूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोड पूर्व	o	२ २ २	£ £	९अंतर्मुहूर्त ९ सागर ९अंतर्मुहूर्त ९ सागर ९अंतर्मुहूर्त ३ सागर	४ कोड पूर्व १२ सागर ४ कोड पूर्व ४ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर
¥	8	ų	३ पहिली	?	3	<b>१अंतर्मुहूर्त</b>	१अंतर्मुहू <del>र्त</del>	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	ट अव. लेश्या दृष्टि, अज्ञान, समु. आयु, अध्य. अनुबंध		ته د	९अंतर्मुहूर्त १ सागर ९अंतर्मुहूर्त १ सागर ९अंतर्मुहूर्त ३ सागर	४ अंतर्मुहूर्त १२ सम्रगर ४ अंतर्मुहूर्त ४ सागर ४ अंतर्मुहूर्त १२ सागर
8	8	ų	५ पहिली	?	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला, भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु अनुबंध	२ २ २	ت د د	१कोड पूर्व १सागर १कोड पूर्व १सागर १कोड पूर्व ३सागर	४ कोड पूर्व १२ सागर ४ कोड पूर्व ४ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर

## ५ दूजी नरक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गम्।	२० द्वार नी संख्या	चपप	9 गत द्वार	२ परिमाण	। द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अः	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
_		जधन्य	उत्कृष्ट	<b>जघन्य</b>	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	<b>ξ</b>	Ę	3	ų	3	3	7
3 2 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नै उत्कृष्ट	९ सागर ९ सागर ३ सागर	३ सागर १ सागर ३ सागर	९,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३भजना	₹	?
y y &	जघन्य नैं ओघिक अघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ सागर १ सागर ३ सागर	३ सागर १ सागर ३ सागर	९२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę,	पृथक् हाथ	पृथक हाथ	Ę	Ę	3	४भजना	३भजना	3	?
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ सागर १ सागर ३ सागर	३ सागर १ सागर ३ सागर	१.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	દ્ય	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	દ	Ę	3	४भजना	३ भजना	3	5

#### तीजी नरक वालुकाप्रभा में २ ठिकाणां नां ऊपजै—संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २।

#### ६ तीजी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

			9	२		ҙ		8	ų	ξ	19,		τ,	ξ	90
गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	त द्वार	परिमाण	ग द्वार	संघयण द्वार	अवग	हना द्वार	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग द्वार
_		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ч	3	] 3	7
≀	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जधन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ सागर ३ सागर ७ सागर	७ सागर ३ सागर ७ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	५् पहिला	अंगुल नो असंख्यातमो भाग	हजार योजन	E	£,	3	3 भजना	३ भजना	3	3
	जधन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	३ सागर ३ सागर ७ सागर	७ सागर ३ सागर ७ सागर	१.२,३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	५ पहिला	अंगुल नो असंख्यातमो भाग	पृथक धनुष्य	·	३ पहिली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	3	2
.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३ सागर ३ सागर ७ सागर	७ सेंगगर ३ सागर ७ सागर	৭.২.३ ক্তদত্তী	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	५् पहिला	अंगुल नो असंख्यातमो भाग	हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	\$

#### ७ तीजी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ ात द्वार	परिमा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार		४ ग्रहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अड	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग <b>द्वार</b>
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ч	3	. 3	₹
, á . á	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ सागर ३ सागर ७ सागर .	७ं सागर ३ सागर ७ सागर	<b>९.२.३</b> . ऊपजै	संख्याता ऊपजै	५ पहली	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	દ્દ	Ę	ą	४भजना	३ भजना	3	?
,	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	३ स्तागर ३ सागर ७ सागर	७ सागर ३ सागर ७ सागर	५२.३. ऊपजै	संख्याता ऊपजै	५् पहली	पृथक् हाथ	पृथक हाथ	ધ	£.	\$	४भजना	३ भजना	3	?
(9 E. E.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३ सागर ३ सागर ७ सागर	७ सागर ३ सागर ७ सागर	५.२.३. ऊपजै	संख्याता ऊपजै	५ पहली	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	દ	ξ	3	४भजना	३ भजना	3	₹

१४ भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

99 संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेदद्वार		७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	, अनुः	६ ह्यांच्या द्वार	नाणत्ता	*	व	२ कायर	o विध द्वार
¥	8	પ્	(9	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ч	६ पहिली	?	3	पृथक वर्ष	कोड पूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोड कोड पूर्व	o	२ २ २	t, t,	१ पृथक् वर्ष १ सागर १ पृथक् वर्ष १ सागर १ पृथक् वर्ष ३ सागर	४ कोड पूर्व १२ सागर ४ कोड पूर्व ४ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर
8	8	ч	६ पहिली	ş	3	पृथक वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अवगाहना, आयु. अनु.	२ २ २	5. 5.	१ पृथक् वर्ष १ सागर १ पृथक् वर्ष १ सागर १ पृथक् वर्ष ३ सागर	४ पृथक् वर्ष १२ सागर ४ पृथक् वर्ष ४ सागर ४ पृथक् वर्ष १२ सागर
8	8	ч	६ पहिली	₹	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	२ २ २	5. 5.	१कोड पूर्व १ सागर १कोड पूर्व १ सागर १ कोड पूर्व ३ सागर	४ कोड पूर्व १२ सागर हे कोड पूर्व ४ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर

99	92	93	98	94	9६	9	19	95	91						२०
संज्ञा द्वार	कषाय द्वार	इन्द्रिय द्वार	समुद्घात द्वार	वेदना द्वार	वेद द्वार	आयु	ु द्वार	अध्यवसाय द्वार	अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	3	व	कायः	संवेध द्वार
¥	8	ų	(9	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	বন্কৃষ্ट কাল
8	Я	ų	4् पहिली	2	ą	अंतर्मुहूर्त्त	कोड पूर्व	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोड पूर्व	۰	२ २ २	τ τ	१अंतर्मु० ३सागर १अंतर्मु० ३सागर १अंतर्मु० ७सागर	४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर
å	Я	ч	३ पहिली	2	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मु.	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गु	८ अव, लेश्या, दृष्टि, अज्ञान, समु, आयु अध्य० अनुबंध	२ २ २	t.	९अंतर्मु० ३ सागर ९अंतर्मु० ३ सागर ९अंतर्मु० ७ सागर	४ अंतर्मु० २८ सागर ४ अंतर्मु० १२ सागर ४ अंतर्मु० २८ सागर
8	8	ų	५् पहिली	3	ş	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला, भूंडा	कोड पूर्व	कोडपूर्व	२ आयु अनु.	~ ~ ~	£ £	े कोड पूर्व ३ सागर १ कोड पूर्व ३ सागर १ कोड पूर्व ७ सागर	४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व १२ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर

१९ संबाद्वार	१२ •कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	i	७ द्वार	९८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	મ	व .	२० कायर	नंवेध द्वार
8	8	ų	19	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	A	ų	६ पहिली	3	3	पृथक वर्ष	कोड पूर्व	मला भूंडा	पृथक वर्ष	कोड पूर्व	o	२ २ २	5	१ पृथक वर्ष ३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर	४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर
8	8 .	ц	६ पहिली	\$ ·	3	पृथक वर्ष	पृथक वर्ष	भला भूंडा	पृथक वर्ष	पृथक वर्ष	३ अवगाहना, आयु अनुबंध	२ २ २	د د	९ पृथक वर्ष ३ सागर ९ पृथक वर्ष ३ सागर ९ पृथक वर्ष ७ सागर	४ पृथक् वर्ष २८ सागर ४ पृथक् वर्ष १२ सागर ४ पृथक् वर्ष २८ सागर
8	8	ų	६ पहिली		3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भलामूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अवगाहना, आयु अनुबंध	२ २ २	2 1 2	१ कोड पूर्व ३ सागर १ कोडपूर्व ३ सागर १ कोडपूर्व ७ सागर	४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व १२ सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर

गमा २१५

#### चौथी नरक पंकप्रभा में २ ठिकाणां नां ऊपजै–संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २।

## ८, चौथी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ ग्पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	१ अवग	उ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	् ७ दृष्टिद्वार	ज्ञान–अइ	द हान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	દ્	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ્દ	3	પ્	3 -	3	₹
٩	ओधिक नैं ओधिक	७ सागर	१० सागर		संख्याता या असंख्याता	४ पहला	अंगुल नों असंख्य	१ हजार योजन	Ę	Ę	₹			. 3	7
२ ३	ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	७ सागर १० सागर	७ सागर १० सागर	१,२,३, ऊपजै	<b>ऊ</b> पजै		भाग					3 भजना	३ भजना		
પ્ર ધ	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	७ सागर ७ सागर १० सागर	९० सागर ७ सागर ९० सागर	१,२,३, ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	४ पहला	अंगुल नों असंख्य भाग	पृथक धनुष्य	Ę	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	3
	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	७ सागर ७ सागर १० सागर	१० सागर ७ सागर १० सागर	१.२,३, ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	४ पहला	अंगुल नों असंख्य भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	₹

#### ६ चौथी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	खा	९ ग्पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अव	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	२
		७ सागर ७ सागर १० सागर	90 सागर ७ सागर 90 सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	४ पहला	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	?
ų	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	७ स्तगर ७ सागर १०सागर	% सागर ७ सागर १० सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	४ पहला	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	£,	Ę,	3	४ मजना	३ भजना	3	?
t.		७ सागर ७ सागर भ्रसागर	५० सागर ७ सागर ५० सागर	१.२.३ ऊपजै	संख्याता कपजै	४ पहला	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	ą	?

#### पांचमी नरक पूमप्रभा में २ ठिकाणां नां ऊपजै—संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंदी १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २।

#### १० पोचमीं नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ गत द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ इना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্গান এর	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	ডন্কৃষ্ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	ધ્	3	3	?
	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	90 सागर 90 सागर 90 सागर	९७ सागर ९० सागर ९७ सागर	१,२, ३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	३ पहला	अंगुल नों असंख्य भाग	हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३ भजना	ş	ş
٧	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	९० सागर ९० सागर ९७ सागर	9७ सागर १० सागर 9७ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	3	अंगुल नों असंख्य भाग	पृथक् धनुष्य	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	3	?
	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० सागर १० सागर १७ सागर	% सागर % सागर % सागर	१,२, ३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	3	अंगुल नौ असंख्य भाग	हजार योजन	&	Ę.	3	३ भजना	. ३ भजना	3	?

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	७ [ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	घ द्वार	नाणत्ता		भव	२० काय-संवे	ध द्वार
8	8	ų	(g	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ધ્	् ५् महली	2	3	अंतर्मुहूर्त	कोड पूर्व	મતા મૂંહા	अंतर्मुहूर्त	कोड पूर्व	۰	२ २ २		१ अंतर्मुहूर्त ७ सागर १ अंतर्मुहूर्त ७ सागर १ अंतर्मुहूर्त १० सागर	४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर
¥	ß	ų	३ पहली	7	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	८ अव० लेश्या, दृष्टि, ज्ञान अज्ञान, समु० आयु, अध्य० अनु०	२ २ २	c c	१अंतर्मुहूर्त ७ सागर १अंतर्मुहूर्त ७ सागर १अंतर्मुहूर्त १० सागर	४ अंतर्मुहूर्त ४० सागर ४ अंतर्मुहूर्त २८ सागर ४ अंतर्मुहूर्त ४० सागर
¥	Å	ų	५् पहली	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	0 0 0	१ कोड पूर्व ७ सागर १ कोड पूर्व ७ सागर १ कोड पूर्व १० सागर	४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर

१९ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	l	१५ युद्धार	१८ अध्यवसाय द्वार	9: अनुब	ह ांध द्वार	नाणत्ता		भव	२ काय—सं	
8	8	પ્	y	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जबन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	R	Ą	६ पहली	ź	3	पृथक्वर्ष	कोड पूर्व	भला भूंडा	দুথক বৰ্গ	कोड पूर्व	٥	२ २ २	נו נו נו	१ पृथक् वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक् वर्ष १० सागर	४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर
٧	8	ų	६ पहली	3	3	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	२ २ २	ប្រវត	१ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष १० सागर	४ पृथक वर्ष ४० सागर ४ पृथक वर्ष २८ सागर ४ पृथक वर्ष ४० सागर
8	Я	ų.	६ पहली	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	२ २ २	11 11 11	१ कोड पूर्व ७ सागर १ कोड पूर्व ७ सागर १ कोड पूर्व १० सागर	४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व २८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	११ अनुब	ध द्वार	नाणता		भव	<b>का</b> य-सं	२० वेध द्वार
¥	8	ષ્	ig	₹	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	,	ų	५ पहली	₹	3	अंतर्मुहूर्त	कोड पूर्व	भला भूंडा	अंतर्गुह <del>ूर्त</del>	कोड पूर्व	0	? ? ?	ט ט ט	१अंतर्मुहूर्त १० सागर १अंतर्मुहूर्त १० सागर १अंतर्मुहूर्त १७ सागर	४ कोड पूर्व ६८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व ६८ सागर
¥	8	મ	३ पहली	2	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	द्ध अव० लेश्या, दृष्टि, अज्ञान, राम्,, आयु, अध्य० अनुबंध	२ २ २	ניטני	१ अंतर्मुहूर्त १० सागर १ अंतर्मुहूर्त १० सागर १ अंतर्मुहूर्त १७ सागर	४ अंतर्मुहूर्त ६ दे सागर ४ अंतर्मुहूर्त ४० सागर ४ अंतर्मुहूर्त ६८ सागर
8	8	ч	५ पहली	₹	э	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु, अनुबंध	ર ૨ ૨	11 11 11	९ कोड पूर्व १० सागर ९ कोड पूर्व १० सागर ९ कोड पूर्व १७ सागर	४ कोड पूर्व ६८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व ६८ सागर

गमा २१७

# १९ पांचमीं नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण	। द्वार	३ संधयण द्वार	1	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	८ गन द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	₹ ,
۹ २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१० सागर १० सागर १७ सागर	% सागर % सागर % सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता . ऊपजै	३ पहला	पृथक हाथ	५ सौ घनुष्य	Ę	Ę,	₹	४ भजना	3 भजना	3	3
પ ધ	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१० सागर १० सागर १७ सागर	% सागर % सागर % सागर	१.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	३ पहला	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	Ę	Ę	₹	४ भजना	3 भजना	3	3
(9 E. E.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० सागर १० सागर १७ सागर	९७ सागर ९० सागर ९७ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	३ पहला	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	ધ	3	४ भजना	३ भजना	3	\$

छड़ी नरक तमप्रभा में २ ठिकाणां नां ऊपजै – संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २।

## 9२ छद्वी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (9)

गमा २० द्वार नी संख्या	उ	१ पपात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अव	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वर
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	1
भोधिक नैं ओधिक अोधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	९७ सागर ९७ सागर २२ सागर	२२ सागर ९७ सागर २२ सागर	९. २, ३, ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	२ पहला	अंगुल नौ असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	દ	3	3 भजना	३ भजना	ą	3
जघन्य मैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	% सागर % सागर २२ सागर	२२ सागर ९७ सागर २२ सागर	१, २, ३, ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	२ पहला	अंगुल नौ असंख भाग	पृथक् धनुष्य	Ę	३ पहली	५ मिध्या	o	२ नियमा	3	2
उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९७ सागर ९७ सागर २२ सागर	२२ सागर १७ सागर २२ सागर	9, २, ३, ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	२ पहला	अंगुल नौ असंख भाग	हजार योजन	Ę	Ę	<b>3</b>	३ भजना	३ भजना	3	(ع

#### १३ छट्टी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा २० द्वार नी संख्या	उपप	१ गत द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ ाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–এং	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग इस
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	जत्कृ <b>ष्ट</b>	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્	ξ.	3	ų	3	3	₹
<ul> <li>अोधिक नैं ओधिक</li> <li>ओधिक नैं जघन्य</li> <li>ओधिक नैं उत्कृष्ट</li> </ul>	% सागर % सागर २२ सागर	२२ सागर १७ सागर २२ सागर	५२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	२ पहिला	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	Ę	ધ	3	४ भजना	३ भजना	ş	3
४ जघन्य नै ओघिक ५ जघन्य नै जघन्य ६ उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	५७ सागर ५७ सागर २२ सागर	२२ सागर १७ सागर २२ सागर	१.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	२ पहिला	पृथक् हाथ	पृथक् हाध	ξ,	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	₹ %
७ उत्कृष्ट नैं ओघिक ८ उत्कृष्ट नैं जघन्य १ उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	% सागर % सागर २२ सागर	२२ सागर % सागर २२ सागर	५.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	२ पहिला	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	?

२१८ भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

११ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	<sup>9६</sup> वेद द्वार		७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध ध द्वार	नाणता		भव	२ काय-संवे	
8	8	પ્	. U	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ч	६ केवलवर्जी	2	W	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	0	२ २ २	טעט	१ पृथक् वर्ष १० सागर १ पृथक् वर्ष १० सागर १ पृथक् वर्ष १७ सागर	४ कोड पूर्व ६८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व ६८ सागर
8	8	ધ્	६ केवलवर्जी	?	ą	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अवगाहना आयु अनुबंध	२ २ २	τ. τ.	१ पृथक् वर्ष १० सागर १ पृथक् वर्ष १० सागर १ पृथक् वर्ष १७ सागर	४ पृथक वर्ष ६८ सागर ४ पृथक वर्ष ४० सागर ४ पृथक वर्ष ६८ सागर
¥	8	ų	६ केवलवर्जी	2	ą	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अवगाहना आयु अनुबंध	२ २ २	ι ι	9 कोड पूर्व 90 सागर 9 कोड पूर्व 90 सागर 9 कोड पूर्व 90 सागर	४ कोड पूर्व ६८ सागर ४ कोड पूर्व ४० सागर ४ कोड पूर्व ६८ सागर

<b>१</b> १ संज्ञादार	१२ कषाय द्वार	१३ ् इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु	७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>98</sup> अनुब	ध घ द्वार	नाणत्ता		भव	२० काय-संवेध	
8	8	પ્	(g	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ų	५् पहली	7	3	अंतर्गुहूर्त	कोड पूर्व	भला भूडा	अंतर्मुहूर्त	कोड पूर्व	o	२ २ २	0 0 0	१ अंतर्मुहूर्त १७ सागर १ अंतर्मुहूर्त १७ सागर १ अंतर्मुहूर्त २२ सागर	४ कोडपूर्व ६६ सागर ४ कोडपूर्व ६६ सागर ४ कोडपूर्व ६६ सागर
¥.	४	પ	३ पहली	₹ *	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त्त	८ अव० लेश्या, दृष्टि, ज्ञानअज्ञान, समु०, आयु, अध्य, अनु०	२ २ २	2 2 2	१अंतर्मुहूर्त १७ सागर १ अंतर्मुहूर्त १७ सागर १ अंतर्मुहूर्त २२ सागर	४अंतर्मुहूर्त ६६ सागर ४अंतर्मुहूर्त ६६ सागर ४अंतर्मुहूर्त ६६ सागर
¥	¥	ધ	५ पहली	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु, अनुंबध	२ २ २	٤ د	१ कोड पूर्व १७ सागर १ कोड पूर्व १७ सागर १ कोड पूर्व २२ सागर	४ कोड पूर्व ६६ सागर ४ कोड पूर्व ६६ सागर ४ कोड पूर्व ६६ सागर

११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ । द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणसा		भव	२० काय-संवेध	द्वार
8	8	٧	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8.	8	પ્	६ पहली	. 4	3	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	Q	~ <del>~</del> ~	τ. τ.	१ पृथक् वर्ष १७ सागर १ पृथक् वर्ष १७ सागर १ पृथक् वर्ष २२ सागर	४ कोड पूर्व ८८ सागर ४ कोड पूर्व ६८ सागर ४ कोड पूर्व ८८ सागर
R	8	ių	६ पहली	2	ą	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक वर्ष	पृथक वर्ष	३ अवगाहना, आयु, अनु.	۲ ۲ ۲	ប្រ	१ पृथक् वर्ष १७ सागर १ पृथक् वर्ष १७ सागर १ पृथक् वर्ष २२ सागर	४ पृथक् वर्षः द्वः सागर ४ पृथक् वर्षः ६८ सागर ४ पृथक् वर्षः ८८ सागर
¥	8	Ä	६ पहली	2	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अदगाहना, आयु, अनु,	? ? ?		१ कोड पूर्व १७ सागर १ कोड पूर्व १७ सागर १ कोड पूर्व २२ सागर	४ कोड पूर्व ८६ सागर ४ कोड पूर्व ६८ सागर ४ कोड पूर्व ८८ सागर

#### सातमी नरक तमतमा में २ ठिकाणां ना ऊपजै – संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २ ।

#### १४ सातमी नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ गत द्वार	२ <b>परि</b> माण	द्वार	३ संघयण द्वार	१ अवग	} हिना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–अঃ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	ξ	3	પ્	3	3	२
9 २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३३ सागर	३३ सागर २२ सागर ३३ सागर	१.२.३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	९ बज ऋषभ नाराच	अंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	ξ	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	2
૪ ૧ ૬	जघन्य मैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३३ सागर	३३ सागर २२ सागर ३३ सागर	৭.২.३ <b>ऊ</b> पजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	९ बज ऋष्भ नाराच	अंगुलनों असंख भाग	पृथक् धनुष्य	ξ	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	3	7
(9 % §	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३३ सागर	३३ सागर २२ सागर ३३ सागर	१.२.३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै ,	१ बज ऋषभ नाराच	अंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	ξ.	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	5

## १५ सातमीं नरक में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार		द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग <b>ता</b>
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ધ્	3	3	7
?	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३३ सागर	३३ सागर २२ सागर ३३ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता . कपजै	वर्ज ऋषभ नाराच	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	Ę	દ	3	४ भजना	३ भजना	. 3	?
ધ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३३ सागर	३३ सागर २२ सागर ३३ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	वज्र ऋषभ नाराध	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	Ę	Ę,	3	४ भजना	३ भजना	3	2
	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३३ सागर	३३ सागर २२ सागर ३३ सागर	१,२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	वज ऋषभ नाराच	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	¥ Ę	દ્	3	४ भजना	३ भजना	3	?

#### असुरकुमार में ५ विकाणां नां ऊपजै – असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री १, तिर्यंच युगलियो २, संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री ३, मनुष्य युगलियो ४, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ५। १६ असुरकुमार में असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	। त द्वार	२ परिमाप	ग द्वार	३ संघयण द्वार	्र अवगाह	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–এ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	₹
	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जधन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष पल्य नैं असंख भाग	पत्य नैं असंख्य भाग १० हजार वर्ष पत्य नैं अंसख भाग	৭.২.३ ডদবী	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	9 छेवटो	अंगुलनों अंसख भाग	१ हजार योजन	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	२ वच, काय	2
-	जधन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	पल्य नै'असंख्य भाग १० हजार वर्ष पल्य नैं अंसख भाग	৭.২,३ ডদ <b>ী</b>	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	9 छेवटो	अंगुलनों अंसख भाग	१ हजार योजन	9 हुंडक	३ पहली	9 मिथ्या	٥	२ नियमा	२ वच, काय	?
c,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष पल्य मैं असंख भाग	पत्य नैं असंख भाग ९० हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	९.२.३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	9 छेवटो	अंगुलनों अंसख भाग	१ हजार योजन	9 हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	२ वच, काय	<b>?</b>

११ इंग्रहोर	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	1	७ इहार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	घ द्वार	नाणत्ता		भव	२० काय-संवेध	। द्वार
¥	8	પ્	6	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	·	जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	<b>'</b> 4	५् पहली	2	२ पुरुष, नपुंसक	अंत मुंहूर्त	कोड पूर्व	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोड पूर्व	0	3 3	19 14	२ अंतर्मुहूर्त २२ सागर २ अंतर्मुहूर्त २२ सागर २ अंतर्मुहूर्त ३३ सागर	४ कोड पूर्व ६६ सागर ४ कोड पूर्व ६६ सागर ३ कोड पूर्व ६६ सागर
Y	8	ц	३ पहली	2	२ पुरुष नपुंसक	अंतर्मु०	अंतर्मु•	भूंडा	अंतर्मु०	अंतर्मुहूर्त	् अव० लेश्या, दृष्टि, ज्ञान—अज्ञान, समु० आयु, अध्य०, अनु०	3 3 3	(9 (9 (4	२ अंतर्मुहूर्त २२ सागर २ अंतर्मुहूर्त २२ सागर २ अंतर्मुहूर्त ३३ सागर	४अंतर्मुहूर्त ६६ सागर ४अंतर्मुहूर्त ६६ सागर ३अंतर्मुहूर्त ६६ सागर
¥	8	ч	५् पहली	3	२ पुरुष नपुंसक	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु, अनुबंध	3 3	(9 (9 (4	२ कोड पूर्व २२ सागर २ कोड पूर्व २२ सागर २ कोड पूर्व ३३ सागर	४ कोड पूर्व ६६ सागर ४ कोड पूर्व ६६ सागर ३ कोड पूर्व ६६ सागर

नोट - ३३ सागर की स्थिति के उत्कृष्ट भव दो ही हो सकते है। यदि तीन भव होते है तो जघन्य स्थिति २२ सागर ही होते है।

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	५३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेदद्वार		७ ( द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<b>9</b> ६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता '	1	भव	२ काय-सं	
8	8	ų	ty	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	Å	ų	६ पहली	ર	२ पुरुष नपुंसक	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	<b>o</b>	२ २ २		९ पृथक वर्ष २२ सागर ९ पृथक वर्ष २२ सागर ९ पृथक वर्ष ३३ सागर	१ कोड पूर्व ३३ सागर १ कोड पूर्व २२ सागर १ कोड पूर्व ३३ सागर
R	8	ч	६ . पहली	२	२ पुरुष नपुंसक	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	, भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अवगाहना, आयु अनुबंध		र २ २	१ पृथक वर्ष २२ सागर १ पृथक वर्ष २२ सागर १ पृथक वर्ष ३३ सागर	१ पृथक वर्ष ३३ सागर १ पृथक वर्ष २२ सागर १ पृथक वर्ष ३३ सागर
¥	8	ų	६ पहली	ş	२ पुरुष नपुंसक	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अवगाहना, आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ कोड पूर्व २२ सागर १ कोड पूर्व २२ सागर १ कोड पूर्व ३३ सागर	१ कोड पूर्व ३३ सागर १ कोड पूर्व २२ सागर १ कोड पूर्व ३३ सागर

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१। आयु	७   द्वार	<sup>9</sup> द अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	ध द्वार	नाणता	भ	đ		१० वेध द्वार
8	8	ય્	(9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	Å	ч	३ पहली	3	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भक्ना भूंडा	अंतर्गुहूर्त	क्रोड पूर्व	o	२ २ २	२ २ २	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त पत्य नो अंसख भाग	१ कोड पूर्व पत्य नों असंख भाग १ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व पत्य नों असंख भा
¥	×	ц	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	३ आयु, अध्यवसाय, अनुबंध	ર ૨ ૨	२ २ २	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त पत्य नों असंख भाग	९ अंतर्मुडूर्त पत्य नों असंख भा ९ अंतर्मुडूर्त १० हजार वर्ष ९ अंतर्मुडूर्त पत्य नों असंख भा
g	8	ч	३ पहली	२	9 नपुंसक	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु अनुबंध	२ २ २	ર ર ર	१ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व पत्य नों असंख भाग	१ कोड पूर्व पल्य नों असंख भाग १ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १कोड पूर्व पल्य नों असंख भाग

## १७ असुर कुमार में तिर्यंच युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उफ्प जघन्य	१ ात द्वार उत्कृष्ट	परिः जघन्य	२ गण द्वार   उत्कृष्ट	३ संघयण द्वार ६	i	हना द्वार उत्कृष्ट	५ संठाण द्वार ६	६ लेश्या द्वार ६	७ दृष्टि द्वार ३	ল্লান–अ ধ্	द ज्ञान द्वार ३	६ योग द्वार ३	90 उपयोग द्वार २
	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	% हजार वर्ष % हजार वर्ष	३ पल्य १० हजार वर्ष	9, २, ३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज्र ऋषम नाराच	पृथक धनुष्य	६गाउ	समघोरंस	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	3	?
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पत्य	३ पल्य	१, २, ३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	९वज ऋषभ नाराच	पृथक धनुष्य	६गाउ	सभचोरंस	४ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	3	२
૪ પ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष कोड पूर्व जाझो	कोड पूर्व जाझैँ १० हजार वर्ष कोड पूर्व जाझो	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वजा ऋषभ नाराच	पृथक घनुष्य	हजार योजन	समघोरंस	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	3	7
۲,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष ३ पत्य	३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य	१, २, ३ जपजै	संख्याता ऊपजै	१वज्र ऋषभ नाराच	पृथक घनुष्य	६ गाउ	समचोरंस	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	3	2

# १८ असुरकुमार में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनो यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अव	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान-अः	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जधन्य	उत्कृष्ट	٤.	Ę	3	4	3	3	?
9 7 3	ओघिक नै ओघिक ओघिक नै जघन्य ओघिक नै उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर जाझे	१ सागर जाझो १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	৭.২.३ ডদ্ৰ	संख या असंख ऊपजै	ξ,	अंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	2
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	१ सागर जाझो १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	9.2.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख भाग	पृथक् धनुष्य	Ę	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3,	2
ί9 ς ξ	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर जाझो		9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	?

#### १६ असुरकुमार में मनुष्य युगलियो ऊपजै तेहनो यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ गत द्वार	२ परिमाण	। द्वार	३ संघयण द्वार	1	४ हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ł	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जाधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	4	3	3	7
9	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	९० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	३ पल्य १० हजार वर्ष	৭,२.३ ক্ত <b>प</b> जै	.संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	५ सौ धनुष्य जाझी	३ गाउ	9 समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	٥	२ नियमा	3	2
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पल्य	ं ३ पल्य	৭,২,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	३ गाउ	<b>३</b> गाउ	१ समचौरंस	४ पहली	९ मिथ्या	o	२ नियमा	3	3
૪ પ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	९० हजार वर्ष ९० हजार वर्ष ९ कोडपूर्व जाझो	१ कोडपूर्व जाझे १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझे	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	५ सौधनुष्य जाझी	५् सौ धनुष्य जाझी	१ समयौरंस	४ पहली	9 मिध्या	0	२ नियमा	3	3
(9 (5 (5	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष ३ पल्य	३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य	৭,২,३ ডঘনী	संख्याता ऊपजै	९ वज ऋषभ नाराच	३ गाउ	३ गाउ	9 समयौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	3

भ संबादार	१२ काषाय द्वार	<sup>9३</sup> इन्द्रिय द्वार	१४ सभुद्घात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	l '	७ 1 द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुबं	घ द्वार	नाणत्ता	भव	ı	२० कायसंवेध द्वार	[
*	8	¥	9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		' जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	પ્	३ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	कोड पूर्व जाझो	३ पत्न्य	भला भूंडा	कोड पूर्व जाझो	३ पल्य	٥	२ २	२ २	. ".	३ पल्य     ३ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष
¥	8 .	ų	३ पहली	· २	२ स्त्री, पुरुष	३ पल्य	३ पत्न्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु, अर्नुबंध	7	₹	३ पल्य ३ पल्य	३ पत्य ३ पत्य
¥	8	પ્	३ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	कोड पूर्व जाझो	कोड पूर्व जाझो	भला भूंडा	कोड पूर्व जाझो	कोड पूर्व जाझो	३ अवगाहना, आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ कोड पूर्व जा॰ १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व जा॰ १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व जा॰ १ कोड पूर्व जा॰	१ कोड पूर्व जा० १० हजार वर्ष
¥	R	ų	३ पहली	ર	२ स्त्री, पुरुष	३ पत्य	३ पत्न्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	२ २ २	३ पल्य १० हजार वर्ष	३ पल्य ३ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य ३ पल्य

भ ।द्वार	९२ कबाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद् <b>धातद्वा</b> र	9५् वेदनाद्वार	9६ वेदद्वार	1	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9: - अनुब	६ ांध द्वार	नाणत्ता	भव	r	1	२० संवेध द्वार
¥	8	ધ્	(y	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
	8	<b>'</b>	५ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला मूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	0	₹ २ २	υ υ	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १ सागर जाझो	४ कोडपूर्व ४० हजार व
	8	ų	३ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भता	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	८ अव, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, समु, आयु, अध्य, अनु,	२ २ २	נוני	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १ सागर जाझो	४ अंतर्मुहूर्त ४० हजार व
	8	ų	५् पहली	₹	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला मूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु अनुबंध	र २ २	ט ט ט	**	४ कोडपूर्व ४ सागर जा ४ कोडपूर्व ४० हजार व ४ कोडपूर्व ४ सागर जा

भ ब्राह्मर	१२ काषाय द्वार	9३ इन्द्रियं द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेदद्वार		19 द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	, भव	<u> </u>	२० कायसंवेष	ं द्वार
ĭ	8	ધ્	69	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ત	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जाझो	३ पल्य	भला भूंडा	कोडपूर्व जाझो	३ पल्य	o	२ २	२ २	१ कोडपूर्व जाः १० हजारवर्ष १ कोडपूर्व जाः १० हजारवर्ष	३ पल्य ३ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष
ÿ	૪	ų	३ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पत्य	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	₹	7	३ पल्य ३ पल्य	३ पल्य ३ पल्य
¥ .	8	ц	३ पहली	3	२ स्त्री. पुरुष	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	भला भूंडा	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ कोडपूर्व जा॰ १० हजारवर्ष १ कोडपूर्व जा॰ १० हजारवर्ष १ कोडपूर्व जा॰ १ कोडपूर्व जा॰	१ कोडपूर्व जाः १ कोडपूर्व जाः १ कोडपूर्व जाः १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाः १ कोडपूर्व जाः
¥	8	. <i>3</i> 1	३ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पत्य	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	2 2 2	સ સ સ	३ पल्य % हजार वर्ष ३ पल्य % हजार वर्ष ३ पल्य ३ पल्य	३ पल्य ३ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य ३ पल्य

## २० असुरकुमार में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनो यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपा	१ ।	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान–अ	c ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	१ सागर जाझे १० हजार वर्ष १ सागर जाझे	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् आंगुल	५ सौ धनुष्य	E	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	7
ક ક	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	० १० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	१ सागर जाझो १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	ξ,	पृथक् आंगुल	पृथक आंगुल	Ę	Ę,	3	३ भजना	३ भजना	3	3
. (9 E.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	५ सागर जाझो १० हजार वर्ष १ सागर जाझो	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	દ્દ	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	3

#### नवनिकाय में ५ ठिकानां नां ऊपजै–असुरवत्।

# २१ नव निकाय में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ ग्पात द्वार	परिमा	२ गद्वार	३ संघयण द्वार	४ अवग	। इना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान	द अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	ε	દ	3	ц	3	3	7
۹ ۲ ۲	ओधिक नैं ओघिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उल्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	पत्य नों असंख भाग १० हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुलनों असंख भाग	१हजार योजन	9 हुंडक	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	२ वच काय	3
8 4 4	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	पत्य नों असंख भाग १० हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	५.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	9 हुंडक	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	२ वच काय	₹ ,
(g) E.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष पल्य मैं असंख भाग	पत्य नौं असंख भाग १० हजार वर्ष पत्य नैं असंख भाग	৭.২.३ জঘনী	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	१ हुंडक	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	२ वच काय	3

## २२ नव निकाय में तिर्यंच युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ गत द्वार	परि	२ नाण द्वार	३ संघयण द्वार	<b>अ</b> व	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	জ্ञান–अঃ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	₹
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	देशोन २ पल्य १० हजार वर्ष	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	९वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	9 मिध्या	o	२ नियमा	3	1
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	देशोन २ पत्य	देशोन २ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वर्ज ऋषम नाराच	पृथक् घनुष्य	६ गाऊ	9 समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	?
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष कोडपूर्व जाझो	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराय	पृथक् धनुष्य	हजार धनुष्य जाझो	9 समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	\$	2
19 5 5	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष देशोन २ पल्य	देशोन २ पत्य १० हजार वर्ष देशोन २ पत्य	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	?

२४ भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

99 संज्ञा द्वार	9२ कषाय द्वार	<sup>13</sup> इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात हार	१५ वेदना द्वार	१६ पेद द्वार	1	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>46</sup> अनुब	: ध द्वार	नाणता	ų	ব	२० कायसंवैध	द्वार
8	8	¥ .	હ	ş	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	y	६ केवल वर्जी	Ś	-	पृथक् मास	कोडपूर्व	भलाभूंडा	पृथक् मास	कोडपूर्व	o	₹ ? ?	C. C.	९ पृथकमास १० हजार वर्ष ९ पृथकमास १० हजार वर्ष ९ पृथकमास ९ सागर जाझे	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष
R	ક	ų	ų	₹	3	पृथक् मास	पृथक् मास	भलाभूंडा	पृथक् मास	पृथक् गास	५ अव०, ज्ञान, समु० आयु, अनुबंध	₹ ₹ ₹	13 13 13	१ पृथकमास १० हजार वर्ष १ पृथकमास १० हजार वर्ष १ पृथकमास १ सागर जाझे	-
8	Х	¥	ų	ş	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भतामूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव०, आयु, अनुबंध	२ २ २		9 कोडपूर्व 90 हजार वर्ष 9 कोडपूर्व 90 हजार वर्ष 9 कोडपूर्व 9 सागर जाझे	४ कोडपूर्व ४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ सागर जाझो

१९ संझाद्वार	१२ काषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9। आयु	9 इार	१८ अध्यवसाय द्वार	्र अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	ţ¢.	व	२ कायसं	० वेध द्वार
8	8	ધ્	t9	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	R	ч	३ पहली	?	9 नपुंराक	अंतर्गुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	v	ર ૨ ૨	२ २ २	१ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, पल्य नो असंख भाग	१ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व पत्य नों अरांख भाग
¥	k	ц	३ पहली	ر	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	३ आयु अध्य० अनुबंध	२ २ २	יישאיי ני	१ अंतर्गुह्तं १० हजार वर्ष १ अंतर्गुह्तं १० हजार वर्ष १ अंतर्गु, पल्य नों असर्खि भाग	१ अंतर्मु, पल्य नों असंख भाग १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, पल्य नों असंख भाग
¥	¥	ų	३ पहली	Ÿ	१ नपुसक	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ आयु., अध्य० अनुबंध	÷ ÷	२ २ २	१ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व पत्य मी असंख भाग	१ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व पत्य नों अरांख भाग

१९ ब्राह्मर	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	अगयु आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणला	भ्र	ī	२० कायसंवे	
Ÿ	8	4	IJ	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	¥	ų	३ पहली	?	२ स्त्री, पुरुष	कोडपूर्व जाझो	३ पत्य	मला मूंडा	कोड <b>पूर्व</b> जाझो	३ पल्य	. 0	ર ર	૨	१ कोडपूर्व जा. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जा. १० हजार वर्ष	
¥	R	¥	३ पहली	ર	२ स्त्री, पुरुष	२ पल्य देसूण	३ पत्य	मला भूंडा	२ पत्य देसूण	३ पल्य	२ आयु., अनु.	3	3	२ पत्य देसूण २ पत्य देसूण	३ पल्य २ पल्य देसूण
¥	8	ų	३ पहली	2	२ स्त्री, पुरुष	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	भला भूंडा	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	३ अवगाहना, आयु ़ अनु.	२ २ २	ર ર ર	१ कोडपूर्व जा. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जा. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जा. १ कोडपूर्व जा.	१ कोडपूर्व जा. १० हजार वर्ष
¥	४	ų	३ पहली	ર	३ स्त्री. पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूडा	३ पत्न्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	સ સ	ર ર ર	३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य २ पत्य देसण	३ पत्य २ पत्य देसूण ३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य २ पत्य देसूण

गमा २२५

# २३ नव निकाय में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नीं संख्या	उप	९ पात द्वार	् परिमा	≀ ण द्वार	३ संघयण द्वार	'	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–3	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	₹
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९० हजार वर्ष ९० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	देसूण २ पत्य १० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	৭,२,३ <b>ऊप</b> जै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę,	आंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	Ę	Ę,	3	3 भजना	३ भजना	3	3
પ્ર ધ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष देसूण २ पल्य	देसूण २ पत्य ९० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	१.२.३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	पृथक् धनुष्य	Ę	४ पहली	9 मिथ्या	9	२ नियमा	ş	ą
(9 :: E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	देसूण २ पत्य ९० हजार वर्ष देसूण २ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता या असंख्याता ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	ξ	Ę	Э	३ भजना	३ भजना	3	2

# २४ नव निकाय में मनुष्य युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	9 ात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	ł	४ गहना द्वार	'५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান-এং	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपवोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	1
વ ૨	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	देसूण २ पत्य १० हजार वर्ष	৭.২.३ ডেঘতী	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	५ सौ धनुष्य जाझी	३ गाउ	9 रामचउरंस	४ पहली	१ गिथ्या	O	२ नियमा	ą	₹
3	ओधिक नैं उत्कृष्ट	देसूण २ पत्य	देसूण २ पत्य	१.२.३ ऊपजै	सख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	देशूण २ माउ	३ गाउ	9 समयवरंस	४ पहली	9 गिथ्या	U	२ नियमा	ŧ	?
૪ ૧ ૬	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष कोड पूर्व जाझो	कोड पूर्व जाओ १० हजार वर्ष कोड पूर्व जाओ	৭.২.३ ডেঘতী	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराध	५ सौ धनुष्य जाझी	धु सौ धनुष्य जाझी	9 समयजरंस	४ पहली	१ गिथ्या	Ü	२ नियमा	₹	3
(9 C, E,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	देसूण २ पत्य १० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	२ वज्र ऋषभ नाराच	३ गाउ	३ गाउ	१ समबदरंस	४ पहली	9 मिध्या	e	२ नियमा	3	3

# २५् नव निकाय में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संधयण द्वार		४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान-अ	c. ग्जान द्वार	६ योग द्वार	उप
}		जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę.	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ	3	4	3	3	
₹	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	90 हजार वर्ष 90 हजार वर्ष देसूण २ पल्य	देसूण २ पत्य १० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक आंगुल	५ सौ धनुष्य	ξ,	ધ	3	४ भजना	३ भजना	3	
ų	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष देसूण २ पत्य	देसूण २ पल्य १० हजार वर्ष देसूण २ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक आंगुल	पृथक आंगुल	Ę	Ę	*	3 भजना	3 भजना	3	
۲,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष देशूण २ पत्य	देसूण २ पल्य १० हजार दर्ष देसूण २ पल्य	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	3 भजना	3	

११ सङ्गाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1	७   द्वार	१८ अध्यदसाय द्वार	98 अनुब	घ द्वार	नाणत्ता	भ्द	ī	२० कायसंवेध	द्वार
8	8	પ્	ts	<b>२</b>	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	¥	ч	५् पहली	2	3	अंतर्मृहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोडपूर्व	o	२ २ २	ξ 1.	9 अंतर्मुहूर्त 90' हजार वर्ष 9 अंतर्मुहूर्त 90 हजार वर्ष 9 अंतर्मुहूर्त २ पल्य देसूण	४ कोडपूर्व ८ पत्य देसूण ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ८ पत्य देसूण
8	Я	ч	३ पहली	₹	ą	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मृदूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	८ अव. लेश्या, दृष्टि ज्ञान—अज्ञान, समु. आयु. अध्य. अनु.	२ २ २	t. t.	१ अंतर्गुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २ पल्य देसूण	४ अंतर्मु. ८ पल्य देसूण ४ अंतर्मु. ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ८ पल्य देसूण
¥	У	ų	५् पहली	¥	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	को डपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ς ς ε	१ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व २ पत्य देराूण	४ कोडपूर्व ८ पल्य देसूण ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ८ पल्य देसूण

११ संबाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		१७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१ अनुबंध		नाणता	3	1व	२० कायसंदे	
¥	8	પ્	ß	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	¥	ï	३ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जाझी	३ पल्य	भला भूंडा	कोडपूर्व जाझी	३पल्य	o	? ?	२ २	१ कोडपूर्व जा० १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जा० १० हजार वर्ष	३ पल्य २ पल्य देसूण ३ पल्य २० हप्तार वर्ष
¥	8	Ä	३ पहली	ş	२ स्त्री पुरुष	देसूण २ पल्य	३ पल्य	ਮਨਾ। ਮ੍ਰਾਂਤ।	देसूण २ पत्य	३ पल्य	३ अवगाहना, आयु, अनुबध	?	₹	२ पल्य देसूण २ पत्य देसूण	३ पत्य २ पत्य देसूण
ÿ	8	પ્	३ पहली	Ÿ	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जाझी	कोडपूर्व जाझी	मला भूंडा	कोडपूर्व जा <b>झी</b>	कोडपूर्व जाझी	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	₹ ₹	२ २ २	१ कोडपूर्व जा० १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जा० १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जा० १ कोडपूर्व जा०	१ कोडपूर्व जा० १ कोडपूर्व कोडपूर्व जा० १० हजार व १ कोडपूर्व जा० १ कोडपूर्व ज
¥	8	ય	३ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य -	३ पल्य	भता भूंडा	३ पत्थ	३पल्य	३ अवगाहना, आयु, अनुबंध	ર ૨ ૨	२ २ २	३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य २ पत्य देसूल	३ पत्य २ पत्य देसूण ३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य २ पत्य देसूण

भ सन्न हार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	l	७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>91</sup> अनुब	ध द्वार ध द्वार	नाणत्ता	भव		२० कायसंवेध इ	:ार
¥	8	પ્	(9	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट क्राल
¥	8	ų	६ पहली	3	ą	पृथक् मारा	कोड पूर्व	भता भूंडा	पृथक गास	कोड पूर्व	o	२ २ २	נוטט	१ पृथक मास १० हजार वर्ष १ पृथक मास १० हजार वर्ष १ पृथक मास २ पत्य देसूण	४ कोड पूर्व ८ पत्य देसूण ४ कोड पूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोड पूर्व ८ पत्य देसूण
¥	8	ų	५् पहली	₹	3	पृथक् मास	्पृधक मारा	পলা শূভা	पृथक मास	पृथक मास	५् अव., ज्ञान, सगु० आयु० अनु०	<b>२</b> २ २	11 0 11	१ पृथक मास १० हजार वर्ष १ पृथक गास १० हजार वर्ष १पृथक मास २ पत्य देसूण	४ पृथक मास ८ पत्य देर ४ पृथक मास ४० हजार दे ४ पृथक मास ८ पत्य देर्
¥	8	ų	६ पहली	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	को ड पूर्व	कोड पूर्व	्र अव० आयु० अनुबंध	२ २ २		१ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व १० हजार वर्ष १ कोड पूर्व २ पत्य देसूण	४ कोड पूर्व ८ पत्य देसूण ४ कोड पूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोड पूर्व ८ पत्य देसूण

पृथ्यी में २६ ठिकाणां नां ऊपजै – पांच स्थावर ५, तीन विकलेंद्रिय ८, असन्ती तिर्यंच पंचेंद्रिय ६, सन्ती तिर्यंच पंचेंद्रिय १०, सन्ती मनुष्य ११, असन्ती मनुष्य १२, दश भवनपति २२, व्यंतर २३, ज्योतिषी २४, सुधर्म २५, ईशान २६।

# २६ पृथ्वीकाय में पृथ्वीकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	9 त द्वार	परिमा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	} ना द्वार	५् संठाण द्वार	् लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान-3	् ज्ञान द्वार	् योग द्वार	90 उपयोग <i>द्वा</i>
		जघन्य	বন্ <b>চুন্ত</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę.	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	¥	à	3	7
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त " १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय समय समय १,२,३ ऊपजै संर		१ छेवटो		नों असंख्य भाग	मसूर चंद्र	४ पहली	9 मिथ्या	O	२ नियमा	् काय	3
~	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय	असंख्य ऊपजै असंख्य ऊपजै ख या असंख ऊपजै	१ छेवटो		नों असंख्य गाग	मसूर चंद्र	३ पहली	9 मिथ्या	٥	२ नियमा	9 काय	ş
С,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजा <b>र वर्ष</b> १अंतर्मुहूर्त २२ हजा <b>र वर्ष</b>	৭২,३ কদ্বী	संख या असंख ऊपजै	੧ छੇਰਟੀ		नों असंख्य 1ग	मसूर चंद्र	र पहली	प मिथ्या	o	२ नियमा	9 काय	3

#### २७ पृथ्वीकाय में अपकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाग	ग द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहन	ग द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–3	६ म्ह्यान द्वार	६ योग द्वार	५० उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	э	ц.	3	3	7
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय ३ समय समय ३ ९२३ ऊपजै सं		१ छेवटो	अंगुल नौं भा	- 1	थिबुकपानी ना परपोटा	४ पहली	9 मिश्या	o	२ नियमा	१ काया	1
ષ્	जघन्य मैं ओघिक जघन्य मैं जघन्य जघन्य मैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय अर समय रामय अ ९२,३ ऊपजै - सं		१ छेवटो	अंगुल नौं : भार	1	थिबुक—पानी मां परपोटा	३ पहली	9 गिथ्या	o	२ नियमा	9 काया	3
τ,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	५,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	੧ छੇवटो	अंगुल नौं : भा		थिबुक—पानी नां परपोटा	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	?

#### २८ पृथ्वीकाय में तेउकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान3	द ग्ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य उत्कृष्ट	ξ	जघन्य उत्कृष्ट	Ę	ફ	3	પ્	3	3	₹
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय असंख ऊपजै समय समय असंख ऊपजै ९.२.३ ऊपजै संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुलनों असंख भाग	३ सूचीकलाप	१ पहली	मिथ्या	ş 0	५ नियमा	काया	2
પ પ્	जघन्य नैं ओघिक, जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ग १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ग	समय समय असंख्य कपजै समय समय असंख्य कपजै ९.२.३ कपजै संख या असंख कपजै	१ छेवटो	आंगुलनों अरांख भाग	३ राूचीकलाप	9 पहली	मिथ्या	₹ 0	५ नियमा	काया	?
(9 E E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं अघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	९२.३ संखया ऊपजै असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुलनों असंख भाग	सूचीकलाप	३ पहली	্ণ শিথ্যা	o	२ नियमा	9 काया	3

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	i '	10 ਬੁਫ਼ਾर	<sup>१८</sup> अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध ध द्वार	नाणत्ता	भ	व	२० कायर	विध द्वार
В	8	પ્	b	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	ਬੰ	१ फर्श	३ पहली	ર	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	٥	સ સ સ	असंख असंख -	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	अरांख काल असखंकाल अरांख काल असखंकाल ८८ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष
8	Я	9 फर्स	3 पहली	ą	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	४ लेश्या आयु अध्य० अनु०	ર ર ર	असंख असंख <sup>द</sup>	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	अरांखकाल असंखकाल असंखकल असंखकाल ४ अंतर्मुहूर्त ६६ हजार वर्ष
8	¥	१ फर्स	3 पहली	ş	१ नपुंसक	२२ हजार व <del>र्ष</del>	२२ हजार वर्ष	भलाभूंडा	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	२ आयु० अनुबंध	२ २ २	ε, ε,	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु० २२ हजार वर्ष १ अंतर्मु० २२ हजार वर्ष २२ हजारवर्ष	८८ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु० ८८ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष

१९ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वा <del>र</del>	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार		ा पुद्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणता	भव	ı	्र- कायसंदे	
¥	8	ય્	(9	٦	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	Я	9 फर्श	३ पहली	٦	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	७ हजार वर्ष	भत्ता भूंडा	अंतर्गृहूर्त	७ हजार वर्ष	0	۲ ۲	असंख असंख ८	९ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० ९ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	असंख काल असंख काल असंख काल असंख काल २८ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष
R	8	ी फर्झ	3 ਪਵਰੀ	R	१ न <u>पु</u> ंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंदा	अंतर्गृहूर्न	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आयु, अध्यव अनुव	<b>?</b> ? ?	असंख असंख -	९अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० ९अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	असंखकाल असंख काल असंखकाल असंख काल ४ अंतर्भृहूर्त ८,८ हजार वर्ष
š	8	१ फर्श	३ पहली	3	9 न <u>पु</u> ंसक	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	भला भूंडा	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	२ आयु० अनु०	ئ ئ	ت. د	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु० ७ हजार वर्ष १ अंतर्मु० ७ हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष ४ अंतर्गु० २८ हजार वर्ष ८६ हजार वर्ष

९१ बाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ देवना द्वार	१६ वेद द्वार	१। आय्	७ : इ.स.	<sup>9</sup> ⊏ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	धद्वार धद्वार	नाणता	भव		२० कायसंवेध द्व	ार
¥	8	પ્	(9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	Я	् कर्श	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्गृहर्त	३ दिन रात	भला मूंडा	अंतर्गुहूर्न	३ दिन रात	o	२ २ २	असंख असंख ८	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	असंख काल असंख काल असंख काल असंख काल ५२ दिन रात ८६, हजार वर
¥	8	ी फर्श	3 पहली	·	ी नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्न	अंतर्गुद्दत्त	३ आयु, अध्य० अनु०	२ २ २	अरांख अरांख -	९ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गु० ९ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गु० १ अंतर्गुहूर्त २२ झजार वर्ष	असंखकाल असंख काल असंखकाल असंख काल ४ अंतर्गुहूर्त ८८ हजार वर्ष
¥	8	प फर्श	पहली	2	१ नपुंराक	३ दिन रात	३ दिन सत	भला भूंडा	३ दिन रात	३ दिन राः।	२ आयु० अनु०	5 5		३ दिन रात १ अंतर्मु० ३ दिन रात १ अंतर्मु० 3 दिन रात २२ हजार वर्ष	१२ दिन रात ८८ हजार व १२ दिन रात ४ अंतर्मु० १२ दिन रात ८८ हजार व

गमा २२६

## २६ पृथ्वीकाय में वाउकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संध्यण द्वार	४ अवगाहन	। द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–३	६ अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	ξ	3	ų	3	3	₹
•	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय अर समय समय अर्ग १,२,३ ऊपजै संख	ख ऊपजै	੧ ਲੇਕਟੀ	अंगुल असंख		पलाका	३ पहली	9 मिथ्या	c	२ नियमा	9 काया	3
4	जघन्य नै औघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष ९अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय अस समय समय अर १,२,३ ऊपजै - संख		9 छेवटो	अंगुल असंख		पताका	३ पहली	9 मिथ्या	9	२ नियमा	१ काया	3
ς,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख उपजे	9 छेवटो	अंगुल असंख		पताका	3 पहली	9 मिथ्या	0	२ नियमा	९ काया	?

# ३० पृथ्वीकाय में वनस्पतिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण	। द्वार	३ संधयण द्वार	अवगाह	? ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अङ्	६ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% <b>उ</b> पयोगझ
		जाधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	<i>বন্দৃ</i> ন্ত	ξ	जपन्य	उत्कृष्ट	ž,	Ę	э	પ્	<b>3</b>	ş	7
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गृहूर्त १ अंतर्गृहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष		अरांख ऊपजै असंख ऊपजै ख या अरांख ऊपजै	9 छेवटो	अंगुलनों असंख भाग	हजार योजन जाझी	नाना संठाण	४ पहली	9 मिथ्या	n	२ नियमा	9 काय	?
۲ ۲ ٤	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	वंअंतर्मुहूर्त वअंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	समय समय	असख कपजे असंख कपजे ांख या असंख कपजे	१ छेवटो	अंगुलनों अरांख भाग	अगुलनों असंख भाग	नाना संजाण	३ पहली	५ मिथ्या	o	२ नियमा	९ काय	ş
(9 5. §	x	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	<sup>५</sup> छेवटो	अंगुलनों असख भाग	हजार थोजन जाझी	नाना संठाण	४ . पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	9 काय	?

## ३९ पृथ्वीकाय में बेइंद्री ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमः।	२० द्वार नी संख्या	, ভাণ	१ पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-3	द म्ह्यान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग इ
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę.	દ્	3	ц	3	₹	1
9 ?	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नें जघन्य औघिक नैं जस्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३, ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 क्षेचटो	अंगुल नों असंख भाग	१२ योजन	१ हुंडक	ਤੇ ਪੁਛਦੀ	२ सम्यक् गिथ्या	२ नियम	२ नियमा	२ वच काय	?
¥ '4 '4	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्न १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	৭.২.২, জদ <b>ী</b>	सख या असंख ऊपजी	१ छेयटो	अंगुल में असंखनाग	अंगुल नो अञ्ख्य भाग	१ हुडक	इ पहली	न मिध्यः	O	२ नियमा	५ कत्य	· ŧ
ί9 : ξ	उत्कृष्ट मैं ओधिक उत्कृष्ट मैं अधन्य उत्कृष्ट में उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अतर्गुहूर्ट २२ हजार वर्ष	१.२.३. छपजै	संख्या असंख्य ऊपजै	9 छंददी	अंगुल नी असंख भाग	१२ योजन	५ हुंडक	३ डै घहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	3

भगवती-जोड (खण्ड-६)

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	: घ द्वार	नाणता	भव		२० कायसंवे	
8	8	પ્	U)	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
. 8	Х	9 फर्श	४ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्गृहूर्त	३ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ हजार वर्ष	o	२ २ २	असंख असंख ८	१ अंतर्मृहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मृहूर्त १ अंतर्गु० १ अंतर्मृहूर्त २२ हजार वर्ष	असंखकाल असंख काल असंखकाल असंख काल १२ हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष
8	х	9 फर्रा	३ पहली	ą	१ नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्गृहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ समु० आयु० अध्य०, अनु०	२ २ २	असंख असंख 	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मु० ९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मु० ९अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	असंखकाल असंख काल असंखकाल असंख काल ४ अंतर्गुहूर्त ८८ हजार वर्ष
8	R	9 फर्श	४ पहली	7	९ नपुंसक	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	भला भूंडा	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	२ आयु० अनु०	ર ૨ ૨	τ. τ.	३ हजार वर्ष १ अंतर्मु० ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु० ३ हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	१२ हजार वर्ष ८५ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु० १२ हजार वर्ष ८५ हजार वर्ष

	१९ संङ्गा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	१७ आयु		<sup>१</sup> ८ अध्यवसाय द्वार	99 अनुब	६ घ द्वार	नाणता	भव	ſ	२० कायसंबे	
	8	૪	પ્	છ	2	3	जाघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
•	Å	8	9 फर्श	3 पहली	7	9 नपुंसक	१अंतर्मुहूर्त	90 हजार वर्ष	भत्ग भूंडा	१ अंतर्गुहूर्त	१० हजार वर्ष	o	? ? ?	असंख असंख <sup>द</sup>	१ अंतर्गुडूर्त १ अंतर्गु० १ अंतर्गुडूर्त १ अंतर्गु० १ अंतर्गुडूर्त २२ हजार वर्ष	अरखि काल अरखि काल अरखि काल अरखि काल ४० हजार वर्षे ८६ हजार वर्ष
	R	¥	9 फर्श	३ पहली	₹	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	મૂંહા	अंतर्मुहूर्त	अतर्गुहूर्त	प् अव० लेश्या० आयु० अध्य० अनु०	२ २ २	असंख असंख ६	२ अंतर्मृहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मृहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मृहूर्त २२ हजार वर्ष	असंख काल असंख काल असंख काल असंख काल ४ असर्गु० ६,८ हजार यर्ग
-	Å	Х	१ फर्श	३ पहली	₹	१ नपुंराक	२० हजार वर्ष	९० हजार्र वर्ष	भला भूंडा	५० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध	ર ૨ ૨	t.	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु० १० हजार वर्ष १ अंतर्मु० १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	४० हजार वर्ष ८८ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष ४ अंतर्गु० ४० हजार वर्ष ८५ हजार वर्ष

भ इंद्र बंबादार	९२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१५ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणता		भव	1	२० वेध द्वार
¥	8	પ્	(9	2	ş	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
2	8	२ फर्रा रस	३ पहली	ą	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	५२ वर्ष	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	<sup>9</sup> २ तर्ष	o	२ २ २	रांख संख	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १अतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	संख काल रांख काल संख काल रांख काल ४८ वर्ष ८८ हजार वर्ग
*	8	२ फर्श रस	3 पहली	?	१नपुंसक	अंतर्मुह्र्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्गृहूर्त	अंतर्गुहूर्त	৬ अब, दृष्टि, ज्ञान जोग, आयु, अध्य० अनु०	? ?	संख संख ८	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गु० १ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गु० १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	संख काल रांख काल संख काल संख काल ४अंतर्गु ८८ हजार वर्ष
1	8	२ फर्श रस	३ पहली	?	१ नपुंसक	<del>१</del> २ वर्ष	9२ दर् <del>ष</del>	भला भूंडा	<b>१२</b> वर्ष	<b>९२</b> वर्ष	२ आयु० अनु०	२ २ २	G. S.	२२ वर्ष १ अंतर्मु० १२ वर्ष १ अंतर्मु० १२ वर्ष २२ हजार वर्ष	४८ वर्ष ८८ हजार वर्ष ४८ वर्ष ४ अंतर्गु० ४८ वर्ष ८८ हजार वर्ष

# ३२ पृथ्वीकाय में तेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ ापात द्वार	२ परिमाण	ਾ ਫੁਲ	३ सवयण द्वार	!	४ हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	ं दृष्टि द्वार	झान–अइ	८ गन द्वार	् योग द्वार	१० उपयोग द्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	٤	ξ	3	, <u>r</u>	3	3	<b>२</b>
₹ .	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३. ऊपजै	संख या असंख उत्पजै	9 छेवटो	अंगुल नों असंख भाग	३ गाउ	9 हुंडक	३ पहली	२ सम्बक् विश्वपा	२ नियमा	२ नियमा	<b>&gt; রশ্ব</b> ফ্রাণ	3
ષ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	९.२.३. ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	५ छेवटो	अगुल नों असंख भाग	अंगुल नों असंख भाग	२ हुंडक	३ पहली	५ मिन्या	t)	२ नियमा	५	₹
د	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३. ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	अंगुल नों असंख भाग	३ गान	9 हुंडक	३ पहली	२ सन्चक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	₹

## 33 पृथ्वीकाय में चउरिंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (८)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	५ पात द्वार	२ परिमाप	ग द्वार	३ सधयण द्वार	i	४ गाइना द्वार	५ संताण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	<b>ज्ञान-</b> -3	द इज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वाः
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ.	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	ų	3	3	2
	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	9.२.३ ऊपजे	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	अंगुल में असंख भाग	४गाउ	9 हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	. २ नियमा	२ वच काय	?
પ્	जघन्य में ओघिक जघन्य मैं जघन्य जघन्य मैं उत्कृष्ट	॰अंतर्गुहूर्त ९अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	१२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजे	१ छेवटी	अंगुल नों असंख भाग	अगुल नों असंख भाग	षु हुंडक	३ पहली	9 मिध्या	o	२ नियमा	9 काय	?
ε.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९अंतार्मुहूर्त ९अंतार्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	अंगुल नी असंख भाग	४ गाउ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	वच काय	3

## ३४ पृथ्वीकाय में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिमा	२ ग द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ इना द्वार	५ संठाण झार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	<b>রান-</b> 3	८ गज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	বন্দৃদ্	í,	દ	3	4	3	3	₹ 7
9 7 3	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जधन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	अंगुलनों असंख भाग	हजार जोजन	<b>१ हुं</b> डक	३ पहली	२ सम्यक् मिश्रम	२ नियमा	२ नियमा	२ तच वनय	2
8 7 6	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	छेवटो	अंगुलनों असंख भाग	अंगुलनों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिध्या	0	२ नियमा	9 काय	२
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	धेवटो	अंगुलनों असंख भाग	हजार जोजन	<b>१ हुं डक</b>	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वचन काया	5

1		<u> </u>													
११ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	l	७ इ.स.	<sup>9</sup> द. अध्यवसाय द्वार	9 अनुब	ह ध द्वार	नाणता		ਮਰ		२० विध द्वार
8	8	ધ્	6	२	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्यं	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	3	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुह <del>ूर्त</del>	४६ दिन रात	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	४६ दिन रासत	o	२ २ २	संख संख ८	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल १६६ दिन रात ८६ हजार व
8	8	3	३ पहली	₹	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	७ अव० दृष्टि, ज्ञान, जोग, आयु, अध्य० अनु०	5 5	संख संख	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष
R	8	3	३ पहली	₹	9 नपुंसक	४६ दिन रात	४६ दिन रात	भला भूंडा	४६ दिन रात	४६ दिन रात	२ आयु० अनुबंध	₹ ₹ ₹		४६ दिन रात १ अंतर्मु० ४६ दिन रात १ अंतर्मु० ४६दिन रात २२ हजार वर्ष	१६६ दिन रात ८८ हजार र १६६ दिन रात ४ अंतर्मु० १६६ दिन रात ८८ हजार र

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	l	१७ वु द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>48</sup> अनुब	६ iध द्वार	नाणता		भव	i e	२० विध द्वार
¥	8	પ્	6	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	Å	8	3 पहली	ą	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	६ मास	भला भूंडा	अंतर्गुहू <del>र्त</del>	६ मारा	o	२ २ २	संख संख ६	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	संख काल संख काल संख काल संख काल' २४ मास ८८ हजार वर्ष
¥	¥	8	3 पहली	7	५ नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंत <b>र्गुहूर्त</b>	७ अव, दृष्टि. ज्ञान, जोग आयु, अध्य० अनु	۲ ۲	संख संख	१अंतर्मुहूर्त्तं १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त्त १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त्त २२ हजार वर्ष	संख काल संख काल संख काल संख काल ४ अंतर्मुहूर्त <sub>५,५</sub> हजार
¥	R	Å	३ पहली	ą	१ नपुंसक	६मास	६मास	भला भूंडा	६मास	६ शास	२ आयु, अनुबंध	۲ ۲	E.	६ मास १ अंतर्म० ६ मास १ अंतर्म० ६ मास २२ हजार वर्ष	२४ मास ८८ हजार वर्ष २४ मास ४ अंतर्मु० २४ मास ८८ हजार वर्ष

भ स्नाहार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	<sup>9</sup> ५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	११ अनुब	ध द्वार	नाणता		भव		२० विध द्वार
٧,	y	ય	ly ly	२	3	जाधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	Å	ų	३ पहली	a	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	0	ર ર ર	ט ט ט	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ८८ हजार व ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु० ४ कोडपूर्व ८८ हजार व
¥	X	ų	3 पहली	ž.	<b>१ न्</b> पुंरु <b>क</b>	अंतर्मृहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव., दृष्टि, ज्ञान, जोग, आयु, अध्य., अनुबंध	२ २ २	G	१अंतर्गृहूर्तं १अंतर्गु० १अनर्गुहूर्तं १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्तं २२ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार व ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार व
¥	8	y (	३ पहली	à	१ नपुंसक	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भलाभूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंघ	२ २ २	מ מ ט	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मु. 9 कोडपूर्व 9 अंतर्मु. 9 कोडपूर्व २२ हजार वर्ष	४ को उपूर्व <sub>घरः</sub> हजार च ४ को उपूर्व ४ अंतर्मु. ४ को उपूर्व घट हजार व

## ३५ पृथ्वीकाय में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यञ्च ऊपजै तेहनों यंत्र (१०)

गमा	२० द्वार नौ संख्या	उप	१ पात द्वार	परिमाण्	२ गद्धार	३ संघयण द्वार	अवग	४ ग्रहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	२
۹ ۲ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३भजना	३भजना	3	?
પ્ર પ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	९.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख माग	अंगुलनों असंख भाग	Ę	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	9 काय	2
9 5	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१२३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	દ્દ	3	३ भजना	३भजना	3	3

## ३६ पृथ्वीकाय में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (११)

गमा	२० द्वार नी सं ख्या	उप	१ पात द्वार	२ परिमाप	ग द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअ	द भज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ	3	ય	3	3	7_
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	५२.३ ऊपजै	<b>संख</b> ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख भाग	५ सौ घनुष्य	દ્દ	દ્દ	э	४ भजना	३भजना	ą	ą
४ ५ ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	५२,३ ऊपजै	संख ऊपजै	Ę	अंगुलनों असंख भाग	अंगुलनों असंख भाग	ξ	३ पहली	९ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काय	2
() () ()	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	५२,३ ऊपजै	संख ऊपजै	Ę	५् सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	₹	7

## ३७ पृथ्वीकाय में असन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१२)

गमा	२० द्वार नी संख्यां	उप	१ पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	् संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अः	६ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य उत्कृष्ट	٦	Ę	3	ų	3	3	₹ .
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	अंगुलनों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	2

२३४ भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1	७ ] द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	: घ द्वार	नाणत्ता	भ	व		० वेध द्वार
*	8	ų	U	२	3	जघन्य	তক্ষেন্ত	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ц	५् पहली	ર	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	मला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	o	२ २ २	25 25 15	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त १अंतर्गु० १अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु० • ४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष
8	8	ц.	३ पहली	?	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	६ अव., लेश्या, दृष्टि, ज्ञान—अज्ञान, जोग, समु, आयु, अध्या, अनुबंध	२ २ २	ט ט ט ט	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मु० ९ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु० ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष
8	8	ų	५ पहली	2	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भलाभूडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध	<del>،</del> ۲	נטטנ	9 को डपूर्व 9 अंतर्मु. 9 को डपूर्व 9 अंतर्मु. 9 को डपूर्व २२ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष

१९ संब्राद्वार	१२ कवाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेदद्वार	I	१७ इ.स.	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुः	हें चिद्वार	नाणत्ता	भ	ī	२० कायसंवेध	द्वार
8	8	ધ્	(9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ų	६ पहली	२	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	o	ર ૨ ૨	11 11 11	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु० ४ कोडपूर्व <sub>८८</sub> हजार वर्ष
¥	8	ų	३ पहली	२	₹	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	६ अव., लेश्या, दृष्टि, ज्ञान,अज्ञान, जोग, समु, आयु, अध्य., अनुबंध	२ २ २	טטט	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु० १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष
¥	Å	*	६ पहली	7	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	मलाभूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव., आयु, अनुबंध	۲ ۲ ۲	נייט	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व २२ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु. ४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	<sup>98</sup> समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	<sup>9६</sup> वेद द्वार	l .	७। इ.स.	<sup>9</sup> ८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ः घ द्वार	नाणत्ता	भर	ī	रु० कायसंवेध	द्वार
8	8	પ્	19	7	ą	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	বন্চুৎ্হ		जघन्य	उत्कृष्ट	ज्यन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ч	३ पहली	₹	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	o	२ २ २	U U	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मु. ९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मु. ९अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ८८ हजार वर्ष

## ३८ पृथ्वीकाय में असुरकुमार ऊपजै तेहनों यंत्र (१३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार <sub>्</sub>	परिमाण्	। द्वार	३ संघयण द्वार	५ अवगा	} हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अ	द इज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ų	3	3	?
9 २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	9,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	2
प्र ५	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२, <b>३</b> ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	<b>ર</b>
(9 T. E	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	५,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	¥ ਪ <b>ह</b> ली	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2

## ३६ पृथ्वीकाय में नवनिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१४-२२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	9 पात द्वार	२ परिमाण	। द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाहन	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अङ्	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	4	3	3	₹
4	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समघौरंस	४ पहली	\$	३ नियमा	3 भजना	3	3
૪ પ	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गुहूर्त २२ हजार वर्ष	৭.২.३ ক্ত <b>ণ</b> তী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	3
() E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३ ऊपज़ै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2

## ४० पृथ्वीकाय में व्यंतर ऊपजै तेहनों यंत्र (२३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	9 पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	र ग्रहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	লানअङ	ट गन द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	ч	3	3	2
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुडूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	э	3
ધ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य <sub>.</sub> जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	3 भजना	3	7
τ,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतमुर्हूर्त १ अंतमुंहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समयौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	э	7

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1	७ इार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुब	६ iध द्वार	नाणता	भव	1	२५ कायसंवे	
8	8	ધ્	19	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जपन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
Ŗ	¥	ų	५ पहली	ं २	२ स्त्री, पुरुष	१० हजार वर्ष	१ सागर जाझो	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	९ सागर जाझो	0	ર ર ર	२ २ २	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	१ सागर जाझो २२ हजार वर्ष १ सागर जाझो १ अंतर्गु. १ सागर जाझो २२ हजार वर्ष
8	४	ų	५ पहली	२	२ स्त्री, पुरुष	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भला भूंडा	90 हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध	ર ૨ ૨	२ २ २	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष
8	8	ц	५ पहली	₹	२ स्त्री, पुरुष	९ सागर जाझो	१ सागर जाझो	भला भूंडा	१सागर जाझो	१ सागर जाझो	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो २२ हजार वर्ष	१सागर जाझो २२ हजार वर्ष १सागर जाझो १अंतर्गु. १ सागर जाझो २२ हजार वर्ष

१९ संज्ञाद्वार	९२ कषाय द्वार	<sup>9</sup> ३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	l	७ इार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ह घ द्वार	नाणता	भ	व	२० कायसंवे	
¥	8	ų	l9	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	,	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
y	8	પ્	५ पहली	2	२ स्त्री, पुरुष	90 हजार वर्ष	२ पल्य देसूण	भलाभूंडा	१० हजार वर्ष	२ पत्य देसूण	O	२ २ २	* * *	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	२ पत्य देसूण २२ हजार वर्ष २ पत्य देसूण १ अंतर्मु २ पत्य देसूण २२ हजार वर्ष
8	8	ч	५ पहली	?	२ स्त्री, पुरूष	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भलाभूंडा	90 हजार वर्ष	९० हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध	د د د	7 7 7	90 हजार वर्ष 9 अंतर्मु. 90 हजार वर्ष 9 अंतर्मु. 90 हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष
8	¥	¥	५ पहली	ą	२ स्त्री, पुरूष	२ पल्य देसूण	२ पल्य देसूण	भलाभूंडा	२ पत्य देसूण	२ पत्य देसूण	२ आयु अनुबंध	۲ ۲	۳ ۲ ۲	- , -	२ पत्य देसूण २२ हजार वर्ष २ पत्य देसूण १अंतर्मु. २ पत्य देसूण २२ हजार वर्ष

११ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	ì	७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध ध द्वार	नाणसा	भः	r		१० वेध द्वार
8	8	પ્	(9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	Я	ų	५ पहली	₹	२ स्त्री, पुरुष	90 हजार व <b>र्ष</b>	१पल्य	भलामूंडा	१० हजार वर्ष	१ पत्य	٥	२ २ २	* * *	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	१ पल्य २२ हजार वर्ष १ पल्य १ अंतर्गु. १ पल्य २२ हजार वर्ष
¥	¥	ų	५ पहली	2	२ स्त्री, पुरूष	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भलाभूंडा	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध	२ २ २	۲ ۲ ۲	१० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष २२ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष २२ हजार व १० हजार वर्ष १अंतर्मुहूर्त १० हजार वर्ष २२ हजार व
¥	ч	ų	<b>५</b> * पहली	2	२ स्त्री, पुरुष	१पल्य	१पल्य	मलाभूंडा	१ पल्य	१पल्य	२ आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	९ पत्य ९ अंतर्मुहूर्त ९ पत्य ९ अंतर्मुहूर्त ९ पत्य २२ हजार वर्ष	१ पल्य २२ हजार वर्ष १ पल्य १ अंतर्मुदूर्त १ पल्य २२ हजार वर्ष

#### ४१ पृथ्वीकाय में ज्योतिषी ऊपजै तेहनों यंत्र (२४)

गमा	२० द्वार नी सख्या	34c	१ गत द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहर		५ संठाण द्वार	६ जेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	হ ज्ञान–अइ	गन द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	<b>ওন্কৃন্দ্র</b>	जधन्य	<i>বল্</i> চ্ছ	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	¥	3	3	7
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समयौरंस	<b>१</b> तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	44)	₹
8	जघन्य नै ओघिक	<b>१ अंतर्मुहूर्त</b>	२२ हजार वर्ष	9.2.3	संख या		अंगुल नों	७ हाथ	9	9	3	3	3	3	?
પ	जघन्य नैं जघन्य	१ अंतर्मुहूर्त	<b>१अंतर्मुहूर्त</b>	ऊपजै	असंख	असंघयणी	असंख		समबौरंस	तेजु		नियमा	नियमा		
Ę	जघन्य नै उत्कृष्ट	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष		<b>ক</b> ণ্ডী		भाग								
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	५,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	৬ हाथ	9 समचौरंस	9 तेजु	3	3 नियमा	३ नियमा	3	3

## ४२ पृथ्वीकाय में सौधर्मवासी देव ऊपजै तेहनों यंत्र (२५)

मा २० द्वार नी संख्या	उपपात	। त द्वार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	= ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
	जघन्य	বন্দুষ্ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	7
ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	9 तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	१,२.३ ऊपज	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नो असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	९ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?
उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९ अंतमुर्हूर्त ९ अंतमुर्हूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	৭,२,३ ক্ত <b>प</b> তা	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नो असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	९ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	ą	. 3

#### ४३ पृथ्वीकाय में ईशानवासी देव ऊपजै तेहनों यंत्र (२६)

मा २० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार		२ परिमाण द्वार		३ संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार		५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ट ज्ञान–अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	% उपयोग द्वार
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	· Ę	Ę	3	ય	3	3	२
ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	९२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	९ समचौरंस	9 तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाध	१ समचौरंस	१तेजु	Э	३ नियमा	३ नियमा	3	7
उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतमुई्र्त १ अतमुंह्र्त २२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १अंतर्मुहूर्त २२ हजार वर्ष	9,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	अंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	ą

भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

• १९ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आय्	७   द्वार	<sup>१८</sup> अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	3	<b>न</b> व	२० कायसंटे	
¥	8	ų	(g	٦ .	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
. 8	8	પ્	५ पहली	२	२ स्त्री, पुरुष	अध पाव पल्य	१ पल्य १ लाख वर्ष	भलाभूंडा	अध पाव पत्य	१ पत्य १ लाख वर्ष	٥	ર ૨ ૨	२ २ २	९ पत्य का आठवां भाग ९ अंतर्गु. ९ पत्य का आठवां भाग ९ अंतर्गु. ९ पत्य का आठवां भाग २२ हजार वर्ष	
. 8	Å	५ पहली	ч	ą	२ स्त्री, पुरुष	अध पाव पत्य	अध पाव पल्य	भलाभूंडा	अध पाव पत्य	अध पाव पत्य	२ आयु अनुबंध	२ २ २	ર ૨ ૨	१ पत्य का आठवां भाग १ अंतर्गुहूर्त १ पत्य का आठवां भाग १ अंतर्गुहूर्त १ पत्य का आठवां भाग २२ हजार वर्ष	९ पत्य का आठवां भाग २२ हजार वर्ष ९ पत्य का आठवां भाग ९ अंतर्मुहूर्त ९ पत्य का आठवां भाग २२ हजार वर्ष
. 8	8	ц	पू पहली	3	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	भलाभूंडा	৭ ঘল্য ৭ লাজ বর্ষ	१ पत्य १ लाख वर्ष	२ आयु अनु०	۶ ۲ ۲	२ २ २	१ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य १ लाख वर्ष २२ हजार वर्ष	९ पत्य १ लाख वर्ष १२ हजार वर्ष १ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य १ लाख वर्ष १२ हजार वर्ष

११ संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9( आयु	9 [ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	<b>4</b>	व	1	२० संवेध द्वार
8	8	ષ્	to:	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ц	५ पहली	7	२ स्त्री, पुरुष	१ पत्न्य	२ सागर	भलाभूंडा	१ पत्य	३ सागर	o	2 2 2	२ २ २	१ पत्य १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य २२ हजार वर्ष	२ सागर २२ हजार वर्ष २ सागर १ अंतर्मुहूर्त २ सागर २२ हजार वर्ष
¥	8	ц	५ पहली	२	२ स्त्री, पुरुष	१ एल्य	१ पल्य	भलाभूंडा	१ पल्य	१ पत्य	२ आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ पल्य १अंतर्गुहूर्त १ पल्य १अंतर्गुहूर्त १ पल्य २२ हजार वर्ष	१ पल्य २२ हजार वर्ष १ पल्य १३ हजार वर्ष १ पल्य २२ हजार वर्ष
¥	9	ų	५ पहली	2	२ स्त्री, पुरूष	२ सागर	२ सागर	भला भूंडा	२ सागर	२ सागर	२ आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	२ सागर १ अंतर्मुहूर्त २ सागर १ अंतर्मुहूर्त २ सागर २२ हजार वर्ष	२ सागर २२ हजार वर्ष २ सागर १ अंतर्मुहूर्त २ सागर २२ हजार वर्ष

११ संबाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समृद्घात द्वार	<sup>१५</sup> वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	भ आयु	हार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>98</sup> अनुब	ध द्वार	नाणता	<b>3</b> 4	đ	,	० वेध द्वार
¥	8	ų	19	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
<b>J</b> 0	R	ų	५ पहली	2	२ स्त्री, पुरूष	१ पल्य जाझो	२ सागर जाझो	मलाभूंडा	१ पल्य जाझो	२ सागर जाझो	o	२ २ २	२ २ २		२ सागर जाझो २२ हजार वर्ष २ सागर जाझो १ अंतर्मुहूर्त २ सागर जाझो २२ हजार वर्ष
8	8	ų	५ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	१ पल्य जाझो	१ पत्य जाझो	भलाभूंडा	१ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	२ आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ पत्य जाओ १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य जाओ १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य जाओ २२ हजार वर्ष	१ पत्य जाझे २२ हजार वर्ष १ पत्य जाझे १अंतर्गुहूर्त १ पत्य जाझे २२ हजार वर्ष
¥	8	ч	५ पहली	?	२ स्त्री. पुरुष	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	भलाभूंडा	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	२ आयु अनुबंध	२ २ २	२ २ २	२ सागर जाझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो २२ हजार वर्ष	२ सागर जाझो २२ हजार वर्ष २ सागर जाझो १ अंतर्मुहूर्त २ सागर जाझो २२ हजार वर्ष

अप तथा क्नस्पति में २६-२६ ठिकाणां नां ऊपजै — दस भवनपति १०, व्यंतर ११, ज्योतियी १२, प्रथम दो देवलोक १४, पांच स्थावर १६, तीन विकलेन्द्रिय २२, असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय २३, सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय २४, असन्नी मनुष्य २५, सन्नी मनुष्य कर्मभूमि २६। तेज, वायु में १२-१२ ठिकाणां नां ऊपजै। १४ देवता स टल्या।

#### ४४ च्यार थावर में पृथ्वीकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

मा	२० द्वार नी संख्या	ত	१ पात द्वार	परि	<b>२</b> भाण द्वार	} संघयण द्वार	। अवग	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अ	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	દ્	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	પ્	3	3	7
2	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमें वि में ऊपजे तिष उत्कृष्ट आयु		असंख्याता ऊ	तुमय-समय पजै ३ गमैजघन्य ख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	1	ष्ट आंगुलनों ब भाग	मसूर चंद्र	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	2
1	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमैं रि काय में ऊपर जघन्य आयु	ने तिणरे	कर	<b>प्</b> रवत्	9 छेवटो	जंघन्य उत्कृष्ट आंगुल नों असंख भाग		मसूर चंद्र	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	₹
.	उत्कृष्ट मैं ओघिक उत्कृष्ट मैं जघन्य उत्कृष्ट मैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमें ि काय में ऊपर उत्कृष्ट आय्	ने तिण रै	1	२.३ उत्कृष्ट भसंख ऊपजै	9 छेवटो	١ ،	ष्ट आंगुलनों ब भाग	मस्रूर चंद्र	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	२

				२० कायसंवेध द्वार		
		भव	अप र	में पृथ्वी	तेऊ में	पृथ्वी
गमा	ज.	ਚ.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
٩	२	असंख	१अंतर्गु, १अंतर्गु.	असंख काल असंख काल	१अंतर्म्, १अंतर्म्,	असंख काल असंख वात
5	2	असंख	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु,	असंख काल असख काल	१अंतर्म्, १अंतर्म्	असंख काल असंख कात
3	२	<u>u</u>	१अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	६८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, ३दिन रात	८८ हजार वर्ष १२ दिनस
Я	2	असंख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्म्, १अंतर्म्	असंख काल असंख काल
પ્	२	असंख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्म्, १अंतर्म्,	असंख काल असंख बात
Ę	7	ς.	१अंतर्मु. ७ हजार वर्ष	४ अंतर्मु, २८, हजार वर्ष	१अंतर्मु, ३ दिन रात	४ अंतर्मु, १२ दिन रात
t9	7		२२ हजार वर्ष १ अंतर्पु.	८८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	८८ हजार वर्ष १२ दिनसत
۲,	7		२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु	८६ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	२२ हजार वर्ष १ अंतर्गु.	८६ हानार वर्ष ४ अंतर्ष्.
Ę	२	<i>c</i>	२२ हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	८८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष ३ दिन रात	८८ हजार वर्ष ५२ दिनस

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	<b>१३</b> इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	૧ આયુ		<sup>१८</sup> अध्यवसाय द्वार		१६ १६ द्वार	नाणता
8	8	પ્	l9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	8	१ फर्श	३ पहली	ą	नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	भलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	0
8	8	१ फर्श	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आयु. अध्य० अनु०
8	Я	१ फर्श	३ पहली	₹	१ नपुंसक	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	भलाभूंडा	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध

वायु मे	नं पृथ्वी	वनस्पति ।	नं पृथ्वी
जघन्य काल	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
१अंतर्मु, १ अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	९अंतर्मुं, १अंतर्मुं,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, १ अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	९अंतर्मुं, १अंतर्मुं,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	८८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	९अंतर्मुं, १० हजार वर्ष	८६ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
१अंतर्मुं. १अंतर्मुं.	असंख काल असंख काल	९अंतर्मुं, ९अंतर्मुं,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मुं. १अंतर्मुं.	असंख काल असंख काल	९अंतर्मुं, ९अंतर्मुं,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मुं, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त १२ हजार वर्ष	९अंतर्मुं, १० हजार वर्ष	४ अंतर्मु, ४० हजार वर्ष
९२ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	८८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	८८ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु,	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु,
२२ हजार वर्ष ३ हजार वर्ष	८८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष १० हजार वर्ष	८८ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष

# ४५ च्यार थावर में अपकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या			परि	२ माण द्वार	३ संघयण द्वार	अव	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	६ ज्ञान–अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	चत्कृष्ट -	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ų	3	3	2
ع ع ع	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिए में ऊपजै तिण उत्कृष्ट आयु में	रें जघन्य	9, २ गमें समय र ऊपजै, ३ गमे उत्कृष्ट संख र		9 छेवटो	I .	त्कृष्ट आंगुल संख माग	थि <b>बुक पाणी</b> नां परपोटा	४ पहली	१ मिष्ट्या	v	२ नियमा	१ काया	2
४ ५ ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमैं जिण जिण काय में ऊपजै तिणरै जघन्य आयु में ऊपजै		ऊप	रवत्	१ छेवटो		त्कृष्ट आंगुल संख भाग	थिबुक पाणी नां परपोटा	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	2
(9 T. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमें जिप काय में ऊपजै उत्कृष्ट आयु में	तिण रै	৭,२,३ বর	वन्य कृष्ट संख ख ऊपजै	१ छेवटो		त्कृष्ट आंगुल संख भाग	थिबुक पाणी नां परपोटा	४पहली	९ मिध्या	o	२ नियमा	१ काया	2

				२० कायसंवेध द्वार		
	भ	व	अप	में अप	तेऊ	में अप
ilti	ज.	ज.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट कार
9	2	असंख	१अंतर्मु. १अंतर्मु.	असंख काल असंख काल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	असंख काल असंख बात
7	7	असंख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख बढ़
3	२	τ.	१अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	१अंतर्मुं. ३ दिन रात	२८ हजार वर्ष १२ दिनशा
8	ą	असंख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्गु.	असंख काल असंखब्ब
4	2	असंख	१अंतर्गु, १अंतर्गु.	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु.	असंख काल असंख्रात
Ę	7	ς,	१अंतर्मु. ७ हजार वर्ष	४ अंतर्मु. २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, ३ दिन रात	४ अंतर्मु, १२ दिन रात
(9	7	r,	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष १२ दिनसा
۲.	₹	τ.	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्गु
Ę	3	ζ,	७ हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष ३ दिन रात	२८ हजार वर्ष ५२ दिनस

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	1	७ १ द्वार	9८ अध्यवसाय द्वार		६ घ द्वार	नाणता
8	8	પ્	l9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	]
8	8	<del>৭</del> फर्श	३ पहली	२	9 नपुंस <i>क</i>	अंतर्गुहूर्त	७ हजार वर्ष	भलामूंडा	अंतर्गृहूर्त	७ हजार वर्ष	0
8	8	१फर्श	३ पहली	3	१ नपुराक	<b>ઝંત</b> ર્યુદૂર્ત	अंतर्गृहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आयु, अध्य० अनु०
8	8	৭ ফর্য	३ पहली	ý	१ नपुंसक	७ हजार वर्ष	। हजार वर्ष	भलाभूंड।	<sup>19</sup> हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध

कयु मे	iअ <b>प</b>	वनस्पति	ों में अप
ব্যয়ন্থ কাল	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु.	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १० हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
१अंतर्मु, १अंतर्मु.	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु.	असंख काल असंख कृाल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त १२ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १० हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त ४० हजार वर्ष
७.हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
७.हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु,
७.हजार वर्ष ३ हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष १० हजार वर्ष	२८ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष

## ४६ च्यार थावर में तेऊकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	9 उपपात द्वार	२ परिमाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान– अः	तान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जधन्य उत्कृष्ट	जघन्य उत्कृष्ट	Ę	जधन्य उत्कृष्ट	Ę	Ę	*	4	7	*	
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गर्मै जिण जिण काय में ऊपजै तिण रैं जघन्य उत्कृष्ट आयु में ऊपजै	५.२ गर्में समय समय असंख्याता ऊपजै ३ गर्में जधन्य ५.२.३ उत्कृष्ट संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	जघन्य उत्कृष्ट आंगुल नों असंख भाग	सूचीकलाप	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	१ काया	3
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,८ गमैं जिण जिण काय में ऊपजै तिणरै जघन्य आयु में ऊपजै	ऊपरवत्	१ छेवटो	जधन्य उत्कृष्ट आंगुल नौं असंख भाग	सूचीकलाप	३ पहली	१ मिध्या	O	२ नियमा	१ काया	?
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमें जिण जिण काय में ऊपजै तिण रै उत्कृष्ट आयु में ऊपजै	जघन्य १.२.३ उत्कृष्ट संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	जघन्य उत्कृष्ट आंगुल मों असंख भाग	सूचीकलाप	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	१ काया	3

				२० कायसंवेध द्वार					
गमा		भव	अप ग	में तेऊ	तेऊ में तेऊ				
	भव 3  ज. ज. जघन्य काल  २ असंख १ अंतर्मु. १ अंतर्गु. २ असंख १ अंतर्मु. १ अंतर्गु. २ ५ असंख १ अंतर्मु. १ अंतर्गु. २ असंख १ अंतर्मु. १ अंतर्गु. २ असंख १ अंतर्मु. १ अंतर्गु. २ असंख १ अंतर्मु. १ अंतर्गु.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट कात				
9 २ ३	2	असंख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल असंख काल असंख काल १२ दिन सत २८, हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३दिन रात	असंख काल असंबर्क असंख काल असंबर्क १२ दिन रात १२ दिन			
૪ પ્	2	असंख	१ अंतर्भुं. १ अंतर्भुं.	अरांख काल असंख काल अरांख काल अरांख काल ४ अंतर्मु, २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३दिन रात	असंख काल असंख्र असंख काल असंख्र ४ अंतर्मु, १२ दिन सा			
(9 c. §	२ २ २	E	३ दिन रात १ अंतर्मु, ३ दिन रात १ अंतर्गु, ३ दिन रात ७ हजार वर्ष	१२ दिन रात २८ हजार वर्ष १२ दिन रात ४ अंतर्गु. १२ दिन रात २८ हजार वर्ग	३ दिन रात १ अंतर्गुः ३ दिन रात १ अंतर्गुः ३ दिन रात ३ दिन रात	१२ दिन रात १४ दिन १२ दिन रात ४ अंतर्षु १२ दिन रात १२ दिन			

99 संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	3 -		<sup>9</sup> ८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध द्वार		नाणता
8	8	પ્	- 0	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	8	9 फर्स	3 पहली	?	9 नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	३ दिन रात	भलामूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ दिन रात	o
8	8	9 फर्श	३ पहली	?	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	३ आयु, अध्य० अनु०
¥	8	9 फर्श	३ पहली .	२	१ नपुंसक	३ दिन रात	३ दिन रात	भलाभूंडा	३ दिन रात	३ दिन रात	२ आयु. अनुबंध

वायु	में तेऊ	वनरपरि	ने में तेऊ
जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु ३ हजार वर्ष	१२ दिन रात १२ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १० हजार वर्ष	१२ दिन रात ४० हजार वर्ष
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्गुं, १अंतर्गुं,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख काल असंख काल	१अंतर्गुं, १अंतर्गुं,	असंख काल असंख काल
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मु १२ हजार वर्ष	१अंतर्गुं १० हजार वर्ष	४ अंतर्मु ४० हजार वर्ष
दिन रात १ अंतर्मु.	१२ दिन रात १२ हजार वर्ष	3 दिन रात १ अंतर्मु.	१२ दिन रात ४० हजार वर्ष
दिन रात १ अंतर्मु	१२ दिन रात ४ अंतर्मु.	3 दिन रात १ अंतर्मु.	१२ दिन रात ४ अंतर्मु.
दिन रात ३ हजार वर्ष	१२ दिन रात १२ हजार वर्ष	3 दिन रात १० हजार वर्ष	१२ दिन रात ४० हजार वर्ष

# ४७ च्यार थावर में वायुकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ त द्वार	परिग् परिग	! गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	} गहना द्वार	<del></del>		६ ज्ञान–अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	% उपयोग द्वा	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ	3	4	3	3	२
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिप में ऊपजै तिण <sup>‡</sup> उत्कृष्ट आयु मे	जघन्य	९, २ गमैं समय स ऊपजै ३ गमैं र उत्कृष्ट संख या	बघन्य १,२,३	१ छेवटो		कृष्ट आंगुल ांख भाग	पताका	३ पहली	१ मिथ्या	o	२नियमा	१ काया	3
<b>પ્</b>	जघन्य नैं औषिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमैं जिण जिण काय में ऊपजै तिणरै जघन्य आयु में ऊपजै		ऊपर	वत्	१ छेवटो	जधन्य उत नों अ	हृष्ट आंगुल मंख भाग	पताका	३ पहली	१ मिथ्या		२नियमा	१ काया	3
ζ,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.९ गमें जिण काय में ऊपजै। उत्कृष्ट आयु मे	तेण रै	जधन्य १.२ संख असंख	या	१ छेवटो	1	कृष्ट आंगुल वंख भाग	पताका	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	3

			7	२० हायसंवेध द्वार						
	4	व	अप ग	र्भ वायु	तेऊ में वायु					
गमा	ज.	उ.	जघन्य काल .	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल				
9 ? 3	२ २ २	असंख असंख ६	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, ७ हजार वर्ष	असंखकाल अरांखकाल असंखकाल असंखकाल १२ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, ३ दिन रात	असंखकात असंखकात असंखकात असंखकात १२ हजार वर्ष १२ दिनस्त				
४ ५ ६	<b>२</b> २	असंख असंख -	१ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु ७ हजार वर्ष	असंख्याल असंख्याल असंख्याल असंख्याल ४ अंतर्गुः २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु ३ दिन रात	असंखकाल असंखकात असंखकाल असंखकात ४ अंतर्मु, १२ दिन रात				
(9 C. E	२ २ २	२ ६ ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु.		१२ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. १२ हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष ३ दिन रात	१२ हजार वर्ष १२ दिनसा १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष १२ दिनसा				

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१७ - आयु द्वार		१८ अध्यवसाय द्वार	् अनुबंध	१६ अञ्चार	नाणत्ता
8	8	પ્	(g	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	1
A	8	9 फर्श	४ पहली -	2	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	३ हजार वर्ष	भलामूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ हजार वर्ष	۰
¥	8	१ फर्श	३ पहली	<b>?</b>	१ नपुंसक	अंतर्मु	अंतर्गुहूर्त	় শূ্ভা	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ समु० आयु, अध्य० अनु
8	Я	१ फर्श	४ पहली	3	१ नपुंसक	3 हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	भलाभूंडा	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध

वायु मे	र्भे यायु	वनस्पति	में वायु
जघन्य काल	उत्कृष्ट	जधन्य काल	ডল্ফৃন্দ কাল
'१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंखकाल असंखकाल	९ अंतर्गु, १ अंतर्गु,	अरांखकाल अरांखकाल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंखकाल असंखकाल	९ अंतर्गु, १ अंतर्गु,	अरांखकाल अरांखकाल
१अंतर्मु ३ हजार वर्ष	१२ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	९ अंतर्गु, १० हजार वर्ष	१२ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
१अंतर्गु, १अंतर्गु,	असंखकाल असंखकाल	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु,	असंखकाल असंखकाल
१अंतर्गु, १अंतर्गु,	असंखकाल असंखकाल	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु,	असंखकाल असंखकाल
१अंतर्गु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्गु, ५२ हजार वर्ष	१ अंतर्गु १० हजार वर्ष	४ अंतर्गु, ४० हजार वर्ष
३हजार वर्ष १ अंतर्मु.	१२ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष १ अंतर्गु.	१२ हजार वर्ष ४० इजार वर्ष
३हजार वर्ष १ अंतर्मु.	१२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	३ हजार वर्ष १ अंतर्गु.	१२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.
३हजार वर्ष ३ हजार वर्ष	१२ हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष १० हजार वर्ष	१२ हजार वर्ष ४० हजार वर्ष

## ४८ च्यार थावर में वनस्पति ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	9 उपपात द्वार	२ परिमाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोगद्व
		जघन्य उत्कृष्ट	जधन्य - उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	ų	3	3	2
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिण जिण काय में ऊपजै तिण रैं जघन्य उत्कृष्ट आयु में ऊपजै	१, २ गमैं समय रामय असंख ऊपजै, वनस्पति में वनस्पति समय समय अनंत ऊपजै ३ गमै जघन्य १,२,३ उत्कृष्ट संख या असंख ऊपजै	१ छेदटो	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन जाझी	नाना प्रकार नां	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	3
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमैं जिण जिण काय में ऊपजै तिणरै जघन्य आयु में ऊपजै	ऊपरवत्	१ छेवटो	आंगुल नों असंखभाग	१ हजार योजन जाझी	नाना प्रकार नां	३ पहली	.१ मिथ्या	0	२नियमा	९ काया	3
(9 5 §	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गर्मे जिण जिण काय में ऊपजै तिण रै उत्कृष्ट आयु में ऊपजै	जघन्य १.२.३ उत्कृष्ट संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन जाझी	नाना प्रकार नां	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	2

				२० कायसंवेध द्वार		_			
	ų	व	अप में	वनस्पति	तेऊ में वनस्पति				
गमा	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल उत्कृष्ट				
9	२	असंख	१अंतर्मुं. १अंतर्मुं.	असंखकाल असंखकाल	१अंतर्गुं. १अंतर्गुं.	असंखकाल असंखकात			
?	२	असंख	१अंतर्मुं. १अंतर्मुं.	असंखकाल असंखकाल	१अंतर्गुं. १अंतर्गुं.	असंखकाल असंखकात			
3	२	६	१अंतर्मुं. ७ हजार वर्ष	४० हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	१अंतर्गु ३दिन रात	४० हजार वर्ष १२ दिनहा			
४	<del>२ २ २</del>	असंख	१अंतर्गु, १अंतर्गु,	असंखकाल असंखकाल	१ अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख्वाल असंख्वा			
५		असंख	१अंतर्गु, १अंतर्गु,	असंखकाल असंखकाल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंख्वाल असंख्वा			
६		द	१अंतर्गु, ७ हजार वर्ष	४अंतर्मु, २८, हजार वर्ष	१अंतर्मु, १दिन रात	४ अंतर्मु, १२ दिन रात			
(9	२	G G	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	४० हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	४० हजार वर्ष १२ दिनस्र			
==	२		१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु,	४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु			
	२		१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	४० हजार वर्ष २८ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष ३ दिन रात	४० हजार वर्ष १२ दिनस्र			

99 सं <b>ज्ञा</b> द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	i i	भ७ 1॒द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध द्वार		नाणत्ता
8	8	ų	t9	₹	3	जयन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	7
¥	8	१ फर्रा	३ पहली	2	9 नपुंसक्	अंतर्मुहूर्त	90 हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुह <del>ूर्त</del>	१० हजार वर्ष	. 0
8	8	१ फर्श	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मृहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्गृहूर्त	अंतर्मुहूर्त	्र् भू अव० लेश्या, आयु अध्य०, अनुबंघ
A	8	१ फर्री	३ पहली	3	१ नपुंसक	90 हजार वर्ष	90 हंजार वर्ष	मलाभूंडा	90 हजार वर्ष	90 हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध

वायु में	वनस्पति	27	ाव .	वनस्पति :	में वनस्पति
जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	ज.	ज.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
अंतर्मु, १अंतर्मु,	असंखकाल असंखकाल	ą	अनंत	१अंतर्म्, १अंतर्म्,	अनंतकाल अनंतकाल
अंतर्म, १अंतर्मु.	असंखकाल असंखकाल	3	अनंत	१ अंतर्म्, १ अंतर्म्,	अनंतकाल अनंतकाल
अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४० हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	?	s,	१ अंतर्मु. १ अंतर्गु.	४० हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
<b>अंतर्मु</b> , १अंतर्मु,	असंखकाल असंखकाल	?	अनंत	१अंतर्म्, १अंतर्म्,	अनंतकाल अनंतकाल
अंतर्मु, १अंतर्गु.	असंखकाल असंखकाल	2	अनंत	१ अंतर्म्, १ अंतर्म्,	अनंतकाल अनंतकाल
अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मु. १२ हजार वर्ष	₹	c	१ अंतर्गु. १० हजार वर्ष	४ अंतर्मु, ४० हजार वर्ष
<b>इजार वर्ष</b> १ अंतर्मु.	४० हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	2	c,	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्,	४० हजार वर्ष ४० हजार वर्ष
<b>र हजार वर्ष</b> १ अंतर्मु.	४० हजार वर्ष ४ अंतर्गु.	ą		१० हजार वर्ष १ अंतर्म्	४० हजार वर्ष ४ अंतर्म्.
<b>व्हजार वर्ष</b> ३ हरजार वर्ष	४० हजार वर्ष १२ हजार वर्ष	ą		१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	४० हजार वर्ष ४० हजार व

## ४६ चार थावर में बेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

ı-HI	२० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	দ্বান–এঃ	- तान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग हा
		जधन्य उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	. 2
	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमें जिए जिण काय में ऊपजै तिण रें जघन्य उत्कृष्ट आयु में ऊपजै।	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	१२ योजन	१हुंडक	ं ३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२नियमा	२ वच काय	3
	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.६ गमें जिण जिण काय में ऊपजै तिण रै जघन्य आयु में ऊपजै	9,7,3	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नौ असंख भाग	<b>१ हुं</b> डक	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२नियमा	9 कार्य	7
.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमें जिंग जिंग काय में ऊपजै तिण रै उत्कृष्ट आयु में ऊपजै ।	৭,২,३ ডদ্র	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल में असंख भाग	१२ योजन	१हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	?

				२० काय्संवेध द्वार		
	भ	ব	अप में	बेइंद्रिय	तेऊ है	विइंद्रिय
गमः	ज.	ਚ.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 २ ३	र २ २	संख्यात संख्यात च	१अंतर्मु, १अंतर्मु. १अंतर्मु, १अंतर्मु. १अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४८ वर्ष २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४८ वर्ष १२ दिन रात
४ ५ ६ .	२ २ २	संख्यात संख्यात च	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, २८ हजार दर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु ३ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्युः, १२ दिन स्त
(9 (5	२ २ २	ŭ t t	१२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष ७ हजार वर्ष	४८ वर्ष २८ हजार वर्ष ४८ वर्ष ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष २८ हजार वर्ष	१२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष ३ दिन रात	४८ वर्ष १२ दिन सत ४८ वर्ष ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष १२ दिन सत

११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	९३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१५ आयु		<sup>१</sup> ८ अध्यवसाय द्वार		१६ धद्वार	नाणता
¥	8	પ્	9	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	8	२ <b>फर्श</b> रस	3 पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	<b>५२</b> वर्ष	भलाभूंडा	अंतर्गुहूर्त	, १२ वर्ष	o
8	Я	२ फर्श रस	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव० दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्यः, अनु०
R	8	२ फर्श रस	३ पहली	2	१ नपुंसक	<b>9२</b> वर्ष	9२ वर्ष	भलाभूंडा	९२ वर्ष	५२ वर्ष	२ आयु. अनुबंध

वायु में	बेइंद्रिय	वनस्पति में	बेइंद्रिय
जधन्य काल	उत्कृष्ट	जंघन्य काल	. उत्कृष्ट काल
अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४८ वर्ष १२ हजार वर्ष	१अंतर्मु १० हजार वर्ष	४८ वर्ष ४० हजार वर्ष
१अंतर्मु. १अंतर्मु.	संखकाल संखकाल	१अंतर्गु, १अंतर्गु,	संखकाल संखकाल
१अंतर्मु, १अंतर्मु.	संखकाल संखकाल	१अंतर्गु, १अंतर्गु,	संखकाल संखकाल
१अंतर्मु ३हजार वर्ष	४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष	१अंतर्गु, १० हजार वर्ष	४ अंतर्मु, ४० हजार वर्ष
१२ वर्ष १ अंतर्मु,	४८ वर्ष १२ हजार वर्ष	१२ वर्ष १ अंतर्मु.	४८ वर्ष ४० हजार वर्ष
१२ वर्ष १ अंतर्मु,	४८ वर्ष ४ अंतर्मु.	१२ वर्ष १ अंतर्मु.	४८ वर्ष ४ अंतर्गु.
१२ वर्ष ३ हजार वर्ष	४८ वर्ष १२ हजार वर्ष	१२ वर्ष १० हजार वर्ष	४८ वर्ष ४० हजार वर्ष

### ५० च्यार थावर में तेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिमा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अर	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	. ξ	Ę	3	પ્	3	ҙ	7
7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिण ऊपजै तिण रैं ज आयु में ऊपजै।		- १.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	३ गाउ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	?
ધું	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमें जिण ऊपजै तिण रै ज में ऊपजै		५.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	9 कार्य	ş
t	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमैं जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै।		१.२.३ ऊपजै	संख या असंख उउपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	३ गाऊ	१हंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	2

२०	
कायसंवेध	द्वार

	4	ra	अप	में तेइदिय	तेऊ में	तेइंद्रिय
गमा	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट कात	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 २ ३	२ २ २	संख्यात संख्यात च	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल १९६ दिन रात २५ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु ३ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल १६६ दिन रात १२ दिशात
у Ч ६	२ २ २	संख्यात संख्यात द	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्गुं, १अंतर्मु ७ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४अंतर्मु, २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्गु, १अंतर्गु, १अंतर्गु, ३दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्गु, १२ दिन रात
(9 C. E	२ २ २	ت ت	४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात ७ हजार वर्ष	१६६ दिन रात २८ हजार वर्ष १६६ दिन रात ४ अंतर्गु. १६६ दिन रात २८ हजार वर्ष	४६ दिन रात १अंतर्मु. ४६ दिन रात १अंतर्मु. ४६ दिन रात ३ दिन रात	१६६ दिन रात १२ दिनस १६६ दिन रात ४ अंतर्गु १६६ दिन रात १२ दिनस

२५्२

99 संज्ञा द्वार	9२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	l .	७ इार	१८ अध्यवसाय द्वार	अनुबं	9६ घद्वार	नाणत्ता
8	8	ų	9	2	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	8	३ ऊपरली	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्गृहूर्त	४६ दिन रात	भलाभूंडा	अंतर्गुहूर्त	४६ दिन रात	
8	8	. ३ ऊपरली	३ पहली	2	१ नपुंसक	अतर्मुहूर्त	अतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	અંતર્ <del>યું</del> દૂર્ત	७ अव० दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अघ्य, अनु
8	8	३ ऊपरली	३ पहली	ş	9 नधुंसक	४६ दिन रात	४६ दिन रात	भलाभूंडा	४६ दिन रात	४६ दिन रात	२ आयु. अनुबंध

वायु में	तेइंदिय	वनस्पति में	तेइंद्रिय
जधन्य काल	चत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	१९६ दिन रात १२ हजार दर्ष	१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष	१९६ दिन रात ४० हजार वर्ष
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष	४ अंतर्गु, ४० हजार वर्ष
४६ दिन रात १ अंतर्गु.	१६६ दिन रात १२ हैंजार वर्ष	४६ दिन रात १ अंतर्मु.	१६६ दिन रात ४० हजार वर्ष
४६ दिन रात १ अंतर्गु.	१६६दिन रात ४ अंतर्मु,	४६ दिन रात १ अंतर्मु.	१६६ दिन रात ४ अंतर्मु.
४६ दिन रात ३ हजार वर्ष	१६६ दिन रात १२ हजार वर्ष	४६ दिन रात १० हजार वर्ष	१६६ दिन रात ४० हजार वर्ष

### ५१ च्यार थावर में चउरिंदिय ऊपजै तेहनों यंत्र (८)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपा	त द्वार	परिमा	२ णद्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান-এর	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	3	ų	3	3	₹
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१.४,७ गमँ जिण ऊपजै तिण रैं ज आयु में ऊपजै।	ाघन्य उत्कृष्ट	५.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	४ गाउ	१ <del>ह</del> ुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	?
۲ ۲ ۲	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	२.५.८ गमें जिण में ऊपजै तिण रै में ऊपजै।		५.२.३ .ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	९ काया	₹
() T. E.	उत्कृष्ट नै जघन्य	३.६.६ गमें जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै।	उत्कृ <b>ष्ट</b>	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	४गाउ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	7

			क	२० ायसंवेध द्वार		
	1	भवं	अप मे	i च <b>उरिद्रिय</b>	तेऊ में	चउरिद्रिय
गमा	ज.	च.	जघन्य काल	उत्कृष्ट कान	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 ? \$	२ २ २	संख्यात संख्यात द	९अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. ७ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल २४ मास २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. ३दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल २४ मास १२ दिन रात
૪ ધ્	२ २ २	संख्यात संख्यात ६	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मुं, २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, १२ दिन रात
(9 T. E,	२ २ २	# # # # # # # # # # # # # # # # # # #	६ मास १अंतर्मु. ६ मास १अंतर्मु. ६ मास ७ हजार वर्ष	२४ मास २८ हजार वर्ष २४ मास ४ अंद्रर्मु. २४ मास २८ हजार वर्ष	६ मास १अंतर्गु. ६ मास १अंतर्गु. ६ मास ३ दिन रात	२४ मास १२ दिन सत २४ मास ४ अंतर्मु. २४ मास १२ दिन सत

રપુષ્ઠ

१९ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	<sup>१।</sup> आयु	9 द्वार	९८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुबंध	१६ ब द्वार	नाणत्ता
8	8	ધ્	(9	२	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
Я	R	8	३ पहली	₹	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	६ मास	भलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	६ मास	0
	8	8	३ पहली	२	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	મૂંકા	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव० दृष्टि, ज्ञान, योग आयु, अघ्य, अनु०
8	8	R	३ पहली	₹	9 नपुंराक	६ मास	६ मा <del>रा</del>	भलाभूंडा	६ मास	६ मारा	२ आयु. अनुबंध

वायु में	चर्जरेंद्रिय	वनस्पति में चलरिंद्रिय					
जवन्य काल	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल				
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु.	संखकाल संखकाल				
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु.	संखकाल संखकाल				
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	२४ मास १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु १० हजार वर्ष	२४ मास ४० हजार वर्ष				
९अंतर्मु, ९अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु.	संखकाल संखकाल				
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु.	संखकाल संखकाल				
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मु. १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु. १०  हजार वर्ष	४ अंतर्मु, ४० हजार वर्ष				
६मास १ अंतर्मु.	२४ मास १२ हजार वर्ष	६ मास १ अंतर्मु.	२४ मास ४० हजार वर्ष				
६मास १ अंतर्मु.	२४ मास ४ अंतर्मु.	६ मास १ अंतर्मु.	२४ मास ४ अंतर्मु.				
६मास ३ हजार वर्ष	२४ मास १२ हजार वर्ष	६ मास १० हजार वर्ष	२४ मास ४० हजार वर्ष				

गमा २५५

### ५२ च्यार थावर में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा २० द्वार नी संख्या	9 उपपा	त द्वार	प् परिमा	१ म द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोगद्वार
	जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	<b>उ</b> त्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્દ	ξ	3	પ્	3	3	3
भोधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिय में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै।		१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	<b>१ छेवटो</b>	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वस काय	<b>२</b>
अधन्य नैं ओघिक अधन्य नैं जघन्य अधन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,द गमैं जिल कपजै तिण रै ज आयु में कपजै।		৭.২.३ জঘজী	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	९ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	3
उत्कृष्ट नैं ओधिक द उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमैं जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै ।		९.२.३ ऊपजै	संख या असंख कपजै	१ छेवटो	आंगुल नों अशंख भाग	५ हजार योजन	<u> १ हंडक</u>	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियभा	२ नियमा	२ वच काय	₹

				२० कायसंवेध द्वार					
	ਮ	ৰ	अप में असन्नी	तिर्यंच पंचेदिय	तेऊ में असन्नी तियँच पंचेंद्रिय				
गमा	ज.	₹.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल			
9 ? 3	₹ ₹	5 E E	१अंतर्मु० १अंतर्मु. १अंतर्मु० १अंतर्मु. १अंतर्मु० ७ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अतर्मु, ३ दिन रात	४ को उपूर्व १२ दिन स्र ४ को उपूर्व ४ अंतर्मु. ४ को उपूर्व १२ दिन स्रा			
ઇ પ્	२ २ २	e. e,	१ अंतर्गु, १अंतर्मु, १ अंतर्गु, १अंतर्गु, १अंतर्गु, ७ हजार दर्ग	४ अंतर्मुहूर्त २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त २८ हजार वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३ दिन रात	४ अंतर्मु, ५२ दिन रात ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ५२ दिन रात			
(9 E. E.	२ २ २	G. 1.	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु १ कोडपूर्व १ अंतर्मु १ अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु, ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व १अंतर्मु, १ कोडपूर्व १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३ दिन रात	४ को डपूर्व १२ दिन रात ४ को डपूर्व ४ अंतर्मु. ४ को डपूर्व १२ दिन रात			

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	<sup>98</sup> समुद्घात द्वार	<sup>9५</sup> वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार		१६ वंध द्वार	नाणत्ता
8	8	પ્	(9	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	1
¥	/ 8	ч	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	१ कोडपूर्व	भलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ कोडपूर्व	o
A	8	<b>4</b>	३ पहली	?	१ नर्पुराक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	મૂંહા	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अद, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य, अनु.
8	8	ų	३ पहली	3	१ नपुंसक	१ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व	भलाभूंडा	१ कोडपूर्व	१ को डपूर्व	२ आयु., अनु.

वायु में असन्नी	तियंच पंचेंद्रिय	वनस्पति में सन्नी	तिर्यंच पंचेंद्रिय
जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु.	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु.
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष
१अंतर्मुं, १अंतर्मुं.	४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	४ अंतर्मुं, ४० हजार वर्ष
१अंतर्मुं, १अंतर्मुं.	४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु,	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु,	४ अंतर्मुं, ४ अंतर्मुं,
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष	१ अंतर्गु, १० हजार वर्ष	४ अंतर्मुं, ४० हजार वर्ष
१कोडपूर्व १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१ को डपूर्व १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष
१कोडपूर्व १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु.	१ को डपूर्व १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु.
१कोडपूर्व ३ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१ को डपूर्व १० हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष

### ५३ च्यार थावर में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच ऊपजै यंत्र (१०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	ত্ত	१ पात द्वार		२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह		५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अइ	८ हान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जधन्य	उत्कृष्ट	LF.	Ę	3	પ્	3	3	2
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिप में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै ।	जधन्य सत्कृष्ट	৭,২,३ জঘজী	संख या असंख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	ą	३भजना	३ भजना	3	7
٧ ]	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,६ गमैं जिण ऊपजै तिण रै ज आयु में कपजै।	ाधन्य <b>ः</b>	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	દ્દ	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	7
۲,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमैं जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै।		१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३भजना	३भजना	3	7

			व	२० गयसंवेध द्वार		
	,	भव	अप में संख्याता वर्ष	नों सन्नी तियैच	तेऊ में संख्याता	वर्ष नों सन्नी तिर्यंथ
गमा	ज,	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट कास
9 ? 3	र २ २	t, t,	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० ७ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु० ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ३ दिन रात	४ को उपूर्व १२ दिन स ४ को उपूर्व ४ अंतर्मु० ४ को उपूर्व १२ दिन स
४ ५ ६	२ २ २	. c	१ अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ७ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त २८ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ३ दिन रात	४ अंतर्मु, १२ दिन सा ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, १२ दिन सा
(9 T. E	₹ ₹ ₹	5. 5.	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ७ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु० ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ३ दिन रात	४ को खपूर्व १२ दिन स ४ को खपूर्व ४ अंतर्गु० ४ को खपूर्व १२ दिन स

२५्८

. १९ । संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ [ द्वार	१८. अध्यवसाय द्वार	9 अनुबंध	६ अद्वार	नाणत्ता
8	8	١ ५	lg.	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
. 8	8	ધ	५ू पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भलाभूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोडपूर्व ·	o
8	8	ų	३ पहली	2	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	६ अव, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, रागु, आयु, अध्य., अनु,
,	8	ц	५् पहली	?	3	१ कोडपूर्व	१ को डपूर्व	भलाभूंडा	१ को ङपूर्व	१ कोडपूर्व	२ आयु. अनुबंध

दायु में संख्याता वर्ष	नों सन्नी तिर्यंच	वनस्पति में संख्याता व	र्ष नों सन्नी तिर्यंच
जैघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
९अंतर्मु. ९अंतर्गु.	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१अंतर्मुं. १अंतर्मुं.	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष
९अंतर्मु. ९अंतर्मु.	४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु.	१अंतर्मुं. १अंतर्मुं.	४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु.
९अंतर्मु. ३ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१अंतर्मुं. १० हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ग
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	४ अंतर्गु, ४० हजार वर्ष
१अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु,	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	४ अंतर्गु ४ अंतर्गु,
१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष	४ अंतर्गु, ४० हजार वर्ष
१कोडपूर्व १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व १ अंतर्गु.	४ कोडपूर्व ४० हजार वर
१कोडपूर्व १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु.	१ कोडपूर्व १ अंतर्गु.	४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु.
१कोडपूर्व ३ हजार वर्ष	४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व १० हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ४० हजार वर

# ५४ च्यार थावर में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (११)

मा २० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार	परिमा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	ध अवग	। इना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान– अड	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग <b>द्वा</b>
	जघन्य उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	जत्कृष्ट	ξ. 	Ę	3	¥	3	3	?
ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१.४.७ गमें जिण जिल काय में ऊपजै तिण रै जधन्य उत्कृष्ट आयु में ऊपजै।	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	५ सौ धनुष्य	Ę	ξ	3	४भजना	३ मजना	3	7
जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमें जिण जिण काय में ऊपजै तिण रै जधन्य आयु में ऊपजै ।	<b>५.२.३</b> ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	आं गुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	2
उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमैं जिल जिल काय में ऊपजे तिल रै उत्कृष्ट आयु में ऊपजें।	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	ξ	५ सौ धनुष्य	पू सौ धनुष्य	Ę	Ę,	3	४भजना	३ भजना	3	7

			,	२० कायसंवेध द्वार		
	н	đ	अप में संख्याता दर	नां सन्ती मनुष्य	वनस्पति में संख्याता	वर्ष नां सन्नी मनुष्य
गमा	ज.	ે.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य কাল	उत्कृष्ट काल
9 2 3	२ २ २	E. 4.	१अंतर्मु० १अंतर्मु. १अंतर्मु० १अंतर्मु. १अंतर्मु० ७ हजार दर्ष	४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु० ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १० हजार वर्ष	४ कोडपूर्व ४० हजार ब ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु० ४ कोडपूर्व ४० हजार ब
૪ પ દ	₹ ₹	G G G	१ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मु० १ अंतर्मुं, १ अंतर्मु० ७ हजार वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त २८ हजार वर्ष	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १० हजार वर्ष	४ अंतर्गु, ४० हजार वर्ष ४ अंतर्गु ४ अंतर्गु, ४ अंतर्गु, ४० हजार वर्ष
(g	२ २ २	t, 5.	१ कोडपूर्व १ अंतर्गु १ कोडपूर्व १ अंतर्गु १ कोडपूर्व ७ हजार वर्ग	४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु० ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व १ अंतर्गु १ कोडपूर्व १ अंतर्गु १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष	४ को डपूर्व ४० हजार वर्ष ४ को डपूर्व ४ अंतर्मु० ४ को डपूर्व ४० हजार वर्ष

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	. १७ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुबंध	६ 1 द्वार .	नाणत्ता
- 8	8	પ્	(9	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	я	ų	६ पहली	२	₹	अंतर्मुहूर्त	१ को डपूर्व	भलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ कोडपूर्व	o
A	8	ц	३ पहली	₹	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	६ अव, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, समु. आयु, अथ्य., अनु.
Å	8	ц	६ पहली	२	3	१ कोडपूर्व	कोडपूर्व	भलाभूंडा	१ को डपूर्व	१ कोडपूर्व	३ अव. आयु. अनु.

	भ	đ	तेऊ में संख्याता	वर्ष नां सन्नी मनुष्य	वायु में संख्याता व	ार्षनां सन्तीमनुष्य -
गमा	অ.	₹.	जघन्य काल	उत्सृष्ट कात	जाधन्य काल	चत्कृष्ट काल
۹ ۲	<b>२</b> २ २	२ २ १	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु, १ अंतर्मु० १ अंतर्मु, १ अंतर्मु० ३ दिन रात	9 कोडपूर्व ३ दिन सत 9 कोडपूर्व १ अंतर्मृ० 9 कोडपूर्व ३ दिन रात	१ अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व ३ हजार वर्ष १ कोडपूर्व १ अंतर्मु० १ कोडपूर्व ३ हजार वर्ष
¥ ¥ <b>£</b>	२ २ २	२ २ २	१ अंतर्मुं, १अंद्र्मुं, १ अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, ३ दिन रात	१अंतर्मुहूर्त ३ दिन रात १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, ३ दिन रात	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु, १अतर्मु, १अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ३ हजार वर्ष
6 E	ર ૨ ૨	२ २ २	9 को डपूर्व 9 अंतर्युः 9 को डपूर्व 9 अंतर्युः 9 को डपूर्व ३ दिन रात	१ को डपूर्व ३ दिन रात १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ३ दिन रात	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ३ हजार वर्ष	१ कोडपूर्व ३ हजार वर्ष १ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व ३ हजार वर्ष

# ५५ च्यार थावर में असन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१२)

~ -															•
गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार	२ परिम	ाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান-সং	६ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोगद्वार	1
	1	जघन्य उत्यृ	ष्ट जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	4	3	3	- 7	- -
9 ?	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९ गमें जधन्य उत्कृष्ट आयु २ गमें जघन्य आयु में ३ गमें उत्कृष्ट आयु में ऊपर	<b>ऊ</b> पजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुलनों असंख भाग	आंगुलनों असंख भाग	9 हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	१ काया	2	

				२० कायसंवेध द्वार		
	भ	4	अप में अस	न्ती मनुष्य	वनस्पति में	असन्ती मनुष्य
गमा	ਯ.	च.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
۹ ۲ ۲	२ २ २	t. t.	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. ७ हजार वर्ष	४ अंतर्मु. २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु० ४ अंतर्मु. २८ हजार वर्ष	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष	४ अंतर्मु, ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु० ४ अंतर्मु, ४० हजार वर्ष

# ५६ अप तथा वनस्पति में असुरकुमार ऊपजै तेहनों यंत्र (१३)

गमा	२० द्वार नीं संख्या	१ उपपात जघन्य	द्वार उत्कृष्ट	परिम जधन्य	२ ण द्वार उत्कृष्ट	३ संघयण द्वार ६	४ अवगा जधन्य	हना द्वार उत्कृष्ट	५ संठाण द्वार ६	६ लेश्या द्वार ६	७ दृष्टि द्वार ३	ज्ञानअ ५	् इज्ञान द्वार ३	६ योग द्वार ३	फ उपक्षाहर २
۹ ۲ ع	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	9,8,9 गमैं जिण काय में ऊपजै । जघन्य उत्कृष्ट	जिण तेण रै	१.२.३ ऊपजै	रांख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समबौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	1
8 4 6	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५. ट गमें जिए में ऊपजै तिण है आयु में ऊपजै ।	! जघन्य	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	3	1
9 5	उत्कृष्ट मैं ओघिक सत्कृष्ट मैं जघन्य उत्कृष्ट मैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमैं जिए में ऊपजै तिण आयु में ऊपजै	रे उत्कृष्ट	५.२.३ क्रपजै	संख या अरांख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल मों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	ą	1

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	৭৩ आयु द्व	शर	१८ अध्यवसाय द्वार	9६ अनुबंध ह	द्वार	नाणता
8	R	ų	b	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	8	ų	३ पहली	२	9 नपुंसक	अंतर्गुङ्र्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	٥

			तेऊ में अस	नी मनुष्य	वायु में असन्नी मनुष्य			
गमा	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल		
4 7	۲ ۲	۲ ۲ ۲	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ३ दिन रात	१ अंतर्मु. ३ दिन रात १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. ३ दिन रात	१अंतर्मु १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३ हजार वर्ष	१अंतर्मु, ३ हजार वर्ष १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ३ हजार वर्ष		

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9। आयु	७ द्वार	<sup>9=:</sup> अध्यवसाय द्वार		9६ विध द्वार	नाणत्ता
8	8	<b>4</b>	ly.	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	<b>उ</b> त्कृष्ट	
8	8 ~	ų	५ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	90 हजार वर्ष	१ सागर जाझो	भला भूंडा	90 हजार वर्ष	१ सागर जाझो	o
8	8	ч	५् पहली	2	२ स्त्री पुरुष	९० हजार वर्ष	५० हजार व <b>र्ष</b>	भला भूंडा	90 हजार वर्ष	90 हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध
R	8	ų	५् पहली	2	२ स्त्री पुरुष	१ सागर जाझो	१ सागर जाझो	भला भूंडा	१ सागर जाझो	9 सागर जाझे	२ आयु, अनुबंध

				२० कायसंवेध द्वार								
	भव अप में असुरकुमार वनस्पति में असुरक्											
गमा	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल						
9 ?	۲ ۲	۶ ۶	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१ सागर जाझो ७ हजार वर्ष १ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो ७ हजार वर्ष	९० हजार वर्ष १ अंतमुं. ९० हजार वर्ष १ अंतमुं. ९० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	९ सागर जाझो १० हजार वर्ष ९ सागर जाझो ९ अंतर्गु. ९ सागर जाझो १० हजार वर्ष						
8	3	₹ 7	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	৭০ हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ अंतर्म्.						
ધ્ દ .	₹ ₹.	२ २	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १७ हजार वर्ष १० हजार वर्ष १० हजार वर्ष						
(9 5 5	२ २ २	۶ ۲ ۲	१ सागर जाझो १अंतर्मु. १ सागर जाझो १अंतर्मु. १ सागर जाझो ७ हजार वर्ष	१ सागर जाझो ७ हजार वर्ष १ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो ७ हजार वर्ष	१ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो १० हजार वर्ष	१ सागर जाझो १० हजार वर्ष १ सागर जाझो १ अंतर्मु. १ सागर जाझो १० हजार वर्ष						

### ५७ अप तथा वनस्पति में नवनिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपा	१ गत द्वार	परिमा	२ ण द्वार	३ संधयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अइ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	з	યુ	3	3	₹
9 7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिए। काय में ऊपजै दि जधन्य उत्कृष्ट र	ाण रै	৭,২,३ জ <b>দ</b> জী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समयौरंस	४ पहली	₹	३ नियमा	३भजना	3	₹
પ્ર ધ	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,८ गमें जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै।		৭,২,३ জয়নী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	ं१ समधौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	3	?
(9 E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमैं जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै।		९,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल मों असंख भाग	७ हाथ	9 समयौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	3	?

## ५८ अप तथा वनस्पति में व्यंतर ऊपजै तेहनों यंत्र (२३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उग	१ ग्पात द्वार	: परिमा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	ध अवगा	} हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इ.सअ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगत
		जघन्य	उत्कृ <b>ष्ट</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ.	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिण में ऊपजै तिण है उत्कृष्ट आयु में	रे जघन्य	૧૨૩ <b>હ્ય</b> ળ	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	1
४ ५ ६	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	२५,८ गमें जिप में ऊपजै तिण आयु में ऊपजै।	रे जघन्य	৭.২. <b>३</b> ডঘ <b>া</b>	संख था असंख भाग	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समयौंरस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	7
(9 12. 5	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य सत्कृष्ट नें उत्कृष्ट	३,६,६ गमें जिप में ऊपजै तिण आयु में ऊपजै		१,२,३ ऊपजै	संख या असंख भाग	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समग्रौरस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	ą	?

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घातद्वार	१५ वेदनाद्वार	9६ वेदद्वार	1	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	अ	9६ नुबंध द्वार	नाणत्ता
8	8	ų	(9	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	अघन्य	उत्कृष्ट	
R	8	ч	५् पहली	3	२ स्त्री पुरुष	90 हजार वर्ष	देसूण २ पल्य	भला भूंडा	40 हजार वर्ष	देसूण २ पत्य	o
Å	8	ų	५् पहली	ş	२ स्त्री पुरुष	90 हजार वर्ष	90 हजार वर्ष	भला भूंडा	90 हजार वर्ष	ं 90 हजार वर्ष	्२ आयु अनुबंध
8	R	ધ્	५ पहली	2	२ स्त्री पुरुष	देसूण २ पत्य	देसूण २ पत्य	भला भूंडा	देसूण २ पल्प	देसूण २ पत्य	२ आयु अनुबंध

२०	
कायसंवेध	द्वार

	,	। व	अप में न	व निकाय	वनस्पति में	नव निकाय
गमा	ज.	ज.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9	2	2	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्,	देसूण २ पत्य ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्.	देसूण २ पल्य १० हजार वर्ष
2	2	2	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्.	देसूण २ पत्य १ अंतर्म्.	१० हजार वर्ष १ अंतर्म.	देस्रण २ पत्य १ अंतर्म्.
3	2	7	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	देसूण २ पत्य ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	देसूण २ पत्य १० हजार वर्ष
×	7	7	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	% हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्.	৭০ हजार वर्ष ৭০ हजार वर्ष
4	ą	₹	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु.	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्.	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्
ξ	२	7	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष
(9	2	ą	देसूण २ पल्य १ अंतर्म्.	देसूण २ पत्य ७ हजार वर्ष	देसुण २ पल्य १ अंतर्म्.	देसूण २ पल्य १० हजार वर्ष
τ.	7	7	देसूण २ पल्य १ अंतर्मु.	देसूण २ पत्य १ अंतर्ग्.	देसूण २ पल्य १ अंतर्ग्.	देसूण २ पत्य १ अंतर्म्.
ξ	2	7	देसूण २ पल्य ७ हजार वर्ष	देसूण २ गल्य ७ हजार वर्ष	देसूण २ पत्य १० हजार वर्ष	देसूण २ पल्य १० हजार वर्ष

११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	<sup>96</sup> आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	९६ अनुबंध		नाणत्ता
å	8	પ્	ly .	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
ğ	8	ų	<b>५</b> पहली	7	२ स्त्री पुरुष	९० हजार वर्ष	१ पत्न्य	भला भूडा	१० हजार वर्ष	9 पत्य	0
8	8	ų	५ पहली	7	२ स्त्री. पुरुष	९० हजार वर्ष	५० हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	१० हजार व <b>र्ष</b>	२ आयु, अनुबंध
*	8	ų	<b>५</b> पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	१ पत्य	<b>९</b> पल्य	भला भूंडा	१ पल्य	१ पत्य	२ आयु अनुबंघ

40

#### कायसंवेध द्वार

गमा	भ	व	अप में व्यंतः	र ऊपजै	वनस्पति में व्य	तर ऊपजै
	<b>তা</b> ০	उ॰	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
٩	٦	₹	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु०	१ पल्य ७ हजार धर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु०	१ पत्य १० हजार वर्ष
₹	२	2	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु०	१ पत्य १ अंतर्मु०	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्०	१ पत्य १ अंतर्म्०
3	₹	7	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१ पल्य ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	१ पत्य १० हजार वर्ष
8	2	2	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु०	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्म्o	৭০ हजार বৰ্ষ ৭০ हजार বৰ্ষ
4	2	2	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु०	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु०	90 हजार <b>वर्ष</b> 9 अंतर्मु <b>0</b>	90 हजार <b>वर्ष</b> 9 अंतर्मृ०
Ę	3	7	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष ७ हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष
ly	2	2	१ पत्य १ अंतर्मु०	१ पत्य ७ हजार वर्ष	१ पल्य १ अंतर्म् ०	१ पत्य १० हजार वर्ष
τ.	2	₹	१ पत्य १ अंतर्मु०	१ पल्य १ अंतर्म् ०	१ पत्य १ अंतर्म् ०	१ पत्य १अंतर्ग्०
ξ	ર	7	१ पत्य ७ हजार वर्ष	१ पल्य ७ हजार वर्ष	१ पल्य १० हजार वर्ष	9 पत्य १० हजार वर्ष

## ५६ अप तथा वनस्पति में ज्योतिषी ऊपजै तेहनों यन्त्र (२४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	प् परिमा	? गद्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इहान-3	: ।ज्ञान द्वार	् योग द्वार	90 उपयोगद्व
		जघन्य	उत्कृ <b>ष्ट</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जधन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	3	પ્	3	3	3
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४, ७ गमैं जिण में ऊपजै तिण रै उत्कृष्ट आयु में	जघन्य	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समयौरंस	<b>१</b> तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
४ ५ ६	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,८ गमैं जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै ।	जघन्य	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समयौरंस	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	1
(9 5. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	में ऊपजै तिण रै	বকৃষ্ট	9,7,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	५ समचौरंस	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

# ६० अप तथा वनस्पति में प्रथम देवलोक सौधर्म नां देव ऊपजै तेहनों यंत्र (२५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	। 1 द्वार	प्रिमा	? ग द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहः	ना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ू ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगः
		जघन्य	<b>বন্দু</b> খ্য	जधन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ц	3	3	₹
4 5	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	९,४,७ गमै जिण में ऊपजै तिण रै उत्कृष्ट आयु में	जघन्य	৭.২.३ ক্তবতী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	१तेजु	3 मिथ्या	३ नियमा	३ नियमा	3	?
٧ ٤	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५, <sub>द</sub> गमै जिण में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै ।	जघन्य	१.२.३ स्रपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	9 समचौरंस	१ तेजु	३ मिथ्या	३ नियमा	३ नियमा	3	<b>?</b>
(9 ~ E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमै जिण काय में ऊपजै वि उत्कृष्ट आयु में	तेण रै	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	9 समधौरंस	9 तेजु	३ मिथ्या	३ नियमा	३ नियमा	. 3	3

8	8	ų	५्पहली	7	२ स्त्री पुरुष	अध्यपाव पल्य	१ पत्य १ लाख वर्ष	भलामूंडा	अधपा <b>व</b> पल्य	१ पत्य १ लाख वर्ष	۰
8	8	ч	५ पहली	7	२ स्त्री. पुरुष	अधपाव पल्य	अधपाव पत्न्य	भलामूंडा	अधपाव पल्य	अघपाद पत्न्य	२ आयु अनुबंध
8	8	ų	५् पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	१ पत्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	मलामूंडा	१ पल्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	२ आयु अनुबंध
				-			•	२० कायसंवेध	द्वार		

जघन्य

90

आयु द्वार

उत्कृष्ट

94

वेदना द्वार

2

98

वेद द्वार

3

				कायसंवेध द्वार		
गमा	74	व	अप में ज्योति	तेषी ऊपजै	वनस्पति में ज्य	ग्रेतिषी ऊपजै
	ত ০	ব৹	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9	2	2	अधपाव पत्य १ अंतर्मु०	१ पल्य १ लाख वर्ष ७ हजार वर्ष	अधपाव पल्य १ अंतर्मु०	९ पत्य ९ लाख वर्ष १० हजार वर्ष
2	₹ 7	ą	अधपाव पल्य १ अंतर्मु०	१ पल्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु०	अधपाव पत्य १ अंतर्मु०	१ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु०
3	२	₹	अधपाव पल्य ७ हजार वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष ७ हजार वर्ष	अधपाव पल्य १० हजार वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष १० हजार वर्ष
8	2	₹	अधपाव पत्य १ अंतर्मु०	अधपाव पत्य ७ हजार वर्ष	अधपाव पत्य १ अंतर्म्०	अंघपाव पत्य १० हजार वर्ष
પ્	2	7	अधपाव पल्य १ अंतर्मु०	अधपाव पल्य १ अंतर्मु०	अधपाव पल्य १ अंतर्मु०	अधपाव पत्य १अंतर्म्०
ξ	२	₹,	अधपाव पल्य ७ हजार वर्ष	अधपाव पत्य ७ हजार वर्ष	अधपाव पल्य १० हजार वर्ष	अधपाव पत्य % हजार वर्ष
u	2	₹	१ पल्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु०	१ पल्य १ लाख वर्ष ७ हजार वर्ष	१ पल्य १ लाख वर्ष १ अंतर्म् ०	१ पल्य १ लाख वर्ष १० हजार वर्ष
5	2	२	१ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु०	१ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु०	१ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु०	९ पत्य ९ लाख वर्ष ९ अंतर्म्o
Ę	2	२	१ पल्य १ लाख वर्ष ७ हजार वर्ष	१ पल्य १ लाख वर्ष ७ हजार वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष १० हजार वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष १० हजार वर्ष

<sup>9</sup>द अध्यवसाय द्वार

असंख्याता

९६ अनुबंध द्वार

उत्कृष्ट

जघन्य

नाणता

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	१७ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नाणता
¥	8	ય્	6	₹	3	जघन्य '	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
¥	¥	ų	५ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य	२ सागर	भला भूंडा	१पल्य	२ सागर	0
¥	¥	ų	५ पहली	2	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य	१ पल्य	भला भूंडा	१ पल्य	१ पल्य	२ आयु, अनुबंध
R	8	ų	५् पहली	2	: २ स्त्री पुरुष	२ सागर	२ सागर	भला भूंडा	२ सागर	२ सागर	२ आयु अनुबंध

	·			कायसंवेध द्वार		
गमा	भ	व	अप में सौ	धर्म देव	वनस्पति	में सौधर्म देव
	ত্য৹	তত	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य কাল	चत्कृष्ट काल
9	7	2	१ पत्य १ अंतर्गुहूर्त	२ सागर ७ हजार वर्ष	१ पल्य १ अंतर्गु.	२ सागर १० हजार वर्ष
2	2	2	१ पल्य १ अंतर्मुहूर्त	२ सागर १ अंतर्गु	१ पल्य १ अंतर्मु.	२ सागर १ अंतर्मु.
3	7	₹ '	१ पत्य ७ हजार वर्ष	२ सागर ७ हजार वर्ष	१ पल्य १० हजार वर्ष	२ सागर १० हजार वर्ष
8	2	2	१ पल्य १ अंतर्मुहूर्त	१ पल्य ७ हजार वर्ष	१ पल्य १ अंतर्म्.	१ पल्य १० हजार वर्ष
4	2	7	१ पत्य १ अंतर्गृहूर्त	१ पल्य १ अंतर्गु	१ पल्य १ अंतर्ग्,	१ पल्य १ अंतर्गृ.
Ę	7	२	१ पल्य ७ हजार वर्ष	१ पल्य ७ हजार वर्ष	१ पत्य १० हजार वर्ष	१ पल्य १० हजार वर्ष
(9	7	2	२ सागर १ अंतर्गु.	२ सागर ७ हजार वर्ष	२ सागर १ अंतर्गुः	२ सागर १० हजार वर्ष
ς.	2	२	२ सागर १अंतर्गु.	२ सागर १ अंतर्मु	२ सागर १ अंतर्मु.	२ सागर १ अंतर्म्.
ξ	2	२	२ सागर ७ हजार वर्ष	२ सागर ७ हजार वर्ष	२ सागर १० हजार वर्ष	२ सागर १० हजार वर्ष

99 संज्ञा द्वार १२ कषाय द्वार

इन्द्रिय द्वार

समुद्घात द्वार

### ६१ अप तथा वनस्पति में दूसरा देवलोक ईशान नां देव ऊपजै तेहनों यंत्र (२६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	चप	१ पात द्वार	; परिमा	र ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इान-अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
	,	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ě,	3	પ્	3	3	?
9 7 9	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९,४,७ गमै जिण में ऊपजै तिण रै उत्कृष्ट आयु में	जघन्य	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुलनों असंखभाग	७ हाथ	१ समयौरंस	१तेजु	3	३ नियमा	- ३ नियमा	3	2
2 7 4	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२,५,८ गमै जिए में ऊपजै तिण रै आयु में ऊपजै ।	ज <b>घन्य</b>	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुलनों असंख भाग	७ हाथ	१ समधौरंस	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
(9 ~ E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमै जिण काय में ऊपजै उत्कृष्ट आयु में	तेण रै	<b>५.२.३</b> ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुलनों असंख माग	७ हाथ	१ समयौरंस	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	ą	2

### ६२ तीन विकलेंद्रिय में पृथ्वीकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१) 🐇

गमा	२० द्वार नी संख्या	प उपपात	। १ द्वार	् परिम	≀ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहन	ा द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	c জান–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग <b>ह</b>
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	7
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिण । क्रपजै तिण रै ज आयु में कपजै ।		१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल असंख		मसूर चंद्र	४ पहली	१ मिष्टया	0	२ नियमा	५ काया	7
٧ ٢ ٤	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२,५,८ गमै जिण ऊपजै तिण रै ज में ऊपजै ।		१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	੧ ਚੇਰਟੀ	आंगुल असंख		मसूर चंद्र	३ पहली	१ मिष्टया	0	२ नियमा	१ काया	7
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमै जिण विकाणै ऊपजै वि उत्कृष्ट आयु में र	तेण रै	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	੧ छੇਰਟੀ	आंगुल असंख		मसूर चंद्र	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	?

३ विकलेंद्री मैं १२ ठिकाणां नां ऊपजै — पांच स्थावर ५, तीन विकलेंद्रिय ६, असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ६, संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच १०, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ११, असन्नी मनुष्य १२।

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	९३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१७ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	<b>१</b> ६ अनुबंध		नाणता
8	8	ų	6	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
A	8	ч	५् पहली	7	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य जाझो	२ सागर जाझो	भता भूंडा	९ पत्य जाझो	२ सागर जाझो	0
¥	8	ų	५ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	१ पत्य जाझो	१ पल्य जाझो	भलाभूडा	१ पेल्य जाझो	१ पल्य ज़ाझो	२ आयु, अनुबंध
8	8	પ્	५ पहली	?	२ स्त्री, पुरुष	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	भलाभूंडा	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	२ आयु, अनुबंध

				कायसंवेध द्वार		
गमा	भ	ব	अप में ई	शान देव	वनस्पति व	में ईशान देव
	ਯo	उ०	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9	2	2	१ पल्य जाझो १ अंतर्गुहूर्त	२ सागर जाझो ७ हजार वर्ष	१ पल्य जाझो १ अंतर्मु.	२ सागर जाझो १० हजार वर्ष
2	2	2	१ पल्य जाझो १ अंतर्गुहूर्त	२ सागर जाझो १ अंतर्मु	१ पत्य जाझो १ अंतर्मु.	२ सागर जाझो १ अंतर्मु.
3	₹	२	१ पल्य जाझो ७ हजार वर्ष	२ सागर जाझो ७ हजार वर्ष	१ पल्य जाझो १० हजार वर्ष	२ सागर जाझो १० हजार वर्ष
8	7	7	१ पत्य जाझो १ अंतर्म्.	१ पत्य जाझो ७ हजार वर्ष	१ पल्य जाझो १ अंतर्म्.	१ पल्प जाझो १० हजार वर्ष
ų	₹ '	7	१ पल्य जाझो १ अंतर्गु.	१ पल्य जाझो १ अंतर्मु.	१ पत्य जाझो १ अंतर्मु.	१ पल्य जाझो १ अंतर्गु.
Ę	₹ 7	२	१ पत्य जाझो ७ हजार वर्ष	१ पत्य जाझे ७ हजार वर्ष	१ पल्य जाझो १० हजार वर्ष	१ पत्य जाझो १० हजार वर्ष

२ सागर जाझो ७ हजार वर्ष

२ सागर जाझो ७ हजार वर्ष

२ सागर जाझो १ अंतर्मु.

२ सागर जाझो १ अंतर्गु. २ सागर जाझो १ अंतर्गु.

२ सागर जाझो १० हजार वर्ष

२ सागर जाझो १० हजार वर्ष

२ सागर जाझो १० हजार वर्ष

२ सागर जाझो १ अंतर्मु.

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	<b>१</b> ७ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुबंध		नाणत्तः
8	8	પ્	U U	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	8	१ फर्श	३ पहली	3	9 नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	0
8	R	9 फर्री	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंत <b>र्गु</b> हूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आयु अध्य० अनुबंध
¥	૪	१ फर्स	३ पहली	₹	१ नपुंसक	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	भलाभूंडा	२२ · हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध

२ सागर आझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो १ अंतर्मु.

२ सागर जाझो ७ हजार वर्ष

					२० कायसंवेध द्वार			
गमा	7	व	बेइंद्रिय में ।	पृथ्वीकाय	तेइंद्रिय में	पृथ्वीकाय	चर्जरेद्रिय	में पृथ्योकाय -
	ज.	ज.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उक्कृष्ट काल
9 2 3	२ २ २	संख संख	१ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १ अंतर्गु, १२ वर्ष	संख्याल संख्याल संख्याल संख्याल ६६ हजार वर्ष ४६ वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ८८ हजार वर्ष १६६ दिन रात	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, ६ मास	रांखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ८८ हजार वर्ष २४ मास
४ ५ ६	२ २ २	संख संख च.	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, ४५ वर्ष	१ अंतर्गुः १ अंतर्गुः १ अंतर्गुः १ अंतर्गुः १ अंतर्गुः ४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, १९६ दिन रात 🕡	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, २४ मास
(9 T. E.	२ २ २	G G G	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १२ वर्ष	द्रद हजार वर्ष ४८ वर्ष द्रद हजार वर्ष ४ अंतर्मु० द्रद हजार वर्ष ४८ वर्ष	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष ४६ दिन रात	८८ हजार वर्ष १६६ दिन रात ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु० ८८ हजार वर्ष १६६ दिन रात	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष ६ मास	८८ हजार वर्ष २४ भारा ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मुः ८८ हजार वर्ष२४ मास

### ६३ तीन विकलेंद्रिय में अपकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपार	त द्वार	२ परिम	गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगा	४ अवगाहना द्वार		४ अवगाहना द्वार		६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–3	- म्हान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	પ્	3	3	₹		
3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमैं जिल ऊपजै तिल रै ज आयु में ऊपजै।		१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	੧ छੇवटो	,	आंगुल नों असंख भाग		४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ क्राय	7		
ઝ પ્	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५, ८ गमै जिण ऊपजै तिण रै ज में ऊपजै।		५.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	੧ ਲੇਕਟੀ		ुल नों खभाग	थिबुक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	7		
(9 E. E.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमै जिल ठिकाणै ऊपजै वि आयु में ऊपजै ।		१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो		आंगुल नों असंख भाग		४ पहली	१ मिथ्या	σ	२ नियमा	१ काय	7		

## ६४ तीन विकलेंद्रिय में तेऊकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपा	त द्वार	; परिम	१ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान <b>3</b>	: ाज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग
	ĺ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્દ	जधन्य	आंगुल नो		ξ	3	પ્	3	3	?
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै जघन्य उत्कृष्ट	तिण रैं	१२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो		आंगुल नो असंख भाग		३ पहली	१ मिथ्या +	0	२ नियमा	१ काया	?
४ ५ ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२,५,६ गमै जिण ठिका <b>णै</b> ऊपजै जघ <b>न्य</b> आयु में	तिण रै	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो		ल नो ब भाग	सुचीकलाप	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	2
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमै जिण विका <b>णै</b> ऊपजै उत्कृष्ट आयु में	तिण रै	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो		ाल नो खभाग	सुचीकलाप	३ पहली	१ मिथ्या	۰	२ नियमा	१ काया	3

99 संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9७ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नाणत्ता
8	8	ų	(9	' २	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	चत्कृ <b>ष्ट</b>	
8	8	१ फर्श	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	७ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	७ हजार वर्ष	o
8.	8	१फर्श	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	મૂંહા	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आबु, अध्य० अनु.
Å	8	9 फर्श	३ पहली	2	१ नपुंसक	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	भलाभूंडा	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंघ

70	
कायसंवेध	द्वार

गमा	3	व	बेइंद्रिय में	अपकाय	तेइंद्रिय में	अपकाय	चउरिंद्रिय	में अपकाय
	ज.	ज.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9	* * *	संख	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु.	संखकाल संखकाल	९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
२		संख	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु.	संखकाल संखकाल	९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
३		=	१ अंतर्मु. १२ वर्ष	२८ हजार वर्ष ४८ वर्ष	९ अंतर्मु, ४६ दिन रात	२८ हजार वर्ष १९६ दिन रात	१ अंतर्मु, ६ मास	२८ हजार वर्ष २४ मास
४	२	संख	१ अंतर्मुं, १२ वर्ष २८ हजार वर्ष ४८ वर्ष		१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
५	२	संख	१ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, संख्वाल संख्वाल		१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल संखकाल
६	२	<sup>८</sup>	१ अंतर्मुं, १३ तर्षे ४ अंतर्मुं, ४८ वर्ष		१ अंतर्मु, ४६ दिन रात	४ अंतर्मुं. १६६ दिन रात	१ अंतर्मु, ६ मास	४ अंतर्मु. २४ मास
(9	۲	ט ט ט	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४८ वर्ष	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष १६६ दिन रात	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष २४ मास
==	۲		७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु.	२८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु.
==	۲		७ हजार वर्ष १२ वर्ष	२८ हजार वर्ष ४८ वर्ष	७ हजार वर्ष ४६ दिन रात	२८ हजार वर्ष १६६ दिन रात	७ हजार वर्ष ६ मास	२८ हजार वर्ष २४ मास

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्धातद्वार	१५् वेदनाद्वार	<b>१६</b> वेदद्वार	9७ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	9६ अनुबंध		नाणता
¥	8	પ્	19	२	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	, 8	<b>१ फर्ज</b>	३ पहली	2	१ नपुंसक	. अंतर्मुहूर्त	३ दिन रात	मलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ दिन रात	0
8	Я	. १ फर्शः	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	३ आयु अध्य, अनुबंध
¥	. 8	१ फर्रा	३ पहली	3	१ नपुंसक	३ दिन रात	३ दिन रात	भलाभूंडा	३ दिन रात	३ दिन रात	२ आयु, अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

गमा	भ	ৰ	बेइंद्रिय में	तेऊकाय	तेइंद्रिय ग	में तेऊकाय	चउरिद्रिय	में तेऊकाय
	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9	२	संख	१अंतर्मु० १अंतर्मु०	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु.	संखकाल, संखकाल	१ अंतर्मु.१ अंतर्मु.	संखकाल, संखकाल
2	२	संख	१अंतर्मु० १अंतर्मु०	संखकाल संखकाल	१अंतर्मु० १अंतर्मु.	संखकाल संखकाल	१ अंतर्मु,१ अंतर्मु,	संखकाल, संखकाल
3	₹	۲.	१ अंतर्मु० १२ वर्ष	१२ दिन रात ४८ वर्ष	१अंतर्मु० ४६ दिन रात	१२ दिन रात १६६ दिन रात	१ अंतर्मु० ६ मारा	१२ दिन रात २४ मास
8	2	संख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल, संखकाल	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल, संखकाल	१ अंतर्म्, १ अंतर्म्,	संखकाल, संखकाल
<b>4</b>	7	संख	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	संखकाल, संखकाल	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	संखकाल, संखकाल	१ अंतर्म्, १ अंतर्म्,	संखकाल, संखकाल
ξ	7	۲.	१ अंतर्मु. १२ वर्ष	४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	१अंतर्मु, ४६ दिन रात	४ अंतर्मु, १६६ दिन रात	१ अंतर्मुं. ६ मास	४ अंतर्मु. २४ मास
lg	7	٤.	३ दिन रात १ अंतर्मु.	१२ दिन रात ४८ वर्ष	३दिन रात १ अंतर्म्.	१२ दिन रात १६६ दिन रात	३ दिन रात १ अंतर्म्.	१२ दिन रात २४ मास
τ,	₹	ε,	३ दिन रात १ अंतर्मु,	१२ दिन रात ४ अंतर्मु.	३ दिन रात १ अंतर्गु.	१२ दिन रात ४ अंतर्म्.	३ दिन रात १ अंतर्ग्.	१२ दिन रात ४ अंतर्ग्
ξ	२	τ,	३ दिन रात १२ वर्ष	१२ दिन रात ४८ वर्ष	३ दिन रात ४६ वर्ष	१२ दिन रात १६६ दिन रात	३ दिन रात ६ मास	१२ दिन रात २४ मास

### ६५ तीन विकलेंद्रिय में वाउकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

ामा	२० द्वार नी संख्या	उपया	१ त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहर	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	হ রান–জ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्व
		जघन्य	<b>चत्कृष्ट</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	٤ [	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ų	3	3	२
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१.४.७ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै 1 जघन्य उत्कृष्ट	तेण रॅ	9.2.३ - ऊपजै	संख या अरांख ऊपजै	छेवटी		आंगुल नो असंख भाग		३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	3
۶ ۲	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२,५,६ गमै जिप विकाण ऊपजै ! जघन्य आयु में र	तिण रै	९,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	छेवटो	आंगुल असंख		पताका	३ पहली	९ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	7
(9 E.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै। उत्कृष्ट आयु में	तिण रै	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	छेवटो	आंगुल नो असंख भाग		पताका	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	7

# ६६ तीन विकलेंद्रिय में वनस्पतिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	प्रिमा	श ण द्वार	३ संघयण द्वार		४ हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इगन–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग्द्रा
	अनैं तेहनां नाम	जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ્	3	ų	3	3	?
9 2 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१४,७ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै। जघन्य उत्कृष्ट	तेष रैं	৭,২,३ জঘ্ <b>তী</b>	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	१ हजार योजन जाझो	नाना प्रकार	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	2
у ц ६	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	२.५. ८ गमै जिप विकामै ऊपजै जघन्य आयु में	तिण रै	৭.২.३ জঘ <b>ল</b>	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	आंगुल नौं असंख भाग	नाना प्रकार	३ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	3
(g ~ §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३.६.६ गमै जिए ठिकाणै ऊपजै उत्कृष्ट आयु में	तिण रै	५.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	१ हजार योजन जाझो	नाना प्रकार	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	3

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		९७ आयु द्वार		१८ १६ अध्यवसाय द्वार अनुबंध द्वार		नाणत्ता
8	8	પ્	(9	ર	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
¥	8	१ फर्श	४ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	३ हजार वर्ष	भलामूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ हजार वर्ष	o
8	8	9 फर्श	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहर्त	अंतर्मुहूर्त	४ समु०, आयु, अध्य, अनु.
¥	¥	9 फर्श	४ पहली	3	१ नपुंसक	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	भलाभूंडा	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध

	२० कायसंवेध द्वार													
गमा	2	व	बेइंद्रिय में व	<b>जिकाय</b>	तेइंद्रिय में	वाउकाय	चउरिंद्रिय	में वाउकाय						
	ज.	च.	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल						
9 ? 3	२ २ २	संख संख ८	९ अंतर्मु० ९ अंतर्मु० ९ अंतर्मु० ९ अंतर्मु० ९ अंतर्मु० १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल १२ हजार वर्ष ४८ वर्ष	९अंतर्मु० ९अंतर्मु. ९अंतर्मु० १अंतर्मु. ९अंतर्मु० ४६ दिन रात	संखकाल, संखकाल संखकाल, संखकाल १२ हजार वर्ष १६६ दिन रात	९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु० ६ मास	संखकाल, संखकाल संखकाल, संखकाल १२ हजार वर्ष २४ मास						
૪ પ્	२ २ २	संख संख	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु० १२ वर्ष	संखकाल, संखकाल संखकाल, संखकाल ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु. १ अंतर्मु, १ अंतर्मु. १ अंतर्मु, ४६ दिन रात	संखकाल, संखकाल संखकाल, संखकाल ४ अंतर्मु, १६६ दिन रात	१अंतर्मु, १अंतर्मु. १अंतर्मु, १अंतर्मु. १अंतर्मु, ६ मास	संखकाल, संखकाल संखकाल, संखकाल ४ अंतर्मुं. २४ मास						
(9 %	२ २ २	נוטטט	३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १२ वर्ष	१२ हजार वर्ष ४८ वर्ष १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु १२ हजार वर्ष ४८ वर्ष	३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष ४६ दिन रात	१२ हजार वर्ष १६६ दिन रात १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु, १२ हजार वर्ष १६६ दिन रात	३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष ६ मास	१२ हजार वर्ष २४ मास १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. १२ हजार वर्ष २४ मास						

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	% आयु द्वार		१८ १६ अध्यवसाय द्वार अनुबंध द्वार			नाणसा	
¥	8	ધ્	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		
Å	8	१ फर्श	३ पहली	5	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	१० हजार वर्ष	भलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	१० हजार वर्ष	o	
8	8	৭ फर्श	३ पहली	3	१नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	<b>५</b> अव०, लेश्या, आयु, अध्य, अ <b>नुबं</b> घ	
¥	8	9 फर्श	३ पहली	7	१नपुंसक	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	শলাপুঁস্কা	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध	

	२० कायसंवेध द्वार													
गमा	भव		बेइंद्रिय में व	नस्पतिकाय	तेइंद्रिय में क	नस्पतिकाय	चउरिद्रिय में वनस्पतिकाय							
	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृ <b>ष्ट</b> काल						
9 2 3	२ २ २	संख संख द	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४० हजार वर्ष ४८ वर्ष	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु० १ अंतर्मु० १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. ४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४० हजार वर्ष १६६ दिन रात	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु० ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४० हजार वर्ष २४ मास						
પ્ર ધ્	₹ ₹	संख संख	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	१अंतर्मु० १अंतर्मु० १अंतर्मु० १अंतर्मु० १अंतर्मु० ४६ दिन रात	संख्यकाल संख्यकाल संख्यकाल संख्यकाल ४ अंतर्मु. १९६ दिन रात	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु० ६ मास	<b>संखकाल</b> संखकाल सं <mark>खकाल</mark> संखकाल ४ अंतर्मु० २४ भास						
(9 %	२ २ २	נו	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु १० हजार वर्ष १ अंतर्मु १० हजार वर्ष १२ वर्ष	४० हजार वर्ष ४६ वर्ष ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु० ४० हजार वर्ष ४६ वर्ष	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु० १० हजार वर्ष १ अंतर्मु १० हजार वर्ष ४६ दिन रात	४० हजार वर्ष १९६ दिन रात ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु० ४० हजार वर्ष १६६ दिन रात	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु १० हजार वर्ष ६ मास	४० <b>हजार</b> वर्ष २४ मास ४० <b>हजार</b> वर्ष ४ अंतर्मु० ४० <b>हजार</b> वर्ष २४ मास						

# ६७ तीन विकलेंद्रिय में बेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ चपपात द्वार		२ परिमाण द्वार		3 संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार		५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	१० उपयोग द्वा
	अनै तेहनां नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	चत्कृष्ट	ξ	Ę	3	પ્	3	₽	२
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	ऊपजै तिण रैं जघन्य उत्कृष्ट		৭.২,३ ক্ত <b>प</b> जै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंखभाग	, १२ योजन	9 हंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ <b>वच</b> काया	?
y 54 &	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	२.५,६ गमै जिज जिज विकाणै ऊपजै तिण रे जधन्य आयु में ऊपजै।		৭,২,३ জয়তী	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	९ हुंडक	३ पहली	९ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	2
(9 (5,	उत्कृष्ट नै ओघिक उत्कृष्ट नै जघन्य उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	३,६,६ गमै जिण जिण ठिकाणै ऊपजै तिण रे उत्कृष्ट आयु में ऊपजै।		१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंखभाग	१२ योजन	9 हंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमां	२ <b>वच</b> काया	\$

## ६८ तीन विकलेंद्रिय में तेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार		२ परिमाण द्वार		३ ४ संघयणद्वार अवगाहना द्वार		५ ६ संठाण द्वार लेश्या द्वार		७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान—अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	% उपयोगद्वर	
		जघन्य	<b>उत्कृष्ट</b>	जघन्य	তন্কৃष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ε.	Ę	3	પ્	3	3	?
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	ऊपजै तिण रै जघन्य-उत्कृष्ट आयु		९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुल नौं असंख भाग	३ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ व <del>थ</del> काय	?
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,८ गमै जिण जिण विकाणै ऊपजै तिण रै जघन्य आयु में ऊपजै ।		<b>१.२.३</b> ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटी	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	?
(g E E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमै जिण जिण विकाणै ऊपजै तिण रै जुत्कृष्ट आयु में ऊपजै ।		१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	३ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	\$

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१७ आयु	द्वार	९८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुक्	1	नाणता
¥.	8	ય	ly	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	ų	२फर्श	३ पहली	₹	१ नृषुंसक	अंतर्मुहूर्त	१२ वर्ष	भलाभूंडा	अंतर्मुहूर्त	५२ वर्ष	٥
8	R	२ फर्श	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य, अनुबंध
8	A	२ फर्श	३ पहली	3	१ नर्पुसक	9२ वर्ष	<b>५२ वर्ष</b>	भलाभूंडा	৭২ বর্ষ	<b>५२ वर्ष</b>	२ आयु, अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

गमा	1	га	बेइंदिय में	बेइंद्रिय	तेइंद्रिय में बे	इंदिय	चलरिदिय	में बेइंद्रिय
	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य कात	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 ? 3	2 2 2	संख संख c	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४८ वर्ष ४८ वर्ष	१अंतर्मु० १अंतर्मु० १अंतर्मु० १अंतर्मु० १अंतर्मु, ४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४८ वर्ष १६६ दिन रात	१ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४८ वर्ष २४ मास
8 4 E	2 2 2	संख संख	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १ अंतर्मु. १ अंतर्मु० १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु. ४६ वर्ष	१ अंतर्मु० १ अंतर्मु० १ अंतर्मु० १ अंतर्मु० १ अंतर्मु, ४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, १६६ दिन रात	१ अंतर्मुं, १ अंतर्मुo १ अंतर्मुं, १ अंतर्गुo १ अंतर्मुo ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु० २४ मास
ن ج ڊ	2 2 2	ניניני	१२ वर्ष १ अंतर्मु १२ वर्ष १ अंतर्मु १२ वर्ष १२ वर्ष	४८ वर्ष ४८ वर्ष ४८ वर्ष ४ अंतर्मु० ४८ वर्ष ४८ वर्ष	१२ वर्ष १ अंतर्मु० १२ वर्ष १ अंतर्मु० १२ वर्ष ४६ दिन रात	४८ वर्ष १६६ दिन रात ४८ वर्ष ४ अंतर्मु० ४८ वर्ष १६६ दिन रात	१२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष १ अंतर्मु० १२ वर्ष ६ मास	४८ वर्ष २४ मास ४८ वर्ष ४ अंतर्मु० ४८ वर्ष २४ मास

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	<sup>96</sup> आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	98 . अनुबं		नाणता
¥	8	ų	ty	2	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	R	3 *	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	४६ दिन रात	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	४६ दिन रातः .	o
Я	8	3	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अतर्मुहूर्त	७ अव०. दृष्टि, झान, योग, आयु, अध्य०, अनु०
¥	Å	3	३ पहली	3	१ नपुंसक	४६ दिन रात	४६ दिन रात	भलाभूंडा	४६ दिन रात	४६ दिन रात	२ आयु, अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

गमा	74	ra	बेइंद्रिय में	तेइंद्रिय	तेइंद्रिय में तें	इदिय	चर्रिदिय में	तेइंद्रिय
	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 7 3	۲ ۲ ۲	संख संख	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल १९६ दिन रात ४८ वर्ष	९अंतर्मु ९अंतर्मु. ९ अंतर्मु ९अंतर्मु. ९अंतर्मु.४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल १६६ दिन रात १६६ दिन रात	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. ६ मास	संख <b>काल</b> संखकाल संखकाल संखकाल १६६ <b>दिन रा</b> त २४ मास
8 4 5	२ २ २	संख संख	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्गुं. ४ ८ वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु १अंतर्मु, १अंतर्मु, ४६ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, १६६ दिन रात	९अंतर्मु. ९अंतर्मु. १ अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंत <b>र्गु</b> . २४ मास
(9 C. E	२ २ २	0 0	४६ दिन रात १अंतर्मु. ४६ दिन रात १अंतर्गु. ४६ दिन रात १२ वर्ष	१६६ दिन रात ४८ वर्ष १६६ दिन रात ४ अंतर्मु. १६६ दिन रात ४८ वर्ष	४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात ४६ दिन रात	१६६ दिन रात १६६ दिन रात १६६ दिन रात ४ अंतर्गु. १६६ दिन रात १६६ दिन रात	४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात ६ मास	१६६ दिन रात २४ मास १६६ दिन रात ४ अंतर्मु. १६६ दिन रात २४ मास

## ६६ तीन विकलेंद्रिय में चउरिंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (८,)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ ।पात द्वार	परिग	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	। ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अः	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ધ્	3	3	*
۹ ۲ ع	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमै जिए ठिकाणै ऊपजै जघन्य उत्कृष्ट	तिण रै	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	<u> १ छेवटो</u>	आंगुल नों असंख भाग	४ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	2
પ્ર પ્	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	जघन्य उत्कृष्ट आयु में ऊपजै । २,५,८ गमै जिल जिल ठिकाणै ऊपजै तिल रै जघन्य आयु में ऊपजै ।		९.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	ं१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनॉ असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	a	२ नियमा	१ कार्या	२
(g E, E,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	ठिकाणै ऊपजै	तिण रै	৭.২.३ ডঘনী	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	४ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ <b>वर्च</b> काय	3

## ७० तीन विकलेंद्रिय में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	: परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	१ अवग	४ गहना द्वार	<b>५</b> संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	६ ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્	Ę	3	પ્	3	3	?
9 2 3	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमै जिण विकाणै ऊपजै जघन्य उत्कृष्ट		৭,২,३ ডঘতী	संख <b>या</b> असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	?
४ ५ ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५,८ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै जधन्य आयु में	तिण रै	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	7
(g c, §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	ठिकाणै ऊपजै	तिण रै	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	१हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच कार्य	ş

२७६

99 संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	<b>%</b> समुद् <b>धात</b> द्वार	धात द्वार वेदना द्वार वेद द्वार आयु		96 आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंघ		नाणत्ता
8	8	٧	6	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
R	8	8	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	६ मास	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	६ मास	o
8,	8	8	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	ਮ੍ਰੰਗ	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य०, अनु०
¥	8	8	३ पहली	3	१ नपुंसक	६ मास	६ मास	भलाभूंडा	६ मास	६ मास	२ आयु, अनुबंध

#### 90 कायसंवेध द्वार

गमा	भ	a l	<b>बे</b> इंद्रिय <b>मॅ</b>	चउरिंद्रिय	तेइंद्रिय में	चउरिद्रिय	चउरिदिय मे	i च <b>उरिद्रिय</b>
	ਯ.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 2 3	२ २ २	संख संख ६	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल २४ मास४८ व <b>र्ष</b>	१ अंतर्मु १ अंतर्मु, १ अंतर्मु १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ४८ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल २४ मास १६६ दिन रात	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १ अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल २४ मास २४ मास
પ્ર ધ્	۲ ۲	संख संख द	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १२ वर्ष	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ४८ दिन रात	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, ९६६ दिन रात	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ६ मास	संखकाल संखकाल संखकाल संखकाल ४ अंतर्मु, २४ मास
(g t:, E,	2 2	2 2	६ मास १ अंतर्मु. ६ मास १ अंतर्मु. ६ मास १२ वर्ष	२४ मास ४८ वर्ष २४ मास ४ अंतर्मु. २४ मास ४८ वर्ष	६ मास १ अंतर्मु. ६ मास १ अंतर्गु. ६ मास ४६ दिन रात	२४ मास १६६ दिन रात २४ मास ४ अंतर्मु. २४ मास १६६ दिन रात	६ मास १ अंतर्मु. ६ मास १ अंतर्मु. ६ मास ६ मास	२४ मास २४ मास २४ मास ४ अंतर्मु. २४ मास २४ मास

99 संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	<del></del>		<sup>९</sup> ८ अध्यवसाय द्वार		६ अद्वार	नाणत्ता
8	8	પ્	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृ <b>ष्ट</b>	
8	8	પ્	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त <b></b>	१ कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ को उपूर्व	٠
. *	Я	ч	३ पहली	5	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग आयु, अध्य०, अनु०
8	8	ч	३ पहली	ર	१ नपुंसक	१ कोडपूर्व	१ को उपूर्व	मलाभूंड <u>ा</u>	<b>१ को उपूर्व</b>	१ कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध

# २० कायसंवेध द्वार

	गाः	π	बेइंद्रियं में अस	त्री ति० पंचे०	तेइंद्रिय में अस	त्री ति० पंचे०	चउरिंद्रिय में अ	सन्नी ति॰ पंचे॰
	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 ? 3	2 2 2	£ G	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष	१ अंतर्मु १ अंतर्मु. १ अंतर्मु १ अंतर्मु. १ अंतर्मु ४६ दिन रात	४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, ६ मास	४ कोडपूर्व २४ मास ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व २४ मास
8 4 ६	* * * *	ŭ <b>ŭ</b> ŭ	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु, १अंतर्मु, १२ वर्ष	४ अंतर्मु, ४८ वर्ष ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, ४६ दिन रात	४ अंतर्मु, १६६ दिन रात ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु, १६६ दिन रात	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ६ मास	४ अंतर्मु, २४ मास ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, २४ मास,
() E,	२ २ २	U U	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मु. ९ कोडपूर्व ९ अंतर्मु. ९ कोडपूर्व ९२ वर्ष	४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ४६ दिन रात	४ कोडपूर्व १९६ दिन रात ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व १९६ दिन रात	१ को डपूर्व १ अंतर्मु. १ को डपूर्व १ अंतर्मु. १ को डपूर्व ६ मास	४ कोडपूर्व २४ मास ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु ४ कोडपूर्व २४ मास

## ७१ तीन विकलेंद्रिय में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (१०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	9 पात द्वार	: परिम	२ ११ण द्वार	३ संघयण द्वार	ा अवगाह	र ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	<sup>८</sup> ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार '	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	ज्ञधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	3	પ્	3	3	?
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१,४,७ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै ि जघन्य उत्कृष्ट	तेण रै	<b>१</b> .२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	۶ 
8 4 8	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	অঘ-থ বংকৃষ্ट आयु में ऊपजै।  २.५.६ गमै जिण जिण  विकाणे ऊपजै तिण रै  जघन्य आयु में ऊपजै।		१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनों असंखभाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	9 काय	3
(9 E. E.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	३,६,६ गमै जिण विकाणै ऊपजै । उत्कृष्ट आयु में	तेण रै	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	ξ	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	ξ,	3	३ भजना	३भजना	3	?

### ७२ तीन विकलेंद्री में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१९)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	प् परिम	≀ ाण द्वार	३ संघयण द्वार		४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इान-अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वर
		जघन्य	उत्कृष्ट	जाघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	?
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९,४,७ गमै जिण ठिकाणै ऊपजै f जघन्य उत्कृष्ट	तेण रै	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	आंगुल नौं असंख भाग	५ सौ घनुष्य	U.F	Ŀ	3	४भजना	३भजना	3	₹ .
४ ५ ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	२.५.८ गमै जिण जिण विकाणै कपजै तिण रै जधन्य आयु में ऊपजै।		9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनों असंख भाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	1
(g == ==	उत्कृष्ट नै ओधिक उत्कृष्ट नै जधन्य उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	ठिकाणै ऊपजै ।	तेण रै	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	ξ	५ सौ घनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३ भजना	3	3

₹७६

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	भर आयु	) ; द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	अनुबंध	१६ १ द्वार	नाणता
8	8	પ્	69	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	. 8	ų	५ पहली	2	3	अंतर्गुहूर्त	१ कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	9 कोडपूर्व	۰
. A	. 8	ų	३ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	<b>અંત</b> ર્મુદૂર્ત	६ अव०, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, समु, आयु, अस्य०, अनुबंध
¥	8	ч	५् पहली	3	3	१ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व	भलामूंडा	१ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व	२ आयु अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

गमा	भ	व	बेइंद्रिय में संख वर्ष	नों सन्नी तियैच	तेइंद्रिय में संख व	र्ष नों सन्नी तियेंच	चउरिद्रिय में संख	वर्ष नों सन्नी तिर्यंच
	ज.	₹.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उल्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
3 3	۲ ۲ ۲	t t	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष	१अंतर्मु १अंतर्मु. १अंतर्मु १अंतर्मु. १अंतर्मु ४६ दिन रात	४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु. ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १ अंतर्मु, ६ मास	४ कोडपूर्व २४ मास ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु ४ कोडपूर्व २४ मास
પ્ર પ્	२ २ २	t	१ अंतर्मुं, १ अंतर्मु. १ अंतर्मुं, १ अंतर्मु. १ अंतर्मुं, १२ वर्ष	४ अंतर्मु, ४८, वर्ष ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	. १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ४६ दिन रात	४ अंतर्मु, १६६ दिन रात ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, १६६ दिन रात	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ६ मास	४ अंतर्मु, २४ मास ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, २४ मास
(9 C. E,	२ २ २	c c	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १२ वर्ष	४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष	१ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व ४१ दिन रात	४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ६ मास	४ कोडपूर्व २४ मास ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व २४ मास

. ११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१७ आयु	)   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार		१६ ध द्वार	नाणत्ता
¥	8	4	(g	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	R	ų	६ केवल वर्जी	3	3	अंतर्गुहूर्त	१ कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	१ कोडपूर्व	o
8	Я	ч	३ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	६ अद०, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, समु, आयु, अन्य०, अनु०
ų	ų	ų	६ केवल वर्जी	₹	3	१ कोडपूर्व	१ को ङपूर्व	भताभूंडा	१ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व	३ अद०, आयु, अनु०

#### २० कायसंवेध द्वार

गमा		भव	बेइंद्रिय में संख द	ार्ष नों सन्नी मनु०	तेइंद्रिय में संख	वर्ष नों सन्नी मनु०	चउरिद्रिय में संख	वर्ष नो सन्नी मनु०
	ज.	ਰ,	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 ? 3	२ २ २	J 15 J	९अंतर्मु, ९अंतर्मु, ९अंतर्मु, ९अंतर्मु, ९अंतर्मु, १२ वर्ष	४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु. ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष	१अंतर्मु १अंतर्मु. १अंतर्मु १अंतर्मु. १अंतर्मु ४६ दिन रात	४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु, ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात	१अंतर्गुं, १अंतर्गुं, १अंतर्गुं, १अंतर्गुं, १अंतर्गुं, ६ मारा	४ कोडपूर्व २४ मारा ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु ४ कोडपूर्व २४ मारा
પ્ર પ્ર	२ २ २	T. T.	१अंतर्गु. १अंतर्गु. १अंतर्गु. १अंतर्गु. १अंतर्गु. १२ वर्ष	४ अंतर्मु, ४८ वर्ष ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु, ४८ वर्ष	१अंतर्गु, १अंतर्गु, १अंतर्गु, १अंतर्गु, १अंतर्गु, ४६ दिन रात	४ अंतर्गु. १६६ दिन रात ४ अंतर्गु. ४ अंतर्गु. ४अंतर्गु. १६६ दिन रात	१ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. ६ मारा	४ अंतर्गु. २४ गारा ४ अंतर्गु. ४ अंतर्गु. ४ अंतर्गु. २४ गारा
(g C ξ	२ २ २	: :	१ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व १२ वर्ष	४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु. ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष	१ कोडपूर्व १ अंतर्गु. १ कोडपूर्व १ अंतर्गु. १ कोडपूर्व ४६ दिन रात	४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु. ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात	१ कोडपूर्व १अंतर्गु, १ कोडपूर्व १अंतर्गु, १ कोडपूर्व ६ मास	४ कोडपूर्व २४ मास ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व २४ मास

### ७३ तीन विकलेंदी में असन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिम	गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाः	४ हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	= ज्ञान-अ	: ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ.	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્દ	દ્દ	3	પ્	3	3	₹
9 2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ गमे जघन्य उत्कृष्ट आयु २ गमे जघन्य आयु		१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	9 काय	?

तिर्वधपंषेंदिय में ३६ ठिकाणां नां ऊपजै — सात नरक७, दस भवनपति १७, पांषस्थावर २२, तीन विकर्लेदिय २५, असन्नी तिर्वंध पंषेदिय २६, सन्नी तिर्वंध पंषेदिय २७, असन्नी मनुष्य २६, सन्नी तिर्वंध पंषेदिय २७, असन्नी मनुष्य २६, सन्नी तिर्वंध पंषेदिय २७, असन्नी मनुष्य २६, स्वंतर ३०, ज्योतिषी ३१, प्रथम आठ देवलोक ३६।

### ७४ तिर्यंच पंचेंद्रिय में प्रथम नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	ी त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	ł	४ गहना द्वार	५् संठाण द्वा <del>र</del>	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अः	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90. उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	દ	3	પ્	3	3	7
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9,2,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल	१हंडक	१ कापोत	3	३ नियगा	३भजना	ą	ş
ઝઝહ	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	५,२,३ ऊपजै	संख या असंख कपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल	१ हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ भजना	ņ	2
(g E,	उत्कृष्ट मैं ओघिक उत्कृष्ट मैं जघन्य उत्कृष्ट मैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्गुहूर्त 9 कोडपूर्व	৭. <b>২.</b> ३ জঘ <b>লী</b>	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल	१ हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2

## ७५ तिर्यंच पंचेंद्रिय में दूसरी नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	। तद्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	1	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	द ज्ञान द्वार	१ योग द्वार	% उपयोग <b>इत</b> र
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę.	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	₹
9 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जधन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१५ ॥ घनुष्य १२ आंगुल	१ हुंडक	9 कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
у Ч ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	৭,২,३ ডঘতী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१५।।धनुष्य १२ आंगुल	१ हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	Э	₹
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	৭,२.३ ডদ্যী	संख या असंख क्रपजै	असंघ्यणी	आंगुल नों असंख भाग	१५।।धनुष्य १२आंगुल	१हंडक	4 कामोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	<b>ર</b>

११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	90 आयु		१८ अध्यवसाय द्वार		१६ नुबंध द्वार	नाणत्ता
8	8	પ્	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
8	R	ų	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	o

#### २० कायसंवेध द्वार

गमा		मव	बेइंद्रिय में व	असन्त्री मनु०	तेइंद्रिय में अ	सत्री मनु०	चलरिंद्रिय में ३	ासत्री मनु०
	জ.	च.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9	2	د	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु,	४ अंतर्मुहूर्त ४८, व <b>र्ष</b>	१अंतर्गु १अंतर्मु.	४ अंतर्मुहूर्त १६६ दिन रात	१अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ अंतर्मुहूर्त २४ मास
۶ 3	٦ ٦	U U	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १२ वर्ष	४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ४८ वर्ष	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ४६ दिन रात	४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त १६६ दिन रात	१अंतर्मुं, १अंतर्मु, १अंतर्मु, ६ मास	४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु ४ अंतर्मुहूर्त २४ मास

१९ विदार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आर्	७ 1 द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुब	ध घ द्वार	नाणत्ता	24	व		२० विध द्वार
8	8	પ્	(g	₹	3	जघन्ध	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ц	४ पहली	ş	१ नपुंराक	१० हजार वर्ष	१ सागर	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	१ सा गर	Q	₹ ₹ ₹	4 5	१०हजार वर्ष १ अंतर्गु, १०हजार वर्ष १ अंतर्गु, १०हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४ सागर ४ कोडपूर्व ४ सागर ४ अंतर्गु. ४ सागर ४ कोडपूर्व
d	R	ų	४ पहली	₹	१ नपुंसक	२० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भता भूंडा	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध	2 2 2	4 11 4	१०हजार वर्ष १ अंतर्मु. १०हजार वर्ष १ अंतर्मु. १०हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्गु ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
	R	ų	४ पहली	?	१ नपुंसक	१ सागर	१ सागर	भला भूंडा	१ सागर	१ सागर	२ आयु, अनुबंध	7 7	- u	१ सागर १ अंतर्गु. १ सागर १ अंतर्गु. १ सागर १ कोडपूर्व	४ सागर ४ कोडपूर्व ४ सागर ४ अंतर्मु. ४ सागर ४ कोडपूर्व

99 11 द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	१ आर्	७ ! द्वार	९८ अध्यवसाय द्वार	भ अनुब	ध द्वार ध द्वार	नाणता	2	ৰ	काय	२० संवेध द्वार
8	8	ધ્	(9	2	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ų	४ पहली	₹	१ मर्पु सक	५ सागर	३ सागर	भला भूंडा	१ सागर	३ सागर	o	२ २ २	ט ט ט	१ सागर १ अंतर्पु. १ सागर १ अंतर्पु. १ सागर १ कोडपूर्व	१२ सागर ४ कोडपूर्व १२ सागर ४ अंतर्गु १२ सागर ४ कोडपूर्व
	8	ų	४ पहली	?	१ नपुंशक	१ सागर	१ शायर	मला भूंडा	१ सागर	१ सागर	२ आयु अनुबंध	۶ ۲ ۲	in the state of	१ सागर १ अंतर्मु. १ सागर १ अंतर्मु. १ सागर १ कोडपूर्व	४ सागर ४ कोडपूर्व ४ सागर ४ अंतर्मु ४ सागर ४ कोडपूर्व
	8	ų	४ पहली	₹	१ नपुंसक	३ सामर	३ सागर	भता भूंडा	३ सागर	३ सागर	२ आयु, अनु०	२ २ २	G G	३ सागर १ अंतर्गु. ३ सागर १ अंतर्गु. ३ सागर १ कोडपूर्व	१२ सागर ४ कोङपूर्व १२ सागर ४ अंतर्गु १२ सागर ४ कोडगुर्व

### ७६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में तीसरी नरक वालुका-प्रभा नां जीव ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	न त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	' i	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअइ	द तान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जधन्य	चत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	દ	٤	3	ધ્	3	3	2
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३१।धनुष्य	१ हुंडक	२ कापोत नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
૪ ૧ ૬	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ को उपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ को उपूर्व	९,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	३१।धनुष्य	१ हुंडक	१ कापोत	₹	३ नियमा	३ नियमा	3	?
(9 E. Ę	उत्कृष्ट मैं ओघिक उत्कृष्ट मैं जघन्य उत्कृष्ट मैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१कोडपूर्व १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख कपजै	असंधयणी	आंगुल नों असंख भाग	३५।धनुष्य	१ हुंडक	१ नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7

## 00 तिर्यंच पंचेंद्रिय में चौथी नरक पंकप्रभा नां जीव ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

मा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	परिग	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ ग्रहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगह
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ.	जधन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	3	પ્	, 3	3	?
	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭,২,३ ক্ত <b>प</b> जै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नॉ असंखभाग	६२।।धनुष्य	१ हुंडक	१नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
8 4 6	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नी असंखभाग	६२।।धनुष्य	१ हुंडक	4 नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
19 5. §	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	৭,২,३ কঘ <b>ল</b>	संख या असंख ऊपजै	असंधयणी	आंगुल नों असंख भाग	६२।।धनुष्य	१ हुंडक	9 नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

## ७६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में पांचवीं नरक धूमप्रभा नां जीव ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

२० द्वार नी संख्या	उपपा	) त द्वार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	1	४  हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্গান–अइ	द शन द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्व
l control	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	?
ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त ९कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१२५् धनुष्य	१ हुंडक	२ कृष्ण नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
जघन्य मैं ओधिक जघन्य मैं जघन्य जघन्य मैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१२५् धनुष्य	१ हुंडक	9 नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
उत्कृष्ट नै ओघिक उत्कृष्ट नै जघन्य उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ को डपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ को डपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१२५् धनुष्य	१ हुंडक	५ कृष्ण	Э	३ नियमा	३ नियमा	3	2

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>9ह</sup> अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	3:	ख	l	२० नंबेघ द्वार
8	8	ч	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ų	४ पहली	?	१ नपुंसक	३ सागर	७ सागर	भला भूंडा	३ सगार	७ सागर	0	₹ ₹ ₹	T. T.	३ सागर १ अंतर्गु. ३ सागर १ अंतर्गु. ३ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ को उपूर्व २८ सागर ४ अंतर्गु २८ सागर ४ को उपूर्व
ß	8	ц	४ पहली	ş	१ नपुंराक	३ सागर	३ सागर	भला भूंडा	३ समार	३ सागर	२ आयु अनुबंध	२ २ २	c c	३ सागर १ अंतर्गु. ३ सागर १ अंतर्गु. ३ सागर १ कोडपूर्व	१२ सागर ४ कोडपूर्व १२ सागर ४ अंतर्गु १२ सागर ४ कोडपूर्व
Я	3	ч	४ पहली	?	२ सर्प्राक	७ सागर	७ सामर	भरना भूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु.अनु०	ې ۲ ۲	14 14 14	७ सागर - १अंतर्मुं. ७ सागर - १अंतर्मु. ७ सागर - १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ अंतर्मु २८ सागर ४ कोडपूर्व

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ १ द्वार	. १८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार ध द्वार	नाणत्ता	¥	ाव <sup>.</sup>	का	२० यसंवेध द्वार
R	8	ų	ly.	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	8	ч	४ पहली	5	१ नपुंसक	७ सागर	१० सा गर	भला भूंडा	७ सागर	१० सागर	o	२ २ २	U G	७ सागर १ अंतर्मु. ७ सागर १ अंतर्मु. ७ सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ अंतर्मु. ४० सागर ४ कोडपूर्व
8	, s	ч	४ पहली	\$	१ नपुंसक	७ सागर	७ सागर	भला भूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु अनुबंध	२ २ २	υ 	७ सागर १ अंतर्मु. ७ सागर १ अंतर्मु. ७ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ अंतर्मु २८ सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ų	४ पहली	3	१ नपुंसक	१० सागर	१० सागर	मला भूंडा	१० सागर	९० सागर	२ आयु, अनु०	२ २ २	4 4 5	१० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ अंतर्मु. १० साग १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ अंतर्मु ४० सागर ४ कोडपूर्व

१९ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	९४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	,	७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	3	व		२० संवेध द्वार
8	8	ધ્	(g	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	8	ų	४ पहली	2	१ नपुंसक	१० सागर	१७ सागर	भला भूंडा	% सागर	१७ सागर	o	~ ~ ~	5. 5.	१० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोउपूर्व ६८ सागर ४ अंतर्मु ६८ सागर ४ कोउपूर्व
	¥	ų	४ पहली	₹	१ नपुंसक	१० सागर	१० सागर	भला भूंडा	% सागर	१० सागर	२ आयु अनुबंध	2 2 2	τ. c.	९० सागर १ अंतर्मु. ९० सागर १ अंतर्मु. ९० सागर १ कोंडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ अंतर्मु ४० सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ų	४ पहली	3	१ नपुंसक	१७ सागर	१७ सागर	भला भूंडा	१७ सागर	१७ सागर	२ आयु, अनु०	* * * *	τ, τ,	९७ सागर १ अंतर्मु. ९७ सागर १ अंतर्मु. ९७ सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोङापूर्व ६८ रागर ४ अंतर्मु ६८ सागर ४ कोङपूर्व

### ७६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में छड्डी नरक तमप्रभा नां जीव ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	व उपपात	ा द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	·	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञ <del>ान</del> -अङ	द तान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वार
		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	ų	3	3	२
۹ ۲ 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	२५० धनुष्य	१ हुंडक	न क्ष्म	3	३ नियमा	३ नियमा	w	२
8 4 5	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ ক্রমতী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	२५० धनुष्य	१हुँडक	<b>ब</b> कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
() E. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्न १ कोडपूर्व	<b>५२.३</b> ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	२५०धनुष्य	१हुंडक	न कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹

### **८० तिर्यंच पंचेंद्रिय में सातवीं नरक तमतमा नां जीव ऊपजै तेहनों यंत्र (७)**

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अः	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	५ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५०० धनुष्य	१ हुंडक	९ महा कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	33	₹
y y t	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्भुहूर्त ९ कोडपूर्व	१२,३ ऊपर	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५०० धनुष्य	१ हुंडक	१ महा कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	3	२
(g E	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	<b>१,२,३</b> ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	५०० धनुष्य	१हुंडक	१ महा कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	Ŋ	3

### ८१ तिर्यंच पंचेंद्रिय में पृथ्वीकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (८)

गमा	२० द्वार नीं संख्या	उपपा	१ त द्वार	परिग	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	i .	४ ाहना द्वार	भू संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अः	६ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	Ч	3	3	₹
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	१.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुर असंख		चंद्र मसूर	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	?
પ્ર ધ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	५२,३ ऊफ्जै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुर असंख		चंद्र मसूर	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	९ काया	?
(9 (4	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9,2,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग		चंद्र मसूर	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	?

भगवती-जोड़ (खण्ड-६)

ጓሩሄ

११ संहा द्वार	९२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणता	24	व		२० वेध द्वार
g	8	પ્	(9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	४ पहली	२	१ नपुंसक	१७ सागर	२२ सागर	भला भूंडा	१७ सागर	२२ सागर	o	२ २ २	E E	१७ सागर १ अंतर्मु. १७ सागर १ अंतर्मु. १७ सागर १ कोडपूर्व	८८ सागर ४ कोडपूर्व ८८ सागर ४ अंतर्मु. ८८ सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ų	४ पहली	7	१ नपुंसक	१७ सागर	9७ सागर	मला भूंडा	९७ सागर	२७ सागर	२ आयु अनुबंध	ર ર ર	25 25	९७ सागर १ अंतर्मु. ९७ सागर १ अंतर्मु. ९७ सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ अंतर्मु ६८ सागर ४ कोडपूर्व
R	8	ų	४ पहली	7	9 नपुंसक	२२ सागर	२२ सागर	मला भूंडा	२२ सागर	२२ सागर	२ आयु, अनु०	२ २ २	U 18 'U	२२ सागर १ अंतर्मुः २२ सागर १ अंतर्मुः २२ सागर १ कोडपूर्व	८८ सागर ४ कोडपूर्व ८८ सागर ४ अंतर्मु ८८ सागर ४ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आय्	७ । द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 <b>६</b> अनुबं	६ च द्वार	नाणता	24	व		२० वेध द्वार
8	8	પ્	· 9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट कात
¥	8	ч	४ पहली	2	१ नपुंसक	२२ सागर	३३ सागर	मला भूंडा	२२ सागर	३३ सागर	0	२ २ २	£	२२ सागर १ अंतर्मु. २२ सागर १ अंतर्मु. २२ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर ३ कोडपूर्व ६६ सागर ३ अंतर्गु. ६६ सागर ३ कोडपूर्व
R	Я	ц	४ पहली	7	9 नपुंसक	२२ सागर	२२ सागर	मता भूंडा	२२ सागर	२२ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	Es Es	२२ सागर १अंतर्मु. २२ सागर १अंतर्मु. २२ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर ३ को डपूर्व ६६ सागर ३ अंतर्मु ६६ सागर ३ को डपूर्व
8	8	ų	४ पहली	?	१ नपुंसक	३३ सागर	३३ सागर	भता भूंडा	३३ सागर	३३ सागर	२ आयु, अनु०	२ २ २.	8 8	३३ सागर १ अंतर्मु ३३ सागर १ अंतर्मु ३३ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर २ कोडपूर्व ६६ सागर २ अंतर्मु ६६ सागर २ कोडपूर्व

नोट: ३३ सागर की स्थिति के उत्कृष्ट २ भव ही हो सकते हैं । ३ भव २२ सागर से होते हैं ।

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	<sup>98</sup> समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	भ अनुब	६ घद्वार	नाणत्ता	v	व		२० विध द्वार
8	8	. પ્	19	- P	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट कात
¥	Å	१ फर्श	३ पहली	?	9 नपुंराक	अंतर्गुहूर्त	२२ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	२२ हजार वर्ष	٥	~ ~ ~	ت ت د	१अंतर्मुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः १कोडपूर्व	८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ८८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	8	9 फर्श	३ पहली	ş	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुह्त	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आयु, अध्य०, अनु०	२ २ २	t, t,	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व
8	8	9 फर्श	३ पहली	?	१ नपुंसक	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	भला भूंडा <sup>-</sup>	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध	<b>२</b> २ २	E 15 U	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ कोडपूर्व	८८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ६८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु ६८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व

### ८२ तिर्यंच पंचेंद्रिय में अपकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	9 त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संधयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–এ:	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वार
	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	э	પ્	3	3	२
۹ ۲ ۲	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुह्र्त 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुर असंख		थिबुक	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	९ काया	ર
8 ધ્ર	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ ডঘ্ডী	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग		थिबुक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	9 काया	₹
(g E. E.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुल नों असंख भाग		थिबुक	४ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	१ काया	7

### ८३ तिर्यंच पंचेंद्रिय में तेउकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	9 त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार		ड हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–এ:	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	. &	ξ	3	ų	3	ş	7
4 5	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेक्टो	आंगुल असंख		सूथीकलाप	३ पहली	१ मिथ्या	ō	२ नियमा	१ काया	2
۶ ۲	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	९२३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों अरांख भाग		सूचीकलाप	३ पहली	१ मिथ्या	O	२ नियमा	१ काया	ş
(9 E. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	৭.२,३ ক্তपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल असंख		सूचीकलाप	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	?

## ८४ तिर्यंच पंचेंद्रिय में वायुकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (११)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	9 त द्वार	परिग	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अ	८ झान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
9	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य औघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	<b>१.२.३</b> ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	९ छेवटो	आंगुर असंख		पताका	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२नियमा	५ काया	3
8 4 &	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्गुहूर्त ९ कोडपूर्व	9.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग		पताका	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	2
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ को उपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ को उपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटी	आंगुल नों असंख भाग		पताका	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	१ काया	3

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	9 द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	घ द्वार	नाणता	ı,	ाव <b>.</b>	l .	२० विध द्वार
8	8	4	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	फर्श	३ पहली	२	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	७ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	७ हजार वर्ष	o	२ २ २	T. T.	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व	२८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	8	फर्श	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्भुहूर्त	४ लेश्या, आयु अच्य०, अनु०	२ २ २	τ τ	१ अंतर्मुः १ अंतर्मुः १ अंतर्मुः १ अंतर्मुः १ अंतर्मुः १ कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व
8	8	फर्श	३ पहली	2	१ नपुंसक	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	मला भूंडा	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	2 2	७ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ७ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ७ हजार वर्ष १ कोडपूर्व	२८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुबं	ध ध द्वार	नाणत्ता	) a	व	1	२० नंबेध द्वार
8	8	પ્	to .	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	१ फर्श	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	ं३ दिन रात	मला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ दिन रात	. 0	२ २ २	4 4 5	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १कोडपूर्व	१२ दिन रात ४ कोडपूर्व १२ दिन रात ४ अंतर्मु. १२ दिन रात ४ कोडपूर्व
A	8	৭ फर्श	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	મૂંહા	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	३ आयु, अध्य० अनुबंध	۲ ۲ ۲	U U	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व
. 8	8	१ फर्श	३ पहली	2	१ नपुंसक	३ दिन रात	३ दिन रात	भला भूंडा	३ दिन रात	३ दिन सत	२ आयु, अनु०	२ २ २	τ. τ.	३ दिन रात १ अंतर्मु. ३ दिन रात १ अंतर्मु. ३ दिन रात १ कोडपूर्व	१२ दिन रात ४ कोडपूर्व १२ दिन रात ४ अंतर्मु १२ दिन रात ४ कोडपूर्व

. ११ संगद्धार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	90 आयु	9 द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	3	<b>া</b> ব	ł	२० संवेध द्वार
8	8	પ્	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
. 8	8	१ फर्श	ं ३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	३ हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	३ हजार वर्ष	o	۲ ۲ ۲	2 2	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोडपूर्व	१२ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. १२ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
- 8	8	9 फर्श	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	३ आयु, अध्य०, अनु० समु. लेवैतो ४	२ २ २	נו	९ अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९ अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९ कोडपूर्व	४अंतर्मु. ४कोडपूर्व ४अंतर्मु. ४अंतर्मु ४अंतर्मु. ४कोडपूर्व
- 8	Я	9 फर्श	३ पहली	7	९ नपुंसक	३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	भला भूंडा	ः ३ हजार वर्ष	३ हजार वर्ष	२ आयु अनु०	२ २ २	τ. τ.	३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ३ हजार वर्ष १ को डपूर्व	१२ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व १२ हजार वर्ष ४ अंतर्मु १२ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व

### ८५ तिर्यंच पंचेंद्रिय में वनस्पतिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपार	9 त द्वार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	} ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अइ	इ.	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ધ્	3	3	?
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंखभाग	१हजार योजन जाझी	नाना प्रकार	४ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	9 काया	<b>ą</b> .
ષ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9,2,3	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	नाना प्रकार	३ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	१ कायी	?
۲	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	9.2.3	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल तो असंख भाग	१ हजार योजन जाझी	नाना प्रकार	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	\$

## ८६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में बेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	परिम	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार		४ इना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अङ्	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ	3	4	3	3	?
9 7 3	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ को उपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ को उपूर्व	९,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नी असंख भाग	9२ योजन	<b>१</b> हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काया	₹ -
٧ ٢	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	9.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	9 छेवटो	आंगुल नों असंखभाग	आंगुल नों असंख भाग	१हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	?
(9 5 5	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	५२३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	१२ योजन	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	٦ .

### ८७ तिर्यंच पंचेंद्रिय में तेइंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	<b>उ</b> पपा	9 त द्वार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ नाद्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअड	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वारे	१० उपयोगद्वार
	, ,	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	सत्कृष्ट	Ę	Ę	3	¥	3	3	- 2
۹ ۲ ३	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जधन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नौ असंख भाग	३ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ व त्र काय	2
8 4 5	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ ভ্ৰুঘণী	संख या असंख ऊपजै	9 छंवटो	आंगुल नों असंखभाग	आंगुल नों असंख भाग	१हंडक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	२ काय	ą
(9 E E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	৭,२,३ জपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	३ गाऊ	<b>१ हुं ड</b> क	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	2

११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आर्	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	६ ांध द्वार	नाणता	3	ाव	Į.	२० तंबेध द्वार
8	8	ધ્	to	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता '	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	Å	१ फर्री	३ पहली	२	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	१० हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	९० हंजार वर्ष	o	₹ ₹ ₹	ι. ι.	१अंतर्गु. १अंतर्गु. १अंतर्गु. १अंतर्गु. १अंतर्गु. १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्गु. ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	Я	१ फर्श	३ पहली	₹	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	५ अव०, लेश्या, आयु अध्य०, अनु०	२ २ २	r.	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व
8	8	9 फर्श	३ पहली	2	१ नपुंसक	९० हजार वर्ष	90 हजार वर्ष	भला भूंडा	९० हजार वर्ष	५० हजार वर्ष	२ आयु. अनु०	२ २ २	13 ti	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्गु ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	<b>७</b>   हार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुब	घ द्वार	नाणत्ता	भ	a		२० संवेध द्वार
8	8	પ્	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	२ फर्श रस	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	१२ वर्ष	मला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	<b>9२</b> वर्ष	o	२ २ २	<b>G G</b>	९अंतर्मु. ९अंतर्मु. १अंतर्मु. ९अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोडपूर्व	४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ अंतर्मु. ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व
*	R	२ फर्श रस	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतगुहूर्त	(१ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य०, अनु०	२ २ २		. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ कोडपूर्व	४अंतर्मुः ४कोडपूर्व ४अंतर्मुः ४अंतर्मु ४अंतर्मुः ४कोडपूर्व
8	я	२ फर्श रस	३ पहली	?	१नपुंसक	9२ वर्ष	१२ वर्ष	भला भूंडा	१२ वर्ष	<b>१२</b> वर्ष	२ आयु, अनु०	२ २ २	C E	१२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष १ अंतर्मु. १२ वर्ष १ कोडपूर्व	४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ अंतर्मु ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ १ द्वार	9८ अध्यवसाय द्वार	9! अनुब	ः ध द्वार	नाणत्ता	r	ख	ŀ	२० संवेध द्वार
8	8	ષ્	(9	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	R	ą	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	४६ दिन रात	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	४६ दिन रात	o	٠ ٠ ٠	ני ני	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्गु, १अंतर्मु, १कोडपूर्व	१६६ दिन रात ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ अंतर्मु. १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व
¥	¥	3	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य., अनु,	٦ ٦ ٦	נננט	१ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ अंतर्मुं, १ कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व
¥	8	3	३ पहली	₹	१ नपुंसक	४६ दिन रात	४६ दिन रात	भला भूंडा	४६ दिन रात	४६ दिन रात	२ आयु, अनु०	۲ ۲ ۲	נו נו ז	४६ दिन रात १ ॲंतर्मु. ४६ दिन रात १ ॲंतर्मु. ४६ दिन रात १ कोडपूर्व	१६६ दिन रात ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ अंतर्मु १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व

### ८८ तिर्यंच पंचेंद्रिय में चउरिंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	: परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह		५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअइ	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	२
۹ २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ জঘতী	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	४ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	ર
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	3
(9 E. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंखभाग	४ गाऊ	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	?

### ८६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	भ गत द्वार	परि	२ माण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	ू ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोगद्वर
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	w,	Ę	3 •	પ્	3	₹	?
9	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त	पत्य नों असंख भाग १ अंतर्मुहूर्त	9, २, ३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२नियमा	२ वच काय	2
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	पत्य नों अरांख भाग	पत्य नों असंख भाग	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ही ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंखभाग	१ हजार योजन	<b>१ हुं</b> डक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	२ वच काय	२
૪૫	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुलनों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	?
(9 E,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त पल्य नों असंख भाग	पत्य नों असंख भाग १ अंतर्मुहूर्त पत्य नों असंख भाग	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै नवेमै गमै पर्याप्ता संख्याता ऊपजै		आंगुल नों असंख भाग	१ हजार योजन	<b>१ हुंड</b> क	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वच काय	3

## ६० तिर्यंच पंचेंद्रिय में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (१७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	। त द्वार	प	२ रिमाण द्वार	३ संघयण द्वार		४ हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	= ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ,	ξ	3	ч	3	3	२
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त	३ पल्य १ अंतर्मुहूर्त	৭,२,३ ক্তদ্ব	संख या असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३भजना	३भजना	ą	7
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पत्य	३ पल्य	৭,२,३ ক্তपजै	संख्याता ही ऊपजै	Ę	आंगुटानों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३ भजना	ą	?
٧ بر ٤	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	५ काय	۶ 
(y Ti	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त ३ पल्य	३ पल्य १ अंतर्मुहूर्त ३ पल्य	५.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै नवमैं गमैं पर्याप्ता संख्याता ऊपजै	ξ	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	3

99 इस द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	९४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ [ द्वार	. ९८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	घ द्वार	नाणता	3	ाव		२० वंबेध द्वार
8	8	ų	9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	R	Я	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	६मास	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	६ मास	o	<del>،</del> ۲	13 13 13 14	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व	२४ मास ४ कोडपूर्व २४ मास ४ अंतर्मु. २४ मास ४ कोडपूर्व
Å	Å	Å	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य०, अनु०	ર ૨ ૨	ι.	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ कोडपूर्व	४ अंतर्मुं. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुं. ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुं. ४ कोडपूर्व
8	Я	8	३ पहली	2	१ नपुंसक	६ मास	६ मास	भलाभूंडा	६ भास	६ मास	२ आयु०, अनुबंध	२ २ २	ر د	६ मास १ अंतर्मु. ६ मास १ अंतर्मु. ६ मास १ कोडपूर्व	२४ मास ४ कोडपूर्व २४ मास ४ अंतर्मु. २४ मास ४ कोडपूर्व

११ ोज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	<sup>9६</sup> वेद द्वार		७ [ द्वार	१८ अध्यवसा <b>य</b> द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणता		भव		२० विध द्वार
8	¥	, ų	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ч	३ पहली	3	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	१ को उपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ कोडपूर्व	0	२ २	τ,	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ कोडपूर्व, ३ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु
8	8	ц	३ पहली	5	१नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	१ को डपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ को डपूर्व	४ पर्याप्त, संख्याता, दृष्टि, ज्ञान	₹	3	१अंतर्मु, पल्य नों असंख भाग	9 कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग
8	8	4	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य., अनु.	२ २ २	U U	९अंतर्मु० १अंतर्मु० ९अंतर्मु० १अंतर्मु० ९अंतर्मु. १ को डपूर्व	४ अंतर्मुहूर्त ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ४ कोडपूर्व
Å	8	ч	३ पहली	2	१ नपुंसक	१ को डपूर्व	१ कोडपूर्व	भला भूंडा	१ को उपूर्व	१ कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंघ	र २ २	د د ۲	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मु 9 कोडपूर्व 9 अंतर्मु 9 कोडपूर्व पत्य में असंख भाग	४ कोडपूर्व ३ कोडपूर्व पत्य नो असंख भाग ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु १ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग

११ ख़ाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	<sup>9६</sup> वेद द्वार	9 आयु	७ [ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	ध द्वार	नाणता	ਮ	व		१० संवेध द्वार
8	8	ધ	19	7	ş	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		अघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ц	५् पहली	₹	3	अंतर्गुहूर्त	१ कोडपूर्व	भलाभूंडा	अंतर्गुहूर्त	१ को उपूर्व	٥	२ २	ς, ς,	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु. १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु.	४ कोडपूर्व ३ कोडपूर्व ३ पल्य ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु.
¥	Х	પ્	५् पहली	ę	3	अंतर्मृहूर्त	१ को डपूर्व	भताभूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ को उपूर्व	२ पर्याप्ता, संख्याता	₹	?	१अंतर्गुः ३ पल्य	१ कोडपूर्व ३ पल्य
Y	8	ų	३ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	६ अव., लेश्या, दृष्टि ज्ञान–अज्ञान, योग, समु., आयु, अध्य, अनु.	۶ ۶ ۶		१ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ अंतर्गु. १ कोडपूर्व	४ अंतर्गु. ४ कोंडपूर्व ४ अंतर्गु. ४ अंतर्गु. ४ अंतर्गु. ४ कोडपूर्व
8	8	પ્	५ पहली	3	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भलाभूंडा	कोडपूर्व	कोड पूर्व	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ر د د	१ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व ३ पत्य	४ कोडपूर्व ३ कोडपूर्व ३ पल्य ४ कोडपूर्व ४ अंतर्गु. १ कोडपूर्व ३ पल्य

## ६१ तिर्यंच पंचेंद्रिय में असन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१८)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	९ त द्वार	परिमा	२ तथ द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ ाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্গান–এং	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ų	3	3	?
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओधिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्मुहूर्त 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	१ छेवटो	आंगुर असंख		१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	, ·

## ६२ तिर्यंच पंचेंद्रिय में संख्याता वर्षनां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	। त द्वारं	२ परिमाण	ा द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	= नान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	তন্দৃষ্ট	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	ξ	3	પ્	3	3	?
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	अंतर्मुहूर्त अंतर्मुहूर्त	३ पल्य अंतर्मुहूर्त	९२.३ ऊपजै	संख्याती ऊपजै	દ	आंगुल नों असंख भाग	५् सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३ भजना	3	7
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पल्य	३ पत्य	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	£	पृथक् आंगुल	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	?
8 ધ્ર	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	अंतर्मुहूर्त अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ को डपूर्व अंतर्मुहूर्त १ को डपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	Ę	३ पहली	५ मिथ्या	0	२ नियमा	9 काय	3
19 5, E	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	अंतर्मुहूर्त अंतर्मुहूर्त ३ पल्य	३ पल्य अंतर्मुहूर्त ३ पल्य	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	५ सौ धनुष्य	५् सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३भजना	3	1

## ६३ तिर्यंच पंचेंद्रिय में असुरकुमार ऊपजै तेहनों यंत्र (२०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	9 ात द्वार	२ परिमा	ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहन	ा द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	द जान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ.	जघन्य	उत्कृष्ट	ધ	Ę	3	પ્	3	3	₹.
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9,2,3 ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचजरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	з	?
૪ પ્	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ জঘলী	संख या असंख ऊपजै	असधयणी	आंगुल नों असंख्यभाग	७ हाथ	9 समध्यउरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	3	2
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समचउरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ नियमा	3	ન

- !	११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	१ आयु	- ७ इहार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>98</sup> अनुब	घ द्वार	नाणत्ता	भ	đ	२ <sup>,</sup> कायस	वंध द्वार
	8	8	ų	9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
	R	8	ц	३ पहली	ş	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	0	२ २ २	τ. τ.	१ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ अंतर्मु, १ कोडपूर्व	४ अंतर्मुं, ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुं, ४ अंतर्मुं, ४ अंतर्मुं, ४ कोडपूर्व

 ŧ	११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१ आयु	७ । द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुबंध	-	नाणत्ता	24	व	1	२० संवेध द्वार
	8	8	ų	. 19	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जाघन्य काल	उत्कृष्ट काल
	¥	8	ų	६ केवल वर्जी	7	3	अंतर्मुहूर्त	१ कोडपूर्व	भला मूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ कोड पूर्व	0	ર ૨	T.	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ कोडपूर्व ३ कोडपूर्व ३ पल्य ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मु,
	R	8	ų	६ केवल वर्जी	7	3	पृथक् मास	१ को डपूर्व	भला भूंडा	पृथक् मास	१ कोड पूर्व	३ अव., आयु., अनु.	₹	3	१ पृथक् मास ३ पल्य	१ कोडपूर्व ३ पत्य
_	Å	8	ų	३ पहली	7	Э	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	६ अव., लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान योग, समु., आयु, अध्य., अनु.	२ २ २	T. E.	९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ कोङपूर्व	४ अंतर्मुहूर्त ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ४ कोडपूर्व
	8	8	Ą	६ केवल वर्जी	ş	3	१ कोडपूर्व	१ को उपूर्व	भला भूंडा	१ को डपूर्व	१ कोडपूर्व	३ अव० आयु., अनुबंध	२ २ २	2 2	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मु. ९ कोडपूर्व ९ अंतर्मु. ९ कोडपूर्व ३ पल्य	४ को खपूर्व ३ को खपूर्व ३ पत्य ४ को खपूर्व ४ अंतर्मु १ को खपूर्व ३ पत्य

र	99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	9 : द्वार	9८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	•	व	२० कायसंवे	
	8	8	પ્	6	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
	¥	8	ų	५ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	५० हजार वर्ष	९ सागर जाझो	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	५ सागर जाझो	o	२ २ २		१० हजार वर्ष १अंतर्मु. १० हजार वर्ष १अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ४ सागर जाझो ४ अंतर्मु. ४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व
	8	8	· <b>ų</b>	५् पहली	2	२ स्त्री पुरुष	९० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	९० हजार वर्ष	२ आय अनुबंध	२ २ २	u u	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
-	8	A	Ч	५ पहली	<b>?</b>	२ स्त्री पुरुष	१ सागर जाझो	१ सागर जाझो	भला भूंडा	९ सागर जाझो	१ सागर जाझो	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ניני	9 सागर जाझो 9 अंतर्मु. 9 सागर जाझो 9 अंतर्मु. 9 सागर जाझो 9 को डपूर्व	४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ४ सागर जाझो ४ अंतर्मु. ४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व

### ६४ तिर्यंच पंचेंद्रिय में नवनिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (२९-२६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपार	१ त द्वार	् परिम	? ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	८ बान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जधन्य	ওন্কৃত্ব	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	ҙ	4	3	3	?
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	५.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समधौरंस	४ पहली	€	३ नियमा	३भजना	ą	2
૪ પ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭,२.३ ভ্ৰমণী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख माग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	ş	?
() E, E,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ ক্তদত্তী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?

### ६५ तिर्यंच पंचेंद्रिय में व्यंतर ऊपजै तेहनों यंत्र (३०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	९ त द्वार	; परिम	र ण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगा	} हना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअइ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वा
	ļ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	£	3	ધ્	3	3	2
9 ? \$	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३भजना	**	2
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्भुहूर्त १ कोड पूर्व	৭,२,३ জয়তী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख्य भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	3	3
(9 E E	उत्कृष्ट नैं ओधिक ब्रत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोड पूर्व	९ कोडपूर्व १अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	৭.২.३ ডঘ <b>্</b>	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समधौरंस	४ पहली	э	३ नियगा	३ नियमा	3	ş

### ६६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में ज्योतिषी ऊपजै तेहनों यंत्र (३१)

ामा २० द्वार	र नी संख्या	9 उपपा	त द्वार	प् परिम	?  ण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगा	१ हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या दार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अइ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
	Ī	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्यः	उत्कृष्ट	Ę.	Ę	3	ધ્	3	3	3
२ ओधिक	ह मैं ओधिक ह मैं जघन्य ह मैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहर्त १ कोडपूर्व	१.२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
् जिघन्य	। नै ओघिक । नै जघन्यं । नै उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	9.2.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	७ हाथ	१ समधीरंस	1 तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
द उत्कृष्ट	ट नैं ओघिक ट नैं जघन्य ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

१९ ज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1	१७ युद्धार	१८ अध्यवसाय द्वार		६ घ द्वार	नाणत्ता	3	ाव	२० कायसं	े वेध द्वार
8	8	ધ્	to	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	X	ų	५् पहली	3	२ स्त्री पुरुष	१० हजार वर्ष	देसूण २ पत्य	भला भूंडा	90 हजार वर्ष	देसूण २ पल्प	o	* * * *	ט ט ט	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ को डपूर्व	८ पत्य देसूण ४ कोडपूर्व ८ पत्य देसूण ४ अंतर्मु. ८ पत्य देसूण ४ कोडपूर्व
8	8	ų	५ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	१० हजार वर्ष	५० हजार वर्ष	भता भूंडा	१० हजार वर्ष	% हजार वर्ष	२ आयु, अनु.			१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	8	ų	५् पहली	3	२ स्त्री पुरुष	देसूण २ पत्य	देसू" २ पत्य	भला भूंडा	देसूण २ पल्य	देसूण २ पल्प	२ आयु. अनु.	۲ ۲ ۲	נו נו נו	२ पत्य देसूण १ अंतर्मु. २ पत्य देसूण १ अंतर्मु. २ पत्य देसूण १ कोडपूर्व	८ पत्य देसूण ४ कोड पूर्व ८ पत्य देसूण ४ अंतर्मु. ८ पत्य देसूण ४ कोडपूर्व

99 ज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	1	१७ युद्धार	<sup>9</sup> ८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुकं	•	नाणत्ता	3:	ाव ।		२० विध द्वार
8	8	<u> </u>	(9	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	R	ų	५् पहली	3	२ स्त्री पुरुष	% हजार वर्ष	१ पल्य	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	१ पल्य	o	٠ ٠ ٠	נג נג	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ को डपूर्व	४ पल्य ४ कोडपूर्व ४ पल्य ४ अंतर्मु, ४ पल्य ४ कोडपूर्व
8	8	ų	५् पहली	3	२ स्त्री पुरुष	१० हजार वर्ष	९० हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार	१० हजार वर्ष	२ आयु, अनु.	२ २ २	r. c.	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	R	ધ	५् पहली	<b>ર</b>	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य	१ पल्य	भला भूंडा	१पल्य	१ पल्य	२ आयु. अनु.	२ २ २	4 11 13	१ पत्य १ अंतर्मु. १ पत्य १ अंतर्मु. १ पत्य १ कोडपूर्व	४ पत्य ४ कोड पूर्व ४ पत्य ४ अंतर्मु, ४ पत्य ४ कोडपूर्व

११ ह्या द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	· `	७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुः	६ संध द्वार	नाणत्ता	<b>2</b> 4	a	ı	२० विध द्वार
8	8	ધ્	Ŋ	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	:	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	ų	५ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	अध पाव पत्य	१पल्य १लाख वर्ष	भला मूंडा	अध पाव पत्य '	१ पत्य १ लाख वर्ष	0		11 13 13	अध पाव पल्य १ अंतर्मु. अध पाव पल्य १ अंतर्मु. अध पाव पल्य १ को खपूर्व	४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ अंतर्मु. ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व
8	Я	ч	५् पहली	3	२ स्त्री पुरुष	अध पाव पत्य	अध पाव पल्य	भला भूंडा	अध पाव पल्य	अधपाव पत्य	२ आयु, अनुदंध	२ २ २	ט ט ט	अध पाव पत्य १ अंतर्मु. अध पाव पत्य १ अंतर्मु. अध पाव पत्य १ को डपूर्व	अर्घ पत्य ४ कोडपूर्व अर्घ पत्य ४ अंतर्मु. अर्घ पत्य ४ कोडपूर्व
8	Я	ų	५् पहली	?	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	भला भूंडा	१ पल्य १ लाख वर्ष	१ पल्य १ लाखा वर्ष	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	: :	१ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु. १ पत्य १ लाख वर्ष १ अंतर्मु. १ पत्य १ लाख वर्ष १ कोडपूर्व	४ पल्य ४ लाख वर्ष ४ कोड पूर्व ४ पल्य ४ लाख वर्ष ४ अंतर्मु. ४ पल्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व

### ६७ तिर्यंच पंचेंद्रिय में पहला सौधर्म देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	9 त द्वार	: परिम	? ाण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहन	ग द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानअइ	द तान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्व
		जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	<u>٤</u>	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	२
9 7 7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 अंतर्गुहूर्त 9 कोडपूर्व	9.2.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	१ तेजु	€	३ नियमा	३ नियमा	3	?
૪ મુ	ज़घन्य नैं ओधिक ज़घन्य नैं ज़घन्य ज़घन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	५.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	. असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समघौरंस	<b>१</b> तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	<b>१</b> तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	ş	?

## ६८ तिर्यंच पंचेंद्रिय में दूसरे ईशान देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	: परिं	२ नाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	•	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान⊢अइ	= ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	चत्कृ <b>ष्ट</b>	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	?
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं औदिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	९ को डपूर्व ९ अंतर्गुहूर्त ९ को डपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१९ हाथ	१ समचौरंस	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?
४ ५ ६	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	१ समचौरंस	<u> १तेजु</u>	. 3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
(9 t. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोड पूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	9 समयौरंस े	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

## ६६ तिर्यंच पंचेंद्रिय में तीसरे सनतकुमार देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिग	२ नाण द्वार	३ संघयण द्वार	ं अवगा	। हना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	द तान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगः
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	<b>उ</b> न्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્	Ę	3	ય	3	3	?
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाथ	१ समचौरंस	<b>१ पद्</b> म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाध	9 समधौरंस	१ पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?
(9 E,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों जसंख भाग	६ हाथ	9 समबौरंस	१ पद्म	3	् ३ नियमा	३ नियमा	3	3

99 संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		१७ युद्धार	9८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुः	६ बंध द्वार	नाणत्ता	14	व		२० संवेध द्वार
8 .	8	ધ્	6	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जण्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
. ¥	¥	<b>.</b>	५ पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य	२ सागर	भला भूंडा	१पल्य	२ सागर	٥	ર ર ર	ט ט ט	१ पत्य १ अंतर्मु. १ पत्य १ अंतर्मु. १ पत्य १ कोडपूर्व	द्र सागर ४ कोडपूर्व द्र सागर ४ अंतर्मु. द्र सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ų	५ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य	१ पत्य	भला भूंडा	१पल्य	१ पत्य	२ आयु, अनुबंध	२ २ २		१ पत्य १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य १ कोडपूर्व	४ पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ अंतर्मु. ४ पत्य ४ कोडपूर्व
Å	8	ų	५ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	२ सागर	२ सागर	भला भूंडा	२ सागर	२ सागर	२ आयु., अनु.	ર ર ર	ט ט ט	२ सागर १ अंतर्मु. २ सागर १ अंतर्मु. २ सागर १ को डपूर्व	८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ अंतर्मु. ८ सागर ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार		७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	६ ांध द्वार	नाणता	¥	ৰ	२ कायर	o विध द्वार
8	8	ય	19	₹	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	५् पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य जाझो	२ सागर जाओ	मला भूंडा	१ पल्य जाझो	२ सागर जाझो	٥	र २ २	t t	९ पत्य जाझो ९ अंतर्मु. ९ पत्य जाझो ९ अंतर्मु. ९ पत्य जाझो ९ कोडपूर्व	द सागर जाझो ४ कोडपूर्व द सागर जाझो ४ अंतर्गु, द सागर जाझो ४ कोडपूर्व जा
Å	¥	ų	५ पहली	?	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य जाझो	१ पत्य जाझो	मला मूंडा	१ घल्य जाझो	९ पल्य जाझो	२ आयु, अनुबंध	२ २ २		१ पत्य जाझो १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य जाझो १ अंतर्मुहूर्त १ पत्य जाझो १ कोडपूर्व	४ पत्य जाझो ४ कोडपूर्व ४ पत्य जाझो ४ अंतर्मु. ४ पत्य जाझो ४ कोडपूर्व
8	R	ч	५् पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	भला मूंडा	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	२ आयु., अनुबंध	२ २ २	ï.	२ सागर जाझो ९ अंतर्मु. २ सागर जाझो ९ अंतर्मु. २ सागर जाझो ९ कोडपूर्व	द सागर जाझो ४ कोडपूर्व ८ सागर जाझो ४ अंतर्मु. ८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व

१९ तंज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	९३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	9५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	1	७ इार	१८ अध्यवसाय द्वार	<b>१</b> ६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	भ	<b>व</b> ∶		२० संवेध द्वार
¥	¥	ષ્	ty	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	<del>उत्कृष्ट</del>		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	¥	ų	५्पहली	₹	<b>१ पुरुष</b>	२सागर	७ सागर	मली भूंडा	२ सागर	७ सागर	0	२ २ २	נונו	२ सागर १अंतर्मु. २ सागर १अंतर्मु. २ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ अंतर्मु. २८ सागर ४ कोडपूर्व
R	R	ų	५् पहली	?	৭ ঘুকৰ	२ सागर	२ सागर	भता मूंडा	२ सागर	२ सागर	२ आयु, अनुबंघ	२ २ २	ט ט ט	२ सागर १अंतर्मु. २ सागर १अंतर्मु. २ सागर १ कोडपूर्व	८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ अंतर्मु. ८ सागर ४ कोडपूर्व
8	R	ų	५् पहली	?	৭ যুক্ত	७ सागर	७ सागर	भला भूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	ט ט ט	७ सागर १अंतर्मु. ७ सागर १अंतर्मु. ७ सागर १कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ अंतर्मु. २८ सागर ४ कोडपूर्व

### 900 तिर्यंच पंचेंद्रिय में चौथे माहेन्द्र देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परि	२ माण द्वार	३ संघयण द्वार	<sup>१</sup> अवग	। गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	द्ध बान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	<b>उ</b> त्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	પ્	3	3	2
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त ९कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाथ	9 समधौरंस	१पद्म	· <b>ą</b>	३ नियमा	३ नियमा	3	. ?
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोड पूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाथ	१ समचौरंस	<b>५ पद्</b> म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त ९ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाथ	१ समघौरंस	१ पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?

### १०१ तिर्यंच पंचेंदिय में पांचवें ब्रह्म देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उर	१ म्पात द्वार	परि	२ माण द्वार	३ संघयण द्वार	् अवग	। हना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अइ	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगङ्ग
	l	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ч	3	3	₹
9 7 3	औधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	<b>९</b> समचौरंस	१पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
૪ પ્ર	जधन्य नैं ओघिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५् हाथ	१ समधौरंस	१पद्म	₹	३ नियमा	३ नियमा	3	3
(9 E	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	१ कोड पूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	१ समयौरंस	१पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	· 3.	<b>?</b>

### १०२ तिर्यंच पंचेंद्रिय में छड्डे लंतक देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	: परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अइ	८ ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્દ	ξ	3	પ્	3	3	?
9 २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्गुहूर्त ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५् हाथ	१ समचौरंस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
у Ч 5	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त ९कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	१ समचौरंस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?
(9 E. §	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	९ कोडपूर्व ९अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	৭.২.३ ক্তদজী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	९ समचौरंस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ । द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>१६</sup> अनुबं	ध द्वार	नाणता	2	व	२० कायसं	े वेध द्वार
8	8	ų	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	R	ų	५ पहली	3	१पुरुष	२ सागर जाझो	७ सागर जाझो	भला भूंडा	२ सागर जाझो	७ सागर जाझो	0	२ २ २	t. t.	२ सागर जाझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो १ कोडपूर्व	२८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो ४ अंतर्मु. २८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व
8	R	ц	५ पहली	ş	१पुरुष	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	भला भूंडा	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ت ت ت	२ सागर जाझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो १ अंतर्मु. २ सागर जाझो १ कोडपूर्व	८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ८ सागर जाझो ४ अंतर्मु. ८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व
R	. 8	ų	५ पहली	7	৭ যুক্তৰ	७ सागर जाझो	७ सागर जाझो	भला भूंडा	७ सागर जाझो	७ सागर जाझो	२ आयु., अनुबंध	२ २ २	ι, ι,	७ सागर जाझो १ अंतर्मु. ७ सागर जाझो १ अंतर्मु. ७ सागर जाझो १ कोडपूर्व	२८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो ४ अंतर्मु, २८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	<sup>१(</sup> आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुब	थं द्वार	नाणत्ता	34	ाव <u> </u>	२ कायर	० विध द्वार
8.	8	ų	l <del>y</del>	₹	3	जघन्यं	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ц	५् पहली	₹	৭ पुरुष	७ सागर	१० सागर	भता भूंडा	७ सागर	१० सागर	o	* * *	t, t,	७ सागर १ अंतर्मुहूर्त ७ सागर १ अंतर्मुहूर्त ७ सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ अंतर्मु. ४० सागर ४ कोडपूर्व
¥	8	ų	५ पहली	7	१ पुरुष	७ सागर	७ सागर -	भला भूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु, अनुबंध	۲ ۲ ۲	5 5 6	७ सागर १ अंतर्भु. • ७ सागर १ अंतर्भु. ७ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ को डपूर्व २८ सागर ४ अंतर्मु २८ सागर ४ को डपूर्व
R	У	ц	५् पहली	ź	१पुरुष	१० सागर	१० सागर	भला भूंडा	१० सागर	१० सागर	२ आयु., अनुबंध	~ ~ ~	ت ت ت	१० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ अंतर्मु. ४० सागर ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात द्वार	9५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	9 इार	9८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	74	ाव -	का	२० यसंवेध द्वार
8	8	પ્	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	ų	ः ५्पहली	2	१ पुरुष	१० सागर	१४ सागर	भला भूंडा	१० सागर	१४ सागर	o	२ २ २	e U	१० सागर १ अंतर्गु. १० सागर १ अंतर्गु. १० सागर १ कोडपूर्व	५६ सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ अंतर्गु. ५६ सागर ४ कोडपूर्व
R	8	ų	५्पहली	2	१ पुरुष	१० सागर	१० सागर	भला भूंडा	१० सागर	१० सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	r r r	१० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ अंतर्मु. १० सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ अंतर्गु. ४० सागर ४ कोडपूर्व
¥	8	4	५्पहली	,?	৭ पुरुष	१४ सागर	१४ सागर	भला भूंडा	१४ सागर	१४ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	u 1 1	१४ सागर १ अंतर्मु. १४ सागर १ अंतर्गु. १४ सागर १ कोडपूर्व	५६ सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ अंतर्मु. ५६ सागर ४ कोडपूर्व

### १०३ तिर्यंच पंचेंद्रिय में सातवें महाशुक्र देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३८)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपार	। न द्वार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अः	द तान द्वार	६. योग द्वार	९० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ	3	પ્	3	- 3	₹
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ জয়তী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	४ हाथ	१ समघौरस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	<b>ર</b>
૪ . પ્ દ	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	९२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौं असंखाभाग	४ हाथ	१ समयौरस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
(9 E. §	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौं असंखभाग	४ हाथ	१ समग्रीरस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	२

### १०४ तिर्यंच पंचेंद्रिय में आठवें सहस्रार देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	9 १ हार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	१ अवगाह	। ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	<b>হ্বা</b> ন–अঃ	द हान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग <i>द्वा</i>
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतृर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौं असंखामाग	४ हाथ	१ समधौरंस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	. 3	₹ .
४ ५ ६	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	१ को डपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ को ड पूर्व	৭.২.३ ডपजै	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	४ हाथ	१ समधौरंस	৭ য়্যুকল	3	३ नियमा	३ नियमा	3	२
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोड पूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोड पूर्व	৭২,३ ভদতী	संख या असंख ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौ असंख भाग	४ हाथ	१ समघौरंस	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	<b>ર</b>

मनुष्य में ४३ ठिकाणां नां ऊपजै--छह नारकी ६, दस भवनपति १६, पृथ्वीकाय १७, अपकाय १८, वनस्पतिकाय १६, तीन विकलेंद्रिय २२, असन्नी तियैचपंचेद्रिय २३, संख्याता वर्ष नां सन्नी तियैच पंचेद्रिय २४, असन्नी मनुष्य २५, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २६, व्यंतर २७, ज्योतिषी २८, बारह देवलोक ४०, नौ ग्रैवेयक ४१, चार अनुत्तर विमान ४२, सर्वार्थसिद्ध ४३।

#### १०५ मनुष्य में प्रथम नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपार	) न टार	र परिमा	ग द्वार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	্ব প্ৰত জ	नर है०	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान3	ू ग्रान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग
	(- a.c. // c.c.	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę.	3	ų	3	3	3
۹ २ ३	ओघिक नैं ओंघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक मास	१ कोडपूर्व १ पृथक मास १ कोडपूर्व	৭.২.३ জঘ্ <b>তী</b>	संख्याता कपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७।।धनुष्य ६आंगुल	आंगुल नों संख्याता भाग	१५। । धनु १२ आंगुल	१ हुंडक	१ कापोत	3.	३ नियमा	३भजना	3	7
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक मास	१ कोडपूर्व १ पृथक मास १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७।।घनुष्य ६आंगुल	आंगुल नॉ संख्याता भाग	१५।।धनु १२ आंगुल	9 हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३भजना	3	?
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक मास	१ कोडपूर्व १ पृथक मास १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७।।धनुष्य ६आंगुल	आंगुल नों संख्याता भाग	१५ । । धनु १२ आंगुल	१ हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु		१८. अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणता	,	<b>ा</b> व	ं का	२० वसंवेध द्वार
8	8	ų	``0	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	- जधन्य काल	ডক্চেষ্ট কাল
8	8	ų	५् पहली	2	१ पुरुष	१४ सागर	१७ सागर	मला भूंडा	१४ सागर	९७ सागर	0	२ २ २	E E	१४ सागर १ अंतर्मु. १४ सागर १ अंतर्मु. १४ सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ अंतर्मु. ६८ सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ч	५ पहली	2	৭ पुरुष	१४ सागर	१४ सागर	मला भूंडा	१४ सागर	१४ सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	E E	१४ सागर १ अंतर्मु. १४ सागर १ अंतर्मु. १४ सागर १ कोडपूर्व	पृद्द सागर ४ कोडपूर्व पृद्द सागर ४ अंतर्मु. पृद्द सागर ४ कोडपूर्व
R	R	ų	५ पहली	2	१पुरुष	१७ सागर	% सागर	मला भूंडा	१७ सागर	% सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	E	96 सागर 9 अंतर्मु. 96 सागर 9 अंतर्मु. 96 सागर 9 कोडपूर्व	६८ सागर ४ को उपूर्व ६८ सागर ४ अंतर्मु, ६८ सागर ४ को उपूर्व

११ क्रा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	५५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	9 द्वार	<sup>9</sup> ट अध्यवसाय द्वार	५६ अनुबं	ध द्वार	नाणसा	Ŧ	व	কা	२० यसंवेध द्वार
8	8	પ્	19	₹ 7	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	५ पहली	7	৭ দুকৰ	% सागर	<sub>फ</sub> सागर	मला भूंडा	१७ सागर	<b>५</b> ८ सागर	0	२ २ २	E 5.	१७ सागर १ अंतर्मु. १७ सागर १ अंतर्मु. १७ सागर १ कोडपूर्व	७२ सागर ४ कोडपूर्व ७२ सागर ४ अंतर्मु. ७२ सागर ४ कोडपूर्व
¥ .	8	ų	५् पहली	२	৭ দুকৰ	१७ सागर	१७ सागर	मला भूंडा	१७ सागर	१७ सागर	२ आयु, अनुबंध	? ? ?	t. t.	96 सागर 9 अंतर्मु. 96 सागर 9 अंतर्मु. 96 सागर 9 कोडपूर्व	६८ सागर ४ को डपूर्व ६८ सागर ४ अंतर्मु. ६८ सागर ४ को डपूर्व
8	8	ų	५् पहली	, 2	৭ খুকৰ	9द सागर	<sub>१८</sub> सागर	भला भूंडा	१८ सागर	<sub>९८</sub> सागर	२ आयु., अनुबंध	२ २ २	τ. τ.	१८ सागर १ अंतर्मु. १८ सागर १ अंतर्मु. १८ सागर १ कोडपूर्व	७२ सागर ४ कोडपूर्व ७२ सागर ४ अंतर्मु. ७२ सागर ४ कोडपूर्व

१९ विज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	1	ব	२ कायसं	० वेध द्वार
8	8	પ્	9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	४ पहली	2	१ नपुंसक	१० हजार वर्ष	<b>५ सा</b> गर	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	१ सागर	o	२ २ २	: :	१० हजार वर्ष १ पृथक मास १० हजार वर्ष १ पृथक मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४ सागर ४ कोडपूर्व ४ सागर ४ पृथक मास ४ सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ч	४ पहली	ર	१ नपुंसक	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार	१० हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध	२ २ २	13 13	१० हजार वर्ष १ पृथक मास १० हजार वर्ष १ पृथक मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ पृथक मास ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
¥	8	ч	४ पहली	2	१ नपुंसक	१ सागर	१ सागर	भला भूंडा	१ सागर	१सागर	२ आयु अनुबंध	२ २ २	t. t.	९ सागर ९ पृथक मास ९ सागर ९ पृथक मास ९ सागर ९ कोडपूर्व	४ सागर ४ कोडपूर्व ४ सागर ४ पृथक मास ४ सागर ४ कोडपूर्व

### १०६ मनुष्य में दूजी नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

			9	7		3			8		પ્	Ę	(9		ς.	Ę	90
गमा	२० द्वार नीं संख्या	उपपा	त द्वार	परिमा	ण द्वार	संघयण द्वार	अव० भव	घारणी	अव० ভ	तर वै०	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान3	अज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग क्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	ξ	3	ધ્	3	3	₹
२	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नै जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक वर्ष १ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१५ । । धनु. १२ आंगुल	आंगुल नों संख्याता भाग	३१। धनुष्य	9 हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
ų	जघन्य <b>नै</b> जघन्य	१ पृथक वर्ष १ पृथक वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक वर्ष १ कोडपूर्व	9,2,3 ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१५ । । घनु. १२ आंगुल	आंगुल नों संख्याता भाग	३१। घनुष्य	१ हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
۲,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक वर्ष १ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१५॥ घनु. १२ आंगुल	आंगुल नों संख्याता भाग	३१ ! धनुष्य	१ हुंडक	१ कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	, २

### १०७ मनुष्य में तीसरी नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

१ २० द्वार नी संख्या	उपप	9 गत द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	<b>अव० भव</b>	धारणी	ও প্রব০ বন	र वै०	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-अ	द इज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्वार
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघ <b>न्य</b>	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	1
ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	9 कोडपूर्व 9 पृथक् वर्ष 9 कोडपूर्व	৭,२,३ ডাবজী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	३१।धनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	६२।। धनुष्य	9 हुंडक	२ नील कापोत	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक् वर्ष १ को डपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	३१।घनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	६२।। धनुष्य	१ हुंडक	१ कापोत	3 .	३ नियमा	३ नियमा	3	7
उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	३१।धनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	६२।। धनुष्य	9 हुंडक	१नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

## 90८ मनुष्य में चौथी नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या		१ उपपात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अव० भ	१ वधारणी	अव० उ	तर वै०	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–ः	द अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपकोग द्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	3
9 3	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	९ कोडपूर्व ९ पृथक् वर्ष ९ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	६२।। धनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	१२५् धनुष्य	१ हुंडक	१नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹.
¥ 4 8	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	९ कोडपूर्व ९ पृथक् वर्ष ९ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख माग	६२।। धनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	१२५् धनुष्य	१ हुंडक	१ नील	3	३ नियमा	३ नियमा	₹	2
(9 E.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	९ कोडपूर्व ९ पृथक् वर्ष ९ कोडपूर्व	৭.২.३ ডদতী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	६२।। घनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	<b>१२५् घनुष्य</b>	9 हुं डक	9 नील	Э	३ नियमा	३ नियमा	3	. 3

99 ज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9( आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	14	ব	काय	२० संवेध द्वार
8	8	ધ્	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उ <del>त्कृष</del> ्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	8 ~	ų	४ पहली	2	१ नपुंसक	१ सागर	३ सागर	भला मूंडा	१ सागर	३ सागर	o	२ २ २		१ सागर १ पृथक वर्ष १ सागर १ पृथक वर्ष १ सागर १ कोडपूर्व	१२ सागर ४ कोडपूर्व १२ सागर ४ पृथक वर्ष १२ सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ų	४ पहली	2	१ नपुंसक	१ सागर	१ सागर	मला भूंडा	१ सागर	१सागर	२ आयु अनुबंध	२ २ २	ς ς	9 सागर 9 पृथक वर्ष 9 सागर 9 पृथक वर्ष 9 सागर 9 कोडपूर्व	४ सागर ४ कोडपूर्व ४ सागर ४ पृथक वर्ष ४ सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ч	४ पहली	2	१ नपुंसक	३ सागर	३ सागर	मला भूडा	३ सागर	३ सागर	२ आयु अनुबंध	२ २ २		३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ कोडपूर्व	१२ सागर ४ कोडपूर्व १२ सागर ४ मृथक वर्ष १२ सागर ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	<sup>9५्</sup> वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	भ	a		० विध द्वार
8	Я	4	<b>(9</b>	. 3	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
Я	8	ч	४ पहली	?	१ नपुंसक	३ सागर	७ सागर	मला भूंडा	३ सागर	७ सागर	0	۲ ۲ ۲	<b>.</b>	३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ पृथक्वर्ष २८ सागर ४ कोडपूर्व
Å	A	ų	४ पहली	7	१ नपुंसक	३ सागर	३ सागर	मला मूंडा	३ सागर	३ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	τ τ	३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ पृथक वर्ष ३ सागर १ कोडपूर्व	१२ सागर ४ कोडपूर्व १२ सागर ४ पृथक्वर्ष १२ सागर ४ कोडपूर्व
8	¥	ч	४ पहली	3	१ नपुंसक	७ सागर	७ सागर	भला मूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु, अनुबंध	- २ २	t,	७ सागर १ पृथक् वर्ष ७ सागर १ पृथक् वर्ष ७ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ पृथक् वर्ष २८ सागर ४ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता	भ	व	२० कायसंवे	
ý	8	ų	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	R	પ્	४ पहली	2	१नपुंसक	७ सागर	% सागर	मला भूडा	७ सागर	१० सागर	0	۲ ۲ ۲	מ ט ט	७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ पृथक्वर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व
8	8	ч	४ पहली	2	१नपुंसक	७ सागर	७ सागर	भला भूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु. अनुबंध	٠ ٠ ٢	ت ت	७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ पृथक्वर्ष २८ सागर ४ कोडपूर्व
R	Å	ų	y <b>पहली</b>	٦ ,	9 नपुंसक	१० सागर	५० सागर	भला भूडा	१० सागर	१० सागर	२ आयु, अनुबंध	٠ २ २	C C	१० सागर १ पृथक् वर्ष १० सागर १ पृथक् वर्ष १० सागर १ को डपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ पृथक् वर्ष ४० सागर ४ कोडपूर्व

### १०६ मनुष्य में पांचवीं नरक नां नेरइया ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

			9	२		3			8		ų	. ६	G		5	Ę	90
गमा	२० द्वार नी संख्वा	उ	पपात द्वार	परिमाण	द्वार	संघयण द्वार	अव० भव	वधारणी	अव० उर	ार वै०	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान-3	क्षान द्वार	योग द्वार	उपयोग
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	7
7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭.২.३ ক্ত <b>ণ</b> জ	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	१२५ धनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	२५० धनुष्य	१हुंडक	२ कृष्म नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
¥ 4 €	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक् वर्ष १ कोळपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	१२५् घनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	२५० घनुष्य	१ हुंडक	१ नील	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?
	उत्कृष्ट नैं ओषिक उत्कृष्ट नैं जघन्व उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	९ कोडपूर्व ९ पृथक् वर्ष ९ कोडपूर्व	৭,२,३ জঘ <b>া</b>	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	<b>१२५</b> घनु <del>ष्य</del>	आंगुल नॉ संख्याता भाग	२५० धनुष्य	१ हुंडक	৭ কৃষ্ণা	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7

## ११० मनुष्य में छद्वी नरक नां नेरइया ऊपजै तैहनों यंत्र (६)

			٩	२		3			8		ų	Ę	to		ς.	Ę	<b>—</b>
गभा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	त द्वार	परिमाप	ग द्वार	संघयण द्वार	अव० भर	म्धारणी	- अव० उ	तर वै०	संठाण द्वार	लेश्या द्वार्	दृष्टि द्वार	ज्ञान3	श्जान द्वार	योग द्वार	उपयोग
		जघन्य	ं उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	- 1
२		१पृथक् वर्ष १पृथक् वर्ष १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭.২.३ কণ্ডী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख माग	२५० धनुष्य	आंगुल नों संख्याता भाग	५०० घनुष्य	१ हुंडक	५ कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	3	1
ų	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭.২.३ জয়তী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	२५० घनुष्य	आंगुल नॉ संख्याता माग	५०० घनुष्य	१हंडक	१ कृष्ण	3	३ नियमा	३नियमा	3	,
۲,	उत्कृष्ट नै ओधिक उत्कृष्ट नै जघन्य उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख्माग	२५० घनुष्य	आंगुल नॉं संख्याता भाग	५०० घनुष्य	१ हंडक	१ कृष्ण	3	३ नियमा	३ नियमा	э	7

## १९९ मनुष्य में पृथ्वीकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (७)

गमा २	० द्वार नीं संख्या	उ	१ पपात द्वार	परिः	२ गण द्वार	३ संघयण द्वार	ঞাক	४ गाहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान-अः	हान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
3	भनै तेहनां नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	रत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	7
₹ 3	भोधिक नैं ओधिक भोधिक नैं जघन्य भोधिक नैं उत्कृष्ट	१ १ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९.२.३ कपजै	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	,	लिनों खभाग	मसूर चद	४ पहली	१ मिध्या	0	२ नियमा	९ काया	7
4	मधन्य नैं ओधिक मधन्य नैं जधन्य मधन्य नैं उत्कृष्ट	९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो		ांगुल नों पंखा भाग	मसूर चंद्र	३ पहली	९ मिथ्या	0	२ नियमा	९ काया	₹ .
. 7	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	৭.২.३ ডদ <b>ী</b>	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै			ांगुल नों संख्य भाग	मसूर चंद्र	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काया	7

99 : संज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घातद्वार	% वैदनाद्वार	9६ वेदद्वार		७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>9:</sup> अनुब	ध ध द्वार	नाणस्य	<b>1</b> 47	<del>د</del>	3	२० वेध द्वार
8	8	પ્		₹ -	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	ų	४ पहली	3	१ नपुंसक	५० सागर	<b>%व</b> ःसानः	मला भूंडा	१० सागर	१७ साग्र	c	२ २ २	E E	५० सागर १ पृथक वर्ष ९० सागर १ पृथक वर्ष ५० भागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ पृथक्वर्व ६८ सागर ४ कोडपूर्व
. 8	8	ч	४ पहली	s	१ नधुंपरक	<b>२० सा</b> गर	% सागर	भता भृंडा	१० सागर	३० सागर	२ अस्युः असुन्नेष	5 5 5	G G	१० सागर १ पृथक वर्ष १० सागर १ पृथक वर्ष १० सागर १ कोडधूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ पृथक्वर्ष ४० सागर ४ कोडपूर्व
8	. 8	ų	४ पहली	```	१नपुंसक	भड़ सामग्	अक्ष स्त्राप्तर	मलः भूंडा	१७ सागः	% सागर	२ आयु, अनुबंध	ર ર ૨	ت. د. د	२७ सागर १ पृथक् वर्ष २७ सागर १ पृथक् वर्ष २७ सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ पृथक् वर्ष ६८ सागर ४ कोडपूर्व

१९ सं <b>ज्ञा</b> द्वार	१२ कवाय हार	9३ इन्द्रिय द्वार	५४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		e   द्वार	१८ अस्थवसाय द्वार	9 अनु•	ध द्वार	नाणला	भ	व	२ कायस	
8	. 8	પ	19	7	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	A	ч	४ पहली	ą	१ नषुं सक	%। सागर	२२ सागर	भरता भूंडा	<b>%</b> सागर	२२ सागर	o	7 7 7	נינים	९७ सागर १ गृथक वर्ष ९७ सागर १ गृथक वर्ष ९७ सागर १ कोडपूर्व	८८ सागर ४ कोडपूर्व ८८ सागर ४ पृथक्वर्व ८८ सागर ४ कोडपूर्व
y	8	ų	४ पहली	ą	१ नपुंसक	१७ समर	१७ सागर	भता भूंडा	% सागर	% सागर	२ आयु. अनुबंध	₹ 7 2	<i>3</i> 13 13	१७ सागर १ पृथक वर्ष १७ सागर १ पृथक वर्ष १७ सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ पृथक् वर्ष ६८ सागर ४ कोडपूर्व
8	Я	ч	४ पहली	3	१ नषुंसक	२२ सागर	२२ सागर	मला भूंडा	२२ सागर	२२ सागर	२ आयु, अनुबंध	ર ૨ ૨	7. 7. 7.	२२ सागर १ पृथक् वर्ष २२ सागर १ पृथक् वर्ष २२ सागर १ को डपूर्व	८८ सागर ४ कोडपूर्व ८८ सागर ४ पृथक् वर्व ८८ सागर ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	9२ कवाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धातद्वार	१५ वेदनाद्वार	9६ वेदद्वार	आयु	-	९:: अध्यक्षाय द्वार	લ અનુ <i>ર</i>	६ ोघ द्वार	नाणता	भ	3	२० कायसंके	
8	8	4	L9	<b>2</b>	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	<b>उ</b> त्कृ <b>ष्ट</b>	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	१कर्र	३ पहली	₹	१ नपुंसक	अंतर्मुङ्र्त	२२ <b>ह</b> जार वर्ष	भला मूंडा	अंतर्मृहूर्त	२२ हजार वर्ष	0	र २ २	6. () ()	९ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्भु, ९ अंतर्मुहूर्त ९ अंतर्भु, १ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	८८ ष्ठजार वर्ष ४ कोडपूर्व ६८ डजार वर्ष ४ जेतर्नु ६८ इजार वर्ष ४ कोडपूर्व
R	8	৭ দ্বৰ্য	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्गृहर्त	अंतर्नुड्त	मलामूंख भूंख भन्ध	अंतर्मुहूर्त	अतर्गुहूर्त	४ लेश्या, आयु अध्य०, अनु०	<b>२</b> २ २	33 E G	९ अंतर्मु, १ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ अंतर्मु, ९ कोडपूर्व	४ अंतर्मुः ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुः ४ अंतर्मुः ४ अंतर्मुः ४ कोडपूर्व
· W	8	৭ চর্স	३ पहली	₹	१ नपुंत्रक	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	भला भूडा	२२ हजार वर्ष	२२ हजार वर्ष	२ आयु अनुबंध	२ ₹ २	r, r,	२२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ अंतर्मु. २२ हजार वर्ष १ कोकपूर्व	दद <b>हजार वर्ष ४ को उपूर्व</b> दद <b>हजार वर्ष ४</b> अंतर्मु दद <b>हजार वर्ष ४</b> को उपूर्व

मा ३०५

### ११२ मनुष्य में अपकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (८)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	२ परिमा	ण द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	४ गहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अइ	तान द्वार	् योग द्वार	90 उपयोग द्व
	अनै तेहनां नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3 .	?
9 2 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	<b>१ अंतर्मुहूर्त</b>	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो		लिनो खभाग	थिबुक	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	९ का य	?
8 4	ं जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्गुहूर्त ९ कोडपूर्व	৭,২,३ ক্ত <b>प</b> जै	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो		गंगुल नो संख भाग	थिबुक	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	?
و د ڊ	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	9 छेवटो	I.	गंगुल नो नसंख भाग	থিৰুক	४ पहली	९ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काय	7

## १९३ मनुष्य में वनस्पतिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	ख	१ पपात द्वार	परिम	२ ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अव	४ गाहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इ इान-अड़	तान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	7
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जंघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ को डपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭,২,३ ক্তদত্তী	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	१ हजार योजन जाझी	नाना प्रकार	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	9 काय	1
8 4	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	९अंतर्मुहूर्त ९अंतर्मुहूर्त ९कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपज	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंखभाग	आंगुल नों असंख भाग	नाना प्रकार	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	9 काय	\$
[9 [5	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	૧.૨.३ ऊपज	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नो असंख भाग	१ हजार योजन जाझी	नाना प्रकार	४ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	९ काय	?

## ११४ मनुष्य में बेइंदिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	। त द्वार	् परिमा	ण द्वार	३ संघयण द्वार	्र अवग	४ ग्रहना द्वार	५् सठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अर	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	५ उपयो
		जघन्य	उत्कृ <b>ष्ट</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્દ	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	<u>                                     </u>
9 ? 3	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ জঘজী	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नौं असंख भाग	१२ योजन	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ व <b>च</b> काय	;
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ ডঘনী	अरांख्याता ऊपजै अरांख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	੧ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	१ हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काय	:
(9 T. E	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१अंतर्गुहूर्त १अंतर्गुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	१२ योजन	१ हुंडक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२वच काय	:

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	<b>१४</b> समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	9 द्वार	<sup>9</sup> ८ अध्यवसाय द्वार	96 अनु <b>ब</b>	घ द्वार	नाणत्ता	भव	ī	२ कायसं	० वेध द्वार
8	8	પ્	ly ly	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	1	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	g	৭ ফর্ম	३ पहली	ર	१ नपुंसक	अंतर्मु <b>हूर्त</b>	७ हजार वर्ष	- भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	७ हजार वर्ष	o	२ २ २	ניניני	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गु. १ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गु. १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	२८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु २८ हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	8	१ फर्ज	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मु <b>हूर्त</b>	अंतर्मुहूर्त	भलाभूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	४ लेश्या, आयु, अध्य०, अनु०	२ २ २	U U U	९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९अंतर्मु. ९कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ को डपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु. ४ को डपूर्व
8	8	१ फर्श	३ पहली	3	१ नपुंसक	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	भला भूंडा	७ हजार वर्ष	७ हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध	२ २ २		७ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ७ हजार वर्ष १ अंतर्मु. ७ हजार वर्ष १ कोडपूर्व	२८ हजार वर्ष ४ को डपूर्व २८ हजार वर्ष ४ अंतर्मु. २८ हजार वर्ष ४ को डपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७   द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	l	१६ घं द्वार	नाणत्ता	भ	đ	२० कायसंदे		
8	8	ų	ty	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	
R	8	9 फर्श	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	% हजार वर्ष	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	% हजार व <b>र्ष</b>	o	ર ૨ ૨	2 2 2	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु. १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मु. १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व	
8	R	9 फर्श	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मु <b>हूर्त</b>	अंतर्गुहूर्त	भलाभूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	५ अव०, लेश्या, आयु, अध्य०, अनु०	२ २ २	ט ט ט	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोडपूर्व	४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु. ४ कोडपूर्व	
8	x	9 फर्श	३ पहली	?	१ नपुंसक	१० हजार वर्ष	90 हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	£ 11 13	१० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ अंतर्मु. १० हजार वर्ष १ को डपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ अंतर्मु. ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व	

११ हेंब्रा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	् आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुब	ध द्वार ध द्वार	नाणत्ता	भ	व	२० कायसं	े वेध द्वार
8	8	પ	(9	२	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	ाघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	R	3	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	<b>१२ वर्ष</b>	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	१२ वर्ष	o	२ २ २	n n	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु. १अंतर्मुहूर्त १अंतर्मु. १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ अंतर्मु ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व
¥	8	7	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भलामूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मु <b>हूर्त</b>	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य., अनु	२ २ २	נו ט ט	१अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मुं, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १कोडपूर्व	४अंतर्मु, ४कोडपू ४अंतर्मु, ४अंतर्मु, ४अंतर्मु, ४कोडपूर
¥	8	ź.	३ पहली	ą	१ नपुंसक	१२ वर्ष	<b>५२ वर्ष</b>	भला भूंडा	१२ वर्ष	<b>१२ वर्ष</b>	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ט ט ט	१२ वर्ष १ अंतर्गु. १२ वर्ष १ अंतर्गु. १२ वर्ष १ कोडपूर्व	४८ वर्ष ४ कोडपूर्व ४८ वर्ष ४ अंतर्मु. ४८ वर्ष ४ कोडपूर्व

### १९५ मनुष्य में तेइंदिय ऊपजै तेहनों यंत्र (११)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	। त द्वार	परिग	?  थ हार	३ संघयण द्वार	अयुग	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	८ ज्ञान-अ	इति द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग द्वार
		. जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ	ξ	3	4	3	3	२
7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१अंतर्मुह्तं १अंतर्मुह्तं १कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	९२३ <b>ल</b> पजै	असंख्याता ऊगजै असंख्याता ऊगजै सख्याता ऊपजै	੧ ਲੇਵਨੀ	आंगुल नों असंख भाग	३ गाऊ	<b>१ हुं</b> इक	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वश्य काय	3
-	जघन्य नै ओविक जघन्य नै जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त १कोडपूर्व	१ कोखपूर्व १ अंतर्मुहुर्त १ कोखपूर्व	९.२.३ ऊपजै	असंख्याता क्यजै असंख्याता क्यजै संख्याता क्रपजै	9 छेवटो	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल गाँ असंख भाग	9 हुंडक	३ पहली	९ मिथ्या	٠	२ नियमा	५ काय	<b>२</b>
	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	९अंशर्मुहृतं ९अंशर्मुहृतं ९काडपूर्व	२ कोडपूर्व १ अंतर्गुहुर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ ক্যুত্তী	असंख्याता फपजै असंख्याता फपजै शंख्याता फपजै	੧ ਭੇਸਟੀ	अंगुल में असंख भाग	3 19735	<i>१ हुंडवः</i>	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्श	३ नियमा	२निदमा	२ <b>ব</b> ঘ ফায	3

१९६ मनुष्य में चउरिंदिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१२)

ामा २ <b>० द्वार</b> नी संख्या	বদায়	१ त हार	परिभ	२ १ण द्वार	३ संघराण द्वार	अवगार	४ भाइए	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ছাল–জ	हान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वार
	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उस्कृष्ट	Ę	खधन्य	ख्तकृ <b>ष</b> ः	٤	Ę	3	પ્	3	3	7
ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जधन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गृहर्त १ अंतर्गृहर्त १ कांडपूर्ध	१ कोङपूर्व १ अंतर्गुडूर्त १ कोत्सपूर्व	<b>५,२,३</b> स्हयस्त्रै	अशंब्याता कपनै अनंब्याता कपनै संस्थाता ऊपनै	१ छेवती	आंगुल नों अत्तंख भाग	४गऊ	<b>१ हुंड</b> क	३ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२नियमा	२ नियमः	२ व <b>ध</b> <b>व</b> शय	3
४ जघन्य नै ओघिक ५ जघन्य नै जघन्य ६ जधन्य नै उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहर्त १ अंतर्गुहर्त १ कोडपूर्व	१ को उपूर्व १ आंतर्मुहूर्त १ को उपूर्व	9,7.3 छापानी	अन्तरकाता छपजे असंख्याता छपजे संख्याता छपजे	9 छेवटो	आंगुल मां अमंख भाग	आं गुल नों असंख्य भाग	१हुँडक	३ पहली	१ मिध्या	o	२ नियमा	९ कर य	?
७ उत्कृष्ट मैं ओपिक १. उत्कृष्ट मैं जघन्य १. उत्कृष्ट मैं उत्कृष्ट	<b>१</b> अंतर्मुहूर्त	१ को उपूर्व १ अंतर्गृहर्त १ को उपूर्व	৭,২.১ জ্যাতী	असंख्याता आपरै अमंख्याता ऊपर्ज संख्याता ऊपजै	१ छेवटी	आंगुल <i>ी</i> असंख्याभूग	इक्क	<u> १ हुं</u> डक	३ पहली	२ सम्यक् मिश्या	२ नियमा	२ निवमा	२ <b>वध</b> दत्तव	?

## १९७ मनुष्य में असन्ती तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१३)

TFT	२० द्वार नी संख्या	उपवात	१   दार	ः परिमा	१ १प हार	\$ संध्यम द्वार	अवगः <b>श</b>		्र् संदाग द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ः झान–अ	ज्ञान द्वार	र योग द्वार	स्तपर्य
		ापन्य	उत्कृष्ट	अधन्य	उत्कृष्ट	Ę	ज्ञघ-य	उत्पृष्ट	Ę	Ę	3	ų	3	3	<u> </u>
	ओघिक नै ओणिक ओघिक नै जधन्य	१ अंतर्गुहर्त १ अंतर्गुहर्त	पत्य मों अलंख गाग प अंतर्भुंतुर्त	9.२.३ कव <b>ै</b>	असंख उत्प <b>ी</b>	% चेत्रहो	आंगुन में असंख भाग	१ हजार थोजन	१ष्टुंडक	३ एहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	२ वध कार्य	
3	ओधिक नैं उत्कृष्ट	पाल्य सी असंख भाग	पत्च नों असंख माग	१२३ ७.पजै	संख कण्डी	9 छेवडो	आंगुल गो असंख भाग	५ हणार योजन	१हंडक	३ पहली	१ मिथ्या	v	२ नियमा	२ वध काय	
;; '4	जवन्य हैं आधिक जवन्य हैं जवन्य जवन्य हैं उत्स्व	१ अंतर्गृहूर्त १ अंतर्गृहूर्त १ व प्लपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्गृङ्ग् १ कोडपूर्व	৭.২.३ ভ্ৰমণ	असंख सपनै	9 फेबटो	आंगुल में असंख भाग	आंगुल् मॉ असंख पाग	<u>१ हुं</u> इक	३ पहली	१ मिथ्या	c	२ नियम्प	৭ কাষ	
(9 == ==	उत्सृष्ट नै ओघिक उत्सृष्ट नै जधाय उत्सृष्ट नै उत्सृष्ट	१ जंतर्गुहर्त १ जंतर्गुहर्त पत्थ नौ असंखभाग	पत्य में असंख भाग १ अंतर्मुहर्त पत्य में असंख्य मां	९२.५ अपले	असंख कामजै अराख कामजै पर्याण संख रहनजै	1	आंपुल नी असंख्याम	भ हफार योजन	५ष्टुंडक	३ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमः	२ नियमा	२ वच काय	

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुब	ध द्वार	नाणता	भा	व	२ कायसं	
8	.8	પુ	· ·	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	3	३ पहली	ર	१ नपुंसक	अंतर्नुहूर्त	४६ दिन रात	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	४६ दिन रात	o	२ २ २	2 2	१अंतर्मुं. १अंतर्मुं. १अंतर्मुं. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोडपूर्व	१६६ दिन रात ४ कोञ्डपूर्व १६६ दिन रात ४ अंतर्मु १६६ दिन रात ४ कोञ्डपूर्व
8	Å	3	३ पहली	7	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	मलाभूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान, योग, आयु, अध्य, अनु,	بر بر بر	E E	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोडपूर्व	४ अंतर्मुः       ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुः       ४ अंतर्मुः ४ अंतर्मुः       ४ कोडपूर्व
Å	¥	ş	३ पहली	2	१ नपुंसक	४६ दिन रात	४६ दिन रात	. भला भूंडा	४६ दिन रात	४६ दिन रात	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	5 5 5	४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात १ अंतर्मु. ४६ दिन रात १ कोडपूर्व	१६६ दिन रात ४ कोडपूर्व १६६ दिन रात ४ अंतर्यु. १६६ दिन रात ४ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	1 '	७ युद्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>98</sup> अनुब	: घ द्वार	नाणसः	भा	4		२० वेध द्वार
- 8	8	પ્ર	19	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	তাহান্য	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	R	Å	३ पहली	2	् नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	६मास	मला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	६मास	۰	<b>२</b> २ २	u u u	१अंतर्मुः १अंतर्गुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः १कोडपूर्व	२४ मास ४ कोडपूर्व २४ मास ४ अंतर्मु, २४ मास ४ कोडपूर्व
Ą	¥	8	३ पहली	२	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भलामूंडा भूंडा भल!	अंतर्गुहूर्त	अंतर्गृहूर्त	७ अव०, दृष्टि, झान, योग, अयु, अध्य, अनु,	ર સ સ	נטט	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १कोडपूर्च	४ अतम्, ४ कोङपूर्व ४ अंतम्, ४ अंतम्, ४ अंतम्, ४ कोङपूर्व
8	8	R	३ पहली	₹ .	१ नपुंसक	६ मास	६मास	भला भूंडा	६म्सस	६ गास	२ आयु, अनुबंध	<b>२</b> २ २	الأدام وا	६ मास १ अंतर्षु ६ मास १ अंतर्मु ६ मास १ कोडपूर्व	२४ गास्य <b>४ कोडपूर्व</b> २४ मास ४ अंतर्गु, २४ मास ४ कोडपूर्व

99 र संज्ञाद्वार	९२ कषाय द्वार	५३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	अत्यु अत्यु	as द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुः	६ इंघ द्वार	नाणसः	भ	đ		२० विध द्वार
В	R	પ્	(g	7	3	<u>जघ</u> न्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जद्यन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
. 8	R	પ	३ पहली	₹	५ नपुं <b>स</b> क	अंत <b>र्मुह्</b> तं	१ को <b>डपूर्व</b>	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ को डपूर्व	ס	२ २	c c	१अंतर्मुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः १अंतर्मुः	४ को डपूर्व, ३ को डपूर्व पत्य नौं,असंख मा ४ को डपूर्व, ४ अंतर्मु
. 8	ж	à	३ पहरती	ર	१ नपुंसक	. अंतर्मुडूर्त	१ कोडपूर्व	मला मूंडा	अंतर्मुहूर्त	१ को ङपूर्व	४ पर्याप्ता, संख्याता दृष्टि, झान	2	٦	१ अंतर्मु, पत्य मी अरांख भाग	९ को डपूर्व, यल्य नी अंसख भाग
8	Å	ų	३ पहली	२	१ नपुंसक	अंतर्गुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भलाभूंडा भूंडा भला	अतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव०, दृष्टि, ज्ञान योग, आयु, अध्य, अनु	२ २ २	H H H	१ अंतर्मु. १ अंतर्गु.	४ अंतर्मुहर्ग ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुहर्ग ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहर्ग ४ कोडपूर्व
. 8	8	ų	३ पहली	ą	१भपुंसक	कोड पूर्व	को ड पूर्व	शता भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु अनुबंध	र २ २		१ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व घल्य नों असंख भाग	४ को उपूर्व, ३ कोडपूर्व पत्य नों असंख श ४ कोडपूर्व, ४ अंतर्मुं. १ कोडपूर्व, पत्य नों असंख भाग

## ११८ मनुष्य में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपार	१ १ द्वार	परिमाण	२ । द्वार	३ संघयण द्वार	अवग	} गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	द ज्ञान–अः	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जध <b>न्य</b>	उत्कृष्ट	E I	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ц	3	3	₹
9 ?	ओघिक नैं ओधिक ओघिक नैं जघन्य	१अंतर्मुहूर्त १अंतर्मुहूर्त	३ पल्य १ अंतर्मुहूर्त	9.२,३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंखभाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३भजना	३भजना	3	3
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पल्य	३ पल्य	৭,२,३ ডদ্ব	संख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंखभाग	१ हजार योजन	Ę	ξ	3	३ भजना	३ भजना	3	7
8 4 6	जधन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	९.२.३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काय	3
t9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	ं १ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त ३ पल्य	३ पत्य १ अंतर्मुहूर्त ३ पत्य	৭.২.३ ডদঙ্গী	असंख ऊपजै असंख ऊपजै पर्याप्त संख ऊपजै	Ę	आंगुल नों असंखभाग	१ हजार योजन	ξ,	Ę	3	३भजना	३ भजना	3	3

## ११६ मनुष्य में असन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१५)

गम	२० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार		२ परिमाण द्वार		३ संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार		५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	= ज्ञान–अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जाधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
۹ ۲ ۶	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ अंतर्मुहूर्त १ कोडपूर्व	৭.২.३ জণ্ডী	असंख्याता ऊपजै असंख्याता ऊपजै संख्याता ऊपजै	१ छेवटो	आंगुल नों असंख माग		<u> १ ह</u> ंडक	३ पहली	९ मिथ्या	o	२ नियमा	१ काय	5

## १२० मनुष्य में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपात द्वार		२ परिमाण द्वार		३ संघयण द्वार	४ अवगाहना द्वार		्र् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	म्म ज्ञान-अज्ञान द्वार		६ योग द्वार	90 उपयोग द्वा
	अनै तेहनां नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	પ્	3	3	₹
۹ २	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	९ अंतर्मुहूर्त १ अंतर्मुहूर्त	३ पल्य १ अंतर्मुहूर्त	<b>५.२.३</b> ऊपजै	संख्याता ऊपजै	. ξ	आंगुल नों असंख भाग	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३ भजना	3	3
3	ओघिक नैं उल्कृष्ट	३ पल्य	३ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् आंगुल	५ सौ धनुष्य	દ	Ę	3	४भजना	३भजना	3	₹
8 4 6	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त १ कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ अंतर्मुहूर्त ९ कोडपूर्व	৭,২,३ জদতী	संख्याता ऊपजै	ξ	आंगुल नों असंख भाग	आंगुल नों असंख भाग	Ę	३ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	१ काया	2
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ अंतर्गुहूर्त १ अंतर्गुहूर्त ३ पल्य	३ गत्य १ अंतर्गुहूर्त ३ पत्य	৭.২.3 ভ্ৰম্মলী	संख्याता ऊपजै	દ્	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३ भजना	3	?

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	भ	7	२० कायसंवे	
8	8	ų	6	2	3	जघन्य	তন্দৃष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	५ पहली	२	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	·भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	o	ર ર	ŭ	१अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु, १अंतर्मु,	४ कोडपूर्व, ३ कोडपूर्व ३ पल्य ४ कोडपूर्व, ४ अंतर्गुहूर्त
8	Å	ų	५ पहली	₹	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	२ पर्याप्ता, संख्याता	२	<b>२</b>	१ अंतर्मु, ३ पल्य	१ को डपूर्व, ३ पल्य
8	8	4	३ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भलामूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	६ अव०, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, लेश्या, समु, आयु, अध्य, अनु,	२ २ २	£ 5.	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोङपूर्व	४ अंतर्मुह्तं ४ कोडपूर्वं ४ अंतर्मुह्तं ४ अंतर्मु, ४ अंतर्मुह्तं ४ कोडपूर्व
8	8	ч	५् पहली	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	c 7	१ कोडपूर्व १अंतर्गु. १ कोडपूर्व १अंतर्गु. १ कोडपूर्व ३ पल्य	४ कोडपूर्व, ३ कोडपूर्व ३ पत्य ४ कोडपूर्व, ४ अंतर्मु. १ कोडपूर्व, ३ पत्य

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समृद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ द्वार	<sup>9</sup> ८ अध्यवसाय द्वार	१। अनुब	ध ध द्वार	नाणत्ता	भ	व	२ कायसंवे	० घ द्वार
8	8	ų	(9	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	३ पहली	2	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भला भूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	0	२ २ २	t; t;	१ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ अंतर्मु. १ कोडपूर्व	४ अंतर्मु ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मु ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु ४ कोडपूर्व

११ हा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	९५ू वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	६ ग्रेंध द्वार	नाणता	শং	I	कायसंदे	२० तथ द्वार
Α. 41.41.	8	4	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष <del>्ट</del>	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ч	६ केवल वर्जी	२	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोडपूर्व	0	२ २	t.	१ अंतर्मु, १ अंतर्गु. १ अंतर्मु, १ अंतर्मु.	४ को डपूर्व, ३ को डपूर्व ३ पल्य ४ को डपूर्व, ४ अंतर्गुहूर्त
¥	¥	ų	६ केवल वर्जी	₹	3	पृथक् मास	कोडपूर्व	भला भूंडा	पृथक् मास	कोडपूर्व	३ अव०, आयु, अनु.	3	₹	१ पृथक् मास ३ पल्य	१ को डपूर्व ३ पल्य
¥	8	ч	३ पहली	?	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	मलाभूंडा भूंडा भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुह्र्त	६ अव०, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान-अज्ञान, योग, समु, आयु, अध्य, अनु.	२ -२ -२	t, t,	१अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १अंतर्मु. १कोडपूर्व	४ अंतर्मुहूर्त ४ कोडपूर्व ४ अंतर्मुहूर्त ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मुहूर्त ४ कोडपूर्व
8	8	ч	६ केवल वर्जी	3	3	कोड पूर्व	कोड पूर्व	भला भूंडा	कोड पूर्व	कोड पूर्व	३ अव., आयु, अनुबंध	२ २ २	2 2 7	१ कोडपूर्व १अंतर्गु. १ कोडपूर्व १अंतर्मु. १ कोडपूर्व ३ पल्य	४ कोडपूर्व, ३ कोडपूर्व ३ पल्य ४ कोडपूर्व, ४ अंतर्पु. १ कोडपूर्व ३ पल्य

# १२१ मनुष्य में असुरकुमार ऊपजै तेहनों यंत्र (१७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	खण	१ पात द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	४ अव० उत्त	र वै०	संठ	भू गण ह	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	झान-	ू अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वार
		সঘন্য	उत्कृष्ट	जघन्थ	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	ų	3	3.	2
2	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	9 कोडपूर्व 9 पृथक् मास 9 कोडपूर्व	৭,२,३ ডেপ্ডী	संख्याता ऊपजै	असंघरणी	आंगुल नो असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	५ समधीरंस	नाना प्रकार	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	Э	₹ .
4	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंखभाग	७ हाध	आंगुल नौं संख्याता भाग	१ लाख योजन	९ समबौरंस	नाना प्रकार	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	ą	?
ς,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् भारा	१कोडपूर्व १पृथक् मास १कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता क्ष्मजै	असंघयणी	आंगुल नो असंखभाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समधीरंस	नाना प्रकार	४ पहली	3	३ नियमः	3 भजना	ş	ą

## १२२ मनुष्य में नवनिकाय ऊपजै तेहनों यंत्र (१८ - २६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	स	१ पात द्वार	र परिम	ण द्वार	3 संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	ধ अব৹ उत्त	र वै०	ं ५ संता	६ ण ६	६ लेश्या डार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–ः	द इज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग हर
		जघन्य	उत्कृष्ट	জঘল্য	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	मूल	रैक्टिय	Ę	3	٧	3	3	₹
3	आंधिक नै ओधिक ओधिक नै जघन्य ओधिक नै उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	१ को डपूर्व १ पृथक् मास १ को डपूर्व	५२३ ऊपजे	संख्याता जण्जै	असंध्यणी	आंगुल नौ असंख भाग	७ हाध	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	५ समग्रीरंस	नाना प्रकार	४ पहली	3	३ नियंगा	३ भजना	3	7
ધ્	जधन्य नैं ओघिक जधन्य नैं जघन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् भास	१ कोडपूर्व १ पृथक् मःस १ कोडपूर्व	৭:২.३ জন্মতী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नौ संख्याता भाग	१ लाख योजन	4 समयौरंश	नाना प्रकार	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	₹	ş
	उत्कृष्ट नैं औषिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१पृथक् नास	१ को सपूर्व १ पृथ्यक् गास १ को सपूर्व	९२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल गों असंख भाग	१५ हाथ	आंगुल नों संख्याती भाग	१ लाख योजन	१ समद्यौरंस	नाना प्रकार	४ पहली	ş	३ नियमा	२ नियमा	3	२

# १२३ मनुष्य में व्यंतर ऊपजै तेहनों यंत्र (२७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	ਚਾ	९ पात द्वार	: परिभाग	। इस	संघयण हार	अव० भव	धारणी	४ এবে০ ওন	र वै०	संउ	५ जिद्	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	জান-ও	: ।ज्ञान द्वार	र योग द्वार	५० उपयोग <b>इ</b> ग
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	जध्न्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	t,	3	ધ્	3	3	2
?	ओघिक नै ओघिक ओघिक नै जघन्य ओघिक नै जत्कृष्ट	१ पृथक् मास	9 कोडपूर्व 9 पृथक् मास 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	अलंघयण्त	आंगुल नो असंख भाग	७ हाध	आंगुल नौ संख्याता भाग	१ ला <b>ख</b> योजन	५ सभ्द्यीर <b>स</b>	नाना प्रकार	४ एहली	3	३ नियमा	३ मन्त्रना	3	Ş
-	जधन्य नै जधन्य	• पृथक् मास • पृथक् गास • कोडपूर्व	१ को उपूर्व १ पृथक् मास १ को उपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघगणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाखा योजन	9 सम्बौरंस	भागा प्रकार	४ पहली	3	३ नियमा	३ भजना	ş	7
ς,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नें उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	9 कोडपूर्व 9 पृथक् मास 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघथणी	आंगुल नों असंख भाग	१९ हाथ	आंगुल नो संख्याता भाग	१ ला <b>ख</b> धोजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	४ पहली	3	३ निथमा	३ निवमा	ş	3

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9( आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता		भव	२० कायसं	वेध द्वार
8	8	ų	9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	५् पहली	7	२ स्त्री पुरुष	९० हजार वर्ष	९ सागर जाझो	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	१ सागर जाझो	0	ર ૨ ૨	τ. τ.	१० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ४ सागर जाझो ४ पृथक् मास ४ सागर जाझो ४ कोडपूर्व
8	8	ų	५् पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	९० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार वर्ष	९० हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध	ર ૨ ૨	C.	१० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ पृथक् मारा ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
¥	Å	ų	५ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	५ सागर जाझो	१ सागर जाझो	भता भूंडा	९ सागर जाझो	१ सागर जाझो	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ς ς	१ सागर जाझो १ पृथक् मास १ सागर जाझो १ पृथक् मास १ सागर जाझो १ कोडपूर्व	

99. संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेदं द्वार	9( आयु :		१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता		भव		२० संवेध द्वार
8	8	ų	9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	Å	4	५ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	१० हजार वर्ष	२ पल्य देसूण	मला भूंडा	१० हजार वर्ष	२ पत्य देसूण	٥	۲ ۲ ۲	E E	१० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	ः पत्य देसूण ४ कोडपूर्व ः पत्य देसूण ४ पृथक्मास ः पत्य देसूण ४ कोडपूर्व
8	¥	4.	५ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	५० हजार वर्ष	% हजार वर्ष	भला भूंडा	१० हजार	१० हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	τ, τ,	१० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ पृथक् मास ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व
8	8	ų	५ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	२ पल्य देसूण	२ पल्य देसूण	भला भूडा	२ पत्य देसूण	२ पल्य देसूण	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	C, C,	२ पत्य देसूण १ मृथक्मास २ पत्य देसूण १ मृथक्मास २ पत्य देसूण १ कोडपूर्व	८ पत्य देसूण ४ कोडपूर्व ८ पत्य देसूण ४ पृथक् मास ८ पत्य देसूण ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	9२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुब	घ द्वार	नाणत्ता		भव	२ कायसं	० वेध द्वार
8	પ્ર	ų		3	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	1	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट कात
8	8	ų	५ पहली	₹ ,	२ स्त्री पुरुष	१० हजार वर्ष	१पल्य	मला भूंडा	९० हजार वर्ष	१ पत्य	o	२ २ २	נו נו	१० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	
8	R	ų	५् पहली	2	२ स्त्री पुरुष	१० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	भला भूंडा	९० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष	२ आयु. अनुबंध	۲ ۲ ۲	U U U	१० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व	
8	8	ų	५ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	१पल्य	१पल्य	भता भूंडा	१पल्य	१पल्य	२ आयु, अनुबंध	र २ २	υ υ	१ पत्य १ पृथक्मास १ पत्य १ पृथक्मास १ पत्य १ कोडपूर्व	४ पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ पृथक् मास ४ पत्य ४ कोडपूर्व

# १२४ मनुष्य में ज्योतिषी ऊपजै तेहनों यंत्र (२८)

			9		₹	3			8			પ્	Ę	ly		=	Ę	90
गमा	२० द्वार नी संख्या	उर	ग्पात द्वार	परिमा	ण द्वार	संघयण द्वार	अव० भव	वधारणी -	अव० उत्त	र वै०	संठ	ाण ६	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान-अ	ाज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग द्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	પ્	3	3	<b>1</b> 2
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौं असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	१ समग्रौरंस	नाना प्रकार	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
20 21 15	जघन्य नै जघन्य	१ पृथक् मास १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	९ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
ζ	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौ असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	९ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹

# १२५ मनुष्य में प्रथम सौधर्म देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (२६)

			9	:	₹ .	3			8			<b>4</b>	Ę	9	Ι,		٤	90
गमा	२० द्वार नी संख्या	ਰਾ	ापात द्वार	परिमा	ग द्वार	संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	अव० उत	ार वै०	संठ	ाण ६	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान–3	ाज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग ह
		जघन्य ¹	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	દ	3	પ્	3	3	2
7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	१ को डपूर्व १ पृथक् मास १ को डपूर्व	९,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समचौरंस	नाना प्रकार	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	२
4	जघन्य नै जघन्य	९ पृथक् मास ९ पृथक् मास ९ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	९.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	९ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	ર
۲.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१पृथक् मास	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	१ तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹

# १२६ मनुष्य में दूसरे ईशान देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिमा	२ गद्धार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	४ अव० उत्त	ार वै०	संठा	५ ।ण ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान⊸ः	प्रज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग हा
	,	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	પ્	ş	3	2
9 ? 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	9 कोडपूर्व 9 पृथक् मास 9 कोडपूर्व	৭.২.३ ডঘনী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	<b>१</b> समचौरंस	नाना प्रकार	<u> १</u> तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	ą	3
¥ 4 \$	जघन्य नै जघन्य	१ पृथक् मास १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	१ समचौरंस	नांना प्रकार	<b>१तेजु</b>	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
τ,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् मास	१ कोडपूर्व १ पृथक् मास १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	७ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समचौरंस	नाना प्रकार	१तेजु	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	<sup>9</sup> आयु	७ द्वार	<sup>9</sup> द अध्यवसाय द्वार	१६ अनुब	ह ह्यां इंग्रह	नाणत्ता		भव	२० कायसंवे	ध द्वार
8	8	ų	(y	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	Ą	५ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	अधपाव पत्य	१ पत्य १ लाख वर्ष	भला भूंडा	अधपाव पल्य	९ पत्य ९ लाख वर्ष	۰	۲ ۲ ۲	21 13 13	अधपाव पत्य १ पृथक् मास अधपाव पत्य १ पृथक् मास अधपाव पत्य १ कोडपूर्व	४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ पृथक्मास ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व
8	¥	ц	५् पहली	₹	२ स्त्री, पुरुष	अधपाव	अधपाव पल्य	भला भूंडा	अधपाव पल् <b>य</b>	अधपाव पत्य	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	£ £	अधपाव पल्य १ पृथक् मास अधपाव पल्य १ पृथक् मास अधपाव पल्य १ कोडपूर्व	अर्ध पत्य ४ कोडपूर्व अर्घ पत्य ४ पृथक् मास अर्ध पत्य ४ कोडपूर्व
8	8	ц	५ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	१ पत्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	भला भूंडा	१ पल्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	२ आयु अनुबंध	२ २ २	ς ς ς	१ पत्य १ लाख वर्ष १ पृथक्मास १ पत्य १ लाख वर्ष १ पृथक्मास १ पत्य १ लाख वर्ष १ कोडपूर्व	४ पल्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व ४ पल्य ४ लाख वर्ष ४ पृथक् मास ४ पल्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	9२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>98</sup> अनुबं	ध द्वार	नाणता		भव		२० विध द्वार
8	8	ų	Ŋ	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		<u>जघन्य</u>	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
R	8	ધ	५ पहली	₹	२ स्त्री, पुरुष	१ पत्य	२ सागर	मला भूंडा	१पल्य	२ सागर	٥	२ २ २	1, 1, 1,	९ पत्य ९ पृथक मास ९ पत्य ९ पृथक मास ९ पत्य ९ कोडपूर्व	८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ पृथक्मास ८ सागर ४ कोडपूर्व
A	8	ų	५् पहली	२	२ स्त्री, पुरुष	१पल्य	१पल्य	भला भूंडा	१पल्य	१पल्य	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	E. E.	१ पत्य १ पृथक् मास १ पत्य १ पृथक् मास १ पत्य १ कोडपूर्व	४ पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ पृथक् मास ४ पत्य ४ कोडपूर्व
8	¥	ų	५ पहली	3	२ स्त्री. पुरुष	२ सागर	२ सागर	भला भूडा	२ सागर	२ सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	i ii ii	२ सागर १ पृथक्मास २ सागर १ पृथक्मास २ सागर १ को उपूर्व	८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ पृथक् मास ८ सागर ४ कोडपूर्व

	१९ ह्या द्वार	१२ कषाय द्वार	५३ इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	भ आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता		भव	२ कायसं	
	8	8	પ્	ty	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
	¥	Å	4	५् पहली	ą	२ स्त्री, पुरुष	१ पल्य जाझो	२ सागर जाझो	भला भूंडा	१ पत्य जाझो	२ सागर जाझो	٥	२ २ २	ט ט ט	१ पत्य जाझो १ पृथक मास १ पत्य जाझो १ पृथक मास १ पत्य जाझो १ कोडपूर्व	८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ८ सागर जाझो ४ पृथक्मास ८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व
_	Å	8	'ų	५ पहली	3	२ स्त्री. पुरुष	१ पत्य जाझो	९ पल्य जाझो	भला भूंडा	१ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	τ. τ.	१ पत्य जाझो १ पृथक् मास १ पत्य जाझो १ पृथक मास १ पत्य जाझो १ कोडपूर्व	४ पत्य जाझो ४ कोडपूर्व ४ पत्य जाझो ४ पृथक् मास ४ पत्य जाझो ४ कोडपूर्व
	8	Å	ц	५ पहली	3	२ स्त्री, पुरुष	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	भला भूंडा	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	२ आयु, अनुबंध	? ? ?	T. T.	२ सागर जाझो १ पृथक्मास २ सागर जाझो १ पृथक्मास २ सागर जाझो १ कोडपूर्व	54

## १२७ मनुष्य में तीसरे सनतकुमार देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उर	१ ग्पात द्वार	परिमाप्	≀ गद्वार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	४ अव० उत्त	र वै०	संठ	५ ाण ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान3	: ाज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	ξ	3	પ્	3	3	2
9 २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ को उपूर्व १ पृथक् वर्ष १ को उपूर्व	৭.২.३ ক্ত <b>प</b> जै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	६ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	९ समचौरंस	नाना प्रकार	१ पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
४ ५ ६	जघन्य नै जघन्य	९ पृथक् वर्ष ९ पृथक् वर्ष ९ कोडपूर्व	१ को उपूर्व १ पृथक् वर्ष १ को उपूर्व	९,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौ असंखभाग	६ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समधौरंस	नाना प्रकार	१पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
c,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१कोडपूर्व १पृथक् वर्ष १कोडपूर्व	৭,২,३ ক্তঘণী	संख्याता ऊपजै	असंधयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	९ समचौरंस	नाना प्रकार	१ पद्म	ą	३ नियमा	३ नियमा	3	2

# १२८ मनुष्य में चौथे माहेन्द्र देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ ात द्वार	परिम	२ ग्गद्वार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	४ अव० उत्त	र वै०	संठ	५  ण ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	झान3	- ग्ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	પ્	3	3	₹ -
?	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोस्पूर्व १ पृथक् वर्ष .१ कोस्पूर्व	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौ असंख भाग	६हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समधौरंस	नाना प्रकार	<b>१</b> पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	ą	3
ધ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 पृथक् वर्ष 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नॉ असंख भाग	६हाध	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	- १ समधौरंस	नाना प्रकार	<b>१</b> पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
۲,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	९,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	६ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	१ समचीरंस	नाना प्रकार	१पदम	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2

### १२६ मनुष्य में पांचवें ब्रह्म देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३३)

			9		?	3			8			<b>ધ</b>	Ę	b	,	5	٤	40
गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	त द्वार	परिम	ण द्वार	संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	अव० उत्त	र वै०	संठ	ाण ६	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	झान–3	प्रज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग इ
		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	<u>٤</u>	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	ξ	3	ų	3	3	- 3
2	ओघिक नै ओघिक ओघिक नै जघन्य ओघिक नै उत्कृष्ट	৭ দুখক্ বৰ্ণ	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	९२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजे	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	आंगुल नी संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समग्रीरंस	नाना प्रकार	<b>१ पद्</b> म	Э	३ नियमा	३ नियमा	3	3
4	जघन्य नै ओघिक जघन्य नै जधन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	९.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	भ्हाध	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	9 समचौरंस	नाना प्रकार	१ पद्म	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
ξ,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	९ कोडपूर्व ९ पृथक् <b>वर्ष</b> ९ कोडपूर्व	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	९ लाख योजन	१ समग्रौरंस	नाना प्रकार	१पद्म	ą	३ नियमा	३ नियमा	3	3

,	99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	-	9८ अध्यवसाय द्वार	क अनुब	ध द्वार	नाणत्ता		भव	ł	२० विध द्वार
	¥	8	ų	6	2	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघंन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
•	Å	¥	ધ -	<u>५</u> पहली	3	१पुरुष	२ सागर	७ सागर	मला भूंडा	२ सागर	७ सागर	o	२ २ २	: :	२ सागर १ पृथक वर्ष २ सागर १ पृथक वर्ष २ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ पृथ्यक्वर्ष २८ सागर ४ कोडपूर्व
•	¥	8	ų	५ पहली	₹ .	१ पुरुष	२ सागर	२सागर	मला भूडा	२ सागर	२ सागर	२ आयु. अनुबंध	र २ २		२ सागर १ पृथक वर्ष २ सागर १ पृथक वर्ष २ सागर १ कोडपूर्व	८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ पृथ्यक् वर्ष ८ सागर ४ कोडपूर्व
. •	¥	8	ų	५ पहली	3	१पुरुष	७ सागर	७ सागर	भला मूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	<b>t</b> , t,	७ सागर १ पृथक्वर्ष ७ सागर १ पृथक्वर्ष ७ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ पृथक् वर्ष २८ सागर ४ कोडपूर्व

:	११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद् <b>घात द्वा</b> र	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	9८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	: घं द्वार	नाणता		भव	i	२० वेध द्वार
•	8	8	ષ્	U	<b>२</b>	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
	Я	¥	ų	५् पहली	3	৭ पुरुष	२ सागर जाझी	७ सागर जाझो	मला भूंडा	२ सागर जाझो	७ सागर जाझो	۰	7 7 7	T T	२ सागर जाझो १ पृथक वर्ष २ सागर जाझो १ पृथक वर्ष २ सागर जाझो १ कोडपूर्व	२८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो ४ पृथक्वर्व २८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व
	Å	Å	ч	५ पहली	2	१ पुरुष	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	भला भूंडा	२ सागर जाझो	२ सागर जाझो	२ आयु. अनुबंध	ર ૨ ૨	c c	२ सागर जाझो १ पृथक वर्ष २ सागर जाझो १ पृथक वर्ष २ सागर जाझो १ कोडपूर्व	द्र सागर जाझो ४ कोडपूर्व द्र सागर जाझो ४ पृथक् वर्ष द्र सागर जाझो ४ कोडपूर्व
	R	R	ų	५्पहली	2	१ पुरुष	७ सागर जाझो	७ सागर जाझो	मला मूडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	τ, τ,	७ सागर जाझो १ पृथक्वर्ष ७ सागर जाझो १ पृथक्वर्ष ७ सागर जाझो १ कोडपूर्व	२८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो ४ पृथक् वर्ष २८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व

द्वार	११ संज्ञा द्वार	९२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	% समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु		9द अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबं	ध द्वार	नाणत्ता		भव		२० विध द्वार
	¥	8	ų	ig	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
	¥	¥	ધ્	५ पहली	२	१ पुरुष	७ सागर	<b>%</b> सागर	भला भूंडा	७ सागर	<b>५० सागर</b>	G	۲ ۲	u .	७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ पृथकवर्ष ४० सागर ४ कोडपूर्व
<u></u>	R	Å	ų	५्पहली	२	१ पुरुष	७ सागर	७ सागर	मला भूंडा	७ सागर	७ सागर	२ आयु. अनुबंघ	२ २ २		७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ पृथक वर्ष ७ सागर १ कोडपूर्व	२८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ पृथक् वर्ष २८ सागर ४ कोडपूर्व
	¥	8	ų	५् पहली	२	<b>१पुरुष</b>	९० सागर	<b>१० सागर</b>	मला भूंडा	१० सागर	<b>9</b> 0 सागर	२ आयु. अनुबंध	२ , २ २	ъ ъ	२० सागर १ पृथक्वर्ष १० सागर १ पृथक्वर्ष १० सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ पृथक् वर्ष ४० सागर ४ कोडपूर्व

## १३० मनुष्य में छठे लान्तक देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ त द्वार	: परिम	१ ।ण द्वार	३ संधयण द्वार	अव० भव	ाधारणी	ধ अव० <del>उ</del> त्त	र वै०	प संठा	ग ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान-3	- भज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	<b>ভ</b> ক্ <b>ণ্</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	પ્	3	3	2
`{	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭.২.३ ভ্ৰম্ম	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	५् हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	9 समचौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	₹
ų		৭ দৃথক্ বৰ্ণ ৭ দৃথক্ বৰ্ণ ৭ ফাভদুৰ্ব	९ कोडपूर्व ९ पृथक् वर्ष ९ कोडपूर्व	৭,২, <b>३</b> জদতী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५् हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	१ समग्रौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2
τ,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	9 कोडपूर्व 9 पृथक् वर्ष 9 कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	५ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	१ समग्रौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?

# १३१ मनुष्य में सातवें शुक्र देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	१ ात द्वार	: परिम	र श्रिद्धार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	ধ अव० उत्त	र वै०	संठा	प् ण ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	् ज्ञान–3	द अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	ξ	3	ધ્	3	3	2
२	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौ असंखभाग	४ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ ला <b>ख</b> योजन	9 समचौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
પ્	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭.২.३ জঘ্ঞ	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नौ असंख भाग	४ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ ला <b>ख</b> योजन	१ समयौरंस	नाना प्रकार	9 शुक्ल	ą	३ नियमा	३ नियमा	ş	₹
τ,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष	9 कोडपू <b>र्व</b> 9 पृथक् व <del>र्व</del> 9 कोडपूर्व	५.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	४ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	१ समग्रौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	2

# १३२ मनुष्य में आठवें सहस्रार देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३६)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपम	१ त द्वार	परि <b>म</b>	? ाण द्वार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	ধ अव० उत्त	र वै०	संठ	भ् ।ण ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	<b>ज्ञा</b> न–3	५ भंजान द्वार	६ योग द्वार	५० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	પ્	3	3	<b>२</b>
	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं ज़घन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	<b>१ पृथक्</b> वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	४ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	९ समबौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
-	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭,२,३ ডদজ	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	४ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	ą	३ नियमा	३ नियमा	3	2
с,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	४ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	९ समचौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	?

संज्ञा द्वार	कषाय द्वार	इन्द्रिय द्वार	समुद्धात द्वार	वेदना द्वार	वेद द्वार	आयु 🗀	द्वार	अध्यवसाय द्वार	ं अनुब	ध द्वार	नाणता		भव	कायः	संबंध द्वार
8	8	ų	6	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	Ī	जघन्य	उत्कृष्ट	जंघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ų	५ पहली	7	१पुरुष	% सागर	१४ सागर	भला भूंडा	१० सागर	१४ सागर	۰	7	c.	२० सागर १ पृथक वर्ष २० सागर १ पृथक वर्ष	५६ सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ पृथक्वर्ष
								• শুভা			ľ	7	ς τ	90 सागर १ कोडपूर्व	प्६ सागर ४ कोडपूर्व
-V	y .	ч	५ पहली	₹	१पुरुष	९० सागर	१० सागर	भला	१० सागर	१० सागर	₹	7	τ	१० सागर १ पृथक वर्ष	४० सागर ४ कोडपूर्व
								भूंडा			आयु. अनुबंध	۲ ۲	T.	१० सागर १ पृथक वर्ष १० सागर १ कोडपूर्व	४० सागर ४ पृथक् वर्ष ४० सागर ४ कोडपूर्व
	¥	4	५ पहली	3	१ पुरुष	१४ सागर	१४ सागर	भला	१४ सागर	१४ सागर	2	7	E	१४ सागर १ पृथक्वर्ष	५६ सागर ४ कोडपूर्व
Ť		•	,					भूंडा			आयु, अनुबंघ	۲ ۲	E.	१४ सागर १ पृथक्वर्ष १४ सागर १ कोडपूर्व	भू६ सागर ४ पृथ्यक् वर्ष भू६ सागर ४ को उपूर्व

٩c,

अध्यवसाय द्वार

असंख्याता

भला

भूंडा

भला

भूंडा

भला

भूंडा

अनुबंध द्वार

१४ सागर

१४ सागर

१७ सागर

उत्कृष्ट

१७ सागर

१४ सागर

१७ सागर

नाणता

0

5

आयु.

अनुबंघ

7

आयु

अनुबंध

भव जघन्य उ

₹

₹

₹

₹

₹

2

7

2

उत्कृष्ट

τ,

5

τ,

٩८,

98

ζo

२०

कायसंवेध द्वार

उत्कृष्ट काल

६८ सागर ४ कोडपूर्व

६८ सागर ४ पृथक्वर्व

६८ सागर ४ कोडपूर्व

५६ सागर ४ कोडपूर्व

५६ सागर ४ पृथक् वर्ष

५६ सागर ४ कोडपूर्व

६८ सागर ४ कोडपूर्व

६६ सागर ४ पृथक् वर्ष

६८ सागर ४ कोडपूर्व

गमा

398

जघन्य काल

१४ सागर १ पृथक वर्ष

**१४ सागर १ पृथक वर्ष** 

१४ सागर १ कोडपूर्व

१४ सागर १ पृथक वर्ष

१४ सागर १ पृथक वर्ष

१४ सागर १ कोडपूर्व

१७ सागर १ पृथक्वर्ष

% सागर १ पृथक्वर्ष % सागर १ कोडपूर्व

99 97 93 98 99 96 90

98

५् पहली

५् पहली

५् पहली

संज्ञा द्वार

कषाय द्वार

8

8

8

इन्द्रिय द्वार

4

ų

ધ્

समुद्धात द्वार विदना द्वार

98

वेद द्वार

৭ पुरुष

१ पुरुष

१ पुरुष

आयु द्वार

उत्कृ**ष्ट** 

१७ सागर

१४ सागर

१७ सागर

जघन्य

१४ सागर

१४ सागर

९७ सागर

ዓዒ

₹

₹

7

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	९४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आ <b>यु</b>	<b>७</b> द्वार	9८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुब	घ द्वार	नाणता		भव	1	२० विध द्वार
8	8	ષ્	6	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
. A	8	ų	५् पहली	2	१ पुरुष	९७ सागर	% स्त्रगर	भता भूंडा	१६९ सागर	9८ सागर	0	२ २ २	r .	५७ सागर १ पृथक वर्ष ५७ सागर १ पृथक वर्ष ५७ सागर १ कोडपूर्व	७२ सागर ४ कोडपूर्व ७२ सागर ४ पृथक्वर्व ७२ सागर ४ कोडपूर्व
R	8	ų	५ पहली	2	१पुरुष	% सागर	९७ सागर	मला भूंडा	१७ सागर	969 सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	υ υ	१७ सागर १ पृथक वर्ष १७ सागर १ पृथक वर्ष १७ सागर १ कोडपूर्व	६८ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ पृथक् वर्ष ६८ सागर ४ कोडपूर्व
R	8	ų	५ पहली	۲,	৭ ঘুকৰ	<u>फ</u> सागर	<u>५</u> सागर	भता भूंडा	१८ सागर	<sub>भिट</sub> सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	t t	१८ सागर १ पृथक्वर्ष १८ सागर १ पृथक्वर्ष १८ सागर १ कोडपूर्व	७२ सागर ४ कोडपूर्व ७२ सागर ४ पृथक् वर्ष ७२ सागर ४ कोडपूर्व

# १३३ मनुष्य में नवमें आणत देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३७)

गमा	२० द्वार नी संख्या	9 उपपात	। १ द्वार	२ परिमाण	ग द्वार	३ संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	ধ - अव० उत्त	र वै०	प्र संठाण	t Ę	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	ज्ञान-	८ अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग
		जघन्य	चत्कृ <b>ष्ट</b>	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	<b>जघ</b> न्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	ξ	3	પ્	3	3	२
۹ २ ३	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	৭,২,३ ক্তদ্বতী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भाग	९ लाख योजन	१ समयौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3
4		१ पृथक् वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ को डपूर्व १ पृथक् वर्ष १ को डपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	१ समयौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	ş	३ नियमा	३ नियमा	3	7
τ.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	<b>१</b> समचौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

# १३४ मनुष्य में दशवें प्राणत देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (३८)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	9 त हार	परिम	२ १ण द्वार	3 संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	४ अव० उत्त	र वै०	सठ	५ ण ६	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ह्यान-3	: रज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयो
		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उल्हृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	ષ્	3	3	7
3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक् वर्ष १ कोडपूर्व	९.२,३ ऊंपजै	संख्याता ऋपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भरग	१ लाख योजन	९ समग्रैरंस	नाना प्रकार	१ शुक्त	3	<b>३ नि</b> यमा	३ नियमा	3	?
4	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक् दर्ग १ कोडपूर्व	९.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाध	आंगुल नों संख भाग	৭ লান্ত যাতান	१ भमधौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	ą	३ नियमा	३ नियमा	3	\$
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ को डपूर्व १ पृथक् वर्ष १ को डपूर्व	৭.২.३ ক্তদঙ্গী	संख्याता ऋपजै	असंबयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भाग	९ लाख योजन	9 समद्यौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्त	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

## **934 मनुष्य में ग्यारहवें** आरण देवलोक नां ऊपजे तेहनों यंत्र (३६)

			9	, ;	₹	3			8		Ų	l	<b>ξ</b>	9	,		, 5	1
गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	त द्वार	परिम	ण द्वार	संघयण द्वार	अवः भव	घारणी	अव० उत्त	र दै०	संठा	ग६	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान–अ	म्झान द्वार	योग द्वार	उपय
١		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	<b>ওক্</b> ন্ত	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	ξ	3	પ્	3	3	<u></u> :
7	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्व १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	१ लाख योजन	५ समयौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्त	3	३ नियमा	३ नियमा	3	7
ų	जघन्य नै जघन्य	९ पृथक्वर्ष ९ पृथक्वर्ष ९ कोडपूर्व	९ कोडपूर्व ९ पृथक्वर्ष ९ कोडपूर्व	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखभाग	३ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	५ लाख योजन	१ समधौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	\$
۲ ا	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	९ कोडपूर्व ९ पृथक्वर्व ९ कोडपूर्व	१२३ ऊपजै	संख्याता कपजै	असंघदणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख्याता भाग	९ लाख योजन	९ समधौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

) ११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नाणसा		भव	1	२० संवेध द्वार
8	8	ų	6	٦	Э	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	Å	ų	५ पहली	२	१ पुरुष	९८ सागर	१६ सागर	भला भूंडा	१६ सागर	<b>१६</b> सागर	٥	۶ ۲ ۲	& & &	१८ सागर १ पृथक वर्ष १८ सागर १ पृथक वर्ष १८ सागर १ कोडपूर्व	५७ सागर ३ कोडपूर्व ५७ सागर ३ पृथक्वर्ष ५७ सागर ३ कोडपूर्व
8	8	4,	५ पहली	₹	१पुरुष	१८ सागर	<b>९८ सागर</b>	भला भूंडा	<b>4</b> ⊊ सागर	<del>१</del> ८ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	٤ ٤	१८ सागर १ पृथक वर्ष १८ सागर १ पृथक वर्ष १८ सागर १ कोडपूर्व	५४ सागर ३ कोडपूर्व ५४ सागर ३ पृथक् वर्ष ५४ सागर ३ कोडपूर्व
. 8	Å	ų	५ पहली	ર	৭ দুক্ <b>ব</b>	१६ सागर	<b>१६ सागर</b>	भता भूंडा	१६ सागर	<b>१६ सागर</b>	२ आयु, अनुबंध	? ? ?	E E	१६ सागर १ पृथक्वर्ष १६ सागर १ पृथक्वर्ष १६ सागर १ कोडपूर्व	पुष सागर ३ कोडपूर्व पुष सागर ३ पृथक् वर्ष पुष सागर ३ कोडपूर्व

१९ संझा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुब	घ द्वार	नाणत्ता	3	ाव		२० विध द्वार
. 8	8	ų	9	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	પ્	५ पहली	₹	৭ দুকৰ	१६ सागर	२० सागर	भला मूंडा	१६ सागर	२० सागर	٥	ર ૨ ૨	£ £	१६ सागर १ पृथक वर्ष १६ सागर १ पृथक वर्ष १६ सागर १ कोडपूर्व	६० सागर ३ छ। उपूर्व ६० सागर ३ पृथक्वर्ष ६० सागर ३ को उपूर्व
8	8	ų	५ पहली	₹	१ पुरुष	१६ सागर	१६ सागर	मला भूंडा	१६ सागर	१६ सागर	२ आयु. अनुबंध	۲ ۲ ۲	દ દ દ	१६ सागर १ पृथक वर्ष १६ सागर १ पृथक वर्ष १६ सागर १ कोडपूर्व	५७ सागर ३ कोडपूर्व ५७ सागर ३ पृथक् वर्ष ५७ सागर ३ कोडपूर्व
8	8	ч	५् पहली	₹	१ पुरुष	२० सागर	२० सागर	मला भूंडा	२० सागर	२० सामर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	£, £, £,	२० सागर १ पृथक्वर्ष २० सागर १ पृथक्वर्ष २० सागर १ कोडपूर्व	६० सागर ३ कोडपूर्व ६० सागर ३ पृथक् वर्ष ६० सागर ३ कोडपूर्व

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	भ आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	96 अनुब	: ध द्वार	नाणता		भव	Į.	२० संवेध द्वार
¥	×	<b>પ્</b>	ly	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
	¥	ų	५ पहली	ર	१ पुरुष	२० सागर	२१ सागर	भला भूंडा	२० सागर	२१ सागर	٠	२ २ २	£4 £4	२० सागर १ पृथक वर्ष २० सागर १ पृथक वर्ष २० सागर १ कोडपूर्व	६३ सागर ३ कोडपूर्व ६३ सागर ३ पृथक्वर्ष ६३ सागर ३ कोडपूर्व
8	x	ų	५् पहली	?	৭ पुरुष	२० सागर	२० सागर	મलા મૂંડા	२० सागर	२० सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	£.	२० सागर १ पृथक वर्ष २० सागर १ पृथक वर्ष २० सागर १ कोडपूर्व	६० सागर ३ कोडपूर्व ६० सागर ३ पृथक् वर्ष ६० सागर ३ कोडपूर्व
¥	Å	ų	५ पहली	ş	৭ पुरुष	२१ सागर	२१ सागर	भला भूंडा	२१ सागर	२१ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	6. 6.	२९सागर १ पृथक्वर्ष २९सागर १ पृथक्वर्ष २९सागर १ कोन्हपूर्व	६३ सागर ३कोडपूर्व ६३ सागर ३ पृथक् वर्ष ६३ सागर ३ कोडपूर्व

# 93६ मनुष्य में बारहवें अच्युत देवलोक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (४०)

					?	3			8			1	Ę	(9		=	Ę	90
गमा	२० द्वार नी संख्या	उपप	ात द्वार	परिम	।ण द्वार	संघयण द्वार	अव० भव	धारणी	अव० उत्त	तर वै०	संठा	ण६	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान–उ	इज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग द्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	चत्कृष्ट	٤	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	मूल	वैक्रिय	Ę	3	પ્	3	3	₹
٦	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	৭,২,३ জঘ <b>ী</b>	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भाग	९ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	१ शुक्ल	3	३ नियगा	३ नियमा	3	7
ų		৭ দৃথক্বৰ্ণ	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	<b>५.२.३</b> ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नों संख भाग	१ लाख योजन	१ समचौरंस	नामा प्रकार	৭ স্থাকল	ş	३ नियमा	३ नियमा	3	?
<b>G</b> .	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	रांख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	३ हाथ	आंगुल नॉ संख भाग	१ लाख योजन	१ समचौरंस	नाना प्रकार	৭ খ্যুকল	3	३ नियमा	३ नियमा	3	3

### १३७ मनुष्य में नौ ग्रैवेयक नां ऊपजै तेहनों यंत्र (४१)

ामा २० द्वार <b>नी</b> संख्या	<b>१</b> उपपा	त द्वार	परिमा	२ ग द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अः	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगः
अनै तेहनां नाम	जघन्य	<b>उ</b> त्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	₹
ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	९२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	२ हाथ	१ समचौरंस	१ शुक्ल	बहुलपणै ३ जीवाभिगम के अनुसार २	३ नियमा	३ नियमा	3	?
जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्व <b>र्ष</b> १ पृथक्व <del>र्ष</del> १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	৭,२,३ জपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	२ हाथ	१ रामचौरंस	१ शुक्ल	बहुलपणै ३ जीवाभिगम के अनुसार २	३ नियमा	३ नियमा	₹	₹
उत्कृष्ट नैं ओघिक     उत्कृष्ट नैं जघन्य     उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपू <del>र्व</del>	৭.২.३ ক্তদত্তী	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नो असंख भाग	२ हाथ	९ समचौरंस	१ शुक्ल	बहुलपणै ३ जीवाभिगम के अनुसार २	३ नियमा	३ नियमा	3	२

# १३८ मनुष्य में चार अनुत्तर विमान नां ऊपजै तेहनों यंत्र (४२)

ग २० द्वार नी संख्या	उपपार	। त द्वार	२ परिमाण	ा द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहर	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	হ জ্ञান–अङ	तान द्वार	६ योग द्वार	५० उपयोग
अनै तेहनां नाम	जघन्य	चत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę.	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ч.	3	3	?
ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् <b>वर्ष</b> १ पृथक् <b>वर्ष</b> १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	৭,२,३ <b>ऊ</b> पजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१ हाथ	9 समचौरंस	१शुक्ल	१ समदृष्टि	३ नियमा	0	3	3
जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जधन्य नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१ हाथ	9 समचौरंस	१ शुक्ल	१ समदृष्टि	३ नियमा	٥	3	3
उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पृथक् वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	१ कोडपूर्व १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	৭,२.३ জपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंखाभाग	१हाथ	१ समधौरंस	१ शुक्ल	१ समदृष्टि	३ नियमा	۰	3	

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्धात द्वार	9५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ हार	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुबं	: घ द्वार	नाणत्ता		भव	B	२० विध द्वार
8	8	ષ્	6	२	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	¥	4	५ पहली	3	৭ पुरुष	२९ सागर	२२ सागर	मला मूंडा	२१ सागर	२२ सागर	o	ર ૨ ૨	Eq Eq	२१ सागर १ पृथक वर्ष २१ सागर १ पृथक वर्ष २१ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर ३ को डपूर्व ६६ सागर ३ पृथक्वर्ष ६६ सागर ३ को डपूर्व
R	¥	ų	५् पहली	7	৭ ঘুকৰ	२१ सागर	२१ सागर	भला भूंडा	२१ सागर	२५ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	ξ, ξ,	२१ सागर १पृथक <b>वर्ष</b> २१ सागर १पृथक व <b>र्ष</b> २१ सागर १ कोडपूर्व	६३ सागर ३ कोडपूर्व ६३ सागर ३ पृथक् वर्ष ६३ सागर ३ कोडपूर्व
Å	¥	ц	५ पहली	?	৭ पुरुष	२२ सागर	२२ सागर	मला भूंडा	२२ सागर	२२ सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ξ, ξ,	२२ सागर १ पृथक्वर्ष २२ सागर १ पृथक्वर्ष २२ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर ३ कोडपूर्व ६६ सागर ३ पृथक् वर्ष ६६ सागर ३ कोडपूर्व

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	आयु	No द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनु	६ घं द्वार	नाणत्ता	भ	1	२० कायसंवेध	द्वार
. 8	R	ч	ly ly	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	सत्ता रूप ५ करण रूप ३	3	१पुरुष	२२ सागर	३१ सागर	भला भूंडा	२२ सागर	३१ सागर	0	२ २ २	Ę Ę	२२ सागर १ पृथक वर्ष २२ सागर १ पृथक वर्ष २२ सागर १ कोडपूर्व	६३ सागर ३ कोडपूर्व ६३ सागर ३ पृथक्वर्ष ६३ सागर ३ कोडपूर्व
8	Å	ų	सता रूप ५ करण रूप ३	3	१ पुरुष	२२ सागर	२२ सागर	मला भूंडा	२२ सागर	२२ सागर	२ आयु. अनुबंध	२ २ २	E E	२२ सागर १ पृथक वर्ष २२ सागर १ पृथक वर्ष २२ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर ३ कोडपूर्व ६६ सागर ३ पृथक् वर्ष ६६ सागर ३ कोडपूर्व
8	8	¥	सत्ता रूप ५ करण रूप ३	ર	१ पुरुष	३१ सागर	३१ सागर	भला भूंडा	३९ स्तागर	३१ सागर	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	ער ער ער	३१ सागर १ पृथक्वर्ष ३१ सागर १ पृथक्वर्ष ३१ सागर १ कोडपूर्व	६३ सागर ३ कोडपूर्व ६३ सागर ३ पृथक् वर्ष ६३ सागर ३ कोडपूर्व

Ŧ	११ ज्ञाद्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	ी आयु	_	१८ अध्यवसाय द्वार	१: अनुबं	६ घ द्वार	नाणत्ता	1 4	व	२ कायसं	
	8	R	પ્	(y	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
	8	R	4	सत्ता रूप ५	₹ .	१ पुरुष	३१ सागर	३३ सागर	भला	३१ सागर	३३ सागर		2	8	३१ सागर १ पृथक वर्ष	६६ सागर २ कोडपूर्व
				करण रूप ३				ŀ	भूंडा			0	7	R	३९ सागर १ पृथक वर्ष	६६ सागर २ पृथक्वर्ष
													7	8	३१ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर २ कोडपूर्व
	R	Ŗ	ધ્	सता रूप ५	7	१ पुरुष	३९ सागर	३१ सागर	भला	३१ सागर	३१ सागर	5	- P	8	३१ सागर १ पृथक वर्ष	६२ सागर २ कोडपूर्व
				करण रूप ३			i		भूंडा			आयु.	7	8	३१ सागर १ पृथंक वर्ष	६२ सागर २ पृथक् वर्ष
												अनुबंध	7	8	३१ सागर १ कोडपूर्व	६२ सागर २ कोडपूर्व
	R	8	ધ	सत्ता रूप ५	2	१ पुरुष	३३ सागर	३३ सागर	भला	३३ सागर	३३ सागर	2	7	8	३३ सागर १ पृथक्वर्ष	६६ सागर २ कोडपूर्व
				करण रूप ३					भूंडा			आयु,	२	×	३३ सागर १ पृथक्वर्ष	६६ सागर २ पृथक् वर्ष
			1									अनुबंध	२	R	३३ सागर १ कोडपूर्व	६६ सागर २ कोडपूर्व

गमा ३२३

# १३६ मनुष्य में सर्वार्थ-सिद्ध नां ऊपजै तेहनों यंत्र (४३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	9 त द्वार	परिभा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान-अ	ज्ञान द्वार ।	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	પ્	3	3	?
₹	ओघिक नैं ओघिक औघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पृथक्वर्ष १ पृथक्वर्ष १ कोडपूर्व	9 कोडपूर्व 9 पृथक्वर्ष 9 कोडपूर्व	१.२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	असंघयणी	आंगुल नों असंख भाग	१ हाथ	५ समधौरंस	৭ স্থাবল	१ समदृष्टि	३ नियमा	0	3	7

वाणव्यंतर में ५ ठिकाणां नां ऊपजै–असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय १, तिर्यंच युगलियो २, संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ३, मनुष्य युगलियो ४, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ५।

### १४० वाणव्यंतर में असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

ामा २० द्वार न	नीं संख्या	१ उपपात	द्वार	परिमा	१ गद्वार	३ संधयण द्वार	अवगाहन	र गद्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग <i>द्वा</i>
	-	जधन्य	उत्कृष् <b>ट</b>	जधन्य	उत्कृ <b>ष्ट</b>	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્	Ę	3	પ્	3	3	₹
ओधिक नै	नैं जघन्य 🖟	२० हजार वर्ष	पत्य नों असंख भाग १० हजार वर्ष पत्य नों असंख भाग	৭,२.३ জদতী	असंख ऊपजै	9 छवेटो	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	9 हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	۰	२ नियमा	२ वच काय	?
जघन्य नै	ने जघन्य <b>े</b>	१० हजार वर्ष	पत्य नों असंख भाग १० हजार वर्ष पत्य नों असंख भाग	৭.২.३ ক্ত <b>प</b> जै	असंख ऊपजै	9 छवेटो	आंगुलनों असंख भाग	९ हजार योजन	° हुंडक	३ पहली	१ मिध्या	0	२ नियमा	२ वच काय	7
. जत्कृष्ट व	मैं जघन्य	१० हजार वर्ष	पत्य नों असंख भाग १० हजार वर्ष पत्य नों असंख भाग	৭.২.३ ক্তদতী	असंख ऊपजै	9 छवेटो	आंगुलनों असंख माग	१ हजार योजन	9 हुंडक	३ पहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	२ वच काय	?

## १४९ वाणव्यंतर में तिर्यंच युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	। १ द्वार	२ परिमार	ग द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	६ ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग <i>द्व</i>
	अनै तेहनां नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	4	3	3	?
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष	१ पत्य १० हजार वर्ष	৭.২.३ জঘণী	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक <b>धनुष्य</b>	६गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	3	3
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	<b>१ प</b> ल्य	१पत्य	9,2,3	संख्याता कपजै	৭ বঅ ক্তঘজ	पृथक धनुष्य ऋषभ नाराच	६गाऊ	٩	४ समचौरंस	९ मिथ्या पहली	0	?	३ नियमा	2
8 4 8	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जेंघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	90 हजार वर्ष 90 हजार वर्ष 9 पल्य	१ पत्य १० हजार वर्ष १ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक <b>ध</b> नुष्य	१ हजार धनुष्य जाझी	१ समग्रीरंस	४ पहली	१ मिथ्या	0	२ नियमा	3	?
(9 C. E.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ पल्य	१ पत्य १० हजार वर्ष १ पत्य	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	पृथक चनुष्य	६ गाऊ	९ समचौरंस	४ पहली	१ मिथ्या	٥	२ नियमा	3	7

99 , संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	९३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	ĺ	१६ बंध द्वार	नाणता	भ	đ	1	२० वेध द्वार
8	8	ų	(g	7	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
,	R	ų	सता रूप ४ करण रूप ३	3	৭ পুক্ষ	३३ सागर	३३ सागर	मला भूंडा	३३ सागर	३३ सागर	0	२ २ २	२ २ २	३३ सागर १ पृथक वर्ष ३३ सागर १ पृथक वर्ष ३३ सागर १ कोडपूर्व	३३ सागर १ कोडपूर्व ३३ सागर १ पृथक्वर्ष ३३ सागर १ कोडपूर्व

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	. भ	đ	२० कायसंदे	
x	8	પ્	ig	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	ч	३ पहली	₹	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	o	२ २ २	<b>२</b> २ २	१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, पत्य नों असंख भाग	१ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग
8	Å	ų	३ पहली	?	१ नपुंसक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	३ आयु., अध्य. अनुबंध	२ २ २	२ २ २	९ अंतर्मु, १० हजार वर्ष ९ अंतर्मु, १० हजार वर्ष ९ अंतर्मु, पल्य नों असंख भाग	१ अंतर्मु, पल्य नों असंख भाग १ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, पल्य नों असंख भाग
8	8	ų	3 पहली	2	9 नपुंसक	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व पल्य नों असंख भाग	१ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व पत्य नों असंख भाग

११ ह्या द्वार	९२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9। आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	ł .	9६ बंध द्वार	नाणत्ता	¥	ाव	२० कायसंवेध द्व	गर
8	8	પ્	Ŀ	7	3	जघन्य	उत्कृ <b>ष्ट</b>	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	R	ų	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जाझो	३ पल्य	भला भूंडा	कोडपूर्व जाओ	३ पल्य	۰	۲ ۲	۶ ۲	१ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष	३ पल्य १ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष
R	R	ų	3 पहली	2	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	. १ पत्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	7	2	१ पत्य १ पत्य	३ पल्य १ पल्य
8	¥	ч	३ पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जा <b>झो</b>	कोडपूर्व जाझो	मला भूंडा	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	३ अव, आयु. अनुबंध	7 7 7	२ २ २	१ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझो १ कोडपूर्व जाझो	९ कोडपूर्व जाझो १ कोडपूर्व जाङ ९ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष ९ कोडपूर्व जाझो १ कोडपूर्व जा
¥	8	ц	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	2 2 2	۲ ۲ ۲	3 पत्य १० हजार वर्ष ३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य १ पल्य	३ पल्य १ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य १ पल्य

## १४२ वाणव्यंतर में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	) द्वार	२ परिमा	ण द्वार	३ संघयण द्वार		४ इना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इान-अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	९० उपयोग इ
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	3	ų	3	3	?
۹ ۲ ٤	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष १ पल्य	१ पत्य १० हजार वर्ष १ पत्य	१,२,३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę,	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	w	Ę	3	३भजना	३भजना	3	3
४ ५ ६	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ पल्य	१ पत्य १० हजार वर्ष १ पत्य	৭,२,३ ডঘর্গ	असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	९ हजार धनुष्य	Ę	४ यहली	१ मिथ्या	o	२ नियमा	3	7
ان د د	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ पल्य	१ पल्य १० हजार वर्ष १ पल्य	१.२.३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३भजना	३भजना	3	?

### १४३ वाणव्यंतर में मनुष्य युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा २० द्वार नी संख्या	उपपार	•	२ परिमाण	। द्वार	३ संघयण द्वार	1	४ ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ह ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगद्व
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	ξ.	3	Ч	3	3	?
<ul> <li>अोधिक नैं ओधिक</li> <li>ओधिक नैं जघन्य</li> </ul>	% हजार वर्ष % हजार वर्ष	१ पत्य १० हजार वर्ष	९,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	৭ বঅ	५ सौ धनुष्य जाझी	३ गाऊ	9 समचौरंस	४ पहली	१ मिथ्या	۰	२ नियमा	er v	2
3 ओधिक नैं उत्कृष्ट	9 पत्य	१ पत्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	9 दज	१ कोस	३ कोस	१ समग्रीरंस	४ पहली	9 मिथ्या	e	२ नियमा	er.	7
४ जघन्य नैं ओघिक ५ जघन्य नैं जघन्य ६ जघन्य नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष १ पत्य	१ यल्य १० हजार वर्ष १ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	9 वजा	५ सौ धनुष्य जाझी	५् सौ धनुष्य जाझी	9 समग्रौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	. 5
७ उत्कृष्ट नैं ओधिक ६ उत्कृष्ट नैं जधन्य ६ उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	% हजार वर्ष % हजार वर्ष १ पत्य	१ पल्य १० हजार वर्ष १ पल्य	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	<b>१</b> वज	3 गाऊ	3 गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	O	२ नियमा	3	5

### १४४ वाणव्यंतर में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात उपपात	। द्वार	२ परिमाप	ग द्वार	३ संघयण द्वार	अवगा	४ इना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	इान-अ	: ।ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोगः
		जधन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	ξ	3	4	3	3	1
۹ ۲ ۶	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ पल्य	१ पल्य १० हजार वर्ष १ पल्य	५.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् आंगुल	५ सौ घनुष्य	Ę	Ę	3	३ भजना	<b>३</b> भजना	3	?
•	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ पल्य	१ पल्य १० हजार वर्ष १ पल्य	9.2.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् आंगुल	पृथक आंगुल	Ę	Ę	3	o	३ भजना	3	3
τ,	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१० हजार वर्ष १० हजार वर्ष १ पल्य	९ पत्य ९० हजार वर्ष ९ पत्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	५ सौ धनुष्य	५ सौ घनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	3

99	45	93	98	१५	98	Ī	709	٩٩	di						0	
तंज्ञा द्वार	कषाय द्वार	इन्द्रिय द्वार	समुद्घात द्वार	वेदना द्वार	वैदे द्वार	आयु	द्वार	अध्यवसाय द्वार	अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	भ	<b>a</b>	कायसं	वेध द्वार	
8	8	પ્	(g	?	ą	जघ <b>न्य</b>	चत्कृ <b>ष्ट</b>	असंख्याता	जघन्य	<b>ज</b> ल्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	
	ĸ	ų	<b>५</b> पहली	7	3	अंतर्मु <b>हूर्त</b>	कोङपूर्व	मला भूंडा	अंतर्गुहूर्त	कोडपूर्व	o	ממת	11 11 11	१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, १ पत्य	४ कोडपूर्व ४ कोडपूर्व ४ कोडपूर्व	४ पल्य ४० हजार वर्ष ४ पल्य
8	ĸ	¥	३ पहली	7	ą	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	<b>अं</b> तर्गुहूर्त	६ अव, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान—अज्ञान, समु., आयु., अध्य., अनु.	~ ~ ~		१ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, १० हजार वर्ष १ अंतर्मु, १ पत्य	४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु. ४ अंतर्मु.	४ पत्य ४० हजार व <b>र्ष</b> ४ पत्य
×	Å	ц	<b>५</b> पहली	7	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भताभूंडा	कोडपूर्व	<b>को</b> डपूर्व	२ आयु, अनुबंध	ממת		१ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १ पत्य	४ कोडपूर्व ४ कोडपूर्व ४ कोडपूर्व	४ पल्य ४० हजार वर्ष ४ पल्य

११ ॥ द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>५६</sup> अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	भ	<del></del>	कायसंवे	<sup>10</sup> घ द्वार
8	8	4	U	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	પ્	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जाझो	३ पल्य	मला भूंडा	कोडपूर्व जाओ	३ पल्य	o	၃ ۲	२ २	९ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष	३ पल्य १ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष
8	8	ų	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	१ पत्य	३ पत्न्य	३ अव०, आयु, अनु.	ą	₹	१ पल्य १ पल्य	३ पल्य १ पल्य
8	¥	ધ્	3 पहली	3	२ स्त्री पुरुष	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	भला भूंडा	कोडपूर्व जाझो	कोडपूर्व जाझो	३ अव, आयु, अनुबंध	२ २ २	२ २ २	१ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझो १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व जाझो १ पत्य	१ कोडपूर्व जाझो १ पत्य १ कोडपूर्व जाझो १० हजारवर्ष १ कोडपूर्व जाझो १ पत्य
8	ß	પ્	३ पहली	ર	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	३ अव॰, आयु, अनुबंध	२ २ २	ર ર ર	३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य १० हजार वर्ष ३ पत्य १ पत्य	३ पल्य १ पल्य ३ पल्य १० हजार वर्ष ३ पल्य १ पल्य

११ ज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घातद्वार	१५् वेदनाद्वार	9६ वेदद्वार	आयु	१७ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुः	६ बंधद्वार	नाणता	भ	a		२० वेध द्वार
R	8	પ્	(9	ર	3	जघन्य	ব <b>ন্ফৃष्ट</b>	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	६ केवल वर्जी	7	3	पृथक् मास	कोडपूर्व	भला भूंडा	पृथ <b>ङ्ग</b> मास	कोडपूर्व	o	ર ર ર	13 13 13	१ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १ पत्य	४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ पत्य
8	8	ų	५् पहली	2	3	पृथक् मास	पृथक् मास	मता भूंडा	पृथक् मास	पृथक् मास	५् अव, ज्ञान, समुं, आयु, अनु.	२ २ २	נו נו	१ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १० हजार वर्ष १ पृथक् मास १ पत्य	४ पृथक् मास ४ पत्य ४ पृथक् मास ४० हजार वर्ष ४ पृथक् मास ४ पत्य
8	Я	ų	६ केवल वर्जी	3	ş	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव. आयु, अनुबंध	۲ ۲ ۲	U 11 U	१ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १० हजार वर्ष १ कोडपूर्व १ पल्य	४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ कोडपूर्व ४० हजार वर्ष ४ कोडपूर्व ४ पत्य

ज्योतिषी में ४ ठिकाणां नां ऊपजै — तिर्यंच युगलियो १, संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय २, मनुष्य युगलियो ३, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ४।

### १४५ ज्योतिषी में तिर्यंच युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपा	१ त द्वार	२ परिमाण	ा द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५् संदाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञान–अः	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगः
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	<b>उत्कृष्ट</b>	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	2
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	अधपाव पल्य अधपाव पल्य	१ पत्य १ लाख वर्ष अधपाव पत्य	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराद्य	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	9 समग्रौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	0	२ नियमा	ą	₹
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पत्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	१ समग्रीरंस	४ पहली	९ मिथ्या	۰	२ <sup>-</sup> नियमा	Э	3
પ્ર ધ્	जघन्य नैं ओघिक X गमा टूटा X गमा टूटा	अधपाव पल्य	अधपाव पल्य	৭২,३ ভ্ৰমতী	संख्याता ऊपजै	१वज्र ऋषभ नाराचे	पृथक् धनुष्य	१८ सौ धनुष्य जाझी	9 समग्रौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	3
() Ti E	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	अधपाव पल्य अधपाव पल्य १ पल्य १ लाख दर्ष	१ पल्य १ लाख वर्ष अध्याव पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष	५२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	9 वज्र ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	१ समयौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	0	? नियमा	3	?

### १४६ ज्योतिषी में मनुष्य युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	१ पात द्वार	परिमा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	t	४ ाहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	द ज्ञानअः	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	ય્	3	3	₹
9	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	अधपाव पत्य अधपाव पत्य	१ पत्य १ लाख वर्ष अघपाव पत्य	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	६ सौ धनुष्य जाझी	३ गाऊ	१ समयौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	۰	२ नियमा	3	7
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	१ पत्य १ लाख वर्ष	९ पत्य ९ लाख वर्ष	9.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वर्ज ऋषभ नाराच	9 गाऊ जाझी	३ गाऊ	9 समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	0	२ नियमा	э	7
8 4 4	जघन्य नैं ओघिक X गमा दूटा X गमा दूटा	अधपाव पल्य	अधपाव पल्य	५,२.३ ऊपजै	संख्यात! ऊपजै	९ वज ऋषभ नाराच	६ सौ धनुष्य जाझी	६ सौ घनुष्य जाझी	१ समयौरंस	४ पहली	९ मिथ्या	o	२ नियमा	3	7
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जधन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	अधमाव पत्य अधमाव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष अधपाव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वप्ज ऋषभ नाराच	३ गाऊ	३ गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	9 मिथ्या	o	२ नियमा	3	?

## १४७ ज्योतिषी में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

गमा	२० द्वार नी संख्या	<b>१</b> उपपात	। त द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहन	। द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–এর	ट ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	- 2
9 ? 3	ओधिक नैं ओधिक ओधिक नैं जघन्य ओधिक नैं उत्कृष्ट	अधपाव पत्य अधपाव पत्य १ पत्य १ लाखः वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष अधपाव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	৭.২.३ ক্ত <b>प</b> जै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	१ हजा <b>र</b> योजन	દ્	દ્	3 _	३ भजना	3 भजना	3	7
ક ધ્	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	अधपाव पल्य अधपाव पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष	१ पत्य १ लाख वर्ष अघपाव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	१,२,३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुत्स्नों असंख भाग	१हजार धनुष्य	Ę	४ पहली	9 मिध्या	٥	२ नियमा	3	7
{9 E E	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	अधपाव पत्य अधपाव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	९ पत्य ९ लाख वर्ष अधपाव पत्य ९ पत्य ९ लाख वर्ष	9.२.३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंखंभाग	१ हजार योजन	ξ	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	2

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	भ आयु	•	१८ अध्यवसाय द्वार	<sup>११</sup> अनुब	ध द्वार	नाणत्ता	2	ৰ	२० कायसंवे	
8	8	ų	19	<b>ર</b>	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	३ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	अधपाव पल्य	<b>३</b> पल्य	भला भूंडा	अधपाव पत्न्य	३ पल्य	0	<b>२</b> २	۲ ۲	अधपाव पत्य अधपाव पत्य अधपाव पत्य अधपाव पत्य	३ पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष ३ पत्य अधपाव पत्य
Я	8	ų	३ पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य १ लाख वर्ष	३ पल्य	भला भूंडा	१पल्य १ लाखः	३ पल्य 1र्ष	२ आयु. अनु.	?	२	९ पत्य ९ लाख वर्ष १ पत्य ९ लाख वर्ष	३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष
8	Å	પ્	३ पहली	ર	२ स्त्री पुरुष	अघपाव पल्य	<b>अध्</b> पाव पल्य	भला भूंडा	अधपा <b>व</b> पल्य	अधपा <b>व</b> पल्य	३ अव. आयु. अनु	₹	۲	अधयाव पत्य अधपाव पत्य	अधपाव पत्य अधपाव पत्य
8	Å	ų	3 पहली	3	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला मूंडा	३ फल्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	\$ ?	۲ ۲ ۲	३ पल्य अधपाव पल्य ३ पल्य अधपाव पल्य ३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष	३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष ३ पल्य अघपाव पल्य ३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9 आयु	-	१८ अध्यवसाय द्वार	98 अनुबं	ध घ द्वार	नाणत्ता	37	व		० वेध द्वार
8	8	પ્	(9	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	¥	ų	३ पहली	<b>२</b>	२ स्त्री पुरुष	अधपाव पत्य	३ पल्य	भला भूंडा	अधपाव पल्य	३ पल्य	0	ર ર	۲ ۲	अधपाव पत्य अधपाव पत्य अधपाव पत्य अधपाव पत्य	३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष ३ पल्य अधपाव पल्य
8	8	Ίζ	३ पहली	ર	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य १ लाख दर्ष	३ पल्य	भला भूंडा	१ पल्य १ लाख वर्ष	३ पल्य	, ३ अव, आयु. अनु.	₹	3	१ पल्य १ लाख वर्ष १ पल्य १ लाख वर्ष	३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष
8	8	ц	३ पहली	ર	२ स्त्री पुरुष	अध्यपाव पल्य	अधपाव पल्य	भला भूंडा	अधगाव पल्य	अधपाव पल्य	३ अवः, आयुः अनु	7	7	अधपाव पत्य अधपाव पत्य	अधपाव पत्य अधपाव पत्य
8	R	ц	३ पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	३ पत्न्य	३ पल्य	भला भूंडा	3 पत्न्य	३ पत्स्य	३ अव, आयु, अनुबंध	۲ ۲ ۲	ે ૨ ૨	३ पल्य अधपाव पल्य ३ पल्य अधपाव पल्य ३ पल्य अधपाव पल्य ३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष	३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष ३ पल्य अधपाव पल्य ३ पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१। आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	५६ अनुबंध		नाणता	24	व	२० कायसंदे	
8	8	પ્	y	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	५ पहली	२	ą	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	o	5 5	: ::	१ अंतर्मु, अधपाव पल्य	४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अघपाव पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष
- 8	A	ų	३ पहली	3	3	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भता	अंतर्गुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	ू अव., लेश्या, दृष्टि, ज्ञान—अज्ञान, समु. आयु. अध्य. अनु.	۲ ۲	4 13 15		४ अंतर्मु ४ पल्य४ लाख वर्ष ४ अंतर्मु ४ अधपाव पल्य ४ अंतर्मु ४ पल्य ४ लाख वर्ष
8	R	પ્	५ पहली	2	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भता भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध	ર ૨ ૨		१ कोडपूर्व अधभाव पत्य १ कोडपूर्व अधमाव पत्य १ कोडपूर्व १ पत्य १ लाख वर्ष	४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर् ४ कोडपूर्व ४ अघपाव पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष

## १४८ ज्योतिषी में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	9 1 द्वार	२ प <b>रि</b> माण	ा द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाहना	द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञान–अइ	द तान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ્	ξ	3	ધ્	3	3	?
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	अघपाव पत्य अघपाव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	१ पल्य १ लाख वर्ष अधपाव पल्य १ पल्य १ लाख वर्ष	৭.২.३ ক্ত <b>प</b> जै	संख्याता ऊपजै	ξ	पृथक् आंगुल	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	₹
૪ પ્	जघन्य नैं ओधिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	अध्याव पत्य अध्याव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	९ पल्य ९ लाख वर्ष अधपाद पल्य ९ पल्य ९ लाख वर्ष	৭.২.३ জঘজী	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् आंगुल	पृथक् आंगुल	Ę	Ę	3	३ भजना	३ भजना	3	3
(9 E §	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	अध्याव पत्य अध्याव पत्य १ पत्य १ लाख वर्ष	९ पल्य ९ लाख वर्ष अधपाव पल्य ९ पल्य ९ लाख वर्ष	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	ξ,	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	3

प्रथम दो देवलोक में ४-४ ठिकानां ना ऊपजै -- तियैच युगलियो १, संख्याता वर्ष नां सन्नी तियैच पंचेंद्रिय २, मनुष्य युगलियो ३, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ४, तीसरे से आठवें देवलोक तक २--२ ठिकानां नां ऊपजै-संख्याता वर्ष नां सन्नी तियैच पंचेंद्रिय १, संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य २, नौवें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध तक १-१ ठिकानां नां ऊपजै-संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य।

### १४६ पहले देवलोक में तिर्यंच युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (१)

गमा	२० द्वार नी संख्या		१ ात द्वार	२ परिमा	ग द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह-	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार		द अज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोगद्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	२
۹ २	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१ पत्य १ पत्य	३ पत्य १ पत्य	৭,২,३ জঘ <b>ল</b>	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	पृथक् घनुष्य	६ गाऊ	९ समयौरंस	४ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	?
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पल्य	३ पल्य	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	9 समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	7
8	जधन्य नैं ओधिक	१ पल्य	१पल्य	৭.২.३ ডঘরী	संख्याता ऊपजै	१ वज्र ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	२ गाऊ	१ समग्रौरंस	४ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	२
પૂ દ	X गमा दूटा X गमा दूटा	x x	x x	x x	x x	x x	X X	X X	x x	X X	X X	X X	X X	X X	Х
(9 C. E.	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ परुय १ परुय ३ परुय	३ पत्य १ पत्य ३ पत्य	৭,২,३ জঘ <b>ী</b>	रांख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	पृथक् घनुष्य	६ गाऊ	१ समग्रौरंस	४ पहली	२ सम्यक मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	२

### १५० दूजै देवलोक में तिर्यंच युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	१ उपपा	त द्वार	२ परिमा	ण द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ज्ञानः	८ अञ्चान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग इ
	, 4	जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	દ	Ę	3	ų	3	3	₹
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक औघिक नैं जघन्य	१ पत्य जाझो १ पत्य जाझो	३ पत्य १ पत्य जाझो	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	१ समग्रीरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	?
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पल्य	३ पल्य	१,२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	१ समयौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	?
8	जघन्य नैं ओधिक	१ पत्य जाझो	१ पत्य जाझो	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् ध <b>नुष्य</b>	२ गाऊ जाझी	१ समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	₹
ધ્ દ	X गमा दूटा X गमा दूटा	x x	×	x x	x x	x x	x x	X	x x	X X	X X	X X	X X	X X	X X
(9 %	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पत्य जाझो १ पत्य जाझो ३ पत्य	३ पल्य १ पल्य जाझो ३ पल्य	৭,२,३ ক্ত <b>प</b> जै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् धनुष्य	६ गाऊ	9 समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	\$

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	<sup>9</sup> ५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	५ अनुबं	६ घ द्वार	नाणत्ता		स्व	२ कायसं	
8	R	ધ્	ty.	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	६ पहली	२	ą	पृथक् मास	कोडपूर्व	भला भूंडा	पृथक् मास	कोडपूर्व	o	२ २ २	C 1/2	९ पृथक् मास्र अघपाव पत्य ९ पृथक् मास्र अघपाव पत्य ९ पृथक् मास्र ९ पत्य ९ लाख वर्ष	४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अधपाव पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष
8	8	¥	५ पहली	२	ą	पृथक् मास	पृथक् मास	भला भूंडा	पृथक् मास	पृथक् मास	५् अव., झान, समु. आयु, अनु.	२ २ २	C	१ पृथक् मास अघपाव पत्य	४ पृथक्मास ४ पत्य ४लाखवर्ष ४ पृथक्मास ४ अधपाव पत्य ४ पृथक्मास ४ पत्य ४ लाख वर्ष
8	8	ч	६ पहली	7	ą	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव., आयु, अनुबंध	२ २ २	5 C	१ कोडपूर्व अघपाव पत्य १ कोडपूर्व अघपाव पत्य १ कोडपूर्व १ पत्य १ लाख वर्ष	४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष ४ कोडपूर्व ४ अधपाव पत्य ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ लाख वर्ष

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	<sup>94</sup> आयु	_	९८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुब	६ ांध द्वार	नाणता	भव	ſ	२० कायसंदे	
8	8	ų	6	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	বন্চৃष्ट काल
8	Ą	ų	३ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	१पल्य	३ पल्य	۰	ર ર	۲ ۲	१पल्य १पल्य १पल्य १पल्य	३ पल्य ३ पल्य ३ पल्य १ पल्य
8	8	ų	३ पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु., अनु.	2	3	३ पल्य ३ पल्य	३ पल्य ३ पल्य
8	8	ų	३ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य	१ पल्य	भला भूंडा	१पल्य	१ पल्य	३ अव., आयु., अनु.	2	२	१ पत्न्य १ पत्न्य	१ पत्य १ पत्य
х	х	х	х	х	X	×	×	×	x	х	×	х	х	×	x
X	×	х	×	X	×	X	×	Х	×	×	×	X	X	×	×
8	R	ų	३ पहली	₹	२ स्त्री पुरुष	३ पल्प	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	२ २ २	२ २ २	३ पल्य १ पल्प ३ पल्य १ पल्य ३ पल्य ३ पल्य	३ पल्य ३ पल्य ३ पल्य १ पल्य ३ पल्य ३ पल्य

। ११ तंज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	9५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	१८ आयु		१८. अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नाणता	भव	ī	२० कायसंवे	
8	8	ધ્	6	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	4	३ पहली	?	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य जाझो	३ पल्य	मला भूंडा	१ पल्य जाझो	३ पल्य	O	<b>२</b> २	२ २	९ पत्य जाझो ९ पत्य जाझो ९ पत्य जाझो ९ पत्य जाझो	३ पत्य ३ पत्य ३ पत्य १ पत्य जाझो
8	R	4	३ पहली	ર	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	मला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु. अनु.	7	2	३ पल्य ३ पल्य	३ पत्य ३ पत्य
¥	ĸ	4	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	मला भूंडा	१ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	३ अव. आयु. अनु.	₹	3	१ पत्य जाझो १ पत्य जाझो	१ पत्य जाझो १ पत्य जाइ
X	l x	x	×	x	×	x	х	X	Х	х	×	×	×	×	х
x	х	х	х	×	×	×	х	x	х	×	x	×	×	×	X
.i	8	Ч	<b>३</b> पहली	3	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	मला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	२ आयु, अनुबंध	۲ ۲ ۲	२ २ २	३ पत्य १ पत्य जाझो ३ पत्य १ पत्य जाझो ३ पत्य ३ पत्य	३ पत्य ३ पत्य ३ पत्य १ पत्य जाझी ३ पत्य ३ पत्य

# १५१ पहले दूजे देवलोक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय ऊपजै तेहनों यंत्र (३)

			९ उपंपात द्वार		2		3	8	1	પ્	Ę	(g	u		٤	90
गमा	पह	ले में	दू	सरे में	परिमाण	द्वार	संघयण द्वार	अवगा	हना द्वार	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ল্লান-अङ	शन द्वार	योग द्वार	उपयोग <b>द्वार</b>
	जघन्यं	उत्कृष्ट	जाघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	?
9 2	१ पत्य १ पत्य २ सागर	२ सागर १ पल्य २ सागर	९ पत्य जा. ९ पत्य जा. २ सागर जा.	२ सागर जा. १ पत्य जा. २ सागर जा.	१.२,३ ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	દ	₹	३ भजना	३भजना	3	2
8 4 &	१ पत्य १ पत्य २ सागर	२ सागर १ पत्य २ सागर	१ पत्य जा. १ पत्य जा. २ सागर जा.	२ सागर जा. १ पल्य जा. २ सागर जा.	<b>१,२,३</b> ऊपजै	असंख ऊपजै	Ę	आंगुलनों असंख भाग	पृथक धनुष्य	Ę	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	3
(9 %	१ पत्य १ पत्य २ सागर	२ सागर १ घल्य २ सागर	९ पत्य जा. ९ पत्य जा. २ सागर जी.	२ सागर जा. १ पत्य जा. २ सागर जा	९,२,३ ऊपजै	असंख ऊपजै	દ	आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	₹

# १५२ प्रथम देवलोक में मनुष्य युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (४)

गमा	२० द्वार नी संख्या		१ त द्वार	२ परिमाण	द्वार	• ३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	६. ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्व
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	Ч	3	3	?
9 ?	ओघिक नैं ओधिक ओघिक नैं जघन्य	१ पत्य १ पत्य	३ पल्य १ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	वज ऋषभ नाराच	9 गाऊ	३ गाऊ	१ समयौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	ş	२
3	ओघिक नैं सत्कृष्ट	३ पल्य	३ पत्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	वज्र ऋषभ नाराच	३ गाऊ	३ गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	?
8	जघन्य नैं ओघिक	१ पल्य	१पल्य	৭.২.३ জঘ্ঞী	संख्याता ऊपजै	वज ऋषभ नाराच	9 गाऊ	१ गाऊ	१ समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	7
ų Ę	X X	x x	x x	x x	x x	x x	X X	X X	X X	×	X X	X X	X X	X X	X X
	उत्कृष्ट नैं ओधिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पल्य १ पल्य ३ पल्य	३ पत्य १ पत्य ३ पत्य	९,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	वज ऋषभ नाराच	३ गाऊ	३ गाऊ	९ समबौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	?

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	l .	9७ युद्धार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नःणता
8	Х	4	19	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट	
8	8	પ્	५ पहली	7	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	o
8	R	ų	३ पहली	3	3	अंतर्भुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्गुहूर्त	ट अव., लेश्या, दृष्टि, ज्ञान–अज्ञान, समु., आयु, अभ्य., अनु.
Å	¥	ц	५ पहली	7	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भता भूंडा	कोडपूर्व	कोउपूर्व	२ आयु, अनुबंध

### २० कायसंवेध द्वार

¥	व	पहले :	<del>Ť</del>	दूसरे	? में
ज.	ਚ.	जधन्य काल	उत्कृष्ट	ज्यन्य काल	उत्कृष्ट काल
7	ς,	१ अंतर्गु. १ पल्य	४ को अपूर्व द सागर	१ अंतर्भु, १ पत्य जाझो	४ कोडपूर्व ८ सागर जाझे
ş	ς.	१ अंतर्मु. १ पल्य	४ कोडपूर्व ४ पल्य	१ अंतर्मु, १ पत्य जाङो	४ कोडपूर्व ४ पत्य जाझो
₹	ζ	१अंतर्गु २ सागर	४ को डपूर्व ६ सागर	१ अंतर्मु, २ सागर जाझी	४ कोडपूर्व ८ सागर जाझे।
?	ς,	१अंतर्म्, १ पत्य	४ अंतर्मु = सागर	१अंतर्मु, १ पत्य जाझो	४ अंतर्मुं. ६ सागर जाझो
2	۲,	१ अंतर्मु. १ पत्य	४ अंतर्मु. ४ पल्य	१ अंतर्मु, १ पल्य जाझो	४ अंतर्मु. ४ पत्य जाझो
₹	c.	१ अंतर्मु २ सागर	४ अंतर्मु. ८ सागर	१ अंतर्मु. २ सागर जाझो	४ अंधर्मु. ८ सागर जाझो
₹	ξ,	१ कोडपूर्व १ पत्य	४ को डपूर्व ८ सागर	१ को डपूर्व १ पत्य जाझो	४ कोडपूर्व : सागर जाझो
₹	ζ,	१ को डपूर्व १ पत्य	४ को डपूर्व ४ पल्य	१ कोडपर्वू १ पत्य जाझे	४ कोडपूर्व ४ पत्य जाझो
?	ς.	१ कोडपूर्व २ सागर	४ कोडपूर्व ८ सागर	१ कोडपूर्व २ सागर जाझो	४ कोडपूर्व ८ सागर जाझे

११ संज्ञा द्वार	9२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	<b>१५्</b> वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	1	७ वुद्वार	<sup>१</sup> ६ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार ध द्वार	नाणता		<b>শ</b> ব		२० वेध द्वार
8	8	ų	6	ą	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
¥	8	ધ	३ पहली	ર	२ स्त्री पुरुष	१ पत्य	३ पल्य	भला भूंडा	१ पल्य	३ पल्य	0	२ २	२ २	१पत्य १पत्य १पत्य १पत्य	३ पत्य ३ पत्य ३ पत्य १ पत्य
8	8	પ	३ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	३ पत्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	३ अव., आयु., अनु.	2	2	३ पत्य ३ पत्य	३ पल्य ३ पल्य
Я	8	ч	३ पहली	¥	२ स्त्री पुरुष	१ पत्न्य	१पल्य	भला भूंडा	१षल्य	१ पल्य	३ अव. आयु. अनु.	2	?	१ पल्य १ पल्य	१ पत्य १ पत्य
X X	X X	X X	x x	X X	x x	x x	×	X X	X X	x x	X X	x x		X X	x x
8	8	ч	३ पहली -	3	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	३ अव., आयु, अनुबंध	२ २ २	२ २ २	३ पल्य १ पल्य ३ पल्य १ पल्य ३ पल्य ३ पल्य	३ पल्य ३ पल्य ३ पल्य १ पल्य ३ पल्य ३ पल्य

## १५३ दूसरे देवलोक मे मनुष्य युगलियो ऊपजै तेहनों यंत्र (५)

गमा	२० द्वार नी संख्या	<b>९</b> उपपात	। द्वार	२ परिमाण	द्वार	३ संघयण द्वार	४ अवग	} ाहना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	८ ज्ञान–अइ	तान द्वार	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वा
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ	जधन्य	उत्कृष्ट	Ę	Ę	3	પ્	3	3	२
۹ ۲	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य	१ पत्य जाझो १ पत्य जाझो	३ पल्य १ पल्य जाझो	৭,২,३ ক্রদতী	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	৭ गाऊ जाझी	३ गाऊ	9 समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	7
3	ओघिक नैं उत्कृष्ट	३ पत्य	३ पल्य	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	३ गाऊ	३ गाऊ	१ समयौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	2
8	जघन्य नैं ओघिक	१ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	৭.২.३ জঘ <b>া</b>	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराध	৭ गाऊ जाझी	१ गाऊ जाझी	9 समयौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	7
ų	×	х	х	х	×	х	x	x	X.	х	Х	×	х	х	х
Ę	x	х	х	x	х	х	×	Х	X	X	Х	X	Х	X	X
τ,	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नैं उत्कृष्ट	१ पल्य जाझो १ पल्य जाझो ३ पल्य		९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१वज ऋषभ नाराच	३ गाऊ	३ गाऊ	, १ समचौरंस	४ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	7

## १५४ पहले दूजै देवलोक में संख्याता वर्ष नां सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

		9	उपपात द्वार		२		ҙ	8		¥	Ę	9			Ę	90
गमा	पह	ले में	दूसरे	में	परिमाण	द्वार	संघयण द्वार	अवगाह	ना द्वार	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	योग द्वार	उपयोग द्व
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ્	3	ષ્	ą	3	२
9 2 3	१ पत्य १ पत्य २ सागर	२ सागर १ पत्य २ सागर	१ पल्य जाझे १ पल्य जाझे २ सागर जाझे	२ सागर जाझे १ पत्य जाझे २ सागर जाझे	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	r.	पृथक् आंगुल	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३ मजना	3	₹ <sup>*</sup>
٧ بر ڊ	१ पत्य १ पत्य २ सागर	२ सागर १ पल्य २ सागर	१ पल्य जाझो १ पल्य जाझो २ सागर जाझो	२ सागर जाझे १ पल्य जाझे २ सागर जाझे	9,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę	पृथक् आंगुल	पृथक आंगुल	Ę	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	₹
(9 5; §	१पत्य १पत्य १सागर	२ सागर १ पल्य २ सागर	१ पल्य जाझो १ पल्य जाझो २ सागर जाझो	२ सागर जाझो १ पल्य जाझो २ सागर जाझो	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	Ę,	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४भजना	३भजना	3	. ?

338

१९ मंज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार		७ इार	१८ अध्यवसाय द्वार	91 अनुब	ध द्वार	नाणत्ता		<u>।</u> व	२ कायसं	
8	y	પ્	ty	7	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	પ્	३ पहली	2	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य जाझो	३ पल्य	भला भूंडा	१ पल्य जाझो	३ पल्य	٥	२ २	२ २	१पल्य जाझो १पल्य जाझो १पल्य जाझो १पल्य जाझो	३ पल्य३ पल्य ३ पल्य१ पल्य जाझो
8	8	ધ્	३ पहली	7	२ स्त्री पुरुष	३ पल्य	३ पल्य	भला भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	३ अव., आयु., अनु.	7	2	३ पल्य ३ पल्य	३ पल्य३ पल्य
8	8	પ્	३ पहली	२	२ स्त्री पुरुष	१ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	भला भूंडा	९ पल्य जाझो	१ पल्य जाझो	३ अव., आयु., अनु.	3	2	१ पल्य जाझो १ पल्य जाझो	१ पत्य जाझो १ पत्य जाझो
Х	х	X	х	×	Х	х	×	×	×	x	Х	x	×	х	х
Х	Х	X	х	X	Х	Х	х	Х	Х	x	Х	X	х	x	х
R	8	ų	३ पहली	3	२ स्त्री पुरुष	३ पत्न्य	३ पल्य	भता भूंडा	३ पल्य	३ पल्य	३ अव., आयु. अनुबंध	२ २ २	२ २ २	३ पल्य १ पल्य जाझो ३ पान्य १ पल्य जाझो ३ पत्य ३ पल्य	३ पत्य ३ पत्य ३ पत्य ३ पत्य ३ पत्य १ पत्य जाझो ३ पत्य ३ पत्य

१५ ह्या द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	9७ आयु	द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नाणत्ता
8	8	પ્	ly ly	₹	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
Å	8	ų	६ केवल वर्जी	₹	ą	पृथक् मास	कोडपूर्व	मला भूंडा	पृथक् मास	कोडपूर्व	o
R	8	ų	५् पहली	2	ą	पृथक् मास	पृथक् मास	भला भूंडा	पृथक् मास	पृथक् मास	५् अव., ज्ञान समु. आयु, अनु.
¥ I	8	ч	६ केवल वर्जी -	2	ҙ	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव., आयु, अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

3	ाव	प्रथम देव	लोक में	दूसरे दे	वलोक में
जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
२ २ २	τ τ	१ पृथक् मास १ पत्य १ पृथक् मास १ पत्य १ पृथक् मास २ सागर	४ कोडपूर्व ८ सागर ४ कोडपूर्व ४ पत्य ४ कोडपूर्व ८ सागर	<ul><li>५ पृथक् मास १ पल्य जाझो</li><li>५ पृथक् मास १ पल्य जाझो</li><li>१ पृथक् मास २ सागर जाझो</li></ul>	४ कोडपूर्व : सागर जाझे ४ कोडपूर्व ४ पत्य जाझे ४ कोडपूर्व : सागर जाझे
२ २ २	c c	१ पृथक् मास १ पत्य १ पृथक् मास १ पत्य १ पृथक् मास २ सागर	४ पृथक् मास ८ सागर ४ पृथक् मास ४ पत्य ४ पृथक् मास ८ सागर	<ul><li>१ पृथक् मास १ पत्य जाझो</li><li>१ पृथक् मास १ पत्य जाझो</li><li>१ पृथक् मास २ सागर जाझो</li></ul>	४ पृथक् मास ८ सागर जाझे ४ पृथक् मास ४ पत्य जाझो ४ पृथक् मास ८ सागर जाझो
२ २ २	C C	१ कोडपूर्व १ पल्य १ कोडपूर्व १ पत्य १ कोडपूर्व २ सागर	४ कोडपूर्व ८ सागर ४ कोडपूर्व ४ पल्य ४ कोडपूर्व ८ सागर	१ कोडपूर्व १ पत्य जाझो १ कोडपूर्व १ पत्य जाझो १ कोडपूर्व २ सागर जाझो	४ कोडपूर्व द सागर जाझे ४ कोडपूर्व ४ पत्य जाझे ४ कोडपूर्व द सागर जाझे

# १५५ तीजे चौथे पांचवें देवलोक में संख्याता वर्ष नां सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (७)

T.			٩	<b>उपपात</b> द्वा	₹			₹	3	8		. ધ	Ę	<u> </u>	E.	<del></del>	६ योग द्वार	१० उपयोग द्वार
मा	तीस	रमे	चौथे	में	पांच	वे में	परि	रेमाण द्वार	संघयण द्वार	अवगाह	ना द्वार	संठाण द्वार	लेश्या द्वार	दृष्टि द्वार	ज्ञान-अङ	แกลเง	याग श्रार	3441180
<u>ज</u>	घन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ	3	પ્	3	3	?
२	सा.	७ सागर २ सागर ७ सागर	२सा. जा	७ सा. जा. २ सा. जा. ७ सा. जा.	७ सा.	1	9.२.३ फपजै	संख <b>या</b> असंख ऊपजै	तीजै चौथे देवलोक में ५ संघयणी ऊपजै	आगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	Ę	Ę,	3	३ भजना	३भजना	, 3	3
5 t	सा.	७ सा. २ सा. ७ सा.	२ सा. जा २ सा. जा ७ सा. जा	७ सा. जा. २ सा. जा. ७ सा. जा.	७ सा.	i .	9,२.३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै	पांचवे देवलोक में ५ संघयणी ऊपजै	आंगुलनों असंख माग	पृथ <b>क्</b> धनुष्य	Ę	५ पहली	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	3	3
. 2 . 2		२ सा.	२ सा. जा २ सा. जा ७ सा. जा	७ सा. जा. २ सा. जा. ७ सा. जा.	७ सा.	ŧ	९२,३ ऊपजै	संख या असंख ऊपजै		आंगुलनों असंख भाग	१ हजार योजन	ξ	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	?

# १५६ छठे सूं आठवें देवलोक में संख्याता वर्ष नों सन्नी तिर्यंच ऊपजै तेहनों यंत्र (८)

गमा	छठे में	ì	सातवें में	१ उपपा	त द्वार आठवे में		परिभा	२ ण द्वार	३ संघयण द्वार	प्र अवगा	इना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	্ জান–अङ	ान द्वार	६ योग द्वार	% उपयोग द्वार
		उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जयन्य	उत्कृष्ट	દ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	દ	3	પ્	3	3	3
5	% सागर	१४ सागर १० सागर १४ सागर	१४ सागर १४ सागर १७ सागर	९७ सागर १४ सागर ९७ सागर	१७ सा.		৭২.३ ডঘণী	संख या असंख ऊपजै	छठे देवलोक में ५ संघयणी ऊपजै	आंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	Ę	Ę	3	३ भजना	३भजना	3	₹
¥ 4	१० सागर	१४ सागर १० सागर १४ सागर	१४ सागर १४ सागर १७ सागर	९७ सागर १४ सागर ९७ सागर	१७ सा.	1	ऊप जै	संख या असंख उपजै	सातवें आंठवें देवलोक में ४ संघयणी ऊपजै	आंगुलनॉ असंख भाग	पृथक् घनुष्य	Ę	Ę	२ सम्यक् मिथ्या	२ नियमा	२ नियमा	ą	\$
-	% सागर	१४ सागर १० सागर १४ सागर	१४ सागर १४ सागर १७ सागर	१७ सागर १४ सागर १७ सागर	१७ सा.		1 .	संख या असंख ऊपजै		आंगुलनों असंख भाग	हजार योजन	Ę	Ę	3	३भजना	३भजना	3	3

338

	99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	93 इन्द्रिय द्वार	9४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	99 आयु		१८ अध्यवसाय द्वार	9६ अनुबंध	द्वार	नाणत्ता
4	8	8	ષ્	· ·	?	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
		R	ધ્	. ५ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	भला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	o
-	8	R	પ્	३ पहली	3	3	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	्ट् अव., लेश्या, दृष्टि, ज्ञान—अज्ञान, समु., आयु., अघ्य, अनु.
_	¥	R	પ્	५ पहली	2	3	कोडपू <b>र्व</b>	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

	भव		तीसरे दे	वलोक में	चौथे दे	वलोक में	पांचवें देव	लोक में
गमा	ज.	ज.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 7 3	२ २ २	E 0 E	१ अंतर्मुं, २ सामर १ अंतर्मुं, २ सामर १ अंतर्मुं, ७ सागर	४ को डपूर्व २८ सागर ४ को डपूर्व ८ सागर ४ को डपूर्व २८ सागर	१अंतर्मु. २ सागर जाझो १अंतर्मु. २ सागर जाझो १अंतर्मु. ७ सागर जाझो	४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो	१ अंतर्मुं. ७ सागर १ अंतर्मुं, ७ सागर १ अंतर्मुं, १० सागर	४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर
४ ५ ६	२ २ २	с с	9 अंतर्मुं, २ सागर 9 अंतर्मुं, २ सागर 9 अंतर्मुं, ७ सागर	४ अंतर्मु. २८ सागर ४ अंतर्मु. ८ सागर ४ अंतर्मु. २८ सागर	१अंतर्मुं. २ सागर जाझो १अंतर्मुं. २ सागर जाझो १अंतर्मुं. ७ सागर जाझो	४ अंतर्मु. २८ सागर जाझो ४ अंतर्मु. ८ सागर जाझो ४ अंतर्मु. २८ सागर जाझो	१ अंतर्मुं. ७ सागर १ अंतर्मुं. ७ सागर १ अंतर्मुं. १० सागर	४ अंतर्मु. ४० सागर ४ अंतर्मु. २८ सागर ४ अंतर्मु. ४० सागर
(9 TC F	२ २ २		१ कोडपूर्व २ सागर १ कोडपूर्व २ सागर १ कोडपूर्व ७ सागर	४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर	१ कोडपूर्व २ सागर जाझो १ कोडपूर्व २ सागर जाझो १ कोडपूर्व ७ सागर जाझो	४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व ८ सागर जाझो ४ कोडपूर्व २८ सागर जाझो	१ कोडपूर्व ७ सागर १ कोडपूर्व ७ सागर १ कोडपूर्व १० सागर	४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	१३ इन्द्रिय द्वार	98 समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	<b>१७</b> आयु		<sup>१८</sup> अध्यवसाय द्वार	९: अनुबं	६ घद्वार .	नाणता
	8	ષ્	6	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	
- <u> </u>	¥	ų	५ पहली	3	3	अंतर्गुहूर्त	कोडपूर्व	मला भूंडा	अंतर्मुहूर्त	कोडपूर्व	0
¥	8	ų	३ पहली	२	3	अंत <b>र्मुहूर्त</b>	अंतर्मुहूर्त	भला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	७ अव., दृष्टि ज्ञान- अज्ञान, समु, आयु, अध्य. अनु.
*	8	· <b>પ્</b>	५ पहली	२	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	२ आयु, अनुबंध

#### २० कायसंवेध द्वार

	भव		छठे देवलो	<b>क</b> में	सातवें	देवलोक में	आठवें दे	वलोक में
गमा	ज.	ਚ.	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
9 ? 3	२ २ २	טטט	१ अंतर्मु, १० सागर १ अंतर्मु, १० सागर १ अंतर्मु, १४ सागर	४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर	१ अंतर्मु. १४ सागर १ अंतर्मु. १४ सागर १ अंतर्मु. १७ सागर	४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर	१ अंतर्मु, १७ सागर १ अंतर्मु, १७ सागर १ अंतर्मु, १८ सागर	४ को उपूर्व ७२ सागर ४ को उपूर्व ६८ सागर ४ को उपूर्व ७२ सागर
ક મ ૪	<b>?</b> ?	ט ט ט	१ अंतर्मु, १० सागर १ अंतर्मु, १० सागर १ अंतर्मु, १४ सागर	४ अंतर्मु, ५६ सागर ४ अंतर्मु, ४० सागर ४ अंतर्मु, ५६ सागर	१ अंतर्मु, १४ सागर १ अंतर्मु, १४ सागर १ अंतर्मु, १७ सागर	४ अंतर्मु. ६८ सागर ४ अंतर्मु. ५६ सागर ४ अंतर्मु. ६८ सागर	१ अंतर्मु, १७ सागर १ अंतर्मु, १७ सागर १ अंतर्मु, १८ सागर	४ अंतर्मु. ७२ सागर ४ अंतर्मु. ६८ सागर ४ अंतर्मु. ७२ सागर
(g) T Ę	र २ २	ניני	१ कोडपूर्व १० सागर १ कोडपूर्व १० सागर १ कोडपूर्व १४ सागर	४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर	९ कोडपूर्व ९४ सागर ९ कोडपूर्व १४ सागर ९ कोडपूर्व ९७ सागर	४ को डपूर्व ६८ सागर ४ को डपूर्व ५६ सागर ४ को डपूर्व ६८ सागर	१ कोडपूर्व १७ सागर १ कोडपूर्व १७ सागर १ कोडपूर्व १८ सागर	४ को डपूर्व ७२ सागर ४ को डपूर्व ६८ सागर ४ को डपूर्व ६२ सागर

www.jainelibrary.org

# १५७ तीजै सूं बारहवें देवलोक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (६)

गमा	तीर	रे में	चौथे	<del>μ</del>	पांचवे	Ř	छवे	में	सात	में में	आव	ह्यें में	नौवें	में	दसवें	में	ग्यारहवें	में	बार	हवें में
- "	ज.	<b>હ</b> .	জ.	હ.	ज.	₹.	ज.	₹.	ज.	ਚ.	ज,	ਚ.	ज.	₹.	'ডা.	હ.	ज.	ૅ.	ज.	ਚ.
ओघिक नै ओधिक	२ सा.	७ सा.	२ सा, जा.	७ सा. जा.	(9 <del>TA</del> I.	90 <del>11</del> 1.	<b>%</b> सा.	१४ सा.	१४ सा.	969 ₹11.	9७ सा.	१८ सा. १७ सा.	१८ सा. १८ सा.	9६ सा 9∈ सा	9६ सा. 9६ सा.	२० सा. १६ सा.	२० सा. २० सा.	२१ सा. २० सा.	२१ सा. २१ सा.	
ओधिक नै जघन्य ओधिक नै उत्कृष्ट	२ सा. ७ सा.	२ सा. ७ सा.	२ सा. जा. ७ सा. जा.	२ सा. जा. ७ सा. जा.	७ सा. १० सा.	16 AI.	% सा. १४ सा.	90 सा. 98 सा.	१४ स्त्रा. १७ सा.	98 सा. 9७ सा.	% सा. ५८, सा.	भुक्ता. भुक्तसम्	१६ सा. १६ सा.	न्द्र रा। १६ सा.	२० सा.	२० सा.	२१ सा.	२१ सह	२२ सा.	1
जघन्य नै ओधिक	₹₹Т.	७ सा.	२ सा. जा.	७ सा. जा.	१९ सत्त.	<b>%</b> सा.	90 HI.	98 <del>सा</del> .	१४ सा	१७ सा.	१७ सा.	<b>9</b> ८ सा.	% सा.	१६ सा.	१६ सा.	२० सा.	२० सा.	२१ सा.		
जधन्य नै जधन्य	3 ≰41.	२ सा.	२ सा. जा.	२ सा. जा.	७ सा	७ सा. १० सा.	१० सा. १४ सा.	१० सा. १४ सा.	98 सा. 99 सा.	१४ सा. १७ सा.	9७ सा. ९८ सा.	969 स्मा. १८ सा.	१८ सा. १६ सा.	9दसा १६सा	9६ सा. २० सा.	9६ सा. २० सा.	२० सा. २१ सा.	२० सा. २१ सा.	२१ सा. २२ सा.	1
जधन्य नै उत्कृष्ट	(9 <del>(1</del> 1.	७ सा.	७ सा. जा.	७ सा जा.	१० सा.					ļ			-	१६ सा.	१६ सा.	₹ <del>(</del> 1,	<b>२० सा</b> .	२१ सा.	२१ सा.	20
उत्कृष्ट नै ओघिक उत्कृष्ट नै जधन्य	२ सा. २ सा.	७ सा. २ सा.	२ सा.जा. २ सा.जा.	७ सा.जा. २ सा.जा.	७ सा. ७ सा.	% सा. ७ सा.	१० सा. १० सा.	9४ सा. १० सा.	98 सा. 98 सा.	9७ सा. 98 सा.	919 सा. 919 सा.	9८ सा. १७ सा.	१८ सा. १८ सा.	भद्रसा. भ≂्रसा	नद्र सा. नद् सा.	95, <del>सा</del> .	२० सा.	२० सा.	२१ सा	79
उत्कृष्ट न अवन्य उत्कृष्ट <b>नै उत्कृ</b> ष्ट		७ सा.	७ सा. जा.	७ सा. जा.	9o ₹1i.	90 <del>र</del> ा.	98 ₹II.	१४ सा.	१७ सा.	१७ सा.	<b>१८,</b> सा.	१८, सा.	9 <b>६ ₹</b> 11.	<b>५६ स</b> ा.	२० सा.	२० सा.	२१ सा.	२१ सा.	र२ स⁴.	₹

							***					२० कायसंवेध द्वार
T			तीसरे	! <del>Ť</del>	चौथे में		पांचवें ग	À	र्म र्हत		सातवे	Ť
" L	भव ज.	_	ज.	₫.	স.	ਚ.	ਯੋ.	₹.	'স.	₹.	স.	₹.
	२ २	ъ с	९ पृथक् वर्ष २ सागर ९ पृथक् वर्ष २ सागर ९ पृथक् वर्ष ७ सागर	४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व ८ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर	९ ष्ट्रथक् वर्ष २ सा. जा. ९ ष्ट्रथक् वर्ष २ सा. जा. ९ ष्ट्रथक् वर्ष ७ सा. जा.	४ कोडपूर्व २८ सा. जा. ४ कोडपूर्व ६ सा. जा. ४ कोडपूर्व २८ सा. जा.	१ पृथक् वर्ष ७ सागर १ पृथक् वर्ष ७ सागर १ पृथक् वर्ष १० सागर	४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर	९ पृथक वर्ष १० सागर ९ पृथक वर्ष १० सागर ९ पृथक वर्ष १४ सागर	४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर	१ पृथक् वर्ष १४ सागर १ पृथक् वर्ष १४ सागर १ पृथक् वर्ष १७ सागर	४ कोडपूर्व ६८ सगर ४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ कोडपूर्व ६८ साग
	3	ט ט	९ पृथक् वर्ष २ सागर ९ पृथक् वर्ष २ सागर ९ पृथक् वर्ष ७ सागर	४ पृथक् वर्ष २८ सागर ४ पृथक् वर्ष ८ सागर ४ पृथक् वर्ष २८ सागर	१ पृथक् वर्ष २ सा. जा. १ पृथक् वर्ष २ सा. जा. १ पृथक् वर्ष ७ सा. जा.	४ पृथक् वर्ष २८ सा. जा. ४ पृथक् वर्ष ६ सा. जा. ४ पृथक् वर्ष २८ सा. जा.	९ पृथक् वर्ष ७ सागर ९ पृथक् वर्ष ७ सागर ९ पृथक् वर्ष ७० सागर	४ पृथक् वर्ष ४० सागर ४ पृथक् वर्ष २८ सागर ४ पृथक् वर्ष ४० सागर	९ पृथक वर्ष ५० सागर ९ पृथक वर्ष ५० सागर ९ पृथक वर्ष ९४ सागर	४ पृथक् वर्ष ५६ सागर ४ पृथक् वर्ष ४० सागर भ पृथक् वर्ष ५६ सागर	१ पृथक् वर्ष १४ सागर १ पृथक् वर्ष १४ सागर १ पृथक् वर्ष १७ सागर	४ पृथक् वर्ष ६८ सा ४ पृथक् वर्ष ५६ सा ४ पृथक् वर्ष ६८ सा
	2 2 2	U U	१ कोडपूर्व २ सागर १ कोडपूर्व २ सागर १ कोडपूर्व ७ सागर	४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व २ सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर	१ कोडपूर्व २ सा. जा. १ कोडपूर्व २ सा. जा. १ कोडपूर्व ७ सा. जा.	४ कोडपूर्व २८ सा. जा. ४ कोडपूर्व ८ सा. जा. ४ कोडपूर्व २८ सा. जा.	१ कोडपूर्व ७ सागर १ कोडपूर्व ७ सागर १ कोडपूर्व १० सागर	४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व २८ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर	१ कोडपूर्व १० सागर १ कोडपूर्व १० सागर १ कोडपूर्व १४ सागर	४ कोडपूर्व ५६ सागर ४ कोडपूर्व ४० सागर ४ कोडपूर्व ५६ सागर	१ कोडपूर्व १४ सागर १ कोडपूर्व १४ सागर १ कोडपूर्व १७ सागर	४ कोडपूर्व ६८ सा ४ कोडपूर्व ५६ सा ४ कोडपूर्व ६८ सा

ч	२ रेमाण द्वार	३ संघयण द्वार ६	अवग	४ गहना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	ল্লান–সং	द ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार	११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	<sup>9</sup> 4् वेदना द्वार	<sup>9६</sup> वेद द्वार	l	१७ द्वार	9८ अध्यवसाय द्वार	१६ अनुबंध		नाणत्ता
<b>्रै</b> जघ≈	उत्कृष्ट	Ì	जघन्य	उत्कृष्ट	ξ,	Ę	3	પ્	3	3	₹	8	8	4	to .	3	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जधन्य	उत्कृष्ट	
१,२,३ <b>क</b> पजै	संख्याता ऋपजै	तीजै बौथे ६ संघयणी ऊपजै पांचमै छठै ५	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	દ	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	3	8	¥	ų	६ केवल वर्जी	3	3	पृथक् वर्ष	कोड पूर्व	भला भूंडा	पृथक वर्ष	कोड पूर्व	٥
१.२.३ ऊपजै	F .	संधयणी ऊपजै सातमैं आठमैं ४ संघयणी ऊपजै नवमा सूं बारमैं	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	દ	દ્	3	४ শতানা	३ भजना	3	2	8	8	ધ	६ केवल वर्जी	3	3	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	वर्ष वर्ष	३ अव. आयु. अनु.
१,२,३ क्रयजै	संख्याता ऊपजै	३ संघयणी ऊपजै।	५्सी धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	7	8.	8	ધ	६ केवल वर्जी	7	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव. आयु, अनु.

ые	वें में	भट	₹	नौ	वे में	दर	नवें में	<b>ग्यार</b> ह	ăř	बारः	इवें में
<b>ਯ</b> .	<i>a</i>	ज.	₹.	ज.	₹.	ज.	ं उ.	ज.	उ.	ਯ.	₹.
। पृथक् वर्ष १७ सागर । पृथक् वर्ष १७ सागर । पृथक् वर्ष १८ सागर	४ कोडपूर्व ६८ सागर	3	b	२ पृथक् वर्ष ९८ सागर २ पृथक् वर्ष ९८ सागर २ पृथक् वर्ष १६ सागर	४ कोडपूर्व ५४ सागर	२ पृथक् वर्ष १६ सागर २ पृथक् वर्ष १६ सागर २ पृथक् वर्ष २० सागर	४ कोडपूर्व ५७ सागर	२ पृथक् वर्ष २० सागर २ पृथक् वर्ष २० सागर २ पृथक् वर्ष २९ सागर	४ कोडपूर्व ६० सागर	२ पृथक वर्ष २१ सागर २ पृथक वर्ष २१ सागर २ पृथक वर्ष २२ सागर	४ कोडपूर्व ६३ सागर
। पृथक् वर्ष १७ सागर	४ पृथक् वर्ष ६८ सागर	3	ŧ9	२ पृथक् वर्ष १८ सागर	४ पृथक् वर्ष ५७ सागर ४ पृथक् वर्ष ५४ सागर ४ पृथक् वर्ष ५७ सागर	२ पृथक् वर्ष १६ सागर	४ पृथक् वर्ष ५७ सागर	२ पृथक् वर्ष २० सागर	४ पृथक् वर्ष ६० सागर	२ पृथक वर्ष २१ सागर	४ पृथक् वर्ष ६३ सा.
कोडपूर्व १७ सागर	४ कोडपूर्व ७२ सागर ४ कोडपूर्व ६८ सागर ४ कोडपूर्व ७२ सागर	1	9	२ कोडपूर्व १८ सागर २ कोडपूर्व १८ सागर २ कोडपूर्व १६ सागर	४ कोडपूर्व ५४ सागर	२ कोडपूर्व १६ सागर २ कोडपूर्व १६ सागर २ कोडपूर्व २० सागर	४ कोडपूर्व ६० सागर ४ कोडपूर्व ५७ सागर ४ कोडपूर्व ६० सागर	२ कोडपूर्व २० सागर	४ कोडपूर्व ६३ सागर ४ कोडपूर्व ६० सागर ४ कोडपूर्व ६३ सागर	२ कोडपूर्व २१ सागर २ कोडपूर्व २१ सागर २ कोडपूर्व २२ सागर	४ कोडपूर्व ६६ सागः ४ कोडपूर्व ६३ सागः ४ कोडपूर्व ६६ सागः

गमा ३३६

## १५८ नौ ग्रैवेयक में संख्याता वर्ष नों सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१०)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उपपात	१ १ द्वार	परिमाण्	? गद्वार	३ संघयण द्वार	४ अवगाह	ना द्वार	५ संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टि द्वार	् ज्ञान-अ	: ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	जधन्य	उत्कृष्ट	ξ	Ę	3	ધ્	3	3	₹.
2	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जघन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३१ सागर	३९ सागर २२ सागर ३९ सागर	৭.২.३ জঘ <b>ল</b>	संख्याता ऊपजै	२ वज ऋषम नाराच, ऋषम नाराच	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	7	4
ų	जघन्य नैं ओघिक जघन्य नैं जघन्य जघन्य नै उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३१ सागर	३९ सागर २२ सागर ३९ सागर	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	२ वज्र ऋषभ नाराच, ऋषभ नाराच	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	Ę	ધ	w	४ भजना	३ भजना	3	2
г.	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	२२ सागर २२ सागर ३९ सागर	३९ सागर २२ सागर ३९ सागर	९.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	२ वजं ऋषभ नाराच, ऋषभ नाराच	५ सौ घनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	દ્	3	४ भजना	३ भजना	3	2

## १५६ चार अनुत्तर विमान में सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (११)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप <sup>ए</sup> जघन्य	९ ात द्वार उत्कृष्ट	२ परिमाण जधन्य	द्वार <i>उत्कृष्ट</i>	३ संघयण द्वार ६	अव <b>ग</b> जधन्य	४ गहना द्वार उत्कृष्ट	५ संठाण द्वार ६	६ लेश्या द्वार ६	७ दृष्टि द्वार ३	इत-अ - ५	ज्ञान द्वार ३	६ योग द्वार ३	% उपयोगद्वार २
9 7 3	ओघिक नैं ओघिक ओघिक नैं जधन्य ओघिक नैं उत्कृष्ट	३१ सागर ३१ सागर ३३ सागर	३३ सागर ३९ सागर ३३ सागर	१.२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	৭ বঅ ऋषभ নাरাच	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	ξ	Ę	э	४ भजना	३ भजना	æ	?
४ ५ ६	जधन्य नैं ओधिक जधन्य नैं जधन्य जघन्य नैं उत्कृष्ट	३९ सागर ३९ सागर ३३ सागर	३३ सागर ३१ सागर ३३ सागर	৭.২.২ ক্তদজী	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋषभ नाराच	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	?
(g = - 	उत्कृष्ट नैं ओघिक उत्कृष्ट नैं जघन्य उत्कृष्ट नै उत्कृष्ट	३१ सागर ३१ सागर ३३ सागर	३३ सागर ३५ सागर ३३ सागर	१,२,३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज्र ऋषभ नाराच	५ सौ घनुष्य	५ सौ धनुष्य	ξ	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	?

१६० सर्वार्थिसिद्ध में सन्नी मनुष्य ऊपजै तेहनों यंत्र (१२)

गमा	२० द्वार नी संख्या	उप	9 पात द्वार	२ परिमाध	ग द्वार	३ संघयण द्वार	अवगाह	४ ना द्वार	५् संठाण द्वार	६ लेश्या द्वार	७ दृष्टिद्वार	द ज्ञान–अ	ज्ञान द्वार	६ योग द्वार	90 उपयोग द्वार
		जधन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	<b>ন্ত</b> ক্	ξ	जघन्य	उत्कृष्ट	Ę	ξ,	, 3	પ્	3	3	3
9	ओधिक नैं ओधिक	३३ सागर	३३ सागर	৭,२.३ ডদ্বী	संख्याता ऊपजै	१ वज्र ऋष्म नाराच	पृथक् हाथ	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	3
8	जघन्य नैं ओघिक	३३ सागर	३३ सागर	१,२.३ ऊपजै	संख्याता ऊपजै	१ वज ऋ <b>षभ</b> नाराच	पृथक् हाथ	पृथक् हाथ	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	<b>3</b> /···
(9	उत्कृष्ट नैं ओघिक	३३ सागर	३३ सागर	9,2,3 क्रयजै	संख्याता ऊपजै	९ वज्र ऋषभ नाराच	५ सौ धनुष्य	५ सौ धनुष्य	Ę	Ę	3	४ भजना	३ भजना	3	3

१९ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५् वेदना द्वार	9६ वेद द्वार	9 आयु	७ [ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुब	६ ांध द्वार	नाणत्ता	भव	ī		o वेध द्वार
8	8	ધ	- 19	2	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जधन्य काल	उत्कृष्ट काल
8	8	ų	६ केवल वर्जी	3	3	पृथक् वर्ष	कोडपूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोडपूर्व	o	3 3	. (g (g (g	२ पृथक् वर्ष २२ सागर २ पृथक् वर्ष २२ सागर २ पृथक् वर्ष ३१ सागर	४ कोडपूर्व ६३ सागर ४ कोडपूर्व ६६ सागर ४ कोडपूर्व ६३ सागर
8	Å	ч	<b>६</b> केवल वर्जी	2	3	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अव आयु, अनु	3 3 3		२ पृथक् वर्ष २२ सागर २ पृथक् वर्ष २२ सागर २ पृथक् वर्ष ३१ सागर	४ पृथक्वर्ष ६३ सागर ४ पृथक्वर्ष ६६ सागर ४ पृथक्वर्ष ६३ सागर
8	8	ų	६ केवल वर्जी	₹.	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव, आयु, अनु.	*****		२ कोडपूर्व २२ सागर २ कोडपूर्व २२ सागर २ कोडपूर्व ३१ सागर	४ कोडपूर्व ६३ सागर ४ कोडपूर्व ६६ सागर ४ कोडपूर्व ६३ सागर

99 संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	<b>५३</b> इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्धात द्वार	१५् वेदना द्वार	१६ वेद द्वार	1	७ इहार	१८ अध्यवसाय द्वार	9 अनुब	६ iध द्वार	नाणत्ता	3	ाव .		२० एसंवेध द्वार
8	8	ų	(9	२	3	जधन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट	1	जघन्य	उत्कृष्ट	जाघन्य काल	चत्कृष्ट काल
8	8	ų	६ केवल वर्जी	2	3	पृथक् वर्ष	कोडपूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोडपूर्व	o	3 3 3	ч ч	२ पृथक् वर्ष ३१ सागर २ पृथक् वर्ष ३१ सागर २ पृथक् वर्ष ३३ सागर	३ कोडपूर्व ६६ सागर ३ कोडपूर्व ६२ सागर ३ कोडपूर्व ६६ सागर
X	R	ų	६ केवल वर्जी	7	3	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अव. आयु, अनु.	3 3 3	પૂ પૂ	२ पृथक् वर्ष ३१ सागर २ पृथक् वर्ष ३१ सागर २ पृथक् वर्ष ३३ सागर	३ पृथ्वक्वर्ष ६६ सागर ३ पृथ्वक्वर्ष ६२ सागर ३ पृथ्वक्वर्ष ६६ सागर
y	8	ų	६ केवल वर्जी	?	3	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अव, आयु, अनु,	3 3 3	<b>y</b> y	२ कोडपूर्व ३१ सागर २ कोडपूर्व ३१ सागर २ कोडपूर्व ३३ सागर	३ कोडपूर्व ६६ सागर ३ कोडपूर्व ६२ सागर ३ कोडपूर्व ६६ सागर

११ संज्ञा द्वार	१२ कषाय द्वार	9३ इन्द्रिय द्वार	१४ समुद्घात द्वार	१५ वेदना द्वार	9६ वेद द्वार		७ १ द्वार	१८ अध्यवसाय द्वार	৭ अनुव	६ iघ द्वार	नाणता	भा	<b>=</b>		२ कायसं	० वेध द्वार	
8	8	ų	U	२	3	जघन्य	उत्कृष्ट	असंख्याता	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	काल	उत्कृष्ट	काल
8	A	ų	६ केवल वर्जी	ર	3	पृथक् वर्ष	कोडपूर्व	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	कोडपूर्व	o	3	3	२ पृथक् वर्ष	३३ सागर	२ कोडपूर्व	३३ सागर
8	8	ų	६ केवल वर्जी	ર	.3	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	भला भूंडा	पृथक् वर्ष	पृथक् वर्ष	३ अ्व., आयु, अनु.	3	3	२ पृथक् वर्ष	३३ सागर	२ पृथक्वर्ष	३३ सागर
*	8	ų	६ केवल वर्जी	ર	æ	कोडपूर्व	कोडपूर्व	भला भूंडा	कोडपूर्व	कोडपूर्व	३ अद., आयु, अनु.	3	3	२ कोडपूर्व	३३ सागर	२ कोडपूर्व	३३ सागर

# ४४ घरां में ३२१ ठिकाणां नां ऊपजै तेह में नाणता पड़ै तेहनों विवरो।

	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१ तियौ	थ पंघेंद्रिय		¥ 1		३ वी	у 3	(प		<b>६</b> स्पति	तेर	ξ 35	ও বা		द बेड्	द्रिय	६ तेइ	द्रिय	9 चउरि	o द्रिय
		ज.	ਚ.	ज.	ਚ.	ज.	ਚ.	ज.	₹.	ज.	ਰ.	ज.	ज.	ज.	ਚ.	জ,	₹.	ज.	ਚ.	ज.	₫.
१ रतनप्रभा	२ ठिकाणा में ऊपजै	7	२	2	7																
२ सक्करप्रभा	२ ठिकाणा में ऊपजै	2	7	२	२			ŀ							j			1			
३ बालुकाप्रमा	२ ठिकाणा में ऊपजै	२	7	7	२							1		ŀ						1	
४ पंकप्रभा	२ ठिकाणा में ऊपजै	2	२	2	२								1			1	İ		1	1	
५ धूगप्रभा	२ ठिकाणा में ऊपजै	२	२	2	₹.	ł		1													
६ तमप्रभा	२ ठिकाणा में ऊपजै	₹	२	2	2	l .															
७ तमतमा	१ ठिकाणा में ऊपजै	7	7	x	x	ĺ		İ												1	1 .
६ असुरकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	7	२	२	3	7	7	2	7	2	₹ .			1		1		1		1	
६ नागकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	7	२	7	7	२	२	2	?	२	5										
१० सुपर्णकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	२	₹ 7	₹	₹	2	3	5	7	२	2		1			1					
११ विद्युतकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	7	₹ 7	7	२	२	7	₹	२	२	₹			1			ļ				
१२ अग्निकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	2	२	2	7	7	2	2	२	1 2	5	1						1			
<b>१३ द्वीपकुमार</b>	५ ठिकाणां में ऊपजै	1	2	2	₹	2	2	2	7	2	7									1	l
१४ उदधिकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	1 2	२	2	२	7	₹	२	5	₹	₹	1		Ì				1		:	
१५ दिककुमार	५ डिकाणां में ऊपजै	1 3	7	2	3	?	5	7	3	₹	₹	1	į					1	1	1	
१६ वायुकुमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	7	7	2	3	3	1 2	7	₹	7	₹		İ			1		1		1	
५७ स्तनितकृमार	५ ठिकाणां में ऊपजै	3	3	₹	2	2	₹	. 7	5	₹	2	ļ			1						
१८ व्यंतर	५ ठिकाणां में ऊपजै	7	₹ .	२	3	2	₹	7	3	7	₹	1		ł	1					1	
१६ ज्योतिषी	५ ठिकाणां में ऊपजै	3	2	7	2	1 2	?	7	3	7	3			]							
२० सौधर्मसुर	५ ठिकाणां में ऊपजै	२	2	२	?	२	7	2	3	3	२							1			
२१ ईशानसुर	५ ठिकाणां में ऊपजै	3	3	2	२	7	ર	२	2	₹	2		<u> </u>			<u> </u>					
सर्व नाणता			r.g	,	-,0	ų	ξ.	,	<u>ι</u> ξ	ų	£										

	तियं	9 व पंबेद्रिय	् मनु	} ध्य	र्तेहः इ	} वी	8	भ्रप	वनः	५ स्पति	तेः	ξ. 35	<b>७</b> वा	यु	ध. बेइ	द्रिय	६ तेइ	द्रिय	90 चंडरिं	देय -
-	ज.	ਚ.	ज.	उ.	জ.	उ.	ज.	₹.	ज.	च.	ज.	ૅ.	ਯ.	ਚ.	জ.	उ.	ज.	ਚ.	' ज.	₹.
४३ सन्नी मनुष्य ४४ ठिकाणां में ऊपजै ४४ सन्नी तिर्येव पंकेन्द्रिय ३६ ठिकाणां में ऊपजै ४५ असन्नी तिर्येव पंकेन्द्रिय २२ ठिकाणां में ऊपजै ४६ तिर्येव युगतियो १४ ठिकाणां में ऊपजै ४७ मनुष्य युगतियो १४ ठिकाणां में ऊपजै ४८ असन्ती मनुष्य १० ठिकाणां में ऊपजै (जवन्य उत्कृष्ट गमां नहीं हुवै)	ξ ξ	\$ ? ?	Ę. Ę. (9	3 ? ?	Ę, Ę,	* 7 7	\$ \$ !9	3 2	ξ ξ (9	3 2	Ę Ę	יי ני ני	Ę. Ę.	3 ? ?	E, 19	3 ? ?	E E	\$ ?	ξ ξ (9	4 5
सर्व नाणता		<b>3</b> 2	3:	3	32			)?	32		3	٦		<b>3</b> 2	3	₹	<u> </u>	3 <b>?</b> .	35	

२ विद्यु		4	।२ ग्नि	ı	२३ तेप		२४ दथि	र दि	<b>५</b> क्	२६ वायु		२ स्तर्ग	७ नेत		द तर	२ ज्योति		३० सौ		ईश	39 1न
ज.	ਚ.	ज.	च.	ज.	ਚ.	ज.	₹.	ज.	₹,	ज.	उ.	ज.	ਚ.	ज.	ज.	ज,	ज.	ज.	℧.		<u> </u>
4 : 3 3	3 2 2 2 3	4 5 3	3 2 2 2 3	31 12 17 17 17	3 7 7 7 8	\$ \$ \$ \$.	3 2 2 2 3	and the state of the	3 2 2 2 3	4 5 3 3	3 2 2 3	4 5 3 3	3 2 2 2 3	y c 3	3 ? ? ?	<b>y</b> c 3 3	3 ? ? 3	γ. υ γ.	₩ ₩ ₩	<b>4</b> 5 3	3 3
	38	1	38	-	3.R	:	18		is.		8		38	;	8	,	?ξ		२६		₹

सर्व नाणता

			9 तिर्यं	पंचेंद्रिय	२ मनुष		पृथ्ट	ì	अ अ	ч	वनर		ह तेउ		<b>७</b> वार्		द बेइंडि		६ तेइंडि	देय	90 चर्रिहि		
f			ज.	ਚ.	ਯ.	ਚ.	ज.	ਚ.	ज.	ਚ.	ਯ.	ਚ.	ज.	ਚ.	<b>অ</b> .	ਰ.	ਯ,	ব.	ज.	च,	ਯ.	₹.	
55	पृथ्वीकाय	१० ठिकाणां में ऊपजै	8	7	8	2	R	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	7	ĺ
	अप्काय	१० ठिकाणां में ऊपजै	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	?	8	2	8	२	ĺ
28	तेलकाय	६ ठिकाणां में ऊपजै	3	₹	x	x	3	2	3	2	3	2	3	2	3	7	3	२	3	2	3	2	
54	वायुकाय	६ ठिकाणां में ऊपजै	8	2	x	х	8 .	₹	8	२	8	2	8	2	8	2	8	२	8	2	8	2	
	वनस्पतिकाय	१० ठिकाणां में ऊपजै	4	२	ų	₹	પ્	₹	ų	२	ų	२	પ્	7	પ્	7	ų	7	4	२	પ્	?	
	वेइन्द्रिय	१० ठिकाणां में ऊपजै	U	2	IJ	2	ts	2	19	२	19	2	l9	२	19	- 2	ø	2	ß	२	U	2	ĺ
	तेइन्द्रिय	9o ठिकाणां में ऊपजै	19	2	(g	7	6	2	b	2	U	2	19	2	(9	2	69	2	to to	२	lo lo	2	
	चउरिन्द्रिय	% विकाणां में ऊपजै	9	7	19	२	(9	7	19	2	ıı	2	19	२	lg	2	19	२	(g	7	(9	२	ĺ
	सनत्सुर	२ ठिकाणां में ऊपजै	2	2	ą	2				1			1	-									
	महेन्द्रसुर	२ ठिकाणां में ऊपजै	2	2	7	2									}	1							l
	ब्रहासुर	२ ठिकाणां में ऊपजै	7	2	₹ .	₹			ł		i												l
33	लान्तकसुर	२ विकाणां में ऊपजै	₹	7	२	२																	
38	शुक्रसुर	२ ठिकाणां में ऊपजै	3	7	7	?											İ	İ	1				
34	सहस्रारसुर	२ ठिकाणां में ऊपजै	₹	3	2	₹	1				1	-						i	1				
36,	आणतसुर	१ ठिकाणां में ऊपजै	×	х	7	?							1						1				ĺ
319	पाणतसुर	१ ठिकाणां में ऊपजै	x	х	3	2								1									ĺ
\$c.	आरणसुर	१ ठिकाणां में ऊपजै	x	х	2	2		1							ļ		1						ĺ
35	अच्युतसुर	१ ठिकाणां में ऊपजै	x	x	₹	2						İ			l								
¥0	प्रैवेयक	१ ठिकाणां में ऊपजै	×	x	₹	3	1											1		!			
19	४ अनुत्तर विमान	१ ठिकाणां में ऊपजै	×	x	₹	2					1												ĺ
	सर्वार्थसिद्ध	१ ठिकाणां में ऊपजै	x	x	×	х						<u> </u>		<u> </u>									
	सर्व नाणत्ता			;9	₹8	·	પૂર	)	ų	9	,	<b>4</b> (9	પુ	9	'Y	19	,	ξ(θ	,	(le	''		

1	99 रतन	1	भर क्कर	<b>१</b> वालु	~	प पंर	•	l .	<sup>१</sup> ५ यूम		६ !म	भ तम	9 तिमा	9c अर्	गुर	੍ਰ ਜ	i६ ाग	२० सुप	
ज.	ਚ.	ज.	च.	ज.	ਚ.	ज.	₹.	ज.	ज.	ज.	ਚ.	ज.	ਚ.	ज.	ख.	ज.	च.	ज.	च.
4 6	- 3 - 3 - 3	3	3 ?	3 %	3 7	3 ==	3 7	\$ E	3 7	3 12	<b>3</b>	3 %	3 ?	<b>4</b> 5 3 3	३ २ २ ३	4 3 3	3 ? ? ? 3	y :: 3 3	3 7 7 3
	23	c	16	٩	Ę	٩	15	,	16	9	ξ 	٩	Ę	31	ş .	3	<b>к</b>	3	8

<del></del> स		Ŧ,	३३ गहेन्द्र		३४ हा		३५ गन्तक	३१ शु	<del>।</del> क्र	३। सहद्			प्त जित	३ पाप		आर ४०		8 3	9 ाच्युत	8 क्रै	२ विक	४ अ ४		•	४ र्थसिद्ध
ij <u>,</u>	₹.	ਯ.	ज.	ज.	ज.	ज.	ਚ.	जं.	ਚ.	ज,	ਚ.	ডা,	ਚ.	ज.	ব,	ज.	ਚ.	ज.	ਚ.	ज.	उ.	ज.	च.	ज.	ਰ.
47 13	3 7	3	3 ?	3	3	3 (9	3	3	3	3	ફ - ૨	3	3	Э	3	3 0		3	3	3	3	3	3	3	3
	16	٩	Ę.	٩	Ę.		૧૫		ને <b>પ્</b>	'	વપ્		Ę		Ę.			٤			Ę.		Ę.		ξ

गमा ३४३

### २४ दंडक में गमा अनै नाणता

	२४ दंडक के नाम	१ नारकी	२ असुर	3 नाग	४ सुपर्ण	५ विद्युत	६ अग्नि	७ द्वीप	म् उदधि	६ दिक्	90 वायु	११ स्तनित	५२ पृथ्वी
9	गमा नी संख्या	934	क्षत	४५	४५	४५	४५	४५	४५	<b>૪</b> ૫	४५	, 84	२२६
3	जघन्य उत्कृष्ट गमे नाणता नी संख्या	998	38	38	38	38	ЗЯ	38	38	38	38	38	984

<b>१३</b> अप्	% तेऊ	१५ वायु	9६ वनस्पति	90 बेइंद्रिय	% तेइंद्रिय	9६ <b>च</b> उरिद्रिय	२० तिर्यंच पंचेंद्रिय	२१ मनुष्य	२२ व्यंतर	२३ ज्योतिषी	२४ वैमानिक	सर्वसंख्या
२२८	१०२	<b>4</b> 05	२२६	907	907	907	<b>₹</b> 84	३७५	४५	32	२२६	२८०५
૧૪૫	<b>τ</b> ξ	ςξ	૧૪५	τξ	<b>ς</b> ξ	<b>ς</b> ξ	950	२०६	38	₹	953	<b>१६</b> ६६

असुरादि १० भदनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अनै ईशान—ए १४ ठिकाणै तिर्यंच युगलियो ऊपजै तिण रै तीजे गमे २-२ नाणता पड़ै। इम २८ नाणता हुवै। ए १४ ठिकाणे मनुष्य युगलियो ऊपजतां तीजे गमे ३-३ नाणता पड़ै, इम ४२ नाणता हुवै। बिंहुं युगलियां नां तीजे गमा आश्री ७० नाणता हुवै। ए नाणता उपर्युक्त १६६८ तिवाय जाणवा। ए १६६८ नाणता जाधन्य अनै उत्कृष्ट गमा आश्री कहया। तेह में औधिक गमा नां ७० नाणता भेला कीधां २०६८ नाणता हुवै। तथा असन्ती मनुष्य गनुष्य में ऊपजता दूजे तीजे गमे १-१ नाणतो हुवै, ए २ नाणता भेला कीधां २०७० नाणता हुवै। ए नाणता नीं संख्या कही। तिण में न्यून-अधिक आया हुवै तो बहुशुत विचारी लीज्यो।

388



प्रज्ञापुरुषं जयाचार्य

छोटा कद, छरहरा बदन, छोटे-छोटे हाथ-पांव, श्यामवर्ण, दीप्त ललाट, ओजस्वी चेहरा— यह था जयाचार्य का बाहरी व्यक्तित्व।

अप्रकंप संकल्प, सुटुढ़ निश्चय, प्रज्ञा के आलोक से आलोकित अंतःकरण, महामनस्वी, कृतज्ञता की प्रतिमूर्ति, इष्ट के प्रति सर्वात्मना समर्पित, स्वयं अनुशासित, अनुशासन के सजग प्रहरी, संघ व्यवस्था में निपुण, प्रबल तर्कबल और मनोबल से संपन्न, सरस्वती के वरद्पुत्र, ध्यान के सूक्ष्म रहस्यों के मर्मज्ञ—यह था उनका आंतरिक व्यक्तित्व।

तरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक, आचार्य भिक्षु के वे अनन्य भक्त और उनके कुशल भाष्यकार थे। उनकी ग्रहण-शक्ति और मेधा बहुत प्रबल थी। उन्होंने तेरापंथ की व्यव-स्थाओं में परिवर्तन किया और धर्मसंघ को नया सप देकर उसे दीर्घायु बना दिया।

उन्होंने राजस्थानी भाषा में साढ़े तीन लाख श्लोक प्रमाण साहित्य लिखा। साहित्य की अनेक विधाओं में उनकी लेखनी चली। उन्होंने भगवती जैसे महान् आगम ग्रंथ का राजस्थानी भाषा में पद्यमय अनुवाद प्रस्तुत किया। उसमे ५०९ गीतिका हैं। उसका गंथमान है साठ हजार पद्य प्रमाण।

- ० जन्म-१८६० रोयट (पाली मारवाड़)
- दीक्षा—१८६९ जयपुर
- ० युवाचार्य पद-१८९४ नाथद्वारा
- ० आचार्य पद-१९०८ बीदासर
- ० स्वर्गवास-१९३८ जयपुर

THE STREET स्तिव मालाकी कृष्य न

पत्र मननीतार सर्वजीविषण कपत्राची एद भीवनानाणकत्राप्णेष्ठमुस्सङ्जी तिमदिनकदिवापिने एदविकंकरिपूजीयो ट्क्नवीत्ररमाममी ट्क्ननीपीर्ट अपेक्रया कदाविवाषणणह में तिमदि। गण देपस्त्रीयक्षात्री मर्वतीयक्षीसीय प्रजीदासीमाष्ट्रप्रयोगीऊपनीए-अवलीयः पेस-ग्रादेश श्रीष्ट्रक्रहीजीय यावत्त्रतेत्रक्षेत्रकरेहः श्रूष्टिवहेन्गवंतती गोलाशुलवानररैमाहि मोटोजेहबानर अव कारीयाणजी न्यक्तकानादिमाहि आविवस्पोवेतेहनेनी पोष्त्याणकरायः कर्माणादिकताता तिमीलागुल्य्यस्तिकदिवायः कर्कट्यमसक्टिमाने मीटोबल्यसर्ध्य महक्त्यसम्बद्धमान्न प्रि भा भी नामना गायक नेह साइत्रमप्लन्युक्ट्याजी कपत्रेष्ट्रकेट सोमुक्कपप्लक्ष्मिन निष्या एजबरकहेट सीनसमाधिरहीतए अणुवतगुणवतरहीतलनमा मर्यारपञ्चलका निष्या सम्बद्धियान स्थापन अपार्शितमान नागवति पुरुषप्रमाणा प्रविषद्भविष्य होसप्रोप्ति हैप्यप्राप्तितिमार देवप्रवाससहीत कालकरीकाल अवसर स्ववताष्ट्रशिएद् वत्रुष्टमागर गाउपे कप्रोप्तर्क भगार। वक्ष हतामाथमाजी जाव खनतीवार अर्ब जीविषण्हहनाजी एमखनतीवार सेवनते गीतमकह कपलीह अमलसगदतमहाबीरजी वागरेष्ठह विश्वाल गी कपजवालागातमु कपनाकदियेपिया मी याजनवित्तरेसार अतजारमुद्देशकसातमोजी दोग्रसोधेसहग्रीग्राव विकत्तारीमालक्षिरायद्य ए गी नेदसमयवैसोयरे वानरकुईटमीमको तेदसमयमेजीयरे नारकनवक्रियनथी इ समुप्तेदेवोजीवनी एकारए अवलोयरे किमक्रहियेनारकपर्णे निरणयवचनम्जीयरे वीरप्रमुक्रमवागस्यो अपन माञ्चा अधिकार अष्टबुद्देशकविणतिमञ्जलंगातरेविचार तिणकालेनेतिणसमय यावत्गातमस्या। वालागोन्दालरे कदियेतेदनेकप्ना कियानिष्टाकालरे एविकालण अतेद्यी कप्रवालागोनेदरे कि इमबी-याधस्थतंत्री विनयकरी सिर्नाम बद्धिकसुरसगवंत याकार्यसमयते तिलसमयकपनोतेद्रे निष्टाकालजसमयहक कियानिष्टानालरे एवं क्रानासमय । जानमदार्श्वयुक्षमञ्ज्ञत्री अतररदितववीकरी ततुनीवीनेतामञ्जुजी गीयमञ्ज्ञसुद्दामणा वे इक् तेमारेजिनवाणरे उववसमाणेऊपती बेश्हयताएअववसेसा इतिप्रमा इदाअवसेसाए ारिश्नांगम्कपने नागकस्तामकरान्<del>यक्ती अध्यानागतेसप्दि एविक अर्थसमान ए</del> नागका स्वीयक्ररजोङ्गेपरतेद्वीं असंसवतेबातसंसवेनदी एद्वी आवाकाकरे तेदनी बाकाराज्याने अर्थितिल यथणमत्नी दितीयमवुष्यत्रवृतेद जिवपदमादिसिङावस्य वैवारीरीनागजेदः तेनागविधेसुरऊप यकदेवे असंतवतेस् निणसमये गीतासुतादिकतेणेयमयेनारकीनथी इणकारणेनारकीपणिकमक विनकदेशाउपजातदों मो तितिहानाग सम्बिषेत स्वावसिषेत स्वीत्व अवीत्वरनादिक करी व दिवा तिदानिए यववन करें वे अप्राणसगतत श्रीमहावीरस्वामी इमकदे वे जेवान रादिक नारकी पण तस्म तिविज्ञेषपु पृष्पादिककरिष्ट्रजीयो जागसणीजनपेष वस्त्रादिकमतकारीयो वितसव्मान्यो अपजतावतामे तेनरके अपनाजकदिये कियाकाल अमेनिष्टाकाल एविक्त्रना जानेदणी अपजवाना हण्डविशेषणमेववा त्रागसणीयरवेदः दिमधमनसाचीतिको स्वपादिककिससाय तेकस्योज्हात्वे गातेहतेकपनाक दीजिएसस्य वेवानस्थ मुख्यो तरकासविशेषस्य अपन्य सामायकप्रवासाया ी समक्रवे खबनीय | सफलसेव क्रवेनेट्नी देव अधिष्टितसार प्रविभादिक सुरिक्त की ओक मी वाटेव्हेंहे एकियाकाल अभैतेणेनसमय कपनीए निष्टांकाल एकियाकाल निष्टांकाल नेसमयएक है विदारमसूत्री एडबानांगविषेश्रमस्त्रे अपनेवैसगवान जिनक्हेंद्वागोयमा खमरअपने खानगेथ कियाकालनों जेसमञ्जिदिनसमय निष्टाकालनों वेदणन्यायविक्रकालनों असेटणकी अपनवालागा भी अत्रस्यदिवतिदायकी बीक्नतेदसीन्कतंत्र विवक्देदंतामीशेतिको जावकरेडः सम्भवनीय विदेशे अवपुर सीद्वाप्रदिवदेशत जिमम्बनसर्विणीत्रदेसप्सप्तमगतक वहामभ जावा हर्दिक सुरम्यवनजी इममवर्गिएर प्रदोय वारी मिलिविषे एष्ट्रीय लें उपने देव इमिनेश्वेक रिया परावारवीषः एवी तर्दी तपूर्वनीयरे जाव वास्त्र स्थान स्यान स्थान विभाग नामसणी किमन्दानको कदिवोतिणदिवरीतसु स्वमणिनोविज्ञानको सुर्घसुमहर्द्धिक। अध्दिवदेसगवतनी टेकके क्युवलीय ध्वै लेकमहकमोरीयो शीलरदितएसोय होष्टिमकना। विश्व विश्व में उपन्त प्र विनक्देंद्र ता उपने एवं वेव उद्योग एवं द्रमें नाएं है जाव सुधिष्टि वता ववूं में वंते ते सुविशेष प्र यावत गीतम्बिर्ता सत्यारम अष्ट सुदेश हो यसो ना सहसी जारनी

ब ग्रन्थमाञ्चलमान्यस्य क्रान्तस्य स्वातिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य सारमस्यान् प्रात्तिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य स्वातिक्षामान्यस्य स् 375E1800 वानकादी वर्गामातमेलाग गुलवर्शिक्ष या विन्यविग्रदसंधर प्रविवाविषेत्रक्रवना प्रथमसम्बस्ति वंशादेश वेशावित विम्नय

अविनकानंसाग् अग्रेस्यातमें भूजेस्याताहोसम्यातिहार पुकलप्यवर्तरमा सर्ववंधनो पृथिवीकाऱ्या दमदिनकदिवृदावनस्यतिवरीजारा जावमनुष्यनादेमकलग् वनस्यतिवृद्दानदगुरा स्वयाण वनस्य तिनेत्रवन्या सर्ववधतनद्यो वेष्यकुत्तकत्तवद्याय एवचेवएपाठ्यो तीनसम्यक्षियके मणा अवनाय तीनसमयनीतादिरविग्रहगतिकहितीवैडी वनस्पतिरैमादिर सावीने उपनानदा धुरवसमयास्य रेखनादारिकनाजाणवा रतीयममयमर्ववधर खुद्दागसवजीवीकरी वलिष्यया हिकवादिर खुद्दागन वरादेनवलिम्बिग्दकरितादिरवनस्पतिम् अपनी प्रधारमध्यमवेवधर इमसर्ववधना क्रमा क्रम देनगर्वत अवनेष्ट्रके दियवणे इत्तात नेष्ट्रक दियवणे उपनीने वित्तात वित्तात स्थाप तीनमान यो वर्षणे कर्ष स्मान्द्र दियागी रत्रण गर्वश्वेषत स्वता वर्षा के स्वतान स्थाप

अनवस्थात	क । किस भट	पिशास्त्र कुल्लान	वकारतदर्जधसद्श	ब्रथ् उप्रतम
190pag	al.	शक्याक्षी	अवयक्त श्री	
和自由政治公司		अध्यासमय उत्कर	2 हि तीय ये	।। सर्व
करतव्यमवृत्त	मय	पम पम	। समुद्धयभादार् कप्रारीरप्याग वधनास्तरका	3ल्ह
एक इस कवार		अध्या समय उत्त	हि विश्वस्थितिक	म् समय
गरप्यामञ्च	ता प्रय	१ वर्ष	ती एकेंद्रा अवग्रह जर प्रयोग वेध भेज तर	3-FE
वृधिनीकायः दिक्षारीर्त्रहे		मध्यम्य क्लीखुडा मनव उन्हरी १ सम्ब क्ला ११८ तार्वर्ष		ज्ञात्यः स्कृष्टश
			गाउँ ते वे बनका वि	त्रध्या
कुरतेर बनाय इवियोग इदिया दियां सदाविक	ाउम प्रदा	न्यसमय उत्तास्त्रह् गुस्य उत्तर हो जेहन उ तली उत्तर हो। स्वास्त्रहा	अद्यास सारास्य	तला ३
रक्षाग्यस		श्तमय कलीकही	गाउ भराशेक्षणा) रचकाग्रेधनास्	त्रध्या वक्तह
नाउड्डवादिकः		ता समय उत्स्था सम		
रव्याग्नध		युजला ३३ तार्वत	तिर्वेत्रपं वेदायः व्यक्तवास्त्र	3227
विश्वीति वेदी मन अद्यान्त्व श्रीन		तासमयोगन्स्योगस् वस्त्रता ३पल्पापम	शरपद्मागवंध	नव नत मध्यमात्र निवस्त्रमात्र
				<b>电影用机</b> 体

	The second second second					
अवध्यक्तराश्यवागवेधनान्यं तर रेपच कालधीकतेलाकालक्र						
2 कि सीय यें व	सर्ववंधनां श्रेतर	देशवंधनांश्रंतर				
सपुत्रय्यादारी कप्रारोश्ययाप वधनीसंतर्का तथकीकतेलेक	उन्हर्शकार श्र्वकार १	नघनासमय ३ नेतृष्ट ३ समय सुधि क ३३ सागर				
एकेंद्रा अक्षाक्ष गर प्रयोग वंध्र गांचे तर	ा ज्ञास्य इसमय केला खुडागर्वे व अन्तर ए समस्य प्रकार वर्ष	त्रवनासमय उत्स एसंतर्मुक्तर्त				
रधीकाय अदा राक्त ग्रास्थ्या म बेधनी खेतर	नध्य इसमय केले खुरा गस्त ३ स्क्रम् समय स्थित ३३ द ना १३	त्रहासमय । इस्टाइसमय				
म्यु तेत्रं बतस्यति बद्यतिद्यां सत्त्रभ्दा अद्यश्क्षता श्रीरप् याग्वेसमायतर	नध्यसमयक्रीतियाम्बर्ध स्तर्भित्रम्थक्रिकोर्द्धने तत्त्र ३ त्सर्थक्रिकार्द्ध	मध्यासमय उत्तरहरूमय				
***	त्रव्यश्समयः तीरवृद्यान्त वनत्त्रहा समय्यक्षिकः ३३ नोरवद्य	अध्यासमय अक्षण्यंतर्मुकर्त				
तिर्वेत्तप्रेद्धाम् य अदाशक्त्र	नव्य ३समय जला खुडाग नव अस्तृष्ट पूर्व का डिश्ममय	अधन्य भगवा उत्कष्ट श्रेतम्				

कर्न

3	नेहना जन्म ती	गयवनाव्यम	हाइदिविष्ठ	49		
3, इताययं व	सर्ववंशतसर्ववं	धनानंतर	देशवंश्वदेशवंश्ववंतर	り田		
रकेष्ट्रियप्तां नेएकेष्ट्रियप्तां नेजिएकेष्ट्रियपत	वध्यद्मम्ब ग्लाउवस्ता ग्लाउवस्ता	anna han	निध्यासमयन्त्रिक खुरामन्द्रज्ञ सहस्र सागरसंख्यातावस्त्रिक्ष	3		
वृद्धी सूच तरं वार् प्रतिक संद्रांतिश्री वर्षक्षणमञ्जूष्य	त्रशास्त्रसम्बद्धाः वत्रत्वस्वत्रस्य वस्त्रत्वत्रस्थ	विस्तुद्धागन विस्तुद्धागन	जग्रसम्बन्धिक ख्र रागवर असम्बन्ध कार्यवस्थिताकार	高山		
क्त्रस्थतियां ब्रेतर	नेधमध्यम् स्वाउत्स्य स्व ल उस्तर्गा	करिय विश्व डाग् स्थानस्वस्य	त्रधमासमयक्षाक सरगन्त्रवासम्बद्ध	1 15 TE		
ए अदाराक शरीरना वेशवेशका सर्वेशको श्रवेशको प्रवेशको प्रकेश व्यक्ती स्था						
RESERTER.	कर्व व स्वत	ग्रवेशका	देशक्षका	3		
म्याबकस्	सर्व हो हो। इ।	विश्वादया	a atomagen	1		
याधिकं ध बन	म्यतिसव्हेद	रहेशबंधक	रतोमरी पृथिकादिक	15		

पाताकाल अज्ञास्याती वसर्विली अज्ञानमातीद बर्जिली काल विकविग्रसिव ग्रांग्या ेलाकाका<u>ना पर क्र</u>ांड ।व्क्रजालवाद शब्धन विच्यक्रम स्वतिनाता विश्वत्व हुन् मर्ववं अपदी पुष्ठत्वपा कायका विश्वभाविक esuckatekistes मञ्जून सम्माग्राम स्वित्वकी कदिय गृत

तिसबंबंधना उन्हर हो दा व

पतितदोयरे मवेबे धण्डिलसमय वितीयदेशा वधनीयरे समयादिक सब क् लक्षमा व जन्म ए प्रिवीकालरेल सद्या बंध यं तरो नाय पूर्व वत्र ना तरकाल ग्रंग